

आईना कमालात-ए-इस्लाम

(इस्लामिक विशेषताओं का दर्पण)

AAINA KAMALAT-E-ISLAM

लेखक

हजरत मिर्जा गुलाम अहमद क्रादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

आईना कमालात-ए-इस्लाम

(इस्लामिक विशेषताओं का दर्पण)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

II

नाम पुस्तक	: आईना कमालात-ए-इस्लाम
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: डाक्टर अन्सार अहमद तथा फ़रहत अहमद आचार्य
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) नवंबर 2024 ई०
संख्या	: 300
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशा'अत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Aaina Kamalaat-e-Islaam
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Dr Ansar Ahmad & Farhat Ahmad Acharya
Edition	: 1st Edition (Hindi) November 2024
Quantity	: 300
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद तथा फ़रहत अहमद आचार्य ने किया है। इसके बाद श्री शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), श्री फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), श्री अली हसन एम. ए., श्री तबरेज़ अहमद दुर्गानी एम ए, श्री मुहम्मद इब्राहीम सरवर, श्री इब्नुल मेहदी एम् ए और श्री मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए, ने इसका रीव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिंहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावली दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।



हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
(1835 ई० - 1908 ई०)
संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हजारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, क़शफ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की

* बैअत- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना, दीक्षा लेना, निष्ठा की प्रतिज्ञा- अनुवादक

VIII

थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र कुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम खलीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

आईना कमालात-ए-इस्लाम

(इस्लामी विशेषताओं का दर्पण)

‘आईना कमालात-ए-इस्लाम’ का दूसरा नाम ‘दाफ़िउल वसाविस’ है। यह पुस्तक दो भागों पर आधारित है। एक भाग उर्दू में है और दूसरा अरबी में। उर्दू भाग की तिथि 1892 ई. है और इसका अरबी भाग 1893 ई. के प्रारंभ में लिखा गया।

इस पुस्तक के लिखने का कारण जैसा कि स्वयं पुस्तक से प्रकट है यह है कि एक तरफ इस्लाम के विरुद्ध पादरियों की ओर से, जिन के फ़िले (उपद्रव) को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों में दज्जाल के फ़िले का नाम दिया गया है, मुहिम जारी थी और वे इस्लाम के संस्थापक और पवित्र कुर्आन पर अंधाधुंध आरोप लगा रहे थे और वे इस विश्वास के साथ मैदान में निकले थे कि विश्व का भावी धर्म ईसाइयत होगा और इस्लाम को ईसाइयत के सामने अपने हथियार डालने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं होगा, और दूसरी ओर स्वयं इस्लाम के विद्वान ऐसी आस्थाएं रखते थे जिनसे पादरियों द्वारा प्रस्तुत आस्थाओं का समर्थन और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर श्रेष्ठता और प्रधानता एवं महानता सिद्ध होती थी जो ईसाइयत के प्रचार की बुनियाद थी। अतः 22 अगस्त 1899 ई. को पंजाब के लेफ्टीनेन्ट गवर्नर मैक वर्थ यंग ने अपने एक भाषण में कहा-

“पूरब के धर्मों में जो बात सबसे क्रीमती है उसे दोबारा से ताज़ा करने की कोशिश इस विश्वास के परिणामस्वरूप पैदा हुई है कि यहां एक ऐसी हस्ती मौजूद है, जो मुहम्मद, बुद्ध, हिन्दू, त्रिमूर्ति और गुरु नानक से बड़ी है..... क्या तुम अलग एक तरफ़ रहोगे और उस विजय में हिस्सा न लोगे।”

(दी मिशनज़ बाई क्लार्क-लंदन)

इसके अतिरिक्त जो मुसलमान लीडर इस्लाम के समर्थन और इस्लाम के विरोधियों के प्रहारों का उत्तर देने के लिए उठे वे पाश्चात्य दर्शन से प्रभावित तथा यूरोपियन फ़िलास्फ़रों के आरोपों से आतंकित होकर इस्लामी आस्थाओं की ऐसी-ऐसी

व्याख्याएं करने लगे जो खुले तौर पर कुर्आन और हदीसों के स्पष्ट आदेशों के विरुद्ध थीं। मानो वे स्वयं अपनी कलम से इस्लाम के दुश्मनों के आरोपों का सत्यापन कर रहे थे और यह घोषणा कर रहे थे कि मुसलमानों की वे आस्थाएं भी जिन पर तेरह सौ वर्ष से उन की सहमति रही, गलत थे।

दिवंगत सर सय्यद के विचार

उदाहरणतया स्वर्गीय सर सय्यद ने जो निस्सन्देह मुसलमानों के एक बहुत हमदर्द लीडर थे उन्होंने भौतिक शिक्षा के सिलसिले में मुसलमानों की बहुत बड़ी सेवा भी की, न केवल दुआ के प्रभाव एवं चमत्कारों इत्यादि का इन्कार किया बल्कि फ़रिश्तों के बारे में अपनी 'तफ़सीरुल कुर्आन' में लिखा -

“जिन फ़रिश्तों का कुर्आन में वर्णन है उनका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं हो सकता, बल्कि खुदा की अनंत कुदरतों के प्रकटन को तथा उन शक्तियों को जो खुदा ने अपनी समस्त सृष्टि में विभिन्न प्रकार से पैदा की हैं, मलक या मलाइका कहा है।”

(‘तफ़सीरुल कुर्आन’ लेखक सर सय्यद अहमद खाँ व्याख्या सूरह बकर: आयत 22 जिल्द -1,

पृष्ठ -33)

और लिखा - “इसी मल्कए नुबुव्वत का जो खुदा ने अंबिया में पैदा किया है जिब्राईल नाम है”।

(‘तफ़सीरुल कुर्आन’ सय्यद अहमद खाँ व्याख्या सूरह बकर: आयत 22 जिल्द-1, पृष्ठ -33)

वह्यी-ए-नुबुव्वत के संबंध में लिखा-

“मैं नुबुव्वत को एक स्वाभाविक चीज़ समझता हूँ जो नबियों में अपनी प्रकृति की मांग के अनुसार अन्य मानवीय शक्तियों के समान होती है। जिस इन्सान में वह शक्ति होती है वह नबी होता है।”

(तफ़सीरुल कुर्आन सर सय्यद अहमद खाँ व्याख्या सूरह बकर: आयत 22 जिल्द -1, पृष्ठ-31)

“वह स्वयं अपने मन की वाणी इन कानों से इस प्रकार से सुनता है जैसे कोई दूसरा व्यक्ति उस से कह रहा है। वह स्वयं अपने आप को इन आंखों से इस प्रकार से देखता है जैसे दूसरा व्यक्ति उसके सामने खड़ा हो।”

(तफ़्सीरुल कुर्आन – सय्यद अहमद खाँ व्याख्या सूरह बकर: आयत 22 जिल्द-1, पृष्ठ 32)

“हम बतौर उपमा यद्यपि वह कैसी ही निम्न स्तरीय हो उसका सबूत देते हैं। हजारों लोग हैं जिन्होंने पागलों की हालत देखी होगी, वे बिना किसी बोलने वाले के अपने कानों से आवाज़ें सुनते हैं। अकेले होते हैं, परन्तु अपनी आंखों से अपने पास किसी को खड़ा हुआ, बातें करते हुआ देखते हैं। वे सब उनके अपने विचार हैं जो हर ओर से बेखबर होकर एक ओर व्यस्त और उसमें डूबे हैं और बातें सुनते हैं और बातें करते हैं। अतः ऐसे दिल को जो प्राकृतिक रूप से सारी चीज़ों से अलग और आध्यात्मिक प्रशिक्षण में व्यस्त और उसमें विलीन हों। ऐसी घटनाओं का सामना होना मानव-प्रकृति के बिल्कुल भी विरुद्ध नहीं है। हां इन दोनों में इतना अन्तर है कि पहला पागल है, और पिछला पैगम्बर। यद्यपि कि काफ़िर पिछले को भी पागल बताते थे।”

(तफ़्सीरुल कुर्आन सय्यद अहमद खाँ व्याख्या सूरह बकर: आयत 22 जिल्द-1, पृष्ठ-33)

वही दिल के विचार कभी एक बोलने वाली आवाज़ के समान इन्हीं भौतिक कानों से सुनाई देते हैं और कभी वही दिल के विचार दूसरे बोलने वाले की तरह दिखाई देते हैं परन्तु स्वयं के अतिरिक्त न वहां कोई आवाज़ है न बोलने वाला।”

(तफ़्सीरुल कुर्आन सय्यद अहमद खाँ व्याख्या सूरह बकर: आयत 22 जिल्द-1, पृष्ठ-33)

वह्यी (ईशवाणी) तथा नुबुव्वत से संबंधित जो दृष्टिकोण दिवगंत सर सय्यद की उपरोक्त वाक्य रचनाओं से व्यक्त किया गया है वह पाश्चात्य दर्शन की देन है जो पवित्र कुर्आन और नबी की हदीसों के व्यापक और स्पष्ट आदेशों के विरुद्ध है। और इस दृष्टिकोण को सही स्वीकार करने से समस्त नबियों को नरुजुबिल्लाह झूठा मानना पड़ता है।

अतः मुसलमान सुधारक भी वास्तव में इस्लाम के दुश्मनों को शक्ति देने का कारण बन रहे थे और इन बाहरी शत्रुओं के प्रहारों तथा आन्तरिक तथाकथित मुस्लिम सुधारकों की बेकार अर्थों और व्याख्याओं से इस्लाम को पूर्ति न हो सकने वाली हानि पहुंच रही थी और इस्लाम का प्रिय तथा दिल को लुभाने वाला चेहरा लोगों की नज़रों से ओझल हो रहा था। इसलिए अल्लाह तआला से आदेश प्राप्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम का मनमोहक, आकर्षक चेहरा प्रकट करने

और उसके गुण और विशेषताओं को सार्वजनिक करने के लिए यह पुस्तक 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' लिखी, ताकि संसार के लोगों को पवित्र कुर्आन की विशेषताएं मालूम हों और इस्लाम की उच्च शिक्षा की उन्हें जानकारी प्राप्त हो। इस पुस्तक में आप ने इस्लाम की वास्तविकता, वही, नुबुव्वत, फ़रिशतों के अस्तित्व और उनके कार्यों की विस्तारपूर्वक व्याख्या करते हुए उन सन्देहों एवं भ्रमों का भी उत्तर दिया जो वर्तमान दर्शन की दृष्टि से उन मामलों पर किए जाते थे और मुसलमान उलमा की उन आस्थाओं का भी तर्कशास्त्रीय एवं लिखित रूप से खण्डन किया जिन से मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम पर श्रेष्ठता प्रकट होती थी और आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सय्यदुल अव्वलीन वल् आखिरीन और अफ़ज़लुल अब्बिया होना सिद्ध किया। और उन मुसलमान लीडरों का, जो यूरोपियन दर्शन से प्रभावित थे और आक्रमण से बचाव का ऐसा आचरण अपना रहे थे मानो कोई दुश्मन की विजय और उससे भयभीत हो कर और अपने आप को असहाय एवं निराश्रय पाकर सुलह का अभिलाषी होता है ध्यान आकर्षित कराते हुए कि मैं उनके सन्देहों का निवारण कर सकता हूं वे मेरी ओर आएँ। आप ने फ़रमाया-

“इस युग में जो धर्म और ज्ञान की बहुत जोश के साथ लड़ाई हो रही है उसे देख कर तथा ज्ञान के द्वारा धर्म पर किए जा रहे आक्रमणों को देखकर उदास नहीं होना चाहिए कि अब क्या करें। निश्चित समझो कि इस लड़ाई में इस्लाम को पराजित और असहाय दुश्मन की तरह सुलह चाहने की आवश्यकता नहीं, बल्कि अब समय इस्लाम की रूहानी तलवार का है, जैसा कि वह किसी समय अपनी भौतिक शक्ति का प्रदर्शन कर चुका है। यह भविष्यवाणी याद रखो कि शीघ्र ही इस लड़ाई में भी दुश्मन अपमानित होकर पराजित होगा और इस्लाम विजय पाएगा। वर्तमान के आधुनिक ज्ञान कैसे ही बलपूर्वक आक्रमण करें, कैसे ही नए-नए हथियारों के साथ चढ़-चढ़ कर आएँ परन्तु अन्ततः उनके लिए पराजय है। मैं कृपा दृष्टि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहता हूँ कि इस्लाम की उच्चतम शक्तियों का मुझ को ज्ञान दिया गया है जिस ज्ञान की दृष्टि से मैं कह सकता हूँ कि इस्लाम न केवल आधुनिक दर्शन के आक्रमण से स्वयं को बचाएगा बल्कि यह सिद्ध कर देगा कि वर्तमान में जितने के विरोधी ज्ञान हैं

वह आज्ञानताओं से भरे हुए हैं। इस्लाम के शासन को इन आक्रमणों से कुछ भी भय नहीं है जो दर्शन और भौतिकी की ओर से हो रहे हैं। उसके सौभाग्य के दिन निकट हैं और मैं देखता हूँ कि आकाश पर उसकी विजय के निशान प्रकट हैं। यह सौभाग्य आध्यात्मिक है और विजय भी आध्यात्मिक ताकि झूठे ज्ञान की विरोधी शक्तियों को ऐसा कमजोर कर दे कि मानो समाप्त कर दे।”

(‘आईना कमालात-ए-इस्लाम’ रूहानी खज्जायन जिल्द 5 हाशिया पृष्ठ – 254,255)

‘आईना कमालात-ए-इस्लाम’ की ख़ुदा के निकट स्वीकार्यता

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं “इस पुस्तक के लिखते समय मुझे दो बार जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्शन हुए। आप ने इस पुस्तक के लिखने पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की। एक रात यह भी देखा कि एक फ़रिश्ता बुलन्द आवाज़ से लोगों के दिलों को इसकी ओर बुलाता है और कहता है-

هذا كتابٌ مباركٌ فقوموا للإجلال والاکرام

(आईना कमालात-ए-इस्लाम रूहानी खज्जायन जिल्द 5 पृष्ठ-652)

अर्थात् यह पुस्तक मुबारक है इसके सम्मान के लिए खड़े हो जाओ।”

इस पवित्र और मुबारक स्वप्न का विवरण जिसमें आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ में यह पुस्तक “आईना कमालात-ए-इस्लाम दिखाई गई और आंजनाब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर प्रसन्नता व्यक्त की।” (इस पुस्तक के हाशिए पृष्ठ – 216 – 217 पर दर्ज है।)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ‘आईना कमालात-ए-इस्लाम’ से संबंधित यह स्वप्न और क़स्फ़ इस पुस्तक की महत्ता तथा महान प्रतिष्ठा पर मार्ग दर्शन करते हैं और स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी पुस्तक “सुर्मा चश्म आर्यः”, “फ़तह इस्लाम”, “तौज़ीह मराम” और “इज़ाला औहाम” का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं-

و کتاب آخر سبق کُلّها الفته فی هذه الايام اسمه دافع الوسوس

(आईना कमालाते इस्लाम रूहानी खजायन जिल्द 5 पृष्ठ 547)

कि एक और पुस्तक है जो मैंने इन दिनों लिखी है और वह इन समस्त वर्णित पुस्तकों पर वरीयता ले गई है। उसका नाम दाफ़िउल वसाविस है और वह उन लोगों के लिए बहुत ही लाभप्रद है जो इस्लाम की सुन्दरता दिखाना और विरोधियों का मुंह बन्द करना चाहते हैं।”

अरबी भाग

हज़रत अक्दस अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक का अरबी भाग जो “अत्तब्लीग” शीर्षक के अन्तर्गत लिखा वह हुज़ूर अलैहिस्सलाम की अरबी की प्रथम पुस्तक है। इस से पूर्व आप ने न अरबी भाषा में कोई पुस्तक लिखी थी और न अरबी भाषा में कोई लेख लिखा था। इसकी प्रेरणा जैसा कि स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है यों हुई कि हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी ने 11, जनवरी 1893 ई. को हज़रत अक्दस से निवेदन किया कि इस ‘दाफ़िउल वसाविस’ पुस्तक में उन फ़क़ीरों और पीरज़ादों की ओर भी निमंत्रण तथा समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करने के रूप में एक पत्र सम्मिलित होना चाहिए था; जो दिन-रात कुरीतियों में डूबे हुए और इस सिलसिले को जिसे खुदा तआला ने अपने हाथ से स्थापित किया है अनभिज्ञ हैं। हुज़ूर को मौलवी साहिब का यह मशवरा पसन्द आया। हुज़ूर फ़रमाते हैं-

“मेरा इरादा था कि यह पत्र उर्दू में लिखूं परन्तु रात को कुछ इल्हामी संकेतों से ऐसा ज्ञात हुआ कि यह पत्र अरबी में लिखना चाहिए। और यह भी इल्हाम हुआ कि उन लोगों पर बहुत कम प्रभाव पड़ेगा, हां समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा होगा।”

(आईना कमाला-ए-इस्लाम रूहानी खजायन जिल्द 5 पृष्ठ – 360)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह पत्र अरबी भाषा में बहुत सरस, सुबोध, (फ़सीह, बलीग), मुक़फ़्फ़ा (अनुप्रासात्मक) और मुसज्जअ (वह बात जो पद्यों के रूप में हो) इबारतों में लिखा जो स्वयं में ही आप की सच्चाई का एक जीवित निशान है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अरबी पुस्तकों से संबंधित हम रूहानी खजायन की सातवीं जिल्द की प्रस्तावना में एक विस्तृत नोट देंगे, इन्शा अल्लाह तआला।

जलालुद्दीन ‘शम्स’

अपनी जमाअत के लिए कुछ शेर नसीहत और इस्लाम की ओर बुलाने के लिए

بکوشید اے جوانانِ تابہ دین قوت شود پیدا
بہار و رونق اندر روضہٴ مِلّت شود پیدا

हे जवानो! कोशिश करो कि धर्म में शक्ति पैदा हो और मिल्लत-ए-इस्लाम के बाग में बहार और शोभा आए।

اگر یارانِ کنون بر غُرَبِ اسلام رحم آرید
باصحابِ نبی نزد خدا نسبت شود پیدا

हे दोस्तो! यदि अब तुम इस्लाम की दयनीय स्थिति पर दया करो तो खुदा के समीप तुम्हें आहंज़रत^प के सहाबा से अनुकूलता पैदा हो जाए।

نفاق و اختلافِ ناشناسان از میان خیزد
کمالِ اتفاق و خُلّت و اُلُفت شود پیدا

अपात्र लोगों का आपसी मतभेद और फूट दूर हो जाए तथा उत्कृष्ट श्रेणी की एकता, मित्रता और प्रेम पैदा हो जाए।

بجنبید از پئے کوشش کہ از درگاہِ ربّانی
ز بہرِ ناصرانِ دینِ حق نصرت شود پیدا

कोशिश के लिए हरकत (गति) में आओ कि खुदा की दरगाह से इस्लाम के सहायकों के लिए अवश्य सहायता प्रकट होगी।

اگر امروز فکرِ عزّتِ دین در شما جوشد
شما را نیز و اللہ رتبت و عزت شود پیدا

यदि धर्म के सम्मान का विचार तुम्हारे दिल में जोश मारे तो खुदा की क्रसम स्वयं तुम्हारे लिए भी सम्मान और प्रतिष्ठा पैदा हो जाए।

اگر دستِ عطا در نصرتِ اسلام بکشائید
ہم از بہرِ شما ناگہ یدِ قدرت شود پیدا

यदि तुम इस्लाम की सहायता में अपनी दानशीलता का हाथ खोल दो तो

तुरन्त तुम्हारे अपने लिए भी खुदा की कुदरत का हाथ प्रकट हो जाए।

زبذل مال در راهش کسے مفلس نمی گردد
خدا خود میشود ناصر اگر همت شود پیدا

उसके मार्ग में माल खर्च करने से कोई दरिद्र नहीं हो जाता यदि हिम्मत पैदा हो जाए तो खुदा स्वयं ही सहायक बन जाता है।

دو روز عمر خود در کار دین کوشید اے یاران
کہ آخر ساعت رحلت بصد حسرت شود پیدا

हे दोस्तो! अपनी आयु के दो दिन धर्म के कार्य में गुज़ारो कि अन्ततः मौत का समय सैकड़ों निराशाएं लेकर आ जाएगा।

امید دین روا گردان امید تو روا گردد
ز صد نومیدی و یاس و الم رحمت شود پیدا

तू धर्म की आशा पूर्ण कर ताकि तेरी आशाएं पूर्ण हों, सैकड़ों निराशाओं, अवसाद और शोक के बाद खुदा की रहमत पैदा हो जाएगी।

در انصارِ نبیٰ بنگر کہ چون شد کار تادانی
کہ از تائید دین سرچشمہء دولت شود پیدا

आहंजतरत^१ के सहायकों की ओर देख कि उन्होंने किस प्रकार कार्य किया ताकि तुझे पता लगे कि धर्म की सहायता करने से दौलत का स्रोत पैदा हो जाता है।

بجواز جان و دل تا خدمتے از دست تو آید
بقائے جاودان یابی گراین شربت شود پیدا

पूर्णतयः समर्पण की भावना से कोशिश कर ताकि तेरे हाथों से कोई इस्लाम की सेवा हो जाए। यदि यह शर्बत पैदा हो जाए तो तू अनश्वर जीवन प्राप्त कर लेगा।

بمفت این اجر نصرت را دہندت اے انی ورنہ
قضائے آسمان ست این بہر حالت شود پیدا

हे भाई ! तुझे मुफ्त में सहायता का यह बदला दे रहे हैं अन्यथा यह तो

आकाशीय फैसला है जो अवश्य होकर रहेगा।

ہمی بینم کہ دادار قدیر و پاک می خواہد
کہ باز آن قوتِ اسلام و آن شوکت شود پیدا

मैं तो यह देख रहा हूँ कि शक्तिमान एवं पावन ख़ुदा की इच्छा यह है कि इस्लाम की वह शक्ति और वैभव फिर से पैदा हो जाए।

کریمہ صد کرم کن بر کسے کو ناصرِ دین است
بلائے او بگردان گر گہے آفت شود پیدا

हे दयालु ख़ुदा! सैकड़ों मेहरबानियां उस व्यक्ति पर कर जो धर्म का सहायक है। यदि कभी संकट आए तो उस संकट को टाल दे।

چنان خوش دار او را اے خدائے قادر مطلق
کہ در ہر کاروبار و حال او جنت شود پیدا

हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! उसे ऐसा प्रसन्न रख कि उसकी हालत और समस्त कारोबार में एक स्वर्ग पैदा हो जाए।

در لُج و درد قوم من ندائے من نے شنود
زہر درے دہم پندش مگر عبرت شود پیدا

अफ़सोस मेरी क़ौम मेरे पुकार को नहीं सुनती, मैं तो हर प्रकार से उसे नसीहत करता हूँ, काश उसको मानसिक खेद हो।

مرا باور نمی آید کہ چشم خویش بکشاند
مگر وقتی کہ خوف و عفت و خشیت شود پیدا

मुझे विश्वास नहीं होता कि ये लोग कभी अपनी आंखें खोलेंगे, किन्तु केवल उस समय जब संयम, नेक चलनी, और ख़ुदा का भय उनमें पैदा हो जाएगा।

مرا دجال و کذاب و بتر از کافران فہمند
نمی دانم چرا از نور حق نفرت شود پیدا

ये तो तुझे दज्जाल, झूठा और काफ़िरों से भी अधिक बुरा समझते हैं। मैं नहीं जानता कि उन्हें ख़ुदा के प्रकाश से क्यों घृणा हो गई है।

عجب دارید اے ناآشنا یان غافلان از دین
کہ از حق چشمہ حیوان درین ظلمت شو پید

हे धर्म से लापरवाह और अपरिचित लोगो! क्या तुम्हें आश्चर्य होता है कि इस अंधकार में खुदा की ओर से जीवन का एक झरना पैदा हो गया है।

چرا انسان تعجب ہا کند در فکر این معنی
کہ خواب آلودگان را رافع غفلت شود پید

मनुष्य यह बात सोच कर क्यों आश्चर्य चकित हो कि नींद के धनी लोगों के लिए एक लापरवाही को दूर करने वाला पैदा हो गया।

فرا موشت شد اے قوم احادیث نبی اللہ
کہ نزد ہر صدی یک مصلح امت شود پید

हे मेरी क्रौम! तू खुदा के रसूल की हदीसों को भी भूल गई कि हर शताब्दी के आरम्भ में उम्मत के लिए एक सुधारक पैदा हुआ करता है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

رَبِّ يَسِّرْ وَلَا تُعَسِّرْ وَتَمِّمْ بِالْخَيْرِ

अर्थात हे मेरे रब्ब! आसानी पैदा कर और तंगी पैदा न कर और भली-भांति

(इस काम को) पूरा कर।

نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ

हे सदैव जीवित और कायम रहने वाले और दूसरों को जीवन और सहारा देने वाले मैं तेरी रहमत चाहता हूँ।

مَحَبَّتِ تُو دَوَائِ ہزار بیماری است بروئے تو کہ رہائی درین گرفتاری است

तेरा प्रेम हजार रोगों की दवा है। तेरे मुंह की क्रसम कि इस गिरफ्तारी में ही वास्तविक स्वतंत्रता है।

پناہِ رُوئے تو جستن نہ طورِ مستان است کہ آمدن بہ پناہت کمال ہُشیاری است

तेरी शरण ढूंढना पागलों का तौर तरीका नहीं है बल्कि तेरी शरण में आना ही तो उत्कृष्ट श्रेणी की बुद्धिमत्ता है।

متاعِ مہرِ رُخِ تُو نہانِ نخواست داشت کہ خفیہ داشتنِ عشقِ تُو زِ غداری است

मैं तेरे प्रेम की दौलत को कदापि नहीं छुपाऊंगा कि तेरे प्रेम को छुपाना भी एक गद्दारी है।

بر آن سرم کہ سرو جان فدائے تو بکنم کہ جان بیار سپردن حقیقت یاری است

मैं तैयार हूँ कि जान और दिल तुझ पर न्योछावर कर दूँ क्योंकि जान को प्रियतम के सुपुर्द कर देना ही वास्तविक मित्रता है।

सारी प्रशंसाएँ उस ख़ुदा के लिए हैं जिसने मोमिनों की आँखों को ईमान (विश्वास) के दीपकों से रौशन किया और अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को समझाकर अध्यात्मज्ञानियों के दिलों को दृढ़ता प्रदान की और उनको ऐसी गूढ़ बातें और

भेद एवं ज्ञान प्रदान किए जो उस व्यक्ति के अतिरिक्त किसी और को नहीं दिए जाते जिसको रहमान खुदा की ओर से ईशवाणी की गई हो और उनको ज़मीन के सूरज और न्याय का प्रमाण और शान्ति का रक्षक बनाया और पूरब एवं पच्छिम में उनकी बातों को फैलाया और उनके गुणगान को दुनिया के कोने-2 तक पहुँचाया और उनको जीवन के पानी का ऐसा घाट बनाया जिसका पानी कभी नहीं सूखता और ऐसा साधन बनाया जो कभी खराब नहीं होता और उनके दुश्मनों को खाए हुए भूसे की तरह बना दिया या फलों से रहित टूट-टूटकर गिरने वाली सूखी टहनी की तरह कर दिया और उन पर ईमान लाने वालों को सौभाग्यशाली बनाया, न तो वे शर्मिन्दा होते हैं और न ही उन्हें बुराई का धुँवा पहुँचता है और न ही किसी व्यंग करने वाले व्यंग उनको हानि पहुँचाता है। उन्होंने अपने देशों से पलायन किया और सांसारिक मोहमाया त्यागकर रहमान खुदा पर भरोसा किया तो उनके चाँद की रौशनी दूसरे सितारों से बढ़ गई और उनका फल बहुत बढ़ गया और उनसे दुश्मनी करना दुर्भाग्य है और उन्हें कष्ट देना (मानो) दरिद्र और अभागे मूर्ख का चोला पहनना है।

अतः हम नेमतों (वदान्यताओं) पर उस खुदा की स्तुति करते हैं कि उसने लोगों को ग़फ़लत की नींद और शैतान के हाथों से छुड़ाने के लिए अपने नबी खलीफ़े और औलिया भेजे। जिस खुदा ने लोगों को बुतों की गन्दगी से पवित्र किया और गन्दगी और नाफ़रमानी के पेड़ों पर कुल्हाड़ा चलाया, वह बहुत बुद्धिमत्ता वाला और प्रेम करने वाला बादशाह है जिसने संसार को रौशन करने के लिए सूरज और चाँद बनाया और मानव जाति के दिलों को रौशन करने के लिए नबियों, रसूलों और मुहद्दसीन (खुदा से संवाद का सौभाग्य पाने वालों) को पैदा किया, और शरीअत को क़ायम किया और उस शरीअत की गूढ़ और जटिल बातों में रहनुमाई के लिए युग की महान विभूतियों और समय के धैर्यवान लोगों को रखा। वह पवित्र है, उसकी शान क्या ही महान है। वह रसूलों को भेजने वाला और रास्तों को आसान करने वाला और सच्ची आस्था एवं आचार-व्यवहार के ढंगों की नींव डालने वाला और हर ज़माने में निर्णायक तर्क पूर्ण करने वाला है। और हर दिन वह एक नई

शान में होता है। हर महान व्यक्तित्व में उसने रहस्य रख दिए और उसको उनसे मालामाल कर दिया। मनुष्य उसके रहस्यों को किस तरह पूर्णतः समझ सकता है। तुम केवल बुद्धि की परिधि (सीमा) में ही न बैठे रहो।

जबकि बुद्धि की छावनी का प्रारम्भिक स्तम्भ ही गिर चुका है। इसलिए निश्छल आज्ञापालन करते हुए और दिलों से अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों के लगाव को निकालते हुए उसकी ओर दौड़ो। हर ऐसे संवेदन हीन और अंहकारी के लिए अमंगल और बर्बादी है जिसने अपनी जान को ज़ख्मी किया और नष्ट कर दिया। और उसके लिए सुमंगल (मुबारक) है जो रहमान खुदा की राहों पर इस तरह चलने की कोशिश की कि उसने अपनी पूरी ताकत लगा दी। और अल्लाह के रसूलों के सरदार उसके नबियों के गौरव, उसके औलियाओं के इमाम, उसके नूरों के नूर और उसकी रौशनी के सार अर्थात् मुबारक नबी उम्मी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हर एक प्रकार की रहमत और बरकत और सलामती हो जिसने अधम और नीच लोगों की, सन्मार्ग की ओर अगुवाई की और पाशविक प्रवृत्ति लोगों की बीमारी को दूर किया और अनुसरण करने वालों के लिए कुर्आन करीम के आदेशों को अत्युत्तम ढंग से बयान किया और अपने युक्तिपूर्ण ज्ञानों का स्रोत मूसलाधार वर्षा की भाँति बहाया और ऐसी किताब लाया जिसमें हर चरने वाले के लिए चरागाह और हर प्यासे के लिए अमृत है। उसने अन्धकार में पड़े हुआओं को तीन अंधेरों से निकाला। 1. ऐसी दुष्टता से जो स्वर्ग से निकाल फेंकती है। 2. ऐसे कर्मों से जो आग में जलाने का कारण बनते हैं। 3. ऐसी अनैतिकताओं से जो मानवीय प्रवृत्ति को साँपों और िहंसक पशुओं की प्रवृत्ति में बदलने वाली है।

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह सदुपदेशक हैं जिन्होंने लोगों से अत्यन्त सहानुभूति की और लोगों को गहरी नींद से जगाया और आध्यात्मिक रूप से कमजोरों को पंख दिए और उन्हें पंख खोलने और उड़ने की शक्ति प्रदान की।

उन्होंने लोगों की हिदायत के सबसे सीधे मार्ग की ओर अगुवाई की और

लोगों को संतुलित ढंग पर चलाया और इस क्रौम (उम्मत) को उच्चकोटि की क्रौम बनाया जो प्रकाश में पिछली क्रौमों से आगे बढ़ गई। मानो यह (उम्मत) सूरज और चाँद है। और उसने उनको अपनी दिव्यशक्ति से ऐसा आकर्षित किया कि उन्होंने हर क्षेत्र और रणभूमि में पूर्णतः आज्ञापालक बनकर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ दिया। आप ने उनको (ज्ञान एवं अध्यात्म के) उच्चकोटि तक पहुँचाया और उन (लोगों) को पेड़ों की तरह ऐसा सींचा कि उन पर ख़ूब फ़ल लगे और वे ख़ूब मोटे हो गए और टहनियाँ झुक गयीं। फिर वे रहमान ख़ुदा की प्रसन्नता को पाने के लिए गंभीरता से कोशिश करते हुए और अपने प्राणों को दाँव पर लगाते हुए अल्लाह के दीन (धर्म) को स्वीकार कर लिया। वे बहुत ही हिलाए और डगमगाए गए। यहाँ तक कि वह काम उनके लिए तंगी का कारण बन गया और मुसीबत बहुत ही संगीन हो गई। फिर भी वे ग़रीबी और कमज़ोरी के बावजूद अकेले ही अल्लाह के फैसले पर राज़ी रहते हुए चल पड़े। यहाँ तक कि उन पर ख़ुदा की सहायता का सूर्य उदय हो गया और उन्होंने खुशी-ख़ुशी आराम दायक और सुगंधित वातावरण में पड़ाव किया। और वे अपनी पूरी ताकत के साथ अद्वितीय ख़ुदा के दरबार में दाखिल हुए और उन्होंने उस दरबार तक पहुँचने से रोकने वाली जंजीरों और रुकावट पैदा करने वाली मूर्तियाँ तोड़ दिया और अपने आपको इस्लाम पर आने वाली मुसीबतों को रोकने के लिए ढाल बनाया और इन दुखों के सामने अपने सारे व्यक्तिगत पुराने दुख भूल गए और उन्होंने अपनी रातें ख़ुदा के समक्ष दुआओं में गुज़ारीं और नींद का बहुत ही कम आनन्द लिया। वे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अनुसरण में तन, मन, धन से लग गए और नए-नए आडम्बरों में नहीं पड़े और मार्ग को अपनाने में उपकारी ख़ुदा की किताब से बाहर नहीं निकले और वे ख़ुदा के शान्ति और संतुष्टि प्रदान करने वाले धर्म के लिए हर प्रकार के भयानक स्थान में प्रवेश कर गए और ख़ुदा और उसके रसूल के खातिर हर एक घनिष्ठ मित्र से अलग हो गए यहाँ तक कि तलवारें म्यान से निकल आयीं। और उन्होंने फटे-पुराने वस्त्रों को अहंकारी और नाज़ो नखरे वाले वस्त्रों पर प्रधानता

दी और स्वादिष्ट खानों और आराम को अपने से दूर कर दिया और ठण्डे शर्बत के मुकाबले में गर्म पानी पर संतुष्ट हो गए और सांसारिकता उन्हें अपनी निगाहों में मुर्दे के समान दिखाई देने लगी। और उन्होंने कथनी और करनी में खुदा के तक्रवा (संयम) का हक अदा कर दिया।

और वे धृष्टता और दंगा-फ़साद पैदा करने वाली भड़काऊ बातों के करने से डरे यहाँ तक कि वे चुप रहने और जुबान को बातचीत से रोकने में अत्यन्त शर्मीली कुँवारी लड़की की तरह हो गए। और उन्होंने अपनी कथनी-करनी, चाल-चलन, आचार-व्यवहार और आचरण के सुधार और साज-सज्जा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदर्श का अनुकरण किया। फिर अल्लाह ने उन्हें ऐसा दिल दिया जो सच्चाई के साथ ढलने वाला है और ऐसी जुबान दी जो सच्चाई के श्रृंगार से सुसज्जित है और ऐसा दिल दिया जो ईर्ष्या-द्वेष और दुश्मनी से रहित है। अल्लाह तआला उनसे खुश हो गया और उनको अपनी पसन्द की जन्नतों में ठहराया। हमारे पास उनकी शुभ-चर्चा की गई। क्योंकि वे हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने का प्रमाण और हमारे आक्रा व मौला की सच्चाई की दलील और सन्मार्ग के सितारे और विश्वास के माध्यम हैं। उनमें से हर एक खुदा की राह में दुःख दिया गया और जो उस पर ज़िम्मेदारी डाली गई उसकी अदायगी में उसे दुःख दिया गया और भाले और तलवार से डराया गया लेकिन वे न तो कमज़ोर हुए और न डरे यहाँ तक कि उन्होंने अपनी मन्नत पूरी कर ली और खुदा तआला को नाशवान अस्तित्व पर प्रधानता दी। वे एक ऐसी रूहानी उम्मत और कौम थे जिन्हें दोस्तों में से सबसे अधिक प्रिय दोस्त (अर्थात् आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम -अनुवादक) के लिए तकलीफ़ दी गई। अतः हे लोगो! उस रसूल पर दुरुद और सलामती भेजो जिसके क्रदमों पर लोग इकट्ठे किए गए और अत्यन्त उपकारी और दयालु खुदा की ओर खींचे गए। जिसने अनगिनत लोगों को कष्टदायक और नष्ट कर देने वाले वीरान जंगल से शान्ति एवं सौहार्द की जन्नतों की ओर निकाला और उसने डरे हुए दिलों को हौसला दिया और थकी हुई हिम्मतों को मज़बूत किया और खोए हुए ज्ञान एवं

नैतिकता के मार्गों को नए सिरे से व्यवहृत किया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुन्दर पारदर्शी मोती और अनमोल रत्न और मूँगे लेकर आए और आपने नियम बनाए और अक्लों को शिष्टाचार सिखाया। और बहुत से लोगों को अधर्म, अन्धकार और सरकशी की कैद से मुक्ति दी। और उन मोमिन मुसलमानों को जो आपकी भलाई के अभिलाषी विश्वास, शान्ति और संतुष्टि का जाम पिलाया और उनको दुष्टता, लड़ाई-झगड़े और नुकसान की राहों से बचाया और नेकी, भलाई और एहसान के तमाम् रास्तों की ओर उनका मार्गदर्शन किया।

और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपकारों में से एक उपकार यह भी है कि आपने हमें आखिरी ज़माने (अर्थात् कलियुग) की बुराइयों और उपद्रवों से सचेत किया। फिर हमें महान उपकारी खुदा की ओर से सहायता और समर्थन और उन (उपद्रवों के) दूर करने की शुभ सूचना भी दी।

हे अल्लाह! तू उस शफ़ाअत करने वाले रसूल पर दुरूद व सलाम भेज जिसकी शफ़ाअत (सिफ़ारिश) कुबूल की जाएगी जो मानवजाति को मोक्ष दिलाने वाला है। और हमारी सहायता कर कि हम उस बादशाह के पास से भलाई और बरकत पाएं और हमें उसके द्वारा हर ऐसे हाथ के कष्ट से मुक्ति दे जो सत्य से दूर और अत्याचार में बढ़ा हुआ है और ऐसे उलमा से भी हमें बचा जो अपने भाइयों के दोष ढूँढते फिरते हैं और अपने दोष पूर्णतः भूल जाते हैं। उनकी जुबान गाली-गलौज, लान-तान और आरोप लगाने से नहीं रुकती, लेकिन सच्ची गवाही और सच्चाई के बयान और प्रमाण प्रस्तुत करने के समय गूँगी हो जाती है। दूसरों को उपदेश देते हैं लेकिन खुद नसीहत नहीं पकड़ते। वे (भाई-बन्दों को) छोड़ते हैं और उनको नहीं बुलाते, और जो वे कहते हैं वह करते नहीं हैं। वे फ़साद फैलाते हैं मगर सुधार नहीं करते। वे तोड़ते हैं और जोड़ते नहीं। बिना ज्ञान के कुफ़्र का फ़त्वा देते हैं और तनिक भी नहीं डरते। वे लोगों को नेकी करने को कहते हैं मगर खुद अपनी धृष्टता से चिमटे हुए हैं। वे मोमिन (सदाचारी) को कहते हैं कि तू मोमिन नहीं है और अल्लाह तआला की पकड़ की परवाह नहीं करते और न ही सोच-विचार से काम लेते हैं। हे अल्लाह! हमें उनके फ़ितने से

बचा और हमें उनके लांछन से बचा और अपनी रक्षा, प्रतिष्ठा और भलाई के साथ विशिष्ट कर और हमें अपने सिवा दूसरों की शरण में न दे और हमें ऐसे नेक कामों का समर्थन दे जिनसे तू प्रसन्न हो जाए। हम तुझ से तेरी रहमत, तेरी अनुकंपा और तेरी प्रसन्नता माँगते हैं और तू रहम करने वालों में सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।

हे खुदा! अपने फ़ज़ल से तू मेरी शक्ति बन जा। और जो मेरी आँख और दिल में है उसे रौशन कर दे, और मेरी ज़िन्दगी और मौत का लक्ष्य और उद्देश्य बन जा और प्रेम के रूप में मेरे दिल में समा जा और मुझसे इतना प्रेम कर कि उससे ज़्यादा मेरे बाद किसी को न मिले। हे मेरे पालनहार! मेरी दुआ क़बूल कर और मेरी चाहत मुझे प्रदान कर और मेरी अन्तरात्मा को स्वच्छ कर और मुझे सान्त्वना दे और मुझे अपनी ओर खींच ले और मेरा मार्गदर्शन कर और मेरी सहायता कर और मुझे सामर्थ्य दे, और मेरी अन्तरात्मा को पवित्र कर और मुझे अपना ज्ञान प्रदान कर और मुझे पूर्णतः अपना बना ले और पूर्णतः मेरा हो जा।

हे मेरे खुदा! मेरी ओर हर तरफ़ से आ और मेरी हर रुकावट को दूर कर दे और हर प्रकार के ज्ञान का प्याला पिला और तामसिक आवेगों और उनकी ओर झुकावों से निपटने में मेरी सहायता कर और नाता तोड़ने की बर्बादियों और उसके अन्धकारों से मुझे बचा और मुझे एक पल के लिए भी मेरे मन के अधीन न कर और इसकी बुराइयों से मुझे बचा और मुझे अपनी ओर उठा, और मेरे अस्तित्व के कण-कण में समा कर जा और मुझे ऐसे लोगों में से बना जिनके तैरने का स्थान तेरा सागर और जिनकी चरागाह तेरे नूरों के बाग़ हैं, जिनकी आशा तेरी अनवरत शक्तियों के नीचे है और तू मेरे और अपने दुश्मनों के बीच दूरी डाल दे। हे मेरे रब! अपनी कृपा और अपने रूप के तेज से मुझे अपना सौन्दर्य और छटा दिखला और अपना अमृत मुझे पिला और हर प्रकार के अन्धकार के पर्दों और गन्दगी से मुझे निकाल और मुझे उन लोगों में से न बना जो अन्धकार के गड्ढों में अँधे मुँह गिराए गए और बरकतों नूरों और रौशनियों से दूर चले गए और वे अपनी तुच्छ बुद्धि से मुँह फ़ेर लेने के कारण अमन-शान्ति से परिपूर्ण

नेमतों वाले घर से तबाही और बर्बादी वाले घर की तरफ़ लौट गए। मुझे अपनी इच्छा के अनुरूप विशेष आज्ञापालन का सामर्थ्य दे। और अपनी चौखट पर हमेशा सिज्दा करने का सामर्थ्य प्रदान कर, और मुझे ऐसा धैर्य प्रदान कर जिसमें तेरी कृपा का श्रोत फूट पड़े और मुझे वह चीज़ दे जो तू अपने प्रिय भक्तों में से किसी एक को देता है और मुझ पर ऐसी रहमत नाज़िल कर जो अपने प्यारों में से केवल विशिष्ट लोगों पर करता है। हे मेरे रब्ब! इस्लाम को मेरी कोशिश और हिम्मत और मेरी दुआ और मेरी बातों से ज़िन्दा कर दे और मेरे द्वारा उसके चेहरे का रंग-रूप, वैभव और चमक-दमक पुनः ले आ। और प्रत्येक दुश्मन और उसके अहंकार को चकनाचूर कर दे। हे मेरे रब्ब! मुझे दिखा दे कि तू मुझे किस तरह ज़िन्दा करता है। मुझे मोमिनाना (सदाचार) प्रवृत्ति वाले चेहरे और यमन की हिकमत वाले लोग दिखा। और ऐसी आँखें दिखा जो तेरे डर से रोने वाली हों, और तेरी याद करते समय काँपने वाले दिल दिखा और ऐसे निश्छल और पवित्र लोग दिखा जिनका मूल उद्देश्य सच्चाई और श्रेष्ठता हो और वे ब्रह्मलीनों और बड़े-बड़े ऋषियों मुनियों की श्रेणी में आते हों और मुझे ऐसी उच्च विशेषताओं वाले लोग दिखा जो तौबा की तरफ़ दौड़ने वाले और अन्त समय की तैयारी करने वाले हों।

हे मेरे रब्ब! जल-थल और आबादियों एवं जंगलों में उपद्रव फैल गया है। और मैं तेरे बन्दों को आजमाइश में और बागों को मरुस्थल में और तेरे दीन (धर्म) को तंगी और मुश्किलों में देखता हूँ और इस्लाम को जो बहुत समृद्ध था इस समय बहुत गरीब और मोहताज देखता हूँ, या काँपते हुए ऐसे बूढ़े की तरह देखता हूँ जो अपनी चमक-दमक खो चुका हो, या ऐसे बेवतन मुसाफ़िर और अजनबी आदमी की तरह देखता हूँ जो दोस्तों से अलग-थलग हो गया हो, या ऐसे आज़ाद व्यक्ति की तरह पाता हूँ जो गुलामी की जंजीरों में जकड़ा गया हो, या उस यतीम की तरह देखता हूँ जिसे नज़रों से गिरा दिया गया हो। झूठ अहंकार के कपड़ों में गर्व से चल रहा है और सच दुष्टों के हाथों से तमाँचे खा रहा है। वे इस इस्लाम के नूर को बुझाने के लिए जिन्नों की तरह कोशिश कर रहे हैं

पर अल्लाह बेहतर रक्षा करने वाला है और हमारे लिए उस कुशल मार्गदर्शक के अलावा कौन है? दीन (इस्लाम) की रौनक खत्म हो गई है। और नौजवानों में बुराई की चेचक और (इस्लाम से) विमुख होने का कोढ़ फूट पड़ा है। और वे इस्लामी शरीअत (क्रानून) की हद बन्दियों से बाहर निकल गए और अपने आपको चटियल मैदान में फेंक दिया है, (आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के) उत्तम आदर्शों को छोड़ दिया और भ्रष्ट दार्शनिकों को इमाम (मार्गदर्शक) बना लिया। और उनकी बातों को मीठी समझने लगे और उनके भ्रमों को श्रेष्ठ ठहराया। और यूरोपियन के विचारों के बछड़े का प्रेम उनके दिलों में घर कर गया। वे केवल एक ऐसे बेजान मूर्ति के समान हैं जिसका एक व्यर्थ सुर हो और उन्होंने ब्रह्मज्ञानियों की सुगन्ध को सूँघा तक नहीं। खुदा की क्रसम। मैं खुदा की ओर से खड़ा किया गया हूँ ताकि उसके आदेश से दीन (इस्लाम) को पुनः ज़िन्दा करूँ और झूठ की नाक उसकी जड़ से काट दूँ और मुझे अपार सामर्थ्य वाले खुदा की ओर से इस काम के लिए आदेश दिया गया है। अतः मैं आज्ञापालक की तरह उसके आदेश पर खड़ा हो गया और उसके आदेशों को खोलकर पहुंचा दिया और इसमें अपनी पूरी ताक़त लगा दी। फिर क्या था लोग मेरे अपने आपको खुदा से सम्बन्धित होने में शक में पड़ गए और मेरे दावे को सत्यापित करने से उन्होंने इन्कार कर दिया और इस दावे से उनकी बुद्धि और विवेक की गहराई और उनके उदाहत ज्ञानों के दावे की सच्चाई जाँची गई तो झूठे लोग भड़क उठे और मेरे बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे और काफ़िर (अधर्मी) ठहराते हुए मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए। हालाँकि उनके पास इसका खजूर की गुठली की लकीर के बराबर भी ज्ञान नहीं। उन्होंने उन बातों में दखल दिया जिनका उन्हें ज्ञान ही नहीं है। और उन्होंने लान-तान करने की राह अपनायी और सच्चाई की जाँच पड़ताल न की। और यह सब ईर्ष्या-द्वेष की आग के कारण था जिसने तपेदिक (टी.बी) की बीमारी की तरह उन्हें अपनी गिरफ्त में ले लिया और जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है तो मैं ऐसा नहीं हूँ कि अपने रब्ब के आदेश की नाफ़रमानी करूँ या अपनी ओर से ही उस पर झूठी बातें गढ़ूँ। वह मुझ पर उपकार करने

वाला और मुझे नेमतें देने वाला है और उसने मुझ पर अपार कृपा की और मुझ पर हर नेमत पूरी की और मुझे ऐसी तौफ़ीक दी जो हिदायत की ओर रहनुमाई करने वाली है और मुझे सच और यथार्थ तक पहुँचने की सूझबूझ दी है और मुझे वह कुछ दिया जो मेरे विरोधियों में से किसी को नहीं दिया गया और यह बात केवल रहमान ख़ुदा के उपकारों का वर्णन करने के लिए है। उसने मेरी परवरिश और देखभाल की और जो देना था वह दिया। और उसने मुझे परलोक एवं इहलोक की भलाई की शुभ सूचना दी। और वह मेरे निकट हुआ और मुझे अपने पास किया। और अपनी चौखट से मेरी प्रशंसा की और मेरे पास आया और मुझे आध्यात्मिकता के उच्च स्तरों तक पहुँचाया और यह सब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपकारों के कारण है।

छाया (अर्थात् प्रतिरूप -अनुवादक) ने अपने असल का अनुकरण किया जो उसने देखा। अब मैं किसी आलोचक की आलोचना और बुराईयाँ करने वाले से नहीं डरता और अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। यदि मैं झूठा हूँ तो मेरे झूठ का फ़ल मुझ पर है और यदि मैं सच्चा हूँ तो ख़ुदा सच्चे लोगों का काम कभी नष्ट नहीं करता।

सारा कष्ट यह है कि दीन (इस्लाम) के दुश्मनों ने हमारे पेशवा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीन करके हमारा चैन छीन लिया है और हमारे उलेमा की सारी कोशिश मुसलमानों को काफ़िर ठहराने और भाइयों को दीन और ईमान से ख़ारिज करने में बर्बाद हो गई है। यह बहुत बड़ी मुश्किल है जो इस्लाम पर आ पड़ी है। और बड़ी मुसीबत है जो लोगों में से सर्वश्रेष्ठ इन्सान के धर्म पर आ पड़ी है।

ज्ञान के सूरज डूब गए और फलदार वृक्ष कम हो गए और थूहर के वृक्षों की अधिकता हो गई और विद्वानों और भलेमानुषों के निशान और अवशेषों में से यदा-कदा के अतिरिक्त कुछ नहीं बचा। जब उन्होंने सच्चाई को खो दिया तो वे नाकारा रद्दी चीज़ की तरह हो गए। उलेमा पर अफ़सोस कि ये दुश्मन के मुक्राबले पर तो ऐसे लँगड़े और अन्धे ऊँट की तरह हो गए हैं जो जंगल की

फ़िसलने वाली जगह पर हो। लेकिन इस्लाम और मुसलमानों के लिए हिंसक पशुओं या आसमान से आने वाली मुसीबत की तरह हैं। इनमें ज्ञान, गम्भीरता, सूझबूझ और दूरदर्शिता शेष नहीं रही। ये तो केवल नाम के उलेमा हैं जो बुद्धि और विवेक से रहित हैं पर अहंकार और दिखावे से भरे हुए हैं सिवाय उन उलेमा के, कि जिनको महान ख़ुदा की कृपा ने बचा लिया हो और रहीम ख़ुदा की रहमत उन पर हुई हो। अतः वे इस बीमारी से रहित हैं, बल्कि वे इस महामारी के लिए विषनाशक (अमृत) के रूप में हैं और दुष्टों पर ख़ुदा की ओर से प्रमाण हैं। और वे प्रथम स्तर के सदाचारी, प्रतिष्ठित और सज्जन इन्सान हैं। उनके दिलों में इस्लाम का ऐसा जोश है कि इस सदी की ठण्डक उनको नहीं छूती। वे इस्लाम के सरदार हैं और लोगों में से सर्वश्रेष्ठ मनुष्य आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धर्म के स्तम्भ हैं और वे दीन (इस्लाम) के बादशाह हैं, उनके पास से भलाइयाँ हासिल की जाती हैं। और वे शरीअत (अर्थात् कुर्आन) के रहस्यों के ख़ज्ज़ाँची हैं और वे मूल और अंश (अर्थात् कुर्आन और हदीस इत्यादि) के ज्ञाता हैं। अल्लाह तआला उनको सकुशल रखे और ज़िन्दा रखे और उनसे दुश्मनी करने वालों से दुश्मनी करे और उनसे दोस्ती करने वालों से दोस्ती करे।

हे मेरे दीन (मज़हब) पर कुफ़्र (नास्तिकता) का लॉछन लगाने और व्यंग कसने वाले आलिमो और मुझ पर धर्म से विमुखता की तोहमत लगाकर लानत डालने वालो! क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारी बातों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों के बयान के बीच में क्यों रखा है? और मैं नहीं समझता कि तुम बिना बताए यह बात समझ सको। तुम जान लो कि इससे मेरे दो जुड़वाँ उद्देश्य हैं जिनके लिए मैंने कمر कसी है और दो मिलती-जुलती इच्छाएँ हैं जो मैंने धरती और आसमान के रब से माँगी हैं।

पहला उद्देश्य यह है कि मैं तुम्हें रसूले मक्बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उस हस्ती का वर्णन करके जिनके सिफ़ारिश की उम्मीद की जाती है और जिनकी महानता अक्लों से बढ़कर है और जिनका प्यार नामुराद के दुर्भाग्य को दूर करता है, अपनी ओर आकर्षित करूँ। अतः इसलिए मैंने तुम्हारा

वर्णन मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वर्णन के साथ इकट्ठे बयान किया, ताकि मैं उस पनाहगाह से तुम्हारे दिलों का इलाज पाऊँ और ताकि तुम खात्मुन्नबीयीन और उसकी महान शान और उसकी उस शक्ति को जो वस्तुतः निस्पृह ख़ुदा की शक्ति है, को याद करो और तुम पर शिष्टाचार, डर, गिड़गिड़ाहट और तक्रवा (संयम) छा जाए।

और तुम्हें सही और सच्चा विवेक और ख़ुदा से बहुत डरने वाला और तौबा करने वाला दिल मिले और तुम से वह सैलाब जो तुम्हारे पास आ पहुँचा है आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद करके दूर हो जाए और तुम्हारी चमड़ियां नरम हों और तुम्हारे दिल काँप उठें और तुम वह सुनो जो मैं तुमसे कहता हूँ और तुम हर एक इन्कार करने वाले का अनुसरण न करो। हे मेरे भाइयो! अल्लाह से डरो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपदेश पर प्रशिक्षित हो जाओ और उसके समक्ष विनम्र हो जाओ और घमण्ड न करो और सलामती में दाखिल हो जाओ और टुकड़े-टुकड़े मत हो। आज्ञापालन करो और तितर-बितर न हो जाओ और भाई-भाई बन जाओ और आपस में दुश्मनी न करो और परिवार से हमदर्दी और सहानुभूति का वर्ताव करो और सम्बन्ध विच्छेद मत करो और ख़ुदा का प्रेम पाने की राहें तलाश करो और िनराश न हो। और हे अल्लाह के बन्दो! अपनी जुबानों को रोको, और ज़्यादती (अत्याचार) मत करो। क्या तुम अपने सहपंथियों को अपने दीन (धर्म) से खारिज करते हो और डरते नहीं और अपने भाइयों को अकेला और बेसहारा छोड़ते हो और उनको नहीं बुलाते और अपने लिए (लोगों पर) गुस्सा करते हो और उनके लिए गुस्सा नहीं करते। और तुम अल्लाह के नियमों के पाबन्द, एक और अद्वय ख़ुदा को मानने वाले, नमाज़-रोज़ा के पाबन्द मुसलमानों को काफ़िर ठहराते हो और थोड़ी सी भी परवाह नहीं करते। क्या तुम्हारे कलिमा में तुम्हारे साथ शामिल लोग भी काफ़िर हैं।

तुम्हें क्या हो गया है तुम कैसे फ़ैसले करते हो? क्या तुम्हारे क्रिब्ल: में तुम्हारे मित्र (तुम्हारी नज़र में) पराए हैं? तुम देखो तो सही! तुम क्या कह रहे

हो? क्या हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दूर भागते हैं?

हे ज़्यादती करने वालो! अल्लाह से डरो क्या हमने अल्लाह और उसके रसूल का इन्कार किया है? हे झूठा आरोप लगाने वालो! अल्लाह से डरो। तुम भाइयों को गाली देने में दिलेरी करते हो जबकि खुदा ने तो तुम्हें बुतों (मूर्तियों) को भी गालियाँ देने से मना किया है और तुम फ़रमाँबदार मोमिन औरतों को दुःख देते हो।* जबकि खुदा ने तो तुम्हें मुश्रिक काफ़िर औरतों के क़त्ल से भी मना किया है। क्या मोमिनों को काफ़िर ठहराना नेकी है? और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के देहान्त की बात करना गुनाह है? तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारा तक्वा कहाँ गया? और किस चीज़ ने तुम्हें ढाँप रखा है (अर्थात् अपने वश में कर रखा है- अनुवादक) तुम्हारी बुद्धि और विवेक कहाँ खो गई है? और तुम्हारा ज्ञान और अध्यात्म कहाँ चला गया है? क्या तुम यहूदियों की पाठशाला में पढ़े हुए हो और झूठ पर झूठ बोलने की कला तुम्हें सिखाई गई है? तुम गन्दगी पर खुश हो गए हो जबकि तुम्हें सावधान रहने की नसीहत की गई थी। क्या तुम क्रयामत के दिन को भूल गए हो और शहद के छत्ते से चिपक जाने वाली मक्खियों की तरह इस्लाम के ठेकेदार बन गए हो? हे झूठ के पुजारियो! हिसाब-किताब के दिन से डरो। तुम तो केवल कुर्आन करीम का जाहिर ही जानते हो। फिर भी ज्ञानी और अध्यात्मज्ञानियों को झुठलाते हो। तुम तो किताब (अर्थात् कुर्आन) के केवल छिलके अर्थात् जाहिरी अर्थों पर ही संतुष्ट हो कर बैठे और तुम्हारी अक्ल ने तो मज़ (अर्थात् अन्दर के रहस्य -अनुवादक) को तो समझा ही नहीं। तुमने कुर्आन के जाहिरी और बाह्य हिस्से को ही लिया है। और तुम यह गुमान करते हो कि तुमने उसके कुएँ का सारा पानी पी लिया है और तुम में से वह भी है जिसने झूठे आरोपों को रंगीन बनाया और अनर्गल और नीच बातों के करने में सबसे आगे बढ़ गया और उसने जंगली उँटनी की तरह काटना शुरू किया और उसने लोगों को भ्रम में डालकर और चक्कर देकर सिर के बल गिरा दिया और उसने हर दुष्ट और दुःशील को मुझ पर हमला करने के लिए उभारा और उसने मेरी बातों में रद्दो-बदल किया और उन्हें चुहिया की तरह काटा और मेरी

तौहीन और अपमान में जल्दी की, और मेरे सम्मान को पागलों की तरह तार-तार किया। और सरहद के वासियों की ओर तेज़ी से गया ताकि उन्हें कुरआन और हदीस के आदेशों के मतभेदों के द्वारा तबाह करे। तो उसके गलतियों में उलझाने के कारण वे राय में कमज़ोर हो गए और उनके पाँव फ़िसल गए और उन्होंने अपनी जुबानें लम्बी कीं और उसके उकसाने से जुबानों के तीर आर-पार किए और सच को क़बूल करने से नाक-भौंह चढ़ाया और उन्होंने उस उकसाने वाले की नाक की झड़न (अर्थात् गंदगी) खायी। फिर क्या था हर जुबान दराज़ ने मुझ पर लानत डाली और गाली-गलौज किया और हर लूला-लँगड़ा मुझ पर गुराया और हर अन्धी ऊँटनी ने मुझे रौंदा, और हर तीरन्दाज़ ने अपना तीर चलाया और थोड़ी सी भी देर न की। अतः हम पर गाली-गलौज, लान-तान और अत्याचार की बारिश हुई। यहाँ तक कि ज़मीन दलदल बन गई और हर छोटा-बड़ा हमारे खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ और लान-तान और काफ़िर-काफ़िर कहना और अपमान करना न छोड़ा।

और चुहिया के क़ुर्आन के पन्ने कुतरने की तरह उन्होंने मेरे सम्मान को टुकड़े-टुकड़े किया। और उन्होंने मुझ पर ऐसे हमले किए जैसे कि एक हब्शी (अबरहा) ने रहमान ख़ुदा के घर (काबा शरीफ़) पर हमला किया था। फिर जब मैंने फ़साद के लिए उनकी हाँडी का उबाल देखा और उनके झुठलाने और फ़िल्ना भड़काने और धुत्कारने का जोर देखा, तो तूफ़ान की लहरों की तरह मेरे खिलाफ़ उनके जमा हो जाने के कारण मैंने रहमान ख़ुदा से रो-रोकर फ़रियाद की। अतः अल्लाह ने मेरी दुआ और मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना और मुझे अपने पास से सफलताओं की शुभसूचना दी। और अपनी आसमानी फ़ौज से सहायता करने की खुशख़बरी दी और फ़रमाया कि, तू न डर मैं निःसन्देह तेरे साथ हूँ और तेरे क़दम-क़दम पर मेरा साथ है। तेरा स्थान मेरे पास वह है जिसे दुनिया नहीं जानती। जो मैंने चाहा वह तुझमें पाया। मैं उसको रुसवा करने वाला हूँ जिसने तुझे रुसवा करने का इरादा किया। और मैं उसकी सहायता करूँगा जिसने तेरी सहायता करने की ठानी। तू मुझ में से है और तेरा राज़ मेरा राज़ है। और

तू मेरी चाहत है और मेरे साथ है। तू मेरे निकट बड़ी शान वाला है। मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया है। यह है जो मेरे रब्ब और मेरी पनाह ने मेरी ज़रूरत के समय मुझे खुशखबरी दी है। और खुदा की क्रसम! यदि संसार के सारे बादशाह मेरी आज्ञापालन करते और सारी दुनिया के खजानों के मुँह मुझ पर खोल दिए जाते तो ये भी मुझे खुदा की इस खुशखबरी जैसी खुशी न देते।

हे मेरे रब्ब! मैं पूरी तरह तेरी नेमतों से भर गया हूँ। मुझे तेरी नेमतों के सागर में से पिलाया गया है। हे मेरे रब्ब! मेरी शुक्रिया (धन्यवाद) को अपने आसमान के किनारों तक पहुँचा दे। और तू आ और मेरे दिल में अपने सारे तेज के साथ प्रवेश कर जा। मैंने निःसन्देह तुझे और तेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरों पर प्रधानता दी है, और मैंने अपनी सांसारिकता को त्याग दिया और तेरे प्रेम की चाहत रखते हुए आया, और यह मेरे शैर तेरे लिए ही हैं। तू ही मेरा महबूब है और तू ही मेरा अन्दर है और तू ही मेरा बाहर है (अर्थात् तू ही मेरा सब कुछ है -अनुवादक)।

ننگ و نام و عزّت دُنیا و امان ریختیم یار آمیز و مگر بامانجاک آمیختیم

शर्म, शोहरत और सम्मान हमने सारा अपनी झोली से फेंक दिया और मिट्टी में मिल गए (ताकि इस तरह) शायद महबूब मिल जाए।

دل بدو ایم از کف و جان در ربی انداختیم و از پی وصل نگاری حیلہ با انگیختیم

हमने दिल और जान उसकी राह में कुर्बान कर दिया और महबूब को पाने के लिए हर उपाय आजमाया।

फिर पुनः अपनी पहली बात और बड़े दुःख का बयान शुरू करता हूँ और वह यह है कि कोई ऐसा तीर नहीं जो उलेमा ने मुझ पर न चलाया हो और कोई ऐसा दुःख नहीं जो उन्होंने मुझे न दिया हो और मुझ पर ऐसे लाँछनों की बारिश की कि जिनकी न कोई बुनियाद है और न ही कोई नामोनिशान। और उन्होंने मेरी निन्दा करने में न कोई गद्य छोड़ा और न ही कोई पद्य।* फिर जब मैंने उनको सच से दूर जाते और भ्रम में पड़ते हुए देखा तो मैंने इस किताब के लिखने के अतिरिक्त और कोई उपाय न पाया। फिर मैंने इसको बहते हुए आंसुओं और

बढ़ते हुए दुःख और दर्द से लिखा और उनके सन्देहों को दूर करने और उनकी गलतियों को उजागर करने की भरपूर कोशिश की। और मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह इस में बहुत ज्यादा बरकत डाल दे और संकीर्ण विचार रखने वालों के दिलों में इसके यथार्थ अर्थ भर दे। और अब मैं इससे बरी हूँ जो ये कहते हैं और अल्लाह जानता है वे नहीं जानते, कि मैं काफ़िरो, (अधर्मियों) नास्तिकों और मूर्तदों (अर्थात् धर्म से विमुख होने वालों) में से नहीं हूँ। मैं तो क़ैदियों के बीच केवल यूसुफ़ की तरह हूँ।

निःसन्देह मुझे इसलिए भेजा गया है कि मैं उनसे उनके तौक्र (अर्थात् झूठी और रूढ़िवादी परम्पराओं के फन्दे-अनुवादक) उतारूँ और उनकी बेड़ियाँ खोलूँ। फिर मैं उनके काफ़िर ठहराने से कैसे डर सकता हूँ जबकि मैं उनके हाल से परिचित हूँ और जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो वह गड्ढों (में पड़े हुए लोगों) से नहीं डरता और खुदा से मुलाक़ात का जाम पीता है वह काफ़िर-काफ़िर कहने वाले गुमराह की परवाह नहीं करता। मैं निःसन्देह जानता हूँ कि जो मैं (सुरैया) सितारे से लाया हूँ वह मेरे रब्ब की तरफ़ से है। अतः लोमड़ी का शोर मचाना मुझे बेचैन नहीं कर सकता। इसलिए अल्लाह से डरो और अपने थोड़े से ज्ञान पर अकड़कर न चलो और लोगों को अपने मातम पर न बुलाओ। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अपने मुँहों को लगाम नहीं देते और न उनको रोकते हो, और न अकड़ और घमण्ड को छोड़ते हो, और अपने उकसावे पर खुश होते हो और तुम मूर्ख होकर लोगों को काफ़िर ठहराते हो और इसमें हद से बढ़े हुए हो। यदि हमारे और आपके बीच कोई मतभेद है तो इससे पहले भी मतभेद होते रहे हैं, और कितने ही मतभेद हैं जो रहमत होते हैं, काश तुम जानते। अल्लाह हमारे और आपके बीच दुनिया में और क्रियामत के दिन निर्णय करेगा और जिस बात पर तुम मतभेद किया करते थे उससे वह तुम्हें आगाह करेगा। हे मेरी क़ौम! इन बदगुमानियों को छोड़ दो, क्योंकि कई गुमान पाप की श्रेणी में आते हैं। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम समझते नहीं। मैं झूठ और मनगढ़त बातें लेकर नहीं आया और न ही कोई ऐसी बात लेकर आया हूँ जो हिदायत की राहों के उलट हो, लेकिन

तुम पर यह बात खुली नहीं। अतः मैं वह शिक्षा तुम्हारे अन्दर ज़बरदस्ती कैसे भरूँ जिसे तुम छूते तक नहीं हो। तुम अवश्य इसको याद करोगे जो मैं कहता हूँ। मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ वह मेरा रबब है। मेरे दिल पर उसकी नज़र है। वह इसमें वह कुछ देख रहा है जो तुम नहीं देख पाते।

हे मेरी क़ौम! तुमने अपने कामों में उग्रता और अतिवाद से क्यों काम लिया? तुमने कुर्आन करीम को क्यों पीठ के पीछे फेंक दिया? क्या तुम जानते-बूझते हुए कुर्आन के अलावा दूसरी चीज़ों का अनुसरण करते हो? निःसन्देह जो ख़ुदा पर भरोसा करते हैं वे किसी की दुश्मनी से नहीं डरते और उसी के वादे से चैन और आराम पाते हैं और अपने मौला से ही वे तसल्ली पाते हैं और वे उसी पर भरोसा करते हैं। वे उसी के सुनाए सुनते हैं और उसी के बोलाए बोलते हैं। और उसी के नूर से वे देखते हैं। उनको उसके अछूते ज्ञानों से सूचित किया जाता है। और वे उसके भेदों से अवगत किए जाते हैं और यदि तुम मेरे बारे में किसी शक में हो तो मेरी यह किताब पढ़ो और मेरे जवाब में दूरदर्शिता से काम लो और यदि तुम सत्य के ऐसे अभिलाषी हो जैसे सत्यनिष्ठ इच्छुक होते हैं तो अल्लाह ही से इसके बारे में पूछो जो मेरे चोले में है। अल्लाह से दुआ करो और उकताओ नहीं और नीयतों को साफ़ करो और उन्हें दूषित विचारों से गन्दी न करो और अपनी रातों में उठ-उठकर दुआ करो और थको नहीं। और रहम के समय पर नज़र रखो और उसकी प्रतीक्षा करो और अपने सामर्थ्यानुसार कोशिश करो, तुम पर वास्तविकता स्पष्ट कर दी जाएगी और तुम हिदायत पा जाओगे।

ख़ुशख़बरी है उसके लिए जो सच्चे और फ़रमाँबदार दिल के साथ आया। ख़ुशख़बरी है उसके लिए जो सही सोच के साथ आया। शुभसूचना है उसके लिए जो दुविधाओं के समय विश्वास की तलाश करता है और अल्लाह से आशंकाओं के समझने की बुद्धि और विवेक माँगता है। सौभाग्यशाली है वह क़दम जो भाइयों की पीठ पीछे चुगली नहीं करता और उन्हें काफ़िर नहीं ठहराता है। और सौभाग्यशाली है वह आँख जिसे ख़ुदा तआला सीधे रास्ते की ओर चलाकर ले जाता है और उसको बुराई और तबाही की राहों से बचाता है। और सौभाग्यशाली

हैं वे क्रदम जो नेकियों की ओर लेकर जाते हैं और गलतियों से बचा लेते हैं। और सौभाग्यशाली है वह दिल जो अपने तामसिक आवेग से बचाया गया और सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन्हें सच की दौलत और उसका श्रेष्ठ भाग दिया गया। और सौभाग्यशाली है वह सोच जो थकना नहीं जानती, और जब तक अपने मनोवांछित को देख नहीं लेती वह इधर-उधर नहीं मुड़ती। और खुशखबरी है हर इक गम्भीर और सहनशील मुसाफिर के लिए और खुशखबरी है उसके लिए खुदा जिसका प्रियतम बना।

हे मेरी क्रौम! इन्सानों को खुदा समझने वालों तथा पादरियों में से दुश्मनों ने हमारे आँगन में डेरा डाला है और हम पर शैतानी मिट्टी के पत्थरों की बारिश बरसाई है। उन्होंने शुद्ध सोने को मिट्टी समझा है, ज़िन्दगी को मौत, और नूर (ठण्डक) को आग और लाभदायक को हानिकारक। उनका उपद्रव बहुत बढ़ गया है और उनके प्रोपोगण्डे (अर्थात् झूठे प्रचार-प्रसार-अनुवादक) ने बहुत से बच्चे पैदा किए। उन्होंने इस्लाम के खिलाफ़ बहुत शोर मचाया और बड़े-बड़े फ़ितने बरपा किए और उनका जादू हर पत्थर और पेड़ में घर कर गया और उन लोगों की छलपूर्ण बातों से हर बस्ती में फ़साद बरपा हो गया। वे अपने फटे हुए खट्टे दूध को भी स्वादिष्ट और सुपाच्य दूध के रूप में दिखाते हैं। और छलिया दिल के साथ भलेमानुषों पर हमला करते हैं, उनके आने से हम पर मुसीबतों का प्रहार हुआ और हम पर बहुत सारे दुःख आए और हम उनके ग़म व गुस्सा के घूँट पीते हुए उनकी दी हुई तकलीफ़ों से इतना दुःखी हो गए कि छापाखानों में हमारी तकलीफ़ें कहानियों की तरह छपने लगीं। इस डर के माहौल ने हमारी ज़िन्दगी की खुशी को छीन लिया और जब हम इस ज़माने की आग (अर्थात् दुश्मनी -अनुवादक) से दो-चार हुए तो हम ग़मगीन हो गए। दुःख और ग़म हम पर बहुत बढ़ गए और हम तंगी और मुसीबत में पड़ गए और हालात बहुत बिगड़ गए।

हे मेरी क्रौम! इन (ईसाई) लोगों ने हमारे दीन को झुठलाया और हमारे नौजवानों को गुमराह किया और हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूठे लाँछन लगाए। हम उनके आने से तंगियों में पड़ गए और उनकी प्रबल

समृद्धि के कारण हम लँगड़ेपन का शिकार हो गए और अपमान और व्यंग के साथ हमारी नाक मिट्टी में रगड़ दी गई। अतः अब समय आ गया है कि हम रहमान खुदा की चौखट में गिड़गिड़ाएँ और उस औरत की तरह आहें भरेँ जिसका बच्चा खो गया हो और बेचैन की तरह उसके द्वार को खटखटाएँ और उससे कष्ट दूर करने और अज़ाब से मुक्ति पाने की दुआ करें ताकि खुदा की रहमत जोश में आए और शोरशोगा थम जाए। और कष्ट सहने के बाद अत्यन्त दयालु खुदा की ओर से खुशी के दिन आएँ। और घोर कष्ट और थकावट बर्दाश्त करने और मौत के निकट आ जाने के बाद आँखों की ठण्डक और दिल को चैन मिले।

हे मेरी क्रौम! अपने तेज और गौरव को इससे पहले बचा लो कि वह समाप्त हो जाए। और इससे पहले अपने रब्ब को राज़ी कर लो कि वह नाराज़ हो जाए और क्रोध से भर जाए। तुम उसके दीन पर पहले हमला करने वाले मत बनो और न ही उसके निशानों और तर्कों को पहले रौंदने वाले बनो। हमदर्दी के समय कष्ट पहुँचाने और जोड़ने के समय तोड़ने की तरफ़ तुम क्यों दौड़ पड़े? क्या तुम फूँकें मारने वाली ताक़तों की औलादों के फ़साद को नहीं देखते अर्थात् झूठ के पुजारियों को। उन्होंने हमें कष्टदायक बातों से तोड़कर रख दिया है और पेशवाओं के पेशवा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान करके और समस्त कल्याणों की सार-संग्रहीता अल्लाह की किताब (अर्थात् कुर्आन) को झुठलाकर हमें कष्ट दिए और उन्होंने हमें अपनी जुबानों और पाँवों से रौंदा और हमारे नवजवानों को लालच के दम पर और बारीक गहरी चालों से वश में किया और वे इस्लाम के लिए एक घातक बीमारी और मुसलमानों के लिए भेड़िए की तरह हो गए। और हम घोर तंगी में डाल दिए गए, जिसकी मुसीबतें तह-ब-तह बढ़ती गई। और इस उपद्रव को जड़ से उखेड़ना और पीसकर रख देना अल्लाह ही के हाथ में है। वे हमारे धर्म पर पत्थर बरसाते हैं और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान पर हमला करते हैं। बड़ा आश्चर्य है तुम्हारे इस्लाम पर कि तुम अपनी नींद से नहीं जाग रहे। क्या तुम देखते नहीं कि इस्लाम के नष्ट होने का समय निकट आ गया है, और दुश्मनों के बादल

तेज़ी से बौछार कर रहे हैं, और दुःखों और तकलीफ़ों से बचने के लिए कोई जगह नहीं बची। जान लो कि यह ज़माना इस्लाम के लिए बहुत सख्त है। और इस्लाम का हरा-भरा बाग़ वीरान सा हो गया है। यदि अल्लाह की रहमत इसे दूर न करे तो फिर मौत ही मौत है। काफ़िरों (अधर्मियों) ने झूठी बातों को सजाकर प्रस्तुत किया और अनमोल और अत्युत्तम बातों की निन्दा की, और कुर्आन लोगों के सामने दोषपूर्ण ठहराया गया और तुच्छ चीज़ को अनमोल ठहरा दिया गया, और इस कुर्आन का अपमान किया गया और इसके चमत्कारों को इन्कार किया गया। और पेशाब को पानी में मिला दिया गया और अन्धकार को ज्ञान पर प्रधानता दी गई। और वे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का झूठा गुणगान करने में हद से बढ़ गए और उनके स्थान को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया। और उन्होंने एक और अद्वय ख़ुदा को बेटों और बेटियों वाला ठहराया और उसके भक्त को अल्लाह के बराबर ठहरा दिया और लोगों को घोर अन्धकार में डाल दिया। और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर लांछन लगाए और उन झूठे आरोपों से एक बड़ी दुनिया को गुमराह किया। मेरे दिल को किसी चीज़ ने इतना कष्ट नहीं दिया जितना शान-ए- मुस्तुफ़ा में उनके हँसी ठट्ठा करने और दुनिया में सबसे श्रेष्ठ नबी के सम्मान को ठेस पहुँचाने ने दिया है। ख़ुदा की क्रसम! यदि मेरे सारे बच्चे और बेटे और पोते मेरी आँखों के सामने क़त्ल किए जाते और मेरे हाथ-पाँव काट दिए जाते और मेरी आँखों की पुतली निकाल दी जाती और मैं अपनी सारी मुराद और सुकून और खुशी से महरूम कर दिया जाता तो भी यह बात मुझ पर इससे अधिक कष्टदायक न होती। हे हमारे रब्ब! हम पर रहम कर और जिस परीक्षा में हम डाले गए हैं उससे निकाल और हमारे गुनाह माफ़ कर और हमारी ग़लतियों को क्षमा कर। तेरे बदले बिना कोई चीज़ नहीं बदल सकती। और तेरे आदेश और निर्णय के बिना न कोई मुसीबत आती है, और न टाली जाती है।

हे उलेमा के गिरोह! तुम दुनिया और उसकी नींद और उसकी ऊँघ के आनन्द की ओर झुक गए हो और तुम में से कुछ वे भी हैं जिनके पैर ईसाइयत

के दलदल में धँस गए हैं, और लोगों में से वे जो टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं सुन्दरता और सजावट और गाव तकिया से सजी हुई मज्जिलों की ओर झुक गए। ताकि वे दुनिया की धन-दौलत और उसके मुर्दार से अपना पूरा हिस्सा ले लें। ताकि वे अपनी इच्छाओं का फल चुन सकें और इस दुनिया के नर्म नाजुक वस्त्र धारण कर सकें, और तुम में से कुछ लोगों ने कुत्तों की तरह एक-दूसरों पर हमला किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि दुश्मनों को उनके दोष और कमजोरी का पता लग गया। और उनमें से बहुतों ने बहुतों को कष्ट दिया और सिर फोड़ा और लाठी से मारा और अहंकार किया और सुलह को त्याग दिया और फूट डाला। और हर गिरोह ने अपने भाइयों में इस तरह चीड़-फाड़ की जिस तरह भेड़िया भेड़-बकरियों में चीड़-फाड़ करता है। और अपने विपक्षी की जड़ को आरोप और लांछनों से उखाड़ फेंकने का इरादा किया। अतः उन्होंने अपने लोगों को कीड़ों की तरह खा लिया और इस्लाम के दुश्मनों और दुष्टों के लिए मामला आसान कर दिया। और उन्होंने तक्वा (संयम) को छोड़ दिया और नीच और छोटी-छोटी बातों के लिए एक-दूसरे से ईर्ष्या द्वेष किया और अपने आपको खुश किया और रहमान खुदा को क्रोध दिलाया। फिर क्या था इस्लाम के मुँह पर अन्दर और बाहर से फ़साद के तमाँचे मारे गए और हर मुनाफ़िक (दोगले) आदमी ने हमदर्दी से मुँह मोड़ लिया और मैं यह सब कुछ देख रहा था और ग़म के घूँट पी रहा था और मेरी आंखों से आँसू बह रहे थे। और आहें भर रहा था। तो मैंने हमेशा रहने वाले खुदा पर भरोसा किया। अतः जब मेरे दिल पर इल्हाम हुआ और खुशख़बरी की शुभ-सूचना मिली और उसने मेरे स्थान को बढ़ाया।

फिर मुझे आदेश दिया गया और इस बिगाड़ के सुधार और इस मुसीबत को ख़त्म करने के लिए भेजा गया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अकाल के बाद वर्षा होती है और सूखे के बाद हरियाली। अतः अल्लाह से डरो और दिखावे एवं घमण्ड को छोड़ दो। मेरा आना असमय नहीं था बल्कि लोग अन्धकार की ओर झुक गए थे और अल्लाह के दीप और उसके दीन के नूरों को छोड़ दिया था और मैं ऐसे समय में आया जब मुसलमान बहस-मुबाहसा की लड़ाई

के भड़कते हुए अंगारों में जल रहे थे और ऐसी भयानक लहरों के बीच में थे कि जिनको देखकर दिल काँप उठते हैं। और लोगों ने अधर्म, स्वच्छन्दता और उपद्रव के रास्ते अपना लिए थे और सन्मार्ग, नेकी और सत्यनिष्ठा के मार्ग छोड़ दिए थे। और उलमा कुर्आन की तरोताज़गी, रहस्य और उसकी शिक्षाओं की श्रेष्ठता एवं सुन्दरता को नहीं देखते थे, जबकि नूर के वेश में उसका चलना था। उन्होंने मोतियों को अपमान के साथ मिट्टी में मिला दिया था और अल्लाह की किताब (कुर्आन) को ज्ञान और रहस्य के इशारों से खाली समझ लिया। और उन ज्ञान और रहस्यों के जानने वाले को हँसी का निशाना बनाया और बड़ी घृणा से उसको छोड़ दिया और मुँह मोड़ते हुए भाईचारे को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। जबकि धार्मिक बहस-मुबाहसे निष्कर्ष और बौद्धिक रूप से होते थे, न कि ऐसे घुड़सवारों के साथ जो युद्ध के लिए घोड़ों पर लैस होकर आए हों।

सुन्दरता को जाँचना और सुन्दर से सुन्दर चेहरों पर नज़र डालना ज़माने के नवजवानों की आदत बन गई थी। और फिर यह आदत मज़बूती से जड़ पकड़ गई थी। और इस्लाम का चेहरा और उसका मस्तक झुलस गया था। और उसकी शक्तोसूरत बिगड़ गई थी और उसकी वैभव और विशेषता ओझल हो गई थी और सुन्दरता और श्रेष्ठता छुपा दी गई थी और यह सारा वह काम था जिसने मुखालिफ़ों को इन्कार करने का साहस दिलाया। फिर क्या था वे बदगुमानी और तिरस्कार की ओर झुक गए। तो अल्लाह ने अपने कलाम की शान बढ़ाने के लिए और उसके गुप्त रहस्यों को प्रकट करने के लिए और उसके गूढ़ ज्ञानों की घोषणा के लिए और उसकी कस्तूरी की खुशबू फैलाने के लिए और उसके रहस्यमय अर्थों को प्रकट करने के लिए एक आदमी को भेजा। अतः लोगों ने उसको तुकरा दिया और उसको स्वीकार न किया और उसको धुत्कार दिया। और उसको शरण न दी और उसको गालियाँ दीं और उसका शुक्रिया अदा न किया। और उसका अपमान किया सम्मान न किया और उसको इस तरह न देखा जिस तरह शिक्षा की दृष्टि से अतिप्रतिष्ठित और भाईचारे की दृष्टि से सबसे प्रिय व्यक्ति की ओर देखा जाता है। और वे अपनी धृष्ट बातों में तक्रवा (संयम) की हद से

दूर निकल गए। और उन्होंने कहा कि निःसन्देह तूने बहुत ही बुरा काम किया है तो तू इस्लाम से बिल्कुल बाहर निकल गया है। फिर क्या था उनमें से एक सबसे बड़ा झूठा मुझे काफ़िर ठहराने के लिए झटपट उठ खड़ा हुआ और एक झूठे और अशिष्ट व्यक्ति के मुँह से खुदा का नूर कैसे बुझ सकता है? लेकिन उसने सच की किरणों और उसके नूरों को बुझाने और उस आने वाले सुधारक के साथियों और सद्भावकों को तितर-वितर करने की भरपूर कोशिश की, और उसने जल्दबाज़ और नाम के धर्मशास्त्रियों (मौलवियों) में से न कोई छोटा छोड़ा और न कोई बड़ा। और उन लोगों के सिवा जिनको खुदा ने बचा लिया शेष सब को लानत डालने वाला और काफ़िर-काफ़िर कहने वाला बना दिया। फिर क्या था हर एक उल्लू भी गिद्ध बन बैठा। और हर एक अनपढ़ मूर्ख ने मुझे काफ़िर कहा और इन्कार किया। और मुझ पर दिल भरकर आरोप लगाया और हर एक ने अपनी असलियत ज़ाहिर कर दी और कोई कमी न छोड़ी। उन्होंने मेरे सम्मान पर तीरों से हमला किया और इस बात को उन्होंने सवाब (पुण्य) समझा। और उन्होंने मेरी बातों को उलटा दिया और मेरे लिए आग भड़काई और इरादा किया कि मुझे तबाह कर दें और पीसकर रख दें। और मुझे मुसीबत और मौत का प्याला पिलाएँ और अल्लाह तआला ने इरादा फ़रमाया कि उनके षड़यन्त्रों को टुकड़े-टुकड़े कर दे और उनको कुछ निशान दिखाए। वह मेरा रब्ब है और उसकी रहमत मेरे लिए पर्याप्त है और उसी के लिए मेरा जीना-मरना है। वह मेरा खुदा बहुत क्षमा करने वाला है। वह मेरे पास आता है और मुझे राहत के जाम पिलाता है। उसका गुणगान ऐसा अमृत है जो दुःखों को समाप्त कर देता है। और उसकी मुहब्बत वह चीज़ है जिसने नेक लोगों को अपने वश में कर लिया है। हमने जो उसके नाम से (भाईचारा) जोड़ा है उसे कभी नहीं तोड़ेंगे, चाहे तीरों और तलवारों से टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँ। उसकी रहमत के आसार और क़बूलियत के निशानों की ओर देखो। लोग मुझे मलियामेट करने की कोशिश में लगे हुए हैं, और अल्लाह मेरी परवरिश कर रहा है। लोग मेरी जड़ काटने और मेरी इमारत गिराने का षड़यन्त्र रच रहे हैं, जबकि वह मेरी टहनियों और शाखों

को बढ़ा रहा है। लोग मुझे धुत्कारने और मेरी निन्दा और अपमान की कोशिश में हैं लेकिन वह मुझे प्रतिष्ठा प्रदान कर रहा है। और मुझे उच्च स्थानों की शुभ सूचना दे रहा है। और मुझे अपनी निकटता प्रदान कर रहा है। यह उसका उपकार है कि उसने उन दिलों को ज़िन्दा किया जो मेरी ओर शौक्र से धीरे-धीरे बढ़ते आ रहे हैं, और उन लोगों को भी जो धूनी रमाकर मेरे पास बैठ गए हैं, और उन लोगों को भी जो मेरे लिए रहमत की दुआएँ करते हैं। दुनिया में उसने ऐसी हवाएँ चलाई हैं जो लोगों को हमारी ओर इकट्ठा करके ला रही हैं। मानो कि वह एक रूहानी लश्कर (दल) है जो दिलों को इस्लाम की ओर रहनुमाई कर रहा है या समय का शालीन, समृद्ध और गौरवशाली नूरुद्दीन भैरवी है। यह मेरे रब्ब की रहमत है और पूर्णतः सत्य है। जिसको न (मुहम्मद हुसैन) बटालवी और न कोई अन्य झुठला सकता है। चाहे वह अपना पूरा जोर ही क्यों न लगा ले और मौत तक पहुँच जाए। खुदा की क़सम! बटालवी ने अपनी मक्कारियों में कोई कसर नहीं उठा रखी, बल्कि उसने अपने झूठ के साथ अपशब्द और चापलूसी भी शामिल कर लिया है।

और यदि उसे ब्रिटिश सरकार के न्याय की नंगी तलवार का डर न होता तो वह लोगों को अवश्य मेरा खून बहाने के लिए उकसाता और अपने गिरोह को मेरा वध करने के लिए चढ़ा लाता। लेकिन इस सरकार के रौब और इसकी ताकत की धाक ने उसे इस कार्यवाही से रोका हुआ है। अतः हम इस बात पर अल्लाह का बहुत शुक्रिया अदा करते हैं कि उसने हमें इस ब्रिटिश सरकार की छत्रछाया में हर एक ख़ौफ़ से अमन में रखा हुआ है, जो कमज़ोरों के लिए कल्याणकारी और ग़रीबों और मुहताजों के लिए अल्लाह की पनाहगाह है। और सरकश अंहकारी पर खुदा का चाबुक है। फिर हम पर न्याय करने वाली महारानी विक्टोरिया का शुक्र अदा करना अनिवार्य ठहरता है कि जिसकी पकड़ से हर अत्याचारी स्त्री-पुरुष का दिल डरता है। हम किस तरह उसका शुक्रिया अदा न करें जबकि अल्लाह तआला ने हमें इस शासन के द्वारा डर का शिकार होने से बचा रखा है। और उसके माध्यम से जुल्म-ज्यादती के आसार समाप्त कर

दिए। और हम पर अपनी नेमतें नाज़िल कीं। हे अल्लाह! इस महारानी को हमारी तरफ़ से अपना सबसे उत्तम प्रतिफल प्रदान कर। और उसको अपने और उसके दुश्मनों पर प्रभुत्व प्रदान कर और उसे हर नुकसान से अपनी सुरक्षा में रख। और उसे अपनी नेमतों में से दे। और उसके और उसकी औलाद के दिलों को अपने दीन अर्थात् इस्लाम की ओर हिदायत दे। और उनको शिर्क की मुसीबत से और एक मनुष्य को ख़ुदा बनाने से बचा, और उन्हें हर प्रकार की मुसीबतों से बचा। हे मेरे रब्ब! उन पर एहसान कर जिस तरह उन्होंने हम पर एहसान किया है और उनके दिलों को मेरी ज़िन्दगी में अपने दीन को क़बूल करने वाला बना दे। हे मेरे रब्ब! उन पर अपनी बरकतों की नेमत अवतरित कर और मेरी दुआएँ क़बूल कर। आमीन सुम्मा आमीन

एक बहुत आश्चर्यजनक बात है कि (एक) यह (अंग्रेज़) क्रौम है जिसको (उनके उपकारों के बावजूद) काफ़िर कहा जाता है और एक वह (मुसलमानों का) गिरोह है जिन्हें (उनके अत्याचार के बावजूद) भाई और मददगार कहा जाता है। अतः हे भाइयों के गिरोह! जो दुश्मनों से भी ज़्यादा दुष्ट और अत्याचारी हो, उन बातों की ओर आओ जो तुम्हें क्रयामत के दिन बचाएं और अपने भाइयों के बारे में अपनी कुधारणा को न बढ़ाओ और रात और दिन को आगे-पीछे लाने वाले ख़ुदा से डरो। क्या तुम में कोई बुद्धिमान आदमी नहीं है जो परिणाम से डरे, और लड़ाई-झगड़ा छोड़ दे। क्या तुम जानते हो कि तुम्हें किन मुश्किलों का सामना है? और किस चीज़ की तुम ठान रहे हो? क्या तुम शाखों में मतभेद के कारण इस्लाम के फ़िक्रों को काफ़िर ठहराते हो और सुनन और फ़राइज़ (अर्थात् इस्लाम के आदेशों और आदर्शों - अनुवादक) का इन्कार करते हो। सुनो! मैं इस बात पर ख़ुदा को गवाह बनाता हूँ और अति प्रतिष्ठित ख़ुदा की क़सम खाता हूँ कि मैं मोमिन मुसलमान, एक ख़ुदा को मानने वाला (और) अल्लाह के आदेशों और उसके रसूल के आदर्शों का अनुकरण करने वाला हूँ और मैं इससे जो तुम गुमान करते हो और कुफ़्र के ज़हर और उसको अपनाने से भी दूर हूँ और न ही मैं शरीअत के खिलाफ़ किन्हीं बातों को सम्मान की दृष्टि से देखता हूँ और

न ही उनके बकने वाले को कोई महत्व देता हूँ। और मैं अल्लाह की किताब (कुर्आन करीम) पर ईमान लाता हूँ और गवाही देता हूँ कि उसके विरुद्ध जो भी बात है गलत है, निराधार है। अतः जो भी कोई ऐसी बात मुँह पर लाए जिसकी जड़ शरीअत में नहीं है वह मुल्हम हो या धर्मशास्त्री, शैतान उसके साथ खेल रहे हैं। और मैं ईमान लाता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खात्मुल अम्बिया हैं। और निःसन्देह हमारी किताब कुर्आन करीम है जो हिदायत का साधन है। हमारे लिए मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त कोई नबी नहीं जिसका हम अनुसरण करें, और न हमारे लिए फ़ुर्क़ान हमीद (अर्थात् कुर्आन करीम) जो पूर्व के समस्त धर्मग्रन्थों की रक्षक और सार-संग्रहीता है, के अतिरिक्त और कोई किताब है जिसका हम अनुसरण करें। और मैं ईमान लाता हूँ कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मानवजाति के गौरव और नबियों के सिरमौर (सरदार) हैं। और अल्लाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नबियों की उत्कृष्टता को चरम पर पहुँचा दिया है। और कुर्आन मजीद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के बाद भी रद्दोबदल करने वालों के रद्दोबदल से और ग़लती करने वालों की ग़लती से दूर है। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद न तो वह निरस्त होगा और न ही उसमें कोई कमीबेशी होगी। और न ही सच्ची ईशावाणी पाने वालों की ईशावाणी उसके विपरीत हो सकती है। और जो भी कुर्आन करीम के मुश्किल और रहस्यमय शब्दों की मुझे समझ दी गई है या रहमान ख़ुदा की ओर से मुझे इल्हाम किया गया है मैंने उसे सही, सत्य और सुस्पष्ट होने की शर्त पर स्वीकार किया, और मुझ पर स्पष्ट किया गया है कि यह पूर्णतः शुद्ध और शरीअत के अनुसार है। इसमें कोई सन्देह नहीं और कोई शक नहीं है। मान लो यदि कोई चीज़ इसके विपरीत होगी तो हम उस सबको अपने हाथों से रद्दी या रेंठ बलग़म की तरह फेंक देंगे। और हम ईमान लाए हैं उन अर्थों पर जिनका अल्लाह और उसके रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरादा फ़रमाया है, चाहे हमें उनका ज्ञान न हो और न ही सर्वज्ञ ख़ुदा की ओर से वास्तविकता हम पर प्रकट

हुई हो। उनकी प्रमाणिकता पर हमारे पास कुर्आन करीम की सुस्पष्ट आयतें, निशान और खुल-खुले प्रमाण हैं। जिनका वर्णन हम उनके यथास्थान करेंगे। और उनके द्वारा हम उन लोगों का मुँह बन्द करेंगे जिनके दिल झूठ के अभ्यस्त हो चुके हैं। और जिनके कलम से अत्यधिक व्यर्थ और नीच बातें निकलती हैं। और वे मेरी किताब नहीं पढ़ते और न ही मेरे जवाब पर सोच-विचार करते हैं और न ही सूझ-बूझ से काम लेते हैं। अतः इसके कारण उनके लिए तबाही और बर्बादी है जो उन्होंने अपने हाथों से लिखा। और इस कारण भी उनके लिए तबाही और बर्बादी है जो वे (पाप) कमाते हैं। हमने इस किताब में केवल मुखालिफ़ों के भ्रमों का उत्तर देने और उनके आरोपों की पीसकर रख देने का इरादा किया है। और जहाँ तक गाली का जवाब गाली और लानत का जवाब लानत और धुत्कारने का जवाब धुत्कार से देने की शैली है, तो यह किताब इस शैली से रहित है। और सारा मामला धरती और आसमानों के ख़ुदा के सुपुर्द कर दिया गया है। हे उलेमा के गिरोह! अल्लाह की बातों और उसके रहस्यों में दखलंदाजी न करो। और उस बात पर दुस्साहस न करो जिसका तुम्हें सरसरी ज्ञान भी नहीं दिया गया। तुम्हें तुम्हारी ज़िन्दगी और उसका ऐशोआराम धोखे में न डाल दे और चीख-पुकार और गिड़गिड़ाने वाली जमाअत की चीखो-पुकार और उसका दुःख तुम्हें आजमाइश में न डाले। मैं तुम्हें रहमान ख़ुदा की क़सम देता हूँ कि तुम मुझे मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुर्आन के दुश्मनों से लड़ने के लिए छोड़ दो और तुम अपनी जुबान रोक कर मेरी सहायता करो। यदि मैं सच्चा हूँ तो अल्लाह तुम्हें मेरी निष्कलंकता और मेरी सच्चाई और दृढ़ता दिखा देगा। और यदि मैं झूठा हूँ तो अल्लाह मेरी जड़ काटने और मुझे पीसकर रख देने के लिए काफ़ी हैं। अतः मुझ पर दुश्मनों को हँसी का मौक़ा न दो और ज़्यादाती न करो और कष्ट पहुँचाने में हद से न बढ़ो। अल्लाह निःसन्देह तुम से ज़्यादा जानता है। वह मेरे बारे में वह कुछ जानता है जो तुम नहीं जानते। यदि तुम बाज़ नहीं आओगे तो तुम बहुत जल्द अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे फिर बहुत जल्द तुमसे पूछताछ की जाएगी। जहाँ तक दूसरी बात का सम्बन्ध

है जिसने मुझे सरवरे क्रायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वर्णन के साथ तुम्हारा वर्णन करने पर विवश किया है। तो हे मुसलमानों के नवयुवकों और मोमिनों के बूढ़ों! जान लो कि इस क्रम से मेरा आशय यह है कि मैं तुम पर पाकबाजों के पाकबाज़ खात्मुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से खुदा के रहम और उसकी तौबा की बारिश होने की दुआ करूँ। अतः गवाह रहो कि मैं निःसन्देह तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ़ दुआ के लिए हाथ बढ़ा रहा हूँ और मैं इससे तुम्हारी हिदायत का इच्छुक हूँ। हे मेरे रब्ब! हे मेरे रब्ब! मेरी क्रौम के हक्र में मेरी दुआ और मेरे भाइयों के बारे में मेरी गिड़गिड़ाहट सुन ले। मैं तेरे समक्ष तेरे नबी खात्मुन्नबीयीन, गुनाहगारों के लिए शफ़ीअ (अनुशंसक) और मुशफ़्फ़अ का वास्ता देता हूँ। हे मेरे रब्ब! इनको अन्धकारों से अपने नूर की तरफ़ निकाल और दूरी के वीरान जंगल से अपनी चौखट पर ले आ। हे मेरे रब्ब! उन पर रहम कर जो मुझ पर लान-तान करते हैं। और उस क्रौम को जो मेरे हाथ काटने पर तुली हुई है, तबाही से बचा और अपनी हिदायत उनके दिलों में दाखिल कर, और उनकी गलतियों और गुनाहों को क्षमा कर, और उनसे क्षमा का बर्ताव कर, और उन्हें अपनी सुरक्षा में रख, और उनसे नाराज़ न हो, और उनको पाक कर, और उनको ऐसी आँखें प्रदान कर जिनसे वे सच्चाई को देख सकें, और ऐसे कान दे जिनसे वे तेरी बातें सुन सकें, और ऐसे दिल दे जिनसे वे तेरी बातों को समझ सकें, और ऐसे नूर (प्रकाश) दे जिनसे वे अध्यात्मज्ञान प्राप्त कर सकें। और उन पर रहम कर और उनकी बातों से दरगुज़र कर, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो जानते नहीं।

हे मेरे रब्ब! मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह और उसके महान स्थान का और रातों को इबादत करने वालों का, और दिन में जिहाद करने वालों का, और उन सवारियों का जिन्हें तेरे लिए रात के सफ़र के लिए तैयार किया जाता है और उन कजावों का जो उम्मुल कुरा (अर्थात् पवित्र मक्का) के लिए सवारियों पर कसे जाते हैं, वास्ता (देता हूँ), कि हमारे और हमारे भाइयों के मध्य सुलह कर दे और उनकी आँखें खोल दे और उनके दिल

रौशन कर दे और उनको वह सूझ-बूझ प्रदान कर जो सूझ-बूझ तूने मुझे प्रदान की है और उनको तक्वा (संयम) के मार्ग दिखा दे और उनके पहले गुनाह क्षमा कर दे। और हमारी अन्तिम पुकार यही है कि समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह ही के लिए हैं जो समस्त महानताओं का रबब है।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में एक क़सीदा

چون زمن آید ثنائے سرورِ عالی تبار عاجز از مدحش زمین و آسمان و هر دو دار

मुझ से उस उच्च प्रतिष्ठावान सरदार की प्रशंसा किस प्रकार हो सके जिसकी प्रशंसा से पृथ्वी-व-आकाश और दोनों लोक असमर्थ हैं।

آن مقام قرب کو دارد بدلد ار قدیم کس نداند شان آن از واصلان کردگار

सानिध्य का वह स्थान जो वह अनश्वर प्रियतम (ख़ुदा) के साथ रखता है उसकी महानता को ख़ुदा के दरबार में पहुंच वाले लोगों में से कोई भी नहीं जानता।

آن عنایت ہا کہ محبوب ازل دارد بدو کس بخوابے ہم ندیدہ مثل آن اندر دیار

वे मेहरबानियां जो अनादि प्रियतम (ख़ुदा) उस पर करता रहता है वे किसी ने संसार में स्वप्न में भी नहीं देखीं।

سرورِ خاصان حق شاہِ گروه عاشقان آنکہ روحش کرد طے ہر منزل وصل نگار

सत्यनिष्ठ विशिष्ट लोगों का सरदार, ख़ुदा के प्रेमियों के गिरोह का बादशाह है जिसकी रूह ने प्रियतम के मिलन की हर श्रेणी को तय कर लिया है।

آن مبارک پے کہ آمد ذات با آیات او رحمتے زان ذات عالم پرور پروردگار

वह मुबारक क़दम जिस का उच्च विशेषताओं वाला अस्तित्व रहमत बन कर उस समस्त लोकों के रबब, प्रतिपालक की ओर से रहमत बन कर उतरा।

آنکہ دارد قرب خاص اندر جناب پاک حق آنکہ شان او نہ فہمد کس ز خاصان و کبار

वह जो कि ख़ुदा के दरबार में विशेष सानिध्य रखता है, वह जिसकी

प्रतिष्ठा विशेष एवं बुजुर्ग भी नहीं समझते।

آخر زمان کو اولین راجائے فخر
آخرین را مقتداؤ لجانو کھف و حصار

अन्तिम युग का अहमद जो पहलों के लिए गर्व का स्थान है और पिछलों के लिए पेशवा, शरण-स्थल, सुरक्षा का स्थान तथा अभेद्य दुर्ग (क़िला) है।

هست درگاه بزرگش کشتیء عالم پناه
کس نگرود روز محشر جز پناهش رستگار

उसका महान दरबार सम्पूर्ण संसार को शरण देने वाली नौका है। हश्र (क्रयामत) के दिन कोई भी उसकी शरण में आए बिना मोक्ष नहीं पाएगा।

از همه چیز بے فرون تر در همه نوع کمال
آسمانها پیش آوج همت او ذره وار

वह हर प्रकार की विशेषताओं में प्रत्येक से बढ़कर है, उसकी हिम्मत की बुलन्दी के आगे आकाश भी एक कण की भांति है।

منظہر نورے کہ پنهان بود از عہد ازل
مطلع شمسے کہ بود از ابتدا در استار

वह उस प्रकाश का द्योतक है जो सदैव से गुप्त था और उस सूर्य का उदय स्थल है जो आरंभ से छुपा हुआ था।

صدر بزم آسمان و حجة اللہ بر زمین
ذات خالق را نشانے بس بزرگ و استوار

वह आकाशीय मज्लिस (सभा) का अध्यक्ष (सभापति) और पृथ्वी पर अल्लाह का प्रमाण है तथा खुदा तआला की हस्ती का महान और सुदृढ़ निशान है।

ہر رگ و تار وجودش خانہ یار ازل
ہر دم و ہر ذرہ اش پُر از جمال و دستار

उसके अस्तित्व का रोम-रोम अनादि खुदा का घर है उसकी हर सांस और हर कण दोस्त के सौन्दर्य से प्रकाशमान है।

حسن روئے او بہ از صد آفتاب و ماہتاب
خاک کوئے او بہ از صد ناف و مشک تار

उसके चेहरे की सुन्दरता सैकड़ों चन्द्रमा और सूर्यों से उत्तम है। उसके कूचे की मिट्टी तातारी कस्तूरी की सैकड़ों नाभियों..... से अधिक सुगंधित है।

هست اواز عقل و فکر و فہم مرؤم دور تر
کی مجال فکر تا آن بحر ناپیدا کنار

वह लोगों की बुद्धि और समझ से उच्चतर है विचार की क्या मजाल कि

उस अपार समुद्र की सीमा तक पहुंच सके।

روح اور گفتنِ قولِ بلیٰ اول کے آدم تو حید و پیش از آدمش پیوند یار

कथन (क्यों नहीं) कहने में उसकी रूह सबसे प्रथम है वह तौहीद (एकेश्वरवाद) का आदम है और आदम से भी पहले उस यार (खुदा) से उसका संबंध था।

جان خود دادن بچے خلق خدا در فطرتش جان نثار خسته جانان بیدلان را غمگسار

खुदा की प्रजा के लिए प्राण देना उसकी प्रकृति में है। वह हताश लोगों पर प्राण न्योछावर करने वाला और असहायों का हمدर्द है।

اندراں و تھے کہ دنیایِ شرک و کفر بود ہیچکس رن خون نشد دل جز دل آن شهید

ऐसे समय में जबकि संसार कुफ्र और शिर्क से भर गया था सिवाए उस बादशाह के और किसी का दिल उसके लिए शोकग्रस्त न हुआ।

ہیچکس از خبث شرک و رجس بت آگہ نہ شد این خبر شد جان احمد را کہ بود از عشق زار

कोई भी शिर्क और बुतों की गन्दगी से अवगत न था केवल अहमद के दिल को यह ज्ञात हुआ जो खुदा के प्रेम से ओत-प्रोत था।

کس چہ داند کرازاں نالہ ہا باشد خبر کان شفیعے کرد از بہر جہان در کنج غار

कौन जानता है और किसे उस रोने-धोने (विलाप) की खबर है? जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने संसार के लिए हिरा नामक गुफ़ा में किया।

من تمید انم چہ دردے بود و اندوہ و غم کاندراں غارے در آوردش حزین و دلغار

मैं नहीं जानता कि क्या दर्द-शोक और कष्ट था जो उसे शोकग्रस्त करके उस गुफ़ा में लाता था।

نی ز تار کی توحش نی ز تنہائی ہر اس نے ز مردن غم نہ خوف کژدے نی بیم مار

न उसे अंधेरे का डर था न एकान्त का भय, न मरने की चिन्ता, न सांप-बिच्छू का खतरा।

کشتہ قوم و فدائے خلق و قربان جہان فی سبجہم خویش میلش فی بہ نفس خویش کار

वह क्रौम का प्रेमी, प्रजा पर न्योछावर तथा दुनिया वालों पर कुरबान था।

न उसे अपने तन-बदन से कुछ संबंध था न अपने प्राण से कुछ काम।

نعرہ ہا پر درد میزد از پیے خلق خدا شد تضرع کار او پیش خدا لیل و نہار

खुदा की मख्लूक (सृष्टि) के लिए दर्द भरी आंहे भरता था और खुदा के सामने रात-दिन रोना-धोना उसका काम था।

سخت شورے بر فلک افتاد از آن عجز و دعا قدسیاں را نیز شد چشم از غم آں اشکبار

उस की असमर्थता और दुआ के कारण आकाश पर बहुत शोर मच गया तथा उस के शोक के कारण फ़रिश्तों की आंखें भी शोक से आंसू बहाने लगीं।

آخرا از عجز و مناجات و تضرع کردنش شد نگاہ لطف حق بر عالم تاریک و تار

अन्ततः उसकी विनम्रता, स्तुतिगान और विलाप करने के कारण खुदा ने घोर अंधकारमय संसार पर सहानुभूति की दृष्टि डाली।

در جہان از معصیت ہا بود طوفانِ عظیم بود خلق از شرک و عصیاں کو رو کر در ہر دیدار

संसार में दुराचारों का भयानक तूफान मचा था और हर देश में लोग शिर्क और पापों के कारण अंधे और बहरे हो रहे थे।

ہیچوقتِ نوح دنیا بود پُر از ہر فساد ہیچ دل خالی نبود از ظلمت و گرد و غبار

संसार नूह के युग की भांति हर प्रकार की खराबियों से भर गया था। कोई दिल भी अंधकार और धूल-मिट्टी से खाली न था।

مر شیاطین را تسلط بود بر ہر رُوح و نفس پس تجلی کرد بر رُوح محمد کردگار

हर रूह और हर व्यक्ति पर शैतानों का क़ब्ज़ा था, तब खुदा तआला ने मुहम्मद की रूह पर अपनी ज्योति डाली।

منتِ او بر ہمہ سرخ و سیاہی ثابت است آنکہ بہر نوع انسان کرد جانِ خود نثار

समस्त गोरी और काली क्रौमों पर उसका उपकार सिद्ध है, उसने मानव जाति के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी।

یا نبی اللہ توئی خورشید رہا ہے ہڈی بے تو نارد رُو برا ہے عارف پرہیزگار
 हे खुदा के नबी! तू ही हिदायत के मार्गों का सूर्य है तेरे बिना कोई आरिफ़
 (अध्यात्म ज्ञानी) संयमी हिदायत नहीं पा सकता।

یا نبی اللہ لب تو چشمِ جان پرور است یا نبی اللہ توئی در راہِ حق آموزگار
 हे खुदा के नबी! तेरे होंठ जीवनदायक झरना हैं हे खुदा के नबी! तू ही
 खुदा के मार्ग का पथ-प्रदर्शक है।

آن کی جو حدِ حدیث پاک تو از زید و عمرو و آن دگر خود از دہانت بشنود بے انتظار
 एक तो तेरी पवित्र बातें ज़ैद और बकर के पास जाकर तलाश करता है
 और दूसरा सीधे तौर पर उनको तेरे मुंह से सुनता है।

زندہ آن شخصے کہ نوشد بُرء از چشمہ ات زیرک آن مردیکہ کرد است اتباع اختیار
 वह व्यक्ति जीवित है जो तेरे झरने से पानी के घूंट पीता है और वही मनुष्य
 बुद्धिमान है जिस ने तेरा अनुकरण किया।

عارفان را منتہائے معرفت علمِ رخت صادقان را منتہائے صدق بر عشقت قرار
 आरिफ़ों की मारिफ़त (अध्यात्मज्ञानियों के ज्ञान) का अन्तिम बिन्दु तेरे चेहरे
 का ज्ञान है और सत्यनिष्ठों के सच का अन्त तेरे प्रेम पर सुदृढ़ रहता है।

بے تو ہر گز دولتِ عرفان نمی یابد کسے گرچہ میر در دریا ضت ہائے وجہ بے شمار
 तेरे बिना कोई इफ़ान की दौलत को नहीं पा सकता, यद्यपि वह अभ्यास
 (जप-तप) और कठिन परिश्रम करता मर भी जाए।

تکیہ بر اعمال خود بے عشق رویت الہی است غافل از رویت نہ بیند روئے نیکی زینہار
 तेरे प्रेम के अतिरिक्त केवल अपने कर्मों पर भरोसा करना मूर्खता है। जो
 तुझ से लापरवाह है वह नेकी का मुंह कदापि नहीं देखेगा।

دردمے حاصل شود نورے ز عشق روئے تو کان نباشد ساکن را حاصل اندر روزگار
 तेरे प्रेम के कारण एक पल में वह प्रकाश प्राप्त हो जाता है जो साधकों
 को एक लम्बे समय में प्राप्त नहीं होता।

از عجب ہائے عالم ہرچہ محبوب و خوش است شانِ آن ہر چیز بینم در وجودت آشکار
 संसार की अद्भुत वस्तुओं में से जो वस्तु भी रुचिकर और लाभप्रद है
 ऐसी हर वस्तु की खूबियां मैं तेरे अस्तित्व में पाता हूँ।

خوشتر از دور این عشق تو نباشد هیچ دور خوبتر از وصف و مدح تو نباشد هیچ کار
 तेरे प्रेम के युग से अन्य कोई युग अधिक अच्छा नहीं और कोई काम तेरी
 प्रशंसा और स्तुति से अधिक उत्तम नहीं।

منکہ رہ بردم بخوبی ہائے بے پایان تو جان گزارم بہر تو گرد گیرے خدمت گزار
 चूंकि मुझे तेरी असीम खूबियों का अनुभव है इसलिए यदि दूसरे तेरे सेवक
 हैं तो मैं तुझ पर प्राण न्योछावर करने को तैयार हूँ।

ہر کسے اندر نمازِ خود دعائے می کند من دعا ہائے برو بارِ تو اے باغ بہار
 हर व्यक्ति अपनी नमाज़ में अपने लिए दुआ करता है परन्तु हे मेरे स्वामी!
 मैं तेरी नस्ल और सन्तान के लिए दुआ मांगता हूँ।

یابی اللہ فدائے ہر سرموئے توام وقفِ راہِ تو کنم گر جاں دہندم صد ہزار
 हे ख़ुदा के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! तेरे बाल-बाल पर न्योछावर
 हूँ यदि मुझे एक लाख प्राण भी मिलें तो तेरे मार्ग में सब को कुर्बान कर दूँ।

اتباع و عشق رؤیت از رہ تحقیق چیست کیمیائے ہر دلے اکسیر ہر جانِ فگار
 वास्तव में तेरा अनुकरण और तेरा प्रेम हर दिल के लिए कीमिया और हर
 ज़ख्मी के लिए इक्सीर (अमोध औषधि) है।

دلِ گر خوں نیست از بہر تہ چیز است آن دلے ور ثارِ تو نگردد جان کجا آید بکار
 दिल यदि तेरे प्रेम में ख़ून नहीं तो वह दिल ही नहीं और जो प्राण (जान)
 तुझ पर कुर्बान न हो वह प्राण किस काम का।

دل نے ترسد بہر تو مر از موت ہم پلنداری ہا بہین خوش میروم تاپائے دار
 तेरे प्रेम में मेरा दिल मौत से भी नहीं डरता तेरी दृढ़ता देख कर मैं सलीब
 के नीचे प्रसन्नतापूर्वक जा रहा हूँ।

راغب اندر رحمت یار حمید اللہ آمدیم ایکہ چون ما بردر تو صد ہزار امید وار
 हे खुदा की रहमत (दया)! हम तेरी दया के प्रत्याशी हैं। तू वह है कि हम
 जैसे लाखों तेरे दरवाजे के प्रत्याशी हैं।

یانبی اللہ ثار روئے محبوب توام وقفِ راہت کردہ ام این سرکہ بردوش ست بار
 हे खुदा के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! तेरे प्यारे मुखड़े पर
 न्योछावर हूं मैंने उस सर को जो कंधों पर भार है तेरे मार्ग में समर्पित कर दिया है।
 تاجمن نور رسول پاک را بنودہ اند عشق او در دل ہی جو شد جو آب از آبشار

जब से मुझे पवित्र रसूल का प्रकाश दिखाया गया है तब से उसका प्रेम
 मेरे दिल में यों जोश मारता है जैसे झरने में से पानी।
 آتش عشق از دم من بهجو برقی می جہد یکطرف اے ہمدان خام از گرد و جوار
 मेरे दिल से उसके प्रेम की आग बिजली के समान निकलती है। हे मूर्ख
 मित्रो! मेरे आस-पास से हट जाओ।

بر سر وجد است دل تلید روئے او بخوابے بران روئے و سرش جان و سرور و نم نثار

मेरा मित्र आनंदातिरेक से झूमने वाला है (आत्म विस्मृति में है)। जब से
 आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को स्वप्न में देखा है। उस चेहरे और सिर
 पर मेरी जान, सिर और मुंह कुर्बान हों।

صد ہزاران یوسفے بینم درین چاہ ذقن و آن مسیح ناصری شد از دم او بے شمار
 उस टुड्डी के गड्ढे (the dimple of the chin) में मैं लाखों यूसुफ़
 देखता हूं और उसकी फूंक से असंख्य मसीह नासिरी (ईसा) पैदा हुए।

تاجدار ہفت کشور آفتاب شرق و غرب بادشاہ ملک و ملت طجائی ہر خاکسار
 वह सातों महाद्वीपों का सम्राट तथा पूरब और पश्चिम का सूर्य है। दीन-
 दुनिया (धर्म एवं संसार) का बादशाह और हर विनीत की शरण है।

کامران آن دل کہ ز در راہ از صدق گام نیک بخت آن سرکہ میدارد سر آن شہ سوار

सफल हो गया वह दिल जो श्रद्धा और निष्ठा के साथ उसके मार्ग पर

चला। सौभाग्यशाली है वह सिर जो उस घोड़े के अच्छे सवार से संबंध रखता है।
 یانہی اللہ جہاں تاریک شد از شرک و کفر وقت آن آمد کہ بنائی رخ خورشید وار
 हे खुदा के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! संसार कुफ्र और शिर्क से
 अंधकारमय हो गया। अब समय आ गया है कि तू अपना सूर्य के समान चेहरा
 प्रकट करे।

بینم انوارِ خدا در روئے تو ای دلبرم مست عشقِ روئے تو بینم دل هر هوشیار
 हे मेरे प्रियतम! मैं तेरे अस्तित्व में खुदा के प्रकाश देखता हूँ और हर
 बुद्धिमान दिल को तेरे प्रेम में मस्त पाता हूँ।

اہل دل فہمند قدرت عارفان دانند حال از دو چشمِ شیران پنهان خورِ نصف النہار
 दिलवाले तेरे महत्त्व को पहचानते हैं और अध्यात्मज्ञानी तेरा हाल जानते
 हैं, परन्तु चमगादड़ों की आंख से दोपहर का सूर्य छुपा हुआ है।

ہر کسے دارد سرے بادلبرے اندر جہاں من فدائے روئے تو ای دلستان گلغزار
 प्रत्येक व्यक्ति संसार में कोई न कोई प्रियतम रखता है परन्तु मैं तो तेरा
 फ़िदाई (न्यौछावर होने वाला) हूँ हे पुष्प के समान कपोल वाले प्रियतम।

از ہمہ عالم دل اندر روئے خوبت بہ تمام بروجوہ خویشتن کردم وجودت اختیار
 समस्त संसार छोड़कर मैंने तेरे सुन्दर चेहरे से दिल लगाया है और अपने
 अस्तित्व पर तेरे अस्तित्व (वुजूद) को प्राथमिकता दी है।

زندگانی چیست جان کردن براہ تو فدای رستگاری چیست در بند تو بودن صید وار
 जीवन क्या है? यही कि तेरे मार्ग में प्राण को कुर्बान कर देना। आज्ञादी
 क्या है? यही कि तेरी क़ैद में शिकार बन कर रहना।

تا وجودم ہست خواہد بود عشقت در دلم تا دلم دورانِ خون دارد بتو دار و مدار
 जब तक मेरा अस्तित्व शेष है तेरा प्रेम मेरे दिल में रहेगा जब तक मेरे
 दिल में खून प्रवाह करता है तब तक उसका दारोमदार (निर्भरता) तुझ पर है।

یار رسول اللہ برویت عہد دارم استوار عشق تو دارم ازان روزیکہ بودم شیرخوار
 हे खुदा के रसूल मैं तुझ से सुदृढ़ संबंध रखता हूँ और उस दिन से कि मैं
 दूध पीता बच्चा था मुझे तुझ से प्रेम है।

ہر قدم کاندہ جناب حضرت بے چون زدم دیدمت پنهان معین و حامی و نصرت شعار
 मैंने जो कदम भी अमूल्य खुदा के मार्ग में रखा मैंने गुप्त तौर पर हर स्थान
 पर तुझे अपना सहायक, समर्थक और मदद करने वाला देखा।

در دوعالم نسبتہ دارم بتوازی بس بزرگ پرورش دادی مرا خود ہیچو طفلے در کنار
 दोनों लोकों में मैं तुझ से अपार संबंध रखता हूँ। तूने स्वयं बच्चे की भांति
 अपनी गोद में मेरा पालन पोषण किया।

یاد کن وقتیکہ در کشف نمودی شکل خویش یاد کن ہم وقت دیگر کآمدی مشتاق وار
 वह समय याद कर जब जागते हुए तू ने कश्फ में मुझे अपना रूप दिखाया
 था तथा एक और अवसर भी याद कर कि जब तू मेरे पास शौक के साथ आया
 था।

یاد کن آن لطف و رحمت کہ با من داشتی و آن بشارت ہا کہ میدادی مرا از کردگار
 उन मेहरबानियों और रहमतों को याद कर जो तूने मुझ पर कीं और उन
 खुशखबरियों को जो खुदा की ओर से तू मुझे देता था।

یاد کن وقتی چو بنودی بہ بیداری مرا آن جمالے آن رخ آن صورتے رشک بہار
 वह समय याद कर जब जागने की अवस्था में अपना वह सौन्दर्य वह
 चेहरा और वह रूप जिस पर बसन्त ऋतु भी गर्व करती है।

آنچه مارا از دو شیخ شوخ آزارے رسید یار رسول اللہ بپرس از عالم ذو الاقدار
 जो कुछ हमें इन दो उद्दण्ड शेखों से कष्ट पहुंचा, हे अल्लाह के रसूल
 इस का हाल उस शक्तिमान और सर्वज्ञ खुदा से पूछ ले।

حال ما و شوخیء این ہر دو شیخ بد زبان جملہ میدانہ خدائے حال دان و بُردبار

हमारे हाल और इन दो गालियां देने वाले शेखों की उद्दण्डता को सर्वज्ञ और सहनशील खुदा पूर्ण रूप से जानता है।

نام من دجال و ضال و کافرے بہنادہ اند نیست اندر زعم شان چون من پلید و زشت و خوار
 उन्होंने मेरा नाम दज्जाल, गुमराह और काफ़िर रख दिया है तथा उनके विचार में मुझ जैसा और कोई अपवित्र, बुरा और अपमानित नहीं।

ہنچکس را بر من مظلوم و غمگین دل نہ سوخت جز تو کاندہ خو ابہا رحمت نمودی بار بار
 मुझ अत्याचार पीड़ित और शोकग्रस्त के लिए किसी का दिल न जला तेरे अतिरिक्त जिस ने स्वप्नों में मुझ पर बार-बार हमदर्दी दिखाई।

ہاں خداوند کریم و دلبر و محبوب من داد و ہر دم میدہد تسکین مرا چون غمگسار
 हां उस कृपालु खुदा ने जो मेरा प्रियतम और प्रिय है, एक हमदर्द के समान हमेशा मुझे सांत्वना दी और देता रहता है।

صبر کردیم از عنایتش برین صدمہ و گرفت سرمہ در چشمے نیاید تانے گردد غبار
 सैकड़ों कष्टों पर उसी की हमदर्दी के कारण हम ने सब्र किया क्योंकि सुरमा आंख के योग्य नहीं होता जब तक धूल की भांति बारीक न हो जाए।

ایکہ تکفیر مسلمانان کنی از بخل و کین شرم آید از خدائے عادل و ذی اختیار
 हे वह व्यक्ति जो कंजूसी और शत्रुता के कारण मुसलमानों को काफ़िर कहता है। तुझे न्यायवान और शक्तिमान खुदा से शर्म आनी चाहिए।

سہل باشد از زبان خویش تکفیر کسے مشکل افتد آن زمان چون پرسد از وے کردگار
 अपनी जीभ से किसी को काफ़िर कह देना सरल है परन्तु उस समय कठिनाई होगी जब सृष्टि का रचयिता खुदा पूछेगा।

کلمہ گویان را پر اکافر نہی نام اے انی گر تو داری خوف حق رو بیخ کفر خود برار
 हे भाई! तू कलिमा पढ़ने वालों का नाम काफ़िर क्यों रखता है? यदि तू खुदा से डरता है तो स्वयं अपने कुफ़्र को जड़ से निकाल।

پیر گشتی خلق پیران را نئے دانی ہنوز ایزد تہ بختد چو پیران صدق و سوز و اصطبار
تू बूढ़ा हो गया परन्तु अब तक बूढ़ों वाले आचरण को नहीं जानता। खुदा
तुझे बूढ़ों के समान जलन और सब्र प्रदान करे।

گر کنی تکفیر قوم خود چہ کارے کردہ روا اگر مردی جہودے را باسلام اندر آر
यदि तूने अपनी क्रौम ही को काफिर कहा तो क्या काम किया? यदि तू
बहादुर है तो जा और किसी यहूदी को इस्लाम में सम्मिलित कर।

چون نسیم صبح محشر پر دہ بردار دژ کار کیست کافر کیست مومن خود بگرد آشتکار
जब क्रयामत की प्रातः काल की वायु वास्तविकता के ऊपर से पर्दा उठा
देगी तो बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा कि कौन काफिर है और कौन मोमिन।

گر خرد مندی بر و کن فکر نفس خود نخست لاف ایمان خود چہ چیزے نور ایمان را بیار
यदि तू बुद्धिमान है तो पहले अपने प्राणों की चिन्ता कर। ईमान का दावा
कुछ चीज़ नहीं ईमान का प्रकाश ला।

چند بر تکفیر نازی چند استہزائی کنی رو با ایمان خود و ما را بکفر ما گذار
तू कब तक कुफ़्रबाज़ी पर गर्व करेगा और कब तक हंसी-ठट्टा करता
रहेगा। जा अपने आप को अपने ईमान पर और हमें हमारे कुफ़्र पर छोड़ दे।

نی ز فردوسم حکایت کن نہ از آلام نار کز غم دین محمدؐ میزیم شوریدہ وار
मुझ से न तो जन्नत की चर्चा कर न नर्क की। मैं तो मुहम्मद के धर्म की
चिन्ता में दीवानों के समान जीवन व्यतीत करता हूँ।

اندر آن وقتیکہ یاد آید مہمّ دین مرا بس فراموشم شود ہر عیش و رنج ہر دودار
उस समय जब कि मुझे धर्म का कोई कठिन कार्य याद आता है तो दोनों
लोकों की खुशियां और दुःख मुझे बिल्कुल भूल जाते हैं।

तत्पश्चात् यह पुस्तक कि जिसका एक नाम

आईना कमालात-ए-इस्लाम

है और दूसरा नाम दाफ़िउल वसाविस (भ्रम निवारक) भी है एक भूमिका और तीन अध्याय और एक समापन पर आधारित है। खुदा तआला इस में बरकत डाले और एक जगत के लिए मार्ग दर्शन का कारण बनाए। **आमीन, सुम्मा आमीन**

भूमिका

थोड़ा समय हुआ कि इस विनीत ने खुदा तआला से सामर्थ्य पाकर इस्लाम के समर्थन में तीन तीन पुस्तकें लिखी थीं, जिनमें से पहली पुस्तक का नाम 'फ़तह इस्लाम', दूसरी पुस्तक का नाम "तौज़ीह मराम" तथा तीसरी का नाम "इज़ाला औहाम" है। इन पुस्तकों में खुदा के इशारे और इल्हाम के अनुसार उस मसीले मसीह के पद की भी चर्चा थी जो इस विनीत को प्रदान किया गया। इसी प्रकार उन बारीकियों तथा उच्च अध्यात्म ज्ञानों का वर्णन था जो इस्लाम और पवित्र कुर्आन की उच्च एवं श्रेष्ठतम वास्तविकताएं तथा मुसलमानों के लिए विरोधियों की तुलना में गर्व का स्थान रखती थीं। इसके अतिरिक्त इस्लामी एकेस्वरवाद के श्रेष्ठतम स्थान की सुन्दरता एवं स्पष्टता उन वास्तविकताओं से प्रकट होती थी तथा वे समस्त अध्यात्म ज्ञान उन बाह्य प्रहारों के संतोषजनक एवं पर्याप्त उत्तर थे जो वर्तमान युग के लोग सर्वथा अपने पक्षपात तथा बुद्धि की कमी के कारण इस्लामी शिक्षा पर करते हैं, और यह सब कुछ पवित्र कुर्आन तथा सही हदीसों से लिया गया था तथा उन सच्चाइयों पर पूर्व उलेमा (विद्वानों) की गवाहियाँ भी मौजूद थीं और आशा थी कि बुद्धिमान लोग इन पुस्तकों को कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से देखेंगे और खुदा के दरबार में कृतज्ञता एवं धन्यवाद के साथ सज्दे करेंगे कि यथासमय अल्लाह तआला ने ये नेमतें प्रदान कीं। किन्तु खेद कि कुछ उलेमा के फ़ित्ने फैलाने के कारण परिणाम विपरीत हुआ और खुदा तआला का धन्यवाद

करने के स्थान पर कृतघ्नता का एक ऐसा शोर और कोलाहल मचाया गया कि वे समस्त वास्तविकताएं, सच्चाइयां, रहस्य और अध्यात्म ज्ञान कुफ्र की बातें ठहरा दी गईं तथा इसी कारण से इस विनीत का नाम भी, काफ़िर, नास्तिक, अधर्मी और दज्जाल रखा गया। अपितु संसार के समस्त काफ़िरों एवं दज्जालों से अधिक निकृष्ट ठहरा दिया गया। इस उपद्रव फैलाने के मूल कर्ताधर्ता एक मुहम्मद हुसैन नामक शैख हैं जो बटाला ज़िला गुरदासपुर में रहते हैं और मानो वर्तमान युग के अधिकांश मुल्ला काफ़िर ठहराने में बहुत जल्दबाज़ हैं तथा इस से पूर्व कि वे किसी कथन या बात के मर्म या तह तक पहुंचें उसके कहने वाले को काफ़िर ठहरा देते हैं। कथित शैख साहिब में दूसरों की तुलना में यह आदत कुछ अधिक बढ़ी हुई प्रतीत होती है और अब तक हम पर जो सिद्ध हुआ है वह यही है कि जन्म से शैख साहिब के स्वभाव को सोच-विचार एवं सद्भावना का बहुत कम भाग प्राप्त हुआ है। यही कारण है कि सर्वप्रथम फ़त्वे का कागज़ हाथ में लेकर चारों ओर यही महानुभाव दौड़े अतः सर्वप्रथम काफ़िर और मुर्तद ठहराने में मियां नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी ने कलम उठाई और बटालवी साहिब के फ़त्वे को अपनी कुफ्र की गवाही से सुशोभित किया और मियां नज़ीर हुसैन ने इस विनीत को अविलम्ब बिना सोचे-समझे काफ़िर ठहरा दिया। इसके बावजूद कि मैं इस से पूर्व उनकी ओर स्पष्ट लिख चुका था कि मैं इस्लाम की किसी सर्वसम्मत आस्था से विमुख नहीं हूँ। इसके बहुत से कारणों में से एक कारण यह भी है कि कथित मियां साहिब अब वृद्धावस्था की इस आयु को पहुंच चुके हैं कि वे अपनी सुध-बुध खो चुके हैं तथा क्रोध की अधिकता तथा आक्रोश के अतिरिक्त उनमें सोच-विचार की कोई उत्तम शक्ति शेष नहीं रही अपितु यदि मैं ग़लती नहीं करता तो मेरे विचार में बहुत वृद्ध होने के कारण उनके होश एवं चेतना शक्ति भी विकृत होने के निकट हैं। इसके अतिरिक्त मुझे प्रतीत होता है कि वह आरंभ से ही एक निम्न स्तर की सोच रखने वाले व्यक्ति हैं तथा उनका स्वभाव ही कुछ ऐसा बना है कि उच्च वास्तविकताओं तथा बारीक अध्यात्म ज्ञानों से उनके स्वभाव में कुछ अनुकूलता नहीं। अतः फ़त्वा देने के मूल प्रवर्तक (कर्ता-धर्ता)

बतालवी साहिब तथा काफ़िर कहने वाले प्रथम व्यक्ति मियां नज़ीर हुसैन साहिब हैं और शेष समस्त उनके अनुयायी हैं जो प्रायः बतालवी साहिब की तसल्ली और देहलवी साहिब की शिष्यता का सम्मान करते हुए उनके पदचिन्हों पर चलते गए। यों तो इन उलेमा का किसी को काफ़िर ठहराना कोई नई बात नहीं। यह आदत तो इस गिरोह में विशेष तौर पर इस युग में बहुत उन्नति कर गई है तथा एक समुदाय दूसरे समुदाय को धर्म से बहिष्कृत कर रहा है किन्तु यदि खेद है तो मात्र इतना कि ऐसे फ़त्वे केवल विवेचनात्मक ग़लती ही के कारण आरोप योग्य नहीं अपितु बात-बात में ईमानदारी और संयम के विपरीत देखने में आता है तथा अभिमानपूर्ण ईर्ष्याओं को हृदय में रखकर धार्मिक बातों की शैली में उसको व्यक्त किया जाता है। क्या आश्चर्य का स्थान नहीं कि ऐसे संवेदनशील मामले में काफ़िर ठहराने में इतनी अधिक उद्दण्डता दिखाई जाए कि एक व्यक्ति बार-बार स्वयं अपने इस्लाम का इक़रार करता है और उन आरोपों से स्वयं को बरी प्रकट कर रहा है जो काफ़िर होने का कारण ठहराए गए हैं परन्तु फिर भी उसको काफ़िर ठहराया जाता है और लोगों को सख़्ती के साथ कहा जाता है कि कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह तथा एकेश्वरवाद एवं इस्लाम की आवश्यक आस्थाओं, नमाज़, रोज़े की पाबन्दी तथा अहले किब्ला: होने के बावजूद फिर भी काफ़िर है और अन्य मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) और काफ़िरों की भांति सदैव नर्क में रहेगा और कभी नर्क से बाहर नहीं होगा।

چوں نترسی از خدائے ذوالجلال کافر مگر مومنی باایں خیال	ایکہ دجالم بچشت نیز ضال مومنے را نام کافر مے نہی

अनुवाद : हे वह इंसान कि जिसकी नज़र में मैं दज्जाल और गुमराह हूँ तू प्रतापी ख़ुदा से क्यों नहीं डरता। तू मोमिन का नाम काफ़िर रखता है, अगर तू इस अक़्रीदा के बावजूद मोमिन है तो मैं सच-मुच काफ़िर हूँ। अनुवादक

और सामान्यतः समस्त कुफ़्र का फ़त्वा लगाने वाले उलेमा पर यह खेद है कि उन्होंने बतालवी साहिब के कुफ़्रनामः पर बिना सोचे समझे मुहरें लगा दीं

और आदि से अन्त तक मेरी पुस्तकें न देखीं तथा पत्राचार द्वारा मुझ से कुछ न पूछा। यदि वे शुभ नीयत के साथ मुहरें लगाते तो उन का हार्दिक प्रकाश उनको अवश्य इस बात की ओर विवश करता कि प्रथम मुझ से पूछते तथा मेरे शब्दों को हल करने के अर्थ भी मुझ से ही पूछते। फिर यदि इस जांच-पड़ताल के पश्चात् वे शब्द वास्तव में कुफ्र के वाक्य ही सिद्ध होते तो एक भाई के बारे में हार्दिक खेद के साथ कुफ्र की साक्ष्य लिख देते। यदि वे ऐसा करते और जल्दबाजी से काम न लेते तो उन आरोपों से बरी ठहरते जो एक काफ़िर कहने वाले जल्दबाज़ पर लागू हो सकते हैं, किन्तु खेद कि उन्होंने ऐसा नहीं किया अपितु जैसे एक भेड़ दूसरी भेड़ के पीछे चली जाती है और जो कुछ वह खाने लगती है उसी पर यह भी दांत मारती है। इस काफ़िर कहने में यही आचरण हमारे कुछ उलेमा ने भी धारण कर लिया। **فَمَا أَشْكُوا إِلَّا إِلَى اللَّهِ** (इसकी शिकायत खुदा के अतिरिक्त किसी से नहीं करता) इस बात को कौन नहीं जानता कि एक एकेश्वरवादी मुसलमान अहले क़िबलः को काफ़िर कह देना नितान्त संवेदनशील मामला है, विशेषतः जबकि वह मुसलमान बहुधा अपने लेखों एवं भाषणों में व्यक्त करे कि मैं मुसलमान हूं तथा अल्लाह और रसूल और महा वैभवशाली खुदा के फ़रिश्ते उसकी किताबों, उसके रसूलों तथा मृत्यु के पश्चात् उठाए जाने पर उसी प्रकार ईमान लाता हूं जैसा कि अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी शिक्षा में व्यक्त किया है और न केवल यही अपितु नमाज़, रोज़ा के उन समस्त आदेशों का पालन करने वाला भी हूं जो अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वर्णन किए हैं। ऐसे मुसलमान को काफ़िर ठहराना तथा उस का नाम सबसे बड़ा काफ़िर और दज्जाल रखना क्या यह उन लोगों का काम है जिन का आचरण संयम, चरित्र में खुदा का भय और स्वभाव में सद्भावना हो। यद्यपि जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूं यह बात तो सत्य है कि सदैव से उलेमा का यही आचरण रहा है कि प्रकाण्ड विद्वानों, बुजुर्गों और समय के इमामों की पुस्तकों की जब कुछ वास्तविकताएं, अध्यात्म ज्ञान, बारीकियां एवं उच्च रहस्यों को वे नहीं समझ सके तथा उनके

विचार में वे बातें खुदा की किताब और नबियों के आचरण के विपरीत पाई गईं तो कुछ उलेमा ने उन प्रकाण्ड विद्वानों एवं बुजुर्गों और इमामों को इस्लाम के दायरे से बाहर कर दिया तथा कुछ उलेमा ने नर्मी करते हुए काफ़िर तो न कहा किन्तु अहले सुन्नत वल जमाअत से बाहर कर दिया। फिर जब वह युग गुज़र गया और दूसरी शताब्दी के उलेमा पैदा हुए तो खुदा तआला ने उन बाद में आने वाले उलेमा के सीनों एवं हृदयों को खोल दिया और उनको वे बारीक बातें समझा दीं जो पहलों ने नहीं समझी थीं। तब उन्होंने उन पहले महान बुजुर्गों और इमामों को उन कुफ़्र के फ़त्वों से बरी कर दिया और न केवल बरी कर दिया अपितु उनके कुतुब, ग़ौस तथा वली होने की उच्चतम श्रेणियों को मानने भी लगे और इसी प्रकार उलेमा का स्वभाव रहा तथा उनमें से ऐसे भाग्यशाली बहुत ही कम निकले जिन्होंने खुदा के मान्य लोगों को समय पर स्वीकार कर लिया। इमामे-कामिल हुसैन^{रज़ि॰} से लेकर हमारे इस युग तक यही चरित्र और आचरण इन ज़ाहिर परस्त ज्ञान के दावेदारों का चला आया है कि इन्होंने समय पर किसी खुदा के मान्य पुरुष को स्वीकार नहीं किया। खुदा तआला ने यहूदियों के बारे में पवित्र कुर्आन में वर्णन किया था कि

أَفْكَلَمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُكُمْ (अलबक्ररह - 88)

अर्थात् हे बनी इस्राईल! क्या तुम्हारी यह आदत हो गई है कि प्रत्येक रसूल जो तुम्हारे पास आया तो तुम ने उनमें से कुछ को झुठलाया तथा कुछ को क्रतल कर दिया। यही आदत इस्लाम के उलेमा ने अपना ली ताकि यहूदियों से पूर्णरूप से एकरूपता पैदा करें। अतः उन्होंने नक़ल करने में कुछ अन्तर नहीं रखा तथा अवश्य था कि ऐसा होता ताकि वे सब बातें पूरी हो जाएं जो प्रारंभ से रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस एकरूपता एवं समानता के बारे में कही थीं। हां उलेमा ने खुदा के मान्य पुरुषों को स्वीकार भी किया और बड़ी श्रद्धा भी व्यक्त की, यहां तक कि उनकी जमाअत में भी सम्मिलित हो गए किन्तु उस समय जब कि वे इस नश्वर संसार से गुज़र गए और जब कि करोड़ों खुदा के बन्दों पर उनकी मान्यता प्रकट हो गई। कहने वाले ने खुदा के

लिए क्या खूब कहा है -

**जब मर गए तो आए हमारे मज़ार पर
पत्थर पड़ें सनम तेरे ऐसे प्यार पर**

और मेरी हालत को खुदा तआला भली भाँति जानता है उसने मुझ पर पूर्णरूप से अपनी बरकतें उतारी हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों में एक अगाढ़ प्रेम का स्वभाव प्रदान कर मुझे भेजा है ताकि लोगों को वास्तविक अनुकरण के मार्गों की शिक्षा दूं तथा उन्हें उस ज्ञान और कर्म रूपी अंधकार से बाहर निकालूं जो ध्यान की कमी के कारण उन पर छा रही है। मैं इस बात का दावा नहीं करता कि मेरी रूह में कुछ प्राप्त किए हुए ज्ञानों की कुछ अधिक पूंजी है अपितु मैं अपनी मूर्खता एवं योग्यता की कमी का सर्वप्रथम इक्रार करता हूं, किन्तु इसके साथ ही मैं इस इक्रार को भी गुप्त नहीं रख सकता कि मुझ जैसे अधम और नीच और अनपढ़ को अल्लाह तआला ने अपने प्रशिक्षण के आंचल में ले लिया तथा उन सच्ची वास्तविकताओं और पूर्ण अध्यात्म ज्ञानों से मुझे अवगत कर दिया कि यदि मैं सदैव समस्त सोच-विचार करने वालों से अधिक सोच-विचार करता रहता और इसके साथ एक लम्बी आयु भी पाता तब भी उन वास्तविकताओं एवं अध्यात्म ज्ञानों तक कदापि न पहुंच सकता। मैं उस दयालु स्वामी का इस कारण भी कृतज्ञ हूं कि उसने मुझे इस्लाम के प्रचार में इतना अधिक ईमान का जोश प्रदान किया है कि यदि इस मार्ग में अपने प्राण भी बलिदान करने पड़े तो मुझ पर यह कार्य खुदा की कृपा से कुछ भारी नहीं यद्यपि मैं इस संसार के लोगों से समस्त आशाएं समाप्त कर चुका हूँ। किन्तु खुदा तआला पर मेरी आशाएं अत्यन्त सुदृढ़ हैं। अतः मैं जानता हूँ कि यद्यपि मैं अकेला हूँ परन्तु फिर भी मैं अकेला नहीं, वह दयालु स्वामी (खुदा) मेरे साथ है और उस से अधिक कोई मुझ से निकटतम नहीं। उसी की कृपा से मुझे यह प्रेम करने वाली रूह प्राप्त हुई है कि कष्ट उठा कर भी उसके धर्म के लिए सेवा करूं तथा इस्लामी विशेष कार्यों को पूर्ण रुचि और लगन के साथ पूर्ण करूं। इस कार्य पर खुदा ने मुझे स्वयं नियुक्त किया है अब किसी के कहने से मैं रुक

नहीं सकता और न नऊजुबिल्लाह उसके इल्हामी आदेशों को तिरस्कार की दृष्टि से देख सकता हूँ। अपितु उन पवित्र आदेशों का अत्यन्त सम्मान करता हूँ और यही इच्छा है कि सम्पूर्ण जीवन इसी सेवा में व्यय हो। वास्तव में प्रसन्न एवं शुभ जीवन वही जीवन है जो खुदा के धर्म की सेवा और प्रचार में गुजरे अन्यथा यदि मनुष्य सम्पूर्ण जगत का भी स्वामी हो जाए तथा इतनी अधिक समृद्धि प्राप्त हो कि ऐश्वर्य के समस्त साधन जो संसार में एक सम्राट के लिए संभव हैं वे सब ऐश्वर्य उसे प्राप्त हों फिर भी वह ऐश्वर्य नहीं अपितु अज्ञाब का एक प्रकार है जिस की कड़वाहटें कभी साथ-साथ और कभी बाद में प्रकट होती हैं।

मैं खेद करता हूँ कि हमारे अधिकतर उलेमा का ध्यान प्रायः बाह्य, अधम और मोटे विचारों की ओर खिंचा हुआ है और वे उन बारीक वास्तविकताओं को नहीं समझते कि जो दयालु खुदा ने महान पुस्तक में रखी हैं और जो हमारे सरदार, पथ-प्रदर्शक अलैहिस्सलाम ने वर्णन की हैं और न केवल इतना ही अपितु वह ऐसे अध्यात्म ज्ञानी को जो खुदा तआला से विवेकपूर्ण अध्यात्म ज्ञानों का इनाम पाए और उन बारीक रहस्यों को खोले जिन का खोलना (स्पष्ट करना) समय की आवश्यकता ने अनिवार्य कर दिया है, नास्तिक, विधर्मी, अक्षरांतरण करने वाला तथा धर्म से विमुख ठहराते हैं। मैं देख रहा हूँ कि वे लोग वास्तविकताओं से प्रायः अज्ञान और केवल भौतिक और अवास्तविक पर सन्तोष करने वाले हैं तथा उनके स्वभाव का उस वास्तविक आनन्द की ओर झुकाव नहीं और न कुछ समरूपता है जो अध्यात्म ज्ञानियों को गूढ़ रहस्यों से अवगत होने पर प्राप्त होती है यद्यपि उन पर पूर्वी मूर्ति पूजा (पूर्वी विचारधारा) का प्रभाव तो जैसा पड़ना चाहिए था तो वह उन पर नहीं पड़ा किन्तु फिर भी उनके हृदयों में भ्रम पूजा की ऐसी मूर्तियां छुपी हुई हैं कि वे वास्तविक क्रिब्ले तक पहुंचने के मार्ग में रोक बन रही हैं। मैं पूर्ण विश्वास रखता हूँ कि उन मूर्तियों को तोड़ने के लिए खुदा तआला ने इरादा किया है और मैं किसी तर्क से सन्देह नहीं कर सकता कि अब वह समय आ गया है कि उन मूर्तियों को पूर्ण रूप से तोड़ दिया जाए तथा खुदा की उपासना करने वाले लोग खोई हुई वास्तविकताओं को पुनः प्राप्त

कर लें। खुदा तआला जो समस्त रहस्यों को जानता है भली भांति जानता है कि ये लोग इस्लामी वास्तविकता से दूर जा पड़े हैं और सच्चाई के मुबारक प्रकाश को उन्होंने त्याग दिया है।

इधर तो आन्तरिक तौर पर यह कठिनाई है जिसका मैंने संक्षिप्त तौर पर वर्णन किया है और विरोधी क्रौमों का क्या हाल वर्णन किया जाए कि वे ऐतराज एवं सन्देहों से ऐसे लदे हुए हैं कि जैसे एक वृक्ष किसी फल से लदा होता है। इनके बैर हमारे युग में इस्लाम के बारे में बहुत बढ़ गए हैं और प्रत्येक ने अपनी शक्ति तथा अपनी योग्यतानुसार इस्लाम पर ऐतराज करने आरंभ किए हैं। यदि हमारे विरोधियों में से कोई व्यक्ति भौतिक विज्ञान का कुछ ज्ञान रखता है तो वह इसी भौतिक शास्त्रीय ढंग से ऐतराज करता है और यह सिद्ध करना चाहता है कि इस्लाम भौतिक शास्त्र की प्रमाणित सच्चाइयों के विपरीत वर्णन करता है और यदि कोई विरोधी तिब्ब और डाक्टरी का कुछ ज्ञान रखता है तो वह उन्हीं अनुसंधानों को सरासर धोखा देने के मार्ग से इस्लाम पर ऐतराज करने के लिए प्रस्तुत करता है और इस बात पर बल देता है कि जैसे इस्लाम उन देखे एवं महसूस किए अनुभवों के विपरीत वर्णन कर रहा है जो नवीन अनुसंधानों के द्वारा पूर्णतया सिद्ध हो चुके हैं। इसी प्रकार वर्तमान के खगोल-शास्त्र का जिसको कुछ ज्ञान है वह उसी की दृष्टि से इस्लाम पर ऐतराज कर रहा है। अतः जहां तक मैंने मालूम किया है इस्लाम, पवित्र कुर्आन की शिक्षा और हमारे सरदार-व-मौला के बारे में अदूरदर्शी लोगों ने तीन हजार के लगभग ऐतराज किए हैं। यद्यपि देखने में इन ऐतराजों का एक तूफान पैदा होने से एक उचटती दृष्टि से एक खेद और अफ़सोस पैदा होता है, किन्तु जब ध्यानपूर्वक देखा जाए तो ये ऐतराज इस्लाम के लिए हानिप्रद नहीं हैं। अपितु यदि हम स्वयं ही लापरवाही न करें तो इस्लाम की छुपी हुई बारीकियां और सच्चाइयां खुलने के लिए खुदा तआला की दूरदर्शिता ने यह एक माध्यम पैदा कर दिया है ताकि उन नवीन मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानों) के प्रकाश से जो इस प्रकार से विचार करने वालों पर खुलेंगे और खुल रहे हैं सत्याभिलाषी उन भयावह अंधकारों से बच जाएं और जो इस युग में भिन्न-भिन्न

प्रकार की पद्धतियों में प्रकट हो रहे हैं। हां ये ऐतराज लापरवाही की स्थिति में बहुत भय का स्थान हैं, और एक गुमराही (पथ भ्रष्टता) का तूफान पैदा करने वाले मालूम होते हैं, और केवल इस्लामी आस्थाओं का याद रखना या पुरानी किताबों को देखना उनसे सुरक्षित रहने के लिए पर्याप्त नहीं। सच्चाई को पहचानने वाले लोग समझते हैं कि इस युग के इन ऐतराजों से मुसलमानों पर एक भारी परीक्षा आ गई है, और यदि मुसलमान लोग इस परीक्षा को लापरवाही की दृष्टि से देखेंगे तो आहिस्ता-आहिस्ता उनमें तथा उनकी सन्तान में यह विषाक्त तत्त्व प्रभाव करेगा यहां तक कि विनाश तक पहुंचाएगा। वह ईमान, जो बुरे इरादों और गलतियों पर विजय पाता है इफ़ान (आध्यात्मिक ज्ञान) के बिना कभी मिल नहीं हो सकता। अतः ऐसे लोग गलतियों और कुधारणाओं से कैसे सुरक्षित रह सकते हैं जो पवित्र कुर्आन की खूबियों से अपरिचित और बाह्य ऐतराजों का निवारण करने से असमर्थ तथा खुदा के कलाम की सच्चाइयों तथा उच्चतम आध्यात्म ज्ञान से इन्कारी हैं, अपितु इस युग में उनका वह खुशक ईमान बहुत बड़े खतरे में है और किसी छोटी परीक्षा को सहन करने योग्य नहीं है। खुदा तआला पर उसी व्यक्ति का ईमान सुदृढ़ हो सकता है जिसका उसकी किताब पर सुदृढ़ ईमान हो, और उसकी किताब पर तभी ईमान सुदृढ़ हो सकता है जब पुस्तकीय चमत्कारों के बिना कि जो अब आंखों के सामने भी मौजूद नहीं हैं स्वयं अल्लाह तआला का पवित्र कलाम उच्चतम श्रेणी का चमत्कार और मआरिफ़ एवं सच्चाइयों का अपार दरिया दिखाई दे। अतः जो लोग एक लेख के बारे में तो यह आस्था रखते हैं कि उसमें शक्तिमान खुदा की कुदरत के ऐसे असंख्य चमत्कार मौजूद हैं कि कोई व्यक्ति चाहे वह कैसा ही फ़िलास्फ़र और दार्शनिक हो उनके जैसा नहीं बना सकता। और एक जौ के बारे में उन को यह विश्वास है कि यदि समस्त संसार के दार्शनिक क्रयामत के दिन तक उसके चमत्कार एवं गुप्त विशेषताओं के बारे में सोचें, तब भी निश्चित तौर पर नहीं कह सकते कि उन्होंने वे समस्त विशेषताएं ज्ञात कर ली हैं। किन्तु यही लोग मुसलमान कहला कर और मुसलमानों की सन्तान कहला कर पवित्र कुर्आन के बारे में यह विश्वास रखते हैं कि वह

मोटे शब्दों तथा सरसरी अर्थों के अतिरिक्त अन्य कोई बारीक वास्तविकता अपने अन्दर नहीं रखता और खुदा के कलाम के भेदों एवं रहस्यों तथा अर्थों को उस सीमा तक समाप्त मान बैठे हैं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समय तथा तत्कालीन योग्यताओं के अनुसार कहे थे और यह भी जानते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण कथन पूर्ण रूप से इकट्ठे भी नहीं हुए और न यथोचित सुरक्षित रहे, किन्तु इन सब बातों के बावजूद कुर्आन के नवीन रहस्यों को ज्ञात करने से पूर्णतया खाली और लापरवाह हैं।

स्मरण रहे कि **नवीन रहस्यों** से हमारा तात्पर्य यह नहीं कि ऐसी बातें पवित्र कुर्आन से दिन-प्रतिदिन निकल सकती हैं जो उसकी निश्चित, सुस्पष्ट शरीअत की विरोधी हों अपितु रहस्यों, भेदों तथा बारीकियों से वे कार्य अभिप्राय हैं जो शरीअत की सम्पूर्ण बातों को क्रायम रख कर उनके पूरे-पूरे रूप को प्रकट करते हैं और उनकी पूर्ण वास्तविकता को सामने ले आते हैं, यहां तक कि पुस्तकीय (उदाहृत प्रमाण) को तर्क संगत करके दिखा देते हैं। इसलिए उन्हें रहस्यों की इस औचित्य के युग में आवश्यकता थी। जहां तक दृष्टि डाल कर देखो खुदा की यही सुन्नत (पद्धति) पाओगे कि खुदा तआला सदैव समय की आवश्यकताओं के अनुसार अपने धर्म की सहायता करता रहा है और जिस प्रकार के प्रकाश को देखने के लिए समय की स्थिति ने स्वाभाविक तौर पर इच्छा की वही प्रकाश अपने कलाम और काम में अपने किसी चुने हुए व्यक्ति के माध्यम से दिखाता रहा है ताकि इस बात का सबूत दे कि उसका कलाम और काम अपूर्ण नहीं और न कमजोर और निर्बल है। हज़रत **मूसा** के युग में सांपों के मुकाबले पर सांप की आवश्यकता पड़ी और हज़रत मसीह के मुकाबले पर वैद्यों और जादूगरों के मुकाबले पर रूहानी उपचार को दिखाने की आवश्यकताएं पड़ी। अतः खुदा तआला ने समय की मांग के अनुसार अपने नबियों को सहायता दी और हमारे सरदार-व-अनुकरणीय, नबियों के गौरव सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की आवश्यकताएं वास्तव में किसी एक प्रकार में सीमित न थीं और यह युग भी कोई सीमित युग न था बल्कि ऐसा विशाल था जिसका दामन क्रयामत तक फैला हुआ

है। इसलिए सामर्थ्यवान एवं दूरदर्शी खुदा ने पवित्र कुर्आन को असीम विशेषताओं पर आधारित किया और पवित्र कुर्आन अपनी उन विशेषताओं के कारण जिन में से भलाई की कोई कमी शेष नहीं रही थी प्रत्येक युग की खराबी का पूर्ण रूप से निवारण करता रहा। अतः आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में पवित्र कुर्आन का बड़ा कार्य खुदा की प्रजा के सिद्धान्तों का सुधार करना था इसलिए उसने सम्पूर्ण संसार को खुदा को पहचानने तथा प्रजा के अधिकारों के स्पष्ट और सीधे सिद्धान्त प्रदान किए और खोई हुई तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्थापित किया तथा संसार के अंधकारमय विचारों के सामने वह दार्शनिकतापूर्ण, प्रकाशमय तथा उच्च श्रेणी का सरस एवं सुबोध कलाम प्रस्तुत किया जिसने उस समय के समस्त विद्यमान विचारों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और दार्शनिकता, मारिफ़त, सरसता, सुबोधता तथा शक्तिशाली प्रभावों में एक महान चमत्कार दिखाया। फिर ऐसा ही प्रत्येक समय में जब किसी प्रकार का अंधकार जोश में आता गया तो इसी पवित्र कलाम का प्रकाश उस अंधकार का सामना करता रहा, क्योंकि वह पवित्र कलाम (वाणी) एक अनश्वर चमत्कार और विभिन्न युगों के विभिन्न अंधकारों का निवारण करने के लिए अपने अन्दर एक पूर्ण प्रकाश लाया था। इसलिए वह हर प्रकार के अंधकार को अपने प्रकाश की शक्ति द्वारा निवारण करता रहा यहां तक कि वह युग आ गया जिसमें हम हैं और जैसा कि पवित्र कुर्आन ने भविष्यवाणी की थी, पृथ्वी ने हमारे युग में वे समस्त अंधकार जो पृथ्वी के अन्दर छुपे थे बाहर रख दिए तथा पथभ्रष्टता, बेईमानी और बुद्धि के दुरुपयोग का एक बड़ा जोश प्रकट हो गया। यह वही टेढ़े स्वभावों का जोश है जिसे दूसरे शब्दों में **दज्जाल** का नाम दिया गया था और खुदा तआला ने पवित्र कुर्आन में ख़बर दी थी कि वह महान और पूर्ण कलाम इस तूफ़ान पर भी विजयी होगा। इसलिए अवश्य था कि खुदा के कलाम में वह सच्चा फ़ल्सफ़ा (दर्शन) भरा हुआ होता जो वर्तमान के धोखा देने वाले दर्शन (फ़ल्सफ़ा) पर विजयी हो जाता, क्योंकि वह अनश्वर (सदैव के) सुधारों के लिए आया है वह न थकेगा और न असहाय होगा जब तक कि प्रत्येक सौम्य स्वभाव में अपना शासन स्थापित न करे तथा दर्शनशास्त्र

का विष खाने वाले उस विषनाशक (तिरयाक़) के प्रतीक्षक थे। अतएव खुदा तआला ने उसको प्रकट कर दिया और अपवित्र तार्किकता का प्रभुत्व समाप्त करने के लिए उसने यही चाहा कि कुर्आन की तार्किकता का प्रभुत्व प्रकट करे और विरोधियों की झूठी तार्किकता को पीस डाले। परन्तु अफ़सोस उन लोगों पर जो समय को नहीं पहचानते। उन्हें इस बात की भी चिन्ता नहीं कि मुसलमानों की सन्तान को बाह्य आक्रमणों एवं उपद्रवों के कारण प्रतिदिन कैसे असहनीय कष्ट सामने आ रहे हैं और इस्लाम को दर्शन-शास्त्रीय भ्रमों से कितना आघात पहुंच गया है, यहां तक कि नवशिक्षा प्राप्त मुसलमानों का एक बड़ा भाग इस्लाम से ऐसा दूर जा पड़ा है कि जैसे उसने इस्लाम को त्याग दिया है। इसी प्रकार बहुत से मूर्ख और कम बुद्धि रखने वाले लोग इस्लाम के प्रकाश को त्याग कर ईसाई आस्थाओं के अंधकार में प्रविष्ट हो गए और एक लज्जाजनक आस्था जो अपयश और शर्म का स्थान है ग्रहण कर ली है। इस का यही कारण हुआ कि आधुनिक युग के व्यर्थ ऐतराज जो धोखे और मिथ्य तर्कों से भरे हुए थे उनकी अपूर्ण दृष्टि में महत्वपूर्ण हुए।

एक बड़ी खराबी यह है कि इस युग के उलेमा कुछ बातों में ईसाइयों इत्यादि को उनकी शिर्क करने वाली शिक्षा पर स्वयं ही सहायता देते हैं। उदाहरणतया वर्तमान ईसाइयों की झूठी आस्थाओं के अनुसार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने का विषय एक ऐसा विषय है कि हज़रत ईसा को खुदा बनाने के लिए मानो ईसाई धर्म का यह स्तंभ है, किन्तु वर्तमान युग के मुसलमान एक ओर तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु और पृथ्वी में दफ़न हो जाने का इक्रार करके फिर इस बात के भी इक्रारी होकर कि मसीह अब तक जीवित है ईसाइयों के हाथ में अपना एक लिखित इक्रार दे देते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम अपनी विशेषताओं में आम इन्सानों की विशेषताओं अपितु समस्त नबियों की विशेषताओं से अलग और निराला है क्योंकि जब एक सर्वश्रेष्ठ इन्सान जो मसीह अलैहिस्सलाम से छः सौ वर्ष के बाद आया और थोड़ी सी आयु पाकर मृत्यु पा गया और उस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर तेरह सौ वर्ष

गुजर भी गए परन्तु मसीह की अब तक मृत्यु नहीं हुई। तो क्या इस से यही सिद्ध हुआ या कुछ और कि मसीह अलैहिस्सलाम की हालत मानवीय आवश्यकताओं से हटकर है। अतः वर्तमान युग के उलेमा यद्यपि देखने में तो शिर्क की स्थिति से घृणा प्रकट करते हैं परन्तु मुश्रिकों को सहायता देने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी और क्रोध वाली बात तो यह है कि अल्लाह तआला तो अपने पवित्र कलाम में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु प्रकट करे और ये लोग अब तक उसे जीवित समझकर इस्लाम के लिए हज़ारों एवं असंख्य फ़ित्ने पैदा कर दें और मसीह को आकाश का हमेशा जीवित रहने और क़ायम रहने वाला तथा नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मीन पर मुर्दा ठहराएं। हालांकि मसीह की गवाही पवित्र कुर्आन में इस प्रकार से लिखी है कि

(अस्सफ़ - 61/7) **مُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ**

अर्थात् मैं एक रसूल की खुशखबरी देता हूँ जो मेरे बाद अर्थात् मेरे मरने के बाद आएगा और उसका नाम अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होगा फिर यदि मसीह अब तक इस शारीरिक अवस्था से गुज़र नहीं गया तो इस से अनिवार्य हो जाता है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अब तक इस संसार में नहीं आए। क्योंकि कुर्आन की स्पष्ट आयतें अपने खुले-खुले शब्दों से बता रही हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम जब इस शारीरिक अवस्था से गुज़र जाएगा तब आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस भौतिक अवस्था में आएंगे। कारण यह कि आने के मुकाबले पर जाना वर्णन किया गया है, और अवश्य है कि आना और जाना एक ही समान हों, अर्थात् एक उस लोक की ओर चला गया और एक उस लोक की ओर से आया। फिर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में दूसरी गवाही आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** में स्पष्टतापूर्वक दर्ज है जिसकी आँखें हों देखे। और याद रहे कि आयत **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** में उसी वादे के पूरा होने की ओर संकेत है जो आयत-

(आले इमरान - 3/56) **يُعِيسِي إِيَّايَ مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ**

में किया गया था और **تَوَفَّي** के उन अर्थों को समझने के लिए जो अभिप्राय

और आशय अल्लाह तआला का है ज़रूरी है कि इन दोनों आयतों के वादा और वादे के पूरा होने को मिलाकर देखा जाए। परन्तु अफ़सोस कि हमारे उलेमा को इस छान-बीन से कुछ सरोकार नहीं। यही **تَوَفَّى** का शब्द जो पवित्र कुर्आन के दो स्थानों में हज़रत मसीह के बारे में दर्ज है ऐसा ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भी यही शब्द पवित्र कुर्आन में मौजूद हैं। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَإِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ (अर्अद-13/41)

यदि हमारे उलेमा इस स्थान पर भी **تَوَفَّى** के अर्थ यही लेते कि आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी आकाश पर उठाए गए हैं तो हमें उन पर कुछ भी अफ़सोस न होता परन्तु उनकी धृष्टता और गुस्ताखी तो देखो कि **تَوَفَّى** का शब्द जहां कहीं पवित्र कुर्आन में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में आता है तो उस के मायने **मृत्यु** के लेते हैं और फिर जब वही शब्द हज़रत मसीह के लिए आता है तो उस के मायने **ज़िंदा उठाए जाने** के वर्णन करते हैं और कोई उनमें से नहीं देखता कि शब्द तो एक ही है। अंधे की तरह एक दूसरे की बात को मानते जाते हैं, जिस शब्द को खुदा तआला ने पच्चीस बार अपनी पुस्तक पवित्र कुर्आन में वर्णन करके स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि उसके अर्थ **रूह का क़ब्ज़ करना (निकालना)** है न कि कुछ और। अब तक ये लोग उस शब्द के अर्थ मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में कुछ और के और कर जाते हैं। मानो समस्त संसार के लिए **تَوَفَّى** के अर्थ तो क़ब्ज़ रूह हैं, परन्तु हज़रत इब्ने मरयम के लिए उसके अर्थ जीवित उठा लेना है। यह तरीका शिर्क का समर्थन नहीं तो और क्या है। एक ओर तो अयोग्य पक्षपाती ईसाई हमारे सय्यद व मौला को स्पष्ट एवं खुले तौर पर गालियां देते हैं और मसीह अलैहिस्सलाम को आकाश का तथा हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मीन का ठहरा देते हैं तथा दूसरी ओर ये उलेमा इस संवेदनशील युग में उनको सहायता दे रहे हैं और ईसाइयों के शिर्क-पूर्ण विचारों को स्वीकार करके उनके दावे को बढ़ावा दे रहे हैं।

काश ये लोग एक मिनट के लिए अपने द्वेषों से खाली होकर थोड़ा विचार

करते कि शिर्क क्या चीज़ है और उस की वास्तविकता क्या है तथा उसकी आधारभूत बातें और भूमिकाएं क्या हैं, ताकि उन पर शीघ्र स्पष्ट हो जाता कि खुदा तआला का अस्तित्व, या विशेषताएं या कथन या कार्य या उसकी खुदाई के अधिकार में किसी अन्य को भागीदार बनाकर अधिकार देना चाहे वह समान तौर पर या कुछ कम स्तर पर हो **यही शिर्क** है जो कभी क्षमा नहीं किया जाएगा।

और इसकी भूमिकाएं जिससे यह पैदा होता है ये हैं- कि किसी मनुष्य में उसके अस्तित्व या उसकी विशेषताओं एवं कार्यों के संबंध में कोई ऐसी विशेषता स्थापित कर दी जाए जो उसकी मानव-जाति में हरगिज़ न पाई जाए न बतौर ज़िल्ल (प्रतिबिम्ब) न बतौर अस्ल (मूल)। अब यदि हम एक मनुष्य के लिए यह मान लें कि जैसे वह अपनी प्रकृति या जीवन की आवश्यकताओं में समस्त मानव-जाति से अनोखा, अलग और मनुष्यता की सामान्य विशेषताओं से अपने अन्दर कोई ऐसी अतिरिक्त विशेषता रखता है जिसमें किसी अन्य को कुछ भाग प्राप्त नहीं तो हम इस अनुचित आस्था से शिर्क का एक ढेर इस्लाम के मार्ग में रख देंगे। पवित्र कुर्आन की स्पष्ट शिक्षा यह है कि वह खुदा जो अद्वितीय, पुनीत जो अपने अस्तित्व में तौहीद को चाहता है उसने अपनी सृष्टि को विशेषताओं में भागीदार रखा है और कुछ को कुछ का मसील (समरूप) और सदृश ठहराया है ताकि किसी विशेष व्यक्ति की कोई विशेषता जो अस्तित्व, कार्यों, कथनों और विशेषताओं से संबंधित है इस धोखे में न डाले कि वह विशेष व्यक्ति अपनी मानव जाति से अधिक एक ऐसी विशेषता अपने अन्दर रखता है कि कोई दूसरा व्यक्ति न मूल रूप से, न ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) रूप से उस का भागीदार नहीं और खुदा तआला की भांति अपनी विशेषता में एक और अद्वय है। अतएव पवित्र कुर्आन में सूरह 'इख्लास' इसी बात को वर्णन कर रही है कि अपने अस्तित्व एवं विशेषताओं में अद्वितीय होना खुदा तआला की विशेषता है। देखो महा वैभवशाली खुदा फ़रमाता है-

(अलइख्लास - 112/2) **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ**

और जब कि वास्तव में यही बात है कि सृष्टि की पहचान का बड़ा लक्षण

यही है कि कुछ लोग कुछ लोगों से समानता रखते हैं तथा कोई व्यक्ति कोई ऐसी व्यक्तिगत विशेषता एवं विशिष्टता नहीं रखता जो अन्य किसी व्यक्ति को उस से कोई हिस्सा न हो चाहे मूल रूप से अथवा ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) रूप से, तो फिर यदि इस स्थिति में हम मनुष्यों में से कोई ऐसा व्यक्ति मान लें जो अपनी कुछ विशेषताओं या कार्यों में दूसरों से पूर्णतया उत्कृष्ट और मानवीय अनिवार्यता से बढ़कर है और खुदा तआला के समान अपने कार्य या विशेषता में समानता रखता है तो जैसे हमने खुदा तआला की एकेश्वरवाद (वहदानियत) की विशेषता में एक भागीदार बना दिया। यह एक बारीक रहस्य है। इस पर भली भांति विचार करो खुदा तआला ने जो अपने कलाम में कई बार हज़रत मसीह की मृत्यु का वर्णन किया है यहां तक कि उनकी मां मरयम सिद्दीका के साथ जो सर्वसम्मति से मृत्यु प्राप्त है उन के वर्णन को मिला कर वर्णन किया कि

كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ (अलमाइदह - 5/76)

कि वे दोनों जब जीवित थे खाना खाया करते थे। इस पर बल देने का यह कारण था कि वह अपने अनादि ज्ञान से भली भांति जानता था कि अन्तिम युग में लोग मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने के विचार के कारण बहुत बड़े फ़िल्ते में पड़ेंगे और वह फ़िल्ता (उपद्रव) इस्लाम के लिए अत्यन्त हानिप्रद होगा। इसलिए उसने पहले से ही फ़ैसला कर दिया और भली भांति व्यक्त कर दिया कि मसीह मृत्यु पा चुका। कुछ मूर्ख समझते हैं कि आयत **إِنِّي مُتَوَفِّيكَ** (आले इमरान- 3/56) में केवल मसीह की मृत्यु का वादा है जिस से केवल इतना मालूम होता है कि खुदा तआला किसी समय मसीह को मृत्यु देगा, यह तो मालूम नहीं होता कि मृत्यु दे भी दी। परन्तु ये लोग नहीं सोचते कि खुदा तआला ने उस वादे के पूरा होने की भी तो ख़बर दे दी। जब कि स्वयं हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के मुंह से **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي** (अलमाइदह-5/118) का वर्णन किया। इसके अतिरिक्त यह भी विचार करने योग्य है कि खुदा तआला का वादा कि मैं ऐसा करने को हूँ ये शब्द स्वयं बताते हैं कि वह वादा शीघ्र पूरा होने वाला है और उस में कुछ विलम्ब नहीं, न यह कि रफ़ा का वादा तो उसी समय पूरा

हो जाए परन्तु मृत्यु देने का वादा अभी तक कि दो हजार वर्ष के लगभग गुज़र गए पूरा होने में न आए।

हे पाठकगण! इस समय उपरोक्त वर्णन से मेरा यह तात्पर्य नहीं कि मैं वर्तमान युग के उलेमा की गलतियाँ लोगों पर प्रकट करूँ। क्योंकि जो कुछ उनकी कुधारणा, अन्तःकरण का बुरा होना, बदगुमानी और गालियाँ देने की हालत मुझ पर खुली है। वह शीघ्र ही उन्हीं के प्रश्नों के उत्तर में वर्णन करूँगा। इस भूमिका में मुझे केवल यह अभिव्यक्त करना अभीष्ट है कि हमारे उलेमा ने इस संवेदनशील समय को जो इस्लाम पर आया हुआ है नहीं पहचाना। उन्होंने इसकी बजाए कि इस्लाम की सहायता करते ईसाइयों को ऐसी सहायता दी कि स्वयं अपने ही इक्रार से उन्हें नुबुव्वत का एक भाग दे दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न एक तर्क बल्कि बारह शक्तिशाली तर्कों और अटल लक्षणों से हमको समझा दिया था कि ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुका और आने वाला मसीह मौऊद इसी उम्मत में से है। परन्तु वर्तमान युग के उलेमा ने इस ओर लेशमात्र ध्यान न दिया और बहुत सी खराबियों को इस्लाम के लिए स्वीकार कर लिया और बाहरी आपत्तियों को आन्तरिक बनाए हुए झूठों से प्रतिष्ठा दे दी। इन्हीं विष भरी हवाओं के चलने के कारण इस्लाम धर्म एक निरन्तर और समाप्त न होने वाले खतरों में पड़ा हुआ है और अब किसी बुद्धिमान की बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती कि इन समस्त खराबियों का निवारण करना मानवीय शक्ति का कार्य है? अपितु वह खुदा जो अपने कुदरती अधिकारों से दरियाओं को थल और थल को दरिया के नीचे ला सकता है। उसी का कार्य है कि इस थल और समुद्र की खराबी का सुधार करे। भाइयो निश्चित समझो कि अब मुसलमानों की उस से अधिक गंभीर स्थिति है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय में यहूदियों की थी। और इस्लाम के चारों ओर ऐसे संकटों का सिलसिला छा रहा है कि जैसे किसी देश के चारों ओर बड़े-बड़े पर्वत छाए हों। यह बात कि सफलता के मार्ग कितने दुर्गम हो गए हैं और इस्लाम के चारों ओर अत्यधिक

जटिल परेशानियां एक दायरे की भांति इस्लाम को घेरे में ले रही हैं। इस का समझना किसी ऐसे बुद्धिमान पर कठिन नहीं जिसकी दृष्टि युग की वर्तमान खराबियों पर फिर गई हो। परन्तु अफ़सोस कि हमारे अधिकतर उलेमा जिनकी मूर्खता और अनभिज्ञता दयनीय है वे इस हुल्लड़ से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। और अत्यधिक अफ़सोस मुझे उस समय होता है जब मैं देखता हूं कि इस लापरवाही, अनभिज्ञता और कठोरता जो यह गिरोह इस्लाम के बारे में रखता है के बावजूद उन के सच्चे संयम तथा ईमानदारी में भी बहुत अन्तर आ गया है और इस्लाम, मुसलमानों तथा मानव जाति सुधारणा, गंभीरता, दृढ़ता, बुलंद हौसला, शिष्टाचार की श्रेष्ठता, सहानुभूति, उपकार, निष्कपटता और आपसी मित्रता करना जैसे उनके दिलों से पूर्णतया समाप्त हो गयी हैं और उत्तम खूबियां, क्षमा, उपकार, निष्कपटता तथा परस्पर संधि करना जैसे उनके दिल से मिट गए हैं। अधिकतर तो ऐसे हैं जिनकी आदतों में उपद्रव फैलाने के हज़ारों दरवाज़े खुले हैं परन्तु उपद्रव से बाहर निकलने और सुलह करने का एक भी (दरवाज़ा) नहीं। मैं देखता हूं कि घोर अभिमान अत्यंत और लापरवाही के कारण उनकी रूहानियत अत्यन्त कमज़ोर हो गयी है। उन्हें संसार और प्रतिष्ठा एवं ख्याति की ओर एक आकर्षण हो रहा है तथा खुदा की ओर (जाने) में अवरोध है इसका कारण यही है कि वे उस **वह्यी (अर्थात् कुरआन)** के उद्देश्य से दूर जा पड़े हैं कि जो दिलों को शुद्ध करने वाली तथा आन्तरिक गन्दगियों को धोने वाली है। वे कहते हैं परन्तु करते नहीं और दिखाते हैं परन्तु स्वयं चलते नहीं। इसलिए खुदा तआला ने उनके दिलों पर मुहरें लगा दीं और उन की समझ एवं बोध (फ़हम) को मोटा कर दिया। क्योंकि यह खुदा का नियम (सुन्नत) है कि जब तक कोई बारीक सावधानी के साथ शुभ कर्म न करे तब तक उसके दिल को बारीक रहस्य प्रदान नहीं किए जाते।

यह तो उलेमा का हाल है परन्तु अफ़सोस कि हमारे फ़क़ीरों का हाल इस से अधिक बुरा मालूम होता है इल्ला माशाअल्लाह हमारी क़ौम में अधिकतर ऐसे ही फ़क़ीर दिखाई देते हैं जिन्होंने इस्लाम पर यह धब्बा लगाया कि ऐसी हज़ारों

बिदअतें* बना लीं जिनका पवित्र शरीर में कोई सही मूल नहीं पाया जाता, और ऐसी व्यर्थ रस्मों एवं विचारों में गिरफ्तार हैं कि जिनका उल्लेख करने से भी शर्म आती है। कुछ तो हिन्दुओं के योगियों की भांति और लगभग-लगभग उनकी एक विशेष प्रकार की बनावट और लिबास में आयु व्यतीत करते हैं तथा अत्यन्त अनुचित एवं जंगलीपन की तपस्याओं में जो मसनून पद्धतियों से कोसों दूर हैं अपनी आयु को नष्ट कर रहे हैं। उनके चेहरों को देखने से ख़ुदा के प्रकोप के ऐसे लक्षण मालूम होते हैं तथा ऐसी प्रकोप ग्रस्त आकृति दिखाई देती है कि कदाचित् संसार में उस से अधिक दुर्भाग्य को बताने वाली अन्य कोई आकृति न हो।

अधिकांश फ़कीरों (भिक्षुओं) में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें वे अपने दिलों में एक ख़ूबी समझते हैं और इस बात का तर्क ठहराते हैं कि जैसे उन्होंने साधना (सुलूक) का एक बहुत बड़ा भाग तय कर लिया है, परन्तु वास्तव में वे बातें केवल मूर्खतापूर्ण विचार तथा जंगलीपन की गतिविधियां हैं और सच्चे मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानों) से ऐसी दूर हैं कि जैसे एक तीव्र धूप के समय बादल दुनिया से दूर होता है। ये लोग धर्म की कुछ सेवा नहीं कर सकते। आलस्य, समय नष्ट करना, अनियंत्रित और काहिली (काम से जी चुराना), उचाट मन, तथा डींगें मारने के जीवन का एक शक्तिशाली प्रभाव इन पर मालूम होता है जिसमें वे अपनी सम्पूर्ण आयु खो देते हैं और इस बात में वे बड़े विवश और असहाय पाए गए हैं कि अपनी किसी आदत को जो पवित्र शरीर के विरुद्ध बल्कि मानवता के विरुद्ध है बदल सकें।

कई लोग भिक्षु के भेष में ऐसे फिरते हैं कि जैसे उन्होंने अपने बुरे इरादों की प्रेरणा से जान बूझ कर इस्लाम के पवित्र मार्गों को त्याग दिया है और नितान्त नीच एवं लज्जाजनक कार्यों में इस सीमा तक ग्रस्त हो गए हैं कि मुझे आशंका है कि शैतान अपनी बहुत सी बदनामियों के बावजूद उन के बराबर है या नहीं।

परन्तु वास्तव में ये समस्त गुनाह उलेमा की गर्दन पर हैं जो निरर्थक झगड़ों

*बिदअत - धर्म के विरुद्ध नई बातें। (अनुवादक)

में अपने समयों को नष्ट करते हैं और लोगों की सच्ची हमदर्दी की ओर ध्यान नहीं देते। क्या वे यहूदियों से अपने बाह्य रूप पर मुग्धता, अपनी दुनियादारी, अपना दिखावा, अपना लोभ, लोगों को भड़का कर आपस में लड़ाना, अपनी बातों की चतुराई में कुछ कम हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि ये सब गुण उनमें कुछ अधिक ही हैं जिन को वे अत्यन्त होशियारी के साथ दूसरों से छुपाते हैं। वे सच से घृणा और असत्य से प्रेम रखते हैं। और न केवल यही बल्कि चाहते हैं कि दूसरों को भी उसी गढ़े में ढकेल दें जिसमें वे स्वयं गिरे हुए हैं। वे स्वाभाविक दुर्भाग्य के कारण धर्म के बाह्य रूप और शरीअत के छोटे भागों में उलझे हुए हैं तथा इस्लाम की श्रेष्ठतम सच्चाइयों और गूण एवं आध्यात्मिक रहस्यों को छूना नहीं चाहते और न उन रहस्यों एवं भेदों से कुछ लगाव रखते हैं जैसे हवा एक झरने (चश्मा) के मुख स्रोत में भरी होती है और उसके प्रतिपल ऊपर चढ़ने से वह झरना उछलता है यही हाल उनके स्वभाव रूपी झरने का है कि द्वेष की हवाओं एवं वाष्पों से उनका वह गन्दा झरना आजकल बड़े आवेग के साथ प्रकट हो रहा है जिसको वे बहुत समय से गुप्त तौर पर रखे हुए थे। **हे मेरे रब्ब! दया कर, हे मेरे रब्ब! दया कर।**

अतः हे भ्राताओ! इस युग में वह विषाक्त वायु आन्तरिक एवं बाह्य तौर पर फैली हुई है कि जिसका समूल विनाश मनुष्य के अधिकार में नहीं बल्कि उस सदैव जीवित रहने तथा क्रायम रहने वाले सर्वशक्ति सम्पन्न खुदा के अधिकार में है जो मौसमों को परिवर्तित करता, समयों को फेरता और सूखा (अकाल) पड़ने के बाद दया-वृष्टि करता है तथा जैसा कि तुम देखते हो कि गर्मी की तीव्रता अन्ततः वर्षा को खींच लाती है इस प्रकार से कि गर्मी जब चरम सीमा को पहुंचती है और उस तापमान के निकट अपना क्रदम रखने लगती है कि जिस से संभव है कि लोग मर जाएं तब उस अनादि रचयिता की पूर्ण दूरदर्शिता से उस गर्मी का एक तीव्र प्रभाव समुद्रों पर पड़ता है और उस गर्मी की तीव्रता के कारण समुद्रों से वाष्प उठते हैं तब समुद्रों की वायु जो कि शीतल, भारी तथा अपने अन्दर रोकने की शक्ति रखती है उन वाष्पों को अपनी ओर आकर्षित

करके एक गर्भवती महिला के समान उन से भर जाती है और आस-पास की हवाएँ प्राकृतिक तौर पर गतिशील होकर उसे ढकेलती और गति में लाती हैं तथा स्वयं माध्यम बन कर इस बात का कारण ठहराती हैं ताकि वह हवा बादलों का रूप धारण कर स्वयं को स्वाभाविक तौर पर उसी पृथ्वी की ओर लाए जहां की हवा उसकी अपेक्षा अधिक गर्म, हल्की और कम अवरोधक हो तब उसी मात्रा के अनुसार वर्षा होती है कि जितनी गर्मी होती है। यही रूप उस रूहानी वर्षा का भी है जो प्रत्यक्ष वर्षा के समान सदैव से अपनी ऋतुओं (मौसमों) पर बरसती चली आई है अर्थात् इस प्रकार से कि अकाल (सूखा) के दिनों में जबकि सूखा अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है सहसा तत्पर दिलों का गर्मी, मांग तथा इच्छा की गर्माहट बहुत जोश में आ जाती है, तब वह गर्मी दया के सागर तक जो एक अपार सागर है अपनी धधक और ताप को पहुंचा देती है, तब दया रूपी सागर उसके निवारण के लिए ध्यान देता है और बिना किसी मध्यम के वरदान की नूरानी वाष्पें निकलनी शुरू हो जाती हैं, तब वे सानिध्य प्राप्त फ़रिश्ते जो अपने हृदय की गति और जोश से ठंडे पड़े हुए तथा बहुत सूक्ष्म और **يَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ** (जो उन्हें कहा जाता है वही करते हैं) के चरितार्थ हैं, उन वरदानों को स्वीकार कर लेते हैं। फिर उन फ़रिश्तों से संबंध रखने वाले स्वभाव जो नबी, रसूल और मुहद्दिस हैं अपने सच्चाई के जोशों से उन्हें गति में लाते हैं और स्वयं माध्यम बन कर ऐसे यथोचित स्थान पर बरसाते हैं जो अपने अन्दर योग्यता एवं मांग की गर्मी रखता है। यह स्थिति इस संसार में सदैव बनी ही रहती है। हां उस भारी वर्षा के बाद जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र युग में हो चुकी है बड़ी बड़ी वर्षाओं की आवश्यकता नहीं रही और वह शुद्ध पानी अब तक नष्ट भी नहीं हुआ परन्तु छोटी-छोटी वर्षाओं की आवश्यकता है ताकि पृथ्वी की सामान्य हरियाली में अन्तर न आए। अतः जिस समय दयालु, दूरदर्शी और सामर्थ्यवान ख़ुदा देखता है कि पृथ्वी पर सूखापन विजयी हो गया है और उसके बाग के पौधे मुरझाए जाते हैं तब वर्षा का सामान अवश्य पैदा कर देता है। यह सदैव से प्रकृति का नियम है जिसमें तुम अन्तर नहीं पाओगे। इसी के अनुसार

अवश्य था कि खुदा तआला इन दिनों में भी अपने असहाय बन्दों पर दया करता। युग की हालत को देखो और स्वयं ही ईमान से गवाही दो। क्या यह समय वही समय नहीं है, जिसमें इस्लाम धर्म को खुदाई सहायतओं की आवश्यकता है। इस युग में जो कुछ इस्लाम धर्म और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निरादर किया गया और खुदा की शरीअत (धर्म-विधान) पर इतने प्रहार हुए तथा जिस प्रकार से अपना धर्म छोड़कर दूसरे धर्म में चले जाना (धर्मान्तरण) और नास्तिकता का दरवाजा खुला। क्या इसका उदाहरण किसी अन्य युग में भी मिल सकता है? क्या यह सच नहीं कि थोड़े ही समय में इस देश हिन्दुस्तान में लगभग **एक लाख** लोगों ने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया, और **छः करोड़** या कुछ अधिक **पुस्तकें** इस्लाम के विरुद्ध लिखी गईं तथा बड़े-बड़े सुशील खानदानों के लोग अपने पवित्र धर्म को खो बैठे। यहां तक कि वे जो आले रसूल कहलाते थे वे ईसाइयत का लिबास पहन कर रसूल के शत्रु बन गए और इतनी गालियां, अपमान और अपशब्दों की पुस्तकें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में प्रकाशित की गईं कि जिनके सुनने से शरीर कांपने लगता है और दिल रो-रो कर यह गवाही देता है कि यदि ये लोग हमारे बच्चों को हमारी आंखों के सामने क्रल्ल करते और हमारे घनिष्ठ एवं जिगरी परिजनों को जो संसार के प्रियजन हैं टुकड़े-टुकड़े कर डालते और हमें अपमानित करते हुए जान से मारते और हमारे समस्त माल पर कब्जा कर लेते तो खुदा की क्रसम, पुनः खुदा की क्रसम हमें दुःख न होता तथा इतना दिल न दुखता जितना इन गालियों एवं अपमान से जो हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का किया गया दुखा। फिर क्या अभी उस अन्तिम संकट का वह समय नहीं आया जो इस्लाम के लिए संसार के अन्तिम दिनों में प्रारब्ध था। क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि इस से बढ़कर कोई अन्य युग भी आने वाला है जो पवित्र कुर्आन तथा हदीसों की दृष्टि से इन वर्तमान उपद्रवों से कुछ अधिक उपद्रव रखता होगा। अतः भाइयो तुम स्वयं पर अन्याय (जुल्म) न करो और भली भांति विचार कर लो कि समय आ गया तथा बाह्य एवं आन्तरिक उपद्रव चरम सीमा तक पहुंच गए। यदि तुम इन समस्त उपद्रवों

को तराजू के एक पलड़े में रखो तथा दूसरे पलड़े के लिए समस्त हदीसों और सम्पूर्ण पवित्र कुर्आन में तलाश करो तो उनके बराबर तो क्या उनका हजारवां भाग भी वे उपद्रव कुर्आन और हदीस के अनुसार सिद्ध नहीं होंगे। फिर वह कौन सा खराबी का युग और किस बड़े **दज्जाल का समय** है जो इस युग के बाद आएगा और उपद्रव फैलाने की दृष्टि से इस से अधिक बुरा होगा। क्या तुम सिद्ध कर सकते हो कि इन उपद्रवों से अधिक पवित्र कुर्आन और नबवी हदीसों में ऐसे उपद्रवों का पता मिलता है जिन का अब नामोनिशान नहीं। निस्सन्देह स्मरण रखो कि यदि तुम इन उपद्रवों का उदाहरण तलाश करने के लिए प्रयास करो यहां तक कि इस प्रयास में मर भी जाओ तब भी पवित्र कुर्आन तथा नबवी हदीसों से कदापि सिद्ध नहीं होगा कि कभी किसी युग में इन वर्तमान उपद्रवों से बढ़कर कोई अन्य उपद्रव भी आने वाले हैं। **सज्जनो! यहां वे दज्जालियतें फैल रही हैं जो तुम्हारे काल्पनिक दज्जाल के बाप को भी याद नहीं होंगी।** ये कारवाइयां खुदा की प्रजा के अपहरण के लिए हजारों पहलुओं से जारी की गई हैं जिन के लिखने के लिए भी एक रजिस्टर चाहिए। इनमें विरोधियों को सफलता भी ऐसी उच्च श्रेणी की हुई है कि दिलों को हिला दिया है और इनके छल-प्रपंचों ने सामान्य तौर पर दिलों पर बहुत प्रभाव डाला है तथा उनके भौतिक एवं दार्शनिकता ने ऐसी चपलता और धृष्टता का बीज फैला दिया है कि जैसे उसके फ़िलास्फ़रों में से प्रत्येक व्यक्ति **أَنَا الرَّبُّ** (मैं रब हूँ) होने का दावा करता है। अतः जागो और उठो और देखो कि यह कैसा समय आ गया और सोचो कि ये वर्तमान विचार शुद्ध एकेश्वरवाद (तौहीद) के कितने विरोधी हैं। यहां तक कि खुदा तआला की कुदरत का विचार भी एक बड़ी मूर्खता का मार्ग समझा जाता है और प्रारब्ध के शब्द को मुंह पर लाने वाला बड़ा मूर्ख कहलाता है और दार्शनिकता का मस्तिष्क रखने वाले लोग नास्तिकता को फैलाते जाते हैं और इस चिन्ता में लगे हुए हैं कि खुदाई की सम्पूर्ण **मशीनरी** किसी प्रकार से हमारे हाथ में ही आ जाए। हम ही जब चाहें महामारियों को दूर कर दें, मौतों को टाल दें और जब चाहें वर्षा करें, खेती उगालें तथा कोई वस्तु हमारे शक्ति के क़ब्जे से

बाहर न हो। विचार करो कि इस युग में इन पथ-भ्रष्टताओं का कुछ अन्त भी है। इन आपदाओं ने इस्लाम के दोनों बाजुओं पर कुल्हाड़ी रख दी है। हे सोने वालो जागो, हे लापरवाही करने वालो उठ बैठो कि एक महान क्रान्ति का समय आ गया। यह रोने का समय है न कि सोने का, और गिड़गिड़ाने का समय है न कि हंसी-ठट्ठे और काफ़िर कहने का। दुआ करो कि कृपालु ख़ुदा तुम्हें आंखें प्रदान करे ताकि तुम वर्तमान अंधकार को भी पूर्णतया देख लो तथा उस प्रकाश को भी जो ख़ुदा की रहमत (दया) ने अंधकार को मिटाने के लिए तैयार किया है। पिछली रातों को उठो और ख़ुदा तआला से रो-रो कर हिदायत (मार्ग-दर्शन) चाहो और अकारण ख़ुदा के सिलसिले को मिटाने के लिए बद-दुआएं मत करो और न योजनाएं बनाओ। ख़ुदा तआला तुम्हारी लापरवाही और भूल के इरादों का अनुकरण नहीं करता। वह तुम्हारे मस्तिष्कों तथा हृदयों की मूर्खताएं तुम पर प्रकट करेगा और अपने बन्दे का सहायक होगा तथा उस वृक्ष को कभी नहीं काटेगा जिस को उसने अपने हाथ से लगाया है। क्या तुम में से कोई अपने उस पौधे को काट सकता है जिस के फल लाने की उसे आशा है। फिर वह जो सर्वज्ञाता, दृष्टा और दयालुओं में महा दयालु है, वह क्यों अपने उस पौधे को काटे जिसके फलों के मुबारक दिनों की वह प्रतीक्षा कर रहा है। जबकि तुम मनुष्य होकर ऐसा कार्य करना नहीं चाहते। फिर वह जो अन्तर्यामी है जो प्रत्येक दिल की तह तक पहुंचा हुआ है ऐसा कार्य क्यों करेगा। अतः तुम ख़ूब याद रखो कि तुम इस लड़ाई में अपने ही अंगों पर तलवारें मार रहे हो। इसलिए तुम आग में हाथ मत डालो। ऐसा न हो कि वह आग भड़के और तुम्हारे हाथ को भस्म कर डाले। निस्सन्देह समझो कि यदि यह कार्य इन्सान का होता तो इसको मिटाने वाले बहुत से लोग पैदा हो जाते और यह अपनी इस आयु तक भी हरगिज़ न पहुंचता जो बारह वर्ष की अवधि और प्रोढ़ावस्था है। क्या तुम्हारी दृष्टि में कभी कोई ऐसा झूठ गढ़ने वाला गुज़रा है जिसने ख़ुदा तआला पर ऐसा झूठ बना कर कि वह मुझ से बातें करता है, फिर इस लम्बी अवधि की सुरक्षा को पा लिया हो। अफ़सोस कि तुम कुछ भी विचार नहीं करते और पवित्र कुर्आन की उन

आयतों को याद नहीं करते जो स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में महा प्रतापी खुदा फ़रमाता है और कहता है कि यदि तू मुझ पर एक कण भर झूठ गढ़ता तो मैं तेरी प्राण-धमनी काट देता। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिक कौन प्रिय है जो इतना बड़ा झूठ बना कर अब तक सुरक्षित रहे बल्कि खुदा तआला की नेमतों से मालामाल भी हो। अतः हे भाइयो स्वार्थ परायणता से रुक जाओ और जो बातें खुदा तआला के ज्ञान से विशेष हैं उन में सीमा से अधिक हठ मत करो और आदत के सिलसिले को तोड़ कर तथा एक नए इन्सान बन कर संयम के मार्गों पर चलो ताकि तुम पर दया हो और खुदा तआला तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे। अतः डरो और रुक जाओ।

و ان لم تنتهوا فسوف يأتي الله بنصرة من عنده و ينصر عبده و يمزق اعداءه و لا تضرّونه شيئاً

अर्थात्- यदि तुम नहीं रुकोगे तो शीघ्र ही खुदा तआला अपने पास से सहायता भेजेगा और अपने बन्दे की मदद करेगा तथा उसके शत्रुओं को पीस डालेगा और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुंचा सकोगे।

بدہ از چشم خود آ بے درختانِ محبت را مگر روزے دہندت میوہائے پر حلاوت را

प्रेम के वृक्षों को अपनी आंखों के पानी से सींच, ताकि एक दिन वे तुझे मीठे फल दें।

مہ اسلام در باطن حقیقت ہا ہے دارد کجا باشد خبر زان مہ گرفتار ان صورت را

इस्लाम का चन्द्रमा अपने अन्दर बहुत सी वास्तविकताएं रखता है। बाह्यदर्शियों को उस चन्द्रमा (की खूबियों) की क्या खबर हो सकती है।

من از یار آدم تا خلق را این ماہ بنام گرام روزم نمی بینی بہ بینی روز حسرت را

मैं उस यार की ओर से आया हूं ताकि लोगों को यह चन्द्रमा दिखाऊं। यदि आज तू मुझे नहीं देखेगा तो एक दिन पश्चाताप का दिन देखेगा।

گراز چشم تو پنهانست شانم دم مزن بارے کہ بد پرہیز بیمارے نہ بیند روائے صحت را

यदि मेरी शान (प्रतिष्ठा) तेरी आंखों से छिपी है तो भी चुप रह कि परहेज़ न करने वाला रोगी स्वास्थ्य का मुख नहीं देखता।

چو چشم حق شناس و نورِ عرفانت نہ بخشیدند نہادی نام کافر لاجرم عشاقِ ملتدا

चूंकि तुझे अध्यात्म की आंख और विवेक का प्रकाश नहीं दिया गया, इसलिए तूने इस्लाम के प्रेमियों का नाम काफ़िर रख दिया है।

کجا از آستانِ مصطفیٰ اے ابلہ بگریزیم نمی یا نیم درجائے دگرایں جاہ و دولت را

हे मूर्ख हम मुस्लिमों के दरबार से भागकर कहाँ जाएं, क्योंकि हम किसी अन्य स्थान पर यह सम्मान और दौलत नहीं पा सकते।

بجز اللہ کہ خود قطع تعلق کرد ایں قوے خدا از رحمت و احسان میسر کرد خلوت را

अल्हम्दोलिल्लाह कि इस क्रौम ने स्वयं ही मुझ से संबंध-विच्छेद कर लिया और खुदा ने सहानुभूति तथा कृपा से एकान्त उपलब्ध कर दिया।

چہ دوزخہا کہ میدیدیم بیدار چنیں روبا بنام دلبر خود را کہ بازم دوا جنت را

उन चेहरों के देखने से मैं कितना दुःख पाता था, मुझे अपने यार पर गर्व है कि उसने फिर मुझे जन्नत प्रदान की।

چہ سوزی ازاں قریبے کہ بالدار میدارم اگر زوریست در دست بگردان رزق قسمت را

तू उस सानिध्य (कुर्ब) के कारण जो मुझे प्रियतम से प्राप्त है क्यों जलता है? यदि तेरे हाथ में शक्ति है तो भाग्य की आजीविका को बन्द कर दे।

بہ نخوت ہانمی آید بدست آں دامن پاکش کسے عزت از ویابد کہ سوز درخت عزت را

उस का पवित्र दामन अभिमान से हाथ नहीं आता। उसके यहां उसी को सम्मान मिलता है जो सम्मान रूपी लिबास जला देता है।

اگر خواہی رہ مولیٰ زلاف علم خالی شو کہ رہند ہند در کوش اسیر کبر و نخوت را

यदि मौला का मार्ग चाहता है तो ज्ञान की डींगें मारना छोड़ दे कि उसके कूचे में क्रैदी अहंकार और अभिमान को घुसने नहीं देते।

منہ دل در تنعم ہائے دنیا گر خدا خواہی کہ میخواید نگار من تہستانِ عشرت را

यदि खुदा का अभिलाषी है तो सांसारिक नेमतों से हृदय न लगा। मेरा

प्रियतम ऐसे लोगों को पसंद करता है जो ऐश्वर्य को त्यागने वाले हों।

مصفاً قطره باید که تا گوهر شود پیدا کجا بیند دل ناپاک روئے پاک حضرت را

पानी की परिष्कृत (साफ़) बूंद चाहिए ताकि उस से मोती पैदा हों। अपवित्र दिल खुदा के पवित्र चेहरे को कहां देख सकता है।

نئے باید مر ایک ذرہ عزت ہائے این دنیا منہ از بہر ماکر سی کہ ماموریم خدمت را

मुझे संसार का लेशमात्र भी सम्मान नहीं चाहिए। हमारे लिए कुर्सी न बिछा कि हम तो सेवा पर आदिष्ट (मामूर) हैं।

ہمہ سخلق و جہان خواہد برائے نفس خود عزت خلاف من کہ میخواستیم براہ یار ذلت را

सब लोग और समस्त संसार अपने लिए सम्मान चाहता है, इस के विपरीत मैं यार के मार्ग में अपमान मांगता हूँ।

ہمہ در دور این عالم امان و عافیت خواهند چه افتاد این سر مارا کہ میخواستیم مصیبت را

सब लोग इस युग में अमन और सुरक्षा के अभिलाषी हैं, मेरे सिर को क्या हुआ कि वह दुख का अभिलाषी है।

مراہر جا کہ می بینم رخ جانان نظر آید در خشد در خور و در ماہ بنامد ملاحظت را

मुझे तो जिस ओर देखता हूँ प्रियतम का चेहरा ही दिखाई देता है, सूर्य में भी वही चमकता है और चन्द्रमा में भी वही लावण्यता (सौन्दर्य) दिखाता है।

حریص غربت و عجزم ازاں روزیکہ دانستم کہ جادر خاطرش باشد دل مجروح غربت را

मैं उस दिन से गरीबी और लाचारी का लालची हूँ जब से मैंने जाना कि उसके दरबार में ज़ख्मी, गरीब दिल का सम्मान है।

من آن شاخ خودی و خود روی از تیغ برکندم کہ می آرد ز ناپاکی بر نقرین و لعنت را

मैंने अहंकार और स्वच्छेचार की उस शाखा को जड़ से काट डाला जो अपनी अपवित्रता से नफ़रत और लानत का फल पैदा करती है।

اگر از روضه جان و دل من پرده بردارند بہ بنی اندران آل دلبر پاکیزہ طلعت را

यदि मेरे प्राण और दिल के चमन से पर्दा उठाया जाए तो तू उसमें उस प्रियतम का आभामय पवित्र चेहरा देख लेगा।

فروغِ نورِ عشقِ اوز بام و قصر مار و شن مگر بیند کسے آن را کہ میدارد بصیرت را

उसके प्रेम रूपी प्रकाश की झलक से हमारी छत और महल प्रकाशमान हैं परन्तु उसे वही देखता है जो विवेक रखता है।

نگاہِ رحمتِ جانان عنایتِ بہمن کردست و گرنہ چوں منی کے یابد آن رُشد و سعادت را

प्रियतम की दया-दृष्टि ने मुझ पर बड़ी कृपाएं की हैं अन्यथा मुझ जैसा इन्सान किस प्रकार इस मार्ग-दर्शन और हिदायत को पाता।

نظرِ بازانِ علمِ ظاہر اندر علمِ خود نازند ز دستِ خود فلندہ معنی و مغز و حقیقت را

सांसारिक विद्याओं के ज्ञाता अपने ज्ञान पर दंभित (नाजां) हैं, उन्होंने अपने हाथ से वास्तविकता, यथार्थ और बीज (गूदा) को दूर फेंक दिया।

ہمہ فہم و نظر در پردہ ہائے کبر پوشیدند چنان خواہند این خمرے کہ پاکال جامِ قربت را

उन्होंने तकब्बुर (घमंड) के पदों में अपनी बुद्धि एवं विवेक को छिपा दिया और उस मदिरा के ऐसे इच्छुक हैं जैसे पवित्र लोग खुदा के सानिध्य के।

خدا خود قصہ شیطان بیاں کردست تا دانند کہ این نخوت کندا بلیس ہر اہل عبادت را

खुदा ने स्वयं शैतान का क्रिस्सा इसलिए वर्णन किया है ताकि लोगों को मालूम हो कि अभिमान इबादत करने वाले (उपासक) को भी शैतान बना देता है।

بلفاظی بسر کردند عمر خود بلا حاصل دے از بہر معنی ہانمی یابند فرصت را

उन लोगों ने अपनी आयु डींगें मारने में गुजार दी परन्तु वास्तविकता के लिए उन को एक पल की फुर्सत नहीं।

گزارف و لاف شان در ظاہر شرعست ہم باطل کہ غافل از حقائق کے نکوداند شریعت را

स्पष्ट शरीअत के बारे में उनकी बकवास झूठ है क्योंकि वास्तविकताओं से लापरवाह मनुष्य शरीअत को कब समझ सकता है।

مسیح ناصری را تا قیامت زندہ می فہمند مگر مد فون یثرب را ندادند ایں فضیلت را

ये मसीह नासिरी (ईसा अलैहिस्सलाम) को क्रयामत तक जीवित समझते हैं परन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह श्रेष्ठता नहीं देते।

زبوائے نافہ عرفاں چو محروم ازل بودند پسندیدند در شان شه خلق ایں مذلت را
 چونکہ عفران کی کستوری کی سوغند سے اناذی کال سے وئچیت تھے، اسیلئے
 سلسار کے سمراٹ کی پرتیٹھا میں اپمان پسند کیا۔

ہمہ دُرہائے قرآن را چو خاشاکے بیگلندند ز علم نام تمام شان چہا گم گشت ملت را
 کورآن نے اپنی آسٹھا (اکریدے) سے سمست اسیایوں کی سہایتا کی۔
 اسی کارن سے مودی کی اباذت کرنے والوں میں بھی دلیری آا گی۔

ہمہ عیسائیان را از مقال خود مدد دادند دلیری ہاپدید آمد پر ستاران میت را
 انھوں نے اپنے اکریدے سے خد اسیایوں کی مدد کی اسی وناہ سے مودی کی
 پوجا کرنے والوں میں دلیری آا گی۔

درین ہنگام پر آتش بخواب خوش چساں غسیم زماں فریاد میدارد کہ بشنا بید نصرت را
 اسی ہدای-ویدارک (آاتشی) یوگ میں میں آرام کی نیںد کیوںکر سو سکتا
 ہوں جبکی یوگ آارتناذ (فریاد) کر رہا ہے کی شیا سہایتا کے لیے پھنچو۔

شب تاریک و بیم دزد و قوم ہاچنیں غافل کجا زیں غم و مایہ نما خود دست قدرت را
 انڈکارمے رات، چور کا ہے، اور کراؤم لاپرناہ اسی گم (شوگ) سے
 کہاں جاؤں؟ ہے ربب سواں اپنی کدراٹ کا ہاٹ دیا۔

بخاک انگیزی شان برضیائے خود نمی ترسم نہان کے ماند آن نورے کہ حق بخشید فطرت را
 جو مے پکاٹ پر میتی ڈال رہے ہیں اسیکا مڈے ہے نہیں۔ ہلا وہ پکاٹ
 کسے ٹیپ سکتا ہے جو خد نے مے پکڑتی کو پراان کیا ہے۔

کجا غوغائے شان بر خاطر من و حشقی آرد کہ صادق بز دلے نبود و گر بیند قیامت را
 انکے شور ایں کولاہل سے مے دل میں ہبراہٹ پءا نہیں ہوتی۔ سچا
 کبھی کایر نہیں ہوتا چاہے وہ کرایامت (پراے) کو دے۔

اب اسی سے پورے کی ہم دوسری بہسوں کی اور اڈان دے اسی بہس کا
 اٹلےخ کرنا نیتانٹ آاوشےک ہے کی اسیلام ارم کی واسٹویکٹا کیا ہے
 تٹھا اس واسٹویکٹا تک پھنچنے کے ساڈن کیا ہے اور اس واسٹویکٹا کا

पालन करने के फल क्या हैं। क्योंकि बहुत से बारीक रहस्यों का समझना इसी बात पर निर्भर है कि प्रथम इस्लाम की वास्तविकता और फिर उस वास्तविकता से साधन और फिर उसके फल भली भांति समझ में आ जाएं तथा हमारे आन्तरिक विरोधियों के लिए यह बात अत्यन्त लाभप्रद होगी कि वे **इस्लाम की वास्तविकता** और उसकी संबंधित बहसों को ध्यानपूर्वक पढ़ें। क्योंकि जिन सन्देहों और आशंकाओं में वे ग्रस्त हैं अधिकतर वे ऐसे हैं कि केवल इसी कारण से दिलों में पैदा हुए हैं कि इस्लाम की सर्वांगपूर्ण वास्तविकता और उसके साधन एवं फलों पर विचार नहीं किया गया। और इस बात में कुछ सन्देह नहीं कि इन समस्त वास्तविकताओं पर विचार करने के पश्चात् यदि इस खाकसार के आन्तरिक विरोधी अपने आरोपों के मुकाबले पर मेरे उत्तरों को पढ़ेंगे तो बहुत से भ्रमों एवं शंकाओं से मुक्ति पा जाएंगे बशर्ते कि वे ध्यान से पढ़ें। फिर उन स्थानों को दृष्टि के सामने रख कर मेरे उन उत्तरों पर विचार करें जो मैंने उन के सन्देहों को ध्वस्त करने के लिए लिखे हैं। इसी प्रकार धर्म के विरोधियों को भी इन वास्तविकताओं के वर्णन करने से बहुत लाभ होगा तथा वे इस स्थान से समझ सकते हैं कि धर्म क्या चीज़ है और उसकी सच्चाई के निशान क्या हैं।

अतः स्पष्ट हो कि अरबी शब्दकोश में **इस्लाम** उसको कहते हैं कि बतौर पेशगी (अग्रिम तौर पर) एक वस्तु का मूल्य दिया जाए और या यह कि किसी को अपना कार्य सुपुर्द करें और या यह कि मैत्रीयता के अभिलाषी हों और या यह कि किसी बात या झगड़े को छोड़ दें।

और **इस्लाम** के पारिभाषिक अर्थ वे हैं जो इस पवित्र आयत में उसकी ओर संकेत है, अर्थात् यह कि

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٣﴾
(अलबक्ररह-2/113)

अर्थात् मुसलमान वह है जो खुदा तआला के मार्ग में अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को सौंप दे अर्थात् अपने अस्तित्व को अल्लाह तआला के लिए और उसके इरादों का पालन करने के लिए तथा उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए समर्पित कर

दे और फिर शुभ कार्यों पर खुदा तआला के लिए स्थापित हो जाए और अपने अस्तित्व की समस्त काम करने वाली शक्तियां उसके मार्ग में लगा दे। तात्पर्य यह कि आस्थागत एवं व्यावहारिक तौर पर केवल खुदा तआला का हो जाए।

“आस्थागत” तौर पर इस प्रकार से कि अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को वास्तव में एक ऐसी वस्तु समझ ले जो खुदा तआला की पहचान, उसकी आज्ञा का पालन करना, उससे प्रेम और मुहब्बत और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए बनाई गई है।

और “अमली” (व्यावहारिक) तौर पर इस प्रकार से कि शुद्ध तौर पर खुदा के लिए वास्तविक नेकियां जो प्रत्येक शक्ति से संबंधित तथा प्रत्येक खुदा की दी हुई सामर्थ्य से संबद्ध हैं, करे परन्तु ऐसी रुचि, रसिकता और तन्मयता से कि जैसे वह अपनी आज्ञाकारिता के दर्पण में अपने माबूद-ए-हक्रीक्री (सच्चे उपास्य) को देख रहा है।

आयत का शेष अनुवाद यह है कि जिसकी आस्थागत एवं व्यावहारिक सफाई ऐसे व्यक्तिगत प्रेम पर आधारित हो तथा ऐसे स्वाभाविक जोश से उस से अच्छे कार्य जारी हों वही है जो अल्लाह के नजदीक प्रतिफल का पात्र है। और ऐसे लोगों पर न कुछ भय है और न वे कुछ दुख रखते हैं। अर्थात् ऐसे लोगों के लिए स्पष्ट रूप से वर्णित की गई है। क्योंकि जब मनुष्य को अल्लाह तआला के अस्तित्व और विशेषताओं पर ईमान लाकर उस से पूर्ण अनुकूलता हो गई और उसका इरादा और खुदा तआला का इरादा परस्पर एक हो गया तथा उसका सम्पूर्ण आनंद उसकी आज्ञा का पालन करने में हो गया और सम्पूर्ण शुभ कार्य, कठिन परिश्रम से नहीं बल्कि आनंद और हर्ष से होने लगे, तो यही वह अवस्था है जिसे मुक्ति, मोक्ष और रिहाई का नाम दिया जाना चाहिए और परलोक (आखिरत) में जो कुछ मोक्ष के बारे में देखा और महसूस होगा वह वास्तव में इसी सुदृढ़ अवस्था के प्रतिबिम्ब और लक्षण हैं जो इस संसार में भौतिक तौर पर (शारीरिक तौर पर) प्रकट हो जाएंगे। तात्पर्य यह है कि स्वर्गीय जीवन इसी संसार से आरंभ हो जाता है तथा नार्कीय दंड की जड़ भी इसी संसार की गन्दगी और मूर्खतापूर्ण का जीवन है।

अब उपरोक्त पवित्र आयतों पर एक दृष्टि डालने से प्रत्येक सद्बुद्धि रखने वाला व्यक्ति समझ सकता है कि इस्लाम की वास्तविकता किसी में तब ही निश्चित हो सकती है कि जब उसका अस्तित्व अपनी सम्पूर्ण आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों सहित केवल खुदा तआला के लिए तथा उसके मार्ग में समर्पित हो जाए और जो अमानतें उसे खुदा तआला की ओर से मिली हैं फिर उसी खुदा को वापस दी जाएं। और न केवल आस्थागत तौर पर बल्कि व्यावहारिक दर्पण में भी अपने इस्लाम और उसकी पूर्ण वास्तविकता की पूर्ण आकृति दिखाई जाए अर्थात् इस्लाम का दावेदार व्यक्ति यह बात सिद्ध कर दे कि उसके हाथ, पैर, दिल, मस्तिष्क, उसकी बुद्धि, उसकी समझ, उसका प्रकोप, उसका रहम (दया), उसकी सहनशीलता, उसका ज्ञान, उसकी समस्त रूहानी (आध्यात्मिक) और शारीरिक शक्तियां, उसका सम्मान, उसका माल, उसका आराम और आनन्द जो कुछ उसका सर के बालों से पैरों के नाखूनों तक प्रत्यक्ष और आन्तरिक की दृष्टि से है, यहां तक कि उसकी नीयतों तथा उसके हृदय के खतरे और उसकी भावनाएं सब खुदा तआला के ऐसे अधीन हो गए हैं कि जैसे एक व्यक्ति के अंग उस व्यक्ति के अधीन होते हैं। यदि सिद्ध हो जाए कि सच्चाई पर दृढ़ता इस स्तर तक पहुंच गई है कि जो कुछ उसका है वह उसका नहीं बल्कि खुदा तआला का हो गया है और समस्त अंग और शक्तियां खुदा की सेवा में ऐसी लग गई हैं कि जैसे वे खुदा के अंग हैं।

और इन आयतों पर विचार करने से यह बात भी स्पष्ट एवं व्यापक तौर पर प्रकट हो रही है कि खुदा तआला के मार्ग में जीवन-समर्पित करना जो इस्लाम की वास्तविकता है दो प्रकार से है। प्रथम यह कि खुदा तआला को ही अपना माबूद (उपास्य) अभीष्ट और प्रियतम बनाया जाए तथा उसकी इबादत (उपासना), प्रेम, भय और आशा में कोई दूसरा भागीदार शेष न रहे, और उसकी स्तुति एवं यशोगान, उपासना (इबादत) तथा बन्दगी के समस्त नियम, आदेश, फ़रमान, दण्डविधान तथा आकाशीय प्रारब्ध से संबंधित बातें दिल-व-जान से स्वीकार की जाएं और अत्यन्त विनम्रता और विनीतता से उन आदेशों, दण्डविधानों, कानूनों

तथा प्रारब्धों को पूर्ण निष्ठा के साथ सिर पर उठा लिया जाए, इसके अतिरिक्त वे समस्त पवित्र सच्चाइयां तथा पवित्र मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) जो उसकी विशाल कुदरतों की मारिफ़त का माध्यम और उस की सत्ता तथा शासन के उच्च पद को मालूम करने के लिए एक माध्यम और उसकी नेमतों को पहचानने के लिए एक शक्तिशाली पथ-प्रदर्शक हैं भली भांति मालूम कर लिए जाएं।

द्वितीय प्रकार अल्लाह तआला के मार्ग में जीवन-समर्पित करने का यह है कि उसके बन्दों की सेवा और सहानुभूति, कोशिश, बोझ उठाना और सच्ची हमदर्दी में अपना जीवन समर्पित कर दिया जाए, दूसरों को आराम पहुंचाने के लिए कष्ट उठाएं तथा दूसरों के सुख के लिए स्वयं पर दुःख सहन कर लें।

इस वर्णन से मालूम हुआ कि **इस्लाम की वास्तविकता** अत्यन्त उच्चतम है। और कोई मनुष्य अहले इस्लाम (मुसलमान) की प्रतिष्ठित उपाधि से विभूषित नहीं हो सकता जब तक वह अपना सम्पूर्ण अस्तित्व उसकी सम्पूर्ण शक्तियों और इरादों सहित खुदा के सुपुर्द न कर दे तथा अपने अंह से उसकी समस्त आवश्यक चीजों के साथ हाथ उठा कर उसी के मार्ग में न लग जाए। फिर वास्तविक तौर पर उसी समय किसी को मुसलमान कहा जाएगा जब उसके संज्ञाहीन जीवन पर एक बड़ी **क्रान्ति** आकर उसकी तामसिक वृत्ति के अस्तित्व का चित्र उसकी समस्त भावनाओं के साथ एक दम मिट जाए और फिर उस मौत के बाद उसमें खुदा के लिए लोगों से उपकार करने का नया जीवन उसमें पैदा हो जाए और वह ऐसा पवित्र जीवन हो जो उसमें जनता की फ़रमाबरदारी (आज्ञापालन) तथा सृष्टि की हमदर्दी के अतिरिक्त और कुछ भी न हो।

सृष्टा की आज्ञा का पालन इस प्रकार से कि उस का सम्मान, प्रताप और एकात्मकता प्रकट करने के लिए, अनादर और अपमान स्वीकार करने के लिए तैयार हो तथा उसके एकेश्वरवाद का नाम जीवित करने के लिए हजारों मौतों को स्वीकार करने के लिए तैयार हो और उसकी आज्ञा का पालन करने में एक हाथ दूसरे हाथ को हृदय की प्रसन्नता के साथ काट सके और उसके आदेशों की श्रेष्ठता का प्रेम और उसकी प्रसन्नता की प्यास पाप से ऐसी घृणा दिलाए

कि जैसे वह खा जाने वाली एक आग है या तबाह कर देने वाली एक बिजली है जिससे अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ भागना चाहे। इसलिए उसकी इच्छा स्वीकार करने के लिए अपनी समस्त इच्छाओं को छोड़ दे और उससे संबंध जोड़ने के लिए जानलेवा ज़ख्मों से ज़ख्मी (घायल) होना स्वीकार कर ले और उसके सम्बन्ध का सबूत देने के लिए समस्त सांसारिक संबंधों को त्याग दे।

और सृष्टि की सेवा इस प्रकार से कि सृष्टि की जितनी आवश्यकताएं हैं और जितने विभिन्न कारणों एवं मार्गों के द्वारा क्रस्साम-ए-अज़ल (भाग्य विधाता) * (ख़ुदा) ने कुछ को कुछ का मुहताज कर रखा है। इन समस्त बातों में केवल अल्लाह के लिए अपनी वास्तविक, निःस्वार्थ और सच्ची हमदर्दी से जो अपने अस्तित्व से जारी हो सकती है उनको लाभ पहुंचाए और प्रत्येक सहायता के मुहताज को अपनी ख़ुदा की दी हुई शक्ति से सहायता दे और उनकी दुनिया तथा आखिरत (परलोक) दोनों के सुधार के लिए जोर लगा दे।

किन्तु यह ख़ुदा के लिए समर्पण केवल इस स्थिति में जैसा नाम वैसे गुण का चरितार्थ होगा कि जब सम्पूर्ण अंग आज्ञा पालन के रंग से ऐसे रंगीन हो जाएं कि जैसे वे ख़ुदा का एक उपकरण हैं जिनके द्वारा कभी-कभी ख़ुदा के कार्य प्रकट होते हैं या एक साफ दर्पण है जिसमें ख़ुदा तआला की समस्त इच्छाएं पूर्ण शुद्धता के साथ चित्र के तौर पर प्रकट होती रहती हैं। और जब ख़ुदा के लिए आज्ञापालन तथा सेवाएं इस पूर्ण श्रेणी तक पहुंच जाएं तो इस ख़ुदा तआला के रंग की बरकत से इस विशेषता के मनुष्य की शक्तियों तथा अंगों के बारे में वहदते * शुहूदी के तौर पर यह कहना सही होता है कि उदाहरणतया ये आंखें ख़ुदा तआला की आंखें और यह जीभ ख़ुदा तआला के हाथ और ये कान ख़ुदा तआला के कान और ये पांव ख़ुदा तआला के पांव हैं। क्योंकि वे समस्त अंग

* सृष्टि की उत्पत्ति के दिन सृष्टि के भाग्य लिखने वाला अर्थात् ख़ुदा। (अनुवादक)

* वहदत-ए-शुहूदी : सूफ़ियों की पारिभाषिक शब्दावली है। संसार की प्रत्येक वस्तु जो दृष्टि के सामने है अल्लाह तआला की छाया (प्रतिबिम्ब) है अर्थात् 'हमः अज़अस्त' सब कुछ ख़ुदा है, कोई चीज़ स्वयं भू मौजूद नहीं बल्कि हर चीज़ अपने अस्तित्व के लिए अल्लाह की मुहताज है। (अनुवादक)

और शक्तियां खुदा के मार्गों में खुदा तआला के इरादों से भरपूर होकर और उसकी इच्छाओं का चित्र बन कर इस योग्य हो जाती हैं कि उनको उसी का रूप कहा जाए। कारण यह कि जैसे एक व्यक्ति के अंग पूर्णरूप से उसकी इच्छा और इरादे के अधीन होते हैं। इसी प्रकार एक पूर्ण इन्सान उस श्रेणी पर पहुंच कर खुदा तआला की इच्छाओं एवं इरादों से पूर्ण सामंजस्य (मुआफ़िक़त) पैदा कर लेता है और खुदा तआला की प्रतिष्ठा, एकत्व, मालिकियत, बन्दगी, उसकी प्रत्येक इच्छा और इरादे की बात उसे ऐसी ही प्रिय लगती है जैसी स्वयं खुदा तआला को। अतः खुदा के लिए यह महान आज्ञापालन और सेवा जो प्यार तथा प्रेम से मिली हुई और निष्कपटता एवं पूर्ण सत्यनिष्ठा से भरी हुई है, यही इस्लाम और इस्लाम की वास्तविकता तथा इस्लाम का सारतत्त्व है जो अस्तित्व, मख़लूक, आकांक्षा और इरादे से मृत्यु प्राप्त करने के पश्चात् मिलता है।

इस स्थान पर यह महत्त्वपूर्ण बात भी स्मरण रहे कि उपरोक्त पवित्र आयत अर्थात् :

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٣﴾
(अलबक्रह- 2/113)

पूर्ण सौभाग्य (सआदते ताम्म:) की तीनों आवश्यक श्रेणियों अर्थात् फ़ना, और बक्रा, और लिफ़ा की ओर संकेत करती है, क्योंकि जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं **وَجْهَهُ لِلَّهِ** का वाक्य यह शिक्षा दे रहा है कि सम्पूर्ण शक्तियां और अंग तथा जो कुछ अपना है खुदा तआला को सौंप देना चाहिए और उसके मार्ग में समर्पित कर देना चाहिए। यह वही अवस्था है जिसका नाम दूसरे शब्दों में 'फ़ना' है। कारण यह कि जब मनुष्य ने इस पवित्र आयत के अर्थ के अनुसार अपना सम्पूर्ण अस्तित्व उसकी समस्त शक्तियों सहित खुदा तआला को सौंप दिया और उसके मार्ग में समर्पित कर दिया तथा अपनी कामवासना संबंधी गतियों एवं स्थिरताओं से पूर्णतया रुक गया तो निस्सन्देह उस पर एक प्रकार की मृत्यु छा गयी और इसी मृत्यु को सूफी लोग 'फ़ना' का नाम देते हैं।

तत्पश्चात् **وَهُوَ مُحْسِنٌ** का वाक्य बक्रा की श्रेणी की ओर संकेत करता है,

क्योंकि जब मनुष्य सर्वांगपूर्ण फ़ना, कामवासना संबंधी भावनाओं को समाप्त करने, खुदाई भावना एवं प्रेरणा से फिर गति करने लगा तो वह द्वितीय जीवन है जिसका नाम 'बक्रा' रखना चाहिए।

फिर इसके बाद ये वाक्य **فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا** जो प्रतिफल को स्थापित एवं स्वीकार करने, भय और शोक को अस्वीकार करने तथा उसकी समाप्ति का पता देती हैं यह 'लिक्रा' की अवस्था की ओर संकेत है। क्योंकि जिस समय मनुष्य के इफ़ान (अध्यात्म ज्ञान) तथा विश्वास, भरोसा और प्रेम में ऐसी उच्चतम श्रेणी पैदा हो जाए कि उसकी निष्कपटता, ईमान और वफ़ा (सत्यनिष्ठा) का प्रतिफल उसकी दृष्टि में भ्रमात्मक, काल्पनिक और अनुमानित न रहे अपितु ऐसा निश्चित, अटल, सुस्पष्ट, प्रत्यक्ष तथा महसूस हो कि जैसे वह उसे मिल चुका है और खुदा तआला के अस्तित्व पर ऐसा विश्वास हो जाए कि जैसे उसको देख रहा है और भविष्य का प्रत्येक भय उसकी दृष्टि से समाप्त हो जाए तथा हर एक पहले एवं वर्तमान शोक का नामोनिशान न रहे और उस समय मौजूद प्रत्येक रूहानी नेमतें दिखाई दें। तो यही अवस्था जो प्रत्येक आशंका एवं सन्देह से सुरक्षित और प्रत्येक प्रतीक्षा की पीड़ा से पावन है 'लिक्रा' का नाम दिया जाता है और 'लिक्रा' की इस श्रेणी पर 'مُحْسِن' (मुहसिन) का शब्द है जो आयत में मौजूद है अत्यन्त स्पष्टता पूर्वक बता रहा है क्योंकि 'इहसान' नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्याख्या के अनुसार उसी पूर्ण अवस्था का नाम है कि जब मनुष्य अपनी इबादत (उपासना) की अवस्था में खुदा तआला से ऐसा संबंध पैदा करे कि जैसे उसको देख रहा है।

और यह 'लिक्रा' (मिलन) की श्रेणी साधक के लिए तब पूर्ण तौर पर निश्चित होती है कि जब खुदाई रंग मनुष्यता के रंग और (उसकी) सुगंध को पूर्णरूप से अपने रंग के नीचे समानान्तर कर दे और छुपा दे, जिस प्रकार आग लोहे के रंग को अपने नीचे ऐसा छुपा लेती है कि प्रत्यक्ष दृष्टि में आग के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता। यह वही श्रेणी (मक्राम) है जिस पर पहुंच कर कुछ साधकों ने गलतियां की हैं और शुहूदी पैबंद (जोड़) को वुजूदी पैबंद के

रंग में समझ लिया है। इस श्रेणी पर जो खुदा के वली पहुंचे हैं या जिनको इसमें से कोई घूंट प्राप्त हो गया है। कुछ सूफियों ने उनका नाम 'अत्फ़ालुल्लाह' रख दिया (अल्लाह के बच्चे) है। इस अनुकूलता से कि वे लोग पूर्णतया खुदा की विशेषताओं के सहानुभूति की गोद में जा पड़े हैं और जैसे एक व्यक्ति का बेटा अपनी आकृति और रंग-रूप में कुछ अपने पिता से समानता रखता है वैसा ही उनको भी ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) तौर पर तखल्लुक बिअख़्लाक़िल्लाह (अल्लाह तआला के शिष्टाचार के अनुसार स्वयं को ढालना) के कारण खुदा तआला की सुन्दर विशेषताओं से कुछ अनुकूलता पैदा हो गई है। ऐसे नाम यद्यपि स्पष्ट तौर शरीअत में प्रयुक्त नहीं हैं किन्तु वास्तव में अध्यात्म ज्ञानियों ने पवित्र कुर्आन से ही उसको लिया है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है

فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا^ط (अलबक्रह - 2/201)

अर्थात् अल्लाह तआला को ऐसा स्मरण करो कि जैसे तुम अपने पिताओं को स्मरण करते हो और स्पष्ट है कि यदि अवास्तविक तौर पर इन शब्दों का बोलना शरीअत के निषेधों में से होता तो खुदा तआला अपने कलाम को ऐसी शैली से पवित्र रखता, जिस से इस के बोलने का औचित्य लिया जा सकता है।

और लिक्का की इस श्रेणी में प्रायः मनुष्य से ऐसी बातें जारी होती हैं कि जो मनुष्यता की शक्तियों से बढ़ी हुई मालूम होती हैं और अपने अन्दर खुदाई शक्ति का रंग रखती हैं। जैसे हमारे सय्यद-व-मौला रसूलों के सरदार हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने बद्र के युद्ध में मुट्ठी भर कंकड़ियों को काफ़िरों पर फेंका और वह मुट्ठी किसी दुआ के द्वारा नहीं अपितु स्वयं अपनी रूहानी शक्ति से फेंकी गई परन्तु उस मुट्ठी ने खुदाई शक्ति दिखाई और विरोधी की सेना पर उसका ऐसा विलक्षण (स्वभाव से हटकर) प्रभाव पड़ा कि उनमें से कोई ऐसा न रहा कि जिसकी आंख पर उसका प्रभाव न पहुंचा हो और वे सब अंधों की भांति हो गए तथा उनमें ऐसी उद्विग्नता (बद्दहवासी) और परेशानी पैदा हो गई कि बेसुध लोगों की भांति भागना आरंभ किया। इसी चमत्कार की ओर अल्लाह तआला ने इस आयत में संकेत किया है-

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ (अलअन्फाल – 8/18)

अर्थात् जब तू ने उस मुट्ठी को फेंका वह तूने नहीं फेंका अर्थात् गुप्त तौर पर खुदाई शक्ति काम कर गई। मनुष्य की शक्ति का काम न था।

और ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दूसरा चमत्कार जो 'शक्कुल क्रमर' है। इसी खुदाई शक्ति से प्रकट हुआ था, उसके साथ कोई दुआ सम्मिलित न थी, क्योंकि वह केवल उंगली के इशारे से जो खुदा की शक्ति से भरी हुई थी घटित हो गया था, तथा इसी प्रकार के अन्य बहुत से चमत्कार हैं जो केवल व्यक्तिगत अधिकार के तौर पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिखाए। जिन के साथ कोई दुआ न थी। कई बार थोड़े से पानी को जो केवल एक प्याले में था, अपनी उंगलियों को उस पानी के अन्दर डालने से इतना अधिक कर दिया कि वह पानी समस्त सेना, ऊंटों और घोड़ों ने पिया, फिर भी वह पानी अपनी पहली मात्रा में यथावत् मौजूद था। और कई बार दो-चार रोटियों पर हाथ रखने से हज़ारों भूखे-प्यासे लोगों का पेट भर गया और कभी थोड़े दूध को अपने होठों से बरकत देकर उस से एक जमाअत का पेट भर दिया और कभी नमकीन पानी के कुएं में अपने मुख का थूक डालकर उसे अत्यन्त मधुर (मीठा) कर दिया, और कभी बहुत घायलों पर अपना हाथ रख कर उन को अच्छा कर दिया तथा कभी आंखों को जिन के डेले लड़ाई की किसी चोट से बाहर जा पड़े थे अपने हाथों की बरकत से फिर ठीक कर दिया। इसी प्रकार अन्य बहुत से कार्य अपने व्यक्तिगत अधिकार से किए, जिनके साथ एक खुदा की गुप्त शक्ति मिली हुई थी।

वर्तमान समय के ब्रह्म समाजी, फ़्लसफ़ी (दार्शनिक) और नेचरी यदि इन चमत्कारों का इन्कार करें तो वे विवश हैं, क्योंकि वे इस श्रेणी को पहचान नहीं सकते जिस में ज़िल्ली तौर पर मनुष्य को खुदा की शक्ति मिलती है। फिर यदि वे ऐसी बातों पर हंसे तो वे अपने हंसने में भी विवश हैं, क्योंकि उन्होंने बच्चों जैसी अवस्था के अतिरिक्त अन्य किसी रूहानी प्रौढ़ता की श्रेणी को तय नहीं किया। और न केवल अपनी अवस्था रखते हैं अपितु इस बात पर प्रसन्न हैं कि

उसी खराब अवस्था में मरें भी।

किन्तु बहुत अधिक अफ़सोस उन ईसाइयों पर है जो इसी के समान कुछ विलक्षण निशान अपितु उन से कम स्तर के हज़रत मसीह में सुन कर उनकी खुदाई का प्रमाण ठहरा बैठे हैं और कहते हैं कि हज़रत मसीह का मुर्दों को जीवित करना तथा पक्षाघातग्रस्त (फ़ालिज के रोगी) और कोढ़ियों का अच्छा करना अपने अधिकार से था किसी दुआ से नहीं था और यह प्रमाण इस बात पर है कि वह वास्तविक तौर पर खुदा का बेटा बल्कि खुदा था, परन्तु अफ़सोस कि इन बेचारे लोगों को मालूम नहीं कि यदि इन्हीं बातों से मनुष्य खुदा बन जाता है तो इस खुदाई का अधिक हक़ (अधिकार) हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है। क्योंकि इस प्रकार के अधिकार वाले विलक्षण निशान जितने आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिखाए हैं, हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम कदापि नहीं दिखा सके। और हमारे पथ-प्रदर्शक तथा अनुकरणीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये अधिकार वाले विलक्षण निशान न केवल स्वयं ही दिखाए अपितु उन विलक्षण निशानों का एक लम्बा सिलसिला क्रयामत तक अपनी उम्मत में छोड़ दिया जो हमेशा और हर युग में समय की आवश्यकतानुसार प्रकट होता रहा है और इस संसार के अन्तिम दिनों तक इसी प्रकार प्रकट होता रहेगा तथा खुदा की शक्ति का प्रतिबिम्ब जितना इस उम्मत की पवित्र रूहों पर पड़ा है उसका उदाहरण अन्य उम्मतों में मिलना कठिन है। फिर कितनी मूर्खता है कि विलक्षण बातों के कारण किसी को खुदा या खुदा का बेटा ठहराया जाए। यदि ऐसे ही विलक्षण निशानों से मनुष्य खुदा बन सकता है तो फिर खुदाओं का कुछ अन्त भी है?

किन्तु यहां यह बात स्मरण रखने योग्य है कि इस प्रकार के अधिकार वाले विलक्षण निशान यद्यपि खुदा तआला की ओर से ही होते हैं परन्तु फिर भी खुदा तआला के उन विशेष कार्यों से किसी अन्य के इरादे के माध्यम के बिना प्रकटन में आते हैं किसी प्रकार से बराबरी नहीं कर सकते और न उनका बराबर होना उचित है। इसी कारण से जब कोई नबी या वली अधिकार

के तौर पर किसी दुआ के माध्यम के बिना कोई ऐसी विलक्षण बात दिखाए जो मनुष्य के किसी उपाय, मुक्ति और उपचार से उसे शक्ति नहीं दी गई तो नबी का वह कार्य खुदा तआला के उन कार्यों से कम स्तर पर रहेगा जो खुदा तआला स्वयं घोषणात्मक और प्रत्यक्ष तौर पर प्रकटन में लाता है। अर्थात् ऐसा अधिकार वाला चमत्कार खुदा के अन्य कार्यों की अपेक्षा जो बिना माध्यम के खुदा तआला से प्रकटन में आते हैं अपने अन्दर अवश्य कुछ कमी और कमजोरी मौजूद रखता होगा ताकि सरसरी निगाह डालने वालों की दृष्टि में उत्पत्ति में समानता पैदा न हो। इसी कारण से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा (डण्डा) कई बार सांप बनने के बावजूद अन्ततः डण्डे का डण्डा ही रहा और हज़रत मसीह की चिड़ियां बावजूद इसके कि उनका चमत्कार के तौर पर उड़ना पवित्र कुर्आन से सिद्ध है परन्तु फिर भी मिट्टी की मिट्टी ही थी और खुदा तआला ने कहीं यह नहीं कहा कि वे जीवित भी हो गईं और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शक्तिशाली विलक्षण निशानों में चूंकि खुदा की शक्ति सर्वाधिक भरी हुई थी, क्योंकि आंखरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अस्तित्व खुदाई चमत्कारों (तजल्लियों) के लिए सर्वांगपूर्ण एवं परमोत्तम आदर्श था, इसलिए हमारी दृष्टियां आंखरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अधिकार वाले विलक्षण निशानों को मनुष्यता की किसी श्रेणी पर निर्धारित करने से असमर्थ हैं परन्तु फिर भी हमारा इस पर ईमान है कि यहां भी अल्लाह तआला और उसके रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कार्य में गुप्त तौर पर कुछ अन्तर अवश्य होगा।

अब इन लेखों से हमारा उद्देश्य इतना है कि लिक्का की श्रेणी जब किसी मनुष्य को प्राप्त होती है तो उस श्रेणी की जोश (तमव्वज) के समयों में उस से खुदाई कार्य अवश्य जारी होते हैं और ऐसे व्यक्ति की घनिष्ठ संगत में जो व्यक्ति आयु का एक भाग व्यतीत करे तो अवश्य कुछ न कुछ अधिकार वाले विलक्षण निशान देखेगा। क्योंकि इस जोश की अवस्था में मनुष्य में प्रतिबिम्बित तौर पर खुदा तआला की विशेषताओं का रंग आ जाता है यहां तक कि उसकी दया खुदा

तआला की दया और उस का प्रकोप खुदा तआला का प्रकोप हो जाता है और कभी वह बिना किसी दुआ के कहता है कि अमुक चीज़ पैदा हो जाए तो वह पैदा हो जाती है तथा किसी को प्रकोप की दृष्टि से देखता है तो उस पर कोई विपदा आ जाती है और किसी को दया-दृष्टि से देखता है तो वह खुदा तआला के नज़दीक दया का पात्र हो जाता है। और जैसा कि खुदा तआला का كُنْ (कुन) अनश्वर (दाइमी) तौर पर अभीष्ट परिणाम को अविलम्ब पैदा करता है ऐसा ही उस का كُنْ (कुन) (हो जा) भी उस जोश और ज्वर की अवस्था में नहीं रुकता। जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ इन अधिकार वाले विलक्षण निशानों का मूल कारण यही होता है कि यह व्यक्ति पूर्णतः लीन हो जाने के कारण महा वैभवशाली खुदा के रंग से प्रतिबिम्बित तौर पर रंगीन हो जाता है और खुदा के चमत्कार (तजल्लियाँ) उस पर पूर्णतः छा जाते हैं और वास्तविक प्रियतम बीच के पर्दों को उठाकर अत्यन्त घनिष्ठ सानिध्य के कारण एक हो जाता है। और जैसा कि वह स्वयं मुबारक है वैसा ही उसके उसके अचार-व्यवहार एवं समस्त चीज़ों में बरकत रख देता है। तब प्रत्येक वस्तु जो उस से स्पर्श करती है बिना उसकी दुआ के बरकत पाती है। उसके मकान में बरकत होती है, उसके दरवाज़ों की चौखटें बरकत से भरी होती हैं, उसके घर के दरवाज़ों पर बरकत बरसती है जो उसे प्रतिपल दिखाई देती है तथा उसे उसकी सुगंध आती है। जब यह यात्रा करे तो खुदा तआला अपनी समस्त बरकतों सहित उसके साथ होता है और जब यह घर में आए तो प्रकाश का एक दरिया साथ लाता है। निष्कर्ष यह कि यह व्यक्ति अद्भुत होता है जिसकी वास्तविकता खुदा तआला के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

यहां यह भी स्पष्ट रहे कि 'फ़नाफ़िल्लाह' (खुदा में लीन होना) की श्रेणी के निश्चित होने के बाद अर्थात् उस श्रेणी के बाद जो **وَجْهَهُ لِلَّهِ** के अर्थ को अनिवार्य है जिसको सूफ़ी फ़ना के नाम से और पवित्र कुर्आन 'इस्तिक़ामत' (दृढ़ता) की संज्ञा देता है। 'बक्रा' और 'लिक़्रा' की श्रेणी अविलम्ब पीछे आने वाली है अर्थात् जब मनुष्य सांसारिकता से पूर्णतया रिक्त होकर फ़ना (लीन होना) की अवस्था को पहुंच गया तो इस अवस्था के सुदृढ़ होने के साथ ही बक्रा

की श्रेणी आरंभ हो जाती है किन्तु जब तक यह अवस्था सुदृढ़ न हो जाए और खुदा तआला की ओर पूर्ण रूप से झुक जाना एक स्वाभाविक बात न हो जाए तब तक बक्रा की श्रेणी पैदा नहीं हो सकती अपितु वह श्रेणी केवल उसी समय पैदा होगी कि जब प्रत्येक आज्ञापालन का दिखावा मध्य से उठ जाए और एक स्वाभाविक उगने की भांति आज्ञाकारी होने की हरी भरी और लहराती हुई शाखाएं दिल से जोश मार कर निकलें तथा निश्चित तौर पर सब कुछ जो अपना समझा जाता है खुदा तआला का हो जाए और जैसे अन्य लोग सांसारिकता में आनन्द प्राप्त करते हैं उस व्यक्ति के सम्पूर्ण आनंद इबादत और खुदा के स्मरण में हों तथा सांसारिकता के स्थान पर खुदा तआला की प्रसन्नताएं भर जाएं।

फिर जब बक्रा की यह अवस्था भली भांति सुदृढ़ हो जाए और साधक के रोम-रोम में समावेश कर जाए तथा उसके अस्तित्व का भाग बन जाए और आकाश से एक प्रकाश उतरता हुआ दिखाई दे जिसके उतरने के साथ ही सब पर्दे दूर हो जाएं तथा अत्यन्त कोमल, मधुर तथा मिठास से मिला हुआ एक प्रेम हृदय में पैदा हो जो पहले नहीं था और एक ऐसी सुहानी ठण्डक, सन्तुष्टि, चैन और आनंद दिल को महसूस हो कि जैसे एक लम्बे समय से बिछड़े हुए अत्यन्त प्रिय दोस्त के अचानक मिलने तथा गले लगाने से महसूस होता है तथा खुदा तआला के प्रकाशमान, आनन्दमय, मुबारक, आनंद दायक, सरस, सुगंधित तथा शुभ सन्देश देने वाले वाक्य उठते, बैठते, सोते और जागते इस प्रकार से उतरने प्रारंभ हो जाएं कि जैसे एक ठण्डी, मनमोहक और सुगंध से भरी वायु एक उद्यान पर से गुजर कर आती तथा प्रातः काल चलना आरंभ होती और अपने साथ एक नशा और आनन्द लाती है तथा मनुष्य खुदा तआला की ओर ऐसा खींचा जाए कि उसके प्रेम एवं प्रेमी की भांति कल्पना के बिना जीवित न रह सके और न यह कि धन एवं प्राण, सम्मान एवं सन्तान तथा जो कुछ उसका है कुर्बान करने के लिए तैयार हो अपितु अपने दिल में कुर्बान कर ही चुका हो और एक ऐसे शक्तिशाली आकर्षण से खींचा गया हो कि नहीं जानता कि उसे क्या हो गया, और अपने अन्दर प्रकाशमय होने का अत्यधिक प्रसारण पाए जैसा

कि दिन चढ़ा हुआ होता है। और अपने अन्दर निष्ठा, प्रेम तथा वफ़ादारी की नहरें बड़ी तीव्रता से चलती हुई देखे तथा पल-पल ऐसा आभास करता हो कि

मानो खुदा तआला उसके हृदय पर उतरा हुआ है।

जब यह अवस्था अपने समस्त लक्षणों सहित महसूस हो तब प्रसन्न हो और वास्तविक प्रियतम का कृतज्ञ हो कि यही वह अन्तिम स्थान है जिसका नाम लिक्का रखा गया है।

इस अन्तिम स्थान में मनुष्य ऐसा महसूस करता है कि जैसे बहुत से पवित्र पानियों से उसको धोकर और अहंकार की आन्तरिक हालत पूर्ण रूपेण उस से अलग करके नए सिरे से उसे पैदा किया गया और फिर समस्त संसारों के प्रतिपालक का तख़्त उसके अन्दर बिछाया गया और पवित्र एवं पावन खुदा का चमकता हुआ चेहरा अपनी सम्पूर्ण चित्ताकर्षक सुन्दरता और सौन्दर्य सहित सदैव के लिए उसके सामने विद्यमान हो गया है परन्तु इसके साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ये दोनों अन्तिम श्रेणियां बक्रा और लिक्का की कस्बी (अपने प्रयास द्वारा प्राप्त वस्तु) नहीं हैं बल्कि वहबी (खुदा द्वारा प्रदत्त) हैं। कस्ब और कोशिश की सीमा केवल फ़ना की श्रेणी तक है और इसी सीमा तक समस्त सत्यनिष्ठ साधकों की सैर-व-साधना समाप्त होती है और मानवीय विशेषताओं का दायरा अपनी पूर्णता को पहुंचता है। और जब फ़ना की इस श्रेणी को पवित्रात्मा लोग यथावश्यक तय कर चुके होते हैं तो खुदा की आदत इसी प्रकार से जारी है कि अचानक खुदा की अनुकम्पा की प्रातः काल की शीतल समीर चल कर उन्हें बक्रा और लिक्का की श्रेणी तक पहुंचा देती है।

अतः इस अन्वेषण से स्पष्ट है कि इस यात्रा की व्यथाएं और कठिनाइयां फ़ना की सीमा तक ही हैं और फिर इस से आगे गुज़र कर मनुष्य की कोशिश, प्रयास, परिश्रम और मेहनत का कोई संबंध नहीं अपितु वह शुद्ध प्रेम जो फ़ना की अवस्था में कृपालु एवं प्रतापी खुदा तआला से पैदा होता है उस पर खुदा के प्रेम का स्वयं एक स्पष्ट शोला पड़ता है जिसको बक्रा और लिक्का शब्दों से वर्णन करते हैं। और जब खुदा का प्रेम बन्दे के प्रेम पर उतरता है तब दोनों प्रेमों के मिलन से रूहुल कुदुस

का एक स्पष्ट और पूर्ण साया मनुष्य के दिल में पैदा हो जाता है और लिक्का की श्रेणी उस रूहुल कुदुस का प्रकाश अत्यन्त ही स्पष्ट होता है और अधिकार वाले विलक्षण निशान जिन का अभी हम वर्णन कर चुके हैं इसी कारण ऐसे लोगों से जारी होते हैं कि यह रूहुल कुदुस का प्रकाश हर समय और हर हाल में उनके साथ होता है तथा उनके अन्दर निवास करता है और वे उस प्रकाश से कभी तथा किसी हाल में अलग नहीं होते और न वह प्रकाश हरदम उन की सांसों के साथ निकलता है और उनकी दृष्टि के साथ हर एक वस्तु पर पड़ता है, और उनके कलाम के साथ अपने प्रकाश लोगों को दिखाता है, उसी प्रकाश का नाम रूहुल कुदुस है। परन्तु यह वास्तविक रूहुल कुदुस नहीं, वास्तविक रूहुल कुदुस वह है जो आकाश पर है, यह रूहुल कुदुस उसका ज़िल्ल (प्रतिबिम्ब) है जो पवित्र सीनों, दिलों और मस्तिष्कों में हमेशा के लिए आबाद हो जाता है और एक पल के लिए भी उन से अलग नहीं होता और जो व्यक्ति कहता है कि यह रूहुल कुदुस किसी समय अपने सम्पूर्ण प्रभावों के साथ उन से अलग हो जाता है वह व्यक्ति सर्वथा असत्य पर है और अपने अंधकारयुक्त विचार से खुदा के चुने हुए पवित्र लोगों का अपमान करता है। हां यह सच है कि वास्तविक रूहुल कुदुस तो अपने स्थान पर ही रहता है परन्तु रूहुल कुदुस का साया जिसका नाम आवस्तविक तौर पर रूहुल कुदुस ही रखा जाता है, उन सीनों, दिलों, मस्तिष्कों और समस्त अंगों में प्रवेश करता है जो बक्रा और लिक्का की श्रेणी पाकर इस योग्य ठहर जाते हैं कि उनके अत्यन्त शुद्ध एवं उज्ज्वल प्रेम पर खुदा तआला का पूर्ण प्रेम अपनी बरकतों के साथ उतरे। और जब वह रूहुल कुदुस उतरता है तो उस मनुष्य के अस्तित्व से ऐसा संबंध स्थापित कर लेता है। वह देखने की शक्ति बन कर आंखों में काम देता है तथा श्रवण-शक्ति का लिबास पहन कर कानों को रूहानी ज्ञानेन्द्रिय प्रदान करता है वह ज़बान का बोलना, दिल का संयम और मस्तिष्क की चतुराई बन जाता है और हाथों में समावेश करता है तथा पैरों में भी अपना असर पहुंचाता है। निष्कर्ष यह कि समस्त अंधकार को अस्तित्व से दूर कर देता है और सिर के बालों से लेकर पैरों के नाखूनों तक प्रकाशित कर देता है और यदि एक पल के लिए भी अलग हो जाए तो तुरन्त उस के स्थान पर अंधकार आ जाता है परन्तु

वह अध्यात्म ज्ञानियों (आरिफ़ लोगों) को ऐसा अच्छा साथी प्रदान किया गया है कि एक पल के लिए भी अलग नहीं होता। और सोचना कि उन से अलग भी हो जाता है। यह दूसरे शब्दों में इस बात का इकरार है कि वे इसके पश्चात् जो प्रकाश में आ गए, फिर अंधकार में पड़ जाते हैं, तत्पश्चात् जो बचाए और सुरक्षित किए गए फिर तामसिक वृत्ति (नफ़से अम्मार:) उन की ओर लौटता है, इसके बाद उन पर जो रूहानी ज्ञानेन्द्रियां खोली गई फिर वे समस्त ज्ञानेन्द्रियां बेकार तथा निलंबित की जाती हैं। अतः हे वे लोगो! जो इस सच्चाई से इन्कारी और आध्यात्मिक रहस्य से इन्कारी हो मुझ से शीघ्रता मत करो तथा अपने हृदय से शीघ्रता मत करो और अपने हृदय के प्रकाश से गवाही चाहो कि क्या यह बात निश्चित है कि (ख़ुदा के) चुने हुए लोगों का प्रकाश किसी समय उन से पूर्ण रूपेण दूर भी हो जाता है। क्या यह सही है? कि वे समस्त प्रकाशमान निशान पूर्ण मोमिनों से उत्कृष्ट ईमान की अवस्था में कभी खो भी जाते हैं।

यदि यह कहो कि हमने कब और किस समय कहा है कि ख़ुदा के चुने हुए लोगों का रूहानी (अध्यात्मिक) प्रकाश कभी सब का सब दूर भी हो जाता है और सर्वथा अंधकार उनको घेरे में ले लेता है। तो उसका उत्तर यह है कि आप लोगों की आस्था से ऐसा ही निकलता है, क्योंकि आप लोग ख़ुदा तआला के कलाम की आयतों की अनिवार्यता तथा अनुकरण इस बात को भी मानते हैं कि प्रत्येक प्रकाश चैन, सन्तुष्टि, बरकत, दृढ़ता और प्रत्येक रूहानी नेमत ख़ुदा के चुने हुए लोगों को रूहुल कुदुस से ही मिलती है तथा जैसे बुरे लोगों तथा काफ़िरों के लिए स्थायी तौर पर शैतान को बुरा साथी ठहरा दिया गया है ताकि वह उन पर हर समय अंधकार फैलाता रहे और उन के खड़े होने बैठने, गति और स्थिर होने सोने और जागने में उनका पीछा न छोड़े। ऐसा ही सानिध्य प्राप्त लोगों के लिए स्थायी तौर पर रूहुल कुदुस को अच्छा साथी प्रदान किया गया है ताकि वह उन पर हर समय प्रकाश बरसाता रहे तथा हर पल उनकी सहायता में लगा रहे और किसी पल उन से अलग न हो।

अब स्पष्ट है कि जब बुरे साथी के मुकाबले पर जो हमेशा अत्यन्त दुष्ट

लोगों का सेवक और मित्र है, सानिध्य प्राप्त लोगों के लिए अच्छे साथी का हर समय मित्र और वफ़ादार होना अत्यावश्यक है और पवित्र कुर्आन इस की सूचना देता है तो फिर यदि उस अच्छे साथी का सानिध्य प्राप्त लोगों से अलग होना मान लिया जाए जैसा कि हमारे आन्तरिक विरोधी क्रौमी भाई समझते हैं तथा कहते हैं कि रूहुल कुदुस जिब्राईल का नाम है, कभी तो वह आकाश से उतरता है और सानिध्य प्राप्त लोगों से अत्यन्त घनिष्ट मेल-जोल कर लेता है यहां तक कि उनके दिल में धंस जाता है और कभी उन को अकेला छोड़कर उनसे अलगता कर लेता है तथा करोड़ों अपितु असंख्य कोसों की दूरी ग्रहण करके आकाश पर चढ़ जाता है और उन सानिध्य प्राप्त लोगों से बिल्कुल संबंध तोड़ कर अपने निवास स्थल में जाकर छिप जाता है। तब वे उस प्रकाश एवं बरकत से पूर्णरूप से वंचित रह जाते हैं जो उसके उतरने के समय उनके दिल, मस्तिष्क और बाल-बाल में पैदा होता है। तो क्या इस आस्था से अनिवार्य नहीं हो जाता कि रूहुल कुदुस के अलग होने से उन चुने हुए लोगों को अंधकार घेर लेता है और नऊजुबिल्लाह अच्छे साथी की अलगता के कारण उन में बुरे साथी का असर आरंभ हो जाता है। अब तनिक ख़ुदा के भय को दिल में स्थान बेकार विचार करना चाहिए कि क्या यही सभ्यता और यही ईमान तथा इफ़्फ़ान (अध्यात्म ज्ञान) है।

और यही रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम

है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में इस न्यूनता और कमी की स्थिति को वैध समझा जाए कि जैसे रूहुल कुदुस आंजनाब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लम्बे समयों तक अलग हो जाता था? और नऊजुबिल्लाह उन लम्बे समयों में आप पावन प्रकाशों से जो **रूहुल कुदुस** का प्रतिबिम्ब है वंचित होते थे। बड़ी अजीब बात है कि **ईसाई लोग** तो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में निश्चित एवं अटल तौर पर यह विश्वास रखे* कि **रूहुल कुदुस** जब से

*नोट- हज़रत मसीह के बारे में मुसलमानों का भी यही विश्वास है। देखो तफ़्सीर इब्ने-जरीर, इब्ने कसीर, मआलिम, फ़तुलबयान, कशशाफ़, तफ़्सीर कबीर तथा तफ़्सीर हुसैनी इत्यादि आयत **وَإِذْ نَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رَبِّكَ رُوحَ الْقُدُسِ** (अल् बक्रा:-2/88) अफ़सोस, अफ़सोस, अफ़सोस। (इसी से)

हज़रत मसीह पर उतरा उन से कभी अलग नहीं हुआ और वह हमेशा और हर दम रूहुल कुदुस से सहायता प्राप्त थे, यहां तक कि स्वप्न में भी उन से रूहुल कुदुस अलग नहीं होता था तथा उन का रूहुल कुदुस उनको अकेला छोड़ कर कभी आकाश पर नहीं गया और न रूहुल कुदुस का प्रकाश पर उन से कभी एक पल के लिए अलग हुआ। किन्तु मुसलमानों की यह आस्था हो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रूहुल कुदुस आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अलग भी हो जाता था और अपने शत्रुओं के सामने पूर्ण स्पष्टता से यह इक्रार करें कि रूहुल कुदुस की अनश्वर मित्रता आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत ईसा के समान प्राप्त नहीं हुई।

अब सोचो कि इस से अधिक और क्या अपमान एवं उद्दण्डता होगी कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्पष्ट अपमान किया जाता है और ईसाइयों को ऐतराज करने का अवसर दिया जाता है। इस बात को कौन नहीं जानता कि रूहुल कुदुस का उतरना प्रकाश का कारण और उसका अलग होना अंधकार, कुधारणा तथा ईमान की खराबी का कारण होता है। खुदा तआला इस्लाम को ऐसे मुसलमानों की बुराई से बचाए जो कलिमा गो (अर्थात् मुसलमान) कहला कर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ही प्रहार का रहे हैं। ईसाई लोग तो हवारियों के बारे में भी यह आस्था नहीं रखते कि कभी उन से रूहुल कुदुस अलग होता था। अपितु उनकी तो यह आस्था है कि वे रूहुल कुदुस का लाभ दूसरों को भी देते थे। परन्तु ये लोग मुसलमान कहला कर तथा मौलवी, और मुहद्दिस और शैखुल कुल (प्रमुख धर्माचार्य) नाम रखवा कर फिर जनाब ख़तमुल मुर्सलीन ख़ैरुल अब्वलीन वल आख़िरीन (समस्त रसूलों के गौरव और सिरमौर) की शान में ऐसी कुधारणा रखते हैं और इतने अपशब्द निकाल कर फिर भी बहुत बड़े मुसलमान के मुसलमान तथा इनकी दृष्टि में दूसरे लोग काफ़िर हैं।

और यदि प्रश्न यह हो कि पवित्र कुर्आन में इस बात की व्याख्या या संकेत कहां है कि रूहुल कुदुस सानिध्य प्राप्त लोगों में हमेशा रहता है और उनसे अलग नहीं होता, तो इसका उत्तर यह है कि सम्पूर्ण पवित्र कुर्आन इन स्पष्टताओं

एवं संकेतों से भरा हुआ है अपितु प्रत्येक मोमिन को रूहुल कुदुस मिलने का वादा देता है। अतः उन समस्त आयतों में से जो इस बारे में स्पष्ट तौर पर वर्णन कर के बताती हैं सूरह अत्तारिक की पहली दो आयतें हैं और वे ये हैं :

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾ ★ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾
(अत्तारिक - 86/2 से 5) إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾

यह अन्तिम आयत अर्थात्

إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾ (अत्तारिक - 86/5)

जिसके अर्थ ये हैं कि प्रत्येक मनुष्य पर एक फ़रिश्ता निगरान है यह स्पष्ट तौर पर व्यक्त कर रही है कि जैसा कि मनुष्य के भौतिक अस्तित्व के लिए फ़रिश्ता नियुक्त है जो उस से अलग नहीं होता वैसा ही उसके अन्तःकरण (बातिन) की सुरक्षा के लिए भी नियुक्त है जो बातिन को शैतान से रोकता है और गुमराही (पथभ्रष्टता) के अंधकार से बचाता है और वह रूहुल कुदुस है जो खुदा तआला के विशेष बन्दों पर शैतान का आधिपत्य नहीं होने देता और इसी की ओर यह आयत भी संकेत करती है कि

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ (अलहिज्र - 15/43)

अब देखो कि यह आयत कितनी स्पष्टता पूर्वक बता रही है कि खुदा

★**हाशिया :-** इन आयतों का अनुवाद यह है कि क्रसम है आसमान की ओर उसकी जो रात को आने वाला है और तुझे क्या खबर है कि रात को आने वाली क्या चीज़ है? वह एक चमकता हुआ तारा है। और क्रसम इस बात के लिए है कि एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं कि जो उस पर निगरान न हो अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति पर सृष्टि के लोगों में से एक फ़रिश्ता पहरेदार है जो उसकी देखभाल करता है और हमेशा उसके साथ रहता है।

खुदा तआला ने जो इस आयत को पूर्ण तौर पर अर्थात् **كُلُّ** के शब्द से प्रतिबंधित करके वर्णन किया है। इस से यह बात भली भाँति सिद्ध हो गयी कि प्रत्येक चीज़ पर नफ़्स का नाम चरितार्थ हो सकता है। उसकी फ़रिश्ते रक्षा करते हैं। फिर इस आयत के अनुसार कवाकिब (सितारों) के नुफ़ूस के बारे में भी यह आस्था रखनी पड़ी कि **कुल सितारे (नक्षत्र) क्या सूर्य क्या चन्द्रमा**, क्या शनि ग्रह क्या बृहस्पति फ़रिश्तों की रक्षा के अधीन हैं अर्थात्

तआला का फ़रिश्ता मनुष्य की रक्षा के लिए हमेशा और हर पल उसके साथ रहता है और एक पल के लिए भी उस से अलग नहीं होता। क्या इस स्थान पर यह विचार आ सकता है कि मनुष्य की बाह्य निगरानी के लिए तो स्थायी तौर पर फ़रिश्ता नियुक्त है परन्तु उसके अन्तःकरण की निगरानी के लिए कोई फ़रिश्ता स्थायी तौर पर नियुक्त नहीं अपितु पक्षपाती से पक्षपाती मनुष्य भी समझ

शेष हाशिया - प्रत्येक के लिए सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि में से एक-एक फ़रिश्ता नियुक्त है जो उसकी रक्षा करता है तथा उसके कार्यों को उत्तम ढंग से चलाता है। *

इस स्थान पर कई ऐतराज पैदा होते हैं जिन्हें दूर करना हमारा दायित्व है। उनमें से एक यह कि जिस हालत में रूहुल कुदुस केवल उन सानिध्य प्राप्त लोगों को मिलता है जो बक्रा (जीवन) और लिक्का (खुदा को पाने) की श्रेणी तक पहुंचते हैं, तो फिर हर एक का निगरान कैसे हो सकता है। इसका उत्तर यह है कि रूहुल कुदुस का पूर्णरूप से उतरना सानिध्य प्राप्त लोगों पर ही होता है, परन्तु इस का आंशिक रूप से समर्थन प्रेम और निष्कपटता की श्रेणियों के अनुसार दूसरों को भी होता है। हमारे उपरोक्त वर्णन का तात्पर्य केवल यह है कि रूहुल कुदुस की उच्चतम चमक का विवरण यह है कि जब बक्रा (जीवन) और लिक्का (मिलन) की श्रेणी पर खुदा का प्रेम मनुष्य के प्रेम पर उतरता है तो रूहुल कुदुस की यह उच्च कोटि की चमकार उन दोनों प्रेमों के मिलन से पैदा होती है जिनके सामने अन्य चमकारें न होने जैसी हैं। परन्तु यह तो नहीं कि अन्य चमकारों का अस्तित्व ही नहीं। खुदा तआला एक कण भर निष्कपट प्रेम को भी नष्ट नहीं करता। मनुष्य के प्रेम पर उसका (खुदा) प्रेम उतरता है तथा उसी मात्रा पर रूहुल कुदुस की चमक पैदा होती है। यह खुदा तआला का एक निर्धारित कानून है जो प्रत्येक प्रेम के अनुमान पर खुदा का प्रेम उतरता रहता है और जब मानवीय प्रेम का एक दरिया बहने लगता है तो इस ओर से भी एक दरिया उतरता है। जब ये दोनों दरिया मिलते हैं तो उन में से एक विशाल प्रकाश

*नोट- इस लेख का समर्थन यह आयत भी करती है-

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ (अलमुल्क - 67/6)

चूँकि रजम (अर्थात् धुत्कारना) का कार्य फ़रिश्ते करते हैं न कि सितारे। अतः इसी से निश्चित तौर पर सिद्ध हुआ कि प्रत्येक सितारे पर एक फ़रिश्ता पहरेदार है और चूँकि फ़रिश्ते सितारों के लिए घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण प्राण के समान हैं। इसलिए आयत में फ़रिश्तों का कार्य सितारों की ओर सम्बद्ध किया गया। अतः विचार कर। इसी से

सकता है कि अन्तःकरण की सुरक्षा तथा रूह की निगरानी शरीर की सुरक्षा से भी अधिक आवश्यक है। क्योंकि शरीर को कष्ट तो इसी संसार का एक दुःख है परन्तु रूह और नफ्स का कष्ट हमेशा के नर्क में डालने वाली चीज़ है। अतः जिस कृपालु-दयालु खुदा का मनुष्य के इस शरीर पर भी रहम (दया) है जो आज है और कल मिट्टी हो जाएगा उसके बारे में कैसे शंका कर सकते हैं कि उसे

शेष हाशिया - पैदा होता है जिसे हमारी परिभाषा में रूहुल कुदुस की संज्ञा दी जाती है, परन्तु जैसे तुम देखते हो कि यदि बीस सेर पानी में एक माशा मिस्री डाल दी जाए तो मिस्री का कोई भी स्वाद मालूम नहीं होगा और पानी फीका था फीका ही रहेगा। परन्तु यह नहीं कह सकते कि उसमें मिस्री नहीं डाली गई और न यह कह सकते हैं कि पानी मीठा है। यही हाल उस रूहुल कुदुस का है जो अपूर्ण लोगों पर अपूर्ण रूप से उतरता है। उसके उतरने में तो सन्देह नहीं हो सकता क्योंकि निम्न से निम्न स्तरीय मनुष्य को भी नेकी का विचार रूहुल कुदुस से पैदा होता है। कभी पापी, दुराचारी और व्यभिचारी भी सच्चा स्वप्न देख लेता है और यह सब रूहुल कुदुस का प्रभाव होता है, जैसा कि पवित्र कुर्आन और सही नबवी हदीसों से प्रमाणित है। परन्तु वह महान संबंध जो पवित्र एवं सानिध्य प्राप्त लोगों के साथ उसके सामने यह कुछ चीज़ नहीं जैसे न होने जैसा है।

उन में से एक प्रश्न यह है जिस हालत में रूहुल कुदुस मनुष्य को बुराइयों से रोकने के लिए नियुक्त है तो फिर उस से गुनाह (पाप) क्यों घटित होता है और मनुष्य कुफ्र और दुराचार में ग्रस्त हो जाता है। इसका उत्तर यह है कि खुदा तआला ने मनुष्य के लिए परीक्षा (आज़माने) के दो **रूहानी दाई** (अलौकिक प्रेरक) नियुक्त कर रखे हैं। एक भलाई की ओर बुलाने वाला जिसका नाम रूहुल कुदुस है तथा एक बुराई की ओर बुलाने वाला जिसका नाम इब्लीस और शैतान है। ये दोनों बुलाने रहते हैं परन्तु किसी बात पर ज़बरदस्ती नहीं करते। जैसा कि इस पवित्र आयत में इस बात की ओर संकेत है

(अश्शम्म - 91/9) **فَالْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا** ۚ

अर्थात् खुदा बुराई का भी इल्हाम करता है और नेकी का भी। बुराई के इल्हाम का माध्यम शैतान है जो बुराइयों के विचार दिलों में डालता है और नेकी के इल्हाम का माध्यम रूहुल कुदुस है जो पवित्र विचार दिल में डालता है और चूंकि खुदा तआला प्रमुख कारण है। इसलिए ये दोनों इल्हाम खुदा तआला ने अपनी ओर सम्बद्ध कर लिए। क्योंकि उसी की ओर से यह सारी व्यवस्था है अन्यथा शैतान की क्या वास्तविकता जो किसी के दिल में

मनुष्य की रूह पर दया नहीं। अतः इस अटल और निश्चित स्पष्ट आदेश से सिद्ध है कि रूहुल कुदुस या यों कहो कि अन्तःकारण की निगरानी का फ़रिश्ता हमेशा नेक (सदाचारी) मनुष्य के साथ ऐसा ही रहता है जैसा कि उसकी बाह्य सुरक्षा के लिए रहता है।

इस आयत के समान विषय वाली आयतें पवित्र कुर्आन में और बहुत सी

शेष हाशिया - शंका डाले और रूहुल कुदुस क्या चीज़ जो संयम के मार्गों का निर्देशन करे। हमारे विरोधी आर्य, ब्रह्म समाजी तथा ईसाई अपनी अदूरदर्शिता के कारण पवित्र कुर्आन की शिक्षा पर यह ऐतराज किया करते हैं कि इस शिक्षा के अनुसार सिद्ध होता है कि खुदा तआला ने जान-बूझ कर मनुष्य के पीछे शैतान को लगा रखा है जैसे उसको स्वयं लोगों का गुमराह कराना अभीष्ट है। किन्तु यह हमारे जल्दलबाज़ विरोधियों की भूल है। उनको मालूम करना चाहिए कि पवित्र कुर्आन की यह शिक्षा नहीं है कि शैतान गुमराह करने के लिए ज़ब्र कर सकता है और न यह शिक्षा है कि केवल बुराई की ओर बुलाने के लिए शैतान को नियुक्त कर रखा है ★ अपितु यह शिक्षा है कि आजमाने और परीक्षा के उद्देश्य से नेकी की ओर प्रेरित करने वाला (रूहुल कुदुस) और बुराई की ओर प्रेरित करने वाला (इब्लीस) समान रूप से मनुष्य को दिए गए हैं अर्थात् एक नेकी की ओर बुलाने वाला और एक बुराई की ओर बुलाने वाला। ताकि मनुष्य इस परीक्षा में पड़कर पुण्य (सवाब) का अथवा पाप का पात्र ठहर सके। क्योंकि यदि उसके लिए एक ही प्रकार के सामान पैदा किए जाते उदाहरणतया यदि उसकी बाह्य एवं आन्तरिक भावनाओं के सामान उसे केवल नेकी की ओर ही खींचते या उसकी प्रकृति (फ़ितरत) ऐसी होती कि वह नेकी के कामों के अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकता तो कोई कारण नहीं था कि उसको नेक कार्यों के करने से सानिध्य की कोई श्रेणी प्राप्त हो सके। क्योंकि उसके लिए तो समस्त सामान और भावनाएं नेक कार्य करने की ही मौजूद हैं या यह कि बुराई की इच्छा तो प्रारंभ ही से उसकी प्रकृति

★**नोट** - यहां आजमाने के शब्द से कोई धोखा न खाए कि अन्तर्यामी खुदा की परीक्षा और आजमाने की क्या आवश्यकता है क्योंकि निस्सन्देह उसको आवश्यकता नहीं, परन्तु चूंकि मूल उद्देश्य परीक्षा से गुप्त वास्तविकताओं की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए यह शब्द खुदा तआला की किताबों में पाया जाता है। वह परीक्षा में इसलिए नहीं डालती कि उसे मालूम नहीं अपितु इसलिए ताकि परीक्षा के अधीन मनुष्य पर उसकी वास्तविकता प्रकट करे कि उसमें यह खराबी या योग्यता है तथा दूसरों पर भी उसका जौहर खोल दे। इसी से।

हैं जिन से सिद्ध होता है कि मनुष्य की बाह्य एवं अन्तःकरण के प्रशिक्षण और सुरक्षा के लिए तथा उनके कर्मों के लिखने के लिए ऐसे फ़रिश्ते नियुक्त हैं जो स्थायी तौर पर मनुष्य के साथ रहते हैं। उन समस्त आयतों में ये आयतें हैं

(अलइनफ़ितार - 82/11)

وَإِنَّ عَلَيْنَا لَلْخَفِيطِينَ

(अलअनआम - 6/62)

يُرْسِلُ عَلَيْنَا حَفَظَةً

शेष हाशिया - से नष्ट कर दी गयी तो फिर उसको बुराई से बचने का पुण्य किस अधिकार से मिले। उदाहरणतया एक व्यक्ति प्रारंभ से ही नपुंसक है जो स्त्री की कुछ इच्छा नहीं रखता। अब यदि वह एक सभा में यह वर्णन करे कि मैं अमुक समय जवान स्त्रियों के एक गिरोह में रहा जो सुन्दर भी थीं परन्तु मैं ऐसा संयमी हूँ कि मैंने उनको कामवासना की दृष्टि से एक बार भी नहीं देखा और खुदा तआला से डरता रहा। तो कुछ सन्देह नहीं कि सब लोग उसके बयान पर हंसेंगे और व्यंग्य से कहेंगे कि हे मूर्ख! तुझ में कब और किस समय यह शक्ति मौजूद थी ताकि उसके रोकने पर तू गर्व कर सकता या किसी पुण्य की आशा रखता। अतः जानना चाहिए कि साधक को अपनी प्रारंभिक एवं मध्यवर्ती हालतों में पुण्य की समस्त आशाएं विरोधी भावनाओं से पैदा होती हैं और इन साधनाओं की मंजिलों (श्रेणियों) में जिन बातों में साधक की प्रकृति ही ऐसी हो कि उस प्रकार की बुराई वह कर ही नहीं सकता तो वह इस प्रकार के पुण्य का भी अधिकारी नहीं हो सकता। उदाहरणतया हम बिच्छू और सांप के समान अपने अस्तित्व में हम एक ऐसा जहर नहीं रखते जिसके द्वारा हम किसी को इस प्रकार का कष्ट पहुंचा सकें जो कि सांप और बिच्छू पहुंचाते हैं। अतः हम इस प्रकार की बुराई को छोड़ने में खुदा के नज़दीक किसी पुण्य के अधिकारी भी नहीं।

अब इस तहक़ीक से प्रकट हुआ कि मनुष्य में जो विरोधी भावनाएं पैदा होकर मनुष्य को बुराई की ओर आकर्षित करती हैं वास्तव में वही मनुष्य के पुण्य का भी कारण हैं, क्योंकि जब वह खुदा तआला से डर कर उन विरोधी भावनाओं को छोड़ देता है तो खुदा के नज़दीक प्रशंसनीय ठहर जाता है और अपने रब्ब को प्रसन्न कर लेता है परन्तु जो व्यक्ति नेकी की पराकाष्ठा तक पहुंच गया है उसमें विरोधी भावनाएं नहीं रहतीं। मानो उसका जिन मुसलमान हो जाता है, परन्तु पुण्य शेष रह जाता है क्योंकि वह परीक्षा की श्रेणियों को बड़ी बहादुरी से तय कर चुका है। जैसे एक सदाचारी व्यक्ति जिसने बड़े-बड़े नेक कार्य अपनी जवानी में किए हैं, अपनी वृद्धावस्था में भी उनका पुण्य पाता है।

उन सब में से एक आरोप यह है कि खुदा तआला को फ़रिश्तों से कार्य लेने की

لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ (अर्रअद - 13/12)

अनुवाद : इन आयतों का यह है कि तुम पर सुरक्षा करने वाले नियुक्त हैं, खुदा तआला उनको भेजता है और खुदा तआला की ओर से चौकीदार नियुक्त हैं जो उसके बन्दों का हर ओर से अर्थात् क्या बाह्य तौर पर और क्या आन्तरिक तौर पर सुरक्षा करते हैं। इस स्थान पर **मआलिम के लेखक ने यह हदीस लिखी**

शेष हाशिया - क्या आवश्यकता है? क्या उसकी बादशाही मानवीय राज्यों की तरह कार्य करने वालों की मुहताज है और उसे भी सेनाओं की आवश्यकता थी जैसे कि मनुष्य को आवश्यकता है। उत्तर - स्पष्ट हो कि खुदा तआला को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, न फ़रिश्तों की, न सूर्य की, न चन्द्रमा की, न नक्षत्रों की। किन्तु इसी प्रकार उस ने चाहा ताकि उसकी शक्तियां साधनों के द्वारा प्रकट हों और ताकि इस पद्धति से मनुष्यों में बुद्धिमत्ता और ज्ञान फैले। यदि मध्य में साधनों का माध्यम न होता तो संसार में न खगोल का ज्ञान होता न ज्योतिष-विज्ञान, न भौतिक विज्ञान, न चिकित्सा विज्ञान, न वनस्पति विज्ञान। ये सामान ही हैं जिन से विद्याएं पैदा हुई। तुम विचार कर के देखो कि यदि फ़रिश्तों से सेवा लेने से कुछ आपत्ति है तो वही आपत्ति सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, वनस्पतियां, जड़ पदार्थों और पंचभूतों से सेवा लेने में पैदा होती है। जो व्यक्ति अध्यात्म ज्ञान (मारिफ़त) का कुछ भाग रखता है वह जानता है कि प्रत्येक कण अल्लाह तआला के इरादे के अनुसार कार्य कर रहा है और पानी की एक बूंद जो हमारे अन्दर जाती है वह भी खुदा की आज्ञा के बिना हमारे शरीर पर कोई अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल सकती। अतः समस्त कण और ग्रह इत्यादि वास्तव में एक प्रकार के फ़रिश्ते हैं जो दिन-रात सेवा में व्यस्त हैं। कोई मनुष्य के शरीर की सेवा में व्यस्त है और कोई रूह की सेवा में। और जिस कामिल दार्शनिक (खुदा) ने मनुष्य के शारीरिक प्रशिक्षण के लिए बहुत से साधनों का माध्यम पसन्द किया और अपनी ओर से बहुत से शारीरिक प्रभावकारी पैदा किए ताकि मनुष्य के शरीर पर भिन्न-भिन्न प्रकार के उपायों से प्रभाव डालें। उसी एकमात्र खुदा ने जिसके कार्यों में एकता और अनुकूलता है यह भी पसंद किया कि मनुष्य का आध्यात्मिक प्रशिक्षण भी उसी व्यवस्था और पद्धति से हो कि जो शरीर के प्रशिक्षण में ग्रहण किया गया ताकि वे दोनों व्यवस्थाएं बाह्य, आन्तरिक, आध्यात्मिक (रूहानी) और शारीरिक अपनी अनुकूलता और एकरूपता के कारण **एक ज़िंदा खुदा का पता दें।**

अतः यही कारण है कि मनुष्य के आध्यात्मिक प्रशिक्षण अपितु शारीरिक प्रशिक्षण के लिए

है कि प्रत्येक बन्दे के लिए एक फ़रिश्ता पहरेदार है जो उसके साथ ही रहता है। उसकी नींद और जागने की अवस्था में शैतानों तथा अन्य आपदाओं से उसकी सुरक्षा करता रहता है। और इसी प्रसंग की एक अन्य हदीस कअबुल अहबार ने वर्णन की है और **इब्ने जरीर** इस आयत के समर्थन में यह हदीस लिखता है-

اِنَّ مَعَكُمْ مَنْ لَا يَفَارِقُكُمْ اِلَّا عِنْدَ الْخَلَاءِ وَعِنْدَ الْجَمَاعِ فَاسْتَحْيُوهُمْ وَاَكْرَمُوهُمْ

शेष हाशिया - भी फ़रिश्ते माध्यम के रूप में नियुक्त किए गए हैं। परन्तु ये समस्त माध्यम खुदा तआला के हाथ में विवश और एक मशीन की भांति हैं जिनको उसका पवित्र हाथ चला रहा है अपनी ओर से न कोई इरादा रखते हैं न कोई अधिकार। जिस प्रकार वायु खुदा तआला की आज्ञा से हमारे अन्दर चली जाती है और उसी की आज्ञा से बाहर आती है और उसी की आज्ञा से प्रभाव डालती है। यह स्थिति तथा पूर्णतया यही हाल फ़रिश्तों का है और उसी की आज्ञा से प्रभाव डालती है। यह स्थिति तथा पूर्णतया यही हाल फ़रिश्तों का है **पंडित दयानन्द** ने फ़रिश्तों की इस व्यवस्था पर ऐतराज किया है, काश पंडित साहिब को खुदा तआला की भौतिक (शारीरिक) और आध्यात्मिक व्यवस्था का ज्ञान होता, ताकि ऐतराज करने की बजाए कुर्आन की शिक्षा की विशेषताओं को मान लेते कि क़ानून-ए-कुदरत का कैसा सही और सच्चा चित्रण उसमें मौजूद है।

उनमें से एक ऐतराज यह है कि पवित्र कुर्आन के कुछ संकेतों तथा इसी प्रकार की कुछ हदीसों से ज्ञात होता है कि कुछ दिनों में जिब्राईल के उतरने में कुछ विलम्ब भी हुआ है अर्थात् आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण काल में यह भी संयोग हुआ है कि कई बार कई दिन तक जिब्राईल आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल नहीं हुए। अगर हज़रत जिब्राईल हमेशा और हर वक़्त आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहते थे और रूहुल कुदुस का प्रभाव हमेशा के लिए आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हमेशा के लिए जारी था तो फिर उतरने में विलम्ब होने के क्या मायने हैं?

उत्तर- अतः स्पष्ट हो कि ऐसा विचार करना कि रूहुल कुदुस कभी नबियों को खाली छोड़ कर आकाश पर चढ़ जाता है केवल एक धोखा है जो (आकाश से) उतरने और चढ़ने के अर्थों में बोध भ्रम के कारण दिलों में बैठ गया है। **गुप्त न रहे** कि उतरने (नुज़ूल) के ये अर्थ कदापि नहीं हैं कि कोई फ़रिश्ता आकाश से अपना निवास स्थान छोड़ कर पृथ्वी के स्पष्ट एवं व्यापक आदेशों का विरोधी है। अतः '**फ़तुलबयान**' में इब्ने जरीर से हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हो की रिवायत से यह हदीस है-

अर्थात् : तुम्हारे साथ वे फरिश्ते हैं जो सहवास (संभोग) और शौच की आवश्यकता के अतिरिक्त तुम से अलग नहीं होते। अतः तुम उन से शर्म करो और उनका सम्मान करो और इसी स्थान पर **इकरमा** से यह हदीस लिखी है कि फरिश्ते प्रत्येक बुराई से बचाने के लिए मनुष्य के साथ रहते हैं और जब अटल प्रारब्ध हो तो अलग हो जाते हैं। और फिर **मुजाहिद** से नक़ल किया है कि कोई

शेष हाशिया -

قالت قال رسول الله صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ما في السماء موضع قدم إلا عليه ملك
ساجد أو قائم وذلك قول الملائكة وما منا إلا له مقام معلوم

अर्थात् हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आकाश पर एक क़दम का भी ऐसा स्थान खाली नहीं जिसमें कोई सज्दा करने वाला या खड़ा रहने वाला फ़रिश्ता न हो। यही अर्थ इस आयत के हैं कि हम में से हर एक व्यक्ति एक मक़ाम-ए-मालूम अर्थात् निर्धारित स्थान रखता है जिससे एक कदम ऊपर या नीचे नहीं आ सकता। अब देखो इस हदीस से स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो गया कि फ़रिश्ते अपने स्थानों को नहीं छोड़ते और कभी ऐसा संयोग नहीं होता कि एक क़दम का स्थान भी आकाश पर खाली दिखाई दे। परन्तु अफ़सोस कि बतालवी साहिब और देहलवी शेख साहिब भी अब तक इस युग में भी कि अनुभूति **विज्ञान** की उन्नति है यही आस्था रखते हैं कि **आकाश का अनुमानतः एक कदम भर खाली रहना क्या कठिन बात है।** कभी तो बड़े-बड़े फ़रिश्तों के उतरने से हज़ारों कोस तक आकाश खाली, निर्जन और सुनसान पड़ा रह जाता है जिसमें एक फ़रिश्ता भी नहीं होता, क्योंकि जब छः सौ मोतियों के पंखों वाला फ़रिश्ता जिस की लम्बाई पूरब से पश्चिम तक है। अर्थात् जिब्राईल पृथ्वी पर अपने पूरे अस्तित्व के साथ उतर आया, तो फिर विचार करना चाहिए कि ऐसे मोटे फ़रिश्ते के उतरने से हज़ारों कोस तक आकाश खाली रह जाएगा या इस से कम होगा। **शेख़ुल कुल** (नज़ीर हुसैन देहलवी) कहलाना और नबवी हदीसों को न समझना अफ़सोस और शर्म का स्थान है।

अतएव जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं यह बात अत्यन्त सावधानीपूर्वक अपनी स्मरण शक्ति में रख लेनी चाहिए कि सानिध्य प्राप्त लोगों को रूहुल कुदुस के प्रभाव से अलग होना एक पल के लिए भी संभव नहीं। क्योंकि उनके नवीन जीवन की रूह यही रूहुल

ऐसा व्यक्ति नहीं जिसकी सुरक्षा के लिए स्थायी तौर पर एक फ़रिश्ता नियुक्त न हो। फिर एक और हदीस **उस्मान बिन अफ़फ़ान** से लिखी है जिसका सारांश यह है कि बीस फ़रिश्ते विभिन्न सेवाएं करने के लिए मनुष्य के साथ रहते हैं और दिन में शैतान और रात को शैतान के बच्चे हानि पहुंचाने के लिए हर दम घात में लगे रहते हैं। और फिर इमाम **अहमद** रह. से यह निम्नलिखित हदीस है-

शेष हाशिया - कुदुस है। फिर वे अपनी रूह से अलग कैसे हो सकते हैं। और जिस अलगता का वर्णन हदीसों तथा पवित्र कुर्आन के कुछ संकेतों में पाया जाता है उस से अभिप्राय एक प्रकार की चमक है जो कभी खुदा तआला की दूरदर्शिताओं के कारण इस प्रकार की चमक में देर हो गई है और **पवित्र कुर्आन** की परिभाषा में प्रायः नुज़ूल (उतरने) से अभिप्राय वही चमक है अन्यथा तनिक सोचना चाहिए कि जिस सच्चाई के सूर्य के बारे में यह आयत है

(अन्नजम - 53/4,5) **وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ**

अर्थात् उसका कुछ बोलना और कोई वाक्य अपनी और अपनी इच्छा की ओर से नहीं, वह तो सर्वथा वह्यी है उसके दिल पर उतर रही है। **उसके बारे में** क्या हम सोच सकते हैं कि वह लम्बे समयों तक वह्यी रूप प्रकाश से पूर्णतया खाली ही रह जाता था। उदाहरणतया यह जो नक़ल किया गया है कि कुछ बार (कभी) चालीस दिन और कभी बीस दिन और कई बार इससे भी अधिक साठ दिन भी वह्यी नहीं उतरी। यदि इस (वह्यी) के न उतरने से यह अभिप्राय है कि जिब्राईल फ़रिश्ता आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूर्ण रूप से इतने समय तक छोड़ कर चला गया तो यह बहुत बड़ा आरोप लागेगा कि इतने समय तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जितनी बातें कहीं क्या वे हदीसों में दाखिल नहीं थी और क्या **उनका नाम ग़ैर मतलुव्व (तिलावत न की जाने वाली) वह्यी नहीं था** और क्या इस अवधि में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई स्वप्न भी नहीं आता था जो निस्सन्देह वह्यी में शामिल है। **और यदि हज़रत बटालवी साहिब तथा मियां नज़ीर हुसैन देहलवी** सच्चे हैं तथा यह बात सही है कि जिब्राईल लम्बे समय तक आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ कर भी अवश्य चला जाता था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूर्णतया वह्यी से खाली रह जाते थे। तो निस्सन्देह उन दिनों की हदीसों में इन दोनों **महानुभावों** के नज़दीक विश्वसनीय नहीं होंगी, क्योंकि वह्यी के प्रकाश से खाली हैं और इन के नज़दीक उन दिनों में स्वप्नों का सिलसिला भी पूर्णतया बन्द था।

حدثنا اسود بن عامر حدثنا سفيان حدثني منصور عن سالم بن ابى الجعد عن ابيه عن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم وسلم ما منكم من احد الا وقد وُكِّلَ به قرينه من الجن وقرينه من الملائكة قالوا و اياك يا رسول الله قال و اياى ولكن الله اعانى عليه فلا يأمرنى الا بخير انفراد باخراجه مسلم صفحه ٣٣٧

शेष हाशिया - अब न्याय करने वालो! देखो कि क्या इन दोनों शैखों का अनादर आंजूरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में चरम सीमा को पहुंच गया या नहीं? वह सच्चाई का सूर्य जिसके दिल का कोई विचार भी वह्यी इलाही से हट कर नहीं उसके बारे में इन लोगों की यह आस्था है कि जैसे वह नऊजुबिल्लाह लम्बे समय तक अंधकार में भी पड़ा रहता था और उसके साथ कोई प्रकाश न था। इस विनीत को अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह ज्ञात है कि रूहुल कुदुस की पवित्रता हर समय और हर पल तथा हर क्षण निरंतर मुल्हम* की सम्पूर्ण शक्तियों में काम करती रहती है और वह रूहुल कुदुस तथा उसकी पवित्रता के प्रभाव के बिना एक पल भी स्वयं को अपवित्रता से बचा नहीं सकता तथा सदैव प्रकाशों, सदैव दृढ़ता, सदैव प्रेम, सदैव पाकदामनी और बरकतों का भी कारण होता है कि रूहुल कुदुस हमेशा और हर समय उन के साथ होता है। फिर मासूमों और पुनीत लोगों के इमाम तथा सानिध्य प्राप्त लोगों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कैसे समझा जाए कि नऊजुबिल्लाह किसी समय इन समस्त बरकतों, पवित्रताओं तथा प्रकाशों से खाली रह जाते थे। अफ़सोस कि ये लोग हज़रत ईसा के बारे में यह आस्था रखते हैं कि रूहुल कुदुस तैंतीस वर्ष तक एक पल के लिए भी उन से अलग नहीं हुआ किन्तु यहां इस सानिध्य (कुर्ब) से इन्कारी हैं।

उन में से एक आरोप यह भी है कि सूरह 'अत्तारिक' में खुदा तआला ने ग़ैरुल्लाह खुदा के अतिरिक्त की क़सम क्यों खाई? हालांकि स्वयं ही फ़रमाता है कि उसके अतिरिक्त किसी अन्य की क़सम न खाई जाए। न मनुष्य, न आकाश, न पृथ्वी, न किसी नक्षत्र की, न किसी अन्य की। और फिर ग़ैर की क़सम खाने में विशेष नक्षत्रों तथा आकाश की खुदा तआला को यहां क्या आवश्यकता आ पड़ी? वास्तव में ये दो आरोप हैं जो एक दूसरे से संबंध रखते हैं और इनके परस्पर सम्बन्ध के कारण हम उचित समझते हैं इनके उत्तरों को एक ही स्थान पर वर्णन किया जाए।

*नोट वह व्यक्ति जिसके हृदय में ग़ैब अर्थात् खुदा की ओर से कोई बात पड़े। (अनुवादक)

अर्थात् अस्वद इत्यादि के माध्यम से अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलो करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई ऐसा नहीं कि जिसके साथ जिन्नों में से एक साथी और एक साथी फ़रिश्तों में से पहरेदार न हो। सहाबी ने कहा कि क्या आप भी हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। फ़रमाया कि हां मैं भी, परन्तु ख़ुदा ने मेरे जिन्न को मेरे अधीन कर

शेष हाशिया - अतः प्रथम प्रकार के बारे में भली भांति याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला की क्रसमों का मनुष्य की क्रसमों जैसा समझ लेना क्रियास मअल फ़ारिक है (अर्थात् एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर उनमें अनुकूलता एवं समानता के बिना अनुमान करना।) ख़ुदा तआला ने मनुष्य को जो ग़ैर अल्लाह की क्रसम खाने से मना किया है तो इसका कारण यह है कि मनुष्य जब क्रसम खाता है तो उसका उद्देश्य यह होता है कि जिस वस्तु की क्रसम खाई है उसको एक ऐसे चश्मदीद गवाह का स्थानापन्न (क्रायम मक्राम) ठहराए कि जो अपनी व्यक्तिगत जनाकारी से उसके बयान का सत्यापन कर सकता अथवा झुठला सकता है। क्योंकि यदि सोच कर देखो तो क्रसम का वास्तविक अर्थ गवाही ही है। जब मनुष्य साधारण गवाहों को प्रस्तुत करने से असमर्थ हो जाता है तो फिर उसे क्रसम की आवश्यकता होती है ताकि उस से वह लाभ प्राप्त करे जो एक चश्मदीद गवाह की गवाही से प्राप्त करना चाहिए। किन्तु यह कहना या विश्वास रखना कि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त और भी मौजूद और दृष्टा है, तथा सत्यापन, या झुठलाना या दण्ड देना अथवा किसी अन्य बात पर सामर्थ्यवान है स्पष्ट कुफ़्र की बात है। इसलिए ख़ुदा तआला की समस्त किताबों में मनुष्य के लिए यही शिक्षा है कि ग़ैर अल्लाह की हरगिज़ क्रसम न खाए।

अतः स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला की क्रसमों का मनुष्य की क्रसमों के साथ अनुमान करना सही नहीं हो सकता, क्योंकि ख़ुदा तआला को मनुष्य की भांति कोई ऐसी कठिनाई नहीं आती जो मनुष्य को क्रसम के समय सामने आती है। अपितु उसका क्रसम खाना एक और रंग का है जो उसकी प्रतिष्ठा के योग्य तथा उसके क़ानून-ए-कुदरत के अनुसार है और उस से उद्देश्य यह है ताकि प्रकृति के ग्रन्थ की स्पष्ट बातों को शरीअत के बारीक रहस्यों को हल करने के लिए बतौर गवाह प्रस्तुत करे। और चूंकि इस उद्देश्य को क्रसम के साथ एक अनुकूलता थी और वह यह कि जैसा एक क्रसम खाने वाला उदाहरणतया जब ख़ुदा तआला की क्रसम खाता है तो उसका उद्देश्य यह होता है कि ख़ुदा तआला मेरी इस घटना पर गवाह है। इसी प्रकार ख़ुदा तआला के कुछ खुले-खुले कार्य कुछ अदृश्य कार्यों पर

दिया है। वह भलाई और नेकी के अतिरिक्त मुझे और कुछ भी नहीं कहता। इसे अकेले **मुस्लिम** ने निकाला है। इस हदीस से स्पष्ट एवं खुले तौर पर सिद्ध होता है कि जैसे एक बुराई की ओर बुलाने वाला मनुष्य के लिए नियुक्त है, जो उसके साथ रहता है ऐसा ही एक भलाई की ओर बुलाने वाला भी प्रत्येक मनुष्य के लिए पहरेदार है जो उस से कभी अलग नहीं होता और हमेशा उसका मित्र और

शेष हाशिया - गवाह हैं। इसलिए उसने क्रसम के रंग में अपने स्पष्ट कार्यों को अपने काल्पनिक कार्यों के सबूत में पवित्र कुर्आन में जगह-जगह प्रस्तुत किया और उसके बारे में यह नहीं कह सकते कि उसने ग़ैर अल्लाह की क्रसम खाई। क्योंकि वह वास्तव में अपने कार्यों क्रसम खाता है न किसी ग़ैर की। और उसके कार्य उस के ग़ैर नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर उसका आकाश या नक्षत्र की क्रसम खाना इस इरादे से नहीं है कि वह किसी ग़ैर की क्रसम है अपितु नीयत से है कि जो कुछ उसके हाथों की कारीगरी और हिकमत नक्षत्रों में मौजूद है उसकी गवाही अपने कुछ गुप्त कार्यों के समझाने के लिए प्रस्तुत करे। अतः वास्तव में खुदा तआला की इस प्रकार की क्रसमों में जो पवित्र कुर्आन में मौजूद हैं बहुत से मारिफत के रहस्यों से भरी हुई हैं। और जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ। क्रसम के ढंग पर उन रहस्यों का वर्णन करना केवल इस उद्देश्य से है कि क्रसम वास्तव में एक प्रकार की गवाही है जो चश्मदीद गवाह की स्थापनापन्न (अर्थात् गवाह के स्थान पर) हो जाती है। इसी प्रकार खुदा तआला के कुछ कार्य भी कुछ दूसरे कार्यों के लिए बतौर गवाह के आए हैं। फिर अल्लाह तआला ने क्रसम के लिबास में अपने क़ानून-ए-कुदरत की स्पष्ट बातों की गवाही अपनी शरीअत की कुछ बारीकियों को हल करने के लिए प्रस्तुत करता है ताकि प्रकृति का नियम जो खुदा तआला की एक क्रियात्मक किताब है उसकी कथनी किताब पर गवाह हो जाए। और ताकि उसके कथन और कर्म से परस्पर अनुकूल हो कर सत्याभिलाषी के लिए अतिरिक्त मारिफत, सन्तुष्टि और विश्वास का कारण हो और पवित्र कुर्आन में खुदा तआला का यह एक सामान्य नियम है कि अपनी कुदरत के कार्यों को जो उसकी सृष्टियों में नियमित रूप से व्यवस्थित और क्रमबद्ध हैं शरीअत रूप के कार्यों के हल करने के लिए जगह-जगह प्रस्तुत करता है ताकि लोगों को इस बात की ओर ध्यान दिलाए कि यह शरीअत और यह शिक्षा उसी भागीदार रहित एकमात्र हस्ती (खुदा) की ओर से है जिसके ऐसे कार्य मौजूद हैं जो उसके इन कथनों से पूर्णतया अनुकूलता रखते हैं। क्योंकि कथनों का कर्मों से अनुकूल हो जाना निस्सन्देह इस बात का एक सबूत है कि जिसके ये

साथी है। यदि खुदा तआला मनुष्य के लिए केवल बुराई की ओर बुलाने वाला ही नियुक्त करता और भलाई की ओर बुलाने वाला नियुक्त न करता तो खुदा तआला के न्याय और दया पर धब्बा लगता कि उसने ऐसे निर्बल और कमजोर मनुष्य को उपद्रव में डालने के लिए कि जो पहले ही तामसिक वृत्ति साथ रखता है फूट डालने, बुरे विचार पैदा करने के उद्देश्य से उसका शैतान को हमेशा का

शेष हाशिया - कार्य हैं उसी के ये कथन हैं। अब हम नमूने के तौर पर उन कुछ क्रसमों का विवरण लिखते हैं जो पवित्र कुर्आन में आई हैं। अतः उन में से एक यही क्रसम है

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۚ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۚ إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۚ (अत्तारिक- 86/2 से 5)

इन आयतों में मूल उद्देश्य यह है कि प्रत्येक नफ़्स की आध्यात्मिक (रूहानी) सुरक्षा के लिए फ़रिश्ते नियुक्त हैं * जो हर पल और हर समय साथ रहते हैं और जो सुरक्षा का अभिलाषी हो उस की सुरक्षा करते हैं, किन्तु यह बयान एक बारीक और काल्पनिक है। फ़रिश्तों का अस्तित्व स्वयं ही अदृश्य है।

फिर उनकी सुरक्षा पर कैसे विश्वास आए। इसलिए कृपालु और दूरदर्शी खुदा ने अपने क़ानून-ए-कुदरत को जो आकाशीय ग्रहों में पाया जाता है यहां क्रसम की शैली में बतौर गवाह प्रस्तुत किया, और वह यह है कि खुदा तआला का प्रकृति का नियम (कुदरत कानून) बिल्कुल स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है कि आकाश और जो कुछ तारों, चन्द्रमा एवं सूर्य और उसके पोल में जो कुछ वायु इत्यादि मौजूद है ये सब मनुष्य के लिए भौतिक सेवाओं में लगे हुए हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार की शारीरिक (भौतिक) क्षतियों, हानियों, कष्टों और कंगाली से बचाते हैं तथा उसके शरीर और शारीरिक शक्तियों की हर आवश्यक वस्तु को तैयार करते हैं। विशेष तौर पर रात के समय जो तारे निकलते हैं और जंगलों में चलने वाले तथा समुद्रों की सैर करने वाले उन चमकदार तारों से बड़ा ही लाभ उठाते हैं और

***नोट** - यद्यपि फ़रिश्ते शारीरिक संकटों से भी बचाते हैं, किन्तु उनका बचाना रूहानी तौर पर ही है। उदाहरणतया एक व्यक्ति एक गिरने वाली दीवार के नीचे खड़ा है तो यह तो नहीं कि फ़रिश्ता अपने हाथों से उठा कर उसे दूर ले जाएगा बल्कि यदि उस व्यक्ति का उस दीवार से बचना प्रारब्ध है तो फ़रिश्ता उसके दिल में इल्हाम कर देगा कि यहां से शीघ्र खिसकना चाहिए परन्तु नक्षत्रों (तारों) और पंचभूत इत्यादि की सुरक्षा शारीरिक है। इसी से

साथी और मित्र बना दिया जो उसके खून में भी प्रवेश कर जाता है और दिल में प्रवेश कर के उसमें अंधकार रूपी गन्दगी छोड़ देता है परन्तु नेकी की ओर बुलाने वाला ऐसा मित्र नियुक्त न किया ताकि वह भी दिल में प्रवेश करता और खून में समावेश करता ताकि तराजू के दोनो पलड़े बराबर रहते। परन्तु अब जबकि कुर्आन की आयतों और सही हदीसों से सिद्ध हो गया कि जैसे बुराई की

शेष हाशिया - अंधकारमय रात के समय प्रत्येक चमकता हुआ तारा मार्ग-दर्शन करके प्राण की रक्षा करता है। यदि ये रक्षक न हों जो अपने-अपने समय में सुरक्षा की शर्त का पालन कर रहे हैं तो मनुष्य एक पल के लिए भी जीवित न रह सके। सोच कर उत्तर देना चाहिए कि क्या हम इन समस्त रक्षकों के बिना कि कोई हमारे लिए वांछित ताप (गर्मी) तैयार रखता है और कोई नाज और फल पकाता है और कोई हमारे पीने के लिए पानी की वर्षा करता है तथा कोई हमें प्रकाश प्रदान करता है और कोई हमारे सांस लेने के क्रम को क्रायम रखता है, कोई हमारी श्रवण-शक्ति (सुनने की ताकत) को सहायता देता है, कोई हमारे शरीर की प्राकृतिक गर्मी पर स्वास्थ्य का प्रभाव डालता है, जीवित रह सकते हैं? अतः इसी से मनुष्य समझ सकता है कि जिस कृपालु और दार्शनिक ख़ुदा ने हमारे शरीरों को दुरुस्त और क्रायम रखने के लिए ये हजारों आकाशीय ग्रह और पंचभूत आदि पैदा किए और दिन-रात अपितु हर पल उन को सेवा में लगा दिया है, क्या वह हमारी रूहानी सुरक्षा-व्यवस्था से लापरवाह रह सकता था? और हम उस कृपालु एवं दूरदर्शी, ख़ुदा के बारे में ऐसा कैसे सोच सकते हैं कि हमारे शरीर की सुरक्षा के लिए तो उसने इतना सामान पैदा कर दिया कि हमारे लिए एक संसार को सेवक बना दिया परन्तु हमारी रूहानी (आध्यात्मिक) सुरक्षा के लिए कुछ व्यवस्था न की।

अब यदि हम इन्साफ़ से सोचने वाले हों तो इसी से एक सुदृढ़ सबूत मिल सकता -है कि निस्सन्देह रूहानी सुरक्षा के लिए भी दूरदर्शी ख़ुदा ने कोई ऐसी व्यवस्था निर्धारित की होगी जो शारीरिक व्यवस्था के समान होगी तो वह सुरक्षा के लिए फ़रिश्तों को नियुक्त करना है।

अतः इसी उद्देश्य से ख़ुदा तआला ने आकाश और तारों की यह क्रसम खाई ताकि फ़रिश्तों द्वारा सुरक्षा के मामले को जो एक गुप्त और सरसरी मामला है तारों इत्यादि की सुरक्षा-व्यवस्था से जो एक व्यापक बात है भली भांति खोल दे और फ़रिश्तों के अस्तित्व को मानने के लिए विचार करने वालों के सामने भौतिक व्यवस्था को रख दे जो शारीरिक

ओर बुलाने के लिए खुदा तआला ने शैतान को हमेशा का साथी नियुक्त कर दिया है ऐसा ही दूसरी ओर नेकी की ओर बुलाने के लिए रूहुल क़ुदुस को उस दयालु और कृपालु खुदा ने मनुष्य का स्थायी साथी नियुक्त कर दिया है और न केवल इतना ही अपितु बक्रा (अनश्वरता) और लिक्का (मिलन) की अवस्था में शैतान की बुराई समाप्त हो जाती है जैसे उसने इस्लाम को मान लिया है और

शेष हाशिया - व्यवस्था है ताकि सद्बुद्धि शारीरिक व्यवस्था को देखकर उसी नमूने पर रूहानी व्यवस्था को भी समझ ले

दूसरी क्रसम जो नमूने के तौर पर नीचे लिखी जाती है यह है-

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۖ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۚ وَمَا يَنْطُوقُ الْهَوَىٰ ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۖ عَلَّمَ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۖ ذُو مِرَّةٍ ۖ فَاسْتَوَىٰ ۖ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ (अन्नज्म-53/2 से 8)

अर्थात् क्रसम है तारे की जब उदय हो या गिरे कि तुम्हारा साथी न मार्ग भूला और न गुमराह हुआ है और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलता अपितु उसकी प्रत्येक बात तो वही है जो उतर रही है जिसको बड़ी शक्तियों वाले अर्थात् जिब्राईल ने सिखाया है और वह शक्तिशाली उसे पूर्ण रूप से दिखाई दिया और वह बुलन्द किनारा पर था।

इस क्रसम खाने का उद्देश्य यह है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की बात जो काफ़िरों की दृष्टि में एक सरसरी बात है उनको उन मान्यताओं के अनुसार सिद्ध करके दिखाया जाए जो उनकी दृष्टि में स्पष्ट बातों का आदेश रखती थीं।

अब जानना चाहिए कि अरब के लोग उन विचारों के कारण जो ज्योतिषियों के द्वारा उन में फैल गए थे अत्यन्त कट्टर आस्थापूर्वक उन बातों को मानते थे कि जिस समय बड़ी प्रचुरता के साथ तारे अर्थात् नक्षत्र गिरते हैं तो कोई बड़ा महान मनुष्य पैदा होता है। विशेष तौर पर उनके ज्योतिषी जो अपवित्र रूहों से कुछ संबंध पैदा कर लेते थे और ग़ैब (परोक्ष) की खबरें बताया करते थे उनकी तो मानो अटल और निश्चित आस्था थी कि उल्लका तारे बड़ी संख्या में अर्थात् तारों का सामान्य अनुमान से बहुत अधिक टूटना इस बात को बताता है कि कोई नया नबी संसार में पैदा होने वाला है। और ऐसा संयोग हुआ कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरित होने के समय सीमा से अधिक उल्काएं गिरी थीं, जैसा कि सूरह अलजिन्न में खुदा तआला ने इस घटना की गवाही दी है। और जिन्नों की घटना का वर्णन किया है-

रूहुल कुदुस का प्रकाश अपने चरमोत्कर्ष पर चमक उठता है। तो उस समय इस पवित्र और उच्च स्तर की शिक्षा पर कौन ऐतराज कर सकता है उस मूर्ख और अंधे के अतिरिक्त जो केवल जानवरों के समान जीवन व्यतीत करता है और पवित्र शिक्षा के प्रकाश का कुछ भी भाग नहीं रखता। अपितु सच और निश्चित बात तो यह है कि पवित्र कुर्आन की यह शिक्षा भी समस्त चमत्कारों में से एक

शेष हाशिया -

وَاِنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَهَا مِلْئًا حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهَبًا ۚ وَاِنَّا كُنَّا نَقْعُدُ

مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلْمَسْمُوعِ ۖ فَمَنْ يَسْتَمِعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شُهَابًا رَّصَدًا. (अलजिन-72/9,10)

अर्थात् हमने आसमान को टटोला तो उसको चौकीरदारों से अर्थात् फ़रिशतों से एवं शोलों से भरा हुआ पाया और हम पहले इससे रहस्यात्मक वर्णनों के सुनने के लिए आसमान में घात में बैठा करते थे और जब हम सुनना चाहते हैं तो घात में एक शोले को पाया जो हम पर गिरता है। इन आयतों के समर्थन में अत्यधिक हदीसें पाई जाती हैं। बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिरमिजी, इब्न माजा आदि सब इस प्रकार की हदीसें अपने संकलन में लाई हैं कि तारों का गिरना शैतानों को रद्द करने के लिए होता है और इमाम अहमद इब्न अब्बास से रिवायत करते हैं कि तारे अज्ञानता के युग में भी गिरते थे परन्तु उनकी अधिकता और स्पष्टता आगमन के समय में हुई इसलिए तफ़सीर इब्न कसीर में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय जब बहुत बड़ी मात्रा में तारे गिरे तो तायफ बस्ती के लोग बहुत अधिक भयभीत हो गए और कहने लगे कि शायद आकाश के लोगों में तहलका मच गया है। तब उनमें से एक ने कहा कि तारों के स्थानों को देखो यदि वे अपने स्थान से हट गए हैं तो आकाश के लोगों पर कोई तबाही आई अन्यथा यह निशान जो आकाश पर प्रकट हुआ है इब्ने अबी कब्शा के कारण है (वे लोग शरारत के तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इब्ने अबी कब्शा कहते थे) अरब के लोगों के दिलों में यह बात जमी हुई थी कि संसार में जब कोई नबी आता है या कोई अन्य महापुरुष पैदा होता है तो बड़ी प्रचुरता के साथ तारे टूटते हैं। इसी कारण अरब के लोगों की विचारधारा के अनुसार खुदा तआला ने तारों के गिरने की क्रसम खाई। जिसका उद्देश्य यह है कि तुम लोग स्वयं स्वीकार करते हो और तुम्हारे ज्योतिषी इस बात को मानते हैं कि जब तारे बहुत मात्रा में गिरते हैं तो खुदा की ओर से कोई नबी या मुल्हम पैदा होता है, तो फिर इन्कार का क्या कारण है। चूँकि तारों का बड़ी मात्रा में गिरना अरब के ज्योतिषियों की दृष्टि में इस

चमत्कार है। क्योंकि जिस विशेषता, सन्तुलन और दार्शनिकता पूर्ण शान से इस शिक्षा ने उस आस्था को हल कर दिया कि मनुष्य में भलाई और बुराई की शक्तिशाली भावनाएं क्यों पाई जाती हैं। यहां तक कि स्वप्नावस्था में उनके प्रकाश या अंधकार साफ और स्पष्ट तौर पर महसूस होते हैं। इस सुदृढ़ और खुदाई शैली में किसी अन्य किताब ने वर्णन नहीं किया तथा अत्यधिक चमत्कार का

शेष हाशिया - बात के सबूत के लिए एक स्पष्ट बात थी कि खुदा की ओर से कोई नबी और मुल्हम पैदा होता है। और अरब के लोग ज्योतिषियों के ऐसे अनुयायी थे जैसे एक मुरीद अपने मुर्शिद (पीर) का अनुयायी होता है। इसलिए खुदा तआला ने वही स्पष्ट बात उनके सामने क्रसम के रूप में प्रस्तुत की ताकि उनका उस सच्चाई की तरफ ध्यान हो कि यह कारोबार खुदा तआला की ओर से है मनुष्य का बनाया हुआ नहीं है।

यदि यह प्रश्न प्रस्तुत हो कि तारों का गिरना यदि किसी नबी या मुल्हम या मुहद्दिस के अवतरित होने पर प्रमाण है, तो फिर क्या कारण कि हमेशा तारे गिरते हैं, परन्तु उनके गिरने से संसार में कोई नबी या मुहद्दिस नहीं उतरता। तो इसका उत्तर यह है कि आदेश अधिकता पर लागू होता है तथा कुछ सन्देह नहीं कि जिस युग में ये घटनाएं बहुत अधिक हों और विलक्षण तौर पर उनकी अधिकता पाई जाए तो संसार में खुदा तआला की ओर से कोई खुदा का शूरवीर (मर्द) लोगों के सुधार के लिए आता है। कभी ये घटनाएं उसके अस्तित्व से इर्हास के तौर पर कुछ वर्ष पूर्व प्रकट हो जाती हैं और कभी ठीक प्रकट होने के समय अपना प्रदर्शन करती हैं और कभी उसकी महान विजय के समय यह प्रसन्नता का प्रकाश आकाश पर होता है।

इब्ने कसीर ने अपनी तफ्सीर में सदी से रिवायत की है कि तारों का अधिकता से गिरना किसी नबी के आने का प्रमाण देता है या धर्म के प्रभुत्व की शुभ सूचना देता है, परन्तु जो कुछ पवित्र कुर्आन के स्पष्ट आदेशों के संकेतों से समझा जाता है वह एक सामान्य अर्थ है जिससे स्पष्ट और व्यापक तौर पर समझा जाता है कि जब कोई नबी या नबी का वारिस पृथ्वी पर रसूल हो कर आए या आने वाला हो या उसके प्रकट करने वाले हों या कोई महान विजय शीघ्र घटित होने वाली हो तो इन समस्त परिस्थितियों में आकाश पर ऐसे-ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं कि उनका इन्कार करना मूर्खता है क्योंकि किसी वस्तु की जानकारी ने होने के कारण उस वस्तु का न होना अनिवार्य नहीं होता। संसार में कुछ सुधारक और मुजद्दिद ऐसे आते हैं कि सामान्य तौर पर संसार को उनकी भी खबर नहीं होती।

रूप इस से भी प्रकट होता है कि इस पद्धति को मानने के अतिरिक्त अन्य कोई भी पद्धति बन नहीं पड़ती तथा इतने आरोप आते हैं कि कदापि संभव नहीं कि उन से मुक्ति प्राप्त हो। क्योंकि खुदा तआला का सामान्य प्रकृति का नियम हम पर सिद्ध कर रहा है कि हमारे जितने लोगों और शक्तियों तथा शरीरों को उस दानशीलता की स्रोत हस्ती से लाभ पहुंचता है वह कुछ अन्य वस्तुओं के माध्यम

शेष हाशिया -

वृत्तान्त (हिकायत)

मुझे याद है कि प्रारंभिक समय में जब मैं मामूर किया गया तो मुझे यह इल्हाम हुआ जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 238 में दर्ज है:

يا احمد بارك الله فيك ما رميت اذ رميت ولكن الله رمى- الرحمن علم القرآن- لتنذر قومًا ما انذر آباءهم و لتستبين سبيل المجرمين- قُل اِنِ امرت و انا اول المؤمنين-

अर्थात् हे अहमद तुझ में खुदा ने बरकत रख दी और जो तू ने चलाया यह तू ने नहीं चलाया अपितु खुदा ने चलाया। उसने तुझे कुर्आन का ज्ञान दिया ताकि तू उनको डराए जिनके बाप-दादे नहीं डराए गए और ताकि दोषियों के मार्ग स्पष्ट हो जाएं अर्थात् नेक लोग अलग हो जाएं और उपद्रवी तथा उद्दण्ड लोग अलग हो जाएं। लोगों को कह दे कि मैं मामूर (आदेशित) होकर आया हूं और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूं। इन इल्हामों के पश्चात् कई प्रकार के निशान जाहिर होने आरंभ हुए। अतः उन में से एक यह कि 28 नवम्बर 1885 ई. की रात को अर्थात् उस रात को जी 28 नवम्बर 1885 ई. के दिन से पहले आई है आकाश पर टूटने वाले तारों का इतना तमाशा था जो मैंने अपनी आयु में उसका उदाहरण कभी नहीं देखा। आकाश के वातावरण में हज़ारों शोले हर ओर इतने (अधिक) चल रहे थे कि उस रंग का संसार में कोई भी नमूना नहीं ताकि मैं उसे वर्णन कर सकूँ। मुझे याद है कि उस समय यह इल्हाम बड़ी प्रचुरता से हुआ था कि

مَا رَمَيْتْ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَى

अतः उस रमी को शहब (टूटने वाले तारों के चलाने) से बहुत अनुकूलता थी। यह टूटने वाले तारों का तमाशा जो 28 नवम्बर 1885 ई. की रात को ऐसा विशाल तौर पर हुआ कि यूरोप, अमरीका और एशिया के सब अखबारों में बड़े आश्चर्य के साथ

से पहुंचाता है। उदाहरणतया यद्यपि हमारी आंखों को वही प्रकाश प्रदान करता परन्तु वह प्रकाश सूर्य के माध्यम से हमें मिलता है और ऐसा ही रात का अंधकार जो हमारे प्राणों को आराम पहुंचाता है और हम उसमें नफ्स के अधिकारों को अदा कर लेते हैं वह भी वास्तव में उसी की ओर से होता है क्योंकि वास्तव में प्रत्येक उत्पत्ति का प्रमुख कारण वही है। फिर जबकि हम देखते हैं कि यह एक

शेष हाशिया - छप गया। लोग सोचते होंगे कि यह बे फ़ायदा था, परन्तु कृपालु खुदा जानता है कि इस दृश्य को सब से अधिक ध्यान से देखने वाला तथा उस से हर्ष और आनंद प्राप्त करने वाला मैं ही था। मेरी आंखें बहुत देर तक इस तमाशे को देखती रहीं। और यह सितारे टूटने का सिलसिला सायंकाल से ही आरंभ हो गया था जिसे मैं केवल इल्हामी खुशखबरियों के कारण बहुत आनंद-विभोर होकर देखता रहा क्योंकि मेरे दिल में इल्हाम के तौर पर डाला गया था कि यह तेरे लिए निशान प्रकट हुआ है।

और फिर इसके पश्चात् यूरोप के लोगों को वह तारा दिखाई दिया जो हज़रत मसीह के प्रकटन के समय में निकला था। मेरे दिल में डाला गया कि यह तारा भी तेरी सच्चाई के लिए एक दूसरा निशान है।

यहां यदि यह ऐतराज किया जाए कि विज्ञान के अन्वेषकों के प्राचीन और नवीन अन्वेषणों की दृष्टि से टूटने वाले तारों का पैदा होना अन्य कारणों से वर्णन किया गया है कुछ भी संबंध नहीं रखते। 'शरह इशारात में जहां फैलने वाली क्रायनात के कारण और माध्यम लिखे हैं टूटने वाले तारों के पैदा होने का कारण केवल इतना लिखा है कि जब वाष्प (भाप) आग के स्थल में पहुंचती है और उसमें कुछ चिकनाई और कोमलता होती है जो आग के प्रभाव के कारण सहसा भड़क उठती है और ऐसा मालूम होता है कि भड़कने के साथ ही बुझ गयी परन्तु वास्तव में वह बुझती नहीं। बात यह है कि वाष्प के दोनो किनारों में से पहले एक ओर भड़क उठती है जो ऊपर की ओर है फिर वह भड़कना दूसरी ओर जाता है उस गति के समय ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उस भड़कने की एक सरल रेखा और इसी का नाम शिहाब (टूटने वाला तारा) है जो वाष्प की सरल रेखा में निचले किनारे के निकट पैदा होता है फिर जब पृथ्वी के भाग उस वाष्प की शुद्ध आग की ओर विलय शील हो जाते हैं तो माध्यम के पैदा हो जाने के कारण वह आग का तत्त्व दिखाई नहीं देता। और देखने वाले को ऐसा लगता है कि जैसे वह बुझ गया है जबकि वास्तव में वह बुझा नहीं और यह अवस्था उस समय उत्पन्न होती है कि जब वाष्प कोमल हो परन्तु यदि मोटी

निर्धारित कानून सदैव से हमारे लाभ के लिए जारी है कि हम किसी अन्य के माध्यम से खुदा तआला का प्रत्येक लाभ पाते हैं। हां उस लाभ को स्वीकार करने के लिए अपने अन्दर शक्तियां भी रखते हैं। जैसे हमारी आंख प्रकाश को स्वीकार करने के लिए एक प्रकार का प्रकाश अपने अन्दर रखती है और हमारे कान भी उन आवाजों को स्वीकार करने के लिए जो वायु पहुंचाती है एक प्रकार का

शेष हाशिया - हो तो उस आग का भड़कना कई दिनों और वर्षों तक रहता है और वह प्रकाश भिन्न-भिन्न प्रकार की आकृतियों में जो तारे के रंग पर है आकाश के वातावरण में दिखाई देता है। कभी ऐसा दिखाई देता है कि मानो **पुच्छल तारा** है (धूमकेतु) और कभी वह पूंछ बालों की लट के रूप में दिखाई देती है और कभी वह आग के भाले के रूप में दिखाई देती है और कभी एक जानवर की भांति जो कई सींग रखता है और कभी यह आग की आकृति अन्य विभिन्न आकृतियों में एक वर्ष या कई वर्षों तक दिखाई देती है और कभी यह आग की आकृति टुकड़े-टुकड़े होकर टूटने वाले तारों के रूप में आ जाती है और कभी **टूटने वाले तारे** आग की उस आकृति को ग्रहण कर लेते हैं जब यह आग की आकृति उत्तरी गोलार्द्ध के बिल्कुल किनारे पर दिखाई देती है तो कभी तो अन्य किनारों की अपेक्षा बहुत देर तक रहती है और यदि लम्बे समय तक मौजूद रहे तो उस की गर्मी से कई भयावह परिणाम पैदा हो जाते हैं।

इतिहास की दृष्टि से यह भी नक़ल किया गया है कि हज़रत मसीह की गिरफ्तारी के बाद पहले **टूटने वाले तारे (उल्लकागण)** और फिर आग का एक लम्बे समय तक पूरे एक वर्ष तक आकाशीय वायुमण्डल में दिखाई दिया तथा आकाश से एक वस्तु राख की भांति बरसती थी तथा दिन के नौ बजे से रात तक एक बड़ा अंधकार छा जाता था।

अतः उल्का और पुच्छल तारों की वास्तविकता में ये यूनानियों की विचारधाराएं हैं जो इस्लाम के दार्शनिकों ने ले लीं हैं तथा अपने अनुभवों को भी उन में मिलाया, परन्तु वर्तमान के नवीन प्रकाशमय अन्वेषणों का उन से बहुत मतभेद सिद्ध होता है। इन काल्पनिक विद्याओं में यह बात अत्यन्त हृदय विदारक है कि हर दिन नए विचार जन्म लेते हैं। एक समय वह था कि यूनान की भौतिकी और खगोल विज्ञान दार्शनिकता की पूर्णता तक पहुंचने के लिए एक सीधा मार्ग समझी जाती थी और अब यह समय है कि उनके अधिकतर अन्वेषणों पर हंसा जाता है और अत्यन्त तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखा जाता है तथा कोई कारण नहीं कि हम यह विचार न करें कि कुछ समय के पश्चात् इस भौतिकी और खगोल-शास्त्र पर भी

संवेदन अपने अवयवों में विद्यमान रखते हैं। किन्तु यह तो नहीं कि हमारी शक्तियां ऐसी स्थायी और पूर्ण रूप से अपनी बनावट रखती हैं कि उनका बाह्य नियतियों एवं सहयोगों की कुछ भी आवश्यकता नहीं। हम कभी नहीं देखते कि हमारी कोई शारीरिक शक्ति केवल अपनी मौजूद दक्षता से काम चला सके और बाह्य सहायक एवं सहयोगी की मुहताज न हो। उदाहरणतया यद्यपि हमारी मुहताज न

शेष हाशिया - हंसी करने वाले हो जाएंगे। क्योंकि यद्यपि दावा किया जाता है कि इस युग की भौतिकी और खगोल-शास्त्र, प्रत्यक्ष, संवेदनशील तथा देखे गए अनुभवों के द्वारा सिद्ध किए गए हैं परन्तु वास्तव में यह दावा अत्यन्त स्तर की अतिशयोक्ति है जिस से कुछ विशेष स्थितियों की विश्वसनीय समस्याओं में उन हज़ारों संदिग्ध, काल्पनिक तथा अन्वेषणरहित विचारों को अकारण दाखिल कर दिया गया है जिनका अभी तक किसी दार्शनिक ने सर्वांगपूर्ण ढंग से कदापि-कदापि निर्णय नहीं किया।

आधुनिक युग के अन्वेषक **टूटने वाले तारों** (उल्काओं) के बारे में यह राय देते हैं कि वे वास्तव में लोहे और कोयले से बने होते हैं जिनका भार अधिक से अधिक कुछ पौण्ड होता है और पुच्छल तारों की भांति समूह के समूह लम्बे अंडाकार दायरे बनाते हुए अंतरिक्ष में सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। उनके प्रकाश का कारण वास्तव में वह ताप है जो उनकी तीव्र गति से पैदा होता है। और पुच्छल तारों के बारे में उनका कहना है कि कुछ उनमें से कई हज़ार वर्ष रहते हैं और अन्त में टूट कर उल्का (टूटने वाले तारे) बन जाते हैं। वे यह भी कहते हैं कि जब सूर्य सिंह या तुला राशि में हो तो इन दोनों समयों में बड़ी प्रचुरता में इन उल्काओं की आशा की जाती है और प्रायः तैतीस वर्ष के बाद यह चक्र होता है परन्तु यह निश्चित नियम नहीं है। कभी-कभी इन समयों से आगे-पीछे भी ये घटनाएं प्रकटन में आ जाती हैं। अतएव 1872 ई. में सितारों का गिरना इन खगोल-शास्त्रियों के कथनानुसार सर्वथा अप्रत्याशित बात थी। यद्यपि 14 नवम्बर 1833 ई. और 27 नवम्बर 1885 ई. को यह घटना का बड़ी प्रचुरता से प्रकटन होना उनके निर्धारित नियमों से मिलता है परन्तु इतिहास की छान-बीन करने से ज्ञात होता है कि घटना बहुत अन्तर के साथ इन तिथियों से बहुत दूर भी घटित हुई है। अतः 10, मार्च 1521 ई. और 19, जनवरी 1135 ई. और मई के महीने 610 ई. में जो बड़ी प्रचुरता से उल्काओं की धटना हुई उसमें इन समस्त खगोल शास्त्रियों को आश्चर्य और स्तब्ध रहने के अतिरिक्त और कोई स्थान नहीं था और वे उल्लकाएं जो हज़रत मसीह की गिरफ्तारी के बाद प्रकट हुई और फिर एक पुच्छल तारे

हो। उदाहरणतया यद्यपि हमारी आंखें कैसी ही तीव्र दृष्टि रखती हों परन्तु फिर भी हम सूर्य के प्रकाश के मुहताज हैं और हमारे कान कैसे ही सुनने वाले हों परन्तु फिर भी हम उस वायु के जरूरतमंद हैं जो ध्वनि को अपने अंदर लपेट कर हमारे कानों तक पहुंचा देती है। इस से सिद्ध होता है कि केवल हमारी शक्तियां हमारी मानवता की मशीन चलाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं हमें

शेष हाशिया - के रूप में हो गई। यद्यपि अब हम पूर्ण शुद्धता के साथ उसकी कोई तिथि निश्चित नहीं कर सकते परन्तु अनुमान से ज्ञात होता है कि इस घटना का प्रारंभ जून के महीने से होगा, क्योंकि यद्यपि हम पुरानी घटना की पहचान में ईसाइयों के विवादित बयानों से कोई उत्तम लाभ प्राप्त नहीं कर सकते, परन्तु निष्कर्ष निकालने के तौर पर यह मालूम होता है कि हजरत मसीह अ. जब यहूदियों द्वारा गिरफ्तार हुए तब गर्मी की तीव्रता वाला महीना था, क्योंकि गिरफ्तारी की हालत में उनका बहुत प्यासा होना स्पष्ट तौर पर प्रकट कर रहा है कि मौसम की यही मांग थी कि गर्मी और प्यास महसूस हो। अतः वह महीना जून का है। क्योंकि उस समय एक बड़ी भारी आंधी भी आई थी जिसके साथ अंधकार हो गया था और जून के महीने में प्रायः आंधियां भी आती हैं।

अब इस सम्पूर्ण अन्वेषण से ज्ञात है कि वास्तव में अन्तरिक्ष की कायनात विशेषतः उल्लकाएं और पुच्छल तारों के बारे में खगोल शास्त्रियों एवं भौतिक शास्त्रियों का कोई ठोस एवं निश्चित विवेकपूर्ण पद्धति हाथ में नहीं आई। जब कभी उन के बनाए हुए नियमों के विरुद्ध कोई बात प्रकट होती है तो उनको एक बड़ी परेशानी और आश्चर्य लग जाता है और उनमें घबराहट का एक कोलाहल उठता है। यूरोप के खगोल शस्त्री तथा विज्ञान और नक्षत्र-विद्या में बड़ी-बड़ी डींगें मारने वाले हमेशा अंतरिक्ष जगत और उनके परिणामों के बारे में भविष्यवाणियां एक बड़े दावे के साथ प्रकाशित किया करते हैं और कभी लोगों को अकालों (दुर्भिक्षों) से डराते, तूफानों और आंधियों की भविष्यवाणियों से धड़के में डालते हैं और कभी ठीक समय की वर्षाओं और पानी की आशाएं देते हैं, परन्तु खुदा की कुदरत है कि अधिकतर वे उन खबरों में झूठे निकलते हैं, परन्तु इसके बावजूद फिर भी लोगों के मस्तिष्कों को अकारण परेशान करते रहते हैं। यों तो वे अपने विचारों को दूर तक पहुंचा कर महा प्रतापी खुदा की खुदाई में हाथ डालना चाहते हैं। खुदा की हिकमत हमेशा उनको लज्जित करती है। अब स्पष्ट है कि जिन लोगों की स्पष्ट गलती हमेशा सिद्ध होती रहती है उनके बारे में कैसे सोच सकते हैं कि उन्होंने जो कुछ व्यवस्था और विज्ञान के बारे में

अवश्य बाह्य सहायकों एवं सहयोगियों की आवश्यकता है परन्तु प्रकृति का नियम हमें बता रहा है कि बाह्य सहायक और सहयोगी यद्यपि प्रमुख कारण होने की दृष्टि से खुदा तआला ही है परन्तु उसकी यह व्यवस्था कदापि नहीं है कि वह बिना माध्यम हमारी शक्तियों और शरीरों पर असर डालता है अपितु जहां हम दृष्टि डाल कर देखते हैं तथा हम जितना अपने चिन्तन, मस्तिष्क और सोच से

शेष हाशिया - अब तक ज्ञात किया है वह सब विश्वसनीय है? हमें तो उनकी अधिकतर जानकारीयों को काल्पनिक श्रेणी का मानने में भी शर्म आती है। क्योंकि अब तक उनके विचारों में निराधार और प्रमाणरहित बातों का भण्डार बढ़ा हुआ है। इस समय **इमाम राज़ी** ^{रह.} का यह कथन बहुत प्रिय मालूम होता है कि

من اراد أن يكتال مملكة الباري بمكيال العقل فقد ضلّ ضلالاً بعيداً

अर्थात् जो व्यक्ति खुदा तआला के मुल्क को अपनी बुद्धि के पैमाने से नापना चाहे तो

वह ईमानदारी, सच्चाई और सद्मार्ग से दूर जा पड़ा।

अब इस खाकसार पर कृपालु खुदा ने जो कुछ खोला और प्रकट किया वह यह है कि यदि खगोल शास्त्रियों और भौतिकी वालों के नियम किसी सीमा तक उल्काओं और पुच्छल तारों के बारे में स्वीकार भी किए जाएं तब भी जो कुछ **पवित्र कुर्आन** में महा वैभवशाली एवं प्रतापी खुदा ने इन अंतरिक्ष जगत के रूहानी उद्देश्यों के बारे में वर्णन किया है उसमें और उन कम बुद्धि दार्शनिकों के बयान में कोई रोक-टोक और झगड़ा नहीं। क्योंकि इन लोगों ने तो अपना कर्तव्य केवल इतना बताया है कि इन चीजों के भौतिक कारणों तथा प्राकृतिक कारणों को ज्ञात करके भौतिक (जाहिरी) व्यवस्था का एक नियमित क्रम निर्धारित कर दिया जाए। परन्तु पवित्र कुर्आन में **रूहानी** व्यवस्था का वर्णन है। और स्पष्ट है कि खुदा तआला का एक कार्य उसके दूसरे कार्य का अवरोधक नहीं हो सकता। अतः क्या यह आश्चर्य का स्थान हो सकता है कि शारीरिक (भौतिक) और रूहानी (आध्यात्मिक) व्यवस्था खुदा तआला की क़ुदरत से हमेशा साथ-साथ रहें, विशेषतः जिस हालत में खुदा के सुधारक संसार में हमेशा आते रहते हैं और खुदा तआला के बड़े-बड़े इरादों की हरकत जारी रहती है तथा कोई सदी ऐसी नहीं आती कि संसार के किसी न किसी भाग में इन बातों में से किसी बात का प्रकटन न हो। तो इस बात को मानने के लिए थोड़ी भी दूरी शेष नहीं रहती कि उल्काओं इत्यादि की अधिकता रूहानी तौर पर खुदा तआला की इस रूहानी व्यवस्था के नवीनीकरण और नवीनता का अवश्य मार्ग-दर्शन करते हैं जो खुदा के धर्म को सुदृढ़

काम लेते हैं, स्पष्ट, व्यापक एवं असंदिग्ध तौर पर हमें दिखाई देता है कि प्रत्येक दानशीलता के लिए हम में और हमारे कृपालु खुदा में **माध्यमिक कारण** हैं जिनके माध्यम से प्रत्येक शक्ति अपनी आवश्यकतानुसार लाभ प्राप्त करती है। अतः इसी तर्क से फ़रिश्तों और जिनों का अस्तित्व भी सिद्ध होता है। क्योंकि हम ने केवल यह सिद्ध करना है कि भलाई और बुराई कमाने में केवल

शेष हाशिया - करने के लिए प्रारंभ से चली आती है। विशेषतः जब इस बात को मस्तिष्क में ख़ूब याद रखा जाए कि **उल्काओं का अधिक मात्रा में टूटना** इत्यादि केवल इसी बात से सीधे तौर पर विशिष्ट नहीं कि कोई नबी या नबी का वारिस धर्म के सुधार करने के लिए पैदा हो। अपितु सन्दर्भ में यह बात भी सम्मिलित है कि उस नबी या वारिस और कायम-मुक़ाम नबी के इरहासों पर भी उल्काएं कसरत से टूटती हैं बल्कि उसकी स्पष्ट विजयों पर भी कसरत से उल्काएं टूटती हैं। क्योंकि उस समय रहमान (ख़ुदा) की सेना शैतान की सेना पर पूर्ण रूप से विजय पा लेती है। फिर जब ऐसी बड़ी-बड़ी बातें पैदा होने लगती हैं जो इस नबी या नबी के वारिस के लिए बतौर इरहास हैं या उसकी कार्रवाइयों की प्रथम श्रेणी पर सहायक और सहयोगी हैं या उसकी विजय-प्राप्ति के लक्षण हैं तो उनके निकट समय में भी कसरत से उल्काओं का टूटना इत्यादि घटनाएं होती हैं तो इस स्थिति में प्रत्येक मंद बुद्धि व्यक्ति को भी यह बात अच्छी तरह समझ में आ सकती है कि वास्तव में यह उल्काओं का कसरत से टूटना रूहानी सिलसिले की विभिन्न सेवाओं के लिए और उनके प्रारंभ या अंत या मध्य में आता है और वह सिलसिला हमेशा जारी है और जारी रहेगा। उदाहरणतया वर्तमान यूरोप के खगोल शास्त्री जो 27 नवम्बर 1885 ई. की उल्काओं या उन्नीसवीं शताब्दी की उल्काओं की अन्य घटनाओं का वर्णन करते हैं और उन पर ऐसा बल देते हैं कि जैसे उन के पास सबसे अधिक यही उदाहरण हैं वे थोड़ा ध्यान देकर समझ सकते हैं कि इस सदी के अन्त में रूहानी सिलसिले के जो बड़े-बड़े कार्य प्रकट होने वाले थे और ख़ुदा तआला ने अपने एक बन्दे के माध्यम से तौहीद के धर्म को ताज़ा करने का इरादा कर रखा था, इसलिए उसने इस उन्नीसवीं सदी ईस्वी में कई बार उल्काओं के प्रचुरता से टूटने का तमाशा दिखाया ताकि वह बात पक्की हो जाए जिसका उसने निश्चित तौर पर इरादा कर लिया है। और यदि यह प्रश्न किया जाए कि इन उल्काओं के टूटने के पूर्णरूप से भौतिक कारण मालूम होते हैं, शैतानों पर पत्थर मारने से इसका क्या संबंध है तथा कैसे ज्ञात हो कि वास्तव में इस घटना से शैतानों को आकाश से हटाया और दूर किया जाता है।

हमारी ही शक्तियां पर्याप्त नहीं अपितु बाह्य सहायताओं तथा सहयोगों की आवश्यकता है जो विलक्षण प्रभाव रखते हैं परन्तु वह सहायक और सहयोगी खुदा तआला सीधे तौर पर बिना माध्यम नहीं अपितु कुछ संसाधनों के माध्यम से है। अतः **क्रानून-ए-कुदरत** के अवलोकन ने अटल एवं निश्चित तौर पर हम पर स्पष्ट कर दिया कि वे सहायताएं एवं सहयोग बाह्य तौर पर मौजूद हैं, यद्यपि

शेष हाशिया - इस प्रश्न का उत्तर यह है कि ऐसे आरोप वास्तव में उस समय पैदा होते हैं जब रूहानी सिलसिले की याददाश्त से विचार भूल जाता है या उस सिलसिले के अस्तित्व पर विश्वास नहीं होता अन्यथा जिस व्यक्ति की दृष्टि दोनों सिलसिलों पर है वह आसानी से समझ सकता है कि आकाशीय ग्रहों तथा पार्थिव पदार्थों और सम्पूर्ण अन्तरिक्ष जगत में जो कुछ परिवर्तन, बदलाव तथा कोई नई बात पैदा होकर प्रकट होती है उसके नए तौर पर पैदा होने के वास्तव में दो कारण हैं -

प्रथम - पहले तो यही भौतिक व्यवस्था के कारणों का सिलसिला जिस से भौतिकवादी दार्शनिक और भौतिक शास्त्री बहस और सरोकार रखता है और जिसके बारे में बाहरी तड़क-भड़क के दीवाने दार्शनिकों की दृष्टि यह ध्यान रखती है कि वह भौतिक कारणों, जानकारियों, प्रभावकारियों और प्रभावितों से व्यवस्थित और क्रमबद्ध है।

द्वितीय - दूसरे वह सिलसिला जो इन बाहरी तड़क-भड़क के दीवाने दार्शनिकों की असमर्थ दृष्टि से छिपा हुआ है और वह खुदा तआला के फ़रिश्तों का सिलसिला है जो अन्दर ही अन्दर इस बाहरी सिलसिले को मदद देता है और इस जाहिरी कारोबार को अन्जाम तक पहुँचा देता है और अनुभवी लोग बख़ूबी इस बात को समझते हैं कि उस सिलसिले के समर्थन के बिना, जो आध्यात्मिक है, बाहरी सिलसिले का काम हरगिज़ चल ही नहीं सकता। यदि एक बाहरी तड़क-भड़क का दीवाना दार्शनिक हालात को देखकर विचार करता है कि अमुक परिणाम इन स्थितियों के लिए आवश्यक है किन्तु ऐसे लोगों को सदैव लज्जित होना पड़ता है। जबकि हालात के मौजूद होने के बावजूद परिणाम प्रतिकूल निकलता है या वह हालात अपने अधिकार और यत्न से बाहर हो जाते हैं। उदाहरणतया एक वैद्य बड़ी सावधानी से एक बीमार बादशाह का इलाज करता है उदाहरणतः वैद्यों का एक गिरोह दिन-रात ऐसे रोगी के लिए रोग की पहचान, दवा बताना तथा ख़ुराक के प्रबंध में ऐसा व्यस्त रहता है कि उस पर अपने मस्तिष्क की सम्पूर्ण प्रतिभा खर्च कर देते हैं परन्तु जबकि उस बादशाह की मृत्यु प्रारब्ध होती है तो वे समस्त रायें ग़लत हो जाती हैं तथा कुछ दिन वैद्यों एवं मृत्यु की लड़ाई होकर अन्त में मृत्यु विजय पाती है। इस प्रकार के नमूने हमेशा प्रकट

उन का मर्म और विवरण हमें ज्ञात हो या न हो, यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि वह न सीधे रूप से खुदा तआला है और न ही हमारी ताकतें और वे हमारी ही योग्यताएं हैं बल्कि वे इन दोनों प्रकारों से अलग ऐसे प्राणी हैं जो अपना एक स्थाई अस्तित्व का रूप रखती हैं और जब हम उन में से किसी का नाम भलाई की ओर बुलाने वाले (दाई-इलल खैर) रखेंगे तो उसी को हम रूहुल कुदुस या

शेष हाशिया - होते रहते हैं। परन्तु अफ़सोस कि लोग उनको ध्यानपूर्वक नहीं देखते। बहरहाल यह सिद्ध है कि सर्वशक्तिमान (खुदा) ने संसार की घटनाओं को केवल इसी भौतिक सिलसिले तक घिरा हुआ और सीमित नहीं किया अपितु एक आन्तरिक सिलसिला साथ-साथ जारी है। यदि सूर्य है या चन्द्रमा या पृथ्वी या वे भापें जिस से पानी बरसता है या वे आंधियां जो जोर से आती हैं या वे ओले जो पृथ्वी पर गिरते हैं या वे उल्काएं जो टूटती हैं। यद्यपि ये समस्त चीजें अपने कामों और समस्त परिवर्तनों एवं बदलावों तथा नवीनतमों में भौतिक संसाधन भी रखती हैं जिन के वर्णन में खगोल और भौतिकी के रजिस्टर भरे पड़े हैं परन्तु इसके बावजूद आरिफ़ (आध्यात्म ज्ञानी) जानते हैं कि इन संसाधनों के नीचे और संसाधन भी हैं जो इरादे से व्यवस्थित हैं जिनका दूसरे शब्दों में नाम **फ़रिश्ते** हैं। वे जिस चीज़ से संबंध रखते हैं उसके समस्त कारोबार को अन्त तक पहुंचाते हैं और अपने कार्यों में प्रायः उन रूहानी उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हैं जो कृपालु खुदा ने उनके सुपुर्द किए हैं और उनके कार्य निरर्थक नहीं बल्कि हर एक कार्य में बड़े-बड़े उद्देश्य उनके ध्यान में रहते हैं।

अब जबकि यह बात एक प्रमाणित सच्चाई है जिसे हम इस से पहले भी किसी सीमा तक विस्तार से लिख चुके हैं और हमारी पुस्तक '**तौज़ीह मराम**' में भी यह सम्पूर्ण बहस बड़ी उत्तम शैली में लिखी गई है कि स्वच्छन्द दूरदर्शी (खुदा) ने इस जगत के कारोबार को उत्तम तौर पर चलाने के लिए दो व्यवस्थाएं (निज़ाम) रखी हैं और आन्तरिक व्यवस्था फ़रिश्तों से संबंधित है और भौतिक व्यवस्था का कोई भाग ऐसा नहीं जिसके साथ छिपे तौर पर आन्तरिक व्यवस्था न हो। **तो इस स्थिति में एक मुरीद (सीधा मार्ग चाहने वाला)** बड़ी आसानी से समझ सकता है कि उल्काओं के टूटने की भौतिक व्यवस्था जिन कारणों और संसाधनों पर आधारित है वे कारण एवं संसाधन रूहानी व्यवस्था के कार्यों में कुछ अवरोधक और बाधक नहीं। और रूहानी व्यवस्था यह है कि प्रत्येक उल्का जो टूटती है वास्तव में उस पर एक **फ़रिश्ता संरक्षक** होता है, जो उसे जिस ओर चाहता है हरकत देता है। अतः उल्काओं की गतियों की पद्धति ही इस पर गवाह है। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है

जिब्राईल कहेंगे और जब हम उन में से किसी का नाम दाई इलल शर् (बुराई की ओर बुलाने वाला) रखेंगे तो उसी को हम शैतान और **इब्लीस** के नाम से भी पुकारेंगे। यह जरूरी तो नहीं कि हम रूहुल कुदुस या शैतान प्रत्येक अंधेरे दिल को दिखलाएं हालाँकि ज्ञानी उन को देख भी लेते हैं और कश्फ़ी आवलोकनों से वे दोनों नज़र भी आ जाते हैं परन्तु सामान्य लोगों के लिए जो न अभी शैतान

शेष हाशिया - कि फ़रिश्ते का कार्य निरर्थक नहीं हो सकता उसके पीछे अवश्य कोई न कोई उद्देश्य होगा जो धर्म के हित में और संसार के लिए लाभप्रद हो। परन्तु फ़रिश्तों के कार्यों के उद्देश्यों को समझना फ़रिश्तों के माध्यम के बिना संभव नहीं। तो फ़रिश्तों के माध्यम से अर्थात् जिब्राईल अलैहिस्सलाम के माध्यम से आखिररुसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यही प्रकट हुआ कि फ़रिश्तों के उल्काओं को फेंकने के उस कार्य का मुख्य कारण **शैतानों पर पत्थर मारना** है।

और यह रहस्य कि उल्काओं के टूटने से शैतान क्योंकर भाग जाते हैं इस का रहस्य रूहानी सिलसिले पर दृष्टि डालने से यह मालूम होता है कि शैतानों और फ़रिश्तों की व्यक्तिगत दुश्मनी है। अतः फ़रिश्ते इन उल्काओं के छोड़ने के समय जिन पर वे सितारों के ताप (गर्मी) का भी असर डालते हैं अन्तरिक्ष में अपनी एक आभामय (नूरानी) शक्ति फैलाते हैं और प्रत्येक उल्का जो हरकत करता है वह अपने साथ एक पूर्ण प्रकाश रखता है। क्योंकि फ़रिश्तों के हाथ से बरकत पाकर आती है और उसमें शैतान को जलाने का एक तत्व होता है। अतः यह आरोप नहीं लगाया जा सकता कि जिन्न तो आग से पैदा किए गए हैं उन्हें आग से क्या हानि होगी। क्योंकि वास्तव में उल्काओं के टूटने से जिन्नों को हानि पहुंचती है उसका यह प्रत्यक्ष (भौतिक) कारण यह आग नहीं अपितु कारण, वह प्रकाश है जो फ़रिश्ते के प्रकाश से उल्काओं के साथ शामिल होता है जो विशेष तौर पर **शैतानों को जलाने वाला** है।

हमारे इस वर्णन पर कोई यह ऐतराज न करे कि यह समस्त वर्णन केवल प्रमाण रहित विचारों और वार्ताओं में से है, जिस का तार्किक (तर्क संगत) कोई भी प्रमाण नहीं। क्योंकि हम इस बात को भली भाँति सिद्ध कर चुके हैं कि इस जगत की गतियां और घटनाएं स्वयं नहीं और न मालिक के बिना और न व्यर्थ और निरर्थक हैं अपितु पीछे से सम्पूर्ण आकाशीय ग्रह तथा पार्थिव पदार्थों के लिए खुदा तआला की ओर से प्रबन्धक नियुक्त हैं जिन को दूसरे शब्दों में फ़रिश्ते कहते हैं। जब तक कोई मनुष्य खुदा तआला की हस्ती के अक्रीदे का पाबन्द नहीं उसे यह बात अवश्य स्वीकार करनी पड़ेगी कि यह समस्त कारोबार निरर्थक नहीं अपितु प्रत्येक नई बात पैदा

को देख सकता है न रूहुल कुदुस को यह प्रमाण पर्याप्त है क्योंकि प्रभावित के अस्तित्व से प्रभावी का अस्तित्व सिद्ध होता है और यदि यह नियम सही नहीं है तो फिर खुदा तआला के अस्तित्व का भी कैसे पता लग सकता है। क्या कोई दिखा सकता है कि खुदा तआला कहां है? केवल प्रभावितों की ओर देख कर जो उसकी कुदरत के नमूने हैं उस वास्तविक प्रभावकारी (खुदा) की आवश्यकता

शेष हाशिया - होने और प्रकट होने पर खुदा तआला की नीति और इरादे के अनुसार होने का हाथ है और वह इरादा सम्पूर्ण व्यस्था के अनुसार संसाधनों के माध्यम से प्रकटन में आता है। चूंकि खुदा तआला ने ग्रहों और पदार्थों (स्थूल पदार्थों) को ज्ञान और समझ नहीं दी। इसलिए इन बातों को पूरा करने के लिए जिन में ज्ञान और समझ की आवश्यकता है ऐसे संसाधन अर्थात् ऐसी चीजों के माध्यम की आवश्यकता हुई जिनको ज्ञान और समझ दी गई है और वे फ़रिश्ते हैं।

अब स्पष्ट है कि जब फ़रिश्तों की यही शान है कि वे व्यर्थ एवं निरर्थक तौर पर कोई कार्य नहीं करते बल्कि अपनी समस्त सेवाओं में उद्देश्य और मतलब रखते हैं। इसलिए उनके बारे में यह बात आवश्यक तौर पर माननी होगी कि रज्म पत्थर मारने (उल्काओं के टूटने) की सेवा में भी उनका कोई मूल उद्देश्य है और चूंकि बुद्धि इस बात को समझने से असमर्थ है कि वह कौन सा उद्देश्य है। इसलिए इस गुत्थी को सुलझाने के लिए बुद्धि से प्रश्न करना अनुचित प्रश्न है। यदि बुद्धि का इसमें कुछ हस्तक्षेप है तो केवल इतना कि सद्बुद्धि ऐसी हस्तियों के कार्यों के बारे में जो इरादा, समझ और विवेक रखते हैं हरगिज़ यह राय नहीं दे सकती कि उनके वे कार्य व्यर्थ और निरर्थक और सही तथा आवश्यक उद्देश्यों से रिक्त हैं। फिर यदि सद्बुद्धि इस बात को भली भांति समझ ले कि जो कुछ आकाशीय ग्रह और पार्थिव पदार्थ और अन्तरिक्ष जगत में नाना प्रकार के परिवर्तन, बदलाव और प्रकटन हो रहे हैं वे केवल भौतिक कारणों तक सीमित नहीं हैं अपितु उन समस्त घटनाओं के लिए अन्य कारण भी हैं जो विवेक, इरादा, समझ, उपाय और नीति रखते हैं तो इस समझ के बाद बुद्धि इस बात का अवश्य इक्रार करेगी कि ये समस्त परिवर्तन और नई बातें जो हमें आकाशीय और पार्थिव जगत में दिखाई देते हैं व्यर्थ, निरर्थक और अनर्गल नहीं अपितु उनमें उद्देश्य और अभिप्राय छुपे हैं। यद्यपि हम उन्हें समझ सकें या हमारी समझ और बुद्धि से श्रेष्ठतर हों। और इस इक्रार के बारे में उल्काओं के टूटने के बारे में सद्बुद्धि को भी यही इक्रार करना पड़ेगा कि यह कार्य भी व्यर्थ नहीं, क्योंकि यह बात व्यापक तौर पर निषिद्ध है कि ऐसा विचार किया जाए कि जो हस्तियां इरादा, समझ, उपाय और हिकमत की पाबन्द हैं वे एक अनर्गल कार्य पर प्रारंभ से हठ करते चले आए हैं। फिर यद्यपि

स्वीकार की गई है। हां आरिफ़ (आध्यात्म ज्ञानी) अपने चरम स्थान पर पहुंचकर उसे रूहानी आंखों से देखते हैं और उसकी बातों को भी सुनते हैं परन्तु पदों में छिपे व्यक्ति के लिए इसके अतिरिक्त सिद्ध करने का अन्य क्या उपाय है कि प्रभावितों को देख कर उस वास्तविक प्रभावकारी के अस्तित्व पर ईमान लाए। फिर इसी उपाय से रूहुल कुदुस और शैतानों का अस्तित्व सिद्ध होता है और न

शेष हाशिया - बुद्धि पूर्णरूप से इस रहस्य को ज्ञात न कर सके परन्तु फ़रिश्तों का अस्तित्व और उनके पद से संबंधित सेवाओं को मानने के बाद इतना तो अवश्य ज्ञात कर लेगी कि उनका कोई कार्य व्यर्थ निरर्थक तौर पर नहीं।

इस इकरार के बाद यद्यपि बुद्धि विस्तृत रूप से उल्काओं के टूटने के उन उद्देश्यों को ज्ञात न कर सके जो फ़रिश्तों के इरादे और अन्तर्आत्मा (जमीर) में हैं किन्तु संक्षिप्त तौर पर इतना तो अवश्य समझ जाएगी कि निस्सन्देह इस कार्य के लिए भी और फ़रिश्तों के कार्यों के पीछे अभिप्राय और उद्देश्य हैं। अतः वह इस कारण कि उसकी समझ से असमर्थ है। इस विवरण के लिए किसी अन्य माध्यम की मुहताज होगी जो सीमाओं और बुद्धि से बढ़कर है और वह माध्यम वह्यी और इल्हाम है जो इसी उद्देश्य से मनुष्य को दिया गया है ताकि मनुष्य को उन वास्तविकताओं तथा मआरिफ़ तक पहुंचा दे कि जिन तक अकेली बुद्धि नहीं पहुंच सकती और उस पर वे बारीक रहस्य खोले, जो बुद्धि के माध्यम से खुल नहीं सकते। वह्यी से अभिप्राय हमारी क़ुर्आन की वह्यी है जिसने हम पर यह गुत्थी खोल दी कि उल्काओं के टूटने से फ़रिश्तों का उद्देश्य **शैतानों को पत्थर मारना है**। अर्थात् यह फ़रिश्तों के हाथ से एक प्रकार का **प्रकाश का फैलाव** तथा उन के प्रकाश की मिलावट से है जिस का **जिन्नों** के अंधकार पर प्रभाव पड़ता है और जिन्नों के विशिष्ट कार्य कुछ कम हो जाते हैं और यदि इस प्रकाश के पूर्ण द्योतक पैदा होते हैं अन्यथा यह प्रकाश का फैलाव अपनी फ़रिश्ते वाली विशेषता के कारण किसी सीमा तक दिलों को नूर (प्रकाश) और सच्चाई की ओर आकर्षित करता है और यह एक विशेषता है जो संसार में हमेशा **इन्नी तौर** * पर उस का सबूत मिलता रहा है। संसार में हज़ारों चीज़ों में ऐसे गुण पाए जाते हैं जो मनुष्य की बुद्धि से श्रेष्ठतर होते हैं और मनुष्य उन पर कोई बौद्धिक तर्क स्थापित नहीं कर सकता और उनके अस्तित्व से भी इन्कार नहीं कर सकता। फिर इस प्रमाणित गुण का केवल इस आधार पर इन्कार करना कि बुद्धि इसके समझने से असमर्थ है यदि मूर्खता नहीं तो और क्या है। क्या मानव-बुद्धि ने उन सम्पूर्ण बारीक गुणों पर जो पदार्थों

* न्याय की परिभाषा में एक तर्क (अनुवादक)

केवल सिद्ध होता है अपितु अत्यन्त सफाई से दिखाई देता है। अफसोस उन लोगों की हालत पर जो झूठे दर्शन शास्त्र के अंधकार से प्रभावित हो कर फ़रिश्तों तथा शैतानों के अस्तित्व का इन्कार कर बैठे हैं और पवित्र कुर्आन के स्पष्ट एवं व्यापक आदेशों का इन्कार कर दिया तथा मूर्खता से भरे हुए नास्तिकता के गढ़े में गिर पड़े। और यहां स्पष्ट रहे कि यह विषय उन विषयों में से है जिन

शेष हाशिया - और ग्रहों में पाए जाते हैं बौद्धिक तर्कों की दृष्टि से परिधि में ले लिया है? ताकि इस आरोप का अधिकार पैदा हो कि उल्काओं के टूटने के बारे में जो प्रकाश के फैलाव का रहस्य वर्णन किया जाता है यह बुद्धि के अनुसंधान से बाहर क्यों रह गया है। और जैसा कि हम अभी लिख चुके हैं यह बात भी नहीं कि इस रहस्य को स्वीकार कराने के लिए बुद्धि पर सरासर जबर है बल्कि जिस सीमा तक मानव-बुद्धि अपने अस्तित्व में समझने की शक्ति रखती है वह अपनी उसी सीमा के अनुसार उस रहस्य को स्वीकार करती है इन्कार नहीं करती। क्योंकि सद्बुद्धि को फरिश्तों का अस्तित्व और उनके सुपुर्द की गई सेवाओं को स्वीकार करने के पश्चात् मानना पड़ता है कि यह उल्काओं का टूटना भी फरिश्तों के द्वारा प्रकटन में आता है और फ़रिश्ते किसी अभिप्राय तथा उद्देश्य के लिए इस कार्य को दयालु खुदा की आज्ञा से करते हैं। तो सद्बुद्धि का इतना ही स्वीकार करना उसकी उन्नति के लिए एक सीढ़ी के समान है और निस्सन्देह इतना स्वीकार करने के पश्चात् सद्बुद्धि उल्काओं के टूटने को नास्तिकों भौतिक वैज्ञानिकों की अपूर्ण अक्लों की तरह एक व्यर्थ बात नहीं समझेगी बल्कि पूर्ण निश्चय के साथ इस राय की ओर झुकेगी कि वास्तव में यह दार्शनिकों जैसा कार्य है जिसके अन्तर्गत उच्चतम उद्देश्य हैं। और इतने ज्ञान के साथ सद्बुद्धि को इस बात का लालच पैदा होगा कि इन उच्चतम उद्देश्यों को विवरण के साथ ज्ञात करे। अतः यह लालच और सच्ची रुचि उसे धीरे-धीरे उस महान पथ-प्रदर्शक की ओर ले आएगी जो पवित्र कुर्आन की वही है।

हाँ यदि सद्बुद्धि कुछ बहस और वाद-विवाद कर सकती है तो इस अवसर पर तो नहीं किन्तु इन मामलों को मानने के लिए निस्सन्देह प्रथम उस का यह अधिकार है कि खुदा तआला के अस्तित्व में जिसकी सत्ता तभी स्थापित रह सकती है जब संसार का प्रत्येक कण उस का आज्ञाकारी हो बहस करे। फिर फ़रिश्तों के अस्तित्व पर और उनकी सेवाओं पर सन्तोषजनक तर्क चाहे अर्थात् इस बात पर पूर्णरूप से सन्तुष्ट हो जाए कि वास्तव में खुदा तआला की व्यवस्था यही है कि जो कुछ ग्रहों, पदार्थों और अन्तरिक्ष जगत में हो रहा है या कभी-कभी

को सिद्ध करने के लिए खुदा तआला ने पवित्र क़ुरआन की सच्चाइयों को निकालने में इस खाकसार को ही विशिष्ट किया है। इस पर खुदा तआला की हर प्रकार की प्रशंसा। और यदि कोई आर्य या ईसाई यहां यह ऐतराज करे कि वर्तमान समय के अधिकतर मुल्ला जैसे शेख बतालवी मुहम्मद हुसैन और शेख देहलवी नज़ीर हुसैन इस आस्था के विरोधी हैं और वे इस बात को कदापि

शेष हाशिया - प्रकटन में आता है वह केवल ग्रहों और पदार्थों के कार्य नकेल रहित ऊंट* की तरह नहीं हैं अपितु उनकी समस्त घटनाओं की बागडोर सामर्थ्यवान दूरदर्शी (खुदा) ने फरिश्तों के हाथ में से दे रखी है जो हर क्षण तथा हर पलक झपकने में उस सर्वशक्तिमान से आज्ञा पाकर के हस्तक्षेपों में व्यस्त हैं न व्यर्थ तौर पर अपितु सर्वथा दार्शनिकों की पद्धति से बड़े-बड़े उद्देश्यों के लिए इस पृथ्वी और आकाश के गोले (गेंद) को भिन्न-भिन्न प्रकार की हरकतें दे रहे हैं और उन का कोई कार्य भी बेकार और निरर्थक नहीं।

और हम फरिश्तों के अस्तित्व और उनकी इन सेवाओं पर किसी सीमा तक इसी पुस्तक में बहस कर आए हैं जिसका विवरण यह है कि हम अपनी बुद्धि का ध्यान इस ओर आकृष्ट करें कि यह बात तय की हुई और निर्णित है कि हमारे शरीरों के भौतिक पालन-पोषण और पूर्णता के लिए तथा उस कार्य के लिए ताकि हमारे भौतिक ज्ञानेन्द्रियों के बांछित कार्य यथोचित जारी हो सकें। खुदा तआला ने प्रकृति का यह नियम रखा है कि पंचभूत और सूर्य, चन्द्रमा और समस्त सितारों को इस सेवा में लगा दिया है कि वे हमारे शरीरों एवं शक्तियों को सहायता पहुंचा कर उनसे उनके समस्त कार्य उत्तम प्रकार से जारी करा दें और हम उन सच्चाइयों को मानने से किसी ओर भाग नहीं सकते। उदाहरणतया हमारी आंख अपनी व्यक्तिगत रौशनी से किसी कार्य को भी सम्पन्न नहीं कर सकती, जब तक सूर्य का प्रकाश उसके साथ शामिल न हो और हमारे कान केवल अपनी श्रवण-शक्ति से कुछ भी नहीं सुन सकते जब तक वायु उनकी सहायक और सहयोगी के रूप में न हो। अतः क्या इस से यह सिद्ध नहीं कि खुदा तआला के कानून ने हमारी शक्तियों की पूर्ति बाहरी सामानों में रखी है और हमारी प्रकृति (स्वभाव) ऐसी नहीं है कि बाहरी सामानों की सहायता से निःस्पृह हो। और ध्यान से देखो तो न केवल एक दो बात में अपितु हम अपनी समस्त ज्ञानेन्द्रियों, समस्त शक्तियों तथा समस्त ताकतों की पूर्ति के लिए बाहरी सहायताओं के मुहताज हैं। फिर जबकि यह कानून और व्यवस्था भागीदार रहित

* शुरु बे मुहार बिना नकेल का ऊंट कहावत है। अर्थात् निरंकुश और आवारा।

(अनुवादक)

नहीं मानते कि प्रत्येक मनुष्य को दो साथी दिए गए हैं। एक भलाई की ओर बुलाने वाला जो रूहुल कुदुस है और एक बुराई की ओर बुलाने वाला जो शैतान है। अपितु उन का तो कहना यह है कि केवल एक ही साथी दिया गया है जो बुराई की ओर बुलाने वाला है। और मनुष्य के ईमान को जड़ से उखाड़ने के लिए हर समय उसके साथ रहता है, और खुदा तआला को यह बात बहुत प्रिय

शेष हाशिया - खुदा का जिसके कार्यों में परस्पर एकता और अनुकूलता है, हमारी बाहरी शक्तियां, ज्ञानेन्द्रियां और शारीरिक उद्देश्यों की अपेक्षा अत्यन्त मज़बूती और दृढ़ता तथा पूर्ण अनिवार्यता से पाई जाती है। तो क्या फिर यह बात आवश्यक और अनिवार्य नहीं कि हमारी रूहानी पूर्ति और रूहानी उद्देश्यों के लिए यही व्यवस्था होती। दोनों व्यवस्थाएं एक ही पद्धति पर होकर एक रचयिता पर मार्ग दर्शन करें। और स्वयं स्पष्ट है कि जिस स्वच्छन्द दार्शनिक (खुदा) ने भौतिक व्यवस्था की यह नींव डाली है और इसी को पसन्द किया है कि आकाशीय ग्रह और पंचभूत इत्यादि भौतिक सामानों के प्रभाव से हमारे भौतिक शरीरों, शक्तियों तथा ज्ञानेन्द्रियों की पूर्ति हो। उस सर्वशक्तिमान दार्शनिक ने हमारी रूहानियत के लिए भी यही व्यवस्था पसन्द की होगी, क्योंकि वह अकेला है उसका कोई भागीदार नहीं और उसकी सत्ताओं एवं कार्यों में परस्पर एकता और अनुकूलता है और इन्हीं तर्क भी इसी की ओर मार्ग-दर्शन करते हैं। अतः वे भौतिक वस्तुएं जो हमारी रूहानियत पर प्रभाव डाल कर सूर्य, चन्द्रमा और पंचभूतों की भांति जो शारीरिक आवश्यकताओं के लिए सहायक हैं हमारी रूहानी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। उन्हीं का नाम हम फरिश्ते रखते हैं। अतः इस वर्णन से मलाइकः (फरिश्तों) का अस्तित्व उत्तम तौर पर सिद्ध होता है। यद्यपि हम पर उन का मर्म खुल न सके और खुलना कुछ आवश्यक भी नहीं। किन्तु संक्षिप्त तौर पर क़ानून-ए-कुदरत की परस्पर अनुकूलता और एकता पर दृष्टि डालकर हमें उन का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है। क्योंकि जिस स्थिति में हमने प्रसन्नतापूर्वक भौतिक नियम को स्वीकार कर लिया है तो फिर क्या कारण कि हम उस पद्धति और ढंग पर आन्तरिक नियम को स्वीकार न करें। निस्सन्देह हमें आन्तरिक नियम भी उसी प्रकार स्वीकार करना पड़ेगा जिस प्रकार हम ने भौतिक (ज़ाहिरी) नियम को स्वीकार कर लिया। यही रहस्य है जो खुदा तआला ने अपनी प्रिय किताब में कुछ स्थानों पर इन दोनों नियमों को संयुक्त शब्दों में वर्णन कर दिया है। जैसा कि वह फ़रमाता है -

وَالَّذِينَ ذَرَوْا ۖ فَالْحَمِلَتْ وَفَرَا ۖ فَالْجَرِيَتْ يُسْرًا ۖ فَالْمُقَسَّمَتِ أَمْرًا ۖ

(अज़ज़ारियात - 51/2 से 5)

लगी कि शैतान को मनुष्य का दिन-रात का साथी बनाकर तथा मनुष्य के खून और रोम-रोम शैतान को अधिकार प्रदान करके मनुष्य को बड़ी जल्दी तबाही (विनाश) में डाल दे, और जिब्राईल को जिसका दूसरा नाम रूहुल कुदुस भी है सामान्य जन अपितु वलियों के लिए भी भलाई की ओर बुलाने वाला नियुक्त नहीं किया। वे सब लोग शैतान के पंजे में छोड़े गए। हां नबियों पर रूहुल कुदुस

शेष हाशिया - अर्थात् उन हवाओं की क्रसम है जो समुद्रों और दूसरे पानियों से भापों को ऐसे अलग करती हैं जो हक़ अलग करने का है। फिर उन हवाओं की क्रसम है जो इन भारी भापों को गर्भवती स्त्रियों की तरह अपने अन्दर ले लेती हैं, फिर उन हवाओं की क्रसम है जो बादलों को वांछित मंजिल तक पहुंचाने के लिए चलती हैं। फिर उन फ़रिश्तों की क्रसम हैं जो इन समस्त बातों के पीछे प्रबन्ध करने वाले और अंजाम देने वाले हैं अर्थात् हवाएं क्या चीज़ हैं और क्या वास्तविकता रखती हैं कि स्वयं ही भापों को समुद्रों में से उठाएं और बादलों का रूप बना दें और ठीक आवश्यकता के स्थान पर जा कर वर्षा करा दें और कार्यों का विभाजन करने वाले बनें यह तो पर्दे के पीछे से फ़रिश्तों का कार्य है। अतः खुदा तआला ने इन आयतों में प्रथम जाहिरी दार्शनिकों के तौर पर बादलों के बरसने का कारण बताया और वर्णन किया कि पानी कैसे भाप बनकर बादल और मेघ हो जाता है और फिर अन्तिम वाक्य में अर्थात् **فَالْمُقَسَّمَاتِ أَمْرًا** में वास्तविकता को खोल दिया और प्रकट कर दिया कि कोई सामान्य नज़र से देखने वाला यह विचार न करे कि केवल भौतिक कारणों और जानकारीयों का सिलसिला खुदाई व्यवस्था के लिए पर्याप्त है अपितु रूहानी कारणों का एक अन्य सिलसिला इस भौतिक सिलसिले के नीचे हैं जिसके सहारे से यह भौतिक सिलसिला जारी है। फिर एक अन्य स्थान पर फ़रमाता है

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۚ فَالْعَصْفِ عَصْفًا ۚ وَالنَّشْرِتِ دَشْرًا ۚ فَالْفَرْقَتِ

(अलमुरसलात- 77/2-6) **فَرَقًا ۚ فَالْمُلْقِيَةِ ذِكْرًا ۚ**

अर्थात् क्रसम है उन हवाओं की और उन फ़रिश्तों की जो नमी से छोड़े गए हैं तथा क्रसम है उन हवाओं की और उन फ़रिश्तों की जो जोर और तीव्रता के साथ चलते हैं और क्रसम है उन हवाओं की जो बादलों को उठाती हैं और उन फ़रिश्तों की जो उन बादलों पर ज़िम्मेदार हैं। और क्रसम है उन हवाओं की जो प्रत्येक चीज़ को मुंह से निकल जाए कानों तक पहुंचाती हैं और क्रसम है उन फ़रिश्तों की जो खुदा के कलाम को दिलों तक पहुंचाते हैं। इसी प्रकार खुदा तआला ने आयत **فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا** में फ़रिश्तों और तारों को एक ही

उतरता है परन्तु वह भी केवल एक पल या बहुत ही थोड़े समय के लिए और फिर जिब्राईल आकाश पर चढ़ जाता है और उन्हें खाली छोड़ देता है अपितु कभी-कभी चालीस-चालीस दिन अपितु इस से भी अधिक रूहुल कुदुस अथवा यों कहो कि जिब्राईल की भेंट से नबी वंचित रहते हैं परन्तु दूसरा साथी जो शैतान है वह तो नऊजुबिल्लाह (खुदा की शरण) उन का साथ एक पल के लिए भी

शेष हाशिया - स्थान पर एकत्र कर दिया है। अर्थात् इस आयत में सात तारों को (सप्तऋषि मण्डल) प्रत्यक्ष तौर पर जो कुछ पृथ्वी पर है का प्रबन्धक ठहराया है और फ़रिशतों को आन्तरिक तौर पर उन चीजों का प्रबन्धक ठहरा दिया है। अतः तफ़्सीर 'फ़तुलबयान' में मआज़ बिन जबल और क़शीरी से ये दोनों रिवायतें मौजूद हैं और इब्ने कसीर ने हसन से फ़रिशतों के बारे में यह रिवायत की है कि **تُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ** अर्थात् आकाश से पृथ्वी तक जितनी बातों की योजना बनती है वह सब फ़रिशतों के द्वारा होती है। और इब्ने कसीर लिखता है कि सर्वसम्मत कथन है कि **मुदब्बिरात-ए-अम्र फ़रिशते हैं।**

इब्ने जरीर ने भी आयत **فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا** के अन्तर्गत यह व्याख्या की है कि इस से अभिप्राय फ़रिशते हैं जो संसार के प्रबन्धक हैं अर्थात् यद्यपि प्रत्यक्षतया नक्षत्र, सूर्य, चन्द्रमा और पंचतत्त्व इत्यादि अपने-अपने कार्य में व्यस्त हैं, परन्तु वास्तविक प्रबन्धक फ़रिशते ही हैं।

अब जबकि खुदा तआला के कानून-ए-कुदरत की दृष्टि से यह बात बहुत सफ़ाई से सिद्ध हो गई कि रूहानी व्यवस्था के लिए भी बाह्य व्यवस्था की भांति बाह्य प्रभावकारी अस्तित्व भी हैं, जिन का नाम खुदा के कलाम में फ़रिशते रखा है। तो इस बात का सिद्ध करना शेष रहा कि बाह्य (भौतिक) व्यवस्था में भी जो कुछ हो रहा है उन समस्त कार्यों तथा परिवर्तनों का भी अंजाम और प्रबन्ध फ़रिशतों के शामिल होने के बिना नहीं होता। इसलिए पुस्तकीय तौर पर तो इसका सबूत प्रकट है, क्योंकि खुदा तआला ने फ़रिशतों का नाम **مَقْسَمَاتِ أَمْرِ** और **مُدَبِّرَاتِ** रखा है और हर एक प्रसिद्धि और जौहर के नए तौर पर पैदा होने और स्थापित रखने का कारण वही हैं यहां तक कि खुदा तआला के अर्श को भी वही उठाए हुए हैं जैसा कि आयत

(अत्तारिक-86/5) **إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ**

से पूर्णरूप से प्रत्येक चीज़ पर फ़रिशतों का नियुक्त होना सिद्ध होता है तथा पवित्र कुआन की निम्नलिखित आयत भी इसी की तरफ मार्ग दर्शन करती है और वह यह है -

وَأَنشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۖ وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۖ وَيَحْمِلُ

عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۚ (अलहाक्का- 69/17,18)

नहीं छोड़ता, यद्यपि अन्त में मुसलमान ही हो जाए।

तो इसका उत्तर यह है कि ये लोग महजूब (पर्दे में छिपे) और कुर्आन की वास्तविकताओं से अनभिज्ञ तथा अभागे हैं और स्पष्ट तौर पर उनकी यह आस्था भी नहीं अपितु मूर्खता और दूरदर्शिता की कमी और फिर इस खाकसार के साथ संकीर्णता एवं ईर्ष्या रखने के कारण इस विपदा में पड़ गए हैं, क्योंकि

शेष हाशिया - अर्थात् जब क्रयामत आएगी तो आकाश फट जाएगा और ढीला तथा सुस्त हो जाएगा और उसकी शक्तियां जाती रहेंगी * क्योंकि फ़रिश्ते जो आकाश तथा आकाशीय ग्रहों के लिए जान की तरह थे वे सब संबंधों को छोड़कर किनारों पर चले जाएंगे और उस दिन खुदा तआला के अर्श को आठ फ़रिश्ते अपने सिर पर और कंधों पर उठाए हुए होंगे। इस आयत की तफ़्सीर में शाह अब्दुल अजीज़ साहिब लिखते हैं कि वास्तव में आकाश की बक्रा (अनश्वरता) रूहों के कारण हैं अर्थात् फ़रिश्तों के, जो आकाश और आकाशीय ग्रहों के लिए बतौर रूहों के हैं, और जैसे रूह शरीर की रक्षक होती है और शरीर पर अधिकार रखती है इसी प्रकार कुछ फ़रिश्ते आकाश और आकाशीय ग्रहों पर अधिकार रखते हैं और समस्त आकाशीय ग्रह उनके साथ ही जीवित हैं तथा उन्हीं के द्वारा नक्षत्रों के कार्य जारी होते हैं। फिर जब वे फ़रिश्ते प्राण की भांति उस शरीर से निकल जाएंगे तो उनके निकलने से आकाशीय व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी। जैसे प्राण के निकलने से शरीर की व्यवस्था

* **हाशिए का हाशिया** - आजकल के खगोल विज्ञान के अन्वेषक जो यूरोप के दार्शनिक हैं जिस पद्धति से आकाशों के अस्तित्व के बारे में विचार रखते हैं वास्तव में वे विचार पवित्र कुर्आन के विपरीत नहीं क्योंकि पवित्र कुर्आन ने यद्यपि आकाशों को निरा पोल तो नहीं ठहराया, परन्तु इस आकाशीय माद्दः को जो पोल के अन्दर भरा हुआ है कठोर, मोटा, फटने में दुष्कर भी नहीं बताया, अपितु हवा या पानी की भांति नर्म और मोटा माद्दः ठहराया जिसमें तारे तैरते हैं। इसी की ओर संकेत है जो अल्लाह तआला फ़रमाता है :

(यासीन-36/41) **كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ**

हां यूनानियों ने आकाशों को मोटे तत्व स्वीकार किया हुआ है और प्याज़ के छिलकों की भांति उनको परत के ऊपर परत माना है और अन्तिम परत का आकाश जो समस्त परतों को घेरे हुए है कुल ब्रह्माण्ड (कायनात) का अन्त ठहराया है। जिस को वे फ़लकुल अफ़लाक (सब आकाशों का आकाश) और सीमित करने वाला भी कहते हैं जो उनके विचार में अन्य तीन आकाशों सहित जिन का नाम मुदीर (परिक्रमा देने वाला), जौज़हर और माइल है

इस खाकसार के मुकाबले पर इन लोगों ने जिन मार्गों का अनुकरण किया उन मार्गों में ये विपदाएं मौजूद थीं। इसलिए अनजाने में उन में फंस गए जैसा कि एक पक्षी अनजाने में किसी दाने के लालच से एक जाल में फंस जाता है। बात यह है कि जब इन लोगों ने इस बात पर हठ किया कि जिब्राईल मृत्यु का फ़रिश्ता तथा अन्य फ़रिश्ते पृथ्वी पर अपने वास्तविक अस्तित्व के साथ ही शेष हाशिया - अस्त-व्यस्त हो जाती है। फिर पवित्र कुर्आन की एक अन्य आयत भी इसी विषय की ओर मार्ग दर्शन करती है और वह यह है :-

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ

(अलमुल्क- 67/6)

अर्थात् हम ने निकट आकाश को सितारों के साथ शोभा दी है और हमने सितारों को शैतानों को पत्थर मारने के लिए माध्यम बनाया है और इस से पहले कुर्आन के स्पष्ट आदेश से सिद्ध हो चुका है कि आकाश से पृथ्वी तक हर एक मामले के विभाजन करने वाले और प्रबंधक फ़रिश्ते हैं और अब अल्लाह तआला का यह कथन कि उल्काओं को चलाने वाले वे सितारे हैं जो निकट आकाश में हैं बज़ाहिर विपरीत और उलट दिखाई देता है जो फ़रिश्तों के बारे में आई हैं परन्तु यदि गहरी नज़र से देखा जाए तो कुछ विपरीत नहीं, क्योंकि अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि पवित्र कुर्आन की शिक्षा से यही ज्ञात होता है कि

शेष हाशिए का हाशिया - पूरब से पश्चिम की ओर घूमते हैं और बाकी आसमान पश्चिम से पूरब की ओर घूमते हैं। और उनके विचार में सीमित करने वाला आकाश संसार की आबादी की पराकाष्ठा (अन्तिम सीमा) है जिसके पीछे गहरा मेलजोल नहीं। मानो ख़ुदा तआला ने अपने अधिकृत देशों की एक दीवार खींची हुई है जिस के पीछे कुछ भी नहीं न ख़ला न मला। यूनानियों की इस राय पर जितने (अधिक) आरोप लगते हैं वे छिपे हुए नहीं। न केवल अनुमानित तौर पर अपितु अनुभव भी उसे झुठलाता है। जिस हालत में आजकल के उपकरण दूरबीन बहुत दूर के तारों (नक्षत्रों) का भी पता लगाते हैं तथा चन्द्रमा एवं सूर्य को ऐसा दिखा देते हैं कि जैसे वे चार-पांच कोस पर हैं। तो फिर आश्चर्य का स्थान है कि बावजूद इसके कि यूनानियों के विचार में आकाश एक मोटा जौहर है और ऐसा मोटा जो फट कर मिल जाने योग्य नहीं और इतना बड़ा कि मानो चन्द्रमा और सूर्य को उसकी मोटाई के साथ कुछ भी तुलना नहीं इसके बावजूद फिर भी वह इन दूरदर्शी यंत्रों से दिखाई न दे सका। यदि दूर के आकाश दिखाई नहीं देते थे तो سماء الدنيا (संसार का निकटतम आकाश) जो

उतरते हैं और फिर थोड़ी देर रह कर आकाश पर चले जाते हैं। जब आकाश से उतरते हैं तो आकाश उन के अस्तित्व से खाली रह जाता है। फिर जब पृथ्वी से आकाश की ओर उड़ते हैं तो पृथ्वी उन के अस्तित्व से खाली रह जाती है तो उन पर कुर्आन, हदीस और बुद्धि के सैकड़ों आरोप आए। अतः इन विपदाओं में से जो उनकी इस आस्था के साथ अनिवार्य रूप से संलग्न हो गई एक यह **शेष हाशिया - फरिश्ते आकाश और आकाशीय ग्रहों के लिए बतौर प्राण के हैं और स्पष्ट है कि किसी वस्तु के प्राण उस वस्तु से अलग नहीं होते।** इसी कारण खुदा तआला ने पवित्र कुर्आन के कुछ स्थानों में उल्काओं के फेंकने का कर्ता फरिश्तों को ठहराया और कुछ अन्य स्थानों में उसी फेंकने का कर्ता सितारों को ठहराया, क्योंकि फरिश्ते सितारों में अपना प्रभाव डालते हैं जैसा कि प्राण शरीर में अपना प्रभाव डालते हैं। तब वह प्रभाव सितारों से निकलकर उन ज़मीनी भागों पर पड़ता है जो उल्का बनने के योग्य होते हैं। तो वे खुदा तआला की कुदरत से तुरन्त प्रज्वलित हो जाते हैं और फरिश्ते एक अन्य रंग में उल्काओं से संबंध ग्रहण करके अपने प्रकाश के साथ दायीं-बायीं ओर उन्हें चलाते हैं। और इस बात में तो किसी दार्शनिक को आपत्ति नहीं कि जो कुछ अन्तरिक्ष या पृथ्वी में होता है प्रारंभिक कारण उनके नक्षत्र तथा प्रभाव आकाशीय ही होते हैं। हाँ इस दूसरे सूक्ष्म रहस्य को प्रत्येक व्यक्ति नहीं समझ सकता कि नक्षत्रों की शक्तियाँ फरिश्तों के प्रभाव

शेष हाशिए का हाशिया - सब से निकट है अवश्य दिखाई दे जाना चाहिए था। अतः कुछ सन्देह नहीं कि यूनानियों ने अन्तरिक्ष जगत का जो चित्र दिखाया है वह सही नहीं। उस पर इतने आरोप लगते हैं कि जिन से मुक्ति प्राप्त कर पाना संभव ही नहीं। परन्तु पवित्र कुर्आन ने जो आकाशों की वास्तविकता वर्णन की है वह बहुत सही और उचित है जिसको स्वीकार किए बिना कोई चारा नहीं, और उसके विरोध में जो कुछ वर्णन किया जाए वह सब कुछ अनभिज्ञता या पक्षपात पर आधारित होगा। पवित्र कुर्आन न आकाशों को यूनानी दार्शनिकों की भाँति मोटी तहों (पतों) की तरह ठहराता है और न कुछ मूर्खों के अनुसार निरा पोल जिस में कुछ भी नहीं। अतः प्रथम खंड की तार्किक तौर पर गलती स्पष्ट है, जिसके बारे में हम अभी वर्णन कर चुके हैं। और द्वितीय खंड अर्थात् यह कि आकाश कुछ भी भौतिक अस्तित्व नहीं रखता, निरा पोल है। इस्तिक्रा* की दृष्टि से सर्वथा गलत सिद्ध होता है।

*कुछ बातों को देखकर कोई निष्कर्ष निकालना (अनुवादक)

भी विपदा है कि खुदा तआला की रूहानी (आध्यात्मिक) व्यवस्था का न्याय और रहम (दया) जाता रहा तथा काफ़िरों और समस्त विरोधियों को **इस्लाम पर यह आरोप लगाने का अवसर मिला** कि यह कैसी अनुदारता और दया के विपरीत बात है कि खुदा तआला शैतान और उसकी सन्तान को मनुष्य के अपहरण के लिए हमेशा और हर पल के लिए उसका साथी और मित्र नियुक्त करे ताकि वे

शेष हाशिया - ही होते हैं। इसी रहस्य को प्रथम पवित्र कुर्आन ने प्रकट किया, फिर आरिफ़ों (अध्यात्म ज्ञानियों) का इस ओर ध्यान पैदा हुआ। अतः इस आयत से भी पुस्तकीय तौर पर यही सिद्ध हुआ कि फ़रिश्ते नक्षत्रों तथा आकाशीय शक्तियों के लिए प्राण की भांति हैं। इसी कारण खुदा तआला ने पवित्र कुर्आन में कभी नक्षत्रों का कार्य फ़रिश्तों से सम्बद्ध किया है। और कभी फ़रिश्तों का काम नक्षत्रों की ओर सम्बद्ध कर दिया है। बात यह है कि जब पवित्र कुर्आन की शिक्षा की दृष्टि से फ़रिश्ते नक्षत्रों, सूर्य, चन्द्रमा तथा आकाश के लिए प्राण के समान हैं और इन समस्त वस्तुओं की स्थापना और अनश्वरता (बक्रा) फ़रिश्तों के संबंध पर निर्भर है और उनके इर्जाअ की ओर खिसक जाने से समस्त ग्रहों नक्षत्रों, सूर्य, चन्द्रमा ओर आकाश को मौत की स्थिति हो जाती है तो फिर इस स्थिति में वे प्राण की भांति हुए या कुछ और हुए। मैं इन मौलवियों की हालत पर बहुत ही अफ़सोस करता हूँ कि जो इन समस्त खुले-खुले कुर्आन के स्थानों को देखकर फिर भी इस बात को

शेष हाशिए का हाशिया - क्योंकि यदि हम उस अन्तरिक्ष के बारे में जो हमें चमकते सितारों तक दिखाई देता है अपने इस्तिक्रा संबंधी अनुभवों के द्वारा छान-बीन करना चाहें तो स्पष्ट सिद्ध होता है कि खुदा की सुन्नत (नियम) या प्रकृति का नियम यही है कि खुदा तआला ने किसी अन्तरिक्ष को खाली नहीं छोड़ा। अतः जो व्यक्ति गुब्बारे में बैठकर वायु की तहों को चीरता हुआ चला जाता है वह गवाही दे सकता है कि जितना वह ऊपर चढ़ा उसने अन्तरिक्ष के किसी भाग को खाली नहीं पाया।

अतः यह इस्तिक्रा हमें इस बात को समझने के लिए बहुत सहायता दे सकता है। यद्यपि यूनानियों की तरह आकाशों की सीमा निर्धारित करना अवैध है परन्तु यह भी तो सही नहीं है कि आकाशों से अभिप्राय केवल एक खाली अन्तरिक्ष और पोल (खोखला) है जिसमें कोई पैदा किया हुआ माद्दः (तत्त्व) नहीं। हम, जहां तक हमारे देखे अनुभव पहुंच रखते हैं कोई अकेला पोल नहीं देखते फिर अपने स्थायी इस्तिक्रा के विरुद्ध कैसे मान सकते हैं कि भरे हुए अन्तरिक्ष से आगे चलकर ऐसे अन्तरिक्ष भी हैं जो बिल्कुल खाली हैं। क्या प्रमाणित इस्तिक्रा के विरुद्ध इस

उस के ईमान को जड़ से उखाड़ने (उन्मूलन) की चिन्ता में रहें और हर समय उसके खून और उसके दिल-व-मस्तिष्क तथा रोम-रोम में और आंखों एवं कानों में घुस कर भिन्न-भिन्न प्रकार के भ्रम डालते रहें। और **मार्ग-दर्शन करने का ऐसा साथी जो प्रतिफल मनुष्य के साथ रह सके मनुष्य को एक भी न दिया जाए।** यह आरोप वास्तव में उन की उपरोक्त तथा कथित आस्था से उत्पन्न

शेष हाशिया - स्वीकार करने से संकोच करते हैं कि फ़रिश्तों को जो अजराम- (ए) समावी बल्कि कुछ फ़रिश्तों को जो उन्सुरियून हैं जिनका पंचभूतों और आकाशीय ग्रहों से ऐसा घनिष्ठ संबंध है जैसा कि रूहों को शरीरों के साथ होता है। यह तो सच है कि पवित्र कुर्आन से भी सिद्ध होता है कि फ़रिश्ते आकाश पर एक स्थायी अस्तित्व रखते हैं, परन्तु क्या यह दूसरी बात भी उसी पवित्र किताब के अनुसार सच्ची सिद्ध नहीं होती कि फ़रिश्तों का संबंध प्रत्येक आकाशीय ग्रह से एक सुरक्षात्मक संबंध है और प्रत्येक नक्षत्र अपने जीवित रहने (अनश्वरता) तथा स्थायित्व और कार्यों को जारी करने में फ़रिश्तों की सहायता का मुहताज है। अफसोस कि ये लोग जो स्वयं को **मौलवी** कहलाते हैं यों तो मुसलमानों को **काफ़िर बनाने** के लिए बड़े सरगर्म हैं परन्तु पवित्र कुर्आन की मुबारक शिक्षाओं को ध्यानपूर्वक तथा गहरी नज़र से नहीं देखते, फिर सच के समझने में कैसे सफल हों? वे पवित्र कुर्आन का तनिक भी सम्मान नहीं करते और **نعوذ بالله** 'हम खुदा से शरण चाहते हैं'

शेष हाशिए का हाशिया - भ्रम का कुछ भी सबूत है? लेशमात्र भी नहीं, फिर एक निराधार भ्रम को कैसे स्वीकार किया जाए और मान लिया जाए। हम कैसे एक ठोस सबूत को बिना किसी विरोधात्मक और ठोस सबूत के छोड़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त महा वैभवशाली खुदा का अपमान भी है मानो वह सामान्य और पूर्ण सृष्टि करने से असमर्थ था, तभी तो थोड़ा सा बनाकर शेष असीमित अन्तरिक्ष छोड़ दिया। और मैं नहीं समझ सकता कि इस इस्तिक्रा ठोस सबूत के इन्कार में कि कोई अन्तरिक्ष किसी सूक्ष्म जौहर से रिक्त नहीं, कौन सा निश्चित और ठोस तर्क ऐसे लोगों के हाथ में है जो मुजर्रद पौल (आकाश को पूर्णतः खाली) मानते हैं या मानते हों। यदि कोई व्यक्ति ऐसा ही विश्वास और राय रखता है कि कुछ भौतिक ग्रहों के बाद सब आकाश खाली ही पड़ा है जो असीमित है तो वह हमारे इस इस्तिक्रा के तर्क से साफ और स्पष्ट तौर पर दोषी ठहर जाता है। स्पष्ट है कि इस्तिक्रा वह प्रमाण और तर्क है कि अधिकतर संसार के सबूतों को उसी से सहायता प्राप्त हुई है। उदाहरणतया हमारा यह कथन कि मनुष्य की दो आंखें होती हैं और एक जीभ, दो कान और वह स्त्रियों की योनि से जन्म लेता है। और पहले बच्चा,

होता है क्योंकि एक ओर तो ये लोग आयत -

(अस्साफ़ात - 165)  وَمَا مِمَّا آتَا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ

के अनुसार यह आस्था रखते हैं कि हज़रत जिब्राईल और इज़्राईल अर्थात् मौत के फ़रिश्ते का स्थान आकाश पर निर्धारित है, जिस स्थान से वह न एक बालिशत नीचे उतर सकते हैं न एक बालिशत ऊपर चढ़ सकते हैं और फिर इसके

शेष हाशिया - एक मोटे विचारों का संग्रह समझते हैं तथा पवित्र कुर्आन की उच्चतम शक्तियों और हिक्मतों तथा उसके बारीक रहस्यों से अनजान हैं।

यह तो हम ने पुस्तकीय तौर पर सबूत दिया किन्तु बौद्धिक तौर पर इस बात का सबूत कि भौतिक संसार में जो कुछ अच्छी बात हो रही है उन समस्त बातों का प्रकटन और जारी होना वास्तव में फ़रिश्तों के गोपनीय कार्यों से है, इन बातों पर विचार करने से पैदा होता है कि अल्लाह तआला प्रत्येक चीज़ से वह काम लेता है जिस काम के करने की उस चीज़ को शक्तियां प्रदान की गई हैं। फिर यह सोचना कि आकाशीय ग्रहों तथा अन्तरिक्ष की दुनिया का प्रत्येक परिवर्तन केवल स्वाभाविक बाह्य कारणों से प्रकटन में आता है और किसी रूहानी कारण की आवश्यकता नहीं बिल्कुल अनुचित है। क्योंकि यदि ऐसा ही होता कि ये आकाशीय ग्रहों के परिवर्तन और दुनिया की घटनाएं जो बड़े-बड़े हितों पर आधारित और लोगों के जीवन के बचाए रखने (बक्रा), स्वास्थ्य और रहन-सहन संबंधी आवश्यकताओं की इस शर्त

शेष हाशिए का हाशिया - फिर युवा और फिर वृद्ध होता है और अन्ततः कुछ आयु पाकर मर जाता है। ऐसा ही हमारा यह कथन कि मनुष्य सोता भी है और खाता भी और आंखों से देखता और नाक से सूंघता तथा कानों के द्वारा सुनता, पैरों से चलता, हाथों से काम करता और दो कानों के बीच में उसका सिर है और ऐसी ही अन्य सैकड़ों बातें तथा हर प्रकार की वनस्पतियों, स्थूल पदार्थों और प्राणियों के बारे में हमने जो भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण ज्ञात किए हैं उन सब का माध्यम इस्तिक्रा के अतिरिक्त और क्या है। फिर यदि इस्तिक्रा में किसी को आपत्ति हो तो ये समस्त विद्याएं अस्त व्यस्त हो जाएंगी और यदि उनके दिलों में यह दुविधा पैदा हो कि आकाशों का यदि कुछ अस्तित्व है तो क्यों दिखाई नहीं देता। तो इसका उत्तर यह है कि हर चीज़ का दिखाई देना शर्त नहीं। जो अस्तित्व अत्यन्त सूक्ष्म और फैलाव (अमिश्रित स्थिति) में पड़ा है वह कैसे दिखाई दे और कोई सूक्ष्मदर्शी यंत्र उसे कैसे खोज सके। निष्कर्ष यह कि आकाशीय पिण्डों को खुदा तआला ने बहुत सूक्ष्म ठहराया है। इसी के स्पष्टीकरण में यह आयत संकेत कर रही है कि :

बावजूद उनका पृथ्वी पर अपने असली अस्तित्व के साथ आना भी आवश्यक समझते हैं और ऐसा ही फिर आकाश पर उनका जाना भी अपने विचार में निश्चित विश्वास रखते हैं। यदि कोई असली अस्तित्व के साथ उतरने या चढ़ने से इन्कार करे तो वह उनके नज़दीक काफ़िर है। इन विचित्र मुसलमानों की आस्था को यह विपदा अनिवार्य रूप से लगी हुई है कि वह **संतुलित व्यवस्था** जिसका हम

शेष हाशिया - के साथ सहायक एवं सहयोगी हैं कि इनमें न्यूनधिकता (कमी-बेशी) न पाई जाए। यदि ये स्वयंभू होते और बीच में ऐसी विवेकशील चीज़ों का क्रदम न होता जो इरादा, समझ, हित और संतुलन का ध्यान रख सकती हैं और हमारा बक्रा और रहन-सहन की आवश्यकताओं का साफ़ समस्त कारोबार जीवन, ऐसी चीज़ों पर छोड़ा जाता जो न विवेक रखती हैं न समझ और न **समय की आवश्यकता** को पहचान सकते हैं और न अपने कार्यों को न्यूनाधिकता से सुरक्षित रख सकते हैं और न नेक इन्सान तथा बुरे इन्सान में अन्तर करके प्रत्येक के साथ उसकी स्थिति के अनुसार मामला कर सकते हैं तो संसार में अंधेर पड़ जाता और दूरदर्शी, सामर्थ्यवान, न्यायवान, दयालु और कृपालु रचयिता का कुछ पता न लगता, अपितु जीवधारियों के जीवन का यह सिलसिला जो पृथ्वी पर रहते हैं एक पल भी न चल सकता और संसार अपने समस्त आवश्यक सामानों सहित अपने अंत को देख लेता। अतः इस से अधिक स्पष्ट और साफ़ तथा व्यापक और क्या प्रमाण होगा कि इस आकाशीय एवं वायुमंडल

शेष हाशिए का हाशिया -

(यासीन-36/41) **كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ**

अर्थात् प्रत्येक सितारा अपने-अपने आकाश में जो उस की परिक्रमा की सीमा है तैर रहा है। और खुदा तआला ने वास्तव में यूनानियों के सीमा निर्धारक की भांति अपने अर्श को नहीं ठहराया और न उसे सीमित ठहराया। हां उसे उच्च से उच्च एक मंजिल (तल) ठहराया है जिससे उसकी गुणवत्ता और मात्रा की दृष्टि से अन्य कोई उच्च मंजिल नहीं है। यह बात एक सृष्टि (मख्लूक) और मौजूद के लिए निषिद्ध एवं दुर्लभ नहीं हो सकती बल्कि यह अनुमान के बहुत निकट है कि जो मंजिल अल्लाह का अर्श कहलाती है वह अपनी विशालताओं में असीमित खुदा के यथायोग्य और असीमित हो।

और यदि यह आरोप प्रस्तुत हो कि पवित्र कुर्आन में यह भी लिखा है कि किसी समय आकाश फट जाएंगे और उनमें छेद हो जाएंगे। यदि वह सूक्ष्म माद्दः (तत्व) है तो फिर उसके फटने के क्या मायने हैं तो इसका उत्तर यह है कि पवित्र कुर्आन में प्रायः **سَّمَاء** (आकाश) से

अभी उल्लेख कर चुके हैं अर्थात् बुरे साथी के मुकाबले पर नेक साथी का स्थायी तौर पर मनुष्य के साथ रहना ऐसे विश्वास से बिल्कुल अस्त-व्यस्त हो जाती है और केवल शैतान ही मनुष्य का स्थायी साथी रह जाता है। क्योंकि यदि फ़रिश्ता रूहुल कुदुस किसी पर मुसाफिर की भांति उतरे भी तो उन की आस्थानुसार एक पल या किसी अन्य बहुत थोड़े समय के लिए आया और फिर अपने वास्तविक

शेष हाशिया - के सिलसिले में वह गड़बड़ी और अंधेर दिखाई नहीं देता जो उस स्थिति में होता जब कि इस व्यवस्था का सम्पूर्ण आधार निर्जीव और विवेकहीन चीजों पर होता। फिर हमें इस प्रमाण का प्रकाश फ़रिश्तों के अस्तित्व और उनकी आवश्यकता को स्वीकार करने के लिए ऐसी प्रतिभा प्रदान करता है कि जैसे हम अपनी आंखों से फ़रिश्तों के अस्तित्व को देख रहे हैं। और यदि कोई यहां यह सन्देह प्रस्तुत करे कि यही बात क्यों उचित नहीं कि फ़रिश्ते बीच में न हों और प्रत्येक चीज़ खुदा तआला के आदेश और आज्ञा एवं सुदृढ़ उपाय से वही सेवा करे जो अल्लाह तआला की इच्छा है। तो ऐसा सन्देह वास्तव में बोधभ्रम के कारण पैदा होगा क्यों कि हम अभी इस से पहले लिख चुके हैं कि यह बात एक प्रमाणित सच्चाई है कि आकाशीय ग्रह और तत्त्व तथा वायुमंडल जो हमारी बक्रा जीवन और रहन सहन के सेवक ठहराए गए हैं ज्ञान, विवेक और इरादा नहीं रखते। फिर केवल उन्हीं परिवर्तनों एवं घटनाओं से वे कार्य और वे आवश्यकताएं वे उद्देश्य हमारे लिए प्राप्त हो जाना जो केवल बुद्धि के अनुसार महत्व,

शेष हाशिए का हाशिया - अभिप्राय **كُلِّ مَا فِي السَّمَاءِ** (प्रत्येक वस्तु जो आकाश में है) को लिया है। जिसमें सूर्य और चन्द्रमा और समस्त सितारे सम्मिलित हैं इसके अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह सूक्ष्म हो या मोटा फटने योग्य है बल्कि सूक्ष्म तो फटने को बहुत अधिक स्वीकार करता है। फिर क्या आश्चर्य कि आकाशों के तत्त्व में सामर्थ्यवान, युक्तिवान रब्ब के आदेश से एक प्रकार का फटना पैदा हो जाए **وذلك على الله يسير** (और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है) अन्ततः यह बात भी याद रखने के योग्य है कि पवित्र कुर्आन के प्रत्येक शब्द को वास्तविकता पर चरितार्थ करना भी बड़ी ग़लती है। महावैभवशाली खुदा का यह पवित्र कलाम उच्च श्रेणी की सरसता के कारण उत्तम रूपकों से भरा हुआ है। फिर हमें इस चिन्ता में पड़ना कि आकाशों का फटना और विस्फोट होना क्योंकर होगा। वास्तव में इन शब्दों के व्यापक अर्थ में एक अनुचित हस्तक्षेप है। केवल यह कह सकते हैं कि ये समस्त शब्द तथा इस प्रकार के और भी भौतिक संसार के नष्ट होने की ओर संकेत है। खुदा के कलाम का उद्देश्य यह है कि इस संसार के बाद उसका मिटना भी अनिवार्य है। वह सब कुछ जो

देश आकाश की ओर उड़ गया तथा मनुष्य को यद्यपि वह कैसा ही नेक हो शैतान की संगत में छोड़ गया। क्या यह ऐसी आस्था नहीं जिस से **इस्लाम को बड़ा धब्बा लगे**। क्या कृपालु तथा दयालु (खुदा) के बारे में यह कहना वैध है कि वह मनुष्य के लिए उसके हिदायत पाने की अपेक्षा विनाश चाहता है। नरुजुबिल्लाह कदापि नहीं **अंधा व्यक्ति** पवित्र कुर्आन की शिक्षा को समझता

शेष हाशिया - संतुलन, उपाय और उचित और बुद्धिसंगत बात सोचने से जारी हो सकते हैं स्पष्ट तौर पर निषिद्ध है खुदा तआला जिस चीज़ से कोई काम लेना चाहता है प्रथम उस काम के संबंध में जितने हित हैं उन समस्त हितों के अनुसार उस चीज़ में शक्तियां रख देता है। उदाहरणतया खुदा तआला का एक कार्य वर्षा है जिसके नाना प्रकार के उद्देश्यों के लिए हमें आवश्यकता है और खुदा तआला अपने बन्दों के कर्मों के अनुसार कभी उस वर्षा को यथा समयों पर उतारता है और हमारे खेतों को तथा हमारे स्वास्थ्यों को न्यूनाधिकता की हानियों से बचा लेता है और कभी संसार पर कोई चेतावनी उतारना चाहता है तो वर्षा को जिस देश से चाहे रोक लेता है या उसमें न्यूनाधिकता रख देता है। कभी एक देश या एक शहर या एक गांव या भूमि के एक भाग को कुल लोगों को दण्ड देने के लिए उस वर्षा के लाभ से पूर्णतया वंचित कर देता है और जितना चाहता है केवल उतना ही बादल को आकाश के वातावरण में फैलाता है, यहां तक कि एक खेत में वर्षा होती और एक अन्य खेत जो उसी के साथ जुड़ा हुआ है

शेष हाशिए का हाशिया - बनाया गया तोड़ा जाएगा और हर एक तरकीब टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी और हर एक शरीर बिखर और कण-कण हो जाएगा और हर एक शरीर और शारीरिक वस्तु नष्ट हो जाएगी और पवित्र कुर्आन के बहुत से स्थानों से सिद्ध होता है कि फटने और विस्फोट होने के शब्द जो आकाशों के बारे में आए हैं उन से ऐसे अर्थ अभिप्राय नहीं हैं जो किसी ठोस और घने शरीर के बारे में समझे जाते हैं। जैसा कि एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَالسَّمُوتُ مَطْوِيَّتٌ بِيَمِينِهِ (अज़्जुमुर-39/68)

अर्थात् संसार को फ़ना (नष्ट) करने के समय खुदा तआला आकाशों को अपने दाएं हाथ से लपेट लेगा। अब देखो कि आकाशों के फटने से वास्तव में फाड़ना अभिप्राय लिया जाए तो **مَطْوِيَّت** का शब्द उसके विपरीत और विरुद्ध पड़ेगा, क्योंकि इसमें फाड़ने का कहीं वर्णन नहीं केवल लपेटने का वर्णन है। फिर एक अन्य आयत है जो सूरह अलअंबिया अध्याय 17 में है, और वह यह है-

नहीं इसलिए अपनी मूर्खता का आरोप उस पर लगा देता है। ये समस्त विपत्तियां जिनसे निकलना उन उलेमा के लिए किसी प्रकार से संभव नहीं, इसी कारण उन पर आ गई कि उन्होंने यह समझा कि फ़रिश्ते अपने असल अस्तित्व के साथ पृथ्वी पर उतरते हैं। और फिर यह भी आवश्यक आस्था थी कि वे अविलम्ब आकाश पर चढ़ भी जाते हैं। इन दोनों ग़लत आस्थाओं की दृष्टि से ये लोग इस

शेष हाशिया - उस वर्षा की एक बूंद भी प्राप्त नहीं होती तथा खुश्क और धूप में सड़ा हुआ रह जाता है। इसी प्रकार कभी एक हवा का बिगड़ना एक शहर या एक देश या एक मुहल्ले को भयंकर महामारी में डालता है और दूसरी ओर को पूर्ण रूप से बचा लेता है। इसी प्रकार हम हज़ारों बारीक से बारीक दूरदर्शिताएं देखते हैं जिनको हम विवेकहीन तत्त्वों एवं ग्रहों की ओर हरगिज़ सम्बद्ध नहीं कर सकते। हम निस्सन्देह जानते हैं कि ऐसी दूरदर्शिताओं से भरे हुए कार्य केवल निर्जीव और निर्विवेक तथा बिना प्रयत्न ग्रहों, तत्त्वों तथा दूसरे अन्तरिक्ष जगत से हरगिज़ नहीं हो सकते निस्सन्देह ख़ुदा तआला इस बात पर तो समर्थ था कि उन चीज़ों से ये सब काम ले लेता, किन्तु यदि वह ऐसा करता तो प्रथम इन चीज़ों को समझ, प्रतिभा, विवेक और चीज़ों को यथा स्थान रखने की बुद्धि प्रदान करता। और जब यह सिद्ध नहीं तो फिर आवश्यक तौर पर यह सिद्ध है कि उनके साथ पर्दे के पीछे अन्य चीज़ें हैं जिनको यथास्थान रखने की बुद्धि दी गई है और वही फ़रिश्ते हैं। मैं जानता हूँ कि कोई ऐसा व्यक्ति जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर ईमान

शेष हाशिए का हाशिया -

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۚ
وَعَدًّا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٠٥﴾
(अलअंबिया-21/105)

अर्थात् हम उस दिन आकाशों को ऐसा लपेट लेंगे जैसे एक पत्र विभिन्न विषयों को अपने अन्दर लपेट लेता है और जिस पद्धति से हम ने इस संसार को अस्तित्व (आस्ति) की ओर हरकत दी थी उन्हीं क्रदमों पर पुनः यह नास्ति संसार की ओर लौटाया जाएगा। यह वादा हमारे ज़िम्मे है जिसे हम करने वाले हैं। बुख़ारी ने भी इस स्थान पर एक हदीस लिखी है जिसमें ध्यान योग्य ये शब्द हैं وَتَكُونُ السَّمُوتُ بِيَمِينِهِ अर्थात् लपेटने के ये अर्थ है कि ख़ुदा तआला आकाशों को अपने दाएं हाथ में छुपा लेगा। और जैसा कि अब भौतिक कारण और कारण पैदा करने वाला छुपा हुआ है। इस समय कारण पैदा करने वाला प्रकट और कारण अनस्तित्व (नास्ति) के कोने में छुप जाएंगे और हर एक चीज़ उसकी ओर लौट कर प्रकोपी चमकारों में छुप जाएगी तथा प्रत्येक चीज़ अपने स्थान और केन्द्र को छोड़ देगी

शिकंजे में आ गए कि अपने लिए यह तीसरी आस्था भी बना ली कि बुरे साथी के मुकाबले पर कोई ऐसा अच्छा साथी मनुष्य को नहीं दिया गया जो हर समय उसके साथ ही रहे। अतः इस आस्था के बनाने से कुर्आन की शिक्षा पर उन्होंने बहुत बड़ा लांछन लगाया और अशुभचिन्तक विरोधियों को प्रहार करने का अवसर दे दिया। यदि ये लोग इस बात को स्वीकार कर लेते कि कोई फ़रिश्ता

शेष हाशिया - लाता है और उसे दयालु, कृपालु, दूरदर्शी और न्यायवान समझता है वह ऐसा विचार समझता है वह ऐसा विचार हरगिज़ नहीं करेगा जो उस हकीम और कृपालु ने अपनी प्रतिपालन की व्यवस्था का समस्त कारखाना ऐसी चीज़ों के हाथों में दे दिया है जिन्हें अच्छे और बुरे को पहचान नहीं दी गई तथा उपायों, संतुलन करने तथा हित को पहचानने की शक्तियां प्रदान नहीं की गईं। हां एक भौतिक शास्त्री और नास्तिक जो खुदा तआला के अस्तित्व का ही इन्कारी है अवश्य ऐसा विचार करेगा। किन्तु वह साथ ही लापरवाही के कारण यह भी कहेगा कि आकाशीय ग्रहों या तत्त्वों और अंतरिक्ष जगत से प्रकट हो रहा है वह दूरदर्शिता और हित के अनुकूल नहीं है और न स्वयं मौजूद है ताकि उस की दूरदर्शिता और हित से काम करने वाला मान लिया जाए बल्कि संयोग से आकाशीय ग्रह और पार्थिव पदार्थों की घटनाओं तथा परिवर्तनों से मनुष्यों के लिए कभी अच्छाई कभी बुराई सामने आ जाती है तो उसको स्वीकार कराने के लिए अलग उपाय है जो बहुत साफ और शीघ्र उसका मुंह बन्द करने वाला है, और वह यह है

शेष हाशिए का हाशिया - और खुदा की (तजल्लियात) चमकें उसका स्थान लेंगी और दोषपूर्ण कारणों के विनाश और मिट जाने के बाद सर्वांगपूर्ण कारण का चेहरा प्रकट हो जाएगा। इसी की ओर संकेत है-

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ - وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَلِ وَالْإِكْرَامِ (अर्रहमान-55/27,28)
لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ (अलमोमिन-40/17)

अर्थात् खुदा तआला अपनी प्रकोपी चमक से प्रत्येक चीज़ को मिटा कर अपनी वाहदानियत (ऐकेश्वरवाद) और अद्वितीय होना दिखलाएगा, और खुदा तआला के वादों से अभिप्राय यह बात नहीं कि संयोग से कोई बात मुंह से निकल गई और फिर बहर हाल गले पड़ा ढोल बजाना पड़ा। क्योंकि इस प्रकार के वादे दूरदर्शी और सर्वज्ञा खुदा की शान को योग्य नहीं यह केवल कमजोर बुनियाद इन्सान की विषष्टता है जिसका कोई वादा आडम्बर, कमजोरी या मजबूरी और लाचारी की बाधाओं से हमेशा सुरक्षित नहीं रह सकता। इनके अतिरिक्त आकास्मिक अवसरों पर आधारित होता है न कि ज्ञान, विश्वास और अनश्वर दूरदर्शिता पर। किन्तु खुदा तआला के

स्वयं हरगिज़ नहीं उतरता अपितु ऐसे ज़िल्ली (प्रतिबिम्बित) अस्तित्व से उतरता है जिस के साक्षात् होने की उसको शक्ति दी गई है। जैसा कि 'दहिया कल्बी' के रूप में हज़रत जिब्राईल साक्षात् हो कर प्रकट होते थे और जैसा कि हज़रत मरयम के लिए फ़रिश्ता साक्षात् हुआ तो कोई आरोप पैदा न होता तथा **स्थायी अच्छे साथी** पर कोई व्यक्ति जिरह न कर सकता। और आश्चर्य तो यह है कि

शेष हाशिया - कि ख़ुदा तआला के शक्तिशाली कार्य और भविष्यवाणियां जो अपने अन्दर ख़ुदाई शक्ति रखती हैं जो मुल्हमों तथा ख़ुदा तआला से मिलने वालों को दी जाती हैं। ख़ुदा तआला के अस्तित्व (हस्ती) और उसकी सर्वांगपूर्ण सुन्दर तथा महान विशेषताओं पर सुदृढ़, अटल और निश्चित निर्देशन रखते हैं परन्तु अफ़सोस कि संसार में सच्चे हृदय से ख़ुदा तआला को चाहने वाले और उसकी मारिफ़त (पहचान) के भूखे और प्यासे बहुत कम हैं और प्रायः ऐसे लोगों से संसार भरा पड़ा है जो बुलाने वाले की आवाज़ नहीं सुनते और बुलाने वाले की ओर ध्यान नहीं देते और जगाने वाले के शोर से आंख नहीं खोलते। हमने इस बात की पुष्टि कराने के लिए ख़ुदा तआला से फ़ज़ल, सामर्थ्य और आज्ञा पाकर हर एक विरोधी को बुलाया, परन्तु कोई व्यक्ति दिल की सच्चाई और सच्ची चाह से हमारी ओर आकृष्ट नहीं हुआ और यदि कोई आकृष्ट होता या अब भी हो तो वह जीवित ख़ुदा जिसकी कुदरतें बुद्धिमानों को हमेशा हैरान करती रही हैं। वह शक्तिशाली, क़ायम रहने वाला जो अनादि काल से इस संसार के दार्शनिकों

शेष हाशिए का हाशिया - वादे उसकी उसकी अनश्वर विशेषताओं की मांग के अनुसार जारी होते हैं और उसक के वादे उसकी अनंत दूरदर्शिता की शाखाओं में से एक शाखा है।

यदि यहां कोई यह आरोप प्रस्तुत करे कि ख़ुदा तआला ने आकाशों को सात में क्यों सीमित किया, इसका क्या कारण है। तो इसका उत्तर यह है कि वास्तव में यह विभिन्न प्रभावों की ओर संकेत है जो विभिन्न आकाशीय तहों से विभिन्न तारे अपने अन्दर आकर्षित करते हैं और फिर पृथ्वी पर उन प्रभावों को डालते हैं। अतः इसी का स्पष्टीकरण इस आयत में मौजूद है-

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ يَنْزِلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا

أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٣﴾ (अत्तलक-13)

अर्थात् ख़ुदा तआला ने आकाशों को सात पैदा किया और ऐसा ही पृथ्वी भी सात ही पैदा की। और उन सात आकाशों का प्रभाव जो ख़ुदा के आदेश से उनमें पैदा है सात ज़मीनों में डाला ताकि तुम लोग ज्ञात कर लो कि ख़ुदा तआला हर एक चीज़ के बनाने पर

ऐसा विचार करने में ये लोग पवित्र कुर्आन तथा सही हदीसों के सर्वथा विरोधी हैं। पवित्र कुर्आन एक ओर तो फरिश्तों के ठहरने का स्थान आकाश बता रहा है तथा एक ओर ये भी बड़े जोर के साथ वर्णन कर रहा है कि पूर्ण मोमिनों को रूहुल कुदुस सहायता के लिए स्थायी तौर पर प्रदान किया जाता है और उन से अलग नहीं होता। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वाभाविक प्रकाश के कारण

शेष हाशिया - को शर्मिन्दा और अपमानित करता रहा है। निस्सन्देह आकाशीय चमक से उस पर समझने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करेगा। संसार में बड़ी खराबी जो बुरे कार्यों का कारण हो रही है और आखिरत (परलोक) की ओर सिर उठाने नहीं देती वास्तव में यही है कि अधिकतर लोगों को खुदा तआला पर यथायोग्य ईमान नहीं। कुछ तो इस युग में स्पष्ट तौर पर खुदा तआला की हस्ती के ही इन्कारी हैं और कुछ यद्यपि मुंह से कहते हैं परन्तु उनके कार्य और विचार, हाथ तथा पैर गवाही दे रहे हैं कि महा वैभवशाली खुदा पर ईमान नहीं रखते और दिन-रात संसार की चिन्ताओं में ऐसे व्यस्त हैं कि मरना भी याद नहीं। इसका भी यही कारण है कि अधिकांश दिलों पर अंधकार छा गया है और दिल में मारिफत के प्रकाश का एक कण भी शेष नहीं रहा।

अब स्पष्ट हो कि हम फरिश्तों के अस्तित्व की आवश्यकता का पूर्णतया सबूत दे चुके जिसका सारांश यह है कि खुदा तआला जो अपनी शुद्धता एवं पवित्रता में प्रत्येक से श्रेष्ठतम और महानतम है अपनी दलीलों और चमकारों में अनुकूल युक्तियों से काम लेता है

शेष हाशिह का हाशिया - और हर एक व्यवस्था के करने पर और भिन्न-भिन्न पद्धतियों में अपने कार्य दिखलाने पर पूर्ण कुदरत रखता है। ताकि तुम्हारी विद्याएं विशाल हो जाएं और विद्याओं तथा कलाओं में तुम उन्नति करो और खगोल, प्राकृतिक, चिकित्सा शास्त्र और भूगोल इत्यादि विद्याएं तुम में पैदा होकर तुम्हें खुदा तआला की प्रतिष्ठाओं की ओर ध्यान दिलाएं और तुम समझ लो कि खुदा तआला का ज्ञान और उसकी पूर्ण हिकमत हर एक चीज़ पर छाई हुई है और कैसी उत्तम तरकीब और सुदृढ़ क्रम के साथ आकाश और जो कुछ उसमें है अपना रिश्ता पृथ्वी से रखता है और खुदा तआला ने पृथ्वी को कैसे धात्री (क्राबिल:) की शक्ति प्रदान कर रखी है और आकाशों तथा उनके ग्रहों को प्रभावकारी शक्ति प्रदान की है। और स्मरण रहे कि जिस प्रकार आदेश का उतरना शारीरिक और रूहानी (आध्यात्मिक) दोनों प्रकारों का आकाशों से होता है और फरिश्तों के ध्यान आकाशीय ग्रहों के प्रभावों के साथ मिल कर पृथ्वी पर गिरते हैं और ऐसा ही पृथ्वी और पृथ्वी वालों में भी भौतिक और आध्यात्मिक (रूहानी) काबिलियत दोनों शक्तियां प्रदान की गई हैं ताकि

रूहुल कुदुस की कुछ न कुछ चमक अपने अन्दर रखता है, परन्तु वह चमक जन साधारण में शैतानी अंधकार के नीचे आ जाती और है ऐसी दब जाती है कि मानो उसका कुछ भी अस्तित्व नहीं। याद रखना चाहिए कि गिरोह तीन हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ (फ़ातिर-33)

शेष हाशिया - और चूंकि शरीर और शारीरिक चीज़ें अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं और अपनी हस्ती की पूर्ण पाबंदियों से पाबंद होकर हस्ती और स्रष्टा के अस्तित्व के मुकाबले पर अपना नाम अस्तित्व और मौजूद रख कर और अपने इरादों या अपने स्वाभाविक कार्यों से विशेषता पाकर तथा एक स्थायी, अस्तित्व के होने और ग़ैर के अस्तित्व के निषेधक का संग्रहीता बनकर (उस) अस्तित्व से जो समस्त कारणों का कारण स्वच्छन्द दानशील अस्तित्व (हस्ती) से दूर जा पड़े हैं और उनके वजूद के इर्द गिर्द और अपनी हस्ती और अहं और सृष्टि होने (मख़्लूकियत) का एक बहुत ही मोटा पर्दा है। इसलिए वे इस योग्य नहीं रहीं कि उस एकमात्र हस्ती के वे वरदान उन पर सीधे तौर पर उतर सकें जो केवल इस स्थिति में उतर सकते हैं कि जब कि उपरोक्त कथित पर्दे मध्य में न हों और एक ऐसी हस्ती हो जो पूर्णतया अनास्तित्वता के समान हो, क्योंकि इन समस्त चीज़ों का अस्तित्व अनस्तित्वता के समान नहीं। हर एक चीज़ इस प्रकार की सृष्टियों में से अपने अस्तित्व की हालत का

शेष हाशिए का हाशिया - परिवार बनाने और प्रभावकारकों में पूर्णतया समानता हो।

और सात पृथ्वियों से अभिप्राय पृथ्वी की आबादी की सात परतें हैं जो संबंध के तौर पर कुछ, कुछ के नीचे हैं तथा कुछ अनुचित न होगा कि यदि हम दूसरे शब्दों में इन सात परतों को सात अक्लीम (सात महाद्वीपों) का नाम दे दें परन्तु पाठक इस धोखे में न पड़ें कि जो कुछ सात महाद्वीपों का विभाजन उन यूनानी विद्वानों के अनुसार हो चुका है जिसे इस्लाम के प्रारंभिक काल में इस्लाम के फ़िलास्फ़रों ने यूनानी पुस्तकों से लिया था वह पूर्णतया सही और पूर्ण है। क्योंकि इस स्थान पर विभाजन से अभिप्राय एक सही विभाजन है जिससे कोई आबादी बाहर न रहे और पृथ्वी का प्रत्येक भाग किसी भाग में सम्मिलित हो जाए। हमें इससे कुछ मतलब नहीं कि अब तक यह सही और पूर्ण विभाजन प्रकट भी हुआ है या नहीं अपितु केवल यह मतलब है कि अधिकतर मनुष्यों का जो विचार इस ओर चला गया है कि पृथ्वी का सात भागों में विभाजन किया जाए। यह विचार भी जैसे एक इल्हामी

अर्थात् एक वह गिरोह जिन पर शैतानी अंधकार हावी है और रूहुल कुदुस की चमक कम है। और दूसरा वह गिरोह है जो रूहुल कुदुस की चमक और शैतानी अंधकार उनमें समान हैं और तीसरा वह गिरोह है जिन पर रूहुल कुदुस की चमक हावी हो गई है और पूर्णतः भलाई बन गई हैं। रूहुल कुदुस के बारे में जो आयतें पवित्र कुर्आन में हैं जिन से ज्ञात होता है कि पूर्ण मोमिनों को सदैव

शेष हाशिया - बड़े जोर से इक्रार कर रही है। सूर्य कह रहा है कि मैं वह हूँ जिस पर समस्त गर्मी, सर्दी और प्रकाश का आधार है जो 365 रूपों में 365 प्रकार के प्रभाव संसार में डालता है और अपनी किरणों के मुकाबले से गर्मी और अपनी एक ओर को फिर जाने वाली किरणों से सर्दी पैदा करता है और शरीरों और शरीरों के मवाद और शरीरों के रूपों तथा ज्ञानेन्द्रियों पर अपना शासन रखता है। पृथ्वी कह रही है कि मैं वह हूँ जिस पर हजारों देश आबाद हैं और जो भिन्न-भिन्न प्रकार की वनस्पतियां पैदा करती और अपने अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार के जौहर तैयार करती तथा आकाशीय प्रभावों की औरत की भांति स्वीकार करती है। आग व्यवहारिक रूप से स्वयं कह रही है कि मैं एक जलाने वाली चीज़ हूँ और विशेष तौर पर मेरे अन्दर जलाने की शक्ति है और अंधकार में सूर्य की स्थानापन्न (कायम मुकाम) हूँ। इसी प्रकार पृथ्वी की प्रत्येक चीज़ की हालत स्वयं अपनी प्रशंसा कर रही है। उदाहरणतया सनाय (पत्ति) कहती है कि मैं दूसरी श्रेणी के अन्तिम भाग में गर्म और

शेष हाशिए का हाशिया - प्रेरणा थी जो खुदाई विभाजन के लिए बतौर गवाह है।

यदि यह आरोप प्रस्तुत हो कि पवित्र-कुर्आन में जो खुदा तआला ने कई बार फ़रमाया है कि हमने छः दिन में पृथ्वी और आकाश को पैदा किया तो यह बात कमजोरी का मार्गदर्शन करती है। क्योंकि उसके इरादे के साथ ही तुरन्त सब कुछ हो जाना अनिवार्य है। जैसाकि वह स्वयं ही फ़रमाता है-

(यासीन-36/83) **إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ**

अर्थात् जब खुदा तआला एक चीज़ के होने का इरादा करता है तो उसका आदेश अपने अन्दर ऐसी शक्ति, ताक़त और सामर्थ्य रखता है कि वह उस चीज़ को जो उसके ज्ञान में एक ज्ञान संबंधी अस्तित्व रखता है कि हो तो वह हो जाती है।

इस भ्रम का उत्तर यह है कि कुदरत और शक्ति का अर्थ इस बात को अनिवार्य नहीं कि वह चीज़ अकारण अविलम्ब हो जाए, और न इरादे के अर्थ में आवश्यक तौर पर यह बात सम्मिलित है कि जिस चीज़ का इरादा किया गया है वह उसी समय हो जाए अपितु

के लिए रूहुल कुदुस दिया जाता है। उन सब में से एक यह आयत है-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا

(अलअन्फाल-8/30)

وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ

(अलहदीद-57/29)

अर्थात् हे वे लोगों जो ईमान लाए हो अगर तुम अल्लाह का संयम धारण

शेष हाशिया - प्रथम श्रेणी में खुश्क हूं। और बलगम और सौदा तथा सफ्रा और जली हुई धातुओं की रेचक हूं और मस्तिष्क को साफ करने वाली हूं और मिर्गी, आधा सीसी का दर्द, पागलपन, पुराना सिर दर्द, पहलू का दर्द, दमा का रोग, आंतों की पीड़ा, गठियां, पट्ठों का अकड़ना, दाउस्सलब, दाउलहय्यः, खुजली, जर्ब, पुरानी बसूर, बलगामी और सफ्रावी मिश्रित जोड़ों का दर्द तथा उत्पन्न समस्त रोगों को लाभप्रद हों और रेवन्द (एक पौधे का नाम है जिसकी जड़ें जिगर के लिए लाभप्रद हैं) बोल रही है कि शक्तियों का मिश्रण हूं और दूसरी श्रेणी प्रथम स्तर में गर्म और खुश्क हूं शीघ्र घुलनशील होने के कारण ठण्डक पहुंचाने वाली भी हूं और बची हुई बेकार आर्द्रता अपने अन्दर रखती हूं, खुश्की करने वाली हूं, कब्ज करने वाली हूं, शुद्ध करने वाली हूं, फोड़े को पकाने वाली हूं और चिपचिपे मवाद को निकालने वाली हूं और ठण्डी लू की विषनाशक हूं विशेष तौर पर बिच्छू के लिए और गाढी तथा पतली (तरल) रस धातुओं की रेचक हूं तथा मासिक धर्म और मूत्र को लाने वाली हूं और

शेष हाशिए का हाशिया - उसी हालत में एक कुदरत और एक इरादे को पूर्ण कुदरत और पूर्ण इरादा कहा जाएगा जब कि वह एक कर्ता की मूल इच्छानुसार जल्द या देर के साथ जैसी कि इच्छा हो प्रकटन में आए। उदाहरणतया चलने में पूर्ण कुदरत (शक्ति) उस व्यक्ति की नहीं कह सकते कि वह जल्द-जल्द चल सकता है और धीरे-धीरे चलने से वह असमर्थ है बल्कि उस व्यक्ति को पूर्ण कुदरत वाला कहेंगे जो जल्द या देर दोनों प्रकार से कुदरत रखता हो या उदाहरणतया एक व्यक्ति हमेशा अपने हाथ को लम्बा रखता है और इकट्ठा करने की शक्ति नहीं। या खड़ा रहता है और बैठने की शक्ति नहीं तो इन समस्त परिस्थितियों में हम उसे ताकतवर नहीं ठहराएंगे बल्कि बीमार और रोगी कहेंगे। निष्कर्ष यह कि कुदरत उसी समय पूर्णरूप से निश्चित हो सकती है कि जब कि दोनों भाग जल्द और बतौर कुदरत हो यदि एक भाग काम करता हो और दूसरा भाग काम नहीं करता हो तो वह असमर्थता और कमजोरी है। आश्चर्य कि हमारे विरोधी खुदा तआला के क़ानून-ए-कुदरत को

करो और अल्लाह तआला से डरते रहो तो खुदा तआला तुम्हें वह चीज़ प्रदान करेगा (अर्थात् रूहुल कुदुस) जिसके साथ तुम ग़ैरों से पूर्ण विशिष्टता पैदा कर लोगे और तुम्हारे लिए एक प्रकाश नियुक्त कर देगा (अर्थात् रूहुल कुदुस) जो तुम्हारे साथ-साथ चलेगा। पवित्र कुर्आन में रूहुल कुदुस का नाम नूर (प्रकाश) है। फिर एक अन्य स्थान पर फ़रमाता है:-

शेष हाशिया - जिगर (यकृत) को शक्ति देती हूँ और उसके तथा तिल्ली एवं आंतों की गांठें खोलती हूँ और वात को घोलती हूँ और पुरानी खांसी के लिए लाभप्रद हूँ, और दमा और टी.बी और बुरी वात, और पेट में हवा भरना, हर प्रकार की प्यास और पीलिया और दस्त (ठीक करने वाली) दमा और टी.बी, कर्हरियः और (चिपचिपे मवाद को बाहर निकालने वाली), मासारीक्रा, ज़ूसन्तारिया, पेट फूलने और वात को घोलने, अमाशय ठंडी सृजन, बदहजमी, पेचिश, बवासीर, भगंदर, चौथिया ज्वर के लिए लाभदायक हूँ। जदवार (एक विषनाशक बूटी) कहती है कि मैं तीसरी श्रेणी के प्रथम चरण में गर्म और खुश्क हूँ और शरीर की भौतिक उष्मा से बहुत अनुकूलता रखती हूँ तथा मन में उमंग और अंगों में ताकत पैदा करने वाली, और शरीर के सर्वश्रेष्ठ अवयव दिल, मस्तिष्क एवं यकृत (जिगर) की शक्तिवर्धक हूँ और आमाशय और आंतों को सुदृढ़ करती हूँ और समस्त गर्म और ठण्डे ज़हरों की विषनाशक हूँ। इसी कारण से जर्नबाद और कस्तूरी, सोंठ का थोड़ा

शेष हाशिए का हाशिया - भी नहीं देखते कि संसार में अपने प्रारब्ध को जल्द भी उतारता है और देर से भी। हां यह भी सिद्ध होता है कि प्रकोपी विशेषताएं प्रायः जल्दी प्रकट होती हैं और रहमत देर रुक-रुक कर। उदाहरणतया मनुष्य नौ महीने पेट में रहकर अपने पूर्ण अस्तित्व को पहुंचता है और मरने के लिए कुछ भी देर की आवश्यकता नहीं। उदाहरणतया मनुष्य अपने मरने के समय केवल एक ही हैजे का दस्त या थोड़ा सा पानी उल्टी के तौर पर निकाल कर अनश्वर जगत की तरफ कूच कर जाता है। और वह शरीर जो वर्षों में बाह्य एवं आन्तरिक तौर पर पूर्ण हुआ था एक ही पल में उसे छोड़कर चला जाता है। अब मैंने इस आरोप के उत्तर में जितना लिखा है मेरी समझ से पर्याप्त है। इसलिए मैं इसी पर बस करता हूँ। किन्तु यह बात खोलकर स्मरण कराना आवश्यक है कि पूर्ण इरादा भी पूर्ण कुदरत की तरह जल्दी और देर दोनों भागों को चाहता है। उदाहरणतया हम जैसा यह इरादा कर सकते हैं कि अभी यह बात हो जाए ऐसा ही यह भी इरादा कर सकते हैं कि दस वर्ष के बाद हो। जैसे रेल, तार और सैंकड़ों मशीनें जो अब निकल रही हैं, निस्सन्देह प्रारंभ से

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ
أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣١﴾ نَحْنُ
أُولَئِكَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ (हाम्मीम अस्सज्दह - 41/ 31,32)

अर्थात् जो लोग कहते हैं कि हमारा रबब अल्लाह तआला है फिर अपनी मजबूती दिखाते हैं कि किसी संकट, आपदा, भूकम्प और परीक्षा से उनकी

शेष हाशिया - भाग अपने साथ मिलाकर गंधक तेजाब और अर्क बड़ी इलायची, अर्क पोदीना, अर्क सोंफ के साथ हैजे की महामारी के रोग के लिए खुदा की आज्ञा से बहुत लाभप्रद हूँ, दर्द निवारक और देखने की शक्ति के लिए शक्तिदायक हूँ। और तफ्तीते हसात, आंत्र-शूल, मूत्र अवरोधक और चौथिया ज्वर में लाभप्रद हूँ और साढ़े चार माशा के बराबर सांप और बिच्छू के काटे के लिए अत्यधिक लाभदायक हूँ यहां तक कि जराहर बिच्छू के विष को भी दूर करती हूँ और बेद-ए-मुश्क तथा नील कमल के जल के साथ दिल की कमजोरी को बहुत शीघ्र फायदा पहुंचाती हूँ और कम होती नब्ज (नाड़ी स्पन्दन) को थाम लेती हूँ और गुलाब के साथ जोड़ों के दर्द के लिए लाभप्रद हूँ और गुर्दे की पथरी और मूत्राशय के लिए लाभप्रद हूँ और यदि पेशाब बंद हो जाए तो खीरा और ककड़ी के बीजों के शीरे के साथ देने से उसे शीघ्र खोल देती हूँ और वात संबंधी आंत्र शूल के लिए लाभप्रद हूँ और यदि प्रसव में कठिनाई आ जाए तो मकोय या हल्ब: या गोखरू को शीरे के साथ

शेष हाशिए का हाशिया - खुदा तआला के इरादे और ज्ञान में थीं। परन्तु हजारों वर्ष तक उनका प्रकटन न हुआ। और वह इरादा तो प्रारंभ से ही था परन्तु गुप्त चला आया और अपने समय पर प्रकट हुआ और जब समय आया तो खुदा तआला ने एक क्रौम को इन चिन्तनों और विचारों में लगा दिया तथा उनकी सहायता की यहां तक कि वे अपने प्रयत्नों में सफल हो गए।

और इसी स्थान के संबंध में एक और आरोप है जो कुछ अज्ञानी आर्य प्रस्तुत किया करते हैं और वह यह है कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ
(यूनुस-10/4)

अर्थात् खुदा ने जो तुम्हारा रबब है पृथ्वी और आकाशों को छः दिन में बनाया और फिर अर्श पर ठहरा। यह छः दिन की विशिष्टता क्यों है। यह तो स्वीकार किया कि खुदा तआला के कार्य प्रायः धीरे-धीरे होते हैं, जैसे कि अब भी उसकी सृजन क्रिया जो स्थूल

निष्ठा में लेशमात्र भी अन्तर नहीं आता उन पर यह कहते हुए फ़रिश्ते उतरते हैं कि तनिक भय न करो और न ही शोकाकुल हो और उस स्वर्ग की कल्पना से प्रसन्नता और हर्षोल्लास में रहो जिसका तुम्हें वादा दिया गया है। हम तुम्हारे अधिष्ठाता (किसी जायदाद इत्यादि की देख-रेख करने वाला) और तुम्हारे पास हर समय उपस्थित हैं और निकट हैं क्या दुनिया में और क्या आखिरत (परलोक)

शेष हाशिया - केवल बारह रत्ती पिलाने से बच्चा पैदा करा देती हूँ और बच्चों के रोग और मानसिक एवं पट्ठों के अधिकतर रोगों में लाभप्रद हूँ और औराम मागाबिन अर्थात् कान के पीछे, बगल के नीचे, रान की जड़ गला बन्द हो जाने, कंठ माला रोग और कंठ की समस्त सूजनों को लाभ पहुंचाती हूँ और प्लेग के लिए लाभप्रद हूँ तथा सिके के साथ पलकों की सूजन को लाभ देती हूँ तथा दांतों पर मलने से उनके उस दर्द को दूर कर देती हूँ ठंडे माददे के कारण हो। और बवासीर पर मलने से उसके दर्द को रोक देती हूँ और आंख में लगाने से रमद वारिद को दूर कर देती हूँ अहलील (पेशाब की नली) में मलने से पेशाब बन्द में लाभप्रद हूँ और कस्तूरी इत्यादि अनुकूल औषधियों के साथ मिलाकर काम शक्ति के लिए अत्यन्त प्रभावकारी हूँ, मिर्गी, मूर्च्छा, फ़ालिज, लक्वा, अंगों का ढीला होना, रेशा, और खदर तथा इसी प्रकार के समस्त रोगों में लाभदायक हूँ। और पट्ठों और मस्तिष्क के लिए कीमिया हूँ और यदि मैं न मिलूँ तो अधिकतर बातों में जनर्बाद मेरा स्थानापन्न है।

शेष हाशिए का हाशिया - पदार्थों, वनस्पतियों और जानवरों में अपना कार्य कर रही है, धीरे-धीरे ही प्रत्येक चीज़ को उसके पूर्ण सृजन तक पहुंचाती है। किन्तु छः दिन की विशिष्टता कुछ समझ में नहीं आती।

उत्तर- अतः स्पष्ट हो कि यह छः दिन का वर्णन वास्तव में सृजनात्मक श्रेणियों की ओर संकेत है। अर्थात् प्रत्येक चीज़ जो पैदा हुई है और शरीर और शारीरिक है चाहे वह सम्पूर्ण संसार है और चाहे एक मनुष्य जो संसार के मनुष्यों में से एक मनुष्य और चाहे वह यह बाह्य संसार है जो ज़मीन व आसमान है और चाहे वह छोटा संसार है जिससे अभिप्राय इन्सान है वह खुदा तआला की कुदरत और दूरदर्शिता से पैदायश (उत्पत्ति) की छः श्रेणियां तय करके अपनी उत्पत्ति की पूर्णता को पहुंचता है। और यह सामान्य प्रकृति का नियम है कुछ प्रारंभिक काल से विशेष नहीं। अतः महा वैभवशाली खुदा प्रत्येक मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में भी इन्हीं छः श्रेणियों का वर्णन करता है। जैसा कि पवित्र कुर्आन के अठारवें सिपारे सूरह अलमोमिनून में यह आयत है-

में। फिर एक दूसरे स्थान में फ़रमाता है-

أَوْ مَنْ كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ
كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا^ط (अल अन्आम 6/123)
وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ^ط (फ़ातिर-35/23)

अर्थात् क्या वह व्यक्ति जो मुर्दा था और हमने उस को जीवित किया।

शेष हाशिया - निष्कर्ष यह कि ये समस्त वस्तुएं व्यावहारिक रूप से अपनी-अपनी प्रशंसा कर रही हैं और स्वयं में छुपी हुई हैं अर्थात् अपनी विशेषताओं के पर्दे में छुपी हुई हैं, इसलिए दानशीलता के उद्गम से दूर पड़ गई हैं और ऐसी वस्तुओं के माध्यम के बिना जो इन पर्दों से पवित्र हों उन से दानशीलता के उद्गम का कोई इरादा संबंध ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि पर्दा उस दानशीलता का बाधक है। इसलिए खुदा तआला की दूरदर्शिता ने चाहा कि उसकी इच्छा का प्रथम द्योतक बनने के लिए एक ऐसी सृष्टि (मख्लूक) हो, जो अपनी विशेषताओं के पर्दे में छुपी हुई न हों बल्कि उसकी एक ऐसी निराली सृष्टि हो जो अन्य वस्तुओं के विपरीत अपनी प्रकृति से ही ऐसी बनी हो कि आवश्यकता से ही रिक्त और खुदा तआला के लिए उसके अवयवों की भांति हो तथा खुदा तआला की सम्पूर्ण इच्छा के अनुसार जो सृष्टि और सृष्टि के समस्त रोगों से संबंध रखते हैं उसकी संख्या हो और वे निराले जन्म लेने की चीजें

शेष हाशिए का हाशिया -

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ^ط ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ
مَكِينٍ^ط ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا
فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ لَحْمًا^ط ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ^ط فَتَبَرَّكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ^ط
(अलमोमिनून- 23/13 से 15)

अर्थात् पहले तो हमने मनुष्य को उस मिट्टी से पैदा किया जो पृथ्वी के समस्त प्रकारों का निचोड़ था ताकि वह शरीर की दृष्टि से भी लघु संसार ठहरे और उसमें पृथ्वी की समस्त वस्तुओं की शक्ति और विशिष्टता हो जैसा कि यह आयत-

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي^ط (अलहिज्र-15/30)

अनुवाद:- अतः जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ और उसमें अपनी वाणी (कलाम) प्रविष्ट करूँ
रूह की दृष्टि से लघु संसार है। और कार्यों एवं खुदाई की पूर्ण विशेषताओं का पूर्ण

और हमने उस को एक प्रकाश प्रदान किया जिस के साथ वह लोगों में चलता है अर्थात् उस प्रकाश का आशीर्वाद लोगों का ज्ञात होता है क्या ऐसा व्यक्ति उस व्यक्ति के समान हो सकता है जो पूरी तरह से अंधेरे में फंसा है और उस से बाहर नहीं निकल सकता है। प्रकाश और जीवन से अभिप्राय रूहुल कुदुस है क्योंकि उस से अंधकार दूर होता है और वह दिलों को जीवित करता है। इसीलिए

शेष हाशिया - एक उज्ज्वल दर्पण की भांति अपनी प्रकृति रख कर हर समय खुदा तआला के सामने खड़े हों और अपने अस्तित्व में दो पहलू रखते हों। एक पहलू अकेले और पवित्र होने का कि अपने अस्तित्व में वह बहुत उत्तम और पदों से पवित्र हों जिसके कारण वे दूसरी सृष्टि से निराली और खुदा तआला के अस्तित्व से ज़िल्ली तौर पर पूर्ण समानता रखते हों और अपनी विशेषताओं के पदों में छुपे हुए न हों। दूसरा पहलू सृष्टि होना का जिसके कारण वे

दूसरी सृष्टियों से अनुकूलता रखें और अपने प्रभावों के साथ उन से निकट हो सकें। अतः खुदा तआला की इस इच्छा से इस विचित्र सृष्टि का अस्तित्व हो गया जिसे फ़रिश्ते कहा जाता है। ये फ़रिश्ते खुदा की आज्ञा का पालन करने में लीन हैं कि अपना इरादा फैशन, ध्यान और अपनी व्यक्तिगत शक्तियों अर्थात् यह कि अपनी ओर से किसी पर मेहरबान होना या उस से नाराज़ हो जाना और स्वयं से एक बात को चाहना या उससे नफ़रत करना, कुछ भी

शेष हाशिए का हाशिया - द्योतक है। फिर इसके बाद हम ने मनुष्य को दूसरे तौर पर पैदा करने के लिए यह तरीका जारी किया कि मनुष्य के अन्दर वीर्य पैदा किया और हमने उस वीर्य को एक मज़बूत थैली में जो साथ ही गर्भाशय में बनती जाती है स्थान दिया। قرار مكن (शब्द इसलिए लिया गया ताकि गर्भाशय और थैली दोनों पर चरितार्थ हो सके) फिर हम ने वीर्य से अल्कः (खून का लोथड़ा) बनाया और खून के लोथड़े से मांस का लोथड़ा और मांस के लोथड़े के कुछ भागों में से हड्डियां और हड्डियों पर खाल को पैदा किया फिर उसे एक और पैदायश दी अर्थात् रूह उसमें डाल दी। अतः क्या ही मुबारक है वह खुदा जो अपनी कारीगरी में समस्त कारीगरों से उत्तम कारीगरी और उत्पत्ति के पूर्ण चमत्कारों की दृष्टि से बढ़ा हुआ है। अब देखो कि खुदा तआला ने इस स्थान पर भी अपना प्रकृति का नियम यही वर्णन किया कि मनुष्य छः प्रकार की उत्पत्ति की श्रेणियां तय करके अपनी मानवता की पूर्णता को पहुंचता है। और यह तो स्पष्ट है कि लघु संसार और बृहत संसार में बहुत ही समानता है और कुर्आन से मनुष्य का लघु संसार होना सिद्ध है और आयत -

उसका नाम रूहुल कुदुस है अर्थात् पवित्रता की रूह, जिसके दाखिल होने से एक पवित्र जीवन प्राप्त होता है।

और कुर्आन की उन आयतों से जिनसे यह सिद्ध होता है कि रूहुल कुदुस हमेशा के लिए खुदा तआला के मुल्हम बन्दों के साथ रहता है और उन्हें ज्ञान और बुद्धिमत्ता और पवित्रता की शिक्षा देता है। यह पवित्र आयत है-

शेष हाशिया - नहीं रखते बल्कि पूर्णतया वास्तविक अवयवों की तरह हैं। खुदा तआला के समस्त इरादे प्रथम उन्हीं के उज्ज्वल दर्पणों में प्रतिबिम्बित होते हैं। और फिर उन के माध्यम से कुल सृष्टियों में फैलते हैं। चूँकि खुदा तआला अपनी पूर्ण पवित्रता के कारण अत्यन्त एकांकी और शुद्धता में है, इसलिए वे चीजें जो अंह और छुपी हुई हस्ती की अशुद्धता से रिक्त नहीं और महजूब बिअन्फुसिहा अर्थात् अपनी विशेषताओं के पर्दे में छुपी हुई हैं उस दानशीलता के उद्गम से कुछ अनुकूलता नहीं रखतीं। और इसी कारण से ऐसी चीजों की आवश्यकता पड़ी जो एक पहलू से खुदा तआला से अनुकूलता रखती हों तथा एक पहलू से उसकी सृष्टि से। ताकि उस ओर ये लाभ प्राप्त करें और इस ओर पहुंचाएं। यह तो स्पष्ट है कि संसार की वस्तुओं में से कोई वस्तु भी अपने अस्तित्व, खड़े होने और हरकत तथा स्थिरता, अपने बाह्य एवं अन्तरिक परिवर्तनों और अपने प्रत्येक निवेदन करने या उसे छोड़ने में स्वयं में स्थायी नहीं बल्कि उस एक ही जीवित रहने वाले और क्रायम रहने और रखने

शेष हाशिए का हाशिया -

(अत्तीन-5) لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ﴿٥﴾

अनुवाद:- निःसन्देह हमने मनुष्य को समुन्नत अवस्था में पैदा किया।

इसी की ओर संकेत कर रही है कि संसार को क्रायम करने की विभिन्न विशेषताओं और सुन्दरताओं का एक-एक भाग मनुष्य को देकर संसार की समस्त आदतों और कार्यों का संग्रहीता होने के कारण उसे अत्युत्तम ठहराया गया है। अतः अब दोनों संसारों की समानता के कारण और एक मात्र रचयिता के कार्यों की आवश्यकतानुसार मानना पड़ता है कि जो लघु संसार में भी क्रायम करने की श्रेणियां मौजूद हैं वही क्रायम करने की श्रेणियां वृहत् संसार में भी मद्देनजर हों। और हम अपनी आंखों से स्पष्ट तौर पर देखते हैं कि यह लघु संसार जो इन्सान के नाम से नामित है अपनी उत्पत्ति (पैदायश) में छः तरीके रखता है। कुछ सन्देह नहीं कि यह संसार वृहत् संसार के गुप्त विवरणों को पहचानने के लिए एक दर्पण का आदेश रखता है। अतः जबकि उसकी पैदायश की छः श्रेणियां सिद्ध

أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ ط
(अलमुजादल:58/23)

अर्थात् उन मोमिनों के दिलों में खुदा तआला ने ईमान लिख दिया और रूहुल कुदुस से उन को सहायता दी। दिल में ईमान के लिखने से तात्पर्य यह है कि ईमान स्वाभाविक इरादों में दाखिल हो गया और स्वभाग का अंग बन गया

शेष हाशिया - वाले (खुदा) के सहारे मख्लूक (सृष्टि) के ये समस्त कार्य चलते हैं। और देखने में यद्यपि यही दिखाई देता है कि हम अपने कार्यों में किसी गैबी (अदृश्य) सहायता के मुहताज नहीं। जब चाहें हरकत कर सकते हैं और जब चाहें ठहर सकते हैं। और जब चाहें बोल सकते हैं। और जब चाहें चुप कर सकते हैं। परन्तु एक आरिफ़ों जैसी दृष्टि से देखें तो अवश्य स्पष्ट हो जाएगा कि हम अपनी इन समस्त गतियों और ठहरावों तथा समस्त कार्यों में गैबी सहायता के अवश्य मुहताज हैं और खुदा तआला का क़ायम रहना हमारे वीर्य में हमारे खून के लोथड़े में, हमारे मांस के लोथड़े में और हमारे कच्चे (अधूरे) में, ठहराव में, कथन में, कार्य में निष्कर्ष यह कि हमारी सम्पूर्ण पैदायश की आवश्यकताओं में कार्य करती है परन्तु वह क़ायम रहना हमारी विशेषताओं के पर्दे में छुपे होने के कारण हम पर सीधे तौर पर नहीं उतरती। क्योंकि हम में और उस सूक्ष्म से सूक्ष्म तर, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, सार्वधिक निःस्पृह तथा कुल प्रकाशों की प्रकाश हस्ती के मध्य में कोई अनुकूलता नहीं।

शेष हाशिए का हाशिया - हुई तो निश्चित तौर पर यह आदेश दे सकते हैं कि वृहत् संसार की सृजनात्मक शक्तियां भी छः ही हैं जो छः प्रभावकारी अर्थात् छः चमकारें जिन के शेष लक्षण छः सितारों में सुरक्षित रह गए हैं तार्किक तौर पर निश्चित होते हैं और छः सितारों का अब भी चिकित्सा विज्ञानों में पेट में अधूरे बच्चे की पूर्णता के लिए संबंध माना जाता है। अतः 'सदीदी' में इसके संबंध में एक विस्तृत बहस लिखी है। कुछ मूर्ख इस स्थान पर इस आयत के बारे में यह ऐतराज प्रस्तुत करते हैं कि वर्तमान चिकित्सा अनुसंधानों की दृष्टि से बच्चे के बनने की यह पद्धति जो स्त्री के गर्भाशय में बनता है सिद्ध नहीं होती बल्कि इसके विपरीत सिद्ध होता है। परन्तु यह आरोप बहुत बड़ी नासमझी या स्पष्ट द्वेष पर आधारित है। इस बात के अनुभव के लिए किसी डाक्टर या वैद्य की आवश्यकता नहीं। स्वयं प्रत्येक मनुष्य इस परीक्षा के लिए समय खर्च करके और उन बच्चों को देखकर जो पूरे समय पर पैदा होते हैं या समय से पूर्व पैदा होते हैं या गर्भपात के तौर पर गिरते हैं निश्चित वास्विकता तक पहुंच सकता है। और जैसा कि हम अपने व्यक्तिगत अवलोकन से जानते हैं कि निस्सन्देह यह बात सही है

तथा कोई बनावट और कृत्रिमता मध्य में न रही और यह मर्तबा कि ईमान दिल के रोम-रोम में दाखिल हो जाए मनुष्य को उस समय प्राप्त होता है कि जब मनुष्य रूहुल कुदुस से समर्थित होकर एक नया जीवन पाए, और जिस प्रकार प्राण हर समय शरीर की सुरक्षा के लिए शरीर के अन्दर रहते हैं तथा अपना प्रकाश उस पर डालते रहते हैं। इसी प्रकार नए जीवन का रूहुल कुदुस भी अन्दर आबाद

शेष हाशिया - क्योंकि हम में से प्रत्येक वस्तु चाहे वह सजीव है या निर्जीव अपनी विशेषता में छुपी हुई और पवित्र-शुद्ध मैदान से बहुत दूर है। इसलिए खुदा तआला में और हम में फ़िरशतों का अस्तित्व इसी प्रकार आवश्यक हुआ जैसा कि बोलने वाली इन्सानी रूह और इन्सान में रूहानी तथा हसन जैसी शक्तियों का माध्यम आवश्यक हुआ। क्योंकि बोलने वाली रूह अत्यन्त अद्वितीय और सूक्ष्मता में थी और मनुष्य का शरीर अपनी विशेषताओं के पर्दे में छुपा हुआ, और अपवित्रता तथा अंधकार में पड़ा था। इसलिए खुदा तआला ने इन दोनों के बीच में रूहानी और संवेदनशील शक्तियों को दो पहलुओं वाला पैदा किया ताकि वह बोलने वाली रूह की शक्तियों से लाभ स्वीकार करके समस्त शरीर को इस से आदर करने वाला और सभ्य बनाएं।

जानना चाहिए कि मनुष्य भी हर छोटा संसार है और बड़े संसार के समस्त कार्य, गुण, विशेषताएं तथा विवरण इस में भरे हुए हैं। जैसा कि उसकी शक्तियों और ताकतों से

शेष हाशिए का हाशिया -कि जब खुदा तआला इन्सान के वीर्य से किसी बच्चे को गर्भाशय में बनाने के लिए इरादा करता है तो पहले पुरुष और स्त्री का वीर्य गर्भाशय में ठहरता है और केवल कुछ दिनों तक उन दोनों वीर्यों (वीर्य+रज) के मिलन से कुछ परिवर्तन होकर जमे हुए खून की भांति एक वस्तु तैयार हो जाती है जिस पर एक नर्म सी झिल्ली होती है। यह झिल्ली जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है बढ़ती जाती है यहां तक कि खाकी रंग की एक थैली की तरह दिखाई देती है जो गठड़ी के समान दिखाई देती है। और अपनी उत्पत्ति की पूर्णता के दिनों तक बच्चा उसी में होता है। पवित्र कुर्आन से ज्ञात होता है और वर्तमान तहक़ीक़ात भी इसकी पुष्टि करते हैं कि वृहत संसार भी अपनी उत्पत्ति की पूर्णता के समय तक एक गठरी की तरह था। जैसा कि महा प्रतापी खुदा तआला फ़रमाता है -

أَوَلَمْ يَرِ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا^ط
وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ^ط
(अलअंबिया-21/31)

अर्थात् फ़रमाता है कि क्या काफ़िरों ने आकाश और पृथ्वी को नहीं देखा कि वह

हो जाए और दिल पर हर समय और हर पल अपना प्रकाश डालता रहे तथा जैसे शरीर प्राण (जान) के साथ हर समय जीवित है दिल और समस्त रूहानी शक्तियां रूहुल कुदुस के साथ जीवित हों। इसी कारण खुदा तआला ने इस बात को वर्णन करने के पश्चात् कि हम ने उनके दिलों में ईमान को लिख दिया यह भी वर्णन किया कि हमने रूहुल कुदुस से उन को सहायता दी। क्योंकि जब

शेष हाशिया - इस बात का सबूत मिलता है कि प्रत्येक वस्तु की शक्ति का नमूना यह प्रकट कर सकता है। सूर्य की तरह यह एक प्रकाश भी रखता है और चन्द्रमा की तरह एक नूर भी और रात की तरह एक अंधकार भी और पृथ्वी की तरह हजारों अच्छे और बुरे इशदों के पैदा होने का स्थान हो सकता है और वृक्षों की तरह पालन-पोषण हो रखता है और अपनी आकर्षक-शक्ति के साथ प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। ऐसा ही उसका छोटा संसार होना इस प्रकार भी सिद्ध होता है कि यह अपने सच्चे कश्फों, और सच्चे स्वप्नों के समय बड़े संसार की प्रत्येक वस्तु को अपने अन्दर पाता है। कभी अपने कश्फों और स्वप्नों में चन्द्रमा देखता है, कभी सूर्य, कभी सितारे, कभी भिन्न-भिन्न प्रकार की नहरें और बाग और कभी आग और वायु इत्यादि और प्रायः अद्भुत यह कि कभी अपने सच्चे स्वप्नों और सच्चे कश्फों में ऐसा पाता है कि स्वयं ही सूर्य बन गया या स्वयं ही चन्द्रमा हो गया है या स्वयं ही पृथ्वी है जिस पर हजारों देश आबाद हैं। अतः इन तर्कों से सिद्ध

शेष हाशिए का हाशिया - आपस में गठरी की तरह बंधे हुए थे और हम ने उनको खोल दिया। फिर काफ़िरों ने तो आकाश और पृथ्वी को बनता नहीं देखा और न उनकी गठरी देखी। परन्तु यहां रूहानी आकाश और रूहानी पृथ्वी की तरफ संकेत है जिसकी गठरी अरब के काफ़िरों के सामने खुल गई और आकाशीय लाभ पृथ्वी पर जारी हो गए। अब हम पुनः अपनी पहली बात की ओर लौटते हुए कहते हैं कि पुरुष और स्त्री के दोनों वीर्य (वीर्य+रज) जो आपस में मिल जाते हैं वह उत्पत्ति की प्रथम श्रेणी है और फिर उनमें एक जोश पैदा होकर वह दोनों वीर्यों का संग्रह जो अपने अन्दर ठहरने वाली शक्ति रखता है लाल जैसा हो जाता है। जैसे वह वीर्य जो पहले खून से बना था फिर अपने असली रंग की ओर जो खूनी है लौट जाता है। यह दूसरी श्रेणी (दूसरा मर्हला) है। फिर वह खून जमा हुआ जिसका नाम अलक्रा है एक मांस का मुज़गा (लोथड़ा) हो जाता है जो इन्सानी शक्ल का कुछ ढांचा बहुत बारीक तौर पर अपने अन्दर रखता है। यह तीसरी श्रेणी (मर्हला) है। यदि इस श्रेणी पर बच्चा गिर जाए तो उसको गहरी नज़र से देखने से इन्सान बनने की कुछ लकीरें दिखाई देती

ईमान दिलों में लिखा गया और स्वाभाविक अक्षरों में दाखिल हो गया तो मनुष्य को एक नया जन्म प्राप्त हो गया और यह नया जन्म रूहुल कुदुस की सहायता के बिना कदापि नहीं मिल सकता। रूहुल कुदुस का नाम रूहुल कुदुस इसीलिए है कि उसके दाखिल होने से मनुष्य को एक पवित्र रूह मिल जाती है। पवित्र **कुर्आन रूहानियत जीवन के वर्णन से भरा पड़ा है।** और जगह-जगह पूर्ण

शेष हाशिया - होता है कि मनुष्य निस्सन्देह एक छोटा संसार है जो स्वयं में बड़े (बृहत) संसार का प्रत्येक नमूना रखता है। और यह बहुत ही उत्तम उपाय है कि जब बड़े संसार की बारीक अद्भुत बातों में से कोई गुप्त रहस्य समझ में न आए तो छोटे (लघु) संसार की ओर लौटा जाए और देखा जाए कि वह इस में क्या गवाही देता है। क्योंकि ये दोनों संसार परस्पर सामने लगे दर्पणों के समान हैं। और जिस संसार को हमने उसके भागों रहित देख लिया है उसको हम दूसरे संसार को पहचानने के लिए एक मापदण्ड ठहरा सकते हैं और निस्सन्देह उसकी गवाही हमारे लिए सन्तुष्टि का कारण हो सकती है। अब जबकि यह भूमि तैयार हो चुकी तो अत्यन्त सही होगा कि यदि हम कहें कि फ़रिश्तों का संबंध आकाशीय ग्रहों और पार्थिव शरीरों की ओर है, वह वास्तव में ऐसा ही है जैसा कि रूहानी एवं संवेदनशील शक्तियों का संबंध मनुष्य के शरीर की ओर है। क्योंकि जैसा कि इन्सान

शेष हाशिए का हाशिया - हैं। अतः अधिकतर बच्चे इस अवस्था में भी गिर जाते हैं। जिन स्त्रियों को कभी ऐसा संयोग हुआ है या वह दाई का कार्य करती हैं वह इस स्थिति से खूब परिचित हैं। फिर चौथी श्रेणी (मर्हला) वह है जब मुज़्गा (मांस के लोथड़े) से हड्डियां बनाई जाती हैं जैसा कि आयत **فَخَلَقْنَا الْمَضْغَةَ عِظًا** वर्णन कर रही है। परन्तु 'अलमुज़्गा' पर जो अलिफ़ लाम है वह विशिष्ट करने के लिए है जिस से यह प्रकट करना उद्देश्य है कि सम्पूर्ण मुज़्गा हड्डी नहीं बन जाता, बल्कि जहां-जहां हड्डियों की आवश्यकता है खुदा तआला के आदेश से वही नर्म मांस कुछ कठोर होकर हड्डी बन जाता है और कुछ नर्म मांस यथावत् नर्म मांस रहता है। इस श्रेणी पर इन्सानी शक्ल का स्पष्ट ढांचा तैयार हो जाता है जिसे देखने के लिए किसी सूक्ष्मदर्शी यंत्र की आवश्यकता नहीं। इस ढांचे में इन्सान का असल अस्तित्व जो कुछ बनना चाहिए था बन चुकता है परन्तु वह अभी उस मांस से खाली होता है जो इन्सान के लिए एक मोटे और शानदार चमकीले लिबास के तौर पर है, जिससे इन्सान के सम्पूर्ण नक्श प्रकट होते हैं और शरीर पर ताज़गी आती है और सुन्दरता प्रकट

मोमिनों का नाम अह्या अर्थात् जीवित और काफ़िरों का नाम 'अम्वात' अर्थात् मुर्दे रखता है कि पूर्ण मोमिनों को रूहुल कुदुस के दाखिल होने से एक जान मिल जाती है और काफ़िर यद्यपि शारीरिक तौर पर जीवन रखते हैं परन्तु उस जीवन से वंचित हैं जो दिल और दिमाग (मस्तिष्क) को ईमानी जीवन प्रदान करता है।

इस स्थान पर स्मरण रखना चाहिए कि इस पवित्र आयत के समर्थन में

शेष हाशिया - की बोलने वाली रूह का इन्सान के शरीर की उपाय रूहानी एवं संवेदनशील शक्तियों के माध्यम से करती है। ऐसा ही संसार को क़ायम रखने वाला जो सम्पूर्ण संसार की अनश्वरता और स्थापना के लिए उपाय करने वलो नफ़्स की तरह तथा आयत :

(अन्नूर-24/36) **اللَّهُ نُورُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ**

के आदेशानुसार उन के जीवन का प्रकाश है बड़े संसार की व्यवस्था फरिश्तों के माध्यम से करता है। हमें इस बात को स्वीकार करने में संदेह नहीं कि जो कुछ छोटे संसार में भागीदार रहित एकमात्र हस्ती की व्यवस्था सिद्ध हुई है उसी के समान बड़े संसार की भी व्यवस्था है। क्योंकि ये दोनों संसार एक ही हस्ती से जारी हैं और इस भागीदार-रहित एकमात्र हस्ती की यही मांग होनी चाहिए कि दोनों व्यवस्थाएं एक ही रूप और पद्धति पर हों ताकि दोनों मिलकर एक ही स्रष्टा और रचयिता की ओर मार्ग-दर्शन करें। क्योंकि

शेष हाशिए का हाशिया - हो जाती है और अवयवों में सुडोलता आ जाती है। तत्पश्चात् पांचवी श्रेणी (मर्हला) वह है कि जब उस ढांचे पर लहम अर्थात् मोटा मांस अवयवों के यथायोग्य चढ़ाया जाता है। यह वही मांस है कि जब इन्सान ज्वर इत्यादि से बीमार रहता है तो भूख प्यास तथा बीमारी के कठोर कष्टों से वह मांस पिघल जाता है और कभी मनुष्य ऐसी कमजोरी की हालत पर पहुंच जाता है कि वहीं पांचवी श्रेणी का ढांचा अर्थात् मुट्ठी भर हड्डी रह जाता है। जैसे टी.बी. ग्रस्त और क्षय रोग-ग्रस्त तथा मधुमेह वालों में रोग की चरम सीमा पर यह स्थिति हो जाती है। यदि किसी का जीवित रहना प्रारब्ध होता है तो फिर ख़ुदा तआला उसके शरीर पर मांस चढ़ाता है। अतः यह वही मांस है जिससे सुन्दरता, अंगों का सुडौल होना और शरीर में सौन्दर्य पैदा होता है। निस्सन्देह यह मांस ढांचे के तैयार होने के बाद धीरे-धीरे गर्भस्त बच्चे (जनीन) पर चढ़ता रहता है। और जब भ्रूण इसका पर्याप्त भाग ले लेता है, तब ख़ुदा तआला के आदेश से उसमें जान (प्राण) पड़ जाती है। तब वह वनस्पति-अवस्था से जो केवल पालन-पोषण है स्थानांतरित होकर जीवधारी विशेषता

नबवी हदीसों में कई स्थानों पर बहुत कुछ चर्चा है और बुखारी में एक हदीस हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत से है और वह यह है-

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم وضع لحسان ابن ثابت منبراً في المسجد فكان ينافح عن رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اللهم ايد حسان بروح القدس كما نافح عن نبيك

शेष हाशिया - व्यवस्था में तौहीद महाप्रतापी स्रष्टा के मामले की समर्थक है। कारण यह कि हम कह सकते हैं कि यदि कई स्रष्टा (खालिक) होते तो इस व्यवस्था में बहुत मतभेद पाया जाता। सारांश यह कि यह बात अत्यधिक सीधी और स्पष्ट है कि खुदा के फ़रिश्ते बड़े संसार के लिए ऐसे ही आवश्यक हैं जैसे रूहानी एवं संवेदनशील शक्तियाँ मानवीय विकास के लिए, जो छोटा संसार है।

यदि यह आरोप प्रस्तुत किया जाए कि यदि फ़रिश्ते वास्तव में मौजूद हैं तो दिखाई क्यों नहीं देते और क्यों हमें उनकी किसी सहायता का आभास नहीं होता और हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि प्रत्येक वस्तु अपनी स्वाभाविक शक्ति से काम दे रही है। उदाहरण के तौर पर बच्चेदानी में जो बच्चा पैदा होता है या वृक्षों को जो फल लगते हैं या खानों में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के जवाहिरात पैदा होते हैं तो केवल एक स्वाभाविक तरीके से जो चला आता है जानवरों, वनस्पतियों तथा स्थूल पदार्थों से संबंधित उपाय करने वाली प्रकृति अपने कार्य को

शेष हाशिआ का हाशिया - पैदा कर लेता है और पेट में हरकत करने लगता है। अतः यह प्रमाणित बात है कि बच्चा अपनी वनस्पति अवस्था से जीवधारी-अवस्था को पूर्णरूप से उस समय स्वीकार करता है जब सामान्यतया मोटा मांस उसके शरीर पर उचित न्यूनाधिकता के साथ चढ़ जाता है। यही बात है जिसे आज तक मनुष्य के निरन्तर अनुभवों और अवलोकनों ने सिद्ध किया है। यह वही पूर्ण स्थिति है जो पवित्र कुर्आन ने वर्णन की है और और अनुभवों के द्वारा निरन्तरता से सिद्ध है, फिर इस पर ऐतराज़ करना यदि मूर्खों का काम नहीं तो और किसका है? अब पुनः हम अपने पहले कलाम की तरफ लौटते हुए लिखते हैं कि चूँकि लघु संसार में जो मनुष्य है खुदा की सुन्नत (नियम) यही सिद्ध हुई है कि उसके अस्तित्व की पूर्णता छः श्रेणियों को तय करने के बाद होती है। तो इसी क़ानून-ए-कुदरत के मार्ग दर्शन से हमें तार्किक तौर पर यह मार्ग मिलता है कि संसार के प्रारंभ में जो अल्लाह तआला ने वृहत संसार को पैदा किया तो उसकी पैदायश की पद्धति में भी यही छः श्रेणियों का ध्यान रखा होगा और श्रेणी का विभाजन करने के लिए एक दिन या एक समय से विशिष्ट किया होगा।

अर्थात् रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हस्सान बिन साबित रजियल्लाहु अन्हु के लिए मस्जिद में मिम्बर रखा और हस्सान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से काफ़िरों से झगड़ा करता था और उनकी निन्दा का प्रशंसा के साथ उत्तर देता था। अतः रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हस्सान रजियल्लाहु के लिए दुआ की और फ़रमाया कि हे मेरे ख़ुदा! हस्सान की

शेष हाशिया - पूर्णता तक पहुंचाती है। जैसा कि दार्शनिकों का सदैव से यही कहना है और अनुभव भी इसी कथन का समर्थक दिखाई देता है। क्योंकि कभी हम जानवरों, वनस्पतियों और स्थूल पदार्थों से संबंधित कार्यों को अपनी इच्छा के अधीन भी कर लेते हैं अर्थात् अपने उपायों के अनुसार अपने कार्य करा सकते हैं। उदाहरणतया गर्भाशय में जो बच्चा कभी पूरा होने से पूर्व गिर जाता है और स्त्रियों को गर्भपात का एक रोग हो जाता है तो माहिर चिकित्सक समझ लेता है कि गर्भाशय की शक्तियां कमजोर हो गई हैं। तब वह उदाहरणतया गर्भ धारण करने के प्रारंभ में एक हल्की रेचक दवा देता है और हानिकारक तत्वों को दूर करके गर्भाशय को मजबूत बनाने वाली जैसे मोतियों का अवलेह और कस्तूरी इत्यादि प्रयोग कराता है और स्त्री को उसके पुरुष से परहेज कराता है। तब इस उपाय से बहुत लाभ महसूस होता है और बच्चा गिरने से बच जाता है। ऐसा ही जब बुद्धिमान माली किसी फलदार वृक्ष को ऐसा पाता है कि अब वह फल कम देता है तो वह विचार करता है कि इसका कारण क्या है। तब वह

शेष हाशिए का हाशिया - जैसा कि मनुष्य की पैदायश की छः श्रेणियाँ छः समयों से विशेष हैं तथा संसार की समस्त क्रौमों का सात दिनों पर सहमत होना और एक दिन छुट्टी का निकाल कर छः दिनों को कामों के लिए विशेष करना इसी बात की ओर संकेत है कि ये छः दिन उन छः दिनों की यादगार चले आते हैं जिन को पृथ्वी और आकाश और जो कुछ उनमें है, बनाया गया था।

यदि कोई अब भी स्वीकार न करे और इन्कार को न छोड़े तो हम कहते हैं कि हम ने तो वृहत् संसार के लिए लघु संसार की पैदायश की श्रेणियों का सबूत दे दिया और जो काम करने के दिन सहमतिपूर्वक प्रत्येक क्रौम में मान्य हैं उनका छः होना भी प्रकट कर दिया और यह भी सिद्ध कर दिया कि ख़ुदा तआला के समस्त पैदायशी कार्य इस संसार में धीरे-धीरे होते हैं। तो फिर यदि इन्कारी की दृष्टि में यह प्रमाण पर्याप्त नहीं तो उस पर अनिवार्य होगा कि वह भी तो अपने इस दावे पर कोई प्रमाण प्रस्तुत करे कि ख़ुदा तआला ने यह भौतिक संसार केवल एक क्षण में पैदा कर दिया था, दर्जा-बदर्जा पैदा नहीं किया

रूहुल कुदुस के साथ अर्थात् जिब्राईल अलैहिस्सलाम के साथ सहायता कर। अबू दाऊद ने भी इब्ने सीरीन से और इसी प्रकार तिरमिज़ी ने भी यह हदीस लिखी है और उसे हसन, सही कहा है। बुखारी और मुस्लिम में शब्दों की लम्बाई के साथ यह हदीस भी मौजूद है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हस्सान रज़ियल्लाहु को कहा-

शेष हाशिया - विभिन्न कारणों से कभी शाखें काटता है और कभी गढ़ा खोदकर आवश्यकता अनुसार सिंचाई कराता है और कभी मामूली खाद या हड्डियां पीस कर उसकी जड़ों में रखता है। इसी प्रकार खानों का खोज का ज्ञान रखने वाले ऐसे ही उपाय किया करते हैं और प्रायः ये सब लोग सफल हो जाते हैं फिर यदि यह सिलसिला फ़रिश्तों के इरादे के अधीन हैं तो हमारे उपायों के मुकाबले पर फ़रिश्ते क्यों नहीं ठहर सकते। ऐसा ज्ञात होता है कि जिन दिनों में लोग भौतिकी के पूर्ण अनुसंधानों से अनभिज्ञ थे उन्हीं दिनों में फ़रिश्तों का अस्तित्व बनाया गया है। मनुष्य की आदत है कि जानकारियों के लिए कोई न कोई कारण तलाश करता है। फिर जब कि सही कारण मालूम न हो सके तो अज्ञानता के समय में फ़रिश्तों का अस्तित्व कल्पना-शक्ति को सन्तुष्ट करने के लिए गढ़ लिया गया। यह आधुनिक शिक्षा (ऐसी आधुनिक शिक्षा के सिर पर खाक है) नव-शिक्षित लोगों को ग़लत भ्रमों की शिक्षा दे रही है और हमने तो डरते-डरते इतना वर्णन किया है। प्रायः उन की नज़र तो केवल इसी पर नहीं ठहरती। बल्कि हज़रत

शेष हाशिए का हाशिया - था। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि वही ख़ुदा अब भी है जो पहले था और वही पैदा करने का सिलसिला अब भी जारी है जो पहले जारी था और स्पष्ट एवं व्यापक तौर पर दिखाई दे रहा है कि ख़ुदा तआला हर एक मख़्लूक (सृष्टि) को धीरे-धीरे अपने पूर्ण अस्तित्व तक पहुंचाता है। यह तो नहीं कह सकते कि पहले वह शक्तिशाली था और अब कमजोर है और देर से करता है बल्कि यही कहेंगे कि उसका प्रकृति का नियम प्रारंभ से ही यही है कि वह हर एक मख़्लूक (सृष्टि) को धीरे-धीरे पैदा करता है। अतः वर्तमान समय के ख़ुदाई कार्य हमें बता रहे हैं कि गुज़रे हुए और प्रारंभिक काल में भी यही दर्जा-बदर्जा करना दृष्टिगत था जो अब है। हम बहुत नादान होंगे यदि हम वर्तमान के दर्पण में पहले समय की सूरत न देख लें और वर्तमान स्रष्टी (ख़ालिक्रियत) की पद्धति पर दृष्टि डाल कर केवल इतना ही सिद्ध नहीं होता कि ख़ुदा तआला अपने पैदायश के सिलसिले को दर्जा बदर्जा पूर्णता तक पहुंचाता है बल्कि यह भी सिद्ध होता है कि प्रत्येक मख़्लूक (सृष्टि) की पैदायश में छः ही श्रेणियां रखी हैं और ख़ुदा की दूरदर्शिता ने हर एक मख़्लूक

أَجِبْ عَنِّي اللَّهُمَّ أَيَّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ

अर्थात् मेरी ओर से (हे हस्सान रज़ियल्लाहु) काफ़िरों को उत्तर दे। हे मेरे माबूद (उपास्य) इसकी रूहुल कुदुस से सहायता कर। ऐसा ही हस्सान रज़ियल्लाहु के पक्ष में एक यह भी हदीस है :

هاجهم وجرائيل معك

शेष हाशिया - खुदा वन्द तआला के बारे में ऐसी ही बहस करके वास्तविक रचयिता के अस्तित्व से निवृत्त (फ़ारिग) हो बैठे हैं।

उत्तर- अतः स्पष्ट हो कि यह विचार कि फ़रिश्ते क्यों दिखाई नहीं देते बिल्कुल व्यर्थ है। फ़रिश्ते खुदा तआला के अस्तित्व की भांति अत्यन्त सूक्ष्म अस्तित्व रखते हैं। फिर इन आंखों से कैसे दिखाई दें। क्या खुदा तआला जिस का अस्तित्व इन दार्शनिकों के नज़दीक भी सर्वमान्य है इन नश्वर आंखों से दिखाई देता है? इसके अतिरिक्त यह बात भी सही नहीं कि किसी प्रकार दिखाई ही नहीं दे सकते। क्योंकि अध्यात्मज्ञानी लोग अपने कशफ़ों के माध्यम से जो प्रायः जागने की अवस्था में होते हैं फ़रिश्तों को रूहानी आंखों से देख लेते हैं तथा उनसे बातें करते हैं और उनसे कई विद्याएं प्राप्त करते हैं। और मुझे क्रसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है, और जो मुफ़्तरी और झूठे को अपमानित और अज़ाब के बिना नहीं छोड़ता कि मैं इस बयान में सच्चा हूँ कि मैंने अनेकों बार कशफ़ में फ़रिश्तों को देखा

शेष हाशिए का हाशिया - की पैदायश में यही चाहा कि उसके पैदा होने की छः श्रेणियां हों जो छः समयों में पूर्ण हों। किसी सृष्टि पर नज़र डालकर देख लो उसमें यही छः श्रेणियां साबित होंगी। अर्थात् तहक़ीक़ से यह सिद्ध होगा कि प्रत्येक शारीरिक अस्तित्व की पूर्णता छः श्रेणियों से गुज़रने के पश्चात् होती है और मनुष्य पर कुछ निर्भर नहीं। पृथ्वी पर जो हज़ारों जीवधारी हैं उन के अस्तित्व की पूर्णता इन्हीं छः श्रेणियों पर निर्भर पाओगे।

फिर एक और अजीब बात यह है कि उत्पत्ति (पैदायश) की छः श्रेणियों का यह सिलसिला केवल भौतिक सृष्टि (मख़्लूक) में ही सीमित नहीं बल्कि रूहानी बातों में भी इसका अस्तित्व पाया जाता है। उदाहरणतया थोड़ा विचार करने से ज्ञात होगा कि मनुष्य की रूहानी पैदायश की श्रेणियां भी छः ही हैं। पहले वह वीर्य के रूप में केवल सच को स्वीकार करने की एक दूर की योग्यता अपने अन्दर रखता है। और फिर जब उस योग्यता के साथ खुदा की रहमत की एक बूंद मिल जाती है उस पद्धति के अनुसार कि जब स्त्री

हे हस्सान रज़ियल्लाहु! काफ़िरोँ के अपशब्दों का उत्तर अपशब्दों के साथ दे और जिब्राईल तेरे साथ है।

अब इन हदीसों से सिद्ध हुआ कि हज़रत जिब्राईल हस्सान रज़ियल्लाहु के साथ रहते थे और प्रति क्षण उनके साथी थे और ऐसा ही यह पवित्र आयत भी कि (अलमुजादल: 58/23) **أَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ ط**

शेष हाशिया - है और उन से कुछ विद्याएं प्राप्त की हैं। उनसे पहली या भविष्य की खबरें मालूम की हैं जो घटनानुसार थीं। फिर मैं कैसे कहूँ कि फ़रिश्ते किसी को दिखाई नहीं दे सकते। निस्सन्देह दिखाई दे सकते हैं परन्तु और आंखों से, और जैसे ये लोग इन बातों पर हंसते हैं, आरिफ़ लोग उनकी हालतों पर रोते हैं। यदि संगत में रहें तो कश्फ़ी तरीकों से सन्तुष्ट हो सकते हैं परन्तु कठिनाई तो यही है कि ऐसे लोगों की खोपड़ी में एक प्रकार का अहंकार होता है। वह अहंकार उन्हें इतनी भी अनुमति नहीं देता कि विनम्रता पूर्वक सत्याभिलाषी बन कर उपस्थित हो जाएं।

ये विचार कि हमें फ़रिश्तों के कार्यों का क्यों कुछ अहसास नहीं होता, वास्तव में पहले आरोप का एक भाग है। पर्दे में होने की हालत में जैसे फ़रिश्ते दिखाई नहीं देते और जैसे ख़ुदा तआला का भी कुछ पता नहीं लगता केवल अपने विचारों पर सारा आधार होता है

शेष हाशिए का हाशिया - के रज में पुरुष का वीर्य पड़ता है तब मनुष्य की आन्तरिक स्थिति वीर्य के रूप से अलक्रा (खून का लोथड़ा) के रूप में आ जाती है और कुछ रिश्ता अल्लाह तआला से पैदा होने लगता है जैसा कि अल्कः के शब्द से संबंध को बोध होता है और फिर वह अल्क्रा पुन्य कर्मों के खून की सहायता से मुज़गः (मांस का लोथड़ा) बनता है उसी पद्धति से कि जैसे मांसक धर्म के खून की सहायता से अल्कः मुज़गः बन जाता है और मुज़गा की तरह अभी उसके अंग अपूर्ण होते हैं जैसा कि मुज़गः में हड्डी वाले अंग अभी पैदा नहीं होते हैं। ऐसा ही इसमें भी ख़ुदा के लिए जोश, ख़ुदा के लिए स्थिरता, और ख़ुदा के लिए स्थायित्व के अंग अभी यथोचित पैदा नहीं होते। यद्यपि विनम्रता और नमी मौजूद हो जाती है और यद्यपि पूरा जोश पूरी तीव्रता और कठोरता इस श्रेणी में पैदा नहीं होती। परन्तु मुज़गः की तरह कुछ प्रारब्ध की मुज़ग के योग्य हो जाता है। अर्थात् कुछ इस योग्य हो जाता है कि प्रारब्ध का दांत उस पर चले और वह उसके नीचे ठहर सके। क्योंकि अल्कः जो एक तत्त्व के लगभग है वह तो इस योग्य ही नहीं कि दांतों के नीचे पीसा जाए

और स्पष्ट और खुले तौर पर बता रही है कि रूहुल कुदुस मोमिनों के साथ रहता था, क्योंकि इसी प्रकार की आयत जो हज़रत ईसा के बारे में आई है अर्थात् (अलबक्ररह-88) **وَإَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ**^ط

इसकी व्याख्या में समस्त मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) इस बात पर सहमत हैं कि रूहुल कुदुस हर समय हज़रत ईसा का साथी और मित्र था और एक क्षण

शेष हाशिया - ऐसा ही फ़रिश्तों के कार्यों का भी जो रूहानी हैं कुछ अहसास नहीं होता। यहां यह उदाहरण उचित लगता है कि एक अंधे ने सूर्य के अस्तित्व का इन्कार कर दिया था कि टटोलने से उसका कुछ पता नहीं मिलता। तब सूर्य ने उसे सम्बोधित करके कहा कि हे अंधे! मैं टटोलने से ज्ञात नहीं हो सकता क्योंकि तेरे हाथों से बहुत दूर हूं। तू यह दुआ कर कि खुदा तआला तुझे आंखें प्रदान करे। तब तू आंखों के द्वारा मुझे देख लेगा। और यह विचार कि यदि आदेश के प्रबन्धक और विभाजन करने वाले फ़रिश्ते हैं तो फिर हमारे उपाय क्यों सफल होते हैं और क्यों अधिकतर मामले हमारे उपचारों, उपायों से हमारी इच्छानुसार हो जाते हैं। तो इसका उत्तर यह है कि वे हमारे उपचार, उपाय भी फ़रिश्तों के हस्तक्षेप, इल्का और इल्हाम से खाली नहीं हैं। जिस कार्य को फ़रिश्ते खुदा के आदेश से करते हैं वह कार्य उस व्यक्ति या उस वस्तु से लेते हैं जिसमें फ़रिश्तों की प्रेरणाओं के प्रभाव को स्वीकार करने का स्वाभाविक गुण है। उदाहरणतया फ़रिश्ते जो एक खेत या एक

शेष हाशिए का हाशिया - और ठहरा रहे परन्तु मुज़गः के योग्य है। इसी लिए उसका नाम मुज़गः है। अतः मुज़गः होने की वह अवस्था है कि जब खुदा के प्रेम की कुछ चाशनी दिल में पड़ जाती है और प्रतापी चमकार ध्यान देती है कि विपत्तियों के साथ उसकी परीक्षा करे। तब वह मुज़गः प्रारब्ध के दांतों में पीसा जाता है और खूब क्रीमा किया जाता है। निष्कर्षतः साधक के अस्तित्व की तीसरी श्रेणी वह है कि जब मनुष्य स्थायित्व तथा विपत्तियों को सहन करने की बरकत से परखे जाने के बाद इन्सानी चिह्नों का पूर्ण रूप से इनाम पाता है। अर्थात् रूहानी तौर पर उसके लिए एक इन्सानी रूप दिया जाता है और इन्सान की तरह उसे दो आंखें दो कान और दिल तथा मस्तिष्क तथा समस्त आवश्यक शक्तियां और अंग प्रदान किए जाते हैं और आयत :

(अलफ़तह-48/30) **أَشَدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ**

कठोरता और नम्रता उचित स्थानों में प्रकट हो जाती है। अर्थात् उसके जन्म की प्रत्येक श्रेणी

के लिए भी उन से अलग नहीं होता था। देखो तप्सीर हुसैनी, तप्सीर मज़हरी, तप्सीर अज़ीज़ी, मआलिम, इब्ने कसीर इत्यादि। और मौलवी सिद्दीक हसन 'फ़तुलबयान' में इस आयत की तप्सीर (व्याख्या) में यह इबारत लिखते हैं

وكان جبرائيل يسير مع عيسى حيث سار فلم يفارقه حتى صعد به الى
السما

शेष हाशिया - गांव या एक देश में खुदा तआला के आदेश से पानी बरसाना चाहते हैं तो वे स्वयं तो पानी नहीं बन सकते और न आग से पानी का काम ले सकते हैं बल्कि बादल को अपनी आकृष्ट करने वाली प्रेरणाओं से बांछित स्थान पर पहुंचा देते हैं और आदेश के प्रबंधक बन कर जिस संख्या और गुणवत्ता, सीमा और अनुमान तक इरादा किया गया है बरसा देते हैं। बादल में वे समस्त शक्तियां मौजूद होती हैं जो एक बेजान, बेइरादा और बे-समझ वस्तु में उसकी स्थूल अवस्था और पार्थिव विशेषता की दृष्टि से हो सकते हैं। और फ़रिश्तों की अपनी ज़िम्मेदारी वास्तव में वितरण और उपाय होता है। इसीलिए वे आदेशों के वितरण करने वाले तथा प्रबंध करने वाले कहलाते हैं। इल्का और इल्हाम भी फ़रिश्ते करते हैं वह भी प्रकृति को ध्यान में रखते हुए ही होता है। उदाहरणतया वह इल्हाम जो वे खुदा तआला के चुने हुए बन्दों पर करते हैं दूसरों पर नहीं कर सकते। बल्कि उस ओर ध्यान ही नहीं देते। और इसी नियम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता

शेष हाशिआ का हाशिया - अपने-अपने स्थान पर जारी होता है और आत्मशुद्धि के समस्त नियम सुरक्षित होते हैं, और हर एक कार्य और कलाम सीमाओं की सुरक्षा की दृष्टि से पूर्ण करता है। अर्थात् नमी के स्थान पर नमी और कठोरता के स्थान पर कठोरता और आदर-सत्कार के स्थान पर आदर-सत्कार तथा स्वयं को ऊंचा समझने के स्थान पर ऊंचा समझना। ऐसा ही समस्त शक्तियों से यथास्थान काम लेता है। यह श्रेणी जनीन (भ्रूण) की उस श्रेणी से समानता रखती है कि जब वह मुज़गः की अवस्था से उन्नति करके इन्सानी शक्ल का एक पूर्ण ढांचा प्राप्त कर लेता है, और हड्डी के स्थान पर हड्डी प्रकट हो जाती है और मांस के स्थान पर मांस शेष रहता है हड्डी नहीं बनती तथा समस्त अंगों में परस्पर पूर्ण रूप से अन्तर पैदा हो जाता है। परन्तु अभी सुन्दरता और ताज़गी और अंगों में पूर्ण विकास नहीं होता केवल ढांचा होता है जो बारीक दृष्टि से दिखाई देता है। तत्पश्चात् खुदा की कृपा निरन्तर सामर्थ्यों से अनुकूल करके और आत्मशुद्धि की पूर्णता तक पहुंचा कर और खुदा में लीन होने (फ़ना फ़िल्लाह) के अन्तिम बिन्दु तक खींच कर उसके ढांचे के शरीर

अर्थात् जिब्राईल हमेशा हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के साथ ही रहता था एक पल के लिए भी उन से अलग नहीं होता था, यहां तक कि उनके साथ ही आकाश पर गया। **यहां दो बातें अत्यन्त खेदजनक दर्शकों के ध्यान देने योग्य हैं-**

(1) प्रथम यह कि इन मौलवियों की तो यह आस्था थी कि जिब्राईल वह्यी लेकर आकाश से नबियों पर यदा-कदा उतरता था और वह्यी पहुंचा कर फिर

शेष हाशिया - के अनुमान पर फरिश्तों से सहायता पाता है। उदाहरणतया जब अल्लाह तआला का इरादा होता है कि किसी दवा से किसी को दस्त आए तो वैद्य के दिल में फरिश्ता डाल देता है कि अमुक रेचक की दवा इसे खिला दो। तब वह तर्बुद (रेचक दवा) खयाशीर या शीर-ख़िशत या सक्रमूनिया या सनाय या कस्टर आयल, या कोई और चीज़ जैसे दिल में डाला गया हो उस बीमार को बता देता है और फिर फरिश्तों की सहायता से उस दवा को तबियत स्वीकार कर लेती है उलटी नहीं आती। तब फरिश्ते उस दवा पर अपना प्रभाव डालकर शरीर में उसके असर को पहुंचाते हैं और खुदा की आज्ञा से दूषित तत्वों का निकलना आरंभ हो जाता है। खुदा तआला ने बड़ी बुद्धिमत्ता तथा पूर्ण कुदरत से भौतिक विद्याओं तथा कलाओं के सिलसिले को भी नष्ट नहीं होने दिया और अपनी खुदाई के अधिकारों तथा स्थायी क़ब्जे को भी स्थगित नहीं रखा। और यदि खुदा तआला इतना बारीक से बारीक अधिकार अपनी सृष्टि के रोगों तथा उसके जीवित रहने और मरने पर न होता तो वह हरगिज़ खुदा न ठहर

शेष हाशिए का हाशिया - पर भिन्न-भिन्न प्रकार की बरकतों का मांस भर देती हैं और उस मांस से उस की शक्ल को चमकीला और उसके सम्पूर्ण ढांचे को शोभायमान कर देती है। तब उसके चेहरे पर पूर्णता का प्रकाश बरसता है और उसके शरीर पर सर्वांगपूर्ण होने की चमक-चमक दिखाई देती है। पैदायश की यह श्रेणी भौतिक पैदायश की उस श्रेणी के समान होता है कि जब जनीन (भ्रूण) के ढांचे को हड्डियों पर मांस चढ़ाया जाता है तथा सुन्दरता और अंगों का विकसित होना प्रकट किया जाता है। इसके बाद रूहानी पैदायश की छठी श्रेणी है जो -

ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ (अलमोमिनून-23/15)

का चरितार्थ है। वह श्रेणी अनश्वरता है जो फ़ना होने के बाद मिलती है जिसमें रूहुल कुदुस पूर्ण रूप से प्रदान किया जाता है और एक रूहानी जीवन की रूह मुष्य के अन्दर फूंक दी जाती है। ऐसा ही ये छः श्रेणियां खुदा तआला के पवित्र कुर्आन में भी इकट्ठी हैं। **पहली-** अक्षरों की श्रेणी जो खुदा के कलाम पर अमल करने वाला और खुदा की

अविलम्ब आकाश पर चला जाता था। अब इस आस्था के विरुद्ध हज़रत ईसा के बारे में एक नई आस्था गढ़ी (बनाई) गई। और वह यह कि हज़रत ईसा की वह्यी के लिए जिब्राईल आकाश पर नहीं जाता था अपितु वह्यी स्वयं आकाश से गिर पड़ती थी और जिब्राईल एक पल के लिए भी हज़रत ईसा से अलग नहीं होता था। उसी दिन आकाश का मुंह जिब्राईल ने भी देखा जब हज़रत ईसा

शेष हाशिया - सकता और न तौहीद सही हो सकती। हां यह बात सही है कि खुदा तआला ने इस संसार में नहीं चाहा कि संसार के ये समस्त रहस्य नज़रों में अत्यन्त स्पष्ट होते तो फिर उन पर ईमान लाने का कुछ भी सवाब (पुण्य) न होता। उदाहरणतया यदि लोग खुदा तआला को अपनी आंखों से देख लेते और उसके फरिश्तों को देख लेते तो फिर ये जानकारीयां भी उन सम्पूर्ण जानकारीयों की मद (पेटी) में सम्मिलित हो जाते जिसे मनुष्य ज्ञानेन्द्रियों में उन बातों का मानना मुक्ति का कारण न ठहर सकता। जैसा कि अन्य दूसरे सैकड़ों मालूम मामलों का मानना मुक्ति के कारण नहीं हैं। उदाहरणतया हम इस बात को मानते हैं कि वास्तव में सूर्य और चन्द्रमा मौजूद हैं और पृथ्वी पर सैकड़ों प्रकार के जानवर, सैकड़ों प्रकार की बूटियां, सैकड़ों प्रकार की खानें और नदियां तथा पर्वत मौजूद हैं किन्तु क्या यह मानने से हमें कोई सवाब (पुण्य) प्राप्त होगा या हम इन वस्तुओं का अस्तित्व स्वीकर करने से खुदा तआला के सानिध्यप्राप्त (मुकर्रब) हो जाएंगे? कदापि नहीं। फिर इसका

शेष हाशिए का हाशिया - किताब की बातों के लिए बतौर बीज के हैं जिनके वांछित अर्थों से कुछ भी हिस्सा नहीं। हां उनकी प्राप्ति के लिए एक भविष्य में उजागर होने की योग्यता रखते हैं। **दूसरी-** कलिमात की श्रेणी जो इस बीज द्वारा बाहरी प्रकटन के रूप में आए जिनको वांछित अर्थों से कुछ हिस्सा नहीं परन्तु उनकी प्राप्ति के लिए एक निकट माध्यम हैं। **तीसरी-** उन अपूर्ण वाक्यों की श्रेणी जो अभी वांछित कलाम की पूर्ण श्रेणी तक नहीं पहुंचे थे, क्योंकि अभी उतरने का सिलसिला अपूर्ण था और खुदा तआला के कलाम ने अभी अपना पूर्ण चेहरा नहीं दिखाया था। परन्तु उन वाक्यों को वांछित अर्थों से एक बहुत बड़ा हिस्सा था। इसलिए वह खुदा के कलाम के लिए कुछ अंगों के तौर पर ठहरे जिन का नाम न्यूनाधिकता की दृष्टि से आयतें और सूरतें रखा गया। **चौथी-** उसका सर्वांगपूर्ण, विस्तृत, बुरे-भले में अन्तर करने वाले कलाम की श्रेणी जो सब उतर चुकी और समस्त वांछित विषयों और चिकित्सा संबंधी विद्याएं, किस्से, खबरें, कानून, क्राइदे, दण्ड और वादे, डराने वाली बातें और खुश खबरियां कठोरता और नम्रता, अनुदारता और उदारता, वास्तविकताओं और रहस्यों पर पूर्णतया

आकाश पर चले गए। अन्यथा इससे पहले तैतीस वर्ष तक निरन्तर दिन-रात पृथ्वी पर रहे और एक पल के लिए भी हज़रत ईसा से अलग नहीं हुए। और तैतीस वर्ष तक निरन्तर अपना वह आकाशीय मकान जो हज़ार कोस की लम्बाई, चौड़ाई से कुछ कम नहीं निर्जन और सुनसान छोड़ दिया। हालांकि सही हदीसों से प्रमाणित है कि आकाश एक पल के लिए भी एक बालिशत भर भी फ़रिशतों

शेष हाशिया - क्या कारण है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के फ़रिशतों को मानता है, स्वर्ग और नर्क के अस्तित्व पर ईमान लाता है और क़यामत में कर्म के तराजू को स्वीकार करता है, क़यामत के सिरात पुल पर सच्चे दिल से विश्वास रखता है और उस वास्तविकता को मानता है कि ख़ुदा तआला की किताबें हैं जो दुनिया में उतरती हैं और उसके रसूल भी हैं जो दुनिया में आए हैं और उसकी तरफ से शरीरों का जी उठने का विधान भी है जो एक दिन होगा, और ख़ुदा भी मौजूद है जो वास्तव में एक है, उसका कोई भागीदार नहीं। तो वह व्यक्ति ख़ुदा के नज़दीक मुक्ति पाने योग्य ठहर जाता है। प्यारो!! निश्चित समझो कि इसका यही कारण है कि यह व्यक्ति ख़ुदा तआला पर जो अभी ग़ैब के पर्दे में है ईमान लाता है और उसकी किताब की ग़ैबी ख़बरों को सही समझता है तो वह ख़ुदा तआला के नज़दीक एक सच्चा और शुभ विचारों वाला, शुद्ध विचारधारा वाला और आज्ञाकारी ठहरता है। तब उस सच्चाई की बरकत से क्षमा किया जाता है अन्यथा अकेली जानकारियों का मुक्ति से संबंध ही क्या

शेष हाशिए का हाशिया - आधारित है। **पाँचवीं-** सरस एवं सुबोध होने की श्रेणी जो सौन्दर्य और सजावट के लिए उस कलाम पर अनादि काल से चढ़ाई गई। **छठी-** बरकत और प्रभाव तथा आकर्षण की रूह की श्रेणी जो उस पवित्र कलाम में मौजूद है, जिसने सम्पूर्ण कलाम पर अपना प्रकाश डाला और उसे जीवित तथा प्रकाशमान कलाम सिद्ध किया।

इसी प्रकार प्रत्येक बुद्धिमान और सरल भाषा में बात करने वाले मुंशी के कलाम में यही छः श्रेणियां एकत्र हो सकती हैं, यद्यपि वह कलाम चमत्कार की सीमा तक नहीं पहुंचता, क्योंकि जिन अक्षरों में कोई कलाम लिखा जाएगा चाहे वे अरबी हों, अंग्रेज़ी या हिन्दी पहले उनका अस्तित्व आवश्यक है। तो यह तो पहली श्रेणी हुई जो बांछित विषयों की अभिव्यक्ति के लिए एक प्रारंभिक स्तर है, परन्तु उन से कुछ हिस्सा नहीं रखता। फिर इसके बाद दूसरी श्रेणी कलिमात की है जो निश्चित अक्षरों से पैदा होंगे, जिनका अर्थ एवं बांछित विषयों में से अभी कुछ हिस्सा नहीं परन्तु उन्हें प्राप्त करने के लिए एक निकट माध्यम है। फिर इसके बाद तीसरी श्रेणी वाक्यों की है जो अभी बांछित अर्थों की पूर्णरूप

से खाली नहीं रहता और तैतीस वर्ष तक जो हज़रत ईसा को वह्यी पहुंचाते रहे उसकी पद्धति भी समस्त नबियों से निराली निकली। क्योंकि बुखारी, ने अपनी सही में और ऐसा ही अबू दूऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, और ऐसा ही मुस्लिम ने भी इस पर सहमति की है कि जिब्राईल का यदा-कदा नबियों पर वह्यी के साथ आसमान से उतरना होता है (अर्थात् वह चमक जिसकी हम व्याख्या कर आए

शेष हाशिया - है। क्या यदि कोई क्रयामत के दिन में कुछ पर्दों के हटने के बाद यह कहे कि यह स्वर्ग और नर्क जो सामने दिखाई दे रहा है और ये फ़रिश्ते जो पंक्ति बद्ध खड़े हैं तथा यह तराजू जिस से कर्म तुल रहे हैं और यह समस्त लोकों का प्रतिपालक जो अदालत पर बैठा है इन सब बातों पर अब मैं ईमान लाया तो क्या ऐसे ईमान से वह मुक्ति पा लेगा? हरगिज़ नहीं। फिर यदि मुक्ति नहीं पाएगा तो इसका कारण क्या है? क्या इसका यह कारण नहीं कि उस समय उसने उन समस्त बातों को देख लिया है जो इससे पहले ग़ैब के पर्दे में थीं। इसलिए सवाब (पुण्य) का वह अवसर जाता रहा जो केवल उस व्यक्ति को मिल सकता है जो उन व्यापक सबूतों से अनजान हो और केवल बारीक लक्षणों से निष्कर्ष निकाल कर बात की सच्चाई तक पहुंच गया हो। अफ़सोस कि वे लोग जो फ़लसफ़े (दर्शन शास्त्र) पर मरे जाते हैं उनकी अक़लों पर यही पर्दा पड़ा हुआ है कि वे

शेष हाशिए का हाशिया - से संग्रहीत तो नहीं परन्तु उन में से कुछ हिस्सा रखते हैं और उस विषय के लिए जो मुंशी (लेखक) के मस्तिष्क में है कुछ अंगों के तौर पर हैं। फिर चौथी श्रेणी पूर्ण संग्रहीत कलाम की है जो मुंशी (लेखक) के दिल में से निकल कर पूर्ण रूप से कागज़ पर लिखी जा चुकी है और समस्त अर्थों तथा वांछित अर्थों को अपने अन्दर एकत्र रखती है। फिर पांचवी श्रेणी यह है कि उन सादा वाक्यों और इबारतों पर सरसता तथा सुबोधता का रंग चढ़ाया जाए और उत्तम वर्णन शैली के नमक से नमकीन (सुन्दर) किया जाए। फिर छठी श्रेणी जो अविलम्ब उस श्रेणी के अधीन है यह है कि कलाम में प्रभावी होने की एक जान पैदा हो जाए जो दिलों को अपनी ओर आकर्षित कर ले और तबियतों में घर कर ले। अब विचार करके देख लो कि ये छः श्रेणियां पूर्णतया उन छः श्रेणियों के समान और उनकी समरूप हैं जिन का पवित्र कुर्आन में नुत्फः (वीर्य), अलकः, मुज़गः और कुछ हड्डियां अर्थात् मनुष्य की शक्ल का कुछ ढांचा तथा मनुष्य की पूरी शक्ल और ज़िन्दा इन्सान नाम रखा है। और हमने इरादा किया था कि इस आरोप का उत्तर भी लिखें

हैं) और समर्थन में इब्ने जरीर तथा इब्ने कसीर ने यह हदीस भी लिखी है-

عن النّوّاس بن سمعان رضی اللّٰه تعالیٰ عنه قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیہ وسلم اذا اراد اللّٰه تبارک و تعالیٰ ان یوحى بامرہ تکلم بالوحى فاذا تکلم اخذت السّموات منه رجفة او قال رعدة شديدة من خوف اللّٰه تعالیٰ فاذا سمع بذلك اهل السّموات صعقوا و خروا للّٰه سجّدا

शेष हाशिया - इस बात पर विचार नहीं करते कि यदि ख़ुदा की हस्ती का ज्ञान, फ़रिश्तों के अस्तित्व का ज्ञान, मुर्दों के जी उठने का ज्ञान, स्वर्ग-नर्क का ज्ञान, नुबुव्वत और रिसालत का ज्ञान ऐसे मांजे जाते और स्पष्ट तौर पर दिखाए जाते कि जैसे ज्यामिति, हिसाब तथा कुछ भाग भौतिक विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र और अंतरिक्ष विज्ञान खोले गए हैं तो फिर ऐसे खुले खुले ज्ञान का मानवीय मुक्ति से संबंध ही क्या था? जबकि मुक्ति की वास्तविकता यह है कि वह अल्लाह तआला के प्यार से भरा हुआ एक फ़ज़ल (कृपा) है जो सत्यनिष्ठों, सच्चों और सच्चे ईमानदारों तथा पूर्ण वफ़ादारों और ग़ैब की ख़बरों के मानने वालों को मिलता है। तो फिर स्पष्ट और खुले खुले ज्ञानों का मानना किस ईमानदारी, सच्चाई और वफ़ादारी को सिद्ध कर सकता है। हम स्पष्ट तौर पर देखते हैं कि जैसे हम इस बात के क़ायल हैं कि चार का आधा दो है ऐसे ही एक प्रथम श्रेणी का बदमाश भी ऐसी बात

शेष हाशिए का हाशिया - कि पृथ्वी क्यों चार दिन में बनाई गई और आकाश दो दिन में तथा क्यों यह लिखा है कि ख़ुदा तआला के अर्श को चार फ़रिश्ते उठा रहे हैं और क़यामत के दिन आठ उठाएं। तथा इसके क्या अर्थ हैं कि प्रारंभ में ख़ुदा का अर्श पानी पर था, परन्तु चूंकि अब समय बहुत कम है और लम्बा अधिक हो गया है और इन आरोपों के उत्तर उच्चकोटि के पूर्ण रहस्यों एवं वास्तविकताओं से भरे हुए हैं जो बहुत विस्तार चाहते हैं इसलिए हम इस हाशिए को अभी समाप्त करते हैं और इन्शाअल्लाह बराहीन अहमदिया के भाग पंचम में ये समस्त उच्चकोटि के मआरिफ़ का उल्लेख करके दिखाएं और लोगों पर प्रकट करेंगे कि हमारे जल्दबाज़ और मूर्ख विरोधियों ने ऐसे आरोप करने में ज्ञान और युक्ति से अपनी कितनी मूर्खता व्यक्त की है तथा कैसे वे और उनके धर्म सच्चाई के रहस्यों से दूर पड़े हुए हैं तथा पवित्र कुर्आन कैसे उत्तम श्रेणी की वास्तविकताएं, मआरिफ़ (आध्यात्म ज्ञान), उत्तम बातें और रहस्य अपनी पवित्र शिक्षा में जमा रखता है तथा कैसे समस्त रूहानी ख़ूबियों और पर छाया हुआ है। अन्त में हम दुआ करते हैं कि हे शक्तिमान ख़ुदा! हे अपने

فَيَكُونُ أَوَّلُ مَنْ يَرْفَعُ رَأْسَهُ جِبْرَائِيلُ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ فَكَلِمَهُ
 اللَّهُ مِنْ وَحْيِهِ بِمَا أَرَادَ فَيَمْضِي بِهِ جِبْرَائِيلُ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى
 الْمَلَائِكَةِ كُلِّهَا مِنْ سَمَائِ إِلَى سَمَائٍ يَسْأَلُهُ مَلَأَتْ كِتَابَهَا مَاذَا قَالَ رَبُّنَا يَا
 جِبْرَائِيلُ فَيَقُولُ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَالَ الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ فَيَقُولُونَ
 كُلُّهُمْ مِثْلَ مَا قَالَ جِبْرَائِيلُ فَيَنْتَهِي جِبْرَائِيلُ بِالْوَحْيِ إِلَى حَيْثُ أَمَرَهُ اللَّهُ
 تَعَالَى مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ-

अर्थात् नवास बिन समआन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

शेष हाशिया - का क्राइल (मानने वाला) होता है। हम संसार में हजारों बल्कि करोड़ों चीजों को निश्चित एवं अटल तौर पर मानते हैं और उनके अस्तित्व में लेशमात्र भी सन्देह नहीं करते। तो क्या उनके मानने से हमें कोई सवाब (पुण्य) प्राप्त हो सकता है? हरगिज नहीं। यही कारण है कि खुदा तआला ने अपने निशानों को भी ऐसे व्यापक तौर से अपने नबियों के माध्यम से प्रकट नहीं किया, जैसा हमेशा से संसार के मूर्ख लोग मांग करते रहे हैं बल्कि जिन की योग्यताओं पर पर्दा था उन पर आजमायश का पर्दा भी डाल दिया जैसा कि यह वर्णन पवित्र कुर्आन में मौजूद है कि मक्का के मूर्ख यह निवेदन करते थे कि हम शर्त पर ईमान ला सकते हैं कि अरब के समस्त मुद्दे जीवित किए जाएं या यह कि हमारे सामने एक सीढ़ी लगा कर आकाश पर चढ़ जाओ और हमारे सामने वहीं आकाश से उतरो और खुदा की किताब साथ लाओ जिसे हम

शेष हाशिए का हाशिया - बन्दों के पथ-प्रदर्शक! जैसा तूने इस युग को आधुनिक विज्ञान के प्रकटन का युग ठहराया है। ऐसा ही पवित्र कुर्आन की वास्तविकताएं और मआरिफ़ इन लापरवाह क्रौमों पर प्रकट कर और अब इस युग को अपनी ओर और अपनी किताब की ओर तथा अपनी तौहीद की ओर खींच ले। कुफ़्र और शिर्क बहुत बढ़ गया तथा मुसलमानों में आध्यात्मिकता की बहुत कमी हो गई है। अब हे कृपालु! पूरब और पश्चिम में तौहीद (एकेश्वरवाद) की एक हवा चला और आकाश पर का एक निशान प्रकट कर। हे दयालु! तेरी दया की हमें बहुत आवश्यकता है। हे पथ-प्रदर्शक! तेरे निर्देशों की हमें अत्यावश्यकता है। मुबारक वह दिन जिसमें तेरे प्रकाश प्रकट हों, क्या शुभ है वह घड़ी जिसमें तेरी विजय का नगाड़ा बजे।

تَوَكَّلْنَا عَلَيْكَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِكَ وَأَنْتَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

(इसी से)

अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस समय ख़ुदा तआला इरादा करता है कि कोई व्हयी का आदेश अपनी ओर से उतारे तो व्हयी के माध्यम से वार्तालाप करता है अर्थात् ऐसी बातचीत करता है जो अभी संक्षेप पर आधारित होती है और उस पर गोपनीय अर्थ की एक चादर होती है। तब उस गोपनीय अर्थ वाली बात से आकाशों पर एक कम्पन पड़ जाता है, जिससे वह भयावह वार्तालाप समस्त आकाशों में फिर जाता है तथा कोई नहीं समझता कि इसके क्या मायने हैं और ख़ुदा के भय से प्रत्येक फ़रिश्ता कांपने लगता है कि ख़ुदा जाने क्या होने वाला

शेष हाशिया - हाथ में लेकर पढ़ लें। और वे मूर्ख नहीं समझते थे कि यदि वास्तविकता इतनी प्रकट हो जाए तो फिर इस संसार और क्रयामत (प्रलय) में अन्तर क्या रहा। ऐसे व्यापक निशानों के बाद उस स्वीकारने पर ईमान का शब्द क्योंकर चरितार्थ करेंगे? कौन व्यक्ति है जो व्यापक और खुली-खुली सच्चाइयों को स्वीकार नहीं करता। अतः दर्शन शास्त्रियों के विचारों की बुनियाद ही ग़लत है। वे चाहते हैं कि समस्त ईमान से संबंधित बातों को जाँची परखी की हुई विद्याओं में सम्मिलित कर दें तथा फ़रिश्तों, स्वर्ग-नर्क और ख़ुदा तआला का अस्तित्व ऐसा सिद्ध हो जाए जैसा कि आजकल के अनुसंधानों से धरती की अधिकतर आबादियों और बहुत सी वनस्पतियों तथा खानों का पता लग गया है। किन्तु जिस चीज़ को ख़ुदा तआला ने पहले दिन से मनुष्य की मुक्ति का मार्ग निकालने के लिए ईमानी बातों में सम्मिलित कर दिया है वह ख़ुदा के इरादे के विपरीत इस श्रेणी की हिदायत तक पहुंच जाए? हां जब मनुष्य ईमान की श्रेणी से इफ़्रान (अध्यात्म) के मरतबे पर उन्नति करता है तो निस्सन्देह ये समस्त बातें हिदायत के रूप में दिखाई देती हैं, बल्कि ज्यामिति के सबूतों से बढ़कर इनका सबूत नज़र आता है क्योंकि ज्यामिति के सबूत प्रायः काल्पनिक दायरों (फ़र्जी घेरों) पर आधारित हैं। परन्तु धार्मिक बातें इफ़्रान के मरतबे पर भ्रम और सन्देह से मुक्त होती हैं और संसार में एक चीज़ जितनी अधिक से अधिक व्यापक तौर पर सिद्ध हो सकती है, उसी प्रकार से उन समस्त आस्थाओं का सबूत मिल जाता है बल्कि ऐसा उच्चतम सबूत कि संसार में उसका कोई नमूना नहीं पाया जाता। परन्तु अभाग्य मनुष्य इन मार्गों की ओर थोड़ी भी रुचि नहीं दिखाता तथा उन मार्गों से पूर्ण विश्वास तक पहुंचना चाहता है जिनको ख़ुदा तआला के अनादि क़ानून-ए-कुदरत ने उन्हें ज्ञात करने के लिए निर्धारित ही नहीं किया। इसका उदाहरण ऐसा ही है जैसे कोई किसी मिठाई को आंख पर रख कर उसका मीठा या कड़वा होना परखे या आँखों को बन्द करके कानों से

है और उस भयावह आवाज़ को सुनकर प्रत्येक फ़रिश्ते पर मूर्च्छा छा जाती है और वे सज्दे में गिर जाते हैं। फिर सर्वप्रथम जिब्राईल अलैहिस्सलाम सज्दे से सिर उठाता है और खुदा तआला उस व्हयी का सम्पूर्ण विवरण उसे समझा देता है और अपनी मनोकामना और मनोरथ से सूचित कर देता है। तब जिब्राईल उस व्हयी को लेकर सब फ़रिश्तों के पास जाता है जो विभिन्न आकाशों में हैं और हर एक फ़रिश्ता उस से पूछता है कि यह भयावह आवाज़ कैसी थी और इसका अभिप्राय क्या था। तब जिब्राईल उनको यह उत्तर देता है कि यह एक सच बात है और खुदा तआला बुलन्द तथा अत्यन्त महान है। अर्थात् यह व्हयी उन वास्तविकताओं में से है जिन का प्रकट करना उस **श्रेष्ठ और महान (खुदा)** ने समयानुसार हित में समझा है तब वे सब उस से वार्तालाप करते हैं फिर जिब्राईल उस व्हयी को उस स्थान पर पहुंचा देता है जिस स्थान पर पहुंचाने के लिए उसे आदेश था चाहे आकाश अथवा पृथ्वी।

अब इस हदीस से ज्ञात हुआ कि व्हयी के उतरने के समय जिब्राईल

शेष हाशिया - देखने का काम लेना चाहे, परन्तु याद रहे कि यह बात भी नहीं कि ईमान की श्रेणी में खुदा तआला इन समस्त बातों के स्वीकार कराने में अपने बन्दों को केवल ताक़त से बढ़कर कष्ट देना चाहा है बल्कि उनके स्वीकार करने के लिए उत्तम प्रमाण दिए हैं जिन पर एक अक्लमंद आदमी नज़र डाल कर विश्वास का एक बहुत बड़ा भाग प्राप्त कर सकता है। उदाहरणतया यद्यपि ईमान की श्रेणी में खुदा तआला पर ईमान लाना एक ईमान बिलग़ैब (परोक्ष पर ईमान लाना) है परन्तु पवित्र कुर्आन को देखो कि वह उस रचयिता का अस्तित्व सिद्ध करने के लिए कितने तर्कों एवं सन्तोषजनक प्रमाणों से भरा हुआ है। ऐसा ही यद्यपि यह तो नहीं कि हम फ़रिश्तों को किसी इन्कारी के हाथ में पकड़ा दें या काम करते दिखा दें परन्तु सत्याभिलाषी के लिए इतना पर्याप्त है कि बारीक से बारीक सांसारिक व्यवस्था को देखकर उसकी दृष्टि में फ़रिश्तों की आवश्यकता अवश्य सिद्ध हो जाएगी और यदि ऐसा अभिलाषी नास्तिक है तो पहले हम उसे स्रष्टा के अस्तित्व (हस्ती-ए-बारी तआला) का सबूत देंगे। फिर इस बात का सबूत कि खुदा इसके अतिरिक्त हो ही नहीं सकता कि उसकी आज्ञा और इरादे के बिना एक पत्ता भी न हिल सके। फिर यह सबूत देंगे कि जिन सूक्ष्म

आकाश पर ही होता है और फिर जैसा कि खुदा तआला ने उसकी आवाज़ में शक्ति और कुदरत प्रदान की है अपने स्थान में उस वह्यी को पहुंचा देता है। इस स्थिति में यह आस्था रखना कि जैसे जिब्राईल अपने असल अस्तित्व के साथ आकाशों से हिजरत करके हज़रत ईसा के पास आ गया था और तैंतीस वर्ष तक निरन्तर उनके पास रहा और वे समस्त सेवाएं जो आकाशों पर उसके सुपुर्द थीं जिन का हम अभी वर्णन कर चुके हैं वे तैंतीस वर्ष तक स्थगित रहीं कैसी झूठी आस्था है जिससे यह भी अनिवार्य होता है कि वह्यी जिब्राईल के माध्यम के बिना स्वयं पृथ्वी पर उतरती थी और वह वह्यी पृथ्वी पर ही जिब्राईल को मिल जाती थी।

दूसरी बात पाठकों के ध्यान देने योग्य यह है कि इन मौलवियों ने बात-बात में हज़रत ईसा को बढ़ाया और हमारे सय्यद-व-मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान किया। अन्याय की बात तो यह है कि इन की आस्था हज़रत मसीह के बारे में तो यह हो कि रूहुल-कुदुस उनसे कभी पृथक

शेष हाशिया - नीतियों के साथ खुदा तआला अपने बन्दों पर सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, बादल तथा वायु इत्यादि के द्वारा अपना लाभ पहुँचा रहा है उन नीतियों को पहचानने और किसी वस्तु को यथास्थान रखने की शक्तियां उन चीजों को हरगिज़ नहीं दी गईं। जैसा कि अभी हम सिद्ध कर चुके और यह भी सिद्ध कर चुके कि खुदा तआला बिना माध्यमों के कोई कार्य नहीं करता और जिन्हें माध्यम ठहराता है उन्हें पहले उन कार्यों की परिस्थिति के अनुसार शक्तियां प्रदान करता है। उदाहरणतया बुद्धि के कार्य बुद्धिमानों से लेता है और इरादे का कार्य अच्छी राय रखने वाले, मनुष्य का कार्य मनुष्य से और जानवर का कार्य जानवर से और बारीक दृष्टि का कार्य बारीक दृष्टि से। अतः इन सबूतों के बाद निस्सन्देह फ़रिश्तों के अस्तित्व की आवश्यकता सिद्ध होती है और ईमानी बातों के लिए इतने ही सबूत की आवश्यकता है ताकि ताक़त से बढ़कर कष्ट न हो और ईमान लाने का सवाब (पुण्य) भी नष्ट न हो। क्योंकि यदि फ़रिश्तों के अस्तित्व का ऐसा सबूत दिया जाता कि मानो उनको पकड़ कर दिखा दिया जाता तो फिर ईमान, ईमान न रहता और मुक्ति (निजात) की नीति समाप्त हो जाती। इनको समझ और विचार कर और जल्दबाज़ी करने वालों में से न हो। (इसी से)

नहीं होता था और वह शैतान के स्पर्श से बरी थे और ये दोनों बातें उन्हीं की विशेषता थी। किन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में उनकी यह आस्था हो कि न रूहुल कुदुस हमेशा और हर समय उनके पास रहा और न वह नऊजुबिल्लाह कुफ्र का नक़ल करना कुफ्र नहीं होता शैतान के स्पर्श से बरी थे। इन बातों के बावजूद ये लोग मुसलमान कहलाएं, इनकी नज़र में हमारे सय्यदुल मौला **मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** मुर्दा परन्तु हज़रत ईसा अब तक जीवित। और ईसा के लिए रूहुल कुदुस सदैव का साथी परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम इससे अल्लाह की शरण माँगते हैं। इस नेमत से वंचित और हज़रत ईसा शैतान के स्पर्श से सुरक्षित, परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुरक्षित नहीं। जिन लोगों की ये आस्थाएं हों उनके हाथ से इस युग में इस्लाम को जितनी हानि पहुंच रही है इसका कौन अनुमान लगा सकता है। ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के छिपे हुए शत्रु हैं। चाहिए कि प्रत्येक मुसलमान और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा प्रेमी उन से अलग रहे। पहले नेक लोगों को सर्वथा बुराई के मार्ग से अपने तिरस्कृत कथनों के साथ सम्मिलित करना चाहते हैं। हालांकि अपने अंधेपन के कारण पहले नेक लोगों के कथनों को समझ नहीं सकते और न नबवी हदीसों की मूल वास्तविकता तक पहुंच सकते हैं। केवल धोखा देने के लिए कहते हैं कि यदि हमारा यह हाल है तो यही आस्था पहले नेक लोगों की है।

हे मूर्खों! पहले नेक लोगों का यह पद्धति हरगिज़ नहीं। यदि सहाबा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह आस्था रखते कि कभी या लम्बी अवधि तक रूहुल कुदुस आप से अलग भी हो जाता था, तो वह समय और हर एक युग की हदीसों को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वर्णन न करते। उनकी दृष्टि तो इस आयत पर थी

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ (अन्नज़्म-53/4,5)

यदि सहाबा तुम्हारी तरह शैतान के स्पर्श की आस्था रखते तो वे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सय्यदुल मासूमीन क्यों कहते। खुदा तआला से

डरो, क्यों झूठ बनाने पर कटिबद्ध हो।

مصطفیٰ را چوں فروتر شد مقام از مسیح ناصری اے طفلِ خام

मुस्ताफ़ा की श्रेणी क्योंकर कम हो गई मसीह नासिरी से हे मूर्ख लड़के।

آنکہ دستِ پاک او دستِ خداست چوں توان گفتن کہ از روحِ جد است

वह कि जिस का हाथ खुदा का हाथ है उसके बारे में कैसे कहा जा सकता है कि रूहुल कुदुस से अलग है।

آنکہ ہر کردار و قولش دینِ ماست یکدم از جبریلِ بُعدش چوں رواست
ید اللہ فوقِ ایدیم ۱۲ یعنی از روح القدس ۱۲

वह जिसका हर कथन और कर्म हमारा धर्म है तो उस से जिब्रील की अलगता एक पल के लिए भी कैसे वैध हो सकती है?

بر امام انبیاء ایں افترا چوں نے رسید از قہر خدا

नबियों के सरदार पर यह झूठ गढ़ना, तुम क्यों खुदा के क्रोध से नहीं डरते?

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में सहाबा की निस्सन्देह यह आस्था थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई कार्य तथा कोई कथन वह्यी के बिना नहीं है यद्यपि यह वह्यी संक्षिप्त हो या विस्तृत, अव्यक्त हो या व्यक्त, स्पष्ट हो या अस्पष्ट, यहां तक कि जो कुछ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विशेष मामले और वार्तालाप, एकान्त में और छुपे हुए पत्नियों से थे या जितने खान-पान एवं लिबास के संबंध में तथा रहन-सहन की आवश्यकताओं में दैनिक घरेलू मामले थे सब इसी विचार से हदीसों में सम्मिलित किए गए कि वे समस्त कार्य और बातें रूहुल कुदुस के प्रकाश से हैं। अतः अबू दाऊद इत्यादि में यह हदीस मौजूद है और इमाम अहमद कुछ माध्यम के साथ अब्दुल्लाह बिन उमरो से रिवायत करते हैं कि अब्दुल्लाह ने कहा कि मैं जो कुछ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनता था लिख लेता था ताकि मैं उसे कंठस्थ कर लूं। अतः कुछ ने मुझे मना किया कि ऐसा मत कर। क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्सान हैं कभी क्रोध से भी बात करते हैं तो मैं यह बात सुनकर लिखने से रुक गया और इस बात की रसूले

करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चर्चा की तो आप ने फ़रमाया कि मुझे उस हस्ती की क्रसम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि मुझ से जो जारी होता है चाहे कथन हो या कार्य वह सब खुदा तआला की ओर से है। यदि यह कहा जाए कि उन्हीं हदीस की पुस्तकों में कुछ बातों में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विवेचनात्मक ग़लती का भी वर्णन है। यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब कथन और कार्य वह्यी से थे तो फिर वह ग़लती क्यों हुई, यद्यपि आंहज़रत उस पर क़ायम नहीं रखे गए तो इसका उत्तर यह है कि वह विवेचनात्मक ग़लती भी वह्यी के प्रकाश से दूर नहीं थी और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुदा तआला के क़ब्ज़े से एक दम अलग नहीं होते थे। अतएव उस विवेचनात्मक ग़लती का उदाहरण ऐसा ही है जैसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ में कुछ बार भूल हुई ताकि उस के धर्म की समस्याएं पैदा हों। इसी प्रकार कभी विवेचनात्मक ग़लती हुई ताकि उस से भी धर्म की पूर्णता हो और कुछ बारीक समस्याएं उसके द्वारा पैदा हों। वह मनुष्य होने के नाते भूल भी समस्त लोगों की भांति भूल न थी अपितु वास्तव में वह्यी के समान थी, क्योंकि खुदा तआला की ओर से एक विशेष आधिपत्य था जो नबी के अस्तित्व पर विजयी होकर उसे कभी ऐसी ओर झुका देता था जिसमें खुदा तआला की बहुत सी नीतियां थीं। इसलिए हम उस विवेचनात्मक भूल को भी वह्यी से अलग नहीं समझते थे क्योंकि वह एक साधारण बात न थी अपितु उस समय खुदा तआला अपने नबी को अपने क़ब्ज़े में लेकर सार्वजनिक हितों के लिए एक प्रकाश का भूल के रूप में या ग़लत विवेचना की शैली में प्रकट कर देता था और फिर साथ ही वह्यी अपने जोश में आ जाती थी। जैसे एक चलने वाली नहर का पानी एक लाभ की दृष्टि से रोक दें और फिर छोड़ दें। तो यहां कोई बुद्धिमान नहीं कह सकता कि नहर से पानी सूख गया या उसमें से उठा लिया गया। यही हाल नबियों की विवेचनात्मक ग़लती का है कि रूहुल कुदुस तो कभी उन से अलग नहीं होता परन्तु कभी खुदा तआला कुछ हितों के लिए नबियों की समझ और संज्ञान को अपने क़ब्ज़े में ले लेता है। तब कोई

कथन या कार्य भूल या गलती के रूप में उन से हो जाता है और वह बांछित दूरदर्शिता प्रकट हो जाती है। तब फिर वह्यी का दरिया जोर से बहने लगता है जैसे उसका कभी अस्तित्व नहीं था। हज़रत मसीह एक अंजीर की ओर दौड़े गए ताकि उसका फल खाएं और रूहुल कुदुस साथ ही था परन्तु रूहुल कुदुस ने यह सूचना नहीं दी कि इस समय अंजीर पर कोई फल नहीं, इसके साथ ये समस्त लोग जानते हैं कि दुर्लभ और दुष्प्राप्य न होने के आदेश में होता है। अतः जिस हालत में हमारे सय्यद-व-मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस लाख के लगभग कथनों एवं कार्यों में सर्वथा खुदाई का ही जल्वः (प्रदर्शन) दिखाई देता है। और हर बात में, गतियों और स्थिरताओं में, कथनों और कार्यों में रूहुल कुदुस के चमकते हुए प्रकाश दिखाई देते हैं। तो फिर यदि एक आधी बात में मनुष्यता की भी गंध आए तो इससे क्या हानि। अपितु अवश्य था कि मनुष्यता (बशरियत) को निश्चित करने के लिए कभी-कभी ऐसा भी होता ताकि लोग शिर्क की विपत्ति में ग्रस्त न हो जाएं।

अन्ततः हम कुछ कथनों पर इस निबंध को समाप्त करते हैं जिन से ज्ञात होता है कि पहले नेक लोगों (बुजुर्गों) की यह आस्था कदापि न थी कि आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रूहुल कुदुस विशेष-विशेष समयों पर उतरता था और अन्य समयों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नऊजुबिल्लाह उस से सर्वथा वंचित होते थे। इनमें से वह कथन है जो **शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी** ने अपनी पुस्तक '**मदारिजुनुबुव्वत**' के पृष्ठ 42 में लिखा है जिसका सारांश यह है कि फ़रिश्ते आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह्यी के लिए स्थायी साथी और सखा हैं। अतः वह 'जामिउल उसूल' और 'किताबुलवफ़ा' से नक़ल करते हैं कि नुबुव्वत के प्रारंभ से तीन वर्ष निरन्तर इस्त्राफ़िल आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत में सेवक रहे। और फिर हज़रत जिब्राईल स्थायी मित्रता (साथ) के लिए आए। और इसके बाद लेखक **सफ़रुरसआदत** से नक़ल करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सात वर्ष के थे जब हज़रत इस्त्राफ़ील को अल्लाह तआला की ओर से आदेश हुआ कि आंहुज़रत के

सेवक रहें। अतः इस्त्राफ़ील हमेशा और हर समय आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास रहता था। और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु का ग्यारहवां वर्ष पूरा होने तक यही हाल था। परन्तु इस्त्राफ़ील एक-दो बातों के अतिरिक्त अन्य कोई बात व्ह्यी के तौर पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल में नहीं डालता था। इसी प्रकार मीकाईल भी आंहज़रत का साथी रहा। फिर इसके बाद हज़रत जिब्राईल को आदेश हुआ और वह पूरे उन्तीस वर्ष व्ह्यी से पूर्व हर समय आप स. के साथी और मित्र थे। तत्पश्चात् नुबुव्वत की व्ह्यी आरंभ हुई।

इस वर्णन से प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि जिन बुजुर्गों ने उदाहरणतया हज़रत जिब्राईल के बारे में लिखा है कि वह नुबुव्वत से पूर्व भी उन्तीस वर्ष तक हमेशा और हर समय आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्थायी साथी था। उनकी यह आस्था हरगिज़ नहीं हो सकती थी कि जिब्राईल किसी समय आकाश पर भी चला जाता था। क्योंकि किसी समय छोड़ कर चले जाना स्थायी सानिध्य और समाप्त होने वाले साथ का विरोध है। परन्तु जब इन बुजुर्गों की दूसरी आस्था को भी देखा जाए कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम का निवास स्थान आकाश ही है और वह हर एक व्ह्यी आकाश से ही लाता है। तो इन दोनों आस्थाओं को मिलाने से जो विरोधाभास पैदा होता है उससे छुटकारा पाने के लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं मिल सकता कि यह आस्था रखी जाए कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम का आकाश से उतरना वास्तविक तौर पर नहीं बल्कि उपमा के तौर पर (तम्सीली) है। और जब उतरना उपमा के तौर पर हुआ तो इसमें कुछ हानि नहीं कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम अपने उपमा स्वरूप अस्तित्व से हमेशा, हर समय, हर दम, हर पल नबियों के साथ रहे। क्योंकि वह अपने वास्तविक अस्तित्व के साथ तो आकाश पर ही है और इसी मत की पुष्टि एवं अनुमोदन शैख अब्दुल हक्र मुहद्दिस देहली ने अपनी पुस्तक 'मदारिजुनुबुव्वत' के पृष्ठ-45 में किया है। अतः वह कहते हैं कि जिब्राईल का उतरना जो कभी दह्या कल्बी या अन्य इन्सान के रूप में होता था। इसमें विवेकशील लोगों को कठिनाई है और

यह आरोप पैदा होता है कि यदि वास्तव में जिब्राईल अलैहिस्सलाम एक नया शरीर अपने लिए दह्या कल्बी के सदृश शरीर प्राप्त करके उसमें अपनी रूह दाखिल कर देते थे तो फिर वह उनका वास्तविक शरीर जिनके तीन सौ पर हैं किस हालत में होता था? क्या वह विशालकाय शरीर रूह के बगैर पड़ा रहता था और हज़रत जिब्राईल फ़ौत होकर आवागमन पद्धति अनुसार पुनः अन्य शरीर में आ जाते थे। इसके उत्तर में वह लिखते हैं कि अन्वेषकों के नज़दीक यह उपमा के तौर पर उतरना है न कि वास्तविक। ताकि वास्तव में एक शरीर को त्याग कर दूसरे शरीर में प्रवेश करना अनिवार्य हो। फिर लिखते हैं- बात यह है कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम के मस्तिष्क में दह्या कल्बी की जो ज्ञान संबंधी रूप था तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम पूर्ण कुदरत और संलग्न निष्ठा रखने के कारण उस रूप में अपने अस्तित्व का अपनी सर्वांगपूर्ण विशेषताओं सहित लाभ पहुंचा कर समरूपता के तौर पर उसमें स्वयं को प्रकट कर देते थे। अर्थात् दह्या कल्बी के रूप में बतौर समरूपता (उपमा) स्वयं को दिखा देते थे और उस ज्ञान संबंधी रूप को अपनी विशेषताओं से लिबास पहना कर नबी अलैहिस्सलाम पर समरूपता के तौर पर प्रकट कर देते थे। यह नहीं कि जिब्राईल स्वयं अपने असली अस्तित्व के साथ आकाश से उतरता था अपितु जिब्राईल अलैहिस्सलाम अपने स्थान पर आकाश में स्थापित और स्थिर रहता था और यह जिब्राईल उस वास्तविक जिब्राईल का एक उदाहरण था। अर्थात् उसका एक प्रतिबिम्ब था उसका हुबहू वही नहीं था, क्योंकि बिल्कुल जिब्राईल तो वह है जो अपने विशिष्ट विशेषताओं के साथ आकाश पर मौजूद है और उसकी वास्तविकता और प्रतिष्ठा अलग है। फिर इतना लिखने के पश्चात् कथित शैख साहिब लिखते हैं कि जिस प्रकार जिब्राईल अलैहिस्सलाम उपमा के रूप में न कि वास्तविक रूप में उतरता रहा है। यही उदाहरण रूहानियात का है जो शरीरों के रूप में साक्षात् होती हैं और यही उदाहरण खुदा तआला के समरूप का भी है जो अहले कश्फ़ को मनुष्य प्रकृति में नज़र आता है। और यही उदाहरण पूर्ण वलियों का है जो विभिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई दे जाते हैं।

खुदा तआला शैख बुजुर्ग अब्दुल हक्र मुहद्दिस को अच्छा प्रतिफल प्रदान करे, क्योंकि उन्होंने सच्चे दिल के साथ स्वीकार कर लिया कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम स्वयं नहीं उतरता अपितु एक समरूप अस्तित्व अंबिया अलैहिमुस्सलाम को दिखाई देता है और जिब्राईल अपने स्थान आकाश में स्थिर एवं क्रायम रहता है। यही आस्था इस खाकसार की है, जिस पर वर्तमान अन्धात्मा (कोर बातिन) नाम के उलेमा कुफ्र का फ़त्वा दे रहे हैं। अफ़सोस कि यह भी विचार नहीं करते कि इस बात पर सब मुफ़स्सिरों (तफ़्सीर अर्थात् व्याख्या करने वालों) तथा सहाबा ने भी सहमति की है कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम अपने वास्तविक अस्तित्व के साथ केवल दो बार आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखाई दिया है। और एक बच्चा भी इसे समझ सकता है कि यदि वह अपने वास्तविक और असली अस्तित्व के साथ आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आते तो स्वयं यह असंभव था, क्योंकि उनका वास्तविक अस्तित्व तो पूरब-पश्चिम में फैला हुआ है और उनके बाजू आकाशों के किनारों तक पहुंचे हुए हैं। फिर वे मक्का और मदीना में कैसे समा सकते थे। जब तुम वास्तविकता और असल की शर्त से जिब्राईल अलैहिस्सलाम के उतरने की आस्था रखोगे तो तुम पर अवश्य यह ऐतराज आएगा कि वह वास्तविक अस्तित्व आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के छोटे कमरे में समा गया। और यदि कहो कि वह वास्तविक अस्तित्व नहीं था तो फिर असल को त्यागने के पश्चात् तमस्सुल (समरूपता) ही हुआ या कुछ और हुआ। असल का उतरना तो उस हालत में हो कि जब आकाश में वह अस्तित्व नीचे उतर आया तो फिर सिद्ध करना चाहिए कि उसके ठहरने की कहां गुंजायश हुई। अतः यह विचार कि जिब्राईल अपने असली अस्तित्व के साथ पृथ्वी पर उतर आता था स्पष्ट तौर पर झूठ है, विशेष तौर पर जब दूसरे भाग की ओर दृष्टि डालें और इस बिगाड़ को देखें कि ऐसी आस्था रखने से यह अनिवार्य होता है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम कई बार वह्यी के वरदान से वंचित और निलंबित रहें तो फिर अत्यन्त निर्लज्जता होगी कि इस आस्था की विचार भी दिल में लाएं। शैख अब्दुलहक्र मुहद्दिस देहलवी 'मदारिजुनुबुव्वत' के

पृष्ठ 83 में लिखते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त शब्द और हदीस **वह्यी-ए-खफ़ी** हैं कुछ स्थानों के अपवाद के साथ अर्थात् 'किस्सा असराए बद्र' तथा किस्सा 'मारिया-व-असल' और 'ताबीरे नख़्ल' जो दुर्लभ और विरल हैं। और फिर उसी पृष्ठ में लिखते हैं कि औज़ाई हस्सान बिन अतियः से रिवायत करता है कि जिब्राईल का नुज़ूल (उतरना कुर्आन से विशिष्ट नहीं। बल्कि हर एक सुन्नत जिब्राईल के उतरने से है। अपितु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विवेचन भी वह्यी में से है। और फिर पृष्ठ 87 में लिखते हैं कि सहाबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हर एक कथन, कर्म, न्यून अधिक, छोटे-बड़े को **वह्यी समझते थे** और उस पर अमल करने में कुछ विलम्ब और बहस नहीं करते थे और इच्छा रखते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कुछ बतौर राज़ के और एकान्त में करते हैं वह भी ज्ञात कर लें। अतः कुछ सन्देह नहीं कि जो व्यक्ति सहाबा के हालात में शक करे कि वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रत्येक आदेश, कथन और कर्म को धर्म का सबूत कैसे समझते थे और कैसे वे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हर एक ज़माने, हर एक समय और हर एक पल को वह्यी में तन्मय जानते थे, तो इस आस्था को रखने से कि कभी जिब्राईल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ कर आकाश पर चला जाता था ख़ुदा तआला से शर्म करेगा और डरेगा कि ऐसा भ्रम भी उसके दिल में गुज़रे। परन्तु अफ़सोस कि हमारे ये उलेमा जो मुहद्दिस भी कहलाते हैं तनिक भी नहीं डरते। यदि उनकी ऐसी आस्थाओं को छोड़ना कुफ़्र है तो ऐसा कुफ़्र यदि मिले तो अहो भाग्य। हम उनके ऐसे ईमान से बहुत अप्रसन्न हैं, और ख़ुदा तआला की ओर उनके ऐसे कथनों से न्याय चाहते हैं जिनके कारण विरोधियों में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घोर अपमान हो रहा है। इन लोगों के बारे में क्या कहें और क्या लिखें जिन्होंने काफ़िरों को हंसी-ठट्ठा करने का अवसर दिया और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पद को हज़रत ईसा की अपेक्षा ऐसा और इतना घटा दिया कि जिसकी कल्पना से शरीर कांपने लगता है।

अब हम पुनः **इस्लाम की वास्तविकता की बहस** की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि यथार्थ में यह इस्लाम की वास्तविकता जिसकी शिक्षा पवित्र कुर्आन देता है कोई नई बात नहीं है, अपितु समस्त अंबिया अलैहिमिस्सालम इसी वास्तविकता को प्रकट करने के लिए भेजे गए थे, और समस्त खुदाई किताबों की शिक्षा यही है सीधे मार्ग पर क्रायम करें। परन्तु पवित्र कुर्आन की शिक्षा को जो अन्य शिक्षाओं पर पूर्ण श्रेणी की श्रेष्ठता है तो इसके दो कारण हैं-

प्रथम यह कि पहले नबी अपने युग के समस्त लोगों के लिए अवतरित नहीं होते थे अपितु वे केवल अपनी विशेष क्रौम के लिए भेजे जाते थे, जो विशेष योग्यता में सीमित और विशेष प्रकार की आदतों, आस्थाओं, शिष्टाचारों और आचार-व्यवहार में सुधार योग्य होते थे। अतः इस कारण से वे किताबें उस क्रौम के साथ विशिष्ट होने की भांति हो कर केवल उसी सीमा तक अपने साथ हिदायत लाती थीं जो उस विशेष क्रौम की स्थिति के अनुसार और उनकी योग्यता के मापदण्ड के अनुसार होती थीं।

दूसरा कारण यह कि उन नबियों को ऐसी शरीअत मिलती थी जो एक विशेष समय तक सीमित होती थी। खुदा तआला ने उन किताबों में यह इरादा नहीं किया था कि संसार के अन्त तक वे हिदायतें जारी रहें। इसलिए वे किताबें समय से विशिष्ट कानून की भांति हो कर केवल उसी समय की सीमा तक हिदायत लाती थीं जो उन किताबों के पालन करने का समय खुदा की दूरदर्शिता ने अनुमान लगा रखा था।

ये दोनों प्रकार के दोष जो हमने वर्णन किए हैं पवित्र कुर्आन पूर्णतया उन से बरी है। क्योंकि पवित्र कुर्आन के उतारने से खुदा तआला का यह उद्देश्य था कि वह समस्त लोगों, समस्त युगों और समस्त सोग्यताओं का सुधार, पूर्ति और प्रशिक्षण कर सके तथा **इस्लाम का पूरा रूप** और पूरी श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो तथा उसके प्रकटन का समय भी आ पहुंचा था। इसलिए खुदा तआला ने पवित्र कुर्आन को समस्त क्रौमों और समस्त युगों के लिए जो क्रयामत तक आने वाले थे, एक पूर्ण और व्यापक कानून की तरह उतारा और हर एक स्तर

की योग्यता के लिए लाभ-प्राप्त करने और लाभ पहुंचाने का दरवाजा खोल दिया।
जैसा कि वह स्वयं फ़रमाता है-

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٣﴾

(फातिर-35/33)

अर्थात् फिर हमने अपनी किताब का उन लोगों को वारिस किया जो हमारे बन्दों में से चुने हुए हैं। और वे तीन गिरोह हैं-

(1) एक उनमें से अत्याचारियों का गिरोह जो स्वयं पर जुल्म करते हैं अर्थात् जोर-जबरदस्ती से तामसिक वृत्ति को खुदा तआला के मार्ग पर चलाते हैं और उद्दण्ड प्रवृत्ति का विरोध करके कठिन तपस्याओं (परिश्रमों) में व्यस्त हैं।

(2) दूसरा माध्यमिक (दरमियान:) अवस्था वाले लोगों का गिरोह, जो खुदा तआला के मार्ग में अपने उद्दण्ड नफ़्स (प्रवृत्ति) से जोर-जबरदस्ती के साथ कुछ सेवाएं लेते हैं और कुछ खुदा के लिए कार्यों को सम्पन्न करने में उनका नफ़्स (प्रवृत्ति) प्रसन्नतापूर्वक उनके अधीन हो जाता है। और रुचि, प्रेम तथा निष्ठापूर्वक उन कार्यों को पूर्ण करता है। अतः वे लोग कुछ तो कष्ट सहन करके तथा कठिन परिश्रम करके खुदा तआला के आदेशों पर चलते हैं और कुछ स्वाभाविक जोश तथा हार्दिक रुचि से बिना किसी कष्ट के उनसे अपने महान प्रतिपालक की आज्ञाकारिता जारी होती है। अर्थात् अभी उनको महा तेजस्वी खुदा के इरादों एवं इच्छाओं से पूर्ण सामंजस्य प्राप्त नहीं और न नफ़्स के युद्ध एवं विरोध से पूर्णतया निवृत्ति अपितु कुछ सलूक के मार्गों में नफ़्स आज्ञाकारी और कुछ मार्गों में विरोधी है।

(3) तीसरा साबिक बिल खैरात (दान देने में अग्रसर) और उच्चतम श्रेणियों के लोगों का गिरोह है अर्थात् वह गिरोह जो तामसिक वृत्ति पर पूर्णतया विजयी होकर नेकियों में आगे निकल जाने वाले हैं, जिनके नफ़्सों की उद्दण्डता और बुराई का आदेश देना पूर्णरूपेण दूर हो गया है तथा खुदा तआला के आदेशों से और उसकी शरीअत के समस्त मार्गों से तथा उसके समस्त प्रारब्धों से और

उसकी समस्त इच्छा एवं इरादे की बातों से वे स्वाभाविक तौर पर प्रेम करते हैं न कि किसी कष्ट और बनावट से और अनुकरण एवं आज्ञाकारी होने की कोई कमी नहीं छोड़ते। और अल्लाह तआला की फ़रमाबरदारी (आज्ञाकारिता) उनके स्वभाव का भाग और उनकी जान का आराम हो जाता है। कि उसके बिना वे जीवित नहीं रह सकते और उनका नफ़्स पूर्ण सुरुचि, शोक, आनंद तीव्र, झुकाव और खुशी से भरपूर प्रफुल्लतापूर्वक ख़ुदा तआला की आज्ञा का पालन करता है और इस बात की ओर वह किसी समय और किसी स्थान और ख़ुदा के आदेश या ख़ुदा की इच्छा के बारे में मुहताज नहीं होते कि अपने नफ़्स से ज़बरदस्ती से काम लें अपितु उनका नफ़्स (वृत्ति) सात्विक वृत्ति हो जाता है और जो ख़ुदा तआला का इरादा वह उनका इरादा और जो उसकी इच्छा वह उनकी इच्छा हो जाती है तथा ख़ुदा तआला के आदेशों और इच्छाओं से ऐसा प्रेम करते हैं कि जैसा ख़ुदा तआला इन बातों से प्रेम करता है। इसी कारण वे ख़ुदा तआला की परीक्षाओं के समय पीछे नहीं हटते अपितु कुछ कदम आगे रख देते हैं। फिर इसके बाद महाप्रतापी ख़ुदा फ़रमाता है कि इन तीनों गिरोहों (वर्गों) मेरी बड़ी कृपा के पात्र और चुने हुए तथा ख़ुदा तआला के प्रिय बन्दे हैं और इसी प्रकार माध्यमिक गिरोह भी और दान करने में अग्रसर तो स्वयं प्रकट हैं।

अब स्पष्ट है कि इस आयत में महाप्रतापी अल्लाह ने अत्याचारियों (जालिमों) को भी अपने चुने हुए बन्दे और कृपा के पात्र ठहरा दिया है और उनको अपने उन प्रिय और चुने हुए तथा प्रशंसनीय लोगों में सम्मिलित कर लिया है जिनसे वह बहुत ही प्रसन्न है। हालांकि पवित्र कुर्आन इस विषय से भरा हुआ है कि महाप्रतापी ख़ुदा अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता और न्याय को छोड़ने वाले कभी कृपा के पात्र नहीं हो सकते। अतः इस तर्क से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि इस आयत में जालिमों के गिरोह से अभिप्राय वह गिरोह नहीं है जो ख़ुदा तआला का उद्दण्ड, और अवज्ञाकारी, और मुश्रिक, और काफ़िर और न्याय के मार्ग को तथा न्याय को छोड़ने वाला और ख़ुदा तआला के विरोध करने वाला है क्योंकि ऐसे लोगों को पवित्र कुर्आन लअनती और दण्ड का पात्र ठहराता है और

स्पष्ट कहता है कि खुदा तआला अत्याचारियों और हद से बढ़ने वालों को जो न्याय के मार्ग और इंसान को छोड़ देते हैं मित्र नहीं रखता। फिर वे लोग कृपा के पात्र कैसे ठहर सकते हैं और उनका नाम मुस्तफ़ा (शुद्ध और चुना हुआ), बरगुज़ीदा (उत्कृष्ट) और चुना हुआ रखा जा सकता है। अतः इन निश्चित और ठोस तर्कों से हमें मानना पड़ा कि इस जगह ज़ालिम का शब्द किसी निंदित अर्थ के लिए प्रयोग नहीं हुआ बल्कि एक ऐसे प्रशंसित एवं प्रशंसनीय अर्थों के लिए इस्तेमाल हुआ है जो दान देने में अग्रसर श्रेणी से भाग लेने के अधिकारी और उस उत्कृष्ट श्रेणी के छोटे भाई हैं। और वे अर्थ इसके अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकते कि ज़ालिम से अभिप्राय उस प्रकार के लोग रखे जाएं कि जो खुदा तआला के लिए अपनी विरोधी प्रवृत्ति पर ज़बरदस्ती करते हैं और कामवासना संबंधी भावनाओं को कम करने के लिए दिन रात कठोर परिश्रम में व्यस्त हैं क्योंकि यह तो शब्दकोश की दृष्टि से प्रमाणित है कि ज़ालिम का शब्द किसी अन्य दृष्टिकोण के बिना केवल कम करने के लिए भी आया है। जैसा कि अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में एक अन्य स्थान में फ़रमाता है-

وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا اٰی وَلَمْ تَنْقُصْ

(और उसमें कोई कमी नहीं करते थे - अनुवादक)

और खुदा तआला के मार्ग में काम भावनाओं को कम करना निस्सन्देह उन अर्थों की दृष्टि से एक जुल्म (अन्याय) है। इसके अतिरिक्त हम उन शब्द कोशों की पुस्तकों को पवित्र कुर्आन के सैकड़ों वर्षों के बाद अपने युग के मुहावरों के अनुसार तैयार हुई हैं पवित्र कुर्आन का हकम (निर्णायक) नहीं ठहरा सकते। पवित्र कुर्आन अपने शब्द कोशों के लिए स्वयं अभिभावक है और उसकी कुछ आयतें कुछ दूसरी आयतों की व्याख्या करती हैं। यह बात स्पष्ट है कि इस्तिफ़ा का सम्मानजनक शब्द कभी अन्य ज़ालिमों (अन्याय करने वालों) के लिए खुदा तआला ने इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि उन को तिरस्कृत, अपमानित, और क्रोध का पात्र ठहराया है। परन्तु यहां ज़ालिम को अपना चुना हुआ ठहरा दिया तथा कृपा का पात्र ठहराया है और इस आयत से स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो रहा है कि

जैसे माध्यमिक गिरोह इसलिए चुना हुआ है कि माध्यमिक है और दान करने में अग्रसर इसलिए चुना हुआ है कि वह दान देने में अग्रसर है। इसी प्रकार ज़ालिम भी इसलिए चुना हुआ है कि वह ज़ालिम है। फिर क्या अब इस सबूत में कुछ कमी रह गई कि इस जगह जुल्म से अभिप्राय वह जुल्म है जो ख़ुदा तआला को प्यारा लगता है। अर्थात् ख़ुदा तआला के लिए अपनी प्रवृत्ति पर जुल्म करना और काम भावनाओं को अल्लाह तआला को प्रसन्न करने के लिए कम कर देना तथा घटा देना इस प्रकार के ज़ालिमों का पवित्र कुर्आन के अन्य स्थानों में 'तव्वाबीन' (पश्चाताप करने वाले) भी नाम है जिन से अल्लाह तआला प्रेम करता है। अतएव ऐसा विचार करना नरुजुबिल्लाह बहुत बड़ा धोखा है कि इन ज़ालिमों से जो इस आयत में दर्ज हैं वे ज़ालिम समझे जाएं जो ख़ुदा तआला के बड़े अवज्ञाकारी हैं और शिर्क, कुफ़्र पाप को ग्रहण करने वाले और उस पर प्रसन्न हो जाने वाले तथा हिदायत के मार्गों से बैर रखने वाले हैं बल्कि वे ज़ालिम अभिप्राय हैं जो कामवासना संबंधी प्रबल भावनाओं के बावजूद फिर भी ख़ुदा तआला की ओर गिरते पड़ते दौड़ते हैं। इस पर एक अन्य सन्दर्भ यह है कि अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन के अवतरण का मुख्य कारण **هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ** ठहरा दिया है और पवित्र कुर्आन से सन्मार्ग पर चलने, पथ-प्रदर्शन और वरदान प्राप्त करने वाले विशिष्ट तौर पर संयमियों (मुत्तकियों) को ही ठहराया है। जैसा कि वह फ़रमाता है-

الْم ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۚ فِيْهِ ۙ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝۲/۲,۳ (अलबक्रर: - 2/2,3)

अतः इस मुख्य कारण पर दृष्टि डालकर निश्चित एवं ठोस तौर पर यह बात निर्णय पा जाती है कि ज़ालिम का शब्द इस आयत में ऐसे व्यक्ति के लिए हरगिज़ नहीं बोला जाता जो जान बूझ कर अवज्ञाकारी, उद्दण्ड और न्याय के मार्ग को छोड़ने वाला तथा शिर्क और बेईमानी अपनाने वाला हो। क्योंकि ऐसा व्यक्ति तो निस्सन्देह संयम के दायरे से बाहर है और इस योग्य कदापि नहीं है कि निम्न से निम्न प्रकार के संयमियों में उसे सम्मिलित किया जाए। परन्तु पवित्र आयत में ज़ालिम को संयमियों और मोमिनों के गिरोह में न केवल सम्मिलित

ही किया है बल्कि संयमियों का सरदार और उनमें से चुना हुआ ठहरा दिया है। अतः इस से जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं सिद्ध हुआ कि यह जालिम उन जालिमों में से नहीं हैं जो संयम के दायरे से पूर्णरूपेण बाहर हैं बल्कि इस से वे लोग अभिप्राय हैं जो अवज्ञा के अंधकार में ग्रस्त तो हैं परन्तु इसके बावजूद खुदा तआला से उद्दण्ड नहीं हैं बल्कि अपनी उद्दण्ड प्रवृत्ति से कुशती करते रहते हैं और कष्ट एवं बनावट से और जिस प्रकार बन पड़े यथा संभव कामवामना संबंधी भावनाओं से रुकना चाहते हैं परन्तु कभी प्रवृत्ति विजयी हो जाती है और अंधकार में डाल देता है और कभी वह विजयी हो जाते हैं और रो-रोकर उस काले दाग को धो डालते हैं और यह विशेषता जो उनमें मौजूद होती है वास्तव में निन्दनीय नहीं है बल्कि प्रशंसनीय, असीमित उन्नतियों का मिश्रण और कठिन परिश्रमों का माध्यम है और वास्तव में प्रवृत्ति के विरोध की यही विशेषता जो दूसरे शब्दों में ज़लूमियत के नाम से भी नामित है एक अत्यन्त प्रशंसनीय गुण मनुष्य में है जो फ़रिश्तों को भी नहीं दिया गया और इसी की ओर संकेत है जो अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا (अलहज़ाब-33/73)

अर्थात् मनुष्य में ज़लूमियत और नादानी की विशेषता थी। इसलिए उसने इस अमानत को उठा लिया जिसे वही व्यक्ति उठा सकता है जिसमें अपनी प्रकृति को विरोध और अपनी प्रवृत्ति पर कठोरता करने की विशेषता हो। अतः यह ज़लूमियत (ज़ुल्म करने) की विशेषता मनुष्य की साधना की श्रेणियों का एक मिश्रण और उसके सानिध्य के स्थानों के लिए उस एक बहुत बड़ा माध्यम प्रदान किया गया है जो कठिन परिश्रमों के कारण प्रारंभिक स्थिति में नर्क की अग्नि के रूप में प्रज्वलित है परन्तु अन्त में स्वर्ग की नेमतों तक पहुंचा देता है और वास्तव में पवित्र कुर्आन के दूसरे स्थान में जो यह आयत है –

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّي
الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا (मरयम-19/72,73)

यह प्रशंसनीय विशेषता भी वास्तव में ज़लूमियत (अंधकार) की ओर ही

संकेत करती है। और आयत का अनुवाद यह है कि तुम में से कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो आग में न पड़े। यह वह वादा है जो तेरे रब्ब ने स्वयं पर अनिवार्य और अदा करने योग्य ठहरा रखा है। फिर हम उस आग में पड़ने के बाद संयमियों को मुक्ति दे देते हैं और जालिमों को अर्थात् उनको जो मुश्रिक और उद्दण्ड हैं नर्क में घुटनों के बल गिरे हुए छोड़ देते हैं। यहां الظَّالِمِينَ पर जो अलिफ़ लाम आया है वह विशिष्ट होने का लाभ देता है। और इस से उद्देश्य यह है कि जालिम दो प्रकार के हैं-

(1) एक मुत्तक्री जालिम जिन की मुक्ति का वादा है और जो खुदा तआला के प्रिय हैं तथा जो आयत **فمنهم ظالم** में मुक्ति प्राप्त लोगों में सम्मिलित किए गए हैं।

(2) दूसरे मुश्रिक, और काफ़िर और उद्दण्ड जालिम जो नर्क में गिराए जाएंगे। और इस आयत में वर्णन किया कि संयमी भी उस आग के स्पर्श से खाली नहीं हैं। इस वर्णन से अभिप्राय यह है कि संयमी इस संसार में जो एक परीक्षा-गृह है भिन्न-भिन्न प्रकार की शैली में बड़ी शूरता से स्वयं को उस आग में डालते हैं और खुदा तआला के लिए अपनी जानों (प्राणों) को एक भड़कती हुई आग में गिराते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार के आकाशीय प्रारब्ध भी आग के रूप में उन पर आते हैं। वे सताए जाते और दुःख दिए जाते हैं और उन पर इतने बड़े-बड़े भूकम्प आते हैं कि उनके अतिरिक्त कोई उन भूकम्पों को सहन नहीं कर सकता और सही हदीस में है कि मोमिन को जो ज्वर आता है वह नर्क की आग में से है, तथा मोमिन ज्वर और अन्य कष्टों के कारण आग का भाग इसी संसार में ले लेता है। और एक अन्य हदीस में है कि मोमिन के लिए इस संसार में स्वर्ग, नर्क का रूप धारण कर लेता है। अर्थात् खुदा तआला के मार्ग में उसे बड़े भारी कष्ट नर्क के रूप में दिखाई देते हैं। फिर वह प्रसन्नतापूर्वक उस नर्क में आ जाता है तो तुरन्त स्वयं को स्वर्ग में पाता है। इसी प्रकार और भी नबवी हदीसों बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं जिनका निष्कर्ष यह है कि मोमिन इसी संसार में नर्क की आग का हिस्सा ले लेता है और काफ़िर नर्क में बलपूर्वक

गिराया जाता है परन्तु मोमिन खुदा तआला के लिए स्वयं आग में गिरता है। इसी विषय की एक और हदीस है जिस में लिखा है कि आग का एक भाग प्रत्येक मनुष्य के लिए निश्चित है। चाहे तो वह इस संसार में इस आग को अपने लिए खुदा तआला के मार्ग में स्वीकार कर ले और चाहे तो सुख चैन और लापरवाही से आयु गुज़ार दे और आखिरत (परलोक) में अपने सुख-चैन का हिसाब दे और आयत-

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۖ (मरयम-19/72)

अनुवाद :- और तुम (अत्याचारियों) में से प्रत्येक अवश्य उस में उतरने वाला है।

के एक अन्य अर्थ भी हैं और वह ये हैं कि परलोक (आखिरत) में प्रत्येक सौभाग्यशाली और अभागे को साक्षात् करके दिखा दिया जाएगा कि वह संसार में अमन के मार्गों में चला या उसने तबाही और मौत तथा नर्क के मार्ग अपनाए। अतः उस दिन वह अमन का मार्ग जो सीधा मार्ग एवं बारीक मार्ग है जिस पर चलने वाले बहुत कम हैं और जिससे बाहर जाना तथा इधर-उधर होना वास्तव में नर्क में गिरना है साक्षात् तौर पर दिखाई दे जाएगा। और जो लोग संसार में सीधे मार्ग पर चल नहीं सके वे उस दिन उस मार्ग पर भी चल नहीं सकेंगे। क्योंकि वह मार्ग वास्तव में संसार के रूहानी मार्ग का ही एक नमूना है। और जैसा कि हम अभी रूहानी आंखों से देख सकते हैं कि हमारे मार्ग के दाएं-बाएं वास्तव में नर्क है। यदि हम मार्ग को छोड़कर दायीं ओर हुए तब भी नर्क में गिरे और यदि बाईं ओर हुए तब भी गिरे और यदि सीधे सन्मार्ग पर चले तब नर्क से बच गए। यह अवस्था शारीरिक तौर पर परलोक में हमें दिखाई दे जाएगी और हम आंखों से देखेंगे कि वास्तव में एक मार्ग है जो पुल के रूप में नर्क पर बिछाया गया है, जिसके दाएं-बाएं नर्क है। तब हमें आदेश दिया जाएगा कि उस पर चलें। अतः यदि हम संसार में सन्मार्ग पर चलते रहे हैं और दाएं-बाएं नहीं चले तो हमें उस मार्ग से भी भय नहीं होगा और न नर्क की भाप हम तक पहुंचेगी और न कोई चीख-पुकार एवं भय हमारे दिल पर छाएगा बल्कि ईमान रूपी प्रकाश की शक्ति

से चमकती हुई बिजली की भांति (तेज़ी से) हम उस से गुज़र जाएंगे क्योंकि हम इस से पहले गुज़र चुके हैं। उसी की ओर महा प्रतापी खुदा आदेश देता है-

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ﴿٩٠﴾

(अन्नमल-27/90)

अर्थात् नेकी करने वालों को क़यामत के दिन उस नेकी से अधिक बदला मिलेगा और वे उस दिन प्रत्येक भय से अमन में रहेंगे। इसी प्रकार फ़रमाता है-

يُعِبَادُ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ (अज़्ज़ुखरुफ-43/69)

अर्थात् हे मेरे बन्दो ! आज के दिन तुम को कुछ भय नहीं और न तुम्हें कोई शोक हो सकता है, परन्तु जो व्यक्ति संसार में सन्मार्ग पर नहीं चला वह उस समय भी नहीं चल सकेगा और नर्क में गिरेगा और नर्क की आग का ईंधन बन जाएगा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ۖ هَلْ تَجْزَوْنَ إِلَّا مَا

(अन्नमल-27/91)

كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩١﴾

अर्थात् बुराई करने वाले उस दिन नर्क में गिराए जाएंगे और कहा जाएगा कि यह बदला वास्तव में वही तुम्हारे कर्म हैं जो तुम संसार में करते थे। अर्थात् खुदा तआला किसी पर जुल्म (अन्याय) नहीं करेगा बल्कि नेक कर्म स्वर्ग के रूप में और बुरे कर्म नर्क के रूप में प्रकट हो जाएंगे।

जानना चाहिए कि परलोक वास्तव में संसार लोक का एक प्रतिबिम्ब है और जो कुछ संसार में रूहानी तौर पर ईमान और ईमान के परिणाम तथा कुफ़्र और कुफ़्र के परिणाम प्रकट होते हैं वे परलोक (आखिरत) में व्यवहारिक तौर पर प्रकट हो जाएंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

مَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ (बनी इस्राईल-17/73)

अर्थात् जो इस संसार में अंधा है वह उस संसार में भी अंधा ही होगा। हमें उस समरूप अस्तित्व से कुछ आश्चर्य नहीं करना चाहिए और थोड़ा विचार करना चाहिए कि रूहानी बातें स्वप्न की अवस्था में साक्षात् रूप में कैसे दिखाई

दे जाती हैं और कश्फ की अवस्था तो इस से भी अद्भुत है कि संवेदना और जागने के अभाव के बावजूद रूहानी बातें भिन्न-भिन्न प्रकार के शारीरिक रूपों में इन्हीं आंखों से दिखाई देती हैं। जैसा कि कभी बिल्कुल जागने की अवस्था में उन रूहों से मुलाकात होती है जो इस संसार से गुजर चुकी हैं और वे इसी सांसारिक जीवन के तौर पर अपने असली शरीर में इसी संसार के कपड़ों में से एक लिबास पहने हुए दिखाई देती हैं और बातें करती हैं तथा कभी उनमें से पवित्र लोग खुदा तआला की आज्ञा से भविष्य की खबरें देते हैं और वे खबरें सच के अनुसार निकलती हैं और कभी बिल्कुल जागने की अवस्था में एक शर्बत या किसी प्रकार का मेवा कश्फ की अवस्था में हाथ में आता है और वह खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है। इन सब बातों में यह खाकसार स्वयं अनुभव रखता है। कश्फ के उत्कृष्ट प्रकारों में से यह एक प्रकार है जो बिल्कुल जागने की अवस्था में घटित होता है। अपने व्यक्तिगत अनुभव से यहां तक देखा गया है कि एक मीठा खाना या किसी प्रकार का मेवा या शर्बत ग़ैब (परोक्ष) से दृष्टि के सामने आ गया है और वह एक ग़ैबी हाथ से मुंह में पड़ता जाता है और जीभ की स्वाद-शक्ति उसके स्वादिष्ट खाने से आनंद उठाती है और दूसरे लोगों से बातों का सिलसिला भी जारी है और भौतिक ज्ञानेन्द्रियां भली भांति अपना कार्य कर रही हैं। यह शर्बत या मेवा भी खाया जा रहा है और उसका स्वाद और मिठास भी ऐसी ही स्पष्ट तौर पर मालूम होती है बल्कि वह स्वाद उस स्वाद से बहुत ही उत्तम होता है और यह कदापि नहीं कि वह भ्रम होता है या केवल निराधार विचार होते हैं बल्कि निश्चित तौर पर वह खुदा जो सर्वज्ञानी है एक प्रकार की पैदायश (सृजन) का तमाशा दिखा देता है। फिर जब कि इस प्रकार के खल्क (सृजन) और पैदा करने का नमूना संसार में ही दिखाई देता है और हर एक युग के आरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानी) इसके बारे में गवाही देते चले आए हैं तो फिर वह तमसीली खल्क (प्रतिरूपात्मक सृजन) और पैदायश जो आखिरत (परलोक) में होगी और कर्मों का लेखा जोखा दिखाई देगी तथा पुल-ए-सिरात दिखाई देगा तथा इसी प्रकार की अन्य बहुत सी रूहानी बातें शारीरिक रूप के

साथ दिखाई देंगी। इस से बुद्धिमान क्यों आश्चर्य करे। क्या जिसने खल्क और पैदा करने का यह प्रतिकात्मक रूपी सिलसिला संसार में ही आरिफ़ों (अध्यात्म ज्ञानियों) को दिखा दिया है उसकी कुदरत से यह दूर है कि वह आखिरत में भी दिखा दे? बल्कि इन प्रतिकात्मक रूपों को परलोक से बहुत अनुकूलता है क्योंकि जिस हालत में इस संसार में जो पूर्ण रूप से इस संसार से अलग होने का प्रकाश-स्थल नहीं है यह प्रतिरूपी जन्म पवित्रात्मा लोगों पर प्रकट हो जाता है तो फिर परलोक (आखिरत) में जो सर्वांगीण अलग होने का स्थान है क्यों दिखाई न दे।

यह बात भली भाँति स्मरण रखनी चाहिए कि आरिफ़ इन्सान पर इसी संसार में वे समस्त अद्भुत बातें कश्फी तौर पर खुल जाती हैं कि जो एक महजूब व्यक्ति किस्से के तौर पर पवित्र कुर्आन की उन आयतों में पढ़ता है जो क्रयामत के बारे में ख़बर देती हैं। फिर जिसकी दृष्टि वास्तविकता तक नहीं पहुँचती वह इन बातों से आश्चर्य में पड़ जाता है बल्कि कभी उसके दिल में ऐतराज़ पैदा होता है कि ख़ुदा तआला का अदालत के दिन तख़्त पर बैठना और फरिश्तों का पंक्ति बना कर खड़ा होना और तराजू में कर्मों का तुलना तथा लोगों का सिरात पुल पर चलना और प्रतिफल के बाद मृत्यु को बकरे की भाँति ज़िब्ह कर देना और ऐसा की कर्मों का सुन्दर या कुरूप मनुष्यों की भाँति लोगों पर प्रकट होना तथा स्वर्ग में दूध एवं शहद की नहरों का चलना इत्यादि, इत्यादि ये समस्त बातें सच्चाई और औचित्य से दूर मालूम होती हैं। परन्तु ये समस्त सन्देह इस एक ही रहस्य के हल होने से दूर हो जाते हैं कि परलोक एक प्रतिकात्मक संसार है। यह ख़ुदा तआला के भेदों में से एक भेद है कि वह कुछ वस्तुओं को प्रतिकात्मक तौर पर ऐसा ही पैदा कर देता है जैसा दूसरे तौर पर हुआ करता है। जैसे तुम देखते हो कि दर्पण में तुम्हारी पूर्ण आकृति प्रतिबिम्बित हो जाती है और तुम समझ सकते हो किस प्रकार प्रतिबिम्ब के तौर पर तुम्हारा चित्र खींचा जाता है। कैसे उन में तुम्हारी शकल-सूरत आ जाती है। फिर यदि ख़ुदा तआला रूहानी बातों की वास्तव में चित्र खींचकर तथा उनमें सच्चाई के प्राण डालकर तुम्हारी आंखों के

सामने रख दे तो इस से आश्चर्य क्यों किया जाए। अल्लाह तआला दूढ़ने वालों पर इसी संसार में ये समस्त सच्चाइयां प्रकट कर देता है और आखिरत में ऐसी कोई भी बात नहीं जिसका विवरण इस संसार में खुल न सके।

और यदि यह ऐतराज़ किसी के दिल में बेचैनी पैदा करे कि आयत-

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِّيًّا ﴿٧٣﴾ (मरयम-19/73) के बाद में यह आयत है कि

अर्थात् फिर हम नर्क में जाने के बाद संयमियों को मुक्ति देंगे और जालिमों को नर्क में गिरे हुए छोड़ देंगे। और मुक्ति देने के अर्थ में यह बात सम्मिलित है कि पहले मनुष्य किसी अज़ाब या विपदा में ग्रस्त हो फिर उस से उसको छुटकारा दिलाया जाए। किन्तु इन अर्थों की दृष्टि से नऊज़ुबिल्लाह अनिवार्य ठहरता है कि खुदा तआला के सानिध्य-प्राप्त (मुकर्रब) बन्दे किसी सीमा तक नर्क के अज़ाब में ग्रस्त हो जाएंगे और फिर उनको इस से मुक्ति दी जाएगी। इस भ्रम का उत्तर यह है कि नजात (मुक्ति) का शब्द यहां अपने वास्तविक अर्थों में प्रयोग नहीं हुआ है बल्कि इस से केवल इतना अभिप्राय है कि मोमिनों का मुक्ति प्राप्त होना हम उस समय प्रकट कर देंगे तथा लोगों को दिखा देंगे कि वे उस व्याकुलता और बेचैनी के स्थान से मुक्ति पाकर अपनी मनोकामनाओं को पहुंच गए। और पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला की यह सुन्नत (पद्धति) है कि कुछ शब्द अपनी मूल वास्तविकता से हट कर प्रयोग होते हैं। जैसा कि वह फ़रमाता है

وَاقْرَءُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا (अलहदीद-57/19)

अर्थात् अल्लाह को क़र्ज़ दो, अच्छा क़र्ज़। अब स्पष्ट है कि क़र्ज़ की असल परिभाषा के अन्दर यह सम्मिलित है कि मनुष्य आवश्यकता और मजबूरी के समय दूसरे से बाद में अदा करने के वचन पर कुछ मांगता है किन्तु अल्लाह तआला आवश्यकता से पवित्र है। अतः यहां क़र्ज़ के अर्थ में से केवल एक बात अभिप्राय ली गई है अर्थात् इस प्रकार से लेना कि बाद में उसको वापस कर देना अपने ऊपर अनिवार्य ठहरा लिया हो। इसी प्रकार यह आयत-

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ (अलबक्ररह-2/156)

मूल अर्थ से फेरी गई क्योंकि सामान्य बोलचाल की भाषा में परीक्षा लेने वाला उस परिणाम से असावधान और अपरिचित होता है जो परीक्षा के पश्चात् पैदा होता है। परन्तु इस से यहां यह मतलब नहीं बल्कि खुदा तआला के परीक्षा में डालने से यह मतलब है ताकि परीक्षा के अन्तर्गत व्यक्ति पर उनके आन्तरिक दोष या आन्तरिक विशेषताएं खोल दे। निष्कर्ष यह कि इसी प्रकार यह शब्द नजात भी अपने वास्तविक अर्थों से फेरा गया है। जैसा कि एक अन्य आयत में इसकी व्याख्या सिद्ध है और वह यह है-

وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ ۖ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦١﴾ وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۚ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

(अज्जुमर - 39/61,62)

अर्थात् क्रयामत के दिन तू देखेगा कि जिन्होंने खुदा तआला पर झूठ बोला उनके मुंह काले हैं (और क्यों काले न हों) क्या यह उचित नहीं कि अभिमानी लोग नर्क में ही गिराए जाएं और अल्लाह तआला संयमियों (मुत्तक्रियों) को मुक्ति (नजात) देगा इस प्रकार से कि उनको उनकी मनोकामनाओं तक पहुंचाएगा, उनको बुराई नहीं लगेगी और वे शोकग्रस्त न होंगे। अब यह आयत उस पहली आयत की मानो तप्सीर करती है, क्योंकि इस में मुक्ति (निजात) देने की वास्तविकता यह खोली है कि वे अपनी मनोकामनाओं को पहुंच जाएंगे और यह भी प्रकट कर दिया कि वे उस दिन बुराई के स्पर्श से बिल्कुल सुरक्षित होंगे। उनको लेशमात्र कष्ट नहीं छुएगा और शोक उनके निकट नहीं आएगा।

और इस आयत :

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا (मरयम-19/72)

के ये अर्थ भी हो सकते हैं कि वास्तव में वही लोग सम्बोधित हों कि जो नर्क के अज़ाब में गिरफ़्तार हों। फिर उन में से कुछ लोग संयम का कुछ भाग रखते हैं, उस अज़ाब से मुक्ति पाएं और दूसरे नर्क में ही गिरे रहें। ये अर्थ उस स्थिति में होंगे कि जब इस भाषण से नेक, सदाचारी और समस्त पुनीत एवं सानिध्य

प्राप्त (मुकर्रब) लोग बाहर रखे जाएं। परन्तु सच बात यह है कि अल्लाह तआला के कलाम का उद्देश्य वही अर्थ मालूम होते हैं जिसका अभी हम उल्लेख कर चुके हैं। **وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاللِّصَّوَابِ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَآبُ**
 अनुवाद:- अल्लाह ही सही बात को जानने वाला है, उसी की तरफ लौटना और वापस जाना है।

अब हम पुनः जलूमियत की बहस की तरफ लौटते हुए लिखते हैं कि जलूमियत की विशेषता जो मोमिन में है यही उसको खुदा तआला का प्रिय बना देती है तथा इसी की बरकत से मोमिन साधना के बड़े-बड़े पड़ाव तय करता और असहनीय कठिनाइयां और भिन्न-भिन्न प्रकार के नकों की जलन तथा तपन प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेता है। यही कारण है कि खुदा तआला ने जिस स्थान पर मनुष्य की उच्चतम श्रेणी की प्रशंसा की है और उसको फरिश्तों पर भी प्राथमिकता दी है। इस स्थान पर उसकी यही श्रेष्ठता प्रस्तुत की है कि वह जलूमन और जहूल है जैसा कि वह फ़रमाता है-

وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا (अल अहज़ाब-73)

अर्थात् उस अमानत को जो प्रतिपालन की पूर्ण परीक्षा है जिसको केवल पूर्ण बन्दगी उठा सकती है मनुष्य ने उठा लिया क्योंकि वह जलूम और जहूल था। अर्थात् खुदा तआला के लिए अपने नफ़्स पर सख्ती कर सकता था और खुदा के अतिरिक्त (अन्य उपास्यों) से इतना दूर हो सकता था कि उसकी कल्पना से भी उसका मस्तिष्क खाली हो जाता था। स्पष्ट हो कि हम बहुत बड़ी ग़लती करेंगे कि अगर यहां जलूम के शब्द से काफिर, उद्दण्ड, मुश्रिक और न्याय को छोड़ने वाला अभिप्राय लेंगे। क्योंकि यह जलूम-जहूल का शब्द यहां अल्लाह तआला ने मनुष्य के लिए प्रशंसा के तौर इस्तेमाल किया है न कि निन्दा के तौर पर। और यदि नऊज़ुबिल्लाह यह निन्दा में हो तो इसके अर्थ ये होंगे कि सबसे बुरा इन्सान ही था जिसने खुदा तआला की पवित्र अमानत को अपने सिर पर उठा लिया और उसके आदेश को मान लिया, बल्कि नऊज़ुबिल्लाह यह कहना पड़ेगा कि सबसे अधिक ज़ालिम और जाहिल अंबिया और रसूल थे, जिन्होंने

सर्वप्रथम इस अमानत को उठा लिया। हालांकि महा प्रतापी खुदा स्वयं फ़रमाता है कि- हमने मनुष्य को खुदाई कारीगरी के श्रेष्ठतम नमूना पैदा किया है फिर वह सब से बुरा (निकृष्ट) क्योंकि हुआ तथा नबियों को न्याय करने वालों का सरदार ठहराया है फिर वे ज़लूम और जहूल दूसरे अर्थों की दृष्टि से क्योंकि कहलाएं। इसके अतिरिक्त ऐसा विचार करने में खुदा तआला पर आरोप अनिवार्य हो जाता है कि उसकी अमानत जो वह देना चाहता था वह कोई भलाई, योग्यता और बरकत की चीज़ नहीं थी बल्कि उपद्रव और फ़साद की चीज़ थी कि उपद्रवी और ज़ालिम ने उसे स्वीकार किया और नेक लोगों ने उसे स्वीकार न किया परन्तु क्या खुदा तआला के विषय में यह बदज़न्नी करना वैध है कि जो चीज़ उसके चश्मे से निकले और जिसका नाम वह अपनी अमानत रखे जो फिर उसी की ओर अस्वीकार होने के योग्य है। वह वास्तव में नऊज़ुबिल्लाह ख़राब और अपवित्र चीज़ हो जिसको ऐसे ज़लूम के अतिरिक्त जो वास्तव में उद्दण्ड, अवज्ञाकारी तथा नेमत और न्याय से सर्वथा वंचित है कोई दूसरा स्वीकार न कर सके। अफ़सोस कि ऐसे घृणित विचारों वाले कुछ भी खुदा तआला की श्रेष्ठता की दृष्टि नहीं रखते। वे यह भी नहीं सोचते कि यदि अमानत सर्वथा भलाई है तो उसका स्वीकार कर लेना जुल्म में क्यों सम्मिलित है और यदि अमानत स्वयं उपद्रव और फ़साद की चीज़ है तो फिर वह खुदा तआला की ओर क्यों मंसूब की जाती है क्या खुदा तआला नऊज़ुबिल्लाह फ़साद (ख़राबी) का स्रोत है और क्या जो चीज़ उसके पवित्र झरने से निकलती है उसका नाम फ़साद और उपद्रव रखना चाहिए? अंधकार अंधकार की ओर जाता है और प्रकाश प्रकाश की ओर। अतः वह अमानत प्रकाश थी और मनुष्य ज़लूम-जहूल भी इन अर्थों से जो हम वर्णन कर चुके हैं एक प्रकाश है। इसलिए प्रकाश ने प्रकाश को स्वीकार कर लिया। वह उच्च श्रेणी का प्रकाश जो मनुष्य को दिया गया अर्थात् इन्सान-ए-कामिल को। वह फ़रिश्तों में नहीं था, नक्षत्रों में नहीं था, चन्द्रमा में नहीं था, सूर्य में भी नहीं था। वह पृथ्वी के समुद्रों और दरियाओं में भी नहीं था, वह लाल (पद्म), और याकूत (पुलकरत्न), और ज़मुरद (पन्ना रत्न) और

अल्मास (हीरा) और मोती में भी नहीं था। निष्कर्ष यह कि वह किसी पार्थिव और आकाशीय वस्तु में नहीं था, केवल मनुष्य में था अर्थात् इन्सान-ए-कामिल (पूर्ण इन्सान) में। जिसका सर्वांगपूर्ण व्यक्ति हमारे सय्यद-व-मौला नबियों और जीवितों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। अतः वह प्रकाश उस मनुष्य को दिया गया और उसके पदों के अनुसार समस्त समान विचार धारा रखने वालों को भी अर्थात् उन लोगों को भी जो एक सीमा तक वही रंग रखते हैं और अमानत से अभिप्राय इन्सान-ए-कामिल की वे समस्त शक्तियां, बुद्धि, ज्ञान, हृदय, प्राण, ज्ञानेन्द्रियां, भय, प्रेम, सम्मान, प्रतिष्ठा और समस्त रूहानी (आध्यात्मिक) एवं शारीरिक (भौतिक) नेमतें हैं जो खुदा तआला इन्सान-ए-कामिल को प्रदान करता है। इस आयत

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا ۚ (अन्सि-59)

के अनुसार इस सारी अमानत को खुदा तआला को वापस दे देता है। अर्थात् उसमें लीन हो कर उसके मार्ग में समर्पण कर देता है। जैसा कि हम 'हक्कीकत-ए-इस्लाम' लेख में वर्णन कर चुके हैं और यह उच्च प्रतिष्ठा पूर्ण तौर पर हमारे सय्यद, हमारे मौला, हमारे पथ-प्रदर्शक, नबी उम्मी, सादिक मस्टूक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में पाई जाती थी जैसा कि स्वयं खुदा तआला पवित्र कुर्आन में फ़रमाता है-

قُلْ إِنْ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ۖ (अल्अन्आम-163,164)
وَأَنْ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ (अल्अन्आम-154)

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ (आले इमरान-32)

فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ

وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ (अलमोमिन-67)

अर्थात् उनको कह दे कि मेरी नमाज़, और मेरी इबादत में परिश्रम और प्रयास और मेरी कुर्बानियां, और मेरा जीवित रहना और मेरा मरना सब खुदा के लिए तथा उस के मार्ग में है। वही खुदा जो समस्त संसारों का प्रतिपालक है जिसका कोई भागीदार नहीं और मुझे इस बात का आदेश दिया गया है और मैं **प्रथम मुस्लिम हूं** अर्थात् संसार के प्रारंभ से उसके अन्त तक मुझ जैसा और कोई कामिल इन्सान नहीं जो ऐसा उच्च श्रेणी का खुदा में फ़ना (लीन) होने वाला हो जो खुदा तआला की समस्त अमानतें उसको वापस देने वाला हो। इस आयत में अज्ञानी एकेश्वरवादियों का खण्डन है जो यह आस्था रखते हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरे नबियों पर पूर्ण श्रेष्ठता सिद्ध नहीं और कमज़ोर हदीसों को प्रस्तुत करके कहते हैं कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना किया है कि मुझ को यूनस बिन मत्ता से भी अधिक श्रेष्ठता दी जाए। ये मूर्ख नहीं समझते कि यदि वह हदीस सही भी हो तब भी वह बतौर विनय और विनम्रता है जो हमेशा हमारे सय्यद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत थी। हर एक बात का एक अवसर और स्थान होता है। यदि कोई नेक व्यक्ति अपने पत्र में अहक्ररुलइबादुल्लाह लिखे तो उस से यह परिणाम निकालना कि यह व्यक्ति वास्तव में सम्पूर्ण संसार यहां तक कि बुत परस्तों (मूर्ति पूजकों) और समस्त पापियों से निकृष्ट है और स्वयं इक्ररार करता है कि वह खुदा के बन्दों में सब से तुच्छ है कितनी मूर्खता और नफ़्स की शरारत है

ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि जिस हालत में अल्लाह तआला आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अव्वलुल मुस्लिमीन रखता है और समस्त अनुयायियों एवं आज्ञाकारियों का सरदार ठहराता है और सर्वप्रथम अमानत को वापस देने वाला आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ठहराता है तो फिर क्या इसके बाद किसी पवित्र कुर्आन के मानने वाले को गुंजायश है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उच्च प्रतिष्ठा में किसी प्रकार की जिरह कर सके। खुदा तआला ने उपरोक्त आयत में इस्लाम के लिए कई श्रेणियां

रख कर समस्त श्रेणियों से उच्च श्रेणी वही ठहराई है जो आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रकृति को प्रदान की। सुब्हान अल्लाह हे ख़ुदा के रसूल तेरी कितनी महान प्रतिष्ठा है-

موسیٰ و عیسیٰ ہم خلیل توند جملہ درین راہ طفیل توند

फिर शेष अनुवाद यह है कि अल्लाह तआला अपने रसूल को फ़रमाता है कि इनको कह दे कि मेरा मार्ग ही जो है सीधा मार्ग है। अतः तुम उसका अनुकरण करो अन्य-अन्य मार्गों पर मत चलो कि वे तुम्हें ख़ुदा तआला से दूर डाल देंगे। इनको कह दे कि यदि तुम ख़ुदा तआला से प्रेम रखते हो तो आओ मेरे पीछे-पीछे चलना अपनाओ। अर्थात् मेरी पद्धति पर जो इस्लाम की उच्च वास्तविकता है कदम मारो (चलो) तब ख़ुदा तआला तुम से भी प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाह (पाप) क्षमा कर देगा। इनको कह दे कि मेरा मार्ग यह है कि मुझे आदेश हुआ है कि अपना समस्त अस्तित्व ख़ुदा तआला के सुपुर्द कर दूँ और स्वयं को समस्त संसारों के प्रतिपालक के लिए निष्कपट कर लूँ अर्थात् उस में लीन होकर जैसा कि वह समस्त संसारों का प्रतिपालक है मैं समस्त संसारों का सेवक बनूँ और पूर्णतया उसी का तथा उसी के मार्ग का हो जाऊँ। अतः मैंने अपना सम्पूर्ण अस्तित्व और जो कुछ मेरा था ख़ुदा तआला का कर दिया है। अब कुछ भी मेरा नहीं जो कुछ मेरा है वह सब उसका है।

और ये भ्रम कि ऐसे अर्थ आयत ज़लूम और जहूल के पहले लोगों में से किसने किए हैं और कौन मातृभाषी में से जुल्म के ऐसे अर्थ भी करता है। इस भ्रम का उत्तर यह है कि हमें ख़ुदा के कलाम के बाद किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं। ख़ुदा के कलाम के कुछ भाग कुछ की व्याख्या हैं। फिर जिस हालत में ख़ुदा तआला ने कुछ मुत्तक्रियों (सयंमियों) का नाम भी ज़ालिम रखा है और तक्वा (सयंम) की तीन श्रेणियों में से तक्वे की प्रथम श्रेणी जुल्म को ही ठहराया है। इस से हम ने अटल और निश्चित तौर पर मसझ लिया कि इस जुल्म के शब्द से वह जुल्म, अभिप्राय नहीं है जो तक्वे से दूर तथा काफ़िरी, मुश्रिकों और अवज्ञाकारियों का आचरण है बल्कि वह जुल्म अभिप्राय

है जो साधना (सुलूक) की प्रारंभिक अवस्थाओं में मुत्तक्रियों (संयमियों) के लिए अनिवार्य शर्त है। अर्थात् कामवासना संबंधी भावनाओं पर आक्रमण करना और मनुष्यता के अंधकार को अपने नफ्स से कम करने के लिए प्रयास करना जैसा कि इस दूसरी आयत में भी कम करने के अर्थ है और वह यह है

وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا (अलकहफ़-18/34)

देखो क्रामूस और सिहाह और सिराह जुल्म के अर्थ कम करने के भी लिखे हैं और इस आयत के यही अर्थ किए हैं अर्थात् **नफ्स** **नफ्स** इसके अतिरिक्त इस अर्थ के करने में यह खाकसार अकेला नहीं, बड़े-बड़े अन्वेषक और विद्वानों ने जो उस भाषा के जानने वाले (जिनकी वह मातृ-भाषा हो) थे, यही अर्थ किए हैं। अतः उन्हीं में से फुतूहात-ए-मक्किया के लेखक हैं जो उस भाषा के जानने वाले भी हैं वह अपनी 'तफ्सीर' में जो मिस्री छापे में छप कर प्रकाशित हुई है यही अर्थ करते हैं। और उन्होंने तफ्सीर के अन्तर्गत आयत (अलअहज़ाब-33/73) **وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا**

यही अर्थ लिखे हैं कि यह ज़लूम और जहूल प्रशंसा के अर्थ में है और इस से मतलब यही है कि मोमिन इन्सान खुदा के आदेशों का पालन करने में अपने नफ्स पर इस प्रकार से जुल्म करता है कि नफ्स की भावनाओं एवं इच्छाओं का विरोधी हो जाता है और उस से उसके जोशों को कम करता है तथा घटाता है। 'तफ्सीर हुसैनी' के लेखक खवाजा मुहम्मद पारसा की तफ्सीर से नकल करते हैं कि आयत के यह अर्थ हैं कि इन्सान ने उस अमानत को इसलिए उठा लिया कि वह ज़लूम था। अर्थात् इस बात में समर्थ था कि अपने नफ्स और उसकी इच्छाओं से बाहर आ जाए अर्थात् कामवासना संबंधी भावनाओं को कम बल्कि समाप्त कर दे और खुदा में खो जाए। और मनुष्य जहूल था। इसलिए उसमें यह शक्ति है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य उपास्यों से पूर्णतया लापरवाह और अज्ञानी हो जाए और ला इलाहा इल्लल्लाह कहकर उसके अतिरिक्त का इन्कार कर दे। **इन्ने जरीर भी** जो तफ्सीर करने वालों का सरदार है इस आयत की व्याख्या में लिखता है कि ज़लूम और जहूल का शब्द प्रशंसा के अर्थ में है न

कि निन्दा में। अतः बुजुर्ग लोग तथा अन्वेषक जिनकी आंखों को खुदा तआला ने मारिफ़त के प्रकाश से प्रकाशमान किया था वे प्रायः इसी ओर गए हैं कि इस आयत के इसके अतिरिक्त अन्य कोई अर्थ नहीं हो सकते कि इन्सान ने खुदा तआला की अमानत को उठाकर ज़लूम और जहूल की उपाधि प्रशंसा के तौर पर प्राप्त की न कि निन्दा के तौर पर। अतः इब्ने कसीर ने भी कुछ रिवायतें इसी के समर्थन में लिखी हैं। यदि हम इस सम्पूर्ण आयत पर कि

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٣﴾

(अलअहज़ाब-73)

एक ध्यानपूर्वक दृष्टि डालें तो निश्चित तौर पर ज्ञात होगा कि वह अमानत फ़रिशतों, पृथ्वी, पर्वतों और समस्त नक्षत्रों पर प्रस्तुत की गई थी और उन्होंने उठाने से इन्कार किया था वह जिस समय मनुष्य पर प्रस्तुत की गई थी तो निस्सन्देह सर्वप्रथम नबियों और रसूलों की रूहों पर प्रस्तुत की गई होगी, क्योंकि वह मनुष्यों के सरदार तथा मानवता के वास्तविक अर्थ के प्रथम अधिकारी हैं। अतः यदि ज़लूम और जहूल के यही अर्थ अभिप्राय लिए जाएं जो काफ़िर, मुश्रिक और पक्के अवज्ञाकारी को कहते हैं तो फिर नऊज़ुबिल्लाह सर्वप्रथम नबियों के बारे में इस नाम को बोला जाएगा। इसलिए यह बात अत्यन्त स्पष्ट और व्यापक है कि ज़लूम और जहूल का शब्द यहां प्रशंसा के स्थान में है और स्पष्ट है कि खुदा तआला के आदेश को मान लिया जाए तथा इस से मुंह फेरना पाप का कारण नहीं हो सकता। यह तो बिल्कुल बरकत है तो फिर ज़लूम और जहूल के वास्तविक अर्थ जो अवज्ञा और उद्दण्डता को अनिवार्य हैं क्योंकि इस स्थान की स्थिति के अनुकूल हो सकते हैं। जो व्यक्ति पवित्र कुर्आन के कलाम की शैली को भली भांति जानता है उस पर यह छिपा नहीं कि कभी वह कृपालु, दयालु, महा प्रतापी (खुदा) अपने विशेष बन्दों के लिए ऐसा शब्द प्रयोग कर देता है जो प्रत्यक्ष में कुरूप होता है परन्तु अर्थ की दृष्टि से अत्यन्त प्रशंसित और प्रशंसा की बात होती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया - **وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ** (अज़्जुहा-8) अतः स्पष्ट है कि **ضَال** (ज़ाल्ल) के अर्थ प्रसिद्ध और परिचित जो अहले लुगत (उस भाषा के जानने वाले मातृभाषी) के मुंह पर चढ़े हुए हैं गुमराह (पथ भ्रष्ट) के हैं जिसकी दृष्टि से आयत के यह अर्थ होते हैं कि खुदा तआला ने (हे खुदा के रसूल) तुझे गुमराह पाया और हिदायत दी, हालांकि आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी गुमराह नहीं हुए और जो व्यक्ति मुसलमान होकर यह विश्वास रखे कि कभी आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी आयु में गुमराही का कार्य किया था तो वह काफ़िर, नास्तिक और शरीअत को निर्धारित दण्ड योग्य है बल्कि आयत के यहां वे अर्थ लेने चाहिए जो आयत की अगली और पिछली इबारत से मिलते हैं और वे ये हैं कि अल्लाह तआला ने पहले आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया-

الْمَ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۖ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۖ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۖ
(अज़्जुहा-7 से 9)

अर्थात् खुदा तआला ने तुझे यतीम (अनाथ) और असहाय पाया और अपने पास जगह दी और तुझे **ضَال** ज़ाल्ल (अर्थात् खुदा के चेहरे का प्रेमी) पाया तो अपनी ओर खींच लाया, और तुझे दरवेश (फ़क़ीर) पाया तो मालदार कर दिया। इन अर्थों के सही होने पर ये निम्नलिखित आयतें सन्दर्भ हैं जो इनके बाद आती हैं अर्थात् ये कि-

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۖ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۖ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۖ
(अज़्जुहा-10 से 12)

क्योंकि ये समस्त आयतें उपमेय-उपमान क्रमबद्ध के तौर पर हैं और पहली आयतों में जो उद्देश्य छिपा है दूसरी आयतें उसका विवरण और व्याख्या करती हैं। उदाहरणतया पहले फ़रमाया **الْمَ يَجِدْكَ يَتِيمًا** इस के मुकाबले पर यह फ़रमाया- **فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ** अर्थात् याद कर कि तू भी यतीम (अनाथ) था और हमने तुझ को शरण दी ऐसा ही तू भी अनाथों को शरण दे।

फिर इस आयत के बाद फ़रमाया- **وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ**

इसके मुकाबले पर यह फ़रमाया- **وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ** अर्थात् याद कर कि तू हमारे मिलन और सौन्दर्य का याचक और हमारी वास्तविकताओं तथा मआरिफ़ का मांगने वाला था। अतः जैसा कि हम ने बाप के स्थान पर होकर तेरा शारीरिक पोषण किया, ऐसा ही हम ने उस्ताद (शिक्षक) के स्थान पर होकर ज्ञान के समस्त दरवाजे तुझ पर खोल दिए और अपनी मुलाक़ात का शर्बत सब से अधिक प्रदान किया और जो तूने मांगा हमने सब तुझ को दिया। अतः तू भी मांगने वालों को रद्द मत कर और उनको न झिड़क। और स्मरण कर कि तू दरवेश था और तेरी जीविका के भौतिक सामान पूर्णतया कटे हुए थे, फिर खुदा स्वयं तेरा अभिभावक हुआ और दूसरों की ओर मांग ले जाने से तुझे धनवान कर दिया, न तू पिता का मुहताज हुआ न मां का, न उस्ताद का और न किसी ग़ैर की ओर याचना करने का, बल्कि ये समस्त कार्य तेरे खुदा तआला ने स्वयं ही कर दिए और पैदा होते ही उसने तुझ को स्वयं संभाल लिया। इसलिए उस का धन्यवाद कर और मुहताजों से तू भी ऐसा ही व्यवहार कर। अब इन समस्त आयतों को सामने रख कर स्पष्ट तौर पर खुलता है कि यहां **ضَالًّا** का अर्थ गुमराह नहीं है बल्कि चरम सीमा के प्रेम की ओर संकेत है, जैसा कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बारे में इसी के अनुकूल यह आयत है-

(यूसुफ़-96) **إِنَّكَ لَفِي ضَلَالٍ قَدِيمٍ**

अतः ये दोनों शब्द जुल्म और ज़लालत (गुमराही) यद्यपि इन अर्थों पर भी आते हैं कि कोई व्यक्ति संतुलन के मार्ग (अर्थात् सन्मार्ग) और इन्साफ़ को छोड़ कर अपनी कामवासनाओं संबंधी इच्छाओं के अधीन हो जाए, परन्तु पवित्र कुर्आन में प्रेमियों के बारे में भी आए हैं जो खुदा तआला के मार्ग में प्रेम की मस्ती में अपने नफ़्स और उसकी भावनाओं को पैरों के नीचे कुचल देते हैं, इसी के अनुसार हाफ़िज़ शिराज़ी का यह शेर है-

آسماں بار امانت نثوانست کشید قرعہ فال بنام من دیوانہ زدند

इस दीवानगी से हाफ़िज़ साहिब प्रेमी अवस्था और आज्ञापालन की तीव्र लालसा अभिप्राय लेते हैं। सारांश यह कि इन आयतों की अटल वास्तविकता यही है जो खुदा तआला ने मुझ पर खोली। और मैं ऐसे अर्थ हरगिज़ नहीं करूंगा जिन से एक ओर तो अनिवार्य हो जाए कि खुदा तआला की ओर से यह पवित्र अमानत नहीं थी बल्कि कोई ख़राबी की बात थी जो एक उपद्रवी ज़ालिम (अत्याचारी) ने स्वीकार कर ली तथा नेक लोगों ने उसे स्वीकार न किया और दूसरी ओर समस्त पवित्र रसूलों तथा नबियों को जो प्रथम श्रेणी पर अमानत को उठाने वाले हैं ज़ालिम (अत्याचारी) ठहराया जाए। और मैं वर्णन कर चुका हूँ कि वास्तव में अमानत और इस्लाम की वास्तविकता एक ही है। अमानत और इस्लाम वास्तव में प्रशंसित चीज़ है जिसके अर्थ ये हैं कि खुदा तआला का दिया हुआ उसी को वापस दिया जाए जैसे अमानत वापस दी जाती है। फिर जिस ने एक प्रशंसित एवं प्रिय चीज़ को स्वीकार कर लिया और खुदा तआला के आदेश से मुंह नहीं फेरा तथा उसकी इच्छा को अपनी इच्छा पर प्राथमिकता दी वह निन्दनीय क्यों ठहरे। और यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस आयत के आगे खुदा तआला फ़रमाता है-

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَ
يَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٤﴾

(अलअहज़ाब-74)

अर्थात् मनुष्य ने अल्लाह की अमानत को जो स्वीकार कर लिया तो उस से यह अनिवार्य हुआ कि मुनाफ़िक पुरुष और मुनाफ़िक स्त्रियां, और मुश्रिक पुरुष और मुश्रिक स्त्रियां जिन्होंने केवल ज़बान से स्वीकार किया और व्यावहारिक तौर पर उसका पालन नहीं किया उन्हें अज़ाब दिया जाए तथा मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्रियां जिन्होंने अमानत को स्वीकार करके व्यावहारिक तौर पर पालन भी किया वे खुदा की रहमत के पात्र हों। यह आयत भी स्पष्ट और साफ तौर पर बता रही है कि कथित आयत में ज़लूम और जहूल से अभिप्राय मोमिन हैं, जिन

के स्वभावों तथा योग्यताओं ने अमानत को स्वीकार कर लिया और फिर उसके पाबंद हो गए, क्योंकि बिल्कुल स्पष्ट है कि मुश्रिक और मुनाफ़िकों ने पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया और **حَمَلَهَا الْإِنْسَانُ** में जो इन्सान के शब्द पर **ال** (अलिफ़ लाम) है वह भी वास्तव में विशिष्ट करने के लिए है, जिस से खुदा तआला का यह आशय सिद्ध होता है कि समस्त मनुष्यों ने इस आयत को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया, केवल मोमिनो ने स्वीकार किया है और मुनाफ़िकों एवं मुश्रिकों के स्वभावों में यद्यपि योग्यता का एक कण मौजूद था, परन्तु योग्यता की क्षति के कारण वे पूर्ण रूप से इस प्रिय शब्द ज़लूम और जहूल से हिस्सा ग्रहण न कर सके और जिनको बड़ी शक्ति मिली थी वे उस नेमत को पूर्ण रूप से ले गए। उन्होंने उस अमानत को स्वीकार करने का केवल अपनी ज़बान से इकरार नहीं किया बल्कि अपने कर्मों एवं कार्यों में सिद्ध कर के दिखा दिया और जो अमानत ली थी पूरी ईमानदारी के साथ उसको वापस दे दिया।

अन्त में यह भी स्पष्ट रहे कि जहूल का शब्द रहे कि जहूल का शब्द भी ज़लूम के शब्द की भांति इन अर्थों में प्रयोग किया गया है जो तक्रवा और प्रतिष्ठा (इस्तिफ़ा) के दशानुकूल हैं क्योंकि यदि जाहिलियत (अज्ञानता) का वास्तविक अर्थ अभिप्राय हो जो वास्तविक शिक्षा से बेखबर तथा झूठी और व्यर्थ बातों में लिप्त होना है तो यह तो संयमी लोगों की विशेषता के सर्वथा विरुद्ध है क्योंकि वास्तविक तक्रवा (संयम) के साथ अज्ञानता (संलग्न) जमा नहीं हो सकती। वास्तविक तक्रवा अपने साथ एक प्रकाश रखता है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَ يُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
(अलअन्फ़ाल-30)

(अलहदीद-29) وَ يَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ

अर्थात् हे ईमान लाने वालो! यदि तुम मुत्तक़ी (संयमी) होने पर दृढ़ रहो और अल्लाह तआला के लिए तक्रवा की विशेषता में खड़े रहना तथा दृढ़ रहना अपनाओ तो खुदा तआला तुम में और तुम्हारे ग़ैर में अन्तर रख देगा। वह अन्तर

यह है कि तुम्हें एक प्रकाश (नूर) दिया जाएगा जिस प्रकाश के साथ तुम अपने समस्त मार्गों में चलोगे अर्थात् वह प्रकाश तुम्हारे समस्त कार्यों, कथनों और शक्तियों एवं ज्ञानन्द्रियों में आ जाएगा। तुम्हारी अकल में भी प्रकाश होगा और तुम्हारी अटकल की बात में भी प्रकाश होगा और तुम्हारी आंखों में भी प्रकाश होगा और तुम्हारे कानों और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे बयानों और तुम्हारी प्रत्येक गति और स्थिरता में प्रकाश होगा, और जिन मार्गों पर तुम चलोगे वे मार्ग प्रकाशमान हो जाएंगे। सारांश जितने तुम्हारे मार्ग, तुम्हारी शक्तियों के मार्ग, तुम्हारी ज्ञानेन्द्रियों के मार्ग हैं वे सब प्रकाश से भर जाएंगे और तुम सिर से पांव तक प्रकाश में ही चलोगे। अब इस आयत से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि तक्वा से अज्ञानता हरगिज़ संलग्न नहीं हो सकती। (अर्थात् दोनों चीज़ें इकट्ठी नहीं हो सकती)। हां संयम (तक्वा) की श्रेणियों के अनुसार समझ और बोध में कमी-बेशी हो सकती है। इसी स्थान से यह भी सिद्ध होता है कि बड़ा और उच्च श्रेणी का चमत्कार जो ख़ुदा के वलियों को दिया जाता है जिन को संयम में उत्कृष्टता प्राप्त होती है वह यही दिया जाता है कि उनकी समस्त ज्ञानेन्द्रियां, बुद्धि, समझ तथा अनुमान में प्रकाश रखा जाता है, और उनकी कशफ़ की शक्ति प्रकाश के पानियों से ऐसी शुद्धता प्राप्त कर लेती है कि दूसरों को प्राप्त नहीं होती और उनकी ज्ञानेन्द्रिया अति तीव्र हो जाती हैं और मआरिफ़ एवं बारीक बातों के पवित्र चश्मे उन पर खोले जाते हैं। और ख़ुदा का चमकदार फ़ैज़ उनकी कोशिकाओं में खून की भांति दौड़ने लगता है।

अब फिर हम असल बहस की ओर जो इस्लाम के विषय में वर्णित है अपना कलम फैरते हैं अतः स्पष्ट हो कि यह पहले वर्णन हो चुका है कि इस्लाम क्या चीज़ है। और उसकी वास्तविकता क्या है। अतः इस वर्णन के पश्चात् यह वर्णन भी अत्यधिक अवश्यक है कि वह वास्तविकता जिसका नाम इस्लाम है क्योंकि प्राप्त हो सकती है और पवित्र कुर्आन में उसकी प्राप्ति के लिए क्या क्या मार्ग बताए गए हैं। प्रथम जानना चाहिए कि किसी वस्तु का माध्यम उस वस्तु को कहा जाता है जिसके ठीक ठीक प्रयोग एवं सहायता से उस वस्तु का

उपलब्ध होना आवश्यक हो। और उसके बदले में उसके **نقیس** का उपयोग करना नाकामी एवं दूरी का कारण हो।

इसके पश्चात् स्पष्ट हो कि जबकि पवित्र कुर्आन ने इस्लाम की वास्तविकता की प्राप्ति के लिए बहुत से मार्ग बताए हैं। परन्तु वास्तव में इनसे तब का निष्कर्ष दो प्रकारों पर ही जा ठहरता है। प्रथम यह कि खुदा तआला का अस्तित्व और उसकी पूर्ण कुदरत और उसका पूर्ण शासन, उसका पूर्ण ज्ञान, उसका पूर्ण हिसाब तथा उसका भागीदार रहित एकमात्र होना, जीवित और क्रायम रहने वाला, उपस्थित रहने वाला, दृष्टा, शक्तिशाली तथा अजर-अमर होने में और उसकी समस्त शक्तियों तथा सम्पूर्ण प्रताप एवं उत्कृष्टता के साथ अद्वितीय होने में पूर्ण रूपेण विश्वास आ जाए यहां तक कि अपने अस्तित्व एवं इस संसार का प्रत्येक कण उस के अधिकार एवं आदेश में दिखाई दे और **هُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ** (अलअनआम-19) की तस्वीर सामने नज़र आ जाए और **يَبْدُو مَلَكُوتِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ** को मोटी कलम के साथ दिल में लिखा जाए, यहां तक कि उसकी श्रेष्ठता और रोब तथा महानता समस्त तामसिक भावनाओं को अपनी प्रकोपी किरणों से निढाल और धुंधला करके उनका स्थान ले ले तथा अपना स्थायी रोब दिल पर जमा दे और अपने प्रकोप पूर्ण आक्रमण से कामवासना संबंधी शासन के सिंहासन को तिरस्कार रूपी मिट्टी में फेंक दे और टुकड़े-टुकड़े कर दे तथा अपने भयंकर चमत्कारों से लापरवाही की दीवारों को गिरा दे और अहंकार के मीनारों को तोड़ दे और मानवीय अंधकार की शक्तियों को मानवीय अस्तित्व से पूर्णतया समाप्त कर दे तथा तामसिक वृत्ति की भावनाएं मानव प्रकृति पर शासन करती थीं और सम्माननीय समझी गई थीं उनको अपमानित एवं तिरस्कृत, तुच्छ और अधम करके दिखा दे।

द्वितीय यह कि अल्लाह तआला की सुन्दरता और उपकार पर अत्यधिक जानकारी पैदा करे। क्योंकि पूर्ण श्रेणी का प्रेम या तो सुन्दरता के द्वारा पैदा होता है और या उपकार द्वारा। और महाप्रतापी खुदा की सुन्दरता, उसके अस्तित्व और उसकी सिफ़ात की विशेषताएं हैं और खूबियां ये हैं कि वह केवल भलाई

है और स्रोत है समस्त वरदानों का और उद्गम है समस्त दान-पुण्यों का और संग्रहीता है समस्त पराकाष्ठाओं का और लौटने का स्थान (ठिकाना) है हर एक बात का और अविष्कारक है समस्त अस्तित्वों का और मुख्य कारण है हर एक प्रभावशाली का, जिसका प्रभाव अथवा प्रभावहीन होना हर समय उसके कब्जे में है और भागीदार रहित एक है अपने अस्तित्व में, विशेषताओं में बातों में, कार्यों में, अपनी सम्पूर्ण कलाओं में और अजर-अमर है अपनी सर्वांगपूर्ण विशेषताओं के साथ, बड़ा ही नेक और बड़ा ही दयालु, दण्ड देने की पूर्णशक्ति रखने के बावजूद हजारों वर्षों की गलतियां एक पल के रूजू (लौटने) से क्षमा करने वाला, बड़ा ही सहनशील, सहिष्णु और दूसरों का दोष छिपाने वाला, करोड़ों घृणित कार्यों तथा घृणित गुनाहों को देखने वाला और फिर शीघ्र न पकड़ने वाला, यदि उसका रूहानी सौन्दर्य साक्षात् तौर पर प्रकट हो तो प्रत्येक दिल उस पर पतिंगे की भांति गिरे। किन्तु उसने अपना सौन्दर्य गैरों से छिपाया और उन्हीं पर प्रकट किया जो श्रद्धापूर्वक उसे ढूंढते हैं। उसने हर एक सुन्दर वस्तु पर अपनी सुन्दरता का प्रतिबिम्ब (छाया) डाला। यदि सूर्य है या चन्द्रमा या वे ग्रह जो चमकते हुए अत्यन्त प्रिय मालूम होते हैं या सुन्दर मनुष्यों के मुंह जो मनोहर और लावण्य (मलीह) दिखाई देते हैं, या वे ताजा और भीगे हुए मनोरम फूल जो अपने रंग और सुगंध तथा चमक-दमक से दिलों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। ये सब वास्तव में प्रतिबिम्ब के तौर पर (जिल्ली तौर पर) उस अविनाशी सुन्दरता से एक कण के बराबर भाग लेते हैं, वह सुधारणा, भ्रम और कल्पना नहीं बल्कि निश्चित, अटल और अत्यन्त स्पष्ट है जिसकी कल्पना से समस्त दृष्टियां चुंधिया जाती हैं और पवित्र दिल उसकी ओर खींचे जाते हैं और उस वास्तविक प्रियतम के उपकार जो मनुष्यों पर हैं वे रजिस्ट्रों में नहीं समा सकते, क्योंकि उसकी धन-सम्पन्नताएं (नेमतें) बेशुमार (नागण्य) हैं, पाप पर पाप देखता है और उपकार पर उपकार करता है, गलती पर गलती पर पाता है और नेमत पर नेमत देता है। वास्तव में न जैद हम से कुछ भलाई कर सकता है और न बकर और न सूर्य अपने प्रकाश से हमको कुछ लाभ पहुंचा सकता है न चन्द्रमा अपने प्रकाश से

हम को कोई फ़ायदा दे सकता है, न सितारे हमारे काम आ सकते हैं। न उनका प्रभाव कुछ चीज़ है। ऐसा ही न मित्र काम आ सकता है न बेटा। सारांश यह कि कोई वस्तु भी हमें आराम नहीं पहुंचा सकती जबकि वह (ख़ुदा) इरादा न करे। अतः इस से स्पष्ट है कि हज़ारों और असंख्य ढंगों से जो हमारी आवश्यकताएं पूरी होती हैं। वास्तव में यह फ़ज़ल (कृपा) उसी वास्तविक समृद्ध की ओर से है। अतः उसके इनामों को कौन गिन सकता है। यदि हम न्याय से बोलें तो हमें यह गवाही देनी पड़ेगी कि हम से किसी ने ऐसा प्रेम नहीं किया जैसा कि उसने।

ये दोनों प्रकार के साधन जिन पर इस्लाम की वास्तविकता की प्राप्ति निर्भर है। पवित्र कुर्आन में इन दोनों साधनों (माध्यमों) की ओर इस आयत से संकेत किया गया है-

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ط (सूरह अल्फ़ातिर-29)

अर्थात् अल्लाह तआला से वे लोग डरते हैं जो उसकी प्रतिष्ठा, और कुदरत, और उपकार, और सुन्दरता और सौन्दर्य का पूर्ण ज्ञान रखते हैं। (ख़ुदा का) भय और इस्लाम वास्तव में अपने अर्थ की दृष्टि से एक ही बात है। क्योंकि पूर्ण भय का अर्थ इस्लाम के अर्थ को अनिवार्य है। इस पवित्र आयत के अर्थों का परिणाम और निष्कर्ष यही हुआ कि इस्लाम की प्राप्ति का पूर्ण माध्यम यही ख़ुदा तआला की हस्ती की प्रतिष्ठा और विशेषताएं हैं जिस का विवरण हम लिख चुके हैं और इसी की ओर वास्तव में

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا

(अलबक्रह-2/270)

अर्थात् जिसे ख़ुदा तआला चाहता है हिकमत (बुद्धिमत्ता) प्रदान करता है और जिसको हिकमत दी गई उस को अत्यधिक भलाई दी गई। हिकमत से अभिप्राय स्रष्टा (ख़ुदा) की हस्ती की प्रतिष्ठा एवं विशेषताओं का ज्ञान है और भलाई की अधिकता (ख़ैर-ए-कसीर) से अभिप्राय इस्लाम है, जैसा कि ख़ुदा तआला पवित्र कुर्आन में फ़रमाता है-

هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ (युनुस -10/59)

फिर एक अन्य आयत में फ़रमाता है -

(सूरह ताहा- 20/115) ﴿قُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا﴾

अर्थात् हे मेरे रब! तू मुझे अपनी प्रतिष्ठा और मारिफ़त और विशेषताओं का पूर्ण ज्ञान प्रदान कर। फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाया-

(अलअन्आम-164) ﴿وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ﴾

इन दोनों आयतों को मिलाने से ज्ञात हुआ कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो मुसलमानों में से प्रथम मुस्लिम ठहरे, तो इसका यही कारण हुआ कि दूसरों की अपेक्षा ख़ुदा की मारिफ़त के ज्ञानों में सर्वाधिक जानने वाले हैं अर्थात् उनका ज्ञान ख़ुदा की मारिफ़त के बारे में सबसे अधिक है। इसलिए उनका इस्लाम भी सर्वश्रेष्ठ है और वह प्रथम मुस्लिम हैं। और आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ज्ञान की अधिकता की ओर उस दूसरी आयत में भी संकेत है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

(अननिसा-114) ﴿وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۖ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا﴾

अर्थात् ख़ुदा तआला ने तुझे विद्याएं प्रदान कीं जो तू स्वयं नहीं जान सकता था और ख़ुदा के फ़ज़ल से ख़ुदा तआला का वरदान सर्वाधिक तुझ पर हुआ। अर्थात् तू ख़ुदा के मआरिफ़, रहस्यों और ख़ुदा के ज्ञानों में सब से आगे निकल गया और ख़ुदा तआला ने अपनी मारिफ़त की सुगंध के साथ सब से अधिक तुझे सुगंधित किया। निष्कर्ष यह कि ज्ञान और मारिफ़त को ख़ुदा तआला ने इस्लाम की वास्तविकता की प्राप्ति का माध्यम ठहराया है। यद्यपि इस्लाम की वास्तविकता की प्राप्ति के माध्यम और भी हैं। जैसे रोज़ा, नमाज़, दुआ और ख़ुदा के समस्त आदेश जो छः सौ भी अधिक हैं परन्तु महाप्रतापी स्रष्टा जो समस्त माध्यमों का माध्यम की प्रतिष्ठा का ज्ञान उसके अस्तित्व का एकत्व (एकमात्र होना) और उसकी प्रतापी एवं सौन्दर्य संबंधी विवरणों एवं विशेषताओं की मारिफ़त तथा सब का दारोमदार (निर्भरता) उसी पर है, क्योंकि जो व्यक्ति निःस्पृह दिल और ख़ुदा की मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) से पूर्णतया वंचित है वह कब तौफ़ीक़ (सामर्थ्य) पा सकता है कि रोज़ा-नमाज़ अदा करे या दुआ करे या अन्य दान-पुण्य करने

की ओर व्यस्त हो। इन समस्त शुभ कार्यों की प्रेरक तो मारिफ़त ही है और समस्त दूसरे माध्यम वास्तव में इसी के पैदा किए हुए तथा इसी के बेटे-बेटियां हैं। और इस मारिफ़त के प्रारंभ का प्रतिबिम्ब रहमानियत (दयालुता) के नाम से है न किसी कार्य, न किसी दुआ से बल्कि अकारण वदान्यता से केवल उपहार प्रदत्त (बख़्शिश) है।

يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَيُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ

परन्तु फिर यह मारिफ़त नेक कार्यों तथा ईमान की अच्छाई के सम्मिलित होने से बढ़ती जाती है यहां तक कि अन्ततः इल्हाम और खुदा के कलाम के रंग में नुज़ूल (उतरना) ग्रहण करके सम्पूर्ण वक्षस्थल को उस प्रकाश से प्रकाशमान कर देती है जिस का नाम इस्लाम है और इस पूर्ण मारिफ़त की श्रेणी पर पहुंचकर इस्लाम केवल वह शाब्दिक इस्लाम नहीं रहता बल्कि वह सम्पूर्ण वास्तविकता जो हम वर्णन कर चुके हैं प्राप्त हो जाती है और इन्सानी रूह अत्यन्त विनयपूर्वक खुदा के सामने अपना सिर रख देती है। तब दोनों ओर से यह आवाज़ आती है कि जो मेरा वह तेरा है अर्थात् बन्दे की रूह भी बोलती है और इक्रार करती है कि हे खुदा जो मेरा है वह तेरा है और खुदा तआला भी बोलता है और खुशख़बरी देता है कि हे मेरे बन्दे! जो कुछ पृथ्वी और आकाश इत्यादि मेरे साथ है वह सब तेरे साथ है। इसी श्रेणी की ओर इस आयत में संकेत है-

قُلْ يٰعِبَادِىَ الذّٰىنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا ۝۵۴ (अज़्ज़ुमुर-54)

अर्थात् हे मेरे बन्दे! जिन्होंने अपने नफ़्सों पर जुल्म (अन्याय) किया है कि तुम खुदा की रहमत (दया) से निराश मत हो। खुदा तआला समस्त गुनाह क्षमा कर देगा। अब इस आयत में बजाए **يا عباد الله** के जिसके यह अर्थ हैं कि कह ऐ खुदा तआला के बन्दों यह फ़रमाया कि **قُلْ يٰعِبَادِىَ** अर्थात् हे मेरे बन्दे। इस शैली को अपनाने में रहस्य यही है कि यह आयत इसलिए उतरी है ताकि खुदा तआला असीम रहमतों की खुश ख़बरी दे और जो लोग पापों की अधिकता से हतोत्साह (टूटे हुए दिल) हैं उनको सांत्वना प्रदान करे। अतः अल्लाह तआला ने इस आयत

में चाहा कि अपनी रहमतों का एक नमूना प्रस्तुत करे और सेवकों को दिखलावे कि मैं कहाँ तक अपने वफ़ादार बन्दों को विशिष्ट इनामों से सम्मानित करता हूँ। अतः उसने **قُلْ يُعْبَادِي** के शब्द से यह प्रकट किया कि देखो यह मेरा प्रिय रसूल देखो यह चुना हुआ बन्दा कि आज्ञापालन से किस श्रेणी तक पहुंचा कि अब जो कुछ मेरा है वह उसका है। जो व्यक्ति मुक्ति चाहता है वह उस का दास हो जाए अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करने में ऐसा लीन हो जाए कि जैसा उसका दास है। तब वह यद्यपि पहले कैसा ही गुनहगार था क्षमा किया जाएगा। जानना चाहिए कि 'अब्द' का शब्द अरब के शब्द कोश में दास के अर्थों में भी बोला जाता है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

(अलबक्रर: 2/222) **وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ**

और इस आयत में इस बात की ओर संकेत है कि जो व्यक्ति अपनी मुक्ति (निजात) चाहता है वह इसी नबी से दासता का संबंध पैदा करे अर्थात् उसके आदेश से बाहर न जाए और स्वयं उसकी आज्ञा पालन के दामन से संलग्न समझे, जैसा कि दास समझता है। तब वह मुक्ति पाएगा। इस स्थान में उन अन्धात्मा (जिन की आत्मा में धर्म का प्रकाश न हो) नाम के ख़ुदा को एक मानने वालों (अन्य किसी किताब और अवतार आदि को नहीं मानते) पर अफ़सोस आता है कि जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस सीमा तक द्वेष रखते हैं कि उन के नज़दीक यह नाम कि गुलाम नबी, गुलाम रसूल, गुलाम मुस्तफ़ा, गुलाम अहमद, गुलाम मुहम्मद स. शिर्क में दाखिल हैं। और इस आयत से मालूम हुआ कि मुक्ति का आधार यही नाम हैं। और चूंकि 'अब्द' के अर्थ में यह सम्मिलित है कि प्रत्येक आज्ञादी और स्वेच्छाचार से बाहर आ जाए और अपने मौला का पूर्ण अनुयायी हो। इसलिए सत्याभिलाषियों को यह प्रेरणा दी गई कि यदि मुक्ति चाहते हैं तो अपने अन्दर यह अर्थ पैदा करें और वास्तव में यह आयत तथा दूसरी आयत-

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ^ط

(आलेइमरान-32)

अर्थ की दृष्टि से एक ही हैं क्योंकि आज्ञापालन की पराकाष्ठा उस मुग्ध होने और पूर्ण आज्ञापालन को अनिवार्य है जो 'अब्द' के अर्थ में पाई जाती है। यही रहस्य है कि जैसे पहली आयत में क्षमा करने का वादा बल्कि खुदा का प्रेमी बनने की खुशखबरी है जैसे कि यह आयत कि **قُلْ يَا عِبَادِي** दूसरे शब्दों में इस प्रकार से है कि **قُلْ يَا مُتَّبِعِي** अर्थात् हे मेरा अनुकरण करने वालो जो बड़ी अधिकता के साथ गुनाहों में लिप्त हो रहे हो, खुदा की रहमत (दया) से निराश न हो कि खुदा तआला मेरे अनुकरण की बरकत से समस्त गुनाह क्षमा कर देगा। यदि **عِبَاد** से अभिप्राय केवल अल्लाह तआला के बन्दे ही लिए जाएं तो अर्थ खराब हो जाते हैं। क्योंकि यह हरगिज़ सही नहीं कि अल्लाह तआला ईमान और अनुकरण की शर्त के स्थापित होने के बिना समस्त मुश्रिकों और काफ़िरों को यों ही क्षमा कर दे। ऐसे अर्थ तो कुर्आन के स्पष्ट आदेशों के सर्वथा विरोधी हैं।

यहां यह भी स्मरण रहे कि इस आयत का सारांश यह है कि जो लोग तन-मन से मेरे या रसूले खुदा के दास बन जाएंगे उनको वह ईमान का प्रकाश, प्रेम और इश्क दिया जाएगा कि जो उनको खुदा के अतिरिक्त से छुटकारा दे देगा और वे गुनाहों से मुक्ति पा जाएंगे और इसी संसार में उनको एक पवित्र जीवन प्रदान किया जाएगा और वे काम वासना संबंधी भावनाओं की तंग-व-अंधकारपूर्ण क्रब्रों से निकाले जाएंगे। इसी की ओर यह हदीस संकेत करती है

أَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَيَّ قَدَمِي

(बुखारी किताब अल मुनाकिब)

अर्थात् मैं वह मुर्दों को उठाने वाला हूं जिसके क़दमों पर लोग उठाए जाते हैं। स्पष्ट हो कि पवित्र कुर्आन इस मुहावरे से भरा पड़ा है कि संसार मर चुका था, खुदा तआला ने अपने इस नबी ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजकर नए सिरे से संसार को जीवित किया। जैसा कि वह फ़रमाता है-

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا (अलहदीद-57/18)

अर्थात् इस बात को सुन रखो कि पृथ्वी को उसके मरने के बाद खुदा तआला

जीवित करता है। फिर उसके अनुसार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में फ़रमाता है: **وَإِيَدُهُمْ بِرُوحٍ مِّنْهُ** (अलमुजादल:23) अर्थात् रूहुल कुदुस के द्वारा उनकी सहायता की और रूहुल कुदुस की सहायता यह है कि वह दिलों को जीवित करता है और रूहानी मौत से मुक्ति प्रदान करता है तथा पवित्र शक्तियां, पवित्र ज्ञानेन्द्रियां और पवित्र ज्ञान प्रदान करता है और विश्वसनीय ज्ञानों तथा अटल प्रमाणों द्वारा खुदा तआला के सानिध्य के स्थान तक पहुंचा देता है। क्योंकि उसके सानिध्य प्राप्त वही हैं जो निश्चित तौर पर जानते हैं कि वह है और उसकी कुदरत और उसकी रहमतें, उसके दण्ड और उसके न्याय सब सच हैं और वह सम्पूर्ण वरदानों का स्रोत तथा सम्पूर्ण जगत की व्यवस्था का उद्गम और सम्पूर्ण प्रभावकारियों तथा प्रभावितों का मुख्य कारण हैं परन्तु अपनी इच्छा से, जिसके हाथ में आसमानों और पृथ्वी की सम्पूर्ण बादशाहत है और ये ज्ञान जो मुक्ति के आधार हैं निश्चित एवं अटल तौर पर उस जीवन के बिना प्राप्त नहीं हो सकते जो मनुष्य को रूहुल कुदुस के माध्यम से मिलता है, और पवित्र कुर्आन का बड़े जोर से यह दावा है कि वह रूहानी जीवन केवल इस रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से मिलता है और समस्त वे लोग जो इस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन से विमुख हैं वे मुर्दे हैं जिनमें इस जीवन की रूह नहीं है। रूहानी जीवन से अभिप्राय मनुष्य की वे ज्ञान और कर्म से संबंधित शक्तियां हैं जो रूहुल कुदुस की सहायता से जीवित होती हैं। और पवित्र कुर्आन से सिद्ध होता है कि जिन आदेशों पर अल्लाह तआला मनुष्य को चलाना चाहता है वे छः सौ हैं। ऐसा ही इसके मुक्काबले पर जिब्राईल अलैहिस्सलाम के पर भी छः सौ हैं। और मनुष्य रूपी अंडा जब तक छः सौ आदेशों को सिर पर रख कर जिब्राईल के परो के नीचे न आए उस में अल्लाह तआला के लिए फ़ना होने का बच्चा पैदा नहीं होता और इन्सानी वास्तविकता अपने भीतर छः सौ अंडों की ताकत रखती है। अतः जिस व्यक्ति की छः सौ अंडों की योग्यताएं जिब्राईल के छः सौ परो के नीचे आ गई वह इन्सान, पूर्ण इन्सान (कामिल इन्सान) और उसका यह जन्म पूर्ण

जन्म और यह जीवन पूर्ण जीवन है। और ध्यानपूर्वक देखने से मालूम होता है कि मनुष्य के रूहानी बच्चे जो रूहुल कुदुस द्वारा आह्वारत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैरवी की बरकत से पैदा हुए वे अपनी मात्रा और विवरण, स्थिति, किस्म और हालत में समस्त नबियों के बच्चों से श्रेष्ठ हैं। इसी की ओर अल्लाह तआला संकेत करते हुए फ़रमाता है-

(आले इमरान- 3/111) **كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ**

अर्थात् तुम सब उम्मतों से उत्तम हो जो लोगों के सुधार के लिए पैदा किए गए हो। और वास्तव में कुर्आन की शिक्षा की जो विशेषताएं हैं वे इस दयनीय उम्मत की विशेष योग्यताओं पर गवाह हैं, क्योंकि अल्लाह तआला की किताबें हमेशा उतनी ही उतरती हैं जितनी उस उम्मत में योग्यता होती है जो उस किताब पर अमल करने की पाबंद है। उदाहरणतया इंजील के बारे में समस्त अन्वेषकों की राय यह है कि इस की शिक्षा पूर्ण (कामिल) नहीं है और वह एक ही ओर चलती चली जाती है और दूसरे पहलू को पूर्णतया छोड़ रही है। किन्तु वास्तव में यह दोष उन योग्यताओं का है जिन के लिए इंजील उतरी थी। चूंकि खुदा तआला ने मानवीय योग्यताओं को उत्तरोत्तर (धीरे-धीरे) उन्नति दी है। इसलिए प्रारंभिक युगों में अधिकतर ऐसे लोग पैदा होते रहे जो मंदबुद्धि, मूर्ख, नासमझ, अल्पबुद्धि, कंजूस, कायर, कृपण और कमीना और सांसारिक लालचों में फंसे हुए थे तथा उनकी मानसिक एवं हार्दिक शक्तियां नितान्त कमजोर थीं। परन्तु उन युगों के पश्चात् हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वह युग आया जिसमें धीरे-धीरे योग्यताएं उन्नति कर गईं, जैसे संसार ने अपनी स्वाभाविक शक्तियों में एक और रूप धारण कर लिया। अतः उनकी पूर्ण योग्यताओं के अनुसार कामिल (पूर्ण) शिक्षा उतरी।

चेतावनी

नूर अफ़्शां 13, अक्टूबर 1892 ई. को भ्रम के निवारण हेतु

इंजील यूहन्ना 11/25 में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का यह कथन लिखा है कि क्रयामत (प्रलय) और जीवन मैं ही हूं जो मुझ पर ईमान लाए यद्यपि वह मर गया हो तो भी जिएगा। अर्थात् पाप और अवज्ञा, लापरवाही और कुफ़्र की मौत से मुक्ति पाकर खुदा के आज्ञापालन का रूहानी (आध्यात्मिक) जीवन प्राप्त कर लेगा। इंजील के इस वाक्य पर 'नूरअफ़्शां' के एडीटर ने अपने 13 अक्टूबर 1892 ई. के अखबार में नासमझी के कारण लिखा है कि आदम से लेकर अब तक कोई व्यक्ति विश्व इतिहास में ऐसा नहीं हुआ जिसने ऐसा बड़ा दावा किया हो और अपने बारे में ऐसे शब्द प्रयोग किए हों कि क्रयामत और जीवन मैं हूं और यदि कोई ऐसा कहता तो उसके अनुसार सिद्ध कर देना असंभव होता। परन्तु खुदावंद मसीह ने अपने बारे में जैसा दावा किया वैसा ही उसको सिद्ध कर दिखाया। इति।

एडीटर साहिब की यह बात जितनी तक्रवा (संयम) और सच्चाई से दूर है किसी वास्तविकता को पहचानने वाले (मर्मज्ञ) पर गुप्त नहीं रह सकता। सच बात यह है कि यदि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ऐसा दावा करते कि जीवन और क्रयामत मैं हूं। तो चूंकि वे सच्चे नबी थे, इसलिए ज़रूरी था कि इस दावे की सच्चाई प्रकट हो जाती, और हज़रत मसीह के जीवन तथा इनके बाद रूहानी जीवन इनके द्वारा संसार में फैल जाता। परन्तु खुदा की सच्चाई और उसकी तौहीद (एकेश्वरवाद) को फैलाने में जितने हज़रत मसीह विफल रहे शायद इसका उदाहरण दूसरे नबी की घटनाओं में बहुत ही कम मिलेगी हमारे इस ज़माने में यह गवाही बड़े-बड़े पादरी लोग भी दे चुके हैं कि मसीह की शिक्षा स्वयं उनके शिष्यों की कमीनगी, नादानी और दुनिया की चाहत को दूर न कर सकी और मसीह की गिरफ्तारी के साथ उन्होंने जो कुछ कायरता, अविश्वास और बेवफ़ाई

(कृतघ्नता) दिखाई बल्कि कुछ की ज़बान पर भी जो कुछ उस अन्तिम समय में डांट-फटकार के शब्द हज़रत मसीह के बारे में जारी हुए। यह एक ऐसी बात है कि बड़े-बड़े और उच्च श्रेणी के मसीही विद्वानों ने हवारियों के इन अनुचित कृत्यों को मसीहियों के लिए नितान्त लज्जाजनक ठहराया है। फिर यह सोचना कि हज़रत मसीह रूहानी क्रयामत थे और उनमें सम्मिलित होकर रूहानी मुर्दे जीवित हो गए सच्चाई से कितनी दूर है। जो कुछ हज़रत मसीह के अनुयायियों ने आप के जीवन के समय अपनी दृढ़ता और ईमानदारी का उदाहरण दिखाया। वह तो एक ऐसा बुरा नमूना है जो ज़रूरी उन मसीहियों पर जो बाद में अब तक संसार में आते गए इसका दुष्प्रभाव पड़ा होगा। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि यदि हज़रत मसीह से वास्तव में चमत्कार प्रकटन में आते और उच्च श्रेणी के अद्भुत कार्य उन से प्रकट होते तो उनके हवारियों का जो ईमान ला चुके थे ऐसा बुरा अंजाम कदापि न होता कि कुछ थोड़े से दिरहम रिश्वत लेकर उनको गिरफ्तार कराते तथा कुछ उनको गिरफ्तार होते देख कर भाग जाते और कुछ उनके सामने उन पर लानत भेजते। जिन के दिलों में ईमान रच जाता है तथा जिनको नया जीवन प्राप्त होता है। क्या उनके यही लक्षण हुआ करते हैं और क्या वे अपने स्वामी और सेव्य मार्ग दर्शक से ऐसी ही वफादारियां किया करते हैं। और हज़रत मसीह के शब्द भी जो इंजील में लिखे हैं मार्ग दर्शन कर रहे हैं कि आप के हवारी और आप के दिन-रात के मित्र और साथी तथा गहरे दोस्त और साथ खाने-पीने वाले रूहानियत से पूर्णरूपेण खाली थे। इसी कारण हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने उनमें से कुछ को आस्था का कच्चा के शब्द से पुकारा है और कुछ को शैतान के शब्द से याद किया है और यदि हम हवारियों को अलग रख कर उन ईसाइयों के हालात पर दृष्टि डालें जो उनके बाद यदा-कदा आज तक पैदा होते रहे तो हमें उनमें से एक भी दिखाई नहीं देता जो संसार और स्वार्थ परायणता से निकल कर नए जीवन में परिवर्तित होकर पवित्र हो गया हो, बल्कि वह समस्त अहंवाद की तंग और अंधकारमय क़ब्रों में मरे हुए तथा सड़े हुए दिखाई दे रहे हैं और रूहानी जीवन की वायु उन्हें छू भी नहीं गई। वे जानते

भी नहीं कि खुदा कौन है और उसकी प्रतिष्ठा और कुदरत क्या चीज़ है और वह क्योंकर पवित्र दिलों को पवित्र जीवन प्रदान करता और उनके निकट हो जाता है। वे तो एक असहाय मनुष्य को खुदा बनाकर तथा अकारण उस पर दूसरों के पापों का बोझ लादकर प्रसन्न हो रहे हैं। जानना चाहिए कि मौत चार प्रकार की होती है। लापरवाही की मौत, गुनाह की मौत, शिर्क की मौत, अतः यह चारों प्रकार की मौतें इसाई धर्म में मौजूद हैं। कुफ़्र की मौत, लापरवाही (ग़फ़लत) की मौत इसलिए कि उनकी समस्त शक्तियाँ संसार की सजावट तथा संप्रदायों के लिए खर्च हो रही हैं। और खुदा तआला और उनमें जो पर्दे हैं उन्हें दूर करने के लिए उन्हें लेशमात्र भी चिन्ता नहीं। और गुनाह की मौत यदि देखनी हो तो यूरोप का भ्रमण करो और देखो कि उन लोगों में आत्मसंयम, सतीत्व, सदाचार कितना शेष रह गया है। शिर्क की मौत-स्वयं देखते हो कि मनुष्य को खुदा बना दिया और खुदा तआला को भुला दिया और कुफ़्र की मौत यह कि सच्चे रसूल के इन्कारी हो गए। अतः इस समस्त वर्णन से स्पष्ट है कि हज़रत मसीह के बारे में यह सोचना कि उन्होंने रूहानी मुर्दों के जीवित करने में क्रयामत का नमूना दिखाया सर्वथा दुर्लभ विचार और दावा बिना सबूत है बल्कि यह क्रयामत का नमूना रूहानी जीवन के प्रदान करने में उस पूर्ण विशेषताओं वाले अस्तित्व (हस्ती) ने दिखाया, जिस का श्रेष्ठ नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लिम है। सम्पूर्ण कुर्आन आरंभ से अन्त तक यह गवाही दे रहा है कि यह रसूल उस समय भेजा गया था कि जब संसार की समस्त क्रौमें रूहानी तौर पर मर चुकी थीं और रूहानियत समाप्त होने के कारण बिगड़ गए थे तब इस रसूल ने आकर नए सिरे से दुनिया को जीवित किया और पृथ्वी पर तौहीद का दरिया जारी कर दिया। यदि कोई न्यायकर्ता विचार करे अरब प्रायद्वीप के लोग पहले क्या थे और फिर इस रसूल के अनुकरण के बाद क्या हो गए और उनकी कैसी वहशियों वाली हालत उच्च श्रेणी की मानवता तक पहुंच गयी और किस श्रद्धा तथा निष्ठा से उन्होंने अपने ईमान को अपने खूनों को बहाने, अपने प्राणों को न्योछावर करने, अपने परिजनों को छोड़ने और अपने मालों, सम्मानों तथा आरामों को खुदा तआला के

मार्ग में लगाने से सिद्ध कर दिखाया तो निस्सन्देह उनकी दृढ़ता और उनकी सच्चाई अपने प्यारे रसूल के मार्ग में उनकी जान तोड़ कोशिश उसकी एक उच्च श्रेणी की चमत्कार के रंग में दिखाई देगी। वह दिव्य शक्ति उनके अस्तित्वों पर कुछ ऐसा काम कर गई कि वे स्वयं से खोए गए और उन्होंने खुदा में फ़ना (लीन) हो कर सच्चाई और ईमानदारी वे कार्य दिखाए जिसका उदाहरण किसी क्रौम में मिलना कठिन है। उन्होंने जो कुछ आस्थाओं के तौर पर प्राप्त किया था वह यह शिक्षा न थी कि किसी असहाय मनुष्य को खुदा माना जाए। या खुदा तआला को बच्चों का मुहताज ठहराया जाए, बल्कि उन्होंने वास्तविक महा प्रतापी खुदा जो सदैव से अपरिवर्तनीय, जीवित रहने वाला, कायम रहने वाला है और बेटा तथा बाप होने की आवश्यकताओं से पवित्र और मरण एवं जन्म लेने से پاک है अपने रसूले करीम के द्वारा पहचान लिया था और वे लोग वास्तव में मौत के गढ़े से निकल कर पवित्र जीवन के ऊंचे मीनार पर खड़े हो गए थे तथा प्रत्येक ने एक ताज़ा जीवन प्राप्त कर लिया था और अपने ईमानों में सितारों के समान चमक उठे थे। फिर वास्तव में एक ही कामिल इन्सान संसार में आया जिसने सर्वांगपूर्ण तौर पर यह रूहानी इंकलाब दिखाया और एक लम्बे समय के मुर्दों तथा हज़ारों वर्षों की मरी हुई रूहानियत को जीवित कर दिखाया। उसके आने से क्रब्रें खुल गईं और सड़ी-गली हड्डियों में जान पड़ गई। और उसने सिद्ध कर दिखाया कि वही जिंदा करने वाला तथा वही रूहानी इंकलाब है जिसके क्रदमों पर एक संसार कब्रों में से निकल आया और खुशख़बरी

وَرَأَيْتِ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۖ (अन्स-3)

सम्पूर्ण अरब प्रायद्वीप पर फैल गयी और फिर उस क्रयामत का नमूना सहाबा तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि उस शक्तिमान, सामर्थ्वान खुदा ने जिस ने हर क्रौम, हर युग और हर देश के लिए उस बशीर (खुशख़बरी देने वाला) तथा नज़ीर (डराने वाला) को अवतरित किया था। हमेशा के लिए शाश्वत बरकतें उसके सच्चे अनुयायियों में रख दीं और वादा किया कि वह प्रकाश और वह रूहुल कुदुस जो उस कामिल इन्सान के सहाबा को दिया गया था, आने वाले

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٠٦﴾ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٠٧﴾

هو الذى بعث فى الاميين رسولا منهم يتلوا عليهم اياته ويزكيهم و يعلمهم الكتاب والحكمة و يعلم الاخرين منهم لما يلحقوا بهم

अर्थात् हमारे कामिल और निष्कपट बंदे सहाबा रज़ि. के अतिरिक्त और भी हैं जिनका बहुत बड़ा गिरोह अन्तिम युग में पैदा होगा तथा जैसी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ि. की तरबियत (प्रशिक्षण) लिया है ऐसा ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस गिरोह की भी आन्तरिक तौर पर तरबियत करेंगे। अर्थात् वे लोग ऐसे युग में आएंगे कि जिस युग में भौतिक लाभान्वित करने और लाभान्वित होने का सिलसिला समाप्त हो जाएगा और इस्लाम धर्म बहुत सी गलतियों तथा बिदअतों से भर जाएगा और धर्मावलम्बियों के दिलों से भी आन्तरिक प्रकाश जाता रहेगा। तब खुदा तआला किसी नेक व्यक्ति को किसी भौतिक साधनों तथा पद्धतियों के माध्यम के बिना केवल नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

रूहानियत के तरबियत (प्रशिक्षण) से रूहानी पूर्णता तक पहुंचा देगा और उसे एक गिरोह बनाएगा। और वह गिरोह सहाबा के गिरोह से अत्यधिक समानता पैदा करेगा, क्योंकि वह पूर्ण रूपेण आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ही विशेषता होगी और उनमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वरदान संचालित एवं प्रभावी होगा और वे सहाबा से मिलेंगे अर्थात् अपनी विशेषताओं की दृष्टि से उनके समान हो जाएंगे और उनको खुदा के फ़ज़ल से पुण्य (सवाब) प्राप्त करने के वही अवसर मिल जाएंगे जो सहाबा को मिले थे तथा अकेलेपन, लाचारी और फिर निश्चय की दृढ़ता के कारण खुदा के नज़दीक उसी प्रकार सच्चे समझे जाएंगे जिस प्रकार सहाबा समझे गए थे, क्योंकि यह युग बहुत सी विपत्तियों, उपद्रवों और बेईमानी के फैलने का युग होगा तथा सच्ची के सामने वही संकट आ जाएंगे जिन से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम दो चार हुए थे। इसलिए वे दिखाने के बाद सहाबा के स्तर तक पहुंचकर सहाबा कहलाएंगे परन्तु मध्यवर्ती युग फ़ैज़ आवज़ (अर्थात् टेढ़ी राह चलने वालों का युग) है जिसमें रोब और इस्लामी बादशाहों का वैभव, विलासिता पूर्ण जीवन के संसाधन, सहाबा के समान अनुसरण करने वाले और उन के पदों को ज़िल्ली तौर पर प्राप्त करने वाले बहुत ही कम होंगे, परन्तु अन्तिम युग पहले युग के समान होगा क्योंकि इस युग के लोगों पर दरिद्रता (गरीबी) छा जाएगी और उनके पास विपत्तियों के मुकाबले पर ईमानी शक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई सहारा न होगा। अतः उनका ईमान खुदा तआला के नज़दीक ऐसा सुदृढ़ और मज़बूत होगा कि यदि ईमान आकाश पर चला जाता तब भी वे उसे पृथ्वी पर ले आते अर्थात् उन पर भूकम्प आएंगे, वे आजमाए जाएंगे और उनको भंयकर उपद्रव घेरेंगे, परन्तु वे ऐसे दृढ़ निश्चय निकलेंगे कि यदि ईमान आकाशों पर भी होता तब भी उसको न छोड़ते। अतः यह प्रशंसा कि वे ईमान को आकाश पर से भी ले आते, इस बात की ओर संकेत कर रही है कि वे ऐसे युग में आएंगे कि जब चारों ओर बेईमानी फैली हुई होगी और खुदा तआला का सच्चा प्रेम दिलों से निकल जाएगा, परन्तु उनका ईमान उन दिलों में बड़े जोर पर होगा। उनमें खुदा तआला के लिए कष्ट सहन करने की बहुत शक्ति होगी, और असीम सच्चाई एवं दृढ़ता होगी। न कोई भय उनके लिए

बाधक होगा और न कोई सांसारिक आशा उनको सुस्त करेगी। और ईमानी शक्ति इन्हीं बातों से आजमाई जाती है कि ऐसी आजमायशों (परीक्षाओं) और बेईमानी के समय में दृढ़ निकले। अतः इस हदीस में यह संकेत पाया जाता है कि उस गिरोह का उसी समय में आना आवश्यक है जब उसकी आजमायश के लिए ऐसे-ऐसे साधन मौजूद हों और संसार वास्तविक ईमान से ऐसी दूर हो कि जैसे खाली हो। सारांश यह कि अल्लाह तआल उनके बारे में फ़रमाता है कि वे अन्तिम युग में आने वाले निष्कपट और कामिल बन्दे होंगे जो अपने पूर्ण ईमान, पूर्ण शिष्टाचार, पूर्ण सच्चाई, पूर्ण दृढ़ता, पूर्ण निश्चय की दृढ़ता, पूर्ण मारिफत और खुदा तआला की पूर्ण मारिफत दृष्टि से सहाबा के समान आचार-विचार वाले होंगे। इस बात को भली भांति याद रखना चाहिए कि वास्तव में इस आयत में अन्तिम युग के उच्च कोटि के आध्यात्मिक लोगों की ओर संकेत है न कि किसी अन्य युग की ओर। क्योंकि यह तो आयत के प्रत्यक्ष शब्दों से ही ज्ञात होता है कि वे आध्यात्मिक लोग अन्तिम युग में पैदा होंगे। जैसा कि आयत : **وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ** (अलजुमुअ:4) स्पष्ट तौर पर बता रही है युग तीन हैं -

प्रथम वह जो सहाबा का युग है। और एक मध्यवर्ती जो मसीह मौऊद और सहाबा के बीच है। और एक अन्तिम युग जो मसीह मौऊद का युग और आयत **وَآخَرِينَ مِنْهُمْ** का चरितार्थ है। वह वही युग है जिसमें हम हैं। जैसा कि स्वर्गीय मौलवी सिद्दीक हसन क्रन्नौजी फिर भोपालवी जो शेख बतालवी के नज़दीक समय के मुजद्दिद हैं, अपनी पुस्तक हुजजुल किरामा के पृष्ठ 155 में लिखते हैं

آخرت ایں اُمت ازہدایت الف ثانی شروع کردیدہ آثار تقویٰ
ازاؤل گم شدہ بودند واکنوں سطوت ظاہری اسلام ہم مفقودہ شدہ تمّ کلامہ

अनुवाद- इस उम्मत का आखरी दौर अल्फ़सानी (यानी दूसरे हजार साल के आरंभ से शुरू हुआ। तक्वा के लक्षण पहले ही गुम हो चुके थे और अब इस्लाम की जाहिरी ताक़त भी ख़त्म हो गई है। अनुवादक

यह तो स्पष्ट है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो ही युग नेक बताए हैं। एक सहाबा का युग जिसका विस्तार उस सीमा तक समझा

जाता है जिसमें सब के अन्त में किसी सहाबी की मृत्यु हुई हो और उस युग का विस्तार इमाम आजम अबू हनीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हों के समय तक सिद्ध होता है। दूसरा युग बीच का है जिसको अत्यधिक नए-नए आडम्बरो की दृष्टि से 'उम्मुल ख़बाइस' (समस्त बुराइयों की जननी) कहना चाहिए। और जिसका नाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फैज आवज रखा है और उस युग का अन्तिम भाग जो मसीह मौऊद के युग से संलग्न हैं इस का हाल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों के अनुसार बहुत ही बुरा मालूम होता है।★बैहक़ी ने

★ **हाशिया एक सपने के बयान में** - जब यह खाक़सार 'नूरअफ़्शा' के उत्तर में इस बात को सन्तोषजनक तर्कों के साथ लिख चुका कि जो वास्तव में रूहानी क्रयामत के चरितार्थ हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और एक सीमा तक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नअत (छंदीबद्ध स्तुतिगान) जो वर्णन की परिधि से बाहर है। इन इबारतों में लिख चुका तथा बतौर नमूना आदरणीय सहाबा^{रज़ि.} के कुछ यशोगान और कीर्तियां भी इसी सबूत के अन्तर्गत लिख चुका तो वह 17, अक्टूबर 1892 ई. का दिन था। फिर जब मैं रात को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का छंदोबद्ध स्तुतिगान तथा सहाबा^{रज़ि.} के यशोगान और कीर्तियां लिखने के बाद सोया तो मुझे एक अत्यन्त मुबारक और पवित्र स्वप्न दिखाया गया। क्या देखता हूं कि मैं एक विशाल मकान में हूं, जिसके अत्यन्त चौड़े और विशाल दालान हैं और सुसज्जित फर्श हैं तथा ऊपरी मंज़िल है। और मैं एक बड़ी जमाअत को ख़ुदा की वास्तविकताएं और मआरिफ़ सुना रहा हूं। और एक अजनबी और श्रद्धा न रखने वाला मौलवी उस जमाअत में बैठा है जो हमारी जमाअत में से नहीं है परन्तु मैं उस का हुलिया पहचानता हूं वह दुबले-पतले शरीर वाला, सफेद बालों वाला है। उसने मेरे उस बयान में अनुचित हस्तक्षेप करके कहा कि ये बातें स्रष्टा (ख़ालिक ख़ुदा) के मर्म (रहस्य) में हस्तक्षेप है और स्रष्टा के मर्म के बारे में करना निषेध है। तो मैंने कहा कि हे मूर्ख! इन वर्णनों का स्रष्टा के मर्म से कुछ संबंध नहीं। ये मआरिफ़ हैं। मैंने उनके अनुचित हस्तक्षेप से दिल में बहुत अफसोस किया और कोशिश की कि वह चुप रहे। वह अपनी शरारतों से नहीं रुका। तब मेरा क्रोध भड़का और मैंने कहा कि इस युग के अधम मौलवी शरारतों से नहीं रुकते। ख़ुदा उनके दोषों को प्रकट करेगा तथा ऐसे ही कुछ शब्द और भी कहे कि जो अब मुझे याद नहीं रहे। तब मैंने इसके बाद कहा कि कोई है जो इस मौलवी को इस मज्लिस से बाहर निकाले। तो मेरे नौकर हामिद अली नामक की आकृति पर एक व्यक्ति दिखाई दिया।

इसके बारे में एक हदीस लिखी है। अर्थात् यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि उस युग के मौलवी और मुफ़्ती लोग उन समस्त लोगों से अधिक बुरे होंगे जो उस समय पृथ्वी के धरातल पर मौजूद होंगे। और हुजजुल िकराम: में लिखा है - कि वास्तव में ख़ुदा के महदी (मसीह मौऊद) पर कुफ़्र का फ़त्वा देने वाले यही लोग होंगे। इस बात से अधिकतर मुसलमान अपरिचित

शेष हाशिया- उसने उठते ही उस मौलवी को पकड़ लिया और धक्के देकर उसे उस मज्लिस से बाहर निकाला और सीढ़ी के नीचे उतार दिया। तब मैंने नज़र उठा कर देखा तो क्या देखता हूँ कि जनाब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारी जमाअत के निकट एक विशाल चबूतरे पर खड़े हैं और ऐसा विचार आता है कि टहल रहे हैं तथा मालूम होता है कि जब मौलवी को निकाला गया तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसी स्थान के निकट ही खड़े थे परन्तु उस समय नज़र उठा कर नहीं देखा। अब जो देखा तो ज्ञात हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में पुस्तक आईना 'कमालात-ए-इस्लाम' है अर्थात् यही पुस्तक और यह स्थान जो उस समय छपा हुआ मालूम होता है तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी मुबारक उंगली उस स्थान पर रखी हुई है कि जहां आंहज़रत^स की मुबारक यशोगान का वर्णन और आपकी पवित्र और प्रभावी एवं उच्च शिक्षा का वर्णन है और एक उंगली उस स्थान पर भी रखी हुई है कि जहां सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की विशेषताओं, सच्चाई और श्रद्धा का वर्णन है। आप^स मुस्कराते हैं और कहते हैं कि -

هَذَا لِی وَهَذَا لِأَصْحَابِی

अर्थात् यह प्रशंसा मेरे लिए है और यह मेरे सहाबा के लिए। तत्पश्चात् स्वप्न से इल्हाम की ओर मेरी तबियत अग्रसर हुई और कश्फ़ी हालत पैदा हो गई तो तन्द्रावस्था में मुझ पर व्यक्त किया गया कि इस स्थान में ख़ुदा तआला की जो प्रशंसा है उस पर अल्लाह तआला ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और फिर उसके बारे में यह इल्हाम हुआ कि

هَذَا ثَنَاءٌ لِّی

और यह मंगल की रात थी और तीन बजकर पन्द्रह मिनट गुज़रे थे। दोबारा यह कि 18 अक्टूबर 1892 ई. के बाद 7, दिसम्बर 1892 ई. को एक और स्वप्न देखा। क्या देखता हूँ कि मैं हज़रत अली कर्म्मल्लाहु वज्हेहू बन गया हूँ अर्थात् स्वप्न में ऐसा जानता हूँ कि

हैं कि हदीसों से सिद्ध है कि मसीह मौऊद पर भी कुफ़्र का फ़त्वा होगा। अतः वह भविष्यवाणी पूरी हुई। निष्कर्ष - वह युग जो प्रथम युग और मसीह मौऊद के युग के बीच में है अत्यन्त बुरा युग है। अतः उस युग के लोगों के बारे में आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं -

خَيْرُ هَذِهِ الْأُمَّةِ أُولَہَا وَآخِرُہَا۔ أُولَہَا فِیہُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَآخِرُہَا فِیہُمْ عِیْسَى بْنُ مَرْیَمَ وَبَيْنَ ذَلِكَ فِیہِ أَغْوَجٌ لَیْسُوا مِنِّی وَلَسْتُ مِنْہُمْ

शेष हाशिया- वही हूँ। स्वप्न की अद्भुत बातों में से एक यह भी है कि कभी एक व्यक्ति स्वयं को एक अन्य व्यक्ति मसझ लेता है। अतः उस समय मैं समझता हूँ कि मैं अली मुर्तज़ा हूँ। और ऐसी स्थिति है कि ख़वारिज का एक गिरोह मेरी ख़िलाफ़त में हस्तक्षेप कर रहा है। अर्थात् वह गिरोह मेरे ख़िलाफ़त के मामले को रोकना चाहता है और उसमें षडयंत्र करता है। तब मैंने देखा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास हैं। सहानुभूति और प्रेम से मुझे फ़रमाते हैं

یا علی دعم وانصارهم وزراعتم-

अर्थात् हे अली! इन से और इन के सहायकों तथा इनकी खेती से अलग हो और इन को छोड़ दे तथा इन से मुंह फेर ले और मैंने देखा कि इस षडयंत्र के समय आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे सब्र करने के लिए कहते हैं और विमुख होने के लिए बल देते हैं और कहते हैं कि तू ही सच्चाई पर है परन्तु इन लोगों से बात न करना उचित है। और खेती से अभिप्राय मौलवियों के पीरों की वह जमाअत है जो उनकी शिक्षाओं से प्रभावित है जिसकी वे एक लम्बे समय से सिंचाई करते चले आए हैं। फिर इसके बाद मेरी तबियत इल्हाम की ओर अग्रसर हुई और इल्हाम के अनुसार ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि एक विरोधी व्यक्ति मेरे बारे में कहता है

ذُرُونِی أَقْتُلْ مُوسٰی

अर्थात् मुझ को छोड़ो ताकि मैं मूसा को अर्थात् इस ख़ाकसार को क़त्ल कर रहा हूँ। और यह स्वप्न रात के लगभग 2 बजकर 40 मिनट पर देखा था और प्रायः बुध का दिन था।
فالحمد لله على ذلك

अर्थात् उम्मतें दो ही उत्तम हैं। एक प्रथम और एक अन्तिम। बीच का गिरोह एक टेढ़ी चाल चलने वालों का गिरोह है जो देखने में एक सेना तथा रूहानियत की दृष्टि से मुर्दा है। न वह मुझ से और न मैं उनमें से हूँ।

सही हदीस में है कि जब यह आयत उतरी कि

أَخْرَيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ

तो आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलमान फ़ारसी के कंधे पर हाथ रखा और फ़रमाया -

لو كان الايمان عند الثريا لنالاه رجلٌ من فارس او رجلاً من فارس

अतः इस हदीस से मालूम हुआ कि अन्तिम युग में फ़ारसी नस्ल लोगों में से एक आदमी पैदा होगा कि वह ईमान में ऐसा सुदृढ़ होगा कि यदि ईमान सुरैया में होता तो वहीं से उसे ले आता। एक दूसरी हदीस में उस आदमी को महदी के शब्द से नामित किया गया है। और उसका प्रकटन अन्तिम युग में पूर्वी देश में होना बताया गया है। और दज्जाल का प्रकटन भी अन्तिम युग में पूर्वी देश में ठहराया गया है। इन दोनों हदीसों के मिलाने से ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति दज्जाल के मुकाबले पर आने वाला है वह यही व्यक्ति है और ख़ुदा की सुन्नत भी इसी बात को चाहती है कि जिस देश में दज्जाल जैसा दुष्ट (अन्तः कुटिल) पैदा हुआ उसी देश में वह पवित्र भी पैदा हो। क्योंकि वैद्य जब आता है तो रोगी की ओर ही जाता है। यह अत्यन्त आश्चर्यजनक बात है कि सही हदीसों के अनुसार दज्जाल तो हिन्दुस्तान में पैदा हो और मसीह दमिश्क के मीनारों पर जा उतरे। इस में सन्देह नहीं कि मदीना मुनव्वरा से हिन्दुस्तान पूरब दिशा में है। निस्सन्देह सही हदीस से सिद्ध है कि पूरब की ओर से ही दज्जाल प्रकट होगा और पूरब की ओर से ही अल्लाह तआला के महदी के काले झंडे प्रकट होंगे। जैसे प्रथम दिन से यही निश्चित है कि उपद्रवों का स्थान भी पूरब ही है और उपद्रवों के सुधार का स्थान भी पूरब ही है।

यहां एक रहस्य है और वह यह है जैसा कि अल्लाह तआला ने आयत के प्रत्यक्ष शब्दों में **وَأَخْرَيْنَ مِنْهُمْ** का शब्द प्रयोग करके इस बात की ओर संकेत

किया कि वे लोग जो विशेषताओं में सहाबा के रंग में प्रकट होंगे वे अन्तिम युग में आएंगे और ऐसा ही इस आयत में **وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ** के सम्पूर्ण अक्षरों की संख्याएं जो 1275 हैं इस बात की ओर संकेत कर दिया कि **آخَرِينَ مِنْهُمْ** का चरितार्थ जो फ़ारसी नस्ल से है अपने प्रत्यक्ष रूप से प्रादुर्भावित होकर इस आयु में पूरी करके सहाबा से अनुकूलता पैदा कर लेगा। फिर यही वर्ष 1275 हिज्री जो आयत (अल् जुमा- 4) **وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ** के अक्षरों की संख्याओं से प्रकट होता है। इस विनीत के रूहानी प्रादुर्भाव और परिपक्वता की तारीख है जो आज के दिन तक चौंतीस वर्ष होते हैं। यदि यह कहा जाए कि **آخَرِينَ مِنْهُمْ** का शब्द बहुवचन है फिर एक पर कैसे बोला जा सकता है तो इसका उत्तर यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं इस को एक पर बोला है। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस आयत की व्याख्या के समय सलमान फ़ारसी के कंधे पर हाथ रखकर फ़रमाया कि फ़ारस की नस्ल से एक ऐसा व्यक्ति पैदा होगा जो निकट है कि ईमान को सुरैया से ज़मीन पर ले आए। अर्थात् वह ऐसे समय में पैदा होगा कि जब लोग दार्शनिक विचारों के प्रकाशित होने, नास्तिकता के प्रसारित होने ख़ुदा तआला के प्रेम के ठण्डे हो जाने के कारण ईमानी हालत में बहुत कमजोर और निकम्मे हो जाएंगे। तब ख़ुदा तआला उसके हाथ से और उसके अस्तित्व की बरकत से लोगों के दिलों में दोबारा वास्तविकत ईमान पैदा करेगा। जैसे खोया हुआ ईमान आसमान से पुनः उतरेगा और पवित्र कुर्आन में बहुवचन का शब्द एकवचन के लिए आया है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उम्मत कहा गया है, हालांकि वह एक सदस्य थे। इसके अतिरिक्त इस आयत में समझाने के उद्देश्य से भी यह शब्द लिया गया है ताकि प्रकट किया जाए कि वह आने वाला एक नहीं रहेगा बल्कि वह एक जमाअत हो जाएगी जिनको ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान होगा और वह उस ईमान का रंग तथा गंध पाएगा जो सहाबा का ईमान था।

अब हम पुनः अख़बार 'नूरअफ़्शा' के निराधार दावे का खण्डन करने के उद्देश्य से लिखते हैं कि यदि इस अक्षरांतरित, परिवर्तित इंजील के बारे में जो ईसाइयों के हाथ में है, खामोश रह कर इस वाक्य को सही भी समझा जाए कि

हज़रत मसीह ने ज़रूरी यह दावा किया है कि क़यामत और जीवन में हूँ। तो इस से कुछ प्राप्त नहीं। क्योंकि ऐसा दावा जो अपने साथ अपना सबूत नहीं रखता, किसी के लिए श्रेष्ठता का कारण नहीं हो सकता। यदि एक मनुष्य एक बात के बारे में दावा तो न करे परन्तु वह बात कर दिखाए तो उस दूसरे मनुष्य से कई गुना अच्छा है कि दावा तो करे परन्तु दावा सिद्ध करने से असमर्थ रहे। इंजील स्वयं गवाही दे रही है कि हज़रत मसीह का दावा दूसरों के बारे में तो क्या स्वयं हवारीयों की हालत पर दृष्टि डालने से एक ऐतराज़ करने वाले की दृष्टि में अत्यन्त ऐतराज़ योग्य ठहरता है तथा सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह अपने हवारीयों को भी कामवासना संबंधी क़ब्रों में ही छोड़ गए। और जब हम हज़रत मसीह के इस दावे को हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल के दावे से तुलना करते हैं तो उस दावे और इस दावे में अंधकार तथा प्रकाश का अन्तर दिखाई देता है। हज़रत मसीह का दावा सबूत के अभाव के एक तंग ओर अंधकार के गढ़े में गिरा हुआ है तथा अपने साथ कोई प्रकाश नहीं रखता। परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दावा सूर्य से समान चमक रहा है और आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाश्वत जीवन पर यह भी एक बड़ा भारी तर्क है कि प्रशंसित हज़रत का शाश्वत दानशीलता जारी है। जो व्यक्ति इस युग में भी आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करता है वह निस्सन्देह क़ब्र में से उठाया जाता है और उसे एक रूहानी जीवन प्रदान किया जाता है न केवल कल्पना के तौर पर बल्कि उसके सच्चे-व-सही लक्षण प्रकट होते हैं, और आकाशीय सहायताएं तथा बरकतें और रूहुल कुदुस के विलक्षण समर्थन उसके साथ संलग्न हो जाते हैं तथा वह सम्पूर्ण संसार के मनुष्यों में से एक अद्वितीय मनुष्य हो जाता है, यहां तक कि ख़ुदा तआला उस से वार्तालाप करता है और उस पर अपने विशिष्ट रहस्यों को प्रकट करता है और अपनी वास्तविकताएं तथा मआरिफ़ ख़ौलता है और उसमें अपने प्रेम एवं कृपाओं के चमकते हुए लक्षण प्रकट कर देता है और उस पर अपनी सहायताएं उतारता है और उसमें अपनी बरकतें रख देता है तथा उसे अपने प्रतिपालन का दर्पण बना

देता है। उसकी जुबान पर हिकमत जारी होती है, उसके दिल से बारीक रहस्यों के चश्मे निकलते हैं और उस पर गुप्त भेद प्रकट किए जाते हैं तथा उस पर खुदा तआला एक महा वैभवशील झलक करता है और उससे दुआओं के स्वीकार होने में तथा अपनी स्वीकारिताओं में और आध्यात्मिक ज्ञान के द्वार खुलने में, परोक्ष के रहस्यों के प्रकट होने में तथा बरकतों के उतरने में सब से ऊपर और सब पर विजयी रहता है। अतः इस विनीत ने खुदा तआला से मामूर होकर उन्हीं बातों के बारे में और उसी समझाने के लिए कई हजार रजिस्टर्ड पत्र एशिया, यूरोप और अमरीका के प्रसिद्ध विरोधियों की ओर भेजे थे ताकि यदि किसी का यह दावा हो कि यह रूहानी जीवन खातमुलअंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण के अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम से भी प्राप्त हो सकता है तो वह इस विनीत का मुकाबला करे और यदि यह नहीं तो सत्याभिलाषी बन कर सच्चे दिल से बरकतों, लक्षणों और निशानों को देखने के लिए उपस्थित हो जाए। परन्तु किसी ने सच्चाई और नेक नीयती से इस ओर मुंह न किया तथा अपनी दूरी बनाने से सिद्ध कर दिया कि वे सब अंधकार में गिरे हुए हैं और वर्तमान में जो हमारे कुछ सहधर्मी भाई मुसलमान कहलाकर इस प्रकाश से इन्कारी हैं न स्वीकार करते हैं न सच्चे दिल से आते और आजमाते हैं और काफिर कहने पर कमर बांध रहे हैं। इन सब बातों का मूल कारण अंधापन, कंजूसी और द्वेष की अधिकता है। और ऐसे लोगों का इस्लाम में होना इस्लाम के अपमान का कारण नहीं और यह ऐतराज नहीं हो सकता कि इन लोगों के रूहानी रोग क्यों दूर नहीं हुए और ये लोग क़ब्रों में से क्यों न निकले? क्योंकि यदि कोई सूर्य की ओर से अपने घर के किवाड़ बन्द करके एक अंधकारमय कोने में बैठ जाए तो यदि उस तक सूर्य का प्रकाश न पहुंचे तो यह सूर्य का दोष नहीं बल्कि स्वयं उस व्यक्ति का दोष है जिसने ऐसा किया। इसके अतिरिक्त यद्यपि ये लोग कैसे ही छुपे हुए और वास्तविकता से दूर हैं परन्तु फिर भी खुले तौर पर तौहीद को मानते हैं। किसी मनुष्य को खुदा नहीं बनाते और अपने अन्दर तौहीद की बरकत से एक प्रकाश भी रखते हैं तथा उनमें एक सीमा तक जीवन की गर्मी भी मौजूद है। इसलिए हम नहीं

कह सकते कि वे बिल्कुल मर गए यद्यपि कि खरतनाक हालत में हैं। यदि कोई ईसाई या हिन्दू हमारी ओर से मुंह फेर कर ऐसी मिन-मेख करे तो वह नितान्त पक्षपाती या बहुत मूर्ख है। बाग में कांटों का होना भी आवश्यक है। जहां फूल हैं कांटे भी होंगे परन्तु विरोधी वर्ग में तो सर्वथा कांटों का ही ढेर दिखाई देता है। ईसाइयों की यह सर्वथा व्यर्थ बातें हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम रूहानी क्रयामत था और मसीह अलैहिस्सलाम में होकर हम जीवित हो उठे। ईसाई सज्जन भली भांति स्मरण रखें कि मसीह अलैहिस्सलाम का क्रयामत का नमूना होना बिल्कुल सिद्ध नहीं और न ईसाई जीवित हो उठे, बल्कि मुर्दा और सब मुर्दों से प्रथम श्रेणी पर तथा तंग और अंधकारमय क़ब्रों में पड़े हुए तथा शिर्क के गढ़े में गिरे हुए हैं। उनमें न ईमान की रूह है न ईमान की रूह की बरकत बल्कि तौहीद की छोटी सी छोटी श्रेणी जो मख़्लूक परस्ती (सृष्टि की इबादत) से बचना है उनको वह भी प्राप्त नहीं हुआ और एक अपने जैसे असहाय एवं कमज़ोर इन्सान को स्रष्टा (ख़ालिक) समझ कर उसकी उपासना (इबादत) कर रहे हैं। स्मरण रहे कि तौहीद की तीन श्रेणियां हैं। सबसे छोटी श्रेणी यह है कि अपनी जैसी मख़्लूक की इबादत न करें। न पत्थर की, न अग्नि की, न मनुष्य की, न किसी सितारे की। दूसरी श्रेणी यह है कि संसाधनों पर भी ऐसे न गिरें कि जैसे उनको प्रतिपालन (रबुबियत) के कारख़ाने में एक प्रकार का स्थायी कब्ज़ा करने वाला ठहरा दें बल्कि हमेशा साधन पैदा करने वाले पर दृष्टि रहे न कि साधनों पर। तीसरी श्रेणी तौहीद की यह है कि ख़ुदा के चमकारों को पूर्ण रूप से देख कर प्रत्येक ग़ैर के अस्तित्व को न होने जैसा समझें और इसी प्रकार अपने अस्तित्व को भी। निष्कर्ष यह कि पूर्ण विशेषताओं वाले ख़ुदा के अस्तित्व के अतिरिक्त प्रत्येक चीज़ मिट जाने वाली (नश्वर) दिखाई दे। यही रूहानी जीवन है कि तौहीद की ये तीनों श्रेणियां प्राप्त हो जाएं। अब विचार करके देख लो कि रूहानी जीवन के समस्त सदैव रहने वाले चश्में (झरने) केवल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कारण संसार में आए हैं। यही उम्मत है जो यद्यपि नबी तो नहीं परन्तु नबियों के समान ख़ुदा तआला से परस्पर वार्तालाप करने वाली हो जाती है और यद्यपि रसूल नहीं परन्तु

रसूलों के समान खुदा तआला के प्रकाशमान निशान उसके हाथ पर प्रकट होते हैं और उसमें रूहानी जीवन के दरिया बहते हैं तथा कोई नहीं जो उसका मुकाबला कर सके। **कोई है जो बरकतों एवं निशानों को दिखाने के लिए मुकाबले में खड़ा हो कर हमारे इस दावे का उत्तर दे!!!**

हर तरफ़ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं दीने मुहम्मद^स सा न पाया हम ने

कोई मज्हब नहीं ऐसा कि निशां दिखलावे
यह समर बागे मुहम्मद से ही खाया हम ने

हमने इस्लाम को खुदा तजुर्बा करे देखा
नूर है नूर उठो देखो सुनाया हम ने

और दीनों को जो देखा तो कहीं नूर न था
कोई दिखलाए अगर हक़ को छुपाया हम ने

थक गए हम तो इन्हीं बातों को कहते कहते
हर तरफ़ दावतों का तीर चलाया हम ने

आजमायश के लिए कोई न आया हर चंद
हर मुख़ालफ़ को मुकाबिल पे बुलाया हम ने

यूँही ग़फ़लत के लिहाफों में पड़े सोते हैं
वे नहीं जागते सौ बार जगाया हम ने

जल रहे हैं ये सभी बुज़्जों में और कीनों में
बाज़ आते नहीं हरचन्द हटाया हम ने
आओ लोगो कि यहीं नूरे खुदा पाओगे

लो तुम्हें तौर तसल्ली का बताया हम ने
 आज उन नूरों का इक जोर है इस आजिज़ में
 दिल को उन नूरों का हर रंग दिलाया हम ने
 जब से यह नूर मिला नूरे पयम्बर^{स्} से हमें
 ज्ञात से हक़ के वुजूद अपना मिलाया हम ने
 मुस्तफ़ा^{स्} पर तेरा बेहद हो सलाम और रहमत
 उस से यह नूर लिया बार-ए-ख़ुदाया हम ने
 रब्त है जाने मुहम्मद^{स्} से मेरी जां को मुदाम
 दिल को वह जाम लबालब है पिलाया हम ने
 उस से बेहतर नज़र आया न कोई आलम में
 ला जरम ग़ैरों से दिल अपना छुड़ाया हम ने
 मौरिदे क़हर हुए आंख में अग्यार के हम
 जब से इश्क़ उस का तहे दिल में बिठाया हम ने
 ज़ोम में उनके मसीहाई का दावा मेरा
 इफ़्तिरा है जिसे अज़ ख़ुद ही बनाया हम ने
 काफ़िरओ, मुल्हिदओ, दज्जाल हमें कहते हैं
 नाम क्या-क्या ग़मे मिल्लत में रखाया हम ने
 गालियां सुन के दुआ देता हूं उन लोगों को
 रहम है जोश में और ग़ैज़ घटाया हमने
 तेरे मुंह की ही क़सम मेरे प्यारे अहमद^{स्}

तेरी खातिर से यह सब बार उठाया हम ने

तेरी उल्फ़त से है मामूर मेरा हर ज़र्राह
अपने सीने में यह इक शहर बसाया हम ने
सफ़े दुश्मन को किया हमने बहुज्जत पामाल
सैफ़ का काम क़लम से ही दिखाया हम ने

नूर दिखला के तेरा सब को किया मुल्ज़िमों ख़्बार
सब का दिल आतिशे सोज़ां में जलाया हम ने

नक़्शे हस्ती तेरी उल्फ़त से मिटाया हम ने
अपना हर ज़र्रा तेरी राह में उड़ाया हम ने

तेरा मैखाना जो इक मर्जए आलम देखा
ख़ुम का ख़ुम मुंह से बसद हिर्स लगाया हम ने

शाने-हक्र तेरे शमाइल में नज़र आती है
तेरे पाने से ही उस ज़ात को पाया हम ने

छू के दामन तेरा हर दाम से मिलती है निजात
ला जरम दर पे तेरे सिर को झुकाया हम ने

दिलबरा मुझ को क़सम है तेरी यकताई की
आप को तेरी मुहब्बत में भुलाया हम ने

बख़ुदा दिल से मेरे मिट गए सब ग़ैरों के नक़्श
जब से दिल में यह तेरा नक़्श जमाया हम ने

देख कर तुझ को अजब नूर का जल्व: देखा

नूर से तेरे शयातीं को जलाया हम ने
हम हुए खैर-ए-उमम तुझ से ही ऐ खैर-ए-रसूल^ﷺ
तेरे बढ़ने से क़दम आगे बढ़ाया हम ने

आदमी जाद तो क्या चीज़ फ़रिश्ते भी तमाम
मद्ह में तेरी वह गाते हैं जो गाया हम ने

क्रौम के जुल्म से तंग आ के मेरे प्यारे आज
शोर-ए-महशर तेरे कूचा में मचाया हम ने

अब हम इस बात को कुछ प्रकट करना चाहते हैं कि इस्लाम★ के फल क्या हैं। अतः स्पष्ट हो कि जब कोई अपने मौला का सच्चा अभिलाषी पूर्ण रूपेण इस्लाम पर स्थित हो जाए न कि किसी आडम्बर तथा बनावट से बल्कि स्वाभाविक तौर पर खुदा तआला के मार्गों में प्रत्येक शक्ति उसके कार्य में लग जाए तो उसकी इस हालत का अन्तिम परिणाम यह होता है कि खुदा तआला की हिदायत की श्रेष्ठ

★हाशिया - सय्यद अहमद ख़ान साहिब सी.एस.आई पर एक आवश्यक

इत्माम-ए-हुज्जत

इस्लाम के एक नवीन समुदाय के प्रमुख सय्यद अहमद ख़ान साहिब सी.एस.आई के कुछ लेखों विशेष तौर पर उनकी तफ़्सीर के देखने से उनके कुछ ऐसे विचार मालूम होते हैं कि जैसे उनको इस बात से इन्कार है कि किसी को वास्तव में खुदा का सम्बोधन एवं वार्तालाप प्राप्त हो सके। और मैं अब तक यही समझता हूँ वह उस वह्यी से इन्कारी हैं जो जिब्राईल अलैहिस्सलाम के द्वारा नबियों को मिलती है और खुदाई शक्तियों, ग़ैब की बातें बताने तथा अन्य विलक्षण निशानों को अपने अन्दर रखती है और शुद्ध रूप से आकाश से उतरती है न कि कोई स्वाभाविक शक्ति। यद्यपि वे प्रत्यक्षतः जिब्राईल को भी मानते हैं परन्तु उनका जिब्राईल वह नहीं है जिनको सर्वसहमति से बीस करोड़ मुसलमान संसार में मान रहे हैं। वे खुदा के कलाम के भी क़ायल हैं परन्तु उस कलाम के नहीं जो खुदा का प्रकाश और खुदाई शक्तियाँ अपने अस्तित्व में रखता है बल्कि केवल एक स्वाभाविक शक्ति जो मानवीय सहनशीलता के अनुमान पर खुदा के उपकार को स्वीकार करता है न कि वह वह्यी

चमकारें समस्त पर्दों से मुक्त होकर उसकी ओर मुख करती हैं और उस पर विभिन्न प्रकार की बरकतें उतरती हैं और वे आदेश तथा वे आस्थाएं जो केवल ईमान और सुनने के तौर पर स्वीकार किए गए थे। अब सच्चे कश्फों, निश्चित एवं अटल इल्हामों अनुभूत और आभास के तौर पर स्पष्ट किए जाते हैं तथा उस पर शरीअत और धर्म के रहस्य, तथा सच्ची मिल्लत के गुप्त रहस्य खुल जाते हैं, खुदा और

शेष हाशिया- जो खुदाई के झरने से निकली है, और आश्चर्य यह कि सय्यद साहिब पवित्र कुर्आन को भी खुदा की ओर से मानते हैं और उनके कार्यों से मालूम होता है कि वह इस्लाम से प्रेम भी रखते हैं तथा मुसलमानों के हमदर्द भी हैं और अहले इस्लाम की सन्तान की सांसारिक स्थिति के शुभ चिन्तक भी। किन्तु इसके बावजूद आश्चर्य पर आश्चर्य यह कि वह पवित्र कुर्आन के स्पष्ट आदेशों के विपरीत अत्यन्त अज्ञात और घृणित रायें व्यक्त कर रहे हैं। इसका कारण एक आकस्मिक आजमायश मालूम होती है। जिसमें वह फंस गए और वह यह कि इस से पहले कि वह पवित्र कुर्आन की शिक्षाओं पर विचार करते और उसके सन्तोषजनक तर्कों से अवगत होते किसी अशुभ समय में उन पुस्तकों की ओर आकृष्ट हो गए जो इस युग के यूरोप के फ़िलास्फ़रों ने जो लगभग नास्तिक हैं लिखी हैं और न केवल यही बल्कि मालूम होता है कि ऐसे नास्तिक स्वभाव नव शिक्षित लोगों की बातें भी सुनते रहे जिन के स्वभावों में यूरोप का भौतिकी और फ़लसफ़ा (दर्शन शास्त्र) घुस गया था। तो जैसा कि एक तरफ के विचार सुनने का परिणाम हुआ करता है, वही परिणाम सय्यद साहिब को भी भुगतना पड़ा। पवित्र कुर्आन की वास्तविकताओं तथा रहस्यों से तो अज्ञान ही थे, इसलिए फ़िलास्फ़रों के भाषणों के जादुई प्रभाव ने सय्यद साहिब के दिल पर वह काम किया कि यदि खुदा तआला का फ़ज़ल (कृपा) और स्वभाव की पवित्रता जो उसके फ़ज़ल से थी उन्हें न थामती तो मालूम नहीं कि उनका यह भटकते फिरना उनको अब तक कहां तक पहुंचाता। सय्यद साहिब की सज्जनता वास्तव में प्रशंसनीय है कि उन्होंने प्रत्येक स्थिति में पवित्र कुर्आन का दामन नहीं छोड़ा। यद्यपि ग़लती से उसके उद्देश्य और उसकी शिक्षा और उसके निर्देशों से ऐसे दूर जा पड़े कि पवित्र कुर्आन की जो तावीलें (व्याख्याएं) न खुदा तआला के ज्ञान में थीं न उसके रसूल के ज्ञान में, न सहाबा के ज्ञान में, न वलियों, कुतुबों, ग़ौसों और अब्दाल (संत) के ज्ञान में और न उन पर (कुर्आन की) कोई स्पष्ट या मिलती-जुलती आयत संकेत करती है, वह सय्यद साहिब को सूझी। अत्यधिक अफसोस का यह स्थान है कि सय्यद साहिब ने पवित्र कुर्आन की उन शिक्षाओं जो वास्तविक इस्लामी सिद्धान्तों पर एवं खुदा की वहत्यी

उस की बादशाहत की सैर कराई जाती है ताकि वह विश्वास और मारिफ़त में पूर्ण श्रेणी प्राप्त करे और उसकी जुबान, वर्णन, समस्त कार्यों एवं कथनों, गतिविधियों तथा ठहराव में एक बरकत रखी जाती है और उसे एक विलक्षण बहादुरी, दृढ़ता और साहस प्रदान किया जाता तथा उसे हार्दिक प्रफुल्लता का एक उच्च स्थान प्रदान किया जाता है और उससे मनुष्यता के पदों का ओछापन, कृपणता, कंजूसी,

शेष हाशिया- का सारांश थीं या इस प्रकार कहो कि जिनका नाम इस्लाम था भलाई की नीयत से पानी फेर दिया और अपनी तफ़्सीर में पवित्र कुर्आन की स्पष्ट आदेशों वाली आयतों की ऐसी सच्चाई और न्याय से दूर तावीलों की कि जिन्हें हम किसी प्रकार से तावील नहीं कह सकते बल्कि एक पद्धति में पवित्र कुर्आन की पवित्र शिक्षाओं का खण्डन है। सय्यद साहिब के प्रत्येक वाक्य से ऐसा मालूम होता है कि जैसे इस नए फ़िल्सफ़े से जिसे यूरोप ने प्रस्तुत किया है उन का दिल कांपता और थरथराता है तथा उनकी रूह उनके आगे नतमस्तक है। हम ने जिस किसी ऐसे स्थान से उनकी तफ़्सीर को देखा, जहां उन्हें पवित्र कुर्आन वास्तव में वर्तमान फ़िल्सफ़े के विपरीत या भौतिक दृष्टि से विरोधी मालूम होता था वहां यही पाया कि सय्यद साहिब स्वीकार करने वाले प्रतिवादी की तरह फ़िल्सफ़े के पैरों पर गिर पड़े और फ़िल्सफ़ी शिक्षाओं को पूर्णतया स्वीकार करके अधम तावीलों के साथ पवित्र कुर्आन की तरफ़ से ऐसी अपमानजनक सुलह का सन्देश पहुंचाया कि जैसे असहाय और पराजित शत्रु निराश्रय होकर तथा प्रत्येक ओर से रुक कर कुछ कच्चे और व्यर्थ बहानों से सुलह का इच्छुक होता है। हमें यह शौक ही रहा कि सय्यद साहिब की कोई ऐसी पुस्तक भी देखें जिसमें सय्यद साहिब ने (यूरोप के) वर्तमान फ़िल्सफ़े पर कोई तेज़ तलवार चलाई हो और विरोध के अवसर पर बिना किसी तावील के पवित्र कुर्आन का बोलबाला किया हो मगर अफ़सोस कि हमारा यह शौक पूरा न हुआ। यदि सय्यद साहिब उन हदीसों की तावीलें करते जो पवित्र कुर्आन के स्पष्ट प्रमाणों से जाहिर तौर पर उनको विरोधी मालूम होतीं और वर्तमान फ़िल्सफ़े की दृष्टि से आपत्तिजनक ठहरतीं तो हमें कुछ अफ़सोस न होता। क्योंकि हम सोचते कि बड़ा सहारा और ईमान का आधार जिस का अक्षर-अक्षर अटल, निरन्तर तथा अटल सत्य है अर्थात् पवित्र कुर्आन, सय्यद साहिब के हाथ में है परन्तु उन की इस ग़लती को कहां छुपाएं और कैसे गुप्त रखे कि उन्होंने पवित्र कुर्आन पर ही निरस्त होने की लकीर खींचनी चाही। मैं कभी स्वीकार नहीं करूंगा कि कसी अवसर पर उनके दिल ने गवाही दी हो कि उन्होंने तावीलों का जो दामन बहुत दूर तक फैलाया है वह सही है बल्कि जगह-जगह स्वयं उन का दिल उन को दोषी ठहराता होगा कि हे व्यक्ति तेरी

बारबार की भूल, स्वभाव का कमीनापन, कामवासनाओं की दासता, शिष्टाचार की खराबी और हर प्रकार का कामवासना संबंधी अंधकार पूर्णतया दूर करके उसके स्थान पर खुदाई आचरण का प्रकाश भर दिया जाता है। तब वह पूर्णरूप से परिवर्तित हो कर एक नए जन्म का लिबास पहन लेता है और खुदा तआला से सुनता और खुदा तआला का प्रकोप और उसका रहम (दया) खुदा तआला

शेष हाशिया- समस्त तावीलें ऐसी हैं कि यदि पवित्र कुर्आन एक साक्षात् व्यक्ति होता तो सौ जीभों के साथ उन से विमुखता व्यक्त करता और उसने विमुखता व्यक्त की है क्योंकि वह उन लोगों को अत्यन्त प्रकोप का पात्र ठहराता है जो उसकी आयतों में नास्तिकता की विचारधारा को मिलाते हैं। यहूदियों की करतूतों का नमूना हमारी आंखों के समाने है कि उन्होंने खुदा की वाणी में अक्षरान्तरण (हरफों में परिवर्तन) और नास्तिकता अपना कर क्या नाम रखाया। पवित्र कुर्आन की किसी आयत के ऐसे अर्थ करने चाहिए कि जो सैकड़ों दूसरी आयतों से जो उसकी पुष्टि के लिए खड़ी हों, उसके अनुसार हों और दिल संतुष्ट हो जाए और कह उठे कि हां खुदा तआला का यही आशय उसके पवित्र कलाम में से निश्चित तौर पर प्रकट होता है। यह बहुत गुनाह और पाप का कार्य है कि हम पवित्र कुर्आन की वास्तविकता से दूर ऐसी तावीलें करें कि जैसे हम उसके दोष पर पर्दा डाल रहे हैं या उसे वे बातें जता रहे हैं जो उसे मालूम नहीं थीं। सय्यद साहिब से बड़ी गलती यह हुई कि वर्तमान अनुसंधानों को ऐसा मान्य सबूत और निश्चित मान लिया कि जैसे उनमें गलती होना संभव ही नहीं। हालांकि इस नवीन दर्शन शास्त्र (फ़िलास्फी) और विज्ञान में ऐसी ही गलतियां निकलना संभव है कि जैसे पहले दर्शन शास्त्र और भौतिक शास्त्र की गलतियां अब निकल रही हैं। सय्यद साहिब इस कहावत को भूल गए कि पाए इस्तिदलालियां चूबीं बवद - और नवीन दर्शन शास्त्र को वह सम्मान दिया जो खुदा तआला के पवित्र एवं सन्देह रहित कलाम का अधिकार था। कुछ माह का समय गुजरा है कि सय्यद साहिब ने अनपे एक मित्र के नाम जो सियालकोट में रहते हैं इस खाकसार की पुस्तकों के संबंध में लिखा था कि वे किसी को तनिक लाभ नहीं पहुंचा सकतीं अर्थात् सच्चाई से पूर्णतया खाली हैं और न केवल इतना ही बल्कि मुझे याद पड़ता है कि एक बार सय्यद साहिब ने एक अखबार में छपवा भी दिया था कि किसी से इल्हामी भविष्यवाणियों का प्रकट होना या कश्फों और खुदाई संबोधनों से सम्मानित होना एक असंभव बात है और यदि कोई ऐसा दावा करे तो वह पागलों में से है और ऐसे विचार पागलों की प्रारम्भिक निशानियों में से हैं और यदि ये विचार दिल में दृढ़ हो जाएं तो फिर वह पूरा-पूरा पागलपन है। यद्यपि

का रहम हो जाता है। और इस श्रेणी में उसकी दुआएं मुंह मांगे स्वीकार होती हैं न कि बतौर परीक्षा के और वह पृथ्वी पर अल्लाह का अन्तिम निर्णय तथा अल्लाह का संरक्षण होता है और आकाश पर उसके अस्तित्व से प्रसन्नता की जाती है और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ उपहार जो उसे प्रदान किया जाता है खुदा तआला से वार्तालाप तथा उसके सम्बोधन हैं जो बिना किसी सन्देह एवं संशय तथा किसी

शेष हाशिया- इस समय मुझे ठीक-ठीक याद नहीं कि सय्यद साहिब के अपने शब्द क्या थे परन्तु संभवतः उन का खुलासा यही था। अतः मुझे ऐसे वाक्य सुनने और पढ़ने से बहुत ही अफसोस हुआ कि सय्यद साहिब जैसा एक व्यक्ति जिसे इस्लाम से प्रेम का दावा तथा पवित्र कुर्आन की तफ्सीर करने की उमंग हो और संजीदगी, गृढ़ता और सज्जनता का दम भी मारता हो वह इतनी जल्दी ऐसी बातें मुंह पर लाए कि जो पवित्र कुर्आन की शिक्षाओं के बिल्कुल विरोधी हैं। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होती यदि सय्यद साहिब केवल इतने को ही पर्याप्त न समझते कि विरोधात्मक और आस्था के विपरीत बातें कह कर और खुदा से वार्तालाप के दावेदार को उन्मादी और पागल ठहरा कर चुप हो जाएं बल्कि जैसा कि आदत और सत्यप्रिय एवं न्यायप्रिय लोगों का तरीका है मेरे दावों का मुझ से प्रमाण चाहते ताकि यदि मैं गलती पर था तो उस गलती का साफ तौर पर फैसला हो जाता और यदि हज़रत आप ही गलती पर थे तो उनको अपने वचनों से पीछे हटने का शुभ अवसर मिलता। बहरहाल इस आयोजन से लोगों को एक फ़ायदा पहुंचता और आजकल जो इन्हीं समस्याओं पर परस्पर एक-दूसरे के विरुद्ध लेख लिखे जा रहे हैं ये प्रतिदिन के झगड़े तय हो जाते। परन्तु मुझे बार-बार अफसोस होता है कि इस सीधे मार्ग की तरफ सय्यद साहिब ने ध्यान भी न दिया। मैंने बहुत सोचा कि इस का क्या कारण है मुझे इस का यह कारण ठहरा देना तो सही मालूम नहीं हुआ कि सय्यद साहिब प्रत्येक व्यक्ति से बहस की नींव डालना पसन्द नहीं करते क्योंकि मेरे दावे एक मामूली दावे नहीं बल्कि ये वे बातें हैं कि जिनकी चर्चा यदि करोड़ों लोगों में नहीं तो लाखों लोगों में तो ज़रूरी होगी। इसके अतिरिक्त सय्यद साहिब की इल्हामी भविष्यवाणियों और विलक्षण निशानों से एक सामान्य इन्कार है जिससे अंबिया (नबी लोग) भी जैसा कि मुझे आप की पुस्तकों का आशय मालूम होता है बाहर नहीं हैं। अतः क्या ही अच्छा होता है कि इस अवसर पर जो इल्हामी भविष्यवाणियों पर न केवल ईमान के तौर पर मेरा विश्वास है बल्कि उनका मुझे स्वयं दावा भी है। सय्यद साहिब मुझ से अपने सन्देहों को दूर करा लेते। यदि मैं अपने दावे में सच्चा न निकलता तो सय्यद साहिब

धूल के चन्द्रमा के प्रकाश के समान उसके िदल पर उतरते रहते हैं और अपने साथ नितान्त प्रभावशाली आनन्द रखते हैं तथा संतोष, सांत्वना और सुख प्रदान करते हैं। इस कलाम और इल्हाम में अन्तर यह है कि इल्हाम का झरना तो जैसे हर समय सानिध्य प्राप्त लोगों में बहता है और वे रूहुल कुदुस के बुलाने से बोलते और रूहुल कुदुस के दिखाने से देखते और रूहुल कुदुस के सुनाने से

शेष हाशिया- जिस दण्ड को मेरे लिए निर्धारित करते हैं उसे भुगतने के लिए उपस्थित था और यदि मेरी सच्चाई स्पष्ट हो जाती तो सय्यद साहिब इस समय में जब जीवन का सितारा अस्त होने के निकट है न केवल मेरी सच्चाई को स्वीकार करते बल्कि उन पवित्र आस्थाओं को जो नुबुव्वत की वह्यी के बारे में नष्ट कर बैठे हैं पुनः प्राप्त कर लेते। मेरे प्रिय एक मुनादी की आवाज़ को जो सच्चाई की ओर बुला रहा है न सुनना और उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखना तथा उसके बारे में बिना छान-बीन विरोध में बोलना और प्राणित सच्चाई के विरुद्ध जमे रहना मरने का मार्ग है। मुझे आप की बातों से गंध आती है कि केवल इतना ही नहीं कि आप इस उम्मत को ख़ुदा के वार्तालाप से खाली समझते हैं बल्कि आप किसी नबी के लिए भी यह पद प्रस्तावित नहीं करते कि ख़ुदा का ज़िन्दा और ख़ुदा की कुदरतों से भरा हुआ कलाम कभी उस पर उतरा हो। यदि आप की आस्था यही है जो मैंने समझी और मेरे विचार में गुज़री है तो नऊजुबिल्लाह आप का ईमान अत्यन्त भयंकर भंवर में पड़ा हुआ है। मैं बहुत प्रसन्न हूँगा यदि आप किसी अख़बार के द्वारा मुझे सूचना दे दें कि हमारी नबियों के बारे में यह आस्था नहीं है कि उन पर ख़ुदा तआला का जीवित कलाम नहीं उतरता और वह कलाम ग़ैबी (परोक्ष की) ख़बरों पर आधारित नहीं होता। और यदि ख़ुदा न करे आप का ख़ुदा की किताबों के बारे में जैसा कि अब तक मैंने समझा है यह विचार है कि वह निश्चित एवं वास्तविक तौर पर ख़ुदा तआला का कलाम नहीं और वह्यी से अभिप्राय केवल एक महारत है जो नबियों के स्वभाव को प्राप्त होती है अर्थात् उनका स्वभाव कुछ ऐसा ही बना होता है कि सच्चाई और बुद्धिमत्ता की बातें उनके मुंह से निकलती हैं तो फिर मैं आप पर खुले खुले वाद-विवाद के साथ समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करना चाहता हूँ ताकि लोग आप के अनुकरण से तबाह न हों। यदि आप अपने कथन से हटने का इक़रार करके मुझ से इस बात का सबूत चाहें कि वह्यी वास्तव में ख़ुदा तआला का कलाम कैसे होती है और ग़ैब की ख़बरों तथा भविष्य एवं पहले की ख़बरों पर आधारित होती है। तो मैं बड़ी प्रसन्नता से इल्हामी भविष्यवाणियों के नमूने से सबूत देने को तैयार हूँ

सुनते और उन के समस्त इरादे रूहुल कुदुस की फूंक से ही पैदा होते हैं। और यह बात सच और बिल्कुल सच है कि वे ज़िल्ली (प्रतिबिम्बित) तौर पर इस आयत के चरितार्थ होते हैं

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۖ (अन्नज्म- 53/4,5)

परन्तु ख़ुदा से वार्तालाप एक अलग बात है और वह यह है कि वह्यी

शेष हाशिया- और इस बात के सुनने से कि आप नेक नीयत के साथ इस परीक्षा के लिए तैयार हो गए हैं मुझे इतनी प्रसन्नता होगी कि शायद ऐसी खुशी किसी अन्य बात से न हो सके। इसलिए कि आप का अपनी मार डालने वाली गलतियों से रुक जाना मेरे नज़दीक एक क्रौम का सुधार करने से कम नहीं। जब मैं देखता हूँ कि पवित्र कुर्आन तो भविष्य-कालिक तथा भूत कालिक भविष्यवाणियों से भरा हुआ है। उदाहरणतया उसका प्रत्येक क्रिस्सा ही ग़ैब की ख़बरें हैं। यह नहीं कि किसी से सुनकर लिखा है तो मुझे आश्चर्य होता है कि आप इस बात के दावेदार कैसे हो सकते हैं कि पवित्र कुर्आन में ग़ैब की भविष्यकालिक एवं भूतकालिक ख़बरें नहीं। क्या यह समझे कि नरुज़ुबिल्लाह आप की यह आस्था है कि पवित्र कुर्आन में जो उदाहरण के तौर पर यूसुफ़ का क्रिस्सा और अस्थाब कहफ़ का क्रिस्सा आदम का क्रिस्सा और मूसा का क्रिस्सा इत्यादि क्रिस्से मौजूद हैं। वे ख़ुदा तआला की वह्यी अर्थात् अल्लाह तआला की ओर से नहीं उतरे बल्कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूदियों और ईसाइयों से सुन सुना कर पवित्र कुर्आन में लिख लिए थे। यदि यही बात है तो पवित्र कुर्आन का बहुत सा भाग उस पवित्र कलाम से बाहर करना पड़ेगा। क्योंकि जो बातें यहूदियों और ईसाइयों से सुनकर लिखी गईं वे बातें वास्तव में यहूदियों और ईसाइयों का कलाम होगा न कि ख़ुदा तआला का कलाम। और फिर बड़ी यह कठिनाई सामने आएगी कि पवित्र कुर्आन बहुत से स्थानों पर तौरात के क्रिस्सों का विरोधी है। इस स्थिति में नरुज़ुबिल्लाह यह मानना पड़ेगा कि दुष्ट यहूदियों ने धोखा देकर जो कुछ आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कोई क्रिस्सा वर्णन किया तो आप ने सादगी और अवगत न होने के कारण ऐसे क्रिस्से को पवित्र कुर्आन में लिख दिया। अब विचार करना चाहिए कि जिसकी यह आस्था हो कि पवित्र कुर्आन में यहूदियों और ईसाइयों से सुनी-सुनाई बातें लिखी गई हैं वह किस मुंह से कह सकता है कि मैं पवित्र कुर्आन को ख़ुदा तआला का कलाम जानता हूँ। परन्तु मेरा विचार है कि आप के दिल में ऐसी आस्था नहीं होगी। यद्यपि आपको पाश्चात्य दर्शन-शास्त्र का सितारा कैसा ही चमकदार दिखाई दिया हो परन्तु नरुज़ुबिल्लाह यह कब हो सकता है

मल्लूव (अर्थात् पढ़ कर सुनाई जानी वाली) वह्यी की तरह खुदा तआला का कलाम उन पर उतरता है और वे खुदा तआला से अपने प्रश्नों का ऐसा उत्तर पाते हैं कि जैसा एक मित्र, मित्र को उत्तर देता है और यदि हम उस कलाम की परिभाषा करें तो केवल इतनी कर सकते हैं कि वह अल्लाह तआला की एक विशेष प्रकटन का नाम है जो उसके सानिध्य प्राप्त फ़रिश्ते के माध्यम से प्रकटन

शेष हाशिया- कि आपकी हालत इस सीमा तक पहुंच जाए कि इस्लाम की वह गहरी और दृढ़ आस्था जो न केवल इस्लामी हैसियत से बल्कि नेतृत्व के स्वभाव से भी आपके अस्तित्व में है। अर्थात् यह कि पवित्र कुर्आन का शब्द-शब्द तिलावत की जाने वाली वह्यी है आप के दिल से बिल्कुल उखड़ गई हो और इसके स्थान पर यह ग़लत विचार दिल में दृढ़ हो गया हो कि पवित्र कुर्आन के क्रिस्से और भूतकाल की ख़बरें शुद्ध रूप में परोक्ष (ग़ैब) की बातें नहीं बल्कि यहूदियों और ईसाइयों से ली गई हैं, परन्तु कठिनाई यह है कि यदि आप इस बात पर ईमान रखते हैं कि समस्त क्रिस्से जो अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में हज़रत आदम से लेकर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम तक वर्णन किए हैं शुद्ध रूप से ग़ैब की ख़बरें हैं जो मनुष्य की शक्ति और उसकी प्रकृति (स्वभाव) से उच्चतर हैं। तो फिर आपका यह सिद्धान्त टूटता है कि वह्यी और कुछ चीज़ नहीं केवल प्राकृतिक गुण है (अर्थात् जो पहले से इंसान के अन्दर मौजूद है), क्योंकि मनुष्य का स्वभाव अपने अन्दर खुदाई की शक्तियां पैदा नहीं कर सकता। प्रत्येक मनुष्य का स्वभाव उतनी ही महारत रखता है जो उसके मनुष्य होने की स्थिति के अनुसार है, और यूं कि आप का यही मत है कि वह्यी की वास्तविकता प्राकृतिक गुण से अधिक नहीं तो वही आरोप जिसका अभी मैंने वर्णन किया है आएगा। प्रत्येक अहले हाल जो वह्यी की वास्तविकता को बतौर घटना जानता है वह आपकी इस काल्पनिक बात पर हंसेगा। जो वह्यी केवल स्वभाव की महारत है, यद्यपि इतना तो सच है कि खुदा की वह्यी के प्रकाशों को स्वीकार करने के लिए स्वीकार करने की क्षमता शर्त है जिसमें वे प्रकाश प्रतिबिम्बित हो सकें जो खुदा तआला किसी समय अपने विशेष इरादे से उतारे। परन्तु यह सर्वथा झूठ है कि वे प्रकाश मानवीय स्वभाव में ही एकत्र हैं और वरदान के उद्गम से उसके इरादे के साथ कुछ नहीं उतरता जो अपने अन्दर खुदाई शक्तियों को स्वीकार करने की क्षमताएं रखता हो। प्रिय सय्यद! आप जिन विचारों की इस समस्या में पैरवी करते हैं वह वास्तव में इस्लाम की शिक्षा नहीं है बल्कि उन मूर्ख दार्शनिकों के मत (रायें) हैं जो स्रष्टा खुदा तआला (जिसके नाम का सम्मान हो) को सर्वशक्तिमान नहीं समझते

में आती है। और उसका उद्देश्य यह होता है ताकि दुआ के स्वीकार होने से अवगत किया जाए या कोई नई या गुप्त (छुपी हुई) बात बताई जाए या भविष्य की खबरों से अवगत किया जाए या किसी बात में खुदा तआला की इच्छा की सूचना दी जाए या किसी अन्य प्रकार की घटनाओं में विश्वास और मारिफ़त (आध्यात्मिकता) की श्रेणी तक पहुंचाया जाए बहरहाल यह वही एक खुदाई

शेष हाशिया- बल्कि सूरज और चाँद की भांति कुछ कारणों के निवारण के लिए एक उपकरण ज्ञात करते हैं। जब आप खुदा तआला को इरादे के साथ कार्य करने वाला और अपनी इच्छा के साथ वही उतारने वाला विश्वास करेंगे तथा वही को ऐसी चीज़ समझेंगे जो उसी से निकलती है और उसी के उतारने से खुदाई शक्ति के साथ दिलों पर उतरती है तो इस स्थिति में आप उसे प्राकृतिक गुण नहीं कह सकते और न उसका नाम स्वाभाविक शक्ति रख सकते हैं बल्कि खुदा तआला का एक प्रकाश ठहरा देंगे, जो अल्लाह तआला के हाथ से और उसके इरादे से उसी समय उतरता है जब वह चाहता है। हां वह प्रकाश जो उतरता है वह धात्री स्वभाव पर ही अपना प्रकाश डालता है और अपना आना उसे जतला देता है।

और यह कहना कि हम से इस प्रकार से वही को स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि वह मानवीय बुद्धि के ऊपर है तो उसका यही उत्तर है कि मानवीय बुद्धि यदि एक प्रमाणित सच्चाई को अपनी समझ और विवेक-शक्ति से श्रेष्ठतर समझे तो वह सच्चाई केवल इस कारण से रद्द करने योग्य नहीं होगी कि बुद्धि उसकी वास्तविकता तक नहीं पहुंचती। संसार में ऐसे बहुत से गुण वनस्पतियों, स्थूल पदार्थों तथा जानवरों में पाए जाते हैं कि वे सही अनुभवों के द्वारा प्रमाणित हैं परन्तु मानवीय बुद्धि से ऊपर हैं अर्थात् बुद्धि उनकी वास्तविकता तक नहीं पहुंच सकती और उनकी वास्तविकता नहीं बता सकती। इसी प्रकार वह वही है जो खुदा तआला की ओर से उतरती और पवित्र दिलों तक वे विद्याएं पहुंचाती हैं जो मानवीय शक्तियों से उच्चतर हैं। फिर जबकि यह हल है कि बुद्धि जबकि स्वयं कोई चीज़ नहीं बल्कि प्रमाणित सच्चाइयों के द्वारा आदर एवं महत्त्व पैदा करती है तो हम कहते हैं कि आकाशीय वही एक प्रमाणित सच्चाई है जो अपने अन्दर चमत्कारिक शक्ति रखती है तथा ग़ैबी बातों पर आधारित होती है और हम इस दावे को सिद्ध करने के जिम्मेदार हैं। फिर आजमाइश के लिए ध्यान न देना क्या उन लोगों का आचरण हो सकता है जो वास्तविक सच्चाइयों के भूखे और प्यासे हैं। यदि आप एक सच्चा दिल लेकर मेरी ओर ध्यान दें तो मैं खुदा तआला से सामर्थ्य (तौफ़ीक) पाकर प्रतिज्ञा (अहद) करता हूं

आवाज़ है जो मारिफ़त (आध्यात्मिकता) और इत्मीनान संतुष्टि से भरने के लिए खुदा तआला की तरफ़ से वार्तालाप एवं सम्बोधन की शैली में प्रकट होती है। उसका विवरण इस से अधिक वर्णन करना असंभव है कि वह केवल खुदाई प्रेरणा और खुदा की वाणी से बिना किसी सोच-विचार, चिन्तन-मनन और अपने अस्तित्व के हस्तक्षेप के खुदा तआला की ओर से एक कुदरती आवाज़ है जो

शेष हाशिया- कि आपको सन्तुष्ट करने के लिए उस सर्वशक्ति सम्पन्न खुदा से सहायता चाहूंगा और मैं विश्वास रखता हूँ कि वह मेरा फ़र्याद सुनेगा और आप को उन ग़लतियों से मुक्ति देगा जिन के कारण न केवल आप बल्कि एक बड़ा गिरोह सन्देहों के भंवर में ग्रस्त दिखाई देता है। आप विश्वास कीजिए कि मैं केवल खुदा के लिए इस काम के लिए तैयार खड़ा हूँ कि आप पर आपकी राय का ग़लत होना सिद्ध कर दिखाऊँ। तो आप मेरे आश्चर्य और अफ़सोस का अनुमान कर सकते हैं कि जो आप की उन बातों से मुझे हो रहा है जिन में आपने बिना सोच-विचार किए यह दावा कर दिया है कि न फ़रिश्ते कुछ चीज़ हैं और न फ़रिश्तों की वह्यी कुछ चीज़। बल्कि यह सब मानवीय स्वभाव की शक्तियों के नाम हैं। मेरे अज़ीज़! मानवीय स्वभाव की योग्यता खुदाई शक्तियों की द्योतक नहीं हो सकती तथा जो कुछ मनुष्य को उसके स्वभाव के माध्यम से प्रदान किया जाता है वह सृष्टि होने की सीमा से ऊपर नहीं होता। जैसे मनुष्य के जितने अविष्कार हैं और मनुष्यों ने अब तक जितनी कारीगरियां निकालीं हैं यद्यपि वे कैसी ही अद्भुत और अनुपम हों परन्तु नहीं कह सकते कि वे खुदाई कार्यों के बराबर हैं, परन्तु वह वह्यी जिसको हमने अपनी आखों से देखा है जिसकी मुबारक आवाज़ें हमने अपने कानों से सुनी हैं वे निस्सन्देह मनुष्य के स्वभाव से ऊपर खुदाई की ज़बरदस्त शक्तियां अन्दर रखती हैं जिसके देखने से जैसे हम खुदा का चेहरा देखते हैं और वह खुदा तआला का वैसा ही शुद्ध कथन है जैसा कि पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा खुदा तआला का शुद्ध कर्म। निस्सन्देह वह मानवीय स्वाभाव की सीमाओं से ऐसा ही उच्चतर है जैसा कि खुदा मनुष्य से। यदि आप थोड़ा सा कष्ट उठाकर और अहंकार के पर्दों से अलग हो कर कुछ सप्ताह इस ख़ाकसार की संगत में रहें तो मैं आशा रखता हूँ तो आपके बुद्धि से ऊपर के बहुत से मामले बड़ी आसानी से आप को उचित और संभव दिखाई दें। यद्यपि आप अपने विचार में दर्शनशास्त्र और विज्ञान का निचोड़ अपने मस्तिष्क में एकत्र रखते हैं और नेचर की समस्त श्रेणियां तय करके नवीन प्रकाश से प्रकाशमान हो चुके हैं। किन्तु मेरे प्रिय! (नाराज़ न हों) आकाशीय प्रकाश चीज़ दूसरी

आनन्द प्रद एवं बरकत से भरे शब्दों में महसूस होती है और अपने अन्दर एक खुदाई चमक और वैभव रखती है।

यहां प्रत्येक सत्याभिलाषी के दिल में स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि मुझे क्या करना चाहिए ताकि यह श्रेष्ठ खुदाई वार्तालाप प्राप्त कर सकूं। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यह एक नया अस्तित्व है जिसमें नई ताकतें, नई शेष हाशिया- है और पाश्चात्य विद्याओं का प्रकाश दूसरी। यदि आपको इस प्रकाश के अंधकारों एवं हिनयों की कुछ खबर होती तो आप इस्लाम की उम्मत को इस व्यर्थ प्रकाश पर हज़ार गुना प्राथमिकता देते और इस्लाम धर्म अपना कर तथा इस युग के दज्जाली उपद्रवों से डर कर और ईमानी बातों पर सब्र की इच्छा करके गिड़गिड़ाकर हमेशा यह दुआ करते कि

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ (अलआराफ़-7/127)

आप को ज्ञात रहे कि वर्तमान दर्शन शास्त्र वर्तमान प्रमाणित सच्चाईयों के मुकाबले पर बिल्कुल मुर्दा और शक्तिहीन है। कोई विद्या नवीन हो या पुरातन, सही घटनाओं पर विजयी नहीं हो सकती। यदि मैं दो और दो को चार कहूं तो मुझे इससे क्या आशंका है कि कोई बड़ा दर्शन शास्त्री मेरे विरोध पर खड़ा है या यदि मैं दिन को दिन ही समझूं तो मुझे इस बात से क्यों डरना चाहिए कि यदि दर्शन शास्त्रीयों का एक गिरोह मेरे सामने दिन को रात कह रहा है, कोई अन्न शरीर को ऐसी शक्ति नहीं पहुंचा सकता कि जैसे निश्चित प्रमाण और पूर्ण प्रकटन का दिल को पहुंचाती और यह प्रकटन तथा यह प्रमाण जो खुदा की मारिफ़त और आखिरत में वांछित है जो वास्तव में मुक्ति का उद्गम (सरचश्मा) है केवल उस सच्चे आध्यात्म ज्ञान से प्राप्त होता है जो सब्र करने वाले मनुष्य को ईमान के बाद मिलता है। पुरातन या नवीन दर्शन शास्त्र के द्वारा हरगिज़ प्राप्त नहीं हो सकता। परन्तु उन लोगों पर यह बात संदिग्ध रहती है कि जो न ईमान को पूर्ण श्रेणी तक पहुंचाते हैं ताकि उसके प्रकाशों को ज्ञात करें और न दर्शन शास्त्र में पूर्ण उन्नति करते हैं ताकि उसके विषाक्त प्रभाव (ज़हरीले असर) उन पर पूर्ण रूप से प्रकट हों। प्रत्येक वस्तु की पूर्ण वास्तविकता उसकी विशेषता से खुलती है। उदाहरणतया यदि किसी विष या विषनाशक की मूल वास्तविकता ज्ञात करना हो तो उसकी पूरी खुराक खाकर देखें और यदि किसी दार्शनिक या नबी की हिदायतों के पूर्ण परिणाम ज्ञात करने वांछित हो तो पूर्ण रूप से उसके शिष्य या अनुयायी बनें। आपको ज्ञात होगा कि दर्शन शास्त्र की विशेषता मनुष्य को जिस सीमा तक पहुंचाती रही है और अब भी पहुंचती है वह वही सीमा है जिसे नास्तिकता का नाम दिया जाता है क्या आप का विचार

शक्तियां और नया जीवन प्रदान किया जाता है और नया अस्तित्व पहले अस्तित्व को समाप्त किए बिना मिल नहीं सकता। और जब पहला अस्तित्व एक सच्चे और वास्तविक त्याग के द्वारा जिससे कि अपने अस्तित्व, अपने सम्मान एवं माल तथा अन्य तामसिक संसाधनों को त्यागना अभिप्राय है, तो यह दूसरा अस्तित्व तुरन्त उस का स्थान ले लेता है। यदि यह प्रश्न किया जाए कि पहले अस्तित्व

शेष हाशिया- है कि वे लोग वास्तविक खुदा की पहचान करवाने के वारिस हैं जो फिलास्फर कहलाते हैं। क्या वास्तविक विनय और वास्तविक संयम तथा वास्तविक खुदा तर्सी (खुदा से डरना) और पूर्ण रूप से खुदा तआला की श्रेष्ठताओं को दिल में बिठाना जो वास्तविक खुदा की पहचान करवाने के परिणाम हैं कभी उन फिलास्फरों (दर्शन शास्त्रियों) को प्राप्त हुए हैं या अब प्राप्त हैं? क्या दर्शन शास्त्र की पुस्तकों के पन्ने उलटने-पलटने से उस सच्ची मारिफत (खुदा को पहचानना) की आशा है जो तामसिक संबंधी भावनाओं से आजाद करती तथा खुदा के प्रेम को दिल में बिठाती है। मेरी जानकारी में तो हरगिज़ नहीं। दर्शन शास्त्र की विद्या का चर्मोत्कर्ष तो यही है कि ऐसा मनुष्य जो केवल दर्शनशास्त्र का अनुयायी है खुदा, रसूल, स्वर्ग और नर्क से पूर्णतया पृथक् हो जाए तथा अहंकार, अभिमान और विषय लो लुपता ग्रहण कर ले उनके नज़दीक इरादे से प्रबंद करने वाले अस्तित्व का इक्रार केवल एक भ्रम और रोज़ा-नमाज़ समय का नष्ट करना, और आखिरत की चिन्ता पागलों जैसा विचार है। यही तो उन नस-नस में वे बातें फैली हुई हैं जो एक शक्तिशाली इंजन की तरह हर क्षण नास्तिकता की ओर खींचती चली जाती हैं। इस्लामी दूरदर्शिता और मारिफत के दायरे का केन्द्र स्रष्टा के अस्तित्व और उसका इरादे से प्रबंध करने वाला होना तथा उसका एक मात्र भागीदार होना है और इसी के यथायोग्य उनके समस्त अन्वेषण हैं। हां उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो केवल नाम मात्र खुदा तआला को मुख्य कारण समझते हैं, परन्तु उस इरादे से प्रबंध करने वाला और अपनी सृष्टि (मख्लूक) में अधिकार रखने वाला तथा कायनात का सामान्य समग्र मात्र विश्वास नहीं रखते और उसका संसार पर कोई अधिकार या हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करते। अतः वे भी वास्तव में नास्तिकों के छोटे भाई हैं। यह सच है कि मनुष्य जहां सच्चाई देखे उसे ले ले परन्तु हमें नहीं चाहिए कि ज़हरीले खानों में से एक खाने को इस विचार से खाने लगे कि संभवतः इस में ज़हर नहीं होगा। यह निश्चित बात है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने सिद्धान्त के अनुसार बात करता है और समस्त आंशिक बहसों तथा अन्वेषणों पर सिद्धान्त का प्रभाव पड़ा हुआ होता है। फिर जब कि दर्शन शास्त्रियों की मूल आस्था

के दूर होने के लक्षण क्या हैं। तो इसका उत्तर यह है कि जब पहले गुण और भावनाएं दूर होकर नए गुण और नई भावनाएं पैदा हों और अपनी स्वभाव में एक महान क्रान्ति (परिवर्तन) दिखाई दे तथा समस्त अवस्थाएं क्या नैतिक और क्या ईमानी और क्या इबादत संबंधी ऐसी ही बदली हुई दिखाई दें कि जैसे उन पर अब रंग ही और है निष्कर्षतः जब अपनी हस्ती पर दृष्टि डाले तो स्वयं

शेष हाशिया- नास्तिक या उसी के लगभग है तो क्या आशा हो सकती है कि उनके दूसरी बहसों जो उसी सिद्धान्त के सिलसिले के अन्तर्गत चले आते हैं कोई योग्यता और पथ प्रदर्शन की बात होगी खुदा तआला के कलाम ने हमें उनकी ओर कौन सी आवश्यकता और जरूरत शेष रखी है। तथापि जान बूझ कर ऐसे भयानक मार्ग को अपनाएं जो हमेशा तबाही तक पहुंचाता रहा है। प्रत्येक मुसलमान पांच समय अपनी नमाज़ में यह दुआ पढ़ता है -

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

और खुदा तआला ने स्वयं फ़रमा दिया है कि सिराते मुस्तकीम (सीधा मार्ग), नबियों का मार्ग, सत्यनिष्ठों (सिद्दीकों) का मार्ग, शहीदों का मार्ग है। फिर हम अत्यन्त मूर्ख होंगे यदि हम उन मार्गों के अभिलाषी न हों जिन को मांगने का खुदा तआला ने हमें आदेश दिया है और दर्शन शास्त्रियों के पीछे चलते फिरें और यह विचार कि हमे अपनी सम्पूर्ण आस्थाओं को ऐसी तार्किक पद्धति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिए कि जैसे ज्यामिति और हिसाब तथा कुछ भाग भौतिकी के सिद्ध हैं, क्योंकि मनुष्य बुद्धि के साथ सुसज्जित है। अतः जो बातें हमारी बुद्धि समझ न सके वे स्वीकार करने योग्य नहीं हैं। यह बहुत हानिकारक तथा मारने वाला धोखा है जो आपको लगा हुआ है और इसी कारण से आप की यह हालत है कि आप ज्ञान और धर्म को दो चीज़ रखना नहीं चाहते बल्कि समस्त मामलों और धार्मिक आस्थाओं को ऐसी विद्या बनाना चाहते हैं जो ज्यामिति और हिसाब की तरह या उससे भी बढ़कर हो। परन्तु अफ़सोस कि आप यह नहीं सोचते कि यदि धार्मिक विद्या और धार्मिक आस्थाएं ऐसी स्पष्ट विद्याओं में से होतीं कि जैसे दो और दो चार। तो फिर क्या कारण था कि उनको मानने तथा स्वीकार करने से हमें मुक्ति का वादा दिया जाता। मैं नहीं समझ सकता कि किसी व्यापक बात के मानने तथा स्वीकार करने से मुक्ति का क्या संबंध है। यदि मैं यह कहूँ कि मैंने मान लिया कि अब तक जो 30, नवम्बर 1892 ई. है सय्यद साहिब सही स्वस्थ जीवित मौजूद हैं या यदि मैं स्वीकार कर लूँ कि वास्तव में इतवार के बाद पीर (सोमवार) आता है और वास्तव में बीस के आधे दस होते हैं तो क्या मुझे इन बातों पर ईमान लाने तथा मान

को एक नया आदमी पाए और ऐसा ही खुदा तआला भी नए रूप में दिखाई दे तथा शुक्र (कृतज्ञता), सब्र और खुदा की याद में नए आनन्द पैदा हो जाएं जिनकी पहले कुछ भी खबर नहीं थी और स्पष्ट तौर पर आभास हो कि अब अपना अस्तित्व अपने रबब पर पूर्ण रूपेण भरोसा करने वाला तथा ग़ैर (अन्य) से पूर्ण रूपेण लापरवाह है और खुदा तआला की हस्ती की कल्पना ने उस के

शेष हाशिया- लेने से किसी पुण्य की आशा रखनी चाहिए। फिर यदि उदाहरणतया फ़रिश्तों का अस्तित्व देखी और महसूस की हुई चीज़ों की तरह होता। उदाहरण के तौर पर ऐसा निश्चित होता कि खुदा तआला आपको कोई फ़रिश्ता पकड़ा कर दिखा देता और आप फ़रिश्तों को हाथों से टटोल लेते तथा आंखों से देख लेते और इसी प्रकार स्वर्ग की नहरें, और हूर और गिल्मान (लड़के) आप को अलीगढ़ में बैठे नज़र आ जाते और पवित्र शराब का कोई प्याला भी पी लेते और नर्क भी सामने दिखाई देता तो मैं नहीं समझ सकता कि इन समस्त खुले-खुले सबूतों के बाद आपका आमन्ना तथा सद्दक्रना कहना क्या महत्त्व रखता।

मेरे प्रिय सय्यद! समय गुज़रता जा रहा है। इस संवेदनशनील एवं आवश्यक समस्या को शीघ्र समझ लो कि प्रतिफल का आधार ईमान पर है और ईमान इसी पद्धति पर मानने का नाम है कि जब प्रमाणित बातें कुछ लक्षणों से तो संभव अस्तित्व दिखाई दें परन्तु अभी गुप्त तथा पर्दे में हों। क्योंकि ऐसी बातों के मानने से मनुष्य खुदा तआला के नज़दीक सच्चा ठहर जाता है। कारण यह कि उसने उसके नबी और रसूल की खबर को मान लिया तथा उसके पैगम्बर को सच्चा खबर देने वाला समझ लिया। अतः वह इस सच्चाई और सुधारणा से क्षमा किया जाता है। इस बारीक भेद को तलाश करना प्रत्येक बुद्धिमान का कर्तव्य है कि खुदा तआला ने क्यों ऐसा किया कि जिन बातों पर ईमान लाने का कष्ट दिया उनको ऐसा गुप्त और पर्दे में क्यों रखा कि वह इस संसार की बुद्धि और इस संसार की बुद्धिमत्ता तथा इस संसार के ज्ञान से खुल नहीं सकते। उदाहरणतया ईमान संबंधी बातों में से सर्वप्रथम बात खुदा तआला की हस्ती और उसके अलीम (सर्वज्ञ), खबरी (बहुत खबर रखने वाला), दूरदर्शी, सर्व-शक्ति सम्पन्न, इरादे से प्रबंध करने वाला, एकमात्र भागीदार रहित, अजर, अमर, अर्श वाला, फिर प्रत्येक जगह उपस्थित एवं दृष्टा होना पर ईमान लाना है परन्तु काल्पनिक बातों तथा स्वयं निर्मित बातों के अतिरिक्त और कौन सा पता इन बातों का बुद्धि लगा सकती है और क्योंकि ऐसा व्यक्ति वास्तविकता का भूखा-प्यासा जीवित खुदा की मारिफ़त (पहचाना) चाहता है। बुद्धि के एकतरफ़: और अपर्याप्त मार्ग दर्शनों पर सन्तुष्ट हो सकता है? मानवीय

दिल पर इतना आधिपत्य ग्रहण कर लिया है कि अब उसकी देखने वाली दृष्टि में ग़ैर का अस्तित्व पूर्ण रूपेण नष्ट है और समस्त संसाधन तुच्छ, अधम तथा व्यर्थ दिखाई देते हैं और सच्चाई एवं वफ़ादारी का तत्त्व इतना जोश में आ गया है कि प्रत्येक कष्ट की कल्पना करने से वह कष्ट आसान मालूम होता है, और न केवल कल्पना बल्कि कष्टों के आने से भी प्रत्येक दर्द (पीड़ा) आनन्द के

शेष हाशिया- बुद्धि हजार सोचे और यद्यपि लाख बार पृथ्वी एवं आकाशीय ग्रहों की बुद्धिमत्तापूर्ण बनावट पर ध्यानपूर्वक विचार करे, परन्तु वह यह दावा नहीं कर सकती कि इस संसार का कोई रचयिता है। क्योंकि ऐसा दावा तो तब करे कि उसे देखा भी हो, उसका कोई पता भी लगा हो। हां यदि बुद्धि धोखा न खाए और दूसरी ओर ध्यान न दे तो यह कह सकती है कि सुदृढ़ क्रम, उत्तम तरकीब और इस बुद्धिमत्ता कारोबार का कोई रचयिता (कारीगर) होना चाहिए। परन्तु है और होना चाहिए में जितना अंतर है वह स्पष्ट और यह बात भी हम ने कुछ हद तक वर्णन की है अन्यथा जिन्होंने खुदा तआला के अस्तित्व का पता लगाने में केवल अपनी बुद्धि को ही इमाम बनाया और केवल उसी के मार्ग-दर्शन से किसी मंजिल तक पहुंचना चाहा था उन्हें बुद्धि ने जिस स्थान तक पहुंचाया है वह यही है कि या तो वे लोग अन्त में नास्तिक हो गए और या खुदा तआला को इतने कमजोर तौर पर माना जो न मानने के बराबर था। अब जबकि खुदा को पहचानने की श्रेणी पर ही बुद्धिमानों का यह हाल हुआ और बिस्मिल्लाह (प्रारंभ) ही ग़लत हुई तो फिर अन्य ग़ैबी (परोक्ष की) बातों का मानवीय बुद्धि को कुछ पता लग जाने की क्या आशा रखें। इस प्रश्न का उत्तर कि ये ईमान संबंधी बातें क्यों गुप्त रखी गईं वही है जो अभी हम लिख चुके हैं अर्थात् खुदा तआला की रहमत (दया) और क्षमा और फ़ज़ल (कृपा) ने इन गुप्त बातों को मनुष्य की मुक्ति के लिए एक मार्ग निकाला, क्योंकि खुदा तआला ने अपने अस्तित्व को जो मुख्याकारण है और अपने फ़रिश्तों को जो खुदा की आज्ञा से मामलों के प्रबन्धक हैं और क्रयामत के दिन जो पूर्ण कुदरत का प्रकटन स्थल है तथा स्वर्ग, नर्क, नुबुव्वत और रिसालत की वास्तविकता तथा वह्यी को बुद्धिमानों की नज़रों से छुपाया और अपने अनपढ़ बन्दों को उन बातों की पहचान प्रदान करके तथा नुबुव्वत का ताज (मुकुट) और रिसालत का लिबास देकर ईमान की ओर बुलाने के लिए संसार में भेजा। फिर जिस ने उनको सच्चा ख़बर देने वाला समझा और उनकी बातों पर ईमान लाया वह मोमिन कहलाया और मुक्ति पा गया और जिस ने संसार को बुद्धि और तर्क शास्त्र को अपना लक्ष्य बना कर चूँ चरा किया वह धुतकारा हुआ

रूप में दिखाई देता है। तो जब ये समस्त लक्षण पैदा हो जाएं तो समझना चाहिए कि अब पहले अस्तित्व पर पूर्ण रूपेण मृत्यु आ गई।

इस मृत्यु के पैदा हो जाने से अद्भुत प्रकार की शक्तियां खुदा तआला के मार्ग में पैदा हो जाती हैं वे बातें जो दूसरे कहते हैं परन्तु करते नहीं, और वे मार्ग जो दूसरे देखते हैं परन्तु चलते नहीं और वह बोझ जो दूसरे जांचते हैं

शेष हाशिया- और काफ़िर और इस संसार एवं आखिरत में नुकसान उठाने वाला एवं खराब करने वाला ठहराया गया और नर्क उसका ठिकाना हुआ। परन्तु यहां कोई यह धोखा न खाए कि इस ईमान की ओर बुलाने में केवल ज़ब्र और ऐसा कष्ट जो शक्ति से बाहर है क्योंकि जैसा कि हम इस पुस्तक और पहली पुस्तकों में लिख चुके हैं उन ईमान संबंधी बातों के साथ ऐसे प्राथमिकता दिए गए लक्षण भी हैं जो सत्याभिलाषी को सांतवना प्रदान करते हैं और सद्बुद्धि के लिए तर्कों एवं प्रमाणों के स्थानापन्न हो जाते हैं तथा दर्शनशास्त्रीय भ्रमों को समाप्त करते और मिटा देते हैं। फिर जब वह ऐसे व्यक्ति के मुंह से निकले जो बहुत से आकाशीय प्रकाश, बरकते तथा विलक्षण निशान अपने साथ रखता है तो उन पर प्रकाशों को दृष्टिगत रखने से निस्सन्देह एक सौम्य व्यक्ति का विश्वास अत्यंत सुस्पष्ट हो जाता है। ईमान की यही फिलॉस्फी है जो मैंने वर्णन की। खुदा तआला का कलाम हमें यही शिक्षा देता है कि तुम ईमान लाओ तब ही मुक्ति पाओगे, हमें यह हिदायत नहीं देता कि तुम उन आस्थाओं पर जो नबी अलैहिस्सलाम ने प्रस्तुत कीं, दार्शनिक प्रमाणों तथा निश्चित तथा अटल प्रमाणों की मांग करो। और जब तक ज्यामिति और हिसाब की विद्याओं की तरह वे सच्चाइयां स्पष्ट न हो जाएं तब तक उन को स्वीकार मत करो। स्पष्ट है कि यदि नबी की बातों को संवेदनशील विद्याओं के साथ तुलना करके ही मानना है तो वह नबी का अनुकरण नहीं बल्कि प्रत्येक सच्चाई जब पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाए स्वयं स्वीकार करने योग्य ठहरती है चाहे उसे एक नबी वर्णन करे या नबी के अतिरिक्त व्यक्ति। बल्कि यदि एक पापी भी वर्णन करे तब भी स्वीकार करना ही पड़ता है। जिस ख़बर को नबी के विश्वास पर और उसकी सच्चाई को प्रमाणित समझ कर हम स्वीकार करेंगे वह चीज़ ज़रूरी ऐसी होना चाहिए कि यद्यपि बुद्धि के नज़दीक सच्चाई की अत्यधिक संभावना रखती हो परन्तु झूठ की ओर भी मूर्खों का कुछ वहम हो सकता हो। हम सच्चाई के भाग को अपना कर और नबी को सच्चा ठहरा कर अपनी सुधारणा तथा अपनी गहन विवेकशीलता, अपने शिष्टाचार तथा अपने ईमान का प्रतिफल पालें। यही सारांश पवित्र कुर्आन की शिक्षा का है जिसे हम ने

परन्तु उठाते नहीं। इन समस्त कठिन बातों की उसे सामर्थ्य (तौफ़ीक़) दी जाती है, क्योंकि वह अपनी शक्ति से नहीं बल्कि एक ज़बरदस्त ख़ुदाई शक्ति उसकी सहायता और मदद करने में होती है जो पर्वतों से अधिक उसको सुदृढ़ कर देती है तथा उसे एक वफ़ादार दिल प्रदान करती है। तब ख़ुदा तआला के प्रताप के लिए उस से वे कार्य जारी होते हैं, तथा सच्चाई की बातें प्रकट होती हैं कि मनुष्य

शेष हाशिया- वर्णन कर दिया है परन्तु दर्शनशास्त्री और फ़िलॉसफ़र इस पहलू पर चले ही नहीं, वे हमेशा ईमान से लापरवाह रहे और ऐसी विद्या को ढूँढ़ते रहे जिसका तुरन्त अटल एवं निश्चित होना उन पर स्पष्ट हो जाए। परन्तु याद रहे कि ख़ुदा तआला ने ग़ैब पर ईमान लाने का आदेश देकर मोमिनों को सच्चे आध्यात्म ज्ञान से वंचित रखना न चाहा बल्कि सच्चे आध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करने के लिए ईमान एक सीढ़ी है। जिस सीढ़ी पर चढ़ने के बग़ैर सच्चे आध्यात्म को प्राप्त करना एक गंभीर गलती है परन्तु उस सीढ़ी पर चढ़ने वाले शुद्ध आध्यात्म ज्ञान तथा संतुष्ट करने वाले अवलोकनों का चेहरा ज़रूरी देख लेते हैं। जब एक ईमानदार एक सच्चे मोमिन की हैसियत से ख़ुदा के आदेशों और ख़बरों को केवल इस पहलू से स्वीकार कर लेता है कि वे ख़बरें तथा आदेश एक सच्चे ख़बर देने वाले के माध्यम से उन्हें ख़ुदा तआला ने प्रदान किए हैं तो आध्यात्म ज्ञान का इनाम पाने के योग्य ठहर जाता है। इसीलिए ख़ुदा तआला ने अपने बन्दों के लिए यही कानून बना रखा है कि पहले वे ग़ैब की बातों पर ईमान लाकर आज्ञाकारियों में सम्मिलित हों, और फिर आध्यात्म ज्ञान की श्रेणी प्रदान करके उनकी समस्त गुथियां खोली जाएं। किन्तु अफ़सोस कि जल्दबाज़ मनुष्य इन मार्गों का अनुसरण नहीं करता। ख़ुदा तआला का पवित्र कुर्आन में यह वादा है कि जो व्यक्ति ईमानी तौर पर नबी करीम^ﷺ की दावत (निमंत्रण) को स्वीकार कर ले तो वह यदि कठोर परिश्रमों (मुजाहिद्दात) के द्वारा उनकी वास्तविकता ज्ञात करना चाहे वे उस पर क़शफ़ और इल्हाम के द्वारा खोले जाएंगे और उसके ईमान को आध्यात्म ज्ञान की श्रेणी तक पहुंचाया जाएगा और इस वादे की सच्चाई हमेशा ईमानदारों पर जो कठोर परिश्रमों से ख़ुदा तआला को ढूँढ़ते हैं प्रकट हो जाती है। अतः जो बात मोमिनों की मामूली समझ से श्रेष्ठतर है उसे ज्ञात करने का यह मार्ग नहीं है कि वह फ़िलासफ़रों के गुमराह फ़िक्क़े के मुहताज हों और मार्ग से भटके हुए से मार्ग पूछें, बल्कि उनके लिए सच्चाई और सन्न से इफ़र्न की श्रेणी प्रदान की जाती है जिस श्रेणी पर पहुंचकर उनकी समस्त गुथियां हल हो जाती हैं।

इस युग में जो धर्म और ज्ञान की बड़ी तन्मयता से लड़ाई हो रही है उसको देखकर

क्या वस्तु है और आदमी की क्या वास्तविकता है कि स्वयं उनको सम्पन्न कर सके। वह पूर्ण रूपेण ग़ैर से पृथक् हो जाता है और ख़ुदा के अतिरिक्त से दोनों हाथ उठा लेता है तथा मध्य से समस्त दूरी एवं अन्तर को दूर कर देता है और वह आजमाया जाता और दुख दिया जाता है और उसे भिन्न-भिन्न प्रकार की परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है और उस पर ऐसे संकट एवं कष्ट आते हैं

शेष हाशिया- तथा ज्ञान के धर्म पर आक्रमणों को देखकर निराश नहीं होना चाहिए कि अब क्या करें। निश्चित समझो कि इस लड़ाई में इस्लाम को पराजित और निराश्रय शत्रु की तरह सुलह चाहने की आवश्यकता नहीं बल्कि अब समय इस्लाम की रूहानी तलवार का है जैसा कि वह पहले किसी समय अपनी भौतिक शक्ति दिखला चुका है। यह भविष्यवाणी याद रखो कि शीघ्र ही इस लड़ाई में भी शत्रु अपमानपूर्वक पराजित होगा और इस्लाम विजयी होगा। वर्तमान युग को नवीन विद्याएं कैसे ही ज़बरदस्त आक्रमण करें, कैसे ही नए-नए हथियारों के साथ चढ़-चढ़ कर आएँ परन्तु अन्ततः उनके लिए पराजय है। मैं नेमत के धन्यवाद के तौर पर कहता हूँ कि इस्लाम की उच्चतम शक्तियों का मुझे ज्ञान दिया गया है जिस ज्ञान की दृष्टि से मैं कह सकता हूँ कि इस्लाम न केवल नवीन दर्शनशास्त्र के आक्रमण से स्वयं को बचाएगा बल्कि वर्तमान विरोधी विद्याओं की मूर्खताएं सिद्ध कर देगा। इस्लाम की सत्ता को इन चढ़ाइयों से कुछ भी भय नहीं है जो दर्शनशास्त्र और भौतिक विज्ञान की ओर से हो रही हैं। उसकी वैभव के दिन निकट हैं और मैं देखता हूँ कि आकाश पर उसकी विजय के निशान प्रकट हैं। यह वैभव रूहानी है और विजय भी रूहानी ताकि ग़लत विद्या की विरोधी शक्तियों को उसकी ख़ुदाई शक्ति ऐसा कमज़ोर कर दे कि समाप्त कर दे। मैं हैरान हूँ कि आप ने किस से और कहां से सुन लिया और कैसे समझ लिया कि जो बातें इस युग के दर्शन शास्त्र और विज्ञान ने पैदा की हैं वे इस्लाम पर विजयी हैं। हज़रत! ख़ूब याद रखो कि दर्शनशास्त्र के पास तो केवल बौद्धिक तर्कों का एक अधूरा हथियार है और इस्लाम के पास यह भी पूरा और अन्य कई हथियार हैं। फिर इस्लाम को इस के आक्रमण से क्या डर। फिर न मालूम कि आप इस दर्शनशास्त्र से इतने क्यों डरते हैं और क्यों उसके पैरों के नीचे गिर जाते हैं और क्यों कुर्आनी आयतों को तावीलों के शिकंजे पर चढ़ा रहे हैं। अफ़सोस कि जिन बातों में से एक बात को भी मानना इस बात के लिए अनिवार्य है कि इस्लाम की समस्त आस्थाओं से इन्कार किया जाए। उन बातों का एक बहुत बड़ा भण्डार आपने स्वीकार कर लिया है और विचित्र यह कि चमत्कारों से इन्कार, फ़रिशतों से इन्कार,

कि यदि वे पर्वतों पर आते तो उन्हें मिटा देते। और यदि वे सूर्य और चन्द्रमा पर आते तो वे भी अंधकारमय हो जाते। परन्तु वह सुदृढ़ रहता है और वह समस्त कठिनाइयों को बड़ी प्रफुल्लतापूर्वक सहन कर लेता है। यदि वह घटनाओं की खरल में पीसा भी जाए और धूल के समान कर दिया जाए तब भी उसके अन्दर से **إِنِّى مَعَ اللّٰهِ** (मैं खुदा के साथ हूँ) के अतिरिक्त अन्य कोई आवाज़ नहीं आती।

शेष हाशिया- ग़ैब की ख़बरों से इन्कार, वही से इन्कार और दुआ के स्वीकार होने इत्यादि से इन्कार के बावजूद आप जगह-जगह यह भी मानते गए कि कुर्आन सच्चा, रसूल सच्चा, इस्लाम सच्चा और इसके विपरीत सब झूठ। तो इन विरोधाभासी विचारों के एकत्र होने के कारण आप की पुस्तकें उस अद्भुत हैवान के समान हो गईं जिसको ऐसा मान लिया जाए कि जिस का मुँह आदमी का हो और पूँछ बन्दर की और खाल बकरे की और पंजे भेड़िए के और दाँत हाथी के खाने के और दिखाने के और। फिर अत्यन्त अफसोस का स्थान यह है कि शियों की तरह आप के कलाम में सच बात को छुपाया भी जाता है। अतः अपनी कुछ रायों के वर्णन करने में आप एक ऐसी बहुअर्थी बात कह जाते हैं जिसका का कुछ सारांश मालूम नहीं होता। शूतुर मुर्ग की तरह आप का कलाम दोनों प्रकार की गुंजायश रखता है, शूतुर की भी और मुर्ग की भी। शायद आप अपने उस पहले बहाने को जिसे मैं अभी अस्वीकार चुका हूँ दोबारा कहें कि इस प्रकार की पुस्तकों की समय को आवश्यकता थी। शायद आप का यह विचार हो कि यदि किसी उपद्रव में समस्त माल लुटता हुआ देखें तो यह कुछ बुरी बात नहीं कि यदि कुछ थोड़ी सी हानि उठाकर बड़ी हानि से बच सकें तो बचने का प्रयास करें। क्योंकि थोड़े का हाथ से जाना इस से अच्छा है कि सारा जाए किन्तु यह आपके समस्त विचार सोच-विचार की कमी से होंगे। आपको याद रहे कि कुर्आन का एक बिन्दु या अंश भी पहलों और बाद में आने वालों के दर्शनशास्त्र के सामूहिक आक्रमण से थोड़ी सी हानि की भी आशंका नहीं रखता। वह ऐसा पत्थर है कि जिस पर गिरेगा उसे टुकड़े-टुकड़े करेगा और जो उस पर गिरेगा वह स्वयं टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। फिर आपको दब कर सुलह करने की क्यों चिन्ता पड़ गई। आपने इस्लाम के लिए इसके अतिरिक्त और क्या किया है कि वर्तमान दर्शनशास्त्र के बहुत से ग़लत विचारों को स्वीकार कर लिया और उस किताब को जिसके एक-एक अक्षर से खुदा की शान दिखाई देती है दर्शन शास्त्रियों के अधीन करना चाहा और गिर कर सुलह के लिए मजबूरी व्यक्त की। तो मेरे विचार में आप की ये कार्रवाइयाँ इस युग के दज्जाली उपद्रवों से बचा नहीं सकतीं, बल्कि उसकी शखाओं

जब किसी की हालत इस सीमा तक पहुंच जाए तो उस का मामला इस संसार से परे से परे हो जाता है और उन समस्त निर्देशों तथा उच्च स्थानों को ज़िल्ली तौर पर (प्रतिबिम्ब के तौर पर) पा लेता है जो उस से पहले नबियों तथा रसूलों का वारिस और नायब हो जाता है, वह वास्तविकता जो नबियों में जिसे चमत्कार का नाम दिया जाता है वह इस में करामत के नाम से प्रकट हो जाती है और

शेष हाशिया- में से यह भी एक शाखा है। क्योंकि आप ने इस्लामी क्रिले (दुर्ग) के अन्दर होकर शत्रुओं के लिए दरवाज़ा खोल दिया और मुसलमानों के हाथ-पैर बांधने में की ताकि शत्रु अमन और आराम के साथ इस शहर में प्रवेश करके जिस प्रकार चाहें लूट-मार करें और मुसलमान कुछ हाथ-पैर न हिला सकें। परन्तु मेरी यही राय है कि आप ने यह तरीका जानबूझ कर ही अपनाया निस्सन्देह आपकी नीयत अच्छी होगी क्योंकि आप की पुस्तकों से यह भी प्रकट होता है कि आपके इस्लामी शुभ चिंतक होने में भी संदेह नहीं जबकि आपका शुभ चिंतन बुरे चिंतन का काम दे गया। यह क्रौम का दुर्भाग्य है कि एक सुधारक की पद्धति में आप से मुसलमानों वह हानि पहुँच गई कि शायद कोई योजना बद्ध उपद्रवी भी को वह हानि पहुँचा सकता। शायद आप यह बहाना प्रस्तुत करें कि इस दूरदर्शिता थी डंग को चुनने में एक एक और वह यह कि आप ने एक ऐसे समय में वे पुस्तकें लिखीं जब पाश्चात्य विद्याओं के दुष्प्रभाव बड़ी शक्ति से संसार में फैलते जाते थे और गुमराही का तूफान तीव्र बाढ़ पर था, तो आपने गन्दगी खाने वालों के लिए एक गन्दगी बतौर भोजन प्रस्तुत कर दी ताकि वे इस्लाम से बाहर भोजन प्रस्तुत कर दी ताकि वे इस्लाम से बाहर न जाएं गन्दगी खाएं। परन्तु इस्लाम में तो रहें। तो आप के बारे में कुछ लोगों का यह कथन किसी सीमा तक ठीक ही हो कि यदि ऐसे लोगों के लिए सय्यद साहिब ऐसा भोजन प्रस्तुत न करते तो खुदा जाने वे किन जानवरों की पंक्ति में मिल जाते। यदि आप की यही नीयत थी तो फिर भी मेरे नज़दीक ग़लती से खाली नहीं, क्योंकि आप किसी के दूषित तत्व को उसके प्रकट होने की मांग से रोक नहीं सकते। अल्लाह तआला फ़रमाता है

(बनी इस्राईल-17/85) **كُلُّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ -**

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार कार्य करता है। मनुष्य को चाहिए कि सही मामलों का शिक्षक हो चाहे उसे कोई स्वीकार करे या अस्वीकार करे यही नबियों की पद्धति है, न यह कि दूसरे को अंधा देखकर अपनी आंख भी फोड़ ले। शायद आपके दिल में यह बहाना भी छुपा हो कि इस नवीन दर्शन शास्त्र के तूफान के समय इस्लाम की

वही वास्तविकता जो नबियों में आत्मसंयम के नाम से नामित की जाती है, इसमें महफूज़ियत (सुरक्षित) के नाम से पुकारी जाती है और वही वास्तविकता जिसे नबियों में नबुव्वत के नाम से बोली जाती है इसमें मुहद्दिसियत के रंग में प्रकट होती है। वास्तविकता एक ही है परन्तु रंग की अधिकता या न्यूनता के कारण विभिन्न नाम रखे जाते हैं। इसीलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

शेष हाशिया- नौका खतरनाक हालातों में थी और मानो वह नौका जवाहरात, उत्तम धन-दौलत से भरी हुई थी परन्तु चूंकि वह कोलाहल मचाने वाले तूफान के नीचे आ गई थी, इसलिए इस अचानक आने वाली विपदा के समय यही हित में था और इस के अतिरिक्त कोई अन्य चारा नहीं था कि किसी कदर वे जवाहरात तथा उत्तम माल की गठरियां दरिया में फेंक दी जाएं और जहाज़ को थोड़ा हल्का करके जानों को बचा लिया जाए। परन्तु यदि आपने इस विचार से ऐसा किया तो यह भी अहंकार की एक घृष्टता पूर्ण हरकत है जिसका आप को अधिकार नहीं था। इस नौका का नाविक (अल्लाह) खुदा तआला है न कि आप। वह बार-बार वादा कर चुका है। कि ऐसे खतरों में यह नौका (किश्ती) क्रयामत तक नहीं पड़ेगी और वह हमेशा उसे तूफान तक नहीं पड़ेगी और वह हमेशा उसे तूफान तथा विरोधी हवा से स्वयं बचाता रहेगा। जैसा कि फ़रमाता है -

إِنَّا نَحْنُ نَرُفُّنَا الدِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿١٥/١٠﴾ (अल्हज़्र - 15/10)

अर्थात् हमने ही इस कलाम को उतारा और हम ही इसको बचाते रहेंगे। इसलिए आप को चाहिए था कि आप उस नाविक के ग़ैबी मार्ग दर्शन की प्रतीक्षा करते और विश्वास से समझते कि यदि तूफान आ गया है तो अब उस नाविक की सहायता भी निकट है जिसका नाम खुदा है जो जहाज़ का मालिक भी है और नाविक भी। अतः चाहिए था कि ऐसी निर्दयता और हिम्मत न करते और स्वयं ही मुख्तार बन कर बहुमूल्य जवाहरात के सन्दूक और शुद्ध सोने की थैलियां तथा उत्तम और बहुमूल्य कपड़ों की गठरियां दरिया में न फेंकते। खैर जो हो गया सो हो गया अब मैं आप को सूचना देता हूं और खुशखबरी पहुंचाता हूं कि उस नाविक ने जो आकाश और पृथ्वी पर खुदा है। पृथ्वी के तूफानग्रस्त लोगों की की फ़रियाद सुन लिया और जैसा कि उसने अपने पवित्र कलाम में तूफान के समय अपने जहाज़ को बचाने का वादा किया हुआ था वह वादा पूरा किया और अपने एक बन्दे को अर्थात् इस खाकसार को जो बोल रहा है अपनी ओर से मामूर करके वे उपाय समझा दिए जो तूफान पर विजयी हों और धन-दौलत के सन्दूकों को दरिया में फेंकने की आवश्यकता

मुबारक प्रवचन संकेत कर रहे हैं कि मुहद्दिस नबी बिलकुलवतः होता तो हर एक मुहद्दिस अपने अस्तित्व में नबी हो जाने की शक्ति और योग्यता रखता था। इस शक्ति और योग्यता की दृष्टि से मुहद्दिस का नबी पर चरितार्थ करना वैध (जायज़) है अर्थात् कह सकते हैं कि अलमुहद्दिस नबी, जैसा कि कह सकते हैं कि -

शेष हाशिया- न पड़े। अब निकट है कि आकाश से यह आवाज़ आए कि -

قِيلَ يَا رُضُّ ابْلَعِي مَاءَكَ وَ يَسْمَاءُ أَقْلَعِي وَ غِيْضُ الْمَاءِ وَ قُضِيَ الْأَمْرُ وَ

اسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ (सूरह हूद- 11/45)

अनुवाद - कहा गया कि हे धरती! अपना पानी निगल जा। और हे आकाश! थम जा। और पानी सुखा दिया गया और वह (नौका) जूदी (पहाड़) पर ठहर गई। अनुवादक। परन्तु अभी तो तूफान जोर पर है। इसी तूफान के समय खुदा तआला ने इस विनीत को मामूर किया और फ़रमाया *واصنع الفلك باعيننا ووحينا* अर्थात् तू हमारे आदेश से और हमारी आंखों के सामने नौका तैयार कर। उस नौका को उस तूफान से कुछ खतरा न होगा और खुदा तआला का हाथ उस पर होगा। वह शुद्ध इस्लाम की नौका यही है जिस पर सवार होने के लिए मैं लोगों को बुलाता हूँ परन्तु आप भागते हो। तो उठो और इस नौका में शीघ्र सवार हो जाओ कि पृथ्वी पर तूफान बहुत जोश मार रहा है और प्रत्येक जान खतरे में है। यदि आप न्याप्रिय हों तो सर्वप्रथम आप इस तूफान के अस्तित्व का इक्रार कर दिया है कि इस्लाम की नौका को तूफान से बचाने का वादा जो पवित्र कुर्आन में मौजूद है उस तूफान और उस वादे का युग यही है। ऐसे तूफान का समय इस उम्मत पर कभी नहीं आया जो अब आ गया। संसार ने कभी विद्या और धर्म की वे लड़ाइयाँ नहीं देखीं जो अब हो रही हैं। कभी किसी प्राचीन भौतिकी एवं दर्शन शास्त्र ने इस्लाम का ऐसा नक्श मिटाना न चाहा जो वर्तमान सांइस मिटाने की चिन्ता में है। कौन इस श्रेणी की बौद्धिक एवं तार्किक हमलों का पूर्व युगों में कोई निशान बता सकता है जिन को हम अब स्वयं अपनी आंखों से देख रहे हैं। किस में शक्ति है कि इस तार्किक तूफान का उदाहरण किसी पहले समय में दिखा दे जिसे अब हम दिन-रात देख रहे हैं। इन बारीक से बारीक दर्शनशास्त्रीय एवं नास्तिकीय आक्रमणों की पहले युगों में उदाहरण कहां मिल सकती है और इन अत्यधिक जटिल बौद्धिक उपद्रवों का इस्लाम के प्रारंभिक काल में कहां पता लग सकता है। इस प्रकार की ज्ञान संबंधित आपदाएं किसी पहले युग में कहां हैं जिन का अब

العنب خمر نظرًا على القوة والاستعداد ومثل هذا الحمل شائع
 متعارف في عبارات القوم وقد جرت المحاورات على ذلك كما لا
 يخفى على كل ذكي عالم مطلع على كتب الادب والكلام والتصوف
 और इसी चरितार्थ की ओर संकेत है कि अल्लाह तआला ने इस किरअत
 को जो **وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ وَلَا مُحَدَّثٍ** है। संक्षिप्त करके दूसरी

शेष हाशिया- इस्लाम को सामना हुआ है जो किसी पहले युग में कब और किस समय
 ऐसी कठिनाइयों से जूझना पड़ा था जिन से अब जूझना पड़ रहा है। क्या आपको इस बात
 का इकरार नहीं कि ये उच्च-कोटि की ज्ञान संबंधी बहसें और कठिनाइयां जो अब इस्लाम
 पर आई हैं, इस से पहले युगों में ऐसी कठिनाइयां कभी नहीं आई और न आदम से लेकर
 आज तक इसका कोई उदारहण पाया जाता है। क्या आप इस बात को नहीं मानते कि इस
 दर्शन शास्त्र और साइंस की विपदा उस विपदा से तीव्रता और कठोरता में हज़ारों गुना अधिक
 है। जो यूनानियों की विद्याओं से इस्लामी देशों में फैली थी। क्या आप इस वास्तविकता को
 स्वीकार नहीं करते कि यह दुश्मन जो अब पैदा हुआ है अपने भौतिक संसाधों में उन समस्त
 दुश्मनों के समूह से बढ़कर है जो भिन्न-भिन्न युगों में पैदा होते रहे हैं फिर आप इस इकरा
 से कहाँ भाग सकते हैं कि वह पवित्र वादा जिसको ये प्यारे शब्द अदा कर रहे हैं कि -

(अल्हिक्र - 10) **إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ**

वह वादा इन्हीं दिनों के लिए है जो बता रहा है कि जब इस्लाम पर कठोर विपदा
 का समय आएगा और उसके मुकाबले पर दुश्मन खड़ा होगा तथा भयंकर तूफान पैदा होगा
 तब खुदा तआला स्वयं इसका उपचार करेगा और स्वयं उस तूफान से बचने के लिए कोई
 किशती (नौका) प्रदान करेगा। वह किशती इस खाकसार की दावत (खुदा की ओर बुलाना)
 है। यदि कोई सुन सकता है तो सुने। आप नबवी हदीसों के तो सिरे से इन्कारी हैं फिर
 प्रत्येक सदी पर मुजद्दिद आने की हदीस आपके सामने प्रस्तुत करना व्यर्थ है, आप उसे
 क्यों स्वीकार करेंगे। इस से तो पृथक्ता है। किन्तु मैं आपको इसी उपरोक्त आयत तथा इसी
 के समान अन्य कई आयतों की तरफ ध्यान दिलाता हूँ जो मैंने इस बहस के अवसर पर
 इसी पुस्तक में लिखी हैं। हज़रत यह वह युग है और ये वे आपदाएं हैं जिन के लिए ज़रूरी
 था कि अनादि कृपा (खुदा का फ़ज़ल) स्वयं ही ध्यान देती। पवित्र कुर्आन इसी युग की
 विपत्तियों की तरफ संकेत करके फ़रमाता है -

(अल्हिक्र - 10) **إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ**

किरअत में केवल ये शब्द पर्याप्त ठहरा दिए कि -

(अलहज्ज-22/53) وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ

इस प्रश्न का उत्तर कि जिस व्यक्ति को खुदा से वार्तालाप का सम्मान प्राप्त हो वह कब और किन हालातों में खुदा तआला के कलाम का लाभ पहुंचाने का अत्यधिक पात्र होता है। यह है कि अधिकतर संकटों एवं कष्टों के आने

शेष हाशिया- अर्थात् हमने इस कलाम को उतारा और हम ही इसको सम्मान, इसकी श्रेष्ठता और इसकी शिक्षा को दुश्मनों के आक्रमणों से बचाएंगे। पहले वे युग थे कि इस्लाम की भौतिक तलवार ने बहुत से व्यर्थ बहसों से पृथक्ता कर रखी थी और अत्याचारी और दुष्ट स्वभाव लोगों के लिए उनके यथायोग्य निवारण मौजूद था और नुबुव्वत का काल भी निकट था। मुसलमानों में संयम, पवित्रता, और इस्लाम की सच्ची हमदर्दी मौजूद थी। अब ये सब कुछ नहीं है। अब समस्त संसार में इस्लाम जैसा गरीब, अनाथ और असहाय नहीं। अधिकांश धनाढ्य लोग अपने भोग-विलास में लिप्त और उन्हें अपनी संसार की इमारतों के बनाने तथा अपने आनंदों के साधन तैयार करने या किसी सीमा तक अपने दिखावे के लिए धन खर्च करने से फुर्सत नहीं। और मौलवी लोग अपने स्वार्थ संबंधी झगड़ों में फंसे हुए हैं और इस्लाम की ओर बुलाने की न योग्यता रखते हैं न उसका कुछ जोश न उसकी कुछ परवाह यदि इन से कुछ हो सकता है तो केवल इतना कि अपनी ही क्रौम और अपने ही भाइयों तथा अपने जैसे मुसलमानों और अपने जैसे मुसलमानों और अपने जैसे कलिमा पढ़ने वाले लोगों और अपने अहले किब्लत को क्राफिर ठहराएं, दज्जाल कहें और बेईमान नाम रखें और फ़त्वा लिखें कि इनसे मिलना वैध नहीं और इन का जनाज़ा पढ़ना वैध नहीं। ये ऐसे हैं, वैसे हैं और क्या-क्या हैं।

और इस समय के पीरजादे और कोने में बैठने वाले भी जो फुक्रा और वली कहलाते हैं कानों में रुई देकर बैठे हुए हैं और इस्लाम को उनकी आंखों के सामने एक मासूम बच्चे की तरह मारें पड़ रही हैं और शत्रु गला घोटने को तैयार हैं। परन्तु इन कठोर दिल, नाम के फ़कीरों को कुछ भी परवाह नहीं। फिर इस्लाम किस से सहायता चाहे और किस को अपना हमदर्द समझे। पहले तो इस्लाम के लिए इन समस्त फ़िक्रों से कुछ सेवा होती ही नहीं और थोड़ी किसी से हो भी तो वह दिखावे और मिलावट से ख़ाली नहीं। फिर यदि इस्लाम इस समय असहाय नहीं तो फिर किस समय होगा और यदि यह संकट के दिन नहीं तो फिर और कब आएंगे। मैं खुदा तआला से निश्चित और ठोस ज्ञान पाकर कहता हूँ कि ये

के समय खुदा के वलियों पर खुदा का कलाम उतरता है ताकि उनकी सांत्वना एवं दृढ़ता का कारण हो जब वे आपदाओं तथा असहनीय घटनाओं से अत्यन्त टूटे हुए पीड़ित और पिसे जाते हैं तथा शोक एवं संताप चरम सीमा को पहुंच जाता है तब खुदा तआला के कलाम की विशेषता उन के दिल पर प्रकाशमान होती है और खुदा तआला के पवित्र कलाम से उनको सांत्वना और मानसिक

शेष हाशिया- वही कठोर बलाओं के दिन और वही दज्जालियत का युग है जिस के आने की पवित्र नबी अलैहिस्सलाम ने खबर दी थी। वर्तमान समय के मूर्ख मौलवी इन्कार करते हैं और कहते हैं कि यह दज्जालियत और महान फ़िल्तों का युग नहीं परन्तु बात तो तब हो कि आदम से लेकर इस समय तक इस महान फ़िल्तों के जो इस्लाम के जिगर पर चोटें मार रहे हैं कोई उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। और चूंकि इस युग से योग्यता पूर्णतया उठ गई और वास्तविक संयम जाता रहा तथा कुछ के हाथ में केवल संयम और शुभ कर्मों की खाल रह गई है न कि मज़्ज तथा कुछ के हाथ में न खाल रही न मज़्ज, खुदा तआला के गुप्त बन्दों के अतिरिक्त जो न होने के आदेश में हैं, इसलिए यह युग ऐसा न रहा कि खमीर से खमीर हो और एक दीपक से दूसरा दीपक रोशन हो सके। और खुदा तआला ने देखा कि कामों और कलामों, नीयतों, इबादतों तथा श्रद्धा में फ़साद दाखिल हो गया है और कर्म सही नहीं रहे तब उसने वादे के अनुसार आकाश से उस पवित्र व्यक्ति के प्रतिरूप को उतारा और जिसके अनुकरण के दावा करने वाले फ़साद की बुनियाद और ज़मीन में दज्जालियत की गन्दगी फैलाने वाले थे और असलियत से बिगड़ कर दज्जाल-ए-अकबर बन गए थे। और चूंकि इस उतरने वाले के लिए यह अवसर न मिला कि वह कुछ प्रकाश ज़मीन वालों से प्राप्त करता या किसी की बैअत अथवा शागिर्दी से लाभान्वित होता अपितु उसने जो कुछ पाया आकाश से खुदा से पाया। इसी कारण से उसके बारे में पवित्र नबी की भविष्यवाणी में यह शब्द आए कि वह आकाश से उतरेगा अर्थात् आकाश से पाएगा। और ज़मीन से कुछ नहीं पाएगा। और हज़रत ईसा के नाम पर इस खाकसार के आने का रहस्य यह है कि खुदा तआला ने इस ईसाई फ़िल्ते के समय में यह फ़िल्त: हज़रत मसीह को दिखाया अर्थात् उन को आकाश पर इस फ़िल्ते की सूचना दे दी कि तेरी क्रौम और तेरी उम्मत ने इस तूफ़ान को फैलाया है तब वह अपनी क्रौम की खराबी को पूर्ण फ़साद पर देख कर उतरने के लिए बेचैन हुआ और उसकी रूह नितान्त गति में आई और उसने ज़मीन पर अपनी श्रद्धा का एक द्योतक चाहा। तब खुदा तआला ने इस वादे के अनुसार जो किया गया था, मसीह

निश्चिन्तता प्रदान की जाती है। वास्तविकता यह है कि मुल्हम की विनम्रता की अवस्था इल्हाम पाने के लिए बहुत ही आवश्यक होती है। जब एक ख़ुदा तआला के वार्तालाप से सम्मानित व्यक्ति अत्यन्त पीड़ाग्रस्त तथा व्याकुल होता है और उसका ध्यान पीड़ा एवं शोक से ग्रस्त एक श्रृंखला की स्थिति तक पहुँच जाता है और वफ़ादारी, विनय और सच्चाई के साथ प्रतिपालन की किरणों के अन्तर्गत

शेष हाशिया- की रूहानियत और उस के जोश को एक क़ाबिल जौहर (अर्थात् उसके प्रतिरूप को) में उतारा। अतः इन मायनों की दृष्टि से वह आकाश से उतरा उसी के अनुसार जो एलिया नबी यूहन्ना के रंग में उतरा था। मुसलमान यदि इस क्रिस्से को जो इंजील में मौजूद है और स्वयं हज़रत मसीह के निर्णय से निर्णय प्राप्त बात है स्वीकार न करें तो हदीस *حدثوا عن بنی اسرائیل* पर तो अमल करना चाहिए और झुठलाने के तो कदापि अधिकृत नहीं क्योंकि झुठलाने से प्रत्येक मुसलमान मना किया गया है तथा सत्यापन के लिए और भी बहुत से तर्क पवित्र क़ुर्आन में मिलते हैं जिन का हम अपनी दूसरी पुस्तकों में तथा कुछ इस पुस्तक में भी चर्चा कर चुके हैं। अब मैं इन बातों को लम्बी नहीं करना चाहता। केवल अपने इस निबंध को इस बात पर समाप्त करता हूँ कि ख़ुदा तआला ने मुझे इसलिए भेजा है ताकि मैं इस युग के भ्रमों को दूर करूँ और ठोकर से बचाऊँ तथा उसने मुझे सामर्थ्य प्रदान की है कि यदि आप सत्याभिलाषी हों तो मैं आपकी संतुष्टि करूँ। इसलिए अब मैं ख़ुदा तआला की इस बात पर गवाह करता हूँ कि मैंने आप की ग़लतियों के दूर करने के लिए बुलाया। यदि आप अब भी ख़ामोश रहे तो अल्लाह तआला की हुज्जत आप पर पूर्ण होगी और आपके सम्पूर्ण गिरोह का पाप आप ही की गर्दन पर होगा। हज़रत आप को उस अस्तित्व की क़सम कि जिसके क़ब्जे में प्रत्येक जान है कि आप मेरे इस पत्र को लापरवाही से टाल न दें और सोच-समझ कर उत्तर प्रकाशित करें।

इस हाशिए के अन्त पर मैं मात्र ख़ुदा के लिए उन समस्त लोगों को जो सय्यिद साहिब की पुस्तकों पर मुग्ध हो रहे हैं नसीहत करता हूँ कि वह इस बात पर विचार करें कि क्या ईमान से मुक्ति मिलती है या फ़ल्सफ़े से। मैं बार-बार कहता हूँ और जोर से कहता हूँ कि यदि धार्मिक आस्थाएं फ़ल्सफ़े के रंग पर और ज्यामिति और हिसाब की तरह सामान्यतया स्पष्ट सबूत होते तो वे मुक्ति का माध्यम कदापि न ठहर सकते। भाइयों निःसन्देह समझो कि मुक्ति ईमान से सम्बद्ध है और ईमान गुप्त बातों से सम्बद्ध है। यदि वस्तुओं की वास्तविकताएं गुप्त न होतीं तो ईमान न होता और यदि ईमान न होता तो मुक्ति का कोई

जा पड़ता है तो उस पर सहसा प्रतिपालन की एक किरण अपने प्रतिपालन की चमक के साथ गिरती है और उसे प्रकाशमान कर देती है और वह प्रकाश कभी कलाम के रूप में और कभी कश्फ के रूप में प्रकट होता है और लौटने वाले दिल को उस (दीपक की) परवाने के समान जो आग के निकट पहुंच जाता है अपने खुदाई प्रकाश से प्रकाशित कर देती है। क्या यह व्यापक तौर पर महसूस

शेष हाशिया- माध्यम न होता। ईमान ही है जो खुदा की प्रसन्नता का माध्यम और सानिध्य के पदों की सीढ़ी तथा गुनाहों का जंग धोने के लिए एक झरना है और हमें जो खुदा तआला की ओर आवश्यकता है उसका सबूत ईमान ही के माध्यम से मिलता है। क्योंकि हम अपनी मुक्ति के लिए और प्रत्येक दुःख से आराम पाने के लिए खुदा तआला के मुहताज हैं और वह मुक्ति केवल ईमान से ही मिलती है। क्या दुनिया का अज़ाब और क्या आखिरत का दोनों का इलाज ईमान है। जब हम ईमान की शक्ति से एक कठिनाई का हल हो जाना असंभव नहीं देखते तो वह कठिनाई हमारे लिए हल की जाती है। हम ईमान ही की शक्ति से अनुमान के विरुद्ध और बुद्धि से दूर उद्देश्यों को भी पा लेते हैं। ईमान ही की शक्ति से चमत्कार प्रकट होते हैं और विलक्षण निशान प्रकटन में आते हैं और अनहोनी बातें हो जाती हैं। फिर ईमान ही से पता लगता है कि खुदा है। खुदा दार्शनिकों से गुप्त रहा और फ़लासफ़ों को कुछ पता न लगा। परन्तु ईमान एक असहाय गुदड़ी पोश वाले को खुदा तआला से मिला देता है और उस से बातें करा देता है। मोमिन और वास्तविक प्रियतम में ईमान की शक्ति ही निशान है। यह शक्ति एक दरिद्र दुर्दशा ग्रस्त लोगों से धिक्कृत को मुकद्दस महल तक जो खुदा का अर्श है पहुंचा देती है और समस्त पदों को उठाती-उठाती खुदा तआला का चेहरा दिखा देती है। तो उठो ईमान को ढूँढो और फ़ल्सफ़े के व्यर्थ और खुशक्र पुस्तकों पृष्ठों को जलाओ कि ईमान से तुम को बरकतें मिलेंगी। ईमान का एक कण फ़ल्सफ़: की हजार पुस्तकों से उत्तम है और ईमान से केवल अन्तिम मुक्ति नहीं अपितु ईमान दुनिया के अज़ाबों तथा लानतों से भी छुड़ा देता है और रूह के पिघलाने वाले ग़मों से हम ईमान ही की बरकत से मुक्ति पाते हैं। वह चीज़ ईमान ही है जिससे पूर्ण मोमिन नितान्त घबराहट, करुणा, बेचैनी और ग़मों के तूफ़ान के समय और उस समय कि जब असफलता के चारों ओर से लक्षण प्रकट हो जाते हैं और भौतिक सामान के समस्त दरवाज़े ताले लगे और बन्द दिखाई देते हैं सन्तुष्ट और प्रसन्न होता है। पूर्ण ईमान समस्त दूरियां जाती रहती हैं और ईमान को कोई चीज़ हानि नहीं पहुंचाती

नहीं होता कि एक बाती जो अपने अन्दर एक पवित्र तेल रखती है जब आग के निकट लेती है और आग की संगत से वापस आते समय अपने साथ एक चमकता हुआ शोला लाती है। अतः एक आरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानी) और पूर्ण इन्सान उस समय खुदा से वार्तालाप के लिए अत्यधिक निकट होने की योग्यता रखता है। जब वह करुणा भाव से खुदा की चौखट पर गिरता है और हर तरफ से पृथक् होकर उसके साथ और परस्पर मित्रता को जो उसके स्वभाव में रची हुई है एक ताज़ा और नया जोश देती है और पीड़ाजनक रूह के साथ खुदा तआला से सहायता के लिए याचना करता है तब खुदा तआला उसकी सुनता है और उसे स्नेह एवं प्रेमपूर्वक उत्तर देता है तथा उस पर दया करता है और उसकी दुआओं को प्रायः स्वीकार कर लेता है। आजकल के कुछ नास्तिक पूर्ण विचार रखने वाले जो यूरोपीय दर्शन और नेचर के अधीन हो गए हैं तथा दुआ के उत्तर देने और स्वीकार होने से इन्कारी हैं, उनके ये विचार सर्वथा गलत हैं कि दुआ का स्वीकार होना कुछ चीज़ नहीं तथा मनोकामनाओं (मुरादों) की प्राप्ति के लिए दुआ करना या न करना बराबर है। स्मरण रखना चाहिए कि मोमिन पर खुदा तआला के फ़ज़लों (कृपाओं) में से यह एक बड़ा फ़ज़ल होता है कि उसकी दुआएं स्वीकार होती हैं और उसकी याचनाएं यद्यपि कैसे ही कठिन कार्यों से संबंधित हों अधिकतर स्वीकार होने तक पहुंचती हैं। वास्तव में विलायत (वली होना) की वास्तविकता यही है कि ऐसा सानिध्य (कुर्ब) और प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाए कि दूसरों की अपेक्षा अधिक दुआएं स्वीकार हों। क्योंकि वली खुदा तआला

शेष हाशिया- जैसा कि दूरी तथा कोई ऐसी दौलत नहीं जैसा कि ईमान। दुनिया में प्रत्येक शोक ग्रस्त है परन्तु ईमानदार दुनिया में प्रत्येक जलन और तपन में गिरफ़्तार है परन्तु मोमिन नहीं। हे ईमान तेरे फल कहीं मधुर हैं, तेरे फूल क्या ही सुगंधित हैं। सुबहान अल्लाह, तुझ में क्या अद्भुत बरकतें हैं। तुझमें क्या ही सुन्दर प्रकाश चमक रहे हैं। कोई सुरैया तक नहीं पहुंच सकता परन्तु वही जिस में तेरे आकर्षण हैं। खुदा तआला को यही पसन्द आया कि अब तू आए और फ़ल्सफ़: जाए۔ **ولا رادّ لفضله** (इसी से)

का मित्र होता है और निष्कपट मित्रता का यही लक्षण है कि उसकी अधिकतर याचनाएं स्वीकार की जाएं। अतः जो कहता है कि दुआ स्वीकार होने के इस से अधिक कुछ मायने नहीं कि उसकी आवाज़ खुदा तआला तक पहुंच जाती है और खुदा तआला को ज्ञान हो जाता है कि उसने दुआ की है। ऐसा व्यक्ति भांड है और खुदा तआला की किताब और उसके धर्म से अपरिचित है। यदि केवल दुआ का सुन लेना स्वीकारिता में सम्मिलित है और इस से अधिक कोई बात नहीं तो फिर हर एक व्यक्ति कह सकता है कि मेरी दुआ अस्वीकार नहीं हुई। क्योंकि यदि स्वीकारिता से तात्पर्य केवल दुआ की सूचना पाना है तो फिर कौन व्यक्ति है जिसकी दुआ से खुदा तआला अनजान रहता है। स्पष्ट है कि अल्लाह तआला अपनी विशेषता बहुत जानने वाल, बहुत खबर रखने वाला तथा बहुत सुनने वाला के कारण हर एक बात को सुनता है और हर एक व्यक्ति की आवाज़ उस तक पहुंच जाती है। फिर ऐसे सुनने में मोमिन और ग़ैर मोमिन की दुआ में अन्तर क्या है। और यह कहना कि मोमिन को लब्बैक कहता है और दूसरे को नहीं। यह क्योंकि सिद्ध हो जबकि मूल रूप से वंचित रहने में मोमिन और ग़ैर मोमिन दोनों एक समान हैं। तो एक काफ़िर भी कह सकता है कि मेरी दुआ पर लब्बैक कहा गया है तो अब इसका कौन फ़ैसला करे कि नहीं कहा गया और इस प्रकार की व्यर्थ लब्बैक का लाभ क्या? बल्कि मोमिन की दुआ ज़रूरी स्वीकार की जाती है और यदि स्वीकार करना मोमिन के पक्ष में अच्छा न हो तो कम से कम यह होता है कि मोमिन को नमी और प्रेम से प्रेमपूर्ण वार्तालाप के द्वारा उस पर सूचना दी जाती है। खुदा तआला जो सम्पूर्ण रहमतों का उद्गम है सर्वाधिक रहमत (दया) मोमिन पर ही करता है और हर एक संकट के समय उसे संभालता है और उसकी रक्षा करता है। यदि सम्पूर्ण संसार एक ओर हो और मोमिन एक ओर तो विजय मोमिन को ही देता है और उसकी आयु तथा स्वास्थ्य के दिन बढ़ाता है। शत्रु कहता है कि वह तबाह हो जाए और नष्ट हो जाए परन्तु वह शत्रु को ही तबाह करता है और उसकी बद्-दुआएं उसी के िसर पर मारता है परन्तु मोमिन की दुआ को स्वीकर कर लेता है और उसकी

दुआओं को स्वीकार करके वे विलक्षण निशान दिखाता है, जिनसे संसार आश्चर्य चकित हो जाता है। करामात (अद्भुत कार्य) क्या चीज़ है? मोमिन की जो दुआ स्वीकार होकर एक अत्यन्त कठिन तथा बुद्धि से परे कार्य को पूरा कर देती है और समस्त लोगों को एक अत्यन्त आश्चर्य में डालती है। फिर कैसे कहा जाए कि दुआ स्वीकार नहीं होती। मूर्ख है वह व्यक्ति जो ऐसा विचार करता है बुद्धिमान है वह दार्शनिक (फ़िलास्फ़र) जो ऐसा समझता है। यह दावा बिना सबूत नहीं। इस के बारे में मेरे पास खुले-खुले तर्क तथा अत्यन्त स्पष्ट प्रमाण हैं। किन्तु जो अपनी आंखों पर पट्टी बांधता है ताकि सूर्य दिखाई न दे। वह प्रकाश को कैसे देख सकता है।

अब यह भी स्मरण रहे कि वह इस्लाम जिसकी विशेषताएं हम वर्णन कर चुके हैं वह ऐसी चीज़ नहीं है जिस के सबूत के लिए हम केवल पहले का संदर्भ (हवाला) दें और केवल कब्रों के निशान दिखाएं। इस्लाम मुर्दा धर्म नहीं ताकि यह कहा जाए कि उसकी समस्त बरकतें पीछे रह गई हैं और आगे अन्त है। इस्लाम में बड़ी विशेषता यही है कि उसकी बरकतें हमेशा उसके साथ हैं और वह केवल पहले क्रिस्सों का पाठ नहीं देता बल्कि वर्तमान बरकतें प्रस्तुत करता है। संसार को बरकतों एवं आकाशीय निशानों की सदैव आवश्यकता है। यह नहीं कि पहले थीं और अब नहीं हैं। कमजोर और असहाय मनुष्य जो अंधे के समान पैदा होता है हमेशा इस बात का मुहताज है कि उसे आकाशीय बादशाहत का कुछ पता लगे। और वह खुदा जिसकी हस्ती (अस्तित्व) पर ईमान है उसकी हस्ती और कुदरत के कुछ लक्षण भी प्रकट हों। पहले युग के कुछ निशान दूसरे युग के लिए पर्याप्त नहीं हो सकते, क्योंकि ख़बर निरीक्षण के समान नहीं हो सकती। समय की गुज़रने से ख़बरें क्रिस्से के रूप में हो जाती हैं, प्रत्येक नई सदी जो आती है तो जैसे नया संसार आरंभ होता है। इसलिए इस्लाम का खुदा जो सच्चा खुदा है प्रत्येक नए संसार के लिए नए निशान दिखाता है और हर एक सदी के सिर पर तथा विशेष तौर पर ऐसी सदी के सिर पर जो ईमान और ईमानदारी से दूर हो गयी है तथा अपने अन्दर बहुत से अंधकार रखती है नबी का एक नायब

नियुक्त कर देता है जिसकी प्रकृति के दर्पण में नबी की आकृति दिखाई देती है। और वह नबी का नायब अनुकर्णीय नबी के नायब की विशेषताओं को अपने अस्तित्व के माध्यम से लोगों को दिखाता है और समस्त विरोधियों को सच्चाई और वास्तविकता प्रकट करने तथा दोषों को उजागर करने की दृष्टि से इस प्रकार कि वह सच्चे नबी पर ईमान न लाए। अतः वह दिखाता है कि वह नबी सच्चा था और उसकी सच्चाई पर आकाशीय निशान ये हैं। और वास्तविकता प्रकट करने की दृष्टि से इस प्रकार कि उस अनुकर्णीय नबी की समस्त धार्मिक गूढ़ बातों का समाधान करके दिखा देता है और समस्त सन्देहों एवं आरोपों को जड़ से उखाड़ देता है और दोषों को उजागर करने की दृष्टि से इस प्रकार कि वह विरोधियों के समस्त पर्दे फाड़ देता है और संसार को दिखा देता है कि वे कैसे मूर्ख तथा धार्मिक मआरिफ़ों (अध्यात्म ज्ञानों) को न समझने वाले तथा लापरवाही, मूर्खता और अंधकार में गिरने वाले और खुदा के दरबार से दूर और पृथक् किए गए हैं। इस विशेषता का मनुष्य हमेशा खुदा से वार्तालाप का सौभाग्य पाकर आता है तथा पवित्र, मुबारक और मुस्तजाबुद्दावत★ होता है। और अत्यन्त शुद्धता पूर्वक इन बातों को सिद्ध करके दिखा देता है कि खुदा है। वह सामर्थ्यवान बहुत देखने वाला, बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला तथा इरादे से यत्न करने वाला है। और वास्तव में दुआएं स्वीकार होती हैं और वलियों से विलक्षण निशान प्रकट होते हैं। फिर केवल इतना ही नहीं कि वह स्वयं ही खुदा की मारिफ़त से सम्पन्न है बल्कि उस के युग में संसार का ईमान सामान्य तौर पर दूसरा रंग ग्रहण कर लेता है और वे समस्त विलक्षण निशान जिन से संसार के लोग इन्कारी थे तथा उन पर हंसते थे और उन्हें फलसफे और नेचर के विरुद्ध समझते थे या यदि बहुत नर्मी करते थे तो उन्हें एक किस्सा और कहानी मानते थे। अब उसके आने से तथा उसके चमत्कार प्रकट होने से न केवल स्वीकार ही करते हैं बल्कि अपनी पहली हालत पर रोते और अफ़सोस करते हैं कि वह कैसी मूर्खता थी जिसे हम बुद्धिमत्ता समझते थे और वह कैसी बुद्धिहीनता थी जिसे हम ज्ञान

★ जिसकी दुआएं खुदा के दरबार में स्वीकार होने का सम्मान पाएं। अनुवादक

और बुद्धिमान तथा प्रकृति का नियम समझते थे। सारांश यह कि वह सृष्टि पर एक शोले की भांति गिरता है और सब को न्यूनाधिक भिन्न-भिन्न योग्यताओं के अनुसार अपने रंग में ले आता है यद्यपि वह प्रारंभ में आजमाया जाता तथा कष्टों में डाला जाता है और लोग उसे नाना प्रकार के दुःख देते और उस के बारे में लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें कहते हैं तथा विभिन्न प्रकार के यत्नों से उसको सताते और उसका अपमान सिद्ध करना चाहते हैं, परन्तु चूंकि वह अपने साथ सच्चाई का प्रमाण रखता है। इसलिए अन्ततः उन सब पर विजयी होता है और उसकी सच्चाई की किरणें बड़े जोर से संसार में फैलती हैं। जब ख़ुदा तआला देखता है कि पृथ्वी उसकी सच्चाई पर गवाही नहीं देती, तब आकाश वालों को आदेश देता है कि वे गवाही दें। तब उसके लिए एक स्पष्ट गवाही विलक्षण तौर पर दुआओं के स्वीकार होने के रंग में तथा वास्तविकता और मआरिफ़ के रंग में आकाश से उतरती है और वह गवाही बहरों, गूंगों और अंधों तक पहुंचती है तथा बहुत से हैं जो उस समय सच्चाई की ओर खींचे जाते हैं परन्तु मुबारक वह जो पहले से स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि उनको सुधारणा तथा ईमान की शक्ति के कारण सिद्दीक्रों (परम स्तयनिष्ठों) की प्रतिष्ठा का एक भाग मिलता है और यह उसका फ़ज़ल (कृपा) है जिस पर चाहे करे।

अब समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए मैं यह व्यक्त करना चाहता हूँ कि उसी के अनुसार जो अभी मैंने वर्णन किया है। ख़ुदा तआला ने इस युग को अंधकारमय पाकर और संसार को लापरवाही, कुफ़्र और शिर्क में डूबा हुआ देखकर ईमान, सच्चाई, संयम एवं ईमानदारी को नष्ट होते देख कर मुझे भेजा है ताकि वह संसार में दोबार ज्ञान संबंधी, कर्म संबंधी, नैतिक तथा ईमान संबंधी सच्चाई को स्थापित करे ताकि इस्लाम को उन लोगों के प्रहार से बचाए जो दर्शन शास्त्रीय, भौतिकवादी, अवैध वस्तुओं को वैध करने, ख़ुदा के साथ भागीदार करने तथा नास्तिकता के लिबास में उस ख़ुदा के इस बाग़ को कुछ हानि पहुंचाना चाहते हैं। अतः हे सत्याभिलाषियो! सोचकर देखो कि क्या यह समय वही समय नहीं है जिस में इस्लाम के लिए आकाशीय सहायता की

आवश्यकता थी। क्या अभी तक तुम पर यह सिद्ध नहीं हुआ कि पिछली सदी में जो तेरहवीं सदी थी इस्लाम को क्या-क्या आघात पहुंच गए, और गुमराही के फैलने से हमें क्या-क्या असहनीय घाव सहन करने पड़े। क्या अभी तक तुम ने मालूम नहीं किया कि इस्लाम को किन-किन आपदाओं ने घेरा हुआ है? क्या इस समय तुम्हें यह खबर नहीं मिली कि इस्लाम से कितने लोग निकल गए, कितने लोग ईसाइयों में जा मिले, कितने नास्तिक और भौतिकवादी हो गए और शिर्क एवं बिदअत ने किस सीमा तक तौहीद और सुन्नत का स्थान ले लिया और इस्लाम के खंडन में कितनी पुस्तकें लिखी गईं और संसार में प्रकाशित की गईं। तुम अब सोच कर देखो कि क्या अब आवश्यक न था कि खुदा तआला की तरफ से इस सदी पर कोई ऐसा व्यक्ति भेजा जाता जो बाहरी प्रहारों का मुकाबला करता। यदि आवश्यक था तो तुम जान बूझ कर खुदा की नेमत को अस्वीकार मत करो तथा उस व्यक्ति से विमुख मत हो जाओ जिस का इस सदी पर आना इस सदी की स्थिति के अनुसार आवश्यक था। जिस की प्रारंभ से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी थी और वलियों ने अपने इल्हामों एवं कशफों से उसके बारे में लिखा था, तनिक दृष्टि डाल कर देखो कि इस्लाम को किस स्तर पर विपत्तियों ने विवश कर दिया है और कैसे चारों ओर से इस्लाम पर विरोधियों के तीर छूट रहे हैं और कैसे करोड़ों लोगों पर इस विष (जहर) ने असर कर दिया है। यह जो ज्ञान संबंधी तूफान, षडयंत्र का तूफान, यह दुराचारों का तूफान, यह बौद्धिक तूफान, यह दर्शन शास्त्रीय तूफान, यह छल और यह लोभ और लालच देने का तूफान यह निषिद्ध बातों का वैध करना तथा नास्तिकता का तूफान, यह शिर्क और बिदअत का तूफान है इन सब तूफानों को थोड़ा आंखें खोलकर देखो और यदि शक्ति है तो इन समस्त तूफानों का किसी पूर्व युग का उदाहरण तो वर्णन करो और ईमान से कहो हज़रत आदम^{अ.} से लेकर आज तक इसका कोई उदाहरण भी है। यदि उदाहरण नहीं तो खुदा तआला से डरो तथा हदीसों के वे अर्थ करो जो हो सकते हैं वर्तमान घटनाओं को अनदेखा मत करो ताकि तुम पर स्पष्ट हो जाए कि यह सामान्य गुमराही वही घोर दज्जालियत है

जिस से हर एक नबी डराता आया है। जिसकी नींव इस संसार में ईसाई धर्म तथा ईसाई क्रौम ने डाली, जिसके लिए जरूरी था कि समय का मुजद्दिद मसीह के नाम पर आए, क्योंकि उपद्रव की नींव मसीह की ही उम्मत है। और मुझ पर कशफ़ द्वारा यह प्रकट किया गया है कि यह विषैली बातें जो ईसाई क्रौम से संसार में फैल गईं। हज़रत ईसा को इसकी सूचना दी गई। तब उनकी रूह रूहानी नुज़ूल (उतरने) के लिए गतिमान हुई और उसने जोश में आकर और अपनी उम्मत को तबाही का उपद्रव फैलाने वाला देख कर पृथ्वी पर अपना स्थानापन्न और समरूप चाहा जो उसका ऐसा समस्वभाव हो कि जैसे वही हो। अतः खुदा तआला ने उस को वादे के अनुसार एक सदृश बनाया और उसमें मसीह का साहस, जीवन चरित्र और रूहानियत उतरी तथा उसमें और मसीह में अत्यधिक संयोजन किया गया जैसे वे एक ही जौहर के दो टुकड़े बनाए गए और मसीह की आध्यात्मिकता ने उसके दिल को अपना ठहरने का स्थल बनाया और उसमें होकर अपनी मांग पूर्ण करना चाही। अतः इन अर्थों से उसका अस्तित्व मसीह का अस्तित्व ठहरा और मसीह के जोश से भरे संकल्प उतरे, जिनका उतरना इल्हामी रूपकों में मसीह का उतरना ठहराया गया। स्मरण रहे कि यह एक इफ़्फ़ानी (आध्यात्मिक) भेद है जो कुछ पहले कामिल लोगों को कुछ उन पर जो पृथ्वी पर जीवित मौजूद हों ध्यान का प्रतिबिम्ब पड़ कर तथा विचारों में एकरूपता होकर ऐसा संबंध हो जाता है कि वे उनके प्रकट होने को अपना प्रकट होना समझ लेते हैं और उनके संकल्प जैसे आकाश पर उनके दिल में पैदा होते हैं उसी प्रकार खुदा तआला की आज्ञा से उसके दिल में जो पृथ्वी पर है पैदा हो जाते हैं और ऐसी रूह जिसकी वास्तविकता को उस मनुष्य से जो पृथ्वी पर है एक रूप किया जाता है एक ऐसी विशेषता रखती है कि जो जब चाहे उसमें पूर्णरूप से अपने विचार डालती रहे। और उन विचारों को खुदा तआला उस दिल से इस दिल में रख देता है। निष्कर्ष यह कि खुदा का नियम है कि कभी पहले अंबिया तथा औलिया इस प्रकार से उतरते हैं। और ईलिया नबी यह्या नबी में होकर इसी प्रकार से उतरा था। अतः मसीह के उतरने की सच्ची वास्तविकता

यही है जो इस खाकसार पर प्रकट की गई, और यदि अब भी कोई न रुके तो मैं मुबाहले के लिए तैयार हूं। मैंने मुबाहले की प्रथम इसलिए उपेक्षा की थी कि मैं जानता था कि मुसलमानों से परस्पर लानत डालना वैध नहीं। परन्तु अब मुझे बताया गया कि जो मुसलमान को काफ़िर कहता है और उसे अहले आस्थाओं पर विश्वास रखने वाला पाकर भी काफ़िर कहने से नहीं रुकता वह स्वयं इस्लाम के दायरे से बाहर है। अतः मैं मामूर हूं कि ऐसे लोगों से जो झुठलाने वालों के सरदार हैं और मुफ़्ती, मौलवी तथा मुहद्दस कहलाते हैं और बीबी-बच्चों वाले हैं मुबाहलः करूं और पहले एक सार्वजनिक जल्से में एक विस्तृत भाषण के द्वारा उनको अपने तर्क एवं प्रमाण समझा दूं और उसी जल्से में उनके समस्त आरोपों एवं सन्देहों का जो उनके दिल में दुविधा करते हैं उत्तर भी दे दूं और फिर यदि काफ़िर कहने से न रुकें तो उन से मुबाहलः करूं। मुबाहलः इस आधार पर नहीं होगा कि वे अपने पारिभाषिक नाम अहले सुन्नत वलजमाअत में से मुझ को बाहर क्यों समझते हैं। क्योंकि इस से तो मुझे कुछ भी अफ़सोस नहीं। जब मैं देखता हूं कि ग़ैर मुक़ल्लिद जो स्वयं को अहले हदीस कहलाता है चारों इमामों के मुक़ल्लिदों का नाम बिदअती और 'फ़ैज आवज' रखता है और आदरणीय सहाबा की पद्धति से उनको बाहर समझता है तथा उनको पहले बुजुर्गों का विरोधी समझता है। ऐसा ही एक उदाहरणतया हनफ़ी समस्त ख़ुदा को एक मानने वाले ग़ैर मुक़ल्लिद को धर्म विहीन और सुन्नत जमाअत के दायरे से बाहर मानता है, तो मुझे क्यों अफ़सोस करना चाहिए कि मैं क्यों सुन्नत जमाअत से बाहर किया जाता हूं। वास्तव में अलहे सुन्नत-वलजमाअत कहलाना आजकल किसी विशेष समुदाय का अधिकार स्वीकार नहीं किया गया। प्रत्येक अपने विचार में अहले सुन्नत है और दूसरों को इस से बाहर कर रहा है। यह कुछ ऐसा झगड़ा नहीं जिसका ख़ुदा के नज़दीक कुछ महत्त्व हो। किन्तु आंशिक मतभेदों के कारण किसी को तुरन्त काफ़िर कह देना और उसे हमेशा के नर्क के योग्य ठहराना यह बात वास्तव में ख़ुदा के नज़दीक कोई सरल और साधारण बात नहीं बल्कि बहुत ही बड़ी है तथा आश्चर्य का स्थान

है कि एक व्यक्ति कलिमा कहने वाला है और अहले क्रिब्ला: तथा खुदा को एक मानने वाला तथा उनसे सच्चा प्रेम रखने वाला हो तथा फिर किसी आंशिक मतभेद के कारण वह ऐसा काफ़िर ठहर जाए कि यहूदियों तथा ईसाइयों की भांति बल्कि उन से भी निकृष्ट समझा जाए और मिया नज़ीर हुसैन और शैख बतालवी इस बात पर सहमत हों कि वह न केवल काफ़िर बल्कि उसका नाम महा-काफ़िर रखा जाए अर्थात् हमेशा के नर्क से भी उसका दण्ड कुछ अधिक हो। ज्ञानी लोग जानते हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में बड़े-बड़े मतभेद थे और उनमें से कोई भी मतभेद से बच नहीं सका। न सिद्दीक़ (अबू बकर^{रज़ि}), न फारूक़ (उमर^{रज़ि}) न अन्य कोई सहाबी, बल्कि रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी प्रतिष्ठा एवं प्रताप के बावजूद जो उलेमा में मान्य है धार्मिक मामलों में सहाबा की सम्पूर्ण जमाअत में से पचास मामलों में विरोधी थे। यह विरोध उस चरम सीमा तक पहुंच गया था कि कुछ ऐसे मामलों को वह वैध जानते थे जिनको दूसरे सहाबा बिल्कुल अवैध बल्कि स्पष्ट पाप समझते थे। हज़रत आयशा सिद्दीक़ और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुम और उनके समूह के लोग मेराज और खुदा को देखने के बारे में दूसरे सहाबा से पूर्ण रूप से विरोधी थे परन्तु कोई किसी को काफ़िर नहीं कहता था। किन्तु यह युग एक ऐसा युग आया कि मौलवियों ने अपने भाई मुसलमान को काफ़िर कह देना और हमेशा के लिए नारकी ठहरा देना एक ऐसी साधारण बात समझ ली कि जैसे कोई पानी का घूंट पी ले। इसी पुरानी आदत के कारण इस खाकसार को भी उन्होंने काफ़िर ठहराया। अतः मैं अब मामूर हूं जो इन्हीं लोगों से जो काफ़िर कहने वालों के सरदार हैं अर्थात् नज़ीर हुसैन देहलवी और शैख मुहम्मद हुसैन बतालवी और जो उनके समान श्रेणी और समान राय वाले हैं मुबाहल: का निवेदन करूं। इसलिए इस कर्तव्य से भार मुक्त होने के लिए इन काफ़िर कहने वालों के सरदारों के नाम पर मुबाहल: का विज्ञापन नीचे प्रकाशित किया जाता है -

मुबाहल: के लिए विज्ञापन

उन समस्त मौलवियों और मुफ्तियों की सेवा में जो इस खाकसार को आंशिक मतभेदों के कारण या अपनी अज्ञानता के कारण काफ़िर ठहराते हैं निवेदन किया जाता है कि अब मैं खुदा तआला की ओर से मामूर हो गया हूँ ताकि मैं आप लोगों से मुबाहला करने की दरख्वास्त करूँ, इस प्रकार से कि प्रथम आप को मुबाहल: की मज्लिस में अपनी आस्थाओं (अकीदों) के प्रमाण कुर्आन और हदीस के अनुसार सुनाऊँ। यदि आप लोग फिर भी काफ़िर कहने से न रुकें तो उसी मज्लिस में मुबाहल: करूँ। तो मेरे पहले संबोधित मियां नज़ीर हुसैन देहलवी हैं और यदि वह इन्कार करें तो फिर शेख मुहम्मद हुसैन बतालवी और यदि वह इन्कार करें तो फिर इसके बाद समस्त वे मौलवी साहिबान जो मुझे काफ़िर ठहराते और मुसलमानों में प्रमुख समझे जाते हैं। मैं उन समस्त बुजुर्गों को आज की तिथि से जो 10, दिसम्बर 1892 ई. है चार माह तक का अवकाश देता हूँ। यदि चार माह तक इन लोगों ने मुझसे उपरोक्त शर्तों के अनुसार मुबाहल: न किया और न काफ़िर कहने से रुके तो फिर उन पर अल्लाह तआला के समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा होगा। मैं प्रथम यह चाहता था कि वे समस्त अनुचित आरोप जो इन लोगों ने मेरे बारे में कायम करके कुफ़्र का कारण ठहराए हैं, इस पुस्तक में उनका उत्तर प्रकाशित करूँ। परन्तु कातिब (प्रतिलिपिक) के बीमार हो जाने तथा हानि होने के कारण अभी तक वह भाग प्रकाशित नहीं हो सका। अतः मैं मुबाहल: की मज्लिस में वह लेख बहर हाल सुना दूँगा। यदि उस समय छप गया हो या न छपा हो, परन्तु याद रहे कि हमारी ओर से यह शर्त आवश्यक है कि कुफ़्र का फ़त्वा लिखने वालों ने जो कुछ समझा है प्रथम उस लेख की ग़लती सिद्ध की जाए और अपनी ओर से सन्तोष जनक तर्कों के साथ समझने का अन्तिम प्रयास किया जाए। और फिर यदि न रुकें तो उसी मज्लिस में मुबाहला किया जाए। मुबाहल: की इजाज़त के बारे में खुदा का कलाम मुझ पर उतरा वह यह है -

نظر الله اليك معطرًا - وقالوا اتجعل فيها من
 يفسد فيها - قال انى اعلم مالا تعلمون - قالوا
 كتاب ممتلئ من الكفر والكذب - قل تعالوا
 ندع ابناءنا وابناءكم ونساءنا ونساءكم
 وانفسنا وانفسكم ثم نبتهل فنجعل لعنة الله
 على الكاذبين -

अर्थात् खुदा तआला ने एक सुगंधित दृष्टि से तुझ को देखा और कुछ लोगों ने अपने दिल में कहा कि हे खुदा! क्या तू पृथ्वी पर एक ऐसे व्यक्ति को खड़ा कर देगा जो संसार में फ़साद फैलाए। तो खुदा तआला ने उनको उत्तर दिया कि जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। और उन लोगों ने कहा कि इस व्यक्ति की किताब एक ऐसी किताब है जो झूठ और कुफ़्र से भरी हुई है। अतः उनको कह दे कि आओ हम और तुम अपनी औरतों, बेटों और रिश्तेदारों सहित मुबाहल: करें। फिर उन पर लानत करें जो झुठे हैं।

यह वह मुबाहल: की इजाजत है जो इस खाकसार को दी गई। परन्तु इसे साथ जो खुश-खबरी के तौर पर अन्य इल्हाम हुए उन में कुछ लिखता हूँ और वे ये हैं -
 يوم يجئى الحق ويكشف الصدق ويخسر الخاسرون - انت معى وانا
 معك ولا يعلمها الا المسترشدون نردّ اليك الكرة الثانية ونبدلنك من
 بعد خوفك امناً - ياتى قمر الانبياء وامرك يتأتى يسر الله وجهك ويُنيرُ
 برهانك سيولد لك الولد ويدنى منك الفضل انّ نورى قريب وقالوا انى
 لك هذا قل هو الله العجيب - ولا تيأس من روح الله - انظر الى يوسف
 واقباله - قد جاء وقت الفتح والفتح اقرب - يخرون على المساجد -
 ربّنا اغفر لنا انا كنّا خاطئين - لا تثرىب عليكم اليوم يغفر الله لكم

وهو الرحمن الرحيم- ارددت ان استخلف فخلقت آدم نجي الاسرار-
انا خلقنا الانسان في يوم موعود-

अर्थात् उस दिन सच आ जाएगा और सच्चाई स्पष्ट हो जाएगी और जो लोग घाटे में हैं वे घाटे में पड़ेंगे। तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ हूँ और इस वास्तविकता को कोई नहीं जानता परन्तु वही जो सन्मार्ग रखते हैं। हम फिर तुझे विजयी करेंगे और भय के बाद अमन की हालत प्रदान करेंगे। नबियों का चांद आया और तेरा काम तुझे प्राप्त हो जाएगा। खुदा तेरे मुंह को प्रसन्न करेगा और तेरे प्रमाण को रोशन कर देगा और तुझे एक बेटा दिया जाएगा और फ़ज़ल तुझ से निकट किया जाएगा और मेरा प्रकाश नज़दीक है। और कहते हैं कि ये पद तुझ को कहां। इनको कह कि वह खुदा अद्भुत खुदा है, उसके ऐसे ही काम हैं। जिसको चाहता है अपने सानिध्य-प्राप्त लोगों में स्थान देता है और मेरे फ़ज़ल से निराश मत हो। यूसुफ़ को देख और उसके उत्कर्ष को। विजय का समय आ रहा है तथा विजय निकट है। विरोधी जिन के लिए तौबा निश्चित है अपनी सज़्दागाहों में गिरेंगे कि हे हमारे खुदा हमें क्षमा कर कि हम ग़लती पर थे। आज तुम पर कोई डांट-डपट नहीं, खुदा तुम्हें क्षमा कर देगा और वह समस्त दया करने वालों से अधिक दया करने वाला है। मैंने इरादा किया कि पृथ्वी पर अपना एक ख़लीफ़ा नियुक्त करूँ तो मैंने आदम को पैदा किया जो रहस्यों को खोलने वाला है। हमने ऐसे दिन उसको पैदा किया जो वादे का दिन था अर्थात् जो पहले से पवित्र नबी^प के माध्यम से प्रकट कर दिया गया था। कि वह अमुक युग में पैदा होगा और जिस समय पैदा होगा अमुक क्रौम संसार में अपनी हुकूमत और शक्ति में विजयी होगी और अमुक प्रकार की सृष्टि-उपासना सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैली हुई होगी। उसी युग में वह मौऊद पैदा हुआ और वह सलीब का युग और ईसा की उपासना का युग है। जो व्यक्ति यह समझ सकता है चाहिए कि मरने से पहले समझ ले يَضَعُ الْجَزِيَّةَ يَقْتُلُ الْخَنَزِيرَ को समझ पर يَكْسِرُ الصَّلِيبَ को ध्यानपूर्वक देखे जो ये समस्त बातें अहले किताब (अर्थात् यहूदी और ईसाई) के बारे में तथा उनकी शान में सच्ची सिद्ध हो सकती हैं न कि किसी अन्य के बारे में। फिर जब स्वीकार किया गया कि उस युग में उच्चतम शक्ति ईसाई धर्म की शक्ति तथा

ईसाई सरकारों की शक्ति होगी। जैसा कि पवित्र कुर्आन भी इसी बात की ओर संकेत करता है। तो फिर उन शक्तियों के साथ एक बनावटी, काल्पनिक और संशयात्मक दज्जाल की गुंजायश कहां? यही लोग तो हैं जो सम्पूर्ण पृथ्वी पर छा गए हैं। फिर यदि उनके मुकाबले पर कोई और दज्जाल निकले तो वह उनके बावजूद कैसे पृथ्वी पर छा जाए। एक म्यान में दो तलवारें तो समा नहीं सकतीं। जब समस्त पृथ्वी पर दज्जाल की बादशाहत होगी तो फिर अंग्रेज कहां होंगे और रूस कहां और जर्मनी तथा फ्रांस इत्यादि यूरोप की बादशाहतें कहां जाएंगी। हालांकि मसीह मौऊद का ईसाई सरकारों के समय में प्रकट होना आवश्यक है और जब मसीह मौऊद के लिए यही आवश्यक है कि संसार में ईसाई शक्तियों को ही संसार पर विजयी पाए और समस्त खराबियों की कुंजियां उन्हीं के हाथ में देखे, उन्हीं की सलीबों को तोड़े और उन्हीं के सुअरों को क्रतल करे और उन्हीं को इस्लाम में दाखिल करे जिज़्या (कर) का किस्सा समाप्त करे। तो फिर विचार करो कि काल्पनिक दज्जाल की हुकूमत ईसाई हुकूमत के बावजूद कैसे संभव है। किन्तु यह गलत है कि मसीह मौऊद भौतिक तलवार के साथ आएगा। आश्चर्य कि ये उलेमा **يضع الحرب** के वाक्य पर क्यों विचार नहीं करते और हदीस **الْأئمة من قریش** को क्यों नहीं पढ़ते। अब जबकि भौतिक हुकूमत, खिलाफत और इमामत कुरैश के अतिरिक्त किसी के लिए वैध (जायज़) नहीं तो फिर मसीह मौऊद जो कुरैश में से नहीं है ज़ाहिरी खलीफ़ा कैसे हो सकता है तथा यह कहना कि वह महदी से बैअत करेगा और उसका अनुयायी होगा और नौकरों की भांति उसके कहने से तलवार उठाएगा विचित्र प्रकार की व्यर्थ बातें हैं, नहीं! सज्जनों खुदा तआला आप लोगों को हिदायत दे मसीह मौऊद की रूहानी खिलाफत है। संसार की बादशाहतों से उसका कुछ संबंध नहीं। उसे आकाशीय बादशाहत दी गई है और आज-कल यह युग भी नहीं कि लोग तलवार से सच्चा ईमान ला सकें। आज-कल तो पहली तलवार पर ही मूर्ख लोग ऐतराज़ कर रहे हैं कहां यह कि नए सिरे से उनको तलवारों से क्रतल किया जाए। हां रूहानी तलवार की बहुत आवश्यकता है। अतः वह चलेगी और उसे कोई रोक नहीं सकता। अब हम इस मुकद्दमः को समाप्त करते हैं परन्तु नीचे विरोधियों के लिए एक रूहानी तलवार चला देते हैं और वह यह है -

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
 नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम
 (अल्लाहु अकबर हर विरोधी पर ज़िल्लत की मार हुई)

विज्ञापन

समस्त पादरी साहिबान और हिन्दू साहिबान और
 आर्य साहिबान, ब्रह्म साहिबान, सिख साहिबान,
 नास्तिक साहिबान तथा नेचरी साहिबान
 इत्यादि लोगों के नाम

الحمد لله الذى ارسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله
 ولو كره المشركون والصلوة والسلام على خير رُسُلِهِ وافضل انبيائه
 وسلاة اصفياه محمدن المصطفى الذى يصلى عليه الله وملائكته
 والمؤمنون المقربون-

तत्पश्चात् चूँकि इस युग में उपरोक्त शीर्षक में उल्लिखित धर्म के लोग
 कुर्आन की शिक्षा के कट्टर विरोधी हैं और उनके अधिकतर लोग हमारे सय्यद-
 व-मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा खातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
 को सच पर नहीं समझते। और पवित्र कुर्आन को ख़ुदा का कलाम स्वीकार नहीं
 करते और हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झूठा और ख़ुदा
 की पवित्र किताब को झूठ का पुलिंदा समझते हैं और एक लम्बा समय हम में
 और उनमें मुबाहसों में गुज़र गया। और पूर्ण रूप से उनके समस्त आरोपों का
 उत्तर दे दिया गया और जो आरोप उनके धर्मों और किताबों पर आते हैं वे शर्तें
 लगा-लगा कर उनको सुनाए गए और स्पष्ट कर दिया कि उनके धार्मिक सिद्धान्त,
 आस्थाएं तथा कानून जो इस्लाम के विरोधी हैं सच्चाई से कितने दूर कलंक और
 निर्लज्जता का स्थान हैं। परन्तु फिर भी इन लोगों ने सच को स्वीकार नहीं किया

और न अपनी गुस्ताखी और गालियों को छोड़ा। अन्त में हमने पूर्णरूप से समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के उद्देश्य से आज यह विज्ञापन लिखा है जिसका संक्षिप्त लेख नीचे लिखा जाता है -

साहिबो! समस्त धर्मों के लोगो जो दण्ड एवं प्रतिफल को मानते हो और रूह की अनश्वरता तथा आखिरत के दिन पर विश्वास रखते हो। यद्यपि सैकड़ों बातों में भिन्न हैं परन्तु इस बात पर सब सहमत है कि **खुदा मौजूद है** और यह दावा करते हैं कि हमें उसी खुदा ने यह धर्म दिया है और उसी की यह हिदायत है जो हमारे हाथ में है। और कहते हैं कि उसकी इच्छा पर चलने वाले और उसके प्रिय बन्दे केवल हम लोग हैं और शेष सब प्रकोप के पात्र और गुमराही के गढ़े में गिरे हुए हैं जिन से खुदा तआला अत्यन्त क्रोधित है। फिर जब कि प्रत्येक का दावा है कि मेरा मार्ग खुदा तआला की इच्छा के अनुसार है और निजात (मुक्ति) को आधार और स्वीकारिता केवल यही मार्ग है और बस। इसी मार्ग का अनुसरण करने से खुदा तआला प्रसन्न होता है और ऐसे ही लोगों से प्रेम करता है और ऐसों की ही वह अधिकतर एवं निश्चित तौर पर बातें मानता है और दुआएं स्वीकार करता है, तो फिर फैसला बहुत आसान है। और हम इस कथित बात में प्रत्येक व्यक्ति के साथ सहमत हैं हमारे नज़दीक भी यह सच है कि सच्चे और झूठे में इसी संसार में कोई ऐसा परस्पर अन्तर स्थापित होना चाहिए जो दोनों में फ़र्क बताए जो खुदा तआला की ओर से प्रकट हो। यों तो कोई अपनी क़ौम को अन्य क़ौमों से खुदा से डरने, संयम धारण करने, तौहीद, न्याय और इन्साफ़ तथा अन्य नेक कार्यों में कम नहीं समझेगा। फिर इस ढंग से फैसला होना असंभव है। यद्यपि हम कहते हैं कि इस्लाम में वे प्रशंसनीय बातें एक अद्वितीय विशेषता के साथ पाई जाती हैं जिन से इस्लाम की विशिष्टता सिद्ध होती है। उदाहरणतया जैसे इस्लाम की तौहीद, इस्लाम के संयम (तक्वा) इस्लाम के नियम, पवित्रता की सुरक्षा तथा अधिकारों की सुरक्षा के बारे में जो व्यावहारिक एवं वैचारिक दृष्टि से करोड़ों लोगों में मौजूद हैं और उसकी तुलना में जो कुछ हमारे विरोधियों की व्यावहारिक एवं वैचारिक हालत है वह ऐसी चीज़

है जो किसी न्यायवान से छुपी नहीं। किन्तु जब द्वेष मध्य में है तो इस्लाम की इन खूबियों को कौन स्वीकार कर सकता है तथा कौन सुन सकता है। यह बहुत चिंतन-मनन योग्य है और बहुत व्यापक तरीका जो देहात के हल चलाने वाले और जंगलों के खाना बदोश (यायावर) भी उसे समझ सकते हैं। यह है कि इस लड़ाई-झगड़े के समय जो समस्त धर्मों में हो रहा है और अब चरम सीमा को पहुंच गया है उसी से सहायता मांगे, जिसके मार्ग में यह लड़ाई-झगड़ा है जबकि खुदा तआला मौजूद है। और वास्तव में उसी के बारे में ये सब लड़ाइयां हैं तो उचित है कि उसी से फैसला चाहें। अब स्पष्ट हो कि खुदा तआला के फ़ज़ल (कृपा) से मेरी यह हालत है कि मैं केवल इस्लाम को सच्चा धर्म समझता हूं और अन्य धर्मों को मिथ्या और सर्वथा झूठ का पुतला जानता हूं। और मैं देखता हूं कि इस्लाम के मानने से मेरे अन्दर प्रकाश के झरने बह रहे हैं और केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम के कारण खुदा से वार्तालाप और दुआओं की स्वीकारिता का वह उच्च पद मुझे प्राप्त हुआ है कि जो सच्चे नबी के अनुयायी के अतिरिक्त अन्य किसी को प्राप्त नहीं हो सकेगा। और यदि हिन्दू और ईसाई इत्यादि अपने झूठे उपास्यों से दुआ करते-करते मर भी जाएं तब भी उनको वह पद मिल नहीं सकता। और वह खुदा का कलाम जो दूसरे लोग उसको काल्पनिक तौर पर मानते हैं मैं उसको सुन रहा हूं और मुझे दिखाया और बताया गया और समझाया गया है कि संसार में केवल इस्लाम ही सच पर है तथा मुझ पर प्रकट किया गया कि यह सब कुछ हज़रत खातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण की बरकत से तुझ को मिला है और जो कुछ मिला है उसका उदाहरण अन्य धर्मों में नहीं, क्योंकि वह असत्य पर हैं। अब यदि कोई सच का अभिलाषी है चाहे वह हिन्दू है या ईसाई या आर्य या यहूदी या ब्रह्म अथवा कोई और है उसके लिए यह अच्छा अवसर है जो मेरे मुकाबले पर खड़ा हो जाए। यदि वह ग़ैबी (परोक्ष की) बातों के प्रकट होने तथा दुआओं के स्वीकार होने में मेरा मुकाबला कर सका तो मैं महा-वैभवशाली खुदा की क्रसम खा कर कहता हूं कि अपनी समस्त अचल सम्पत्ति (जायदाद

गैर मन्कूला) जिस का मूल्य दस हजार रुपए के लगभग होगा उसके सुपुर्द कर दूंगा। जिस प्रकार से उसकी संतुष्टि हो सके उसी प्रकार से जुर्माना अदा करने में उसको सांत्वना दूंगा। मेरा एक खुदा साक्षी (गवाह) है कि मैं हरगिज़ अन्तर नहीं करूंगा और यदि मृत्यु-दण्ड भी हो तो तन-मन से वैध समझता हूं। मैं दिल से यह कहता हूं और अल्लाह तआला जानता है कि मैं सच कहता हूं और यदि किसी को सन्देह हो तथा मेरे इस प्रस्ताव पर विश्वास न हो तो वह स्वयं ही जुर्माना का कोई उत्तम प्रस्ताव प्रस्तुत करे मैं उसे स्वीकार कर लूंगा। मैं हरगिज़ बहाना नहीं करूंगा। यदि मैं झूठा हूं तो उचित है कि किसी कठोर दण्ड से मर जाऊं और यदि मैं सच्चा हूं तो चाहता हूं कि कोई मरने मेरे हाथ से बच जाए। हे पादरी सज्जनो! जो अपनी क्रौम में सम्मिलित और विशिष्ट हो आप लोगों को महा वैभवशाली खुदा की क्रसम है कि इस ओर ध्यान दो। यदि आप लोगों के दिलों में उस सच्चे इन्सान का लेशमात्र भी प्रेम है जिसका नाम ईसा मसीह है तो मैं आपको क्रसम देता हूं कि मेरे मुकाबले के लिए ज़रूरी खड़े हो जाओ। आपको उस खुदा की क्रसम है जिसने मसीह को पवित्र मरयम के पेट से पैदा किया जिसने इंजील अवतरित की जिसने मसीह मृत्यु देकर फिर मुर्दों में नहीं रखा बल्कि अपनी जीवित जमाअत इब्राहीम और मूसा और यह्या और दूसरे नबियों के साथ सम्मिलित किया और जीवित करके उन्हीं के पास आकाश पर बुला लिया जो उस से पहले जीवित किए गए थे। कि आप लोग मुझ से मुकाबले के लिए ज़रूरी खड़े हो जाएं यदि सच तुम्हारे साथ है और वास्तव में मसीह खुदा ही है तो फिर तुम्हारी विजय है। और यदि वह खुदा नहीं है और एक असहाय और कमज़ोर इन्सान है और सच इस्लाम में है तो खुदा तआला मेरी सुनेगा और मेरे हाथ पर वह बात प्रकट कर देगा जिस पर आप लोग समर्थ नहीं हो सकेंगे। यदि आप लोग यह कहें कि हम मुकाबला नहीं करते और ईमानदारों के लक्षण हम में मौजूद हैं तो आओ इस्लाम स्वीकार करने की शर्त पर एक तरफ़ा खुदा तआला के काम देखो। और चाहिए कि तुम में से जो प्रसिद्ध और पेशवा तथा अपनी क्रौम में प्रतिष्ठित समझे जाते हैं वे सब या उनमें से कोई एक मेरे मुकाबले

पर आए। यदि मुक़ाबले से असमर्थ हो तो केवल अपनी ओर से वादा करके कि मैं कोई ऐसा काम देख कर जो मनुष्य से नहीं हो सकता ईमान ले आऊंगा और इस्लाम स्वीकार कर लूंगा मुझ से किसी निशान के देखने का निवेदन करें। और चाहिए कि अपने वादे को बारह गवाहों के साथ जिसमें चार ईसाई, चार मुसलमान और चार हिन्दू सदस्य पक्की क्रसम के सात विज्ञापन के तौर पर छपवा दें और एक विज्ञापन की प्रति मुझे भी भेज दें। यदि ख़ुदा तआला कुदरत का कोई चमत्कार प्रकट करे जो मनुष्य की शक्तियों से श्रेष्ठतर हो तो अविलम्ब इस्लाम स्वीकार कर लें और यदि स्वीकार न करें तो फिर दूसरा निशान यह है कि मैं अपने ख़ुदा तआला से चाहूंगा कि एक वर्ष तक ऐसे व्यक्ति पर कोई कठोर आपदा उतारे जैसे कोढ़, अंधा होना या मौत और यदि यह दुआ स्वीकार न हो तो फिर भी मैं प्रत्येक जुर्माने का जो प्रस्तावित किया जाए का पात्र हूंगा। यही शर्त आर्य सज्जनों की सेवा में भी है। यदि वे अपने वेदों को ख़ुदा तआला का कलाम समझते हैं और हमारी पवित्र किताब ख़ुदा के कलाम को मनुष्य का बनाया हुआ झूठ समझते हैं तो वे मुक़ाबले पर आएँ और और स्मरण रखें कि वे मुक़ाबले के समय अत्यन्त अपमानित होंगे। उनमें नास्तिकता और बिना शर्त की चालाकी सब से अधिक है परन्तु ख़ुदा तआला उन पर सिद्ध कर देगा कि मैं हूँ। और यदि मुक़ाबला न करें तो किसी व्यर्थ शर्त के बिना एक तरफ़ा निशान मुझ से देखें। मेरे निशान के ख़ुदा की ओर से होने के लिए यह पर्याप्त है कि यदि ऐसा आर्य जिस ने कोई निशान देखा हो अविलम्ब मुसलमान न हो जाए तो मैं उस पर बद्-दुआ करूंगा। यदि वह एक वर्ष तक कोढ़, अंधा होना या मौत की आपदा में ग्रस्त न हो तो मैं प्रत्येक दण्ड लेने के लिए तैयार हूँ और शेष सज्जनों के लिए भी यही शर्तें हैं। यदि अब भी मेरी ओर मुंह न करें तो उन पर ख़ुदा तआला के समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका।

विज्ञापन कर्ता

खाकसार - गुलाम अहमद क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर

धन्य हैं वे लोग जो सच्चे हैं क्योंकि अन्ततः विजय उन्हीं की है

पर्चा नूर अफ़्शां 10 मई 1888ई. के देखने वालों को ज्ञात होगा कि इस पर्चे के एडीटर ने इस ख़ाक़सार का एक पत्र जो एक भविष्यवाणी पर आधारित है अपने उस पर्चे (अख़बार) में लिख कर कितने अपशब्दों के साथ मुंह खोला था और क्या-क्या अनुचित और सभ्यता के विरुद्ध तथा गन्दे शब्द इस ख़ाक़सार के संबंध में बोले थे। यों तो इन पादिरियों पर कुछ भी अफ़सोस नहीं करना चाहिए, क्योंकि सच्चाई से शत्रुता करना और इन्कार एवं अपमानजनक व्यवहार करना इन का पुराना चलन (शेवः) है। किन्तु हमें इस समय यह दिखाना अभीष्ट है कि इन्होंने जिस इल्हामी भविष्यवाणी को मानवीय योजना और मानवीय झूठ बता कर अपनी आदत के अनुसार गालियां दी थीं। इसका अंजाम क्या निकला। क्या अन्ततः वह मानवीय मनगढ़त झूठ ही सिद्ध हुआ या ख़ुदा तआला ने जो सच का समर्थक है उसकी सच्चाई प्रकट कर दी।

अतः स्पष्ट रहे कि इस ख़ाक़सार का वह पत्र जो 10 मई 1888 ई. को अख़बार नूर अफ़्शां में छपा है उसकी इबारत जो भविष्यवाणी के संबंध में है कथित अख़बार के पृष्ठ 2,3 में **मिर्ज़ा अहमद बेग** होशियारपुरी के बारे में यह है। ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र इल्हाम से मुझ पर प्रकट किया है कि यदि आप अपनी बड़ी बेटी का रिश्ता मेरे साथ स्वीकार करें तो वह आपसी समस्त अपवित्रताएं इस रिश्ते से दूर कर देगा। और आपको विपत्तियों से सुरक्षित रख कर बरकत पर बरकत देगा। और यदि यह रिश्ता न हुआ तो आप के लिए अन्य स्थान पर रिश्ता करना हरगिज़ मुबारक (शुभ) न होगा और उसका अंजाम दर्द, कष्ट और मृत्यु होगा। ये दोनों पक्ष बरकत और मृत्यु के ऐसे हैं जिन की परीक्षा के पश्चात् मेरा सच और झूठ मालूम हो सकता है (अब जिस प्रकार चाहो परख लो) मेरी बिरादरी के लोग मुझ से अपरिचित हैं और ख़ुदा तआला चाहता है कि

मेरे कार्यों को उन पर भी प्रकट करे।

यह वह पत्र है जो 10 मई 1888 ई. के अखबार नूर अफ़्शां में प्रकाशित हो चुका है जिसका खुलासा यही है कि यदि दूसरे स्थान पर निकाह हुआ तो फिर इसका परिणाम तुम्हारे लिए मृत्यु होगा अन्यथा मृत्यु के स्थान पर बरकत होगा। अब मैं व्यक्त करता हूँ कि 7, अप्रैल 1892 ई. को उस लड़की का निकाह दूसरे स्थान पर हो गया। 30 सितम्बर 1892 ई. को यह भविष्यवाणी पूरी हुई। अर्थात् खुदा तआला ने मिर्जा अहमद बेग होशियारपुरी को इस नश्वर संसार से उठा लिया। अब नूर अफ़्शां को ऐडीटर को थोड़ा धैर्य पूर्वक विचार करना चाहिए कि भविष्यवाणी का पूरा हो जाना तौरात★ की हिदायत के अनुसार सच्चे की निशानी है या झूठे की सत्याभिलाषी के लिए तो खुदा तआला का इतना ही निशान पर्याप्त है और झूठ की उपासना करने वाले को कोई निशान लाभ नहीं दे सकता जब तक वह अन्तिम निशान प्रकट न हो जिसका नाम नर्क है। प्रत्येक सत्याभिलाषी को चाहिए कि 10, मई 1888 ई. के अखबार 'नूर अफ़्शां' को देखकर इस भविष्यवाणी के साथ पादरियों को दोषी ठहराए। अब हम यह उचित समझकर 10 जुलाई 1888 ई. का विज्ञापन इसके साथ संलग्न कर देते हैं और आशा रखते हैं कि हमारे कुधारणा रखने वाले भाई भी इस ओर ध्यान दें कि ये बातें मनुष्य की ओर से हैं या आकाश के रब्ब की ओर से। इस समय अभी अवसर है कि ज़िद (हठ) को छोड़ दें जो व्यक्ति सच्चे से लड़ता है वह उस से नहीं बल्कि खुदा तआला से लड़ता है। उस पर सलाम जिसने हिदायत का अनुकरण किया।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमुदुहू व नुसल्ली

یا معین برحمتک نستعین

घटनापूर्व एक भविष्यवाणी का विज्ञापन

पेशगोई का जब अंजाम हुवेदा होगा

कुदरते हक का अजब एक तमाशा होगा

झूठ और सच में जो है फ़र्क वह पैदा होगा

कोई पाजाएगा इज्जत कोई रुस्वा होगा

अखबार नूर अफ़्शां 10 मई 1888 ई. में इस लेखक का जो एक पत्र निकाह की दरख्वास्त के संबंध में प्रकाशित किया गया है, उस पत्र को अखबार के मालिक ने अपने अखबार में लिखकर विचित्र प्रकार की गुस्ताखी की है। अखबार का वह पृष्ठ कठोर शब्दों तथा गालियां देने में काला किया है। यह कैसा अन्याय है कि जिन लोगों के पवित्र और पुनीत ने सैकड़ों पत्नियां एक ही समय में रखी हैं वे दो या तीन पत्नियों को इकट्ठा रखना एक बड़ा गुनाह (महा पाप) समझते हैं बल्कि इस कार्य को व्यभिचार (जिना) या दुष्कर्म समझते हैं। किसी खानदान का सिलसिला केवल एक पत्नी से हमेशा के लिए जारी नहीं रह सकता बल्कि सिलसिले के किसी न किसी सदस्य में यह मुश्किल आ पड़ती है। एक पत्नी बांझ और सन्तान पैदा न करने योग्य निकलती है। इस अन्वेषण से स्पष्ट है कि वास्तव में मनुष्यों की नस्ल कई विवाहों से ही हमेशा चली आती है। यदि एक से अधिक पत्नी करना निषेध होता तो अब तक मानव जाति लगभग-लगभग समाप्ति को पहुंच जाती। अन्वेषण से प्रकट होगा कि इस मुबारक और लाभप्रद पद्धति ने मनुष्य की कहां तक सुरक्षा की है और उसने उजड़े हुए घरों को कैसे एक बार में आबाद कर दिया है और मनुष्य के संयम के लिए यह कार्य कैसा शक्तिशाली सहायक व उपस्थित है। पति की आवश्यकताओं की पूर्ती के विषय में महिलाओं के स्वभाव में जो एक कमी पाई जाती है उदाहरणतया गर्भावस्था के समय और मासिक धर्म

और नफ़ास (वह रक्तस्राव जो प्रसूतिका के शरीर से बच्चा जनने के चालीस दिन तक होता रहे) में यह लाभप्रद पद्धति इस नुकसान की पूर्णतया पूर्ति करती है और जिस अधिकार की मांग पुरुष अपने स्वभाव के अनुसार कर सकता है वो उसे प्राप्त होता है। ऐसा ही पुरुष और कई कारणों और आवश्यकता से एक से अधिक पत्नि रखने के लिए विवश होता है जैसे यदि पुरुष की एक पत्नि आयु बढ़ने के कारण या किसी रोग के कारण कुरूप हो जाए तो पुरुष की मर्दानगी जिस पर सारा आधार औरत की कार्यवाही का है व्यर्थ और निलंबित हो जाता है परन्तु यदि पुरुष कुरूप हो तो औरत का कुछ भी हर्ज (हानि) नहीं क्योंकि कार्य शक्ति पुरुष को दी गई है। और औरत को संतुष्ट करना मर्द के हाथ में है। हाँ यदि मर्द अपनी मर्दाना शक्ति में दोष या अक्षमता रखता है तो कुर्आन की आज्ञा अनुसार औरत उस से तलाक़ ले सकती है। और यदि पूरी-पूरी संतुष्टि करने में सक्षम है, तो औरत यह बहाना नहीं कर सकती कि दूसरी पत्नि क्यों है। क्योंकि महिला, पुरुष की दैनिक ज़रूरतों के लिए ज़िम्मेदार और उत्तरदायी नहीं हो सकती और इस से पुरुष का विशेषाधिकार दूसरी पत्नि करने के लिए बना रहता है। जो लोग दृढ़ शक्ति और परहेज़गार और पवित्र हैं उन के लिए यह उपाय न केवल जायज़ बल्कि उचित है कुछ इस्लाम के विरोध आत्मिक इच्छा का पालन करते हुए सब कुछ करते हैं परन्तु इस शुद्ध पद्धति से बहुत घृणा करते हैं क्योंकि आंतरिक कामेच्छा के कारण जो उन में फ़ैल रही है उन को इस पवित्र ढंग की कुछ परवाह और आवश्यकता नहीं। इस स्थान पर ईसाइयों पर सब से अधिक अफ़सोस है क्योंकि वो अपने स्वीकृत नबियों की परिस्थितियों से आँख बंद कर के मुसलमानों पर अन्यायपूर्ण दाँत पीसते हैं। शर्म की बात है कि जो लोग स्वीकार करते हैं कि हज़रत मसीह के शरीर और अस्तित्व का शर्म और वास्तविक जड़ अपनी माँ की ओर से वही बहु विवाह है जिस की हज़रत दाऊद (मसीह के पिता) ने न दो न तीन बल्कि सौ पत्नियों तक संख्या पहुँचाई थी वह भी एक से अधिक पत्नियों को व्यभिचार करने के समान समझते हैं और उस पर बुरे शब्दों का परिणाम जो हज़रत **मरयम** सद्दीका पर पड़ता है इस से बिल्कुल परहेज़ नहीं करते और बावजूद इस सारी अशिष्टता के मसीह प्रेम का दावा करते

हैं। जानना चाहिए के बाइबल के अनुसार विवाह की संख्या न केवल कथित रूप से सिद्ध है बल्कि बनी इस्राईल के अधिकांश नबियों ने जिन में हज़रत मसीह के दादा साहिब भी शामिल हैं व्यावहारिक रूप से इस बात के सही होने बल्कि इसके प्रिय होने पर मुहर लगा दी है। हे ख़ुदा पर बनावटी विश्वास करने वाले ईसाइयों! यदि मुल्हिम (इल्हाम पाने वाला) के लिए एक ही पत्नि का होना अनिवार्य है तो फिर क्या तुम दाऊद जैसे न्यायप्रिय (सत्यप्रिय) को अल्लाह का अवतार नहीं मानोगे या सुलेमान जैसे ख़ुदा के प्रिय नबि को मुल्हिम होने बाहर कर दोगे। क्या तुम्हारे अनुसार नबियों का यह निरंतर कार्य जिनके हृदय मानो ख़ुदा के इल्हाम से निरंतर जुड़े हुए थे और प्रिय या अप्रिय के विवरण के बारे में आदेश प्राप्त हो रहे थे एक चिरस्थायी पाप नहीं है जिस से वह अपने जीवन के अंत तक बाज़ न आए और ख़ुदा और उसके आदेशों की कुछ परवाह न की। वह स्वाभिमानी तथा उदार ख़ुदा जिसने अपनी अवज्ञा के कारण समूद तथा आद को नष्ट कर दिया। लूत की क्रौम पर पत्थर बरसाए। फिरऔन को दुष्ट जमाअत के साथ भयानक तूफ़ान में डुबो दिया। क्या उस की महिमा तथा सम्मान के योग्य है कि उस ने **इब्राहीम** और **याक़ूब** और **मूसा** और दाऊद^{अ.} और सुलेमान^{अ.} और अन्य कई नबियों को बहुविवाह करने के कारणवश समस्त आयु अवज्ञा करने और पक्के विद्रोही देख कर भी उन को दंडित न किया बल्कि उन्हीं से मित्रता तथा प्रेम किया। क्या आपके ख़ुदा को इल्हाम उतारने के लिए कोई अन्य व्यक्ति न मिला। यह बहुविवाह करने वाले ही उसे पसंद आ गए? ☆ यह भी याद रखना चाहिए कि नबियों तथा सभी बुजुर्गों ने बहुविवाह करके और फिर दिव्य शक्तियों (आध्यात्मिक शक्तियों) और स्वीकृतियों (क्रबूलियतों) में सब से आगे बढ़कर समस्त संसार में यह साबित कर दिया है कि ख़ुदा का मित्र बनने का यह मार्ग नहीं कि मनुष्य संसार में हिजड़ों और नपुंसकों की भांति रहे बल्कि ईमान में शक्तिशाली वह है जो पत्नियों और

☆ इंजील के कुछ संकेतों से पता चलता है कि हज़रत मसीह भी विवाह कराना चाहते थे परन्तु कम ही आयु में उठाए गए (मृत्यु को प्राप्त हुए) अन्यथा यह निश्चित था कि अपने पिता दाऊद^{अ.} के पथमार्ग पर चलते। इसी से।

बच्चों का सर्वाधिक बोझ उठाकर फिर इन समस्त संबंधों के बावजूद बेलगाव हो। खुदा तआला का बन्दे से प्रेमी और प्रियतम होने का जोड़ होना एक तीसरी चीज़ के अस्तित्व को चाहता है, वह क्या है? ईमानी रूह जो मोमिन में पैदा होकर उसे नई ज्ञानेन्द्रियां प्रदान करती है। उसी रूह के माध्यम से खुदा तआला का कलाम मोमिन सुनता है और उसी के माध्यम से सच्ची और स्थायी पवित्रता प्राप्त करता है तथा उसी के माध्यम से उसमें नए जीवन की विलक्षण शक्तियां पैदा होती हैं। अब हम पूछते हैं कि जो लोग योगी रागी और सन्यासी कहलाते हैं, यह पवित्र रूह उन में से किस को दी गई है, या किसी पादरी में यह पवित्र रूह या यों कहो कि रूहुल कुदुस पाई जाती है। हम सम्पूर्ण विश्व के पादरियों को बुलाते-बुलाते थक भी गए, किसी ने आवाज़ तक नहीं दी। नूर अफ़शां अख़बार में कुछ पादरियों ने छपावाय था कि हम एक जल्से में एक बंद लिफ़ाफ़ा प्रस्तुत करेंगे, उस का विषय हमें इल्हाम के द्वारा बताया जाए, परन्तु जब हमारी ओर से मुसलमान होने की शर्त से यह दरख्वास्त स्वीकार हुई तो फिर पादरियों ने इस ओर मुंह भी न किया। पादरी लोग एक लम्बे समय से इल्हाम पर मुहर लगा बैठे थे, अब जब मुहर टूटी और मुसलमानों पर रूहुल कुदुस का वरदान सिद्ध हुआ तो पादरियों की आस्था की पोल खुल गई इसलिए आवश्यक था कि पादरियों को हमारे इल्हाम से दोगुना शोक होता। एक मुहर टूटने का दूसरे इल्हाम के स्थानांतरण का। अतः नूर अफ़शां की गालियों का मूल कारण वही शोक है जो की तरह असाध्य (लाइलाज) है।

अब यह जनना चाहिए कि जिस पत्र को 10, मई 1888ई. के 'नूर अफ़शां' में विरोधी सदस्य ने छपवाया है वह पत्र केवल खुदा के संकेत से लिखा गया था। एक लम्बे समय से जिसकी ओर पत्र लिखा गया उसके कुछ मुखिया लोग और निकट संबंधी जिनके सगे भानजे के बारे में दरख्वास्त की गई थी कि निशान-ए-आसमानी चाहते थे और इस्लामी पद्धति से विमुखता एवं बैर रखते थे और अब भी रखते हैं। अतः अगस्त 1885ई. में उनकी ओर से 'चश्मा-ए-नूर' में जो विज्ञापन छपा था, उनकी यह दरख्वास्त उस विज्ञापन में भी लिखी है। उनको न केवल मुझ से बल्कि खुदा और रसूल से भी शत्रुता है और उस लड़की का बाप निकट

घनिष्ठ संबंध के कारण इन लोगों को प्रसन्न करने में लीन और उनके पद चिन्हों पर तन-मन से कुर्बान और अपने अधिकारों से असहाय एवं असमर्थ बल्कि उन्हीं का आज्ञाकारी हो रहा है तथा अपनी लड़कियां उन्हीं की लड़कियां समझता है और वे भी ऐसा ही समझते हैं और हर बात में उस के प्रधानमंत्री तथा उसके लिए उसकी नाक का बाल बने हुए हैं, तभी तो नगाड़ा बजा कर उसकी लड़की के बारे में स्वयं ही प्रसिद्ध कर दिया, यहां तक ईसाइयों के अखबारों को इस किस्से से भर दिया। इस बुद्धि और विवेक पर शाबाश। मामा होने का हक खूब ही अदा किया। मामा हों तो ऐसे ही हों। अतः ये लोग जो मुझे मेरे इल्हाम के दावे में कपटी और धोखेबाज समझते थे तथा इस्लाम और पवित्र कुर्आन पर विभिन्न प्रकार के ऐतराज करते थे और मुझ से कोई आसमानी निशान मांगते थे। इस कारण से कई बार उनके लिए दुआ भी की गई थी। फिर वह दुआ स्वीकार होकर खुदा तआला ने यह प्रबंध किया कि उस लड़की के बाप ने अपने एक आवश्यक कार्य के लिए हमसे निवेदन किया। विवरण इस का यह है कि कथित व्यक्ति की एक बहन हमारे एक चाचा के लड़के (चाचाज़ाद भाई) गुलाम हुसैन नामक को ब्याही गई थी। गुलाम-हुसैन पच्चीस वर्ष के समय से कहीं चला गया है और जिसकी खबर नहीं मिली। उसकी भूमि का स्वामित्व जिस का हमें अधिकार प्राप्त होता है कथित व्यक्ति की बहन के नाम सरकारी कागज़ों में लिखवा दी गई थी। अब वर्तमान बन्दोबस्त में जो ज़िला गुरदासपुर में जारी है कथित व्यक्ति अर्थात् जिसे हमने पत्र लिखा था ने अपनी बहन की अनुमति से यह चाहा कि वह भूमि जो चार या पांच हजार रुपयों की है अपने बेटे मुहम्मद बेग के नाम बतौर हिबा हस्तांतरित करा दें। अतः उनकी बहन की तरफ से यह हिबा नामः (दान पत्र) लिखा गया। चूंकि वह हिबानामः हमारी अनुमति के बिना बेकार था। इसलिए कथित व्यक्ति जिसकी ओर पत्र लिखा गया था नितान्त विनयपूर्वक हमारे पास आया ताकि हम उस हिबा पर सहमत होकर उस पर हस्ताक्षर दें और निकट था कि हम हस्ताक्षर कर देते परन्तु यह विचार आया कि जैसा कि एक (लम्बे) समय से बड़े-बड़े कार्यों में हमारी

आदत है कि खुदा के दरबार में इस्तिखार: *कर लेना चाहिए। अतः कथित व्यक्ति को यही उत्तर दिया गया फिर इसके निरन्तर आग्रह से इस्तिखार: किया गया। वह इस्तिखार: क्या था जैसे आसमानी निशान की दरख्वास्त का समय आ पहुंचा था, जिसको खुदा तआला ने इस पद्धति में प्रकट किया।

उस सामर्थ्यवान दूरदर्शी खुदा ने मुझे कहा कि इस व्यक्ति की बड़ी लड़की के निकाह के लिए बात उठा और उनको कह दे कि तुम से सम्पूर्ण व्यवहार और रियाअत इसी शर्त से की जाएगी, और यह निकाह तुम्हारे लिए बरकत का कारण तथा रहमत का निशान होगा और उन सम्पूर्ण बरकतों तथा रहमतों से हिस्सा पाओगे जो 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में दर्ज हैं परन्तु यदि निकाह से मुंह फेरा तो इस लड़के का अंजाम बहुत ही बुरा होगा और जिस किसी अन्य व्यक्ति से ब्याही जाएगी वह निकाह के दिन से ढाई वर्ष तक और ऐसा ही उस लड़की के बाप की तीन वर्ष तक मृत्यु हो जाएगी।* और उन के घर पर फूट, तंगी और संकट आएगा और बीच के समय में भी उस लड़की के लिए अप्रिय तथा शोक के मामले सामने आएंगे।

फिर इन दिनों में जो अधिक स्पष्टता एवं विवरण के लिए बार-बार ध्यान किया गया तो ज्ञात हुआ कि खुदा तआला ने यह निश्चित कर रखा है कि वह कथित व्यक्ति की बड़ी लड़की को जिसके बारे में दरख्वास्त की गई थी हर एक रोक दूर करने के पश्चात् अन्ततः इसी खाकसार के निकाह में लाएगा और अधर्मियों को मुसलमान बनाएगा और गुमराहों में हिदायत फैला देगा। अतः इस बारे में अरबी इल्हाम यह है -

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِؤْنَ- فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَيُرُدُّهُمَا إِلَيْكَ لَا

*इस्तिखार: - इस्लामी परिभाषा में किसी बात या कार्य के करने या न करने में एक विशेष पद्धति द्वारा खुदा तआला से संकेत या मार्गदर्शन चाहना। (अनुवादक)

*उस लड़की का बाप निकाह से चौथे महीने भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु पा गया। अर्थात् निकाह 7, अप्रैल 1892ई. को हुआ और वह 30 सितम्बर 1892ई. को होशियारपुर में ही गुजर गया। इसी से

تَبْدِيلُ لَكُمَاتِ اللَّهِ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ- أَنْتَ مَعِيَ وَأَنَا مَعَكَ عَسَى أَنْ
يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا

अर्थात् उन्होंने हमारे निशानों को झुठलाया और वे पहले से हंसी कर रहे थे। अतः खुदा तआला ने उन सब के निवारण के लिए जो इस कार्य को रोक रहे हैं तुम्हारा सहायक होगा और अन्ततः उसकी इस लड़की को तुम्हारी और विापस लाएगा। कोई नहीं जो खुदा की बातों को टाल सके। तेरा रब्ब वह शक्तिशाली है कि जो कुछ चाहे वही हो जाता है। तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ हूँ और शीघ्र ही तुझे वह स्थान मिलेगा जिसमें तेरी प्रशंसा की जाएगी। अर्थात् यद्यपि प्रथम मूर्ख और नादान लोग कुधारण तथा कुधारण पूर्वक निन्दा करते हैं और बुरी बातें मुंह से निकालते हैं परन्तु अन्त में खुदा की सहायता को देख कर लज्जित होंगे और सच्चाई के प्रकट होने से चारों ओर से प्रशंसा होगी।

यहां नूर अफ़्शां का एक और आरोप निवारण करने योग्य है और वह यह है कि यदि यह इल्हाम खुदा तआला की ओर से था तथा उस पर पूर्ण विश्वास था तो फिर गुप्त क्यों रखा और अपने पत्र में गुप्त रखने के लिए बल दिया।★

इसका उत्तर यह है कि यह एक घरेलू मामला था और जिनके लिए यह निशान था उनको तो पहुँचा दिया गया था। कि उस लड़की का बाप ऐसे प्रकाशन से दुखी होगा। इसलिए हमने दिल को ठेस पहुँचाने तथा कष्ट पहुँचाने से पलायन किया। बल्कि यह भी न चाहा कि खण्डन और इन्कार करें। यद्यपि हम प्रकाशित करने के लिए मामूर थे, परन्तु हमने हित को देखते हुए दूसरे समय की प्रतीक्षा की, यहां तक उस लड़की के मामा मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन ने जो मिर्ज़ा इमामुद्दीन का सगा भाई है

★ यह इल्हाम शर्त के तौर पर जो कथित व्यक्ति की मृत्यु की ओर मार्ग दर्शन करता था हमें स्वाभाविक तौर पर उसके प्रकाशित करने से घृणा थी बल्कि हमारा दिल यह भी नहीं चाहता था कि इसे कथित व्यक्ति को सूचित करें परन्तु उसके अत्यन्त आग्रह पर जो उसने मौखिक एवं कई विनय पूर्वक पत्रों के भेजने से प्रकट किया। हमने सर्वथा सच्ची हमदर्दी और नेक नीयत से उस पर यह गुप्त बात प्रकट की फिर उसने और उसके संबंधी मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन ने इस इल्हाम के विषय को स्वयं प्रसिद्ध किया। (इसी से)

अत्यन्त क्रोधित होकर इस लेख को स्वयं ही प्रकाशित कर दिया और प्रकाशित भी ऐसा कि शायद एक या दो सप्ताह तक दस हजार पुरुष-स्त्रियों तक हमारी निकाह की दरख्वास्त तथा हमारे इल्हाम के विषय से भली भांति अवगत हो गए होंगे और फिर मौखित प्रकाशन को पर्याप्त न समझकर अखबारों में हमारा पत्र प्रकाशित करवाया तथा उनके द्वारा बाजारों में दिखाने से वह पत्र जगह-जगह पढ़ा गया और स्त्रियों तथा बच्चों तक उस पत्र के विषय की मुनादी की गई। अब जब मिर्जा निजामुद्दीन की कोशिश से हमारा वह पत्र 'नूरअफ़्शा' में भी छप गया और ईसाइयों ने अपनी शक्ति के अनुसार अनुचित झूठ गढ़ना आरंभ किया, तो हम पर अनिवार्य हो गया कि अपनी क्रलम से वास्तविकता को प्रकट करें। बुरा विचार रखने वाले लोगों पर स्पष्ट हो कि हमारी सच्चाई या झूठ परखने के लिए हमारी भविष्यवाणी से बड़ी परीक्षा की अन्य कोई कसौटी नहीं हो सकती, और यह भविष्यवाणी ऐसी भी नहीं कि सर्वप्रथम इसी समय में हमने व्यक्त की है बल्कि मिर्जा इमामुद्दीन तथा निजामुद्दीन और यहां के समस्त आर्य, लेखराम पेशावरी तथा सैकड़ों अन्य लोग भली भांति जानते हैं कि कई वर्ष हुए कि हमने इसी के बारे में संक्षिप्त रूप से एक भविष्यवाणी की थी। अर्थात् यह कि हमारी बिरादरी में से एक अहमद बेग नामक व्यक्ति की मृत्यु होने वाली है। अब न्यायवान व्यक्ति समझ सकता है कि वह उस भविष्यवाणी का एक भाग था या यों कहो कि यह विस्तार और वह संक्षेप था और इसमें तिथि और अवधि का कुछ वर्णन न था, इसमें शर्तों को स्पष्ट किया गया और वह अभी संक्षिप्त स्थिति में थी। बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह पर्याप्त है कि पहली भविष्यवाणी उस समय की है जबकि अभी वह लड़की वयस्क नहीं थी और जबकि यह भविष्यवाणी भी इसी व्यक्ति के बारे में है जिसके बारे में आज से पांच वर्ष पूर्व की गई थी अर्थात् उस समय में जबकि उस की यह लड़की आठ या नौ वर्ष की थी। अतः इस पर कामवासना संबंधी झूठ गढ़ने की कल्पना करना यदि मूर्खता नहीं तो और क्या है

والسلام على من اتبع الهدى

खाकसार - गुलाम अहमद (क्रादियान, जिला-गुरदासपुर, पंजाब)

10 जुलाई 1888 ई.

शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी की सेवा में पत्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

सेवा में, शेख मुहम्मद साहिब अबू सईद बटालवी

समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए और सलाम उसके उन बन्दों पर जिनको उसने चुना! तत्पश्चात् मैं अफ़सोस के साथ लिखता हूँ कि मैं आपके द्वारा कुफ़र के फ़त्वे के कारण जिसका निश्चित परिणाम दोनों सदस्यों में से एक का काफ़िर होना है इस पत्र में सलाम मस्नून अर्थात् अस्सलामो अलैकुम से प्रारंभ नहीं कर सका परन्तु चूँकि आपके बारे में मुझे एक डराने वाला इल्हाम हुआ तथा कुछ मुसलमान भाइयों ने भी मुझ को आपके संबंध में ऐसे स्वप्न सुनाए जिस के कारण मैं आपके भयानक अंजाम से बहुत डर गया तब आपके उन अधिकारों के जो इंसानों को इंसानो से होते हैं अतः हम दोनों का एक देश के निवासी होने एवं निकटतम पड़ोसी होने के कारण मेरा रहम आपकी इस अवस्था पर बहुत गतिमान हुआ तथा मैं महा प्रतापी ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि मुझे आप की हालत पर अत्यन्त रहम (दया) है और डरता हूँ कि आपको उन बातों का सामना न करना पड़े जो हमेशा सच्ची को झुठलाने वालों के सामने आती रही हैं। इसी कारण मैं आज रात को सोचता-सोचता अत्यंत चिंतित हो गया कि आप की हमदर्दी के लिए क्या करूँ। अन्त में मुझे मेरे दिल ने यही सलाह दी कि फिर आप की सेवा में सच्चाई की ओर बुलाने के लिए एक पत्र लिखूँ। क्या आश्चर्य कि इसी प्रकार से ख़ुदा तआला आप पर फ़ज़ल (कृपा) कर दे और इस भयानक स्थिति से मुक्ति प्रदान करे। अतः हे मेरे अज़ीज़ (प्रिय) आप ख़ुदा तआला की रहमत से निराश न हों। वह बड़ा सामर्थ्यवान है जो चाहता है करता है। यदि सत्याभिलाषी बन कर मेरी जीवनी पर दृष्टि डालेंगे तो आप पर अटल सबूतों से यह बात खुल सकती है कि ख़ुदा तआला हमेशा मुझे झूठ की अपवित्रता से सुरक्षित रखता रहा है। यहां

तक कि कभी अंग्रेजी अदालतों में मेरा प्राण और सम्मान ऐसे खतरे में पड़ गया कि किसी वकील ने मुझे झूठ बोलने के अतिरिक्त अन्य कोई सलाह (मशवरा) न दी, परन्तु खुदा तआला की तौफ़ीक से मैं सच के लिए अपने प्राण और सम्मान से पृथक् हो गया। कभी माल संबंधी मुकद्दमों में केवल सच के लिए मैंने बड़ी-बड़ी हानियां उठाईं और कभी केवल खुदा के भय से अपने पिता और अपने भाई के विरुद्ध गवाही दी और सच को हाथ से नहीं जाने दिया। इस गांव में तथा बटाला में भी मेरी एक उम्र गुज़र गयी है परन्तु कौन सिद्ध कर सकता है कि कभी मेरे मुंह से झूठ निकला है फिर जब मैंने केवल अल्लाह तआला के लिए इंसानों पर बोलना प्रारंभ से छोड़ रखा और अनेकों बार अपनी जान (प्राण) और माल को सच पर कुर्बान किया तो फिर मैं खुदा तआला पर क्यों झूठ बोलता।

यदि आप को यह विचार गुज़रे कि यह दावा खुदा की किताब (अर्थात् पवित्र कुर्आन) और सुन्नत के विरुद्ध है तो इसके उत्तर में बड़ी विनम्रता से कहता हूं कि आपके दिल में यह विचार केवल समझ की कमी के कारण है। यदि आप मौलवियों वाले लड़ाई-झगड़े को छोड़ कर कुछ दिन सत्यभिलाषी बन कर मेरे पास रहें तो मैं आशा रखता हूं कि खुदा तआला आप की समस्त गलतियों को दूर कर देगा और सन्तुष्ट कर देगा। यदि आप इस बात को भी सहन नहीं कर सकते तो आप जानते हैं कि अन्तिम इलाज आसमानी फैसला है। मुझे आपके बारे में संक्षिप्त तौर पर कुछ मालूम हुआ है यदि आप चाहें तो मैं कुछ दिन ध्यान लगा कर और विवरण पर खुदा के फ़जल से सूचना पाकर कुछ अखबारों में प्रकाशित कर दूँ।

इस को प्रकाशित करने के लिए आपके विशेष पत्र द्वारा मुझे अनुमति होनी चाहिए। मैं इस पत्र को केवल आप पर रहम करके लिखता हूं और कुछ लोगों की गवाहियां लिखकर आप के पास भेजता हूं अन्त में दुआ पर समाप्त करता हूं।

हे हमारे रब्ब! हमारे और हमारी क्रौम के बीच सच के साथ फैसला कर और तू ही फैसला करने वालों में से उत्तम फैसला करने वाला है। आमीन

लेखक, खाकसार- गुलाम अहमद, क़दियान ज़िला-गुरदासपुर

31, दिसम्बर 1892 ई.

हाशिए में लिखे गए गवाहों के नाम

(1) खुदा बख्श अतालीक़ (अर्थात् उस्ताद) नवाब साहिब (2) अब्दुल करीम सियालकोटी (3) क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन निवासी-कोट क़ाज़ी, ज़िला-गुजरांवाला (4) मौलवी नूरुद्दीन (5) मुहम्मद अहसन अमरोही (6) शादी ख़ान नौकर सर राजा अमर सिंह साहिब बहादुर (7) ज़फ़र अहमद कपूरथलवी (8) अब्दुल्लाह सिन्नौरी (9) अब्दुल अज़ीज़ देहलवी (10) अली गौहर ख़ान जालन्धरी (11) फ़ज़लुद्दीन हकीम भेरवी (12) हाफ़िज़ मुहम्मद साहिब पेशावरी (13) हकीम मुहम्मद अशरफ़ अली हाशिमि ख़तीब बटाला (14) अब्दुर्हमान भतीजा मौलवी नूरुद्दीन साहिब (15) मुहम्मद अकबर निवासी-बटाला (16) कुतुबुद्दीन निवासी बद्दोमल्ली।

इस ख़ाक़सार के उपरोक्त पत्र के उत्तर में जो शेख़ बटालवी साहिब का पत्र आया वह नीचे प्रत्युत्तर के साथ दर्ज किया जाता है परन्तु चूँकि वह प्रत्युत्तर जो इस ओर से बटालवी साहिब के पास भेजा गया है उसमें उनकी उन समस्त निरर्थक बातों और आरोपों का उत्तर नहीं है जो उनके पत्र में दर्ज हैं। और संभव है कि उनका पत्र पढ़ने वाले इन झूठे आरोपों से बेख़बर हों जो इस पत्र में धोखा देने के लिए लिखे हैं। इसलिए हमने उचित समझा कि उस पत्र को लिखने से पूर्व शेख़ साहिब के कुछ बनाए हुए झूठ, डींगों और आरोपों का उत्तर दें। अतः इसे उसका कथन और मेरा कथन के तौर पर उत्तर नीचे लिखा जाता है।★

उसका कथन- मैं कुर्आन और पहली पुस्तकों को इस्लाम धर्म तथा पहले धर्मों और अन्तिम युग के नबी एवं पहले नबियों को सच्चा जानता और मानता हूँ और उसकी अनिवार्यता और शर्त है कि आप को झूठा समझूँ।

मेरा कथन - शेख़ साहिब यदि आप कुर्आन को सच्चा जानते और नबी

★ जो पत्र बटालवी साहिब के पास भेजा गया था उसमें बात के लम्बे होने के डर से उनकी व्यर्थ बातों की उपेक्षा की गई थी। अब वह जो स्वयं उस पत्र को प्रकाशित करने के लिए तैयार हो गए तो उत्तर भी प्रकाशित करना पड़ा। (इसी से)

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी मानते तो मुझे काफ़िर न ठहराते। क्या पवित्र कुर्आन और हज़रत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा मानने के यही मायने हैं कि जो व्यक्ति अल्लाह और रसूल पर ईमान लाता है और क़िबल: की तरफ नमाज़ पढ़ता है और कलिमा तय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहता है और इस्लाम में स्पूर्ण निजात समझता और दिल एवं जान द्वारा अल्लाह और उसके रसूल के अनुसाराण में फ़िदा है। उसे आप काफ़िर बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर ठहराते हैं तथा उसके लिए हमेशा का नर्क (जहन्नम) ठहराते हैं। उस पर लानत भेजते हैं, उसे दज्जाल कहते हैं, उसे क़त्ल करना और उसके माल को चुराना सब वैध ठहराते हैं। रही इस ख़ाक़सार की वे बातें जिन्हें आप कुफ़्र की बातें ठहराते हैं उनका उत्तर इस पुस्तक में मौजूद है। हर एक न्यायप्रिय स्वयं पढ़ लेगा और आप की विद्वता, आप की ईमानदारी, आप की कुर्आन और हदीस की समझ उससे भली भांति प्रकट हो गई है अलग से लिखने की आवश्यकता नहीं।

उसका कथन- इस्लाम धर्म और पहले धर्मों की विरोधी झूठी आस्थाओं के अतिरिक्त, झूठ बोलना तथा धोखा देना आप की ऐसी अनिवार्य विशेषता बन गई है कि जैसे वह आप की आदत का एक हिस्सा है।

मेरा कथन- शेख़ साहिब जो व्यक्ति मुत्तक़ी (संयमी) तथा कुलीन हो। प्रथम तो वह साहस करके अपने भाई पर पूरी छान-बीन किए बिना किसी पाप और कुफ़्र का आरोप नहीं लगाता और यदि लगाए तो फिर ऐसा सबूत प्रस्तुत करता है कि जैसे देखने वालों के लिए दिन चढ़ा देता है। अतः यदि आप उपरोक्त ये दोनों विशेषताएं रखते हैं तो आपको उस महा प्रतापी शक्तिशाली ख़ुदा की क्रसम है जिसकी क्रसम देने पर हज़रत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ध्यानपूर्वक उत्तर देते थे कि अपने विचार के अनुसार यह दोनों प्रकार की मलिनता इस ख़ाक़सार में सिद्ध करके दिखा दें। अर्थात् प्रथम यह कि मैं इस्लाम धर्म का विरोधी और काफ़िर हूँ तथा दूसरे यह मेरा आचरण झूठ बोलना है। आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अपने स्वप्न में अधिक सच्चा वही

होता है जो अपनी बातों में अधिक सच्चा होता है। इस हदीस में आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सच्चे की यह निशानी बताई है कि उसके स्वप्नों पर सच का आधिपत्य होता है। और अभी आप दावा कर चुके हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता हूँ। यदि आप ने यह बात कपट से नहीं कही और आप वास्तव में आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान रखते हैं तथा जानते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कथन में सच्चे हैं तो आओ हम और तुम इस उपाय से एक दूसरे की परीक्षा कर लें कि इस कसौटी के अनुसार कौन सच्चा सिद्ध होता है तथा किस की प्रकृति (स्वभाव) में झूठ है और ऐसा ही अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में फ़रमाता है -

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا (यूनस- 10/65)

अर्थात् मोमिनों की यह एक विशेषता है कि दूसरों की अपेक्षा उनके स्वप्न सच्चे निकलते हैं और आप अभी दावा कर चुके हैं कि मैं कुर्आन पर भी ईमान लाता हूँ। बहुत उत्तम आओ पवित्र कुर्आन के अनुसार भी परीक्षा कर लें कि मोमिन होने की निशानी किस में है।

ये दोनों परीक्षाएं इस प्रकार से हो सकती हैं कि बटाला या लाहौर या अमृतसर में एक मज्लिस (सभा) आयोजित कर के दोनों सदस्यों के स्वप्नों के गवाह उन में उपस्थित हो जाएं और फिर जो व्यक्ति हम दोनों में से विश्वसनीय अटल सबूतों के द्वारा अपने स्वप्नों में अधिक सच्चा सिद्ध हो उसके विरोधी का नाम महा झूठा, दज्जाल, काफ़िर, महा काफ़िर और लानती या जो नाम प्रस्तावित हों उसी समय उसे यह मैडल (प्रतीक) पहनाया जाए। यदि आप पहले के सबूत से असमर्थ हों तो मैं स्वीकार करता हूँ बल्कि आप को छः माह का अवकाश देता हूँ कि आप कुछ अखबारों में अपने ऐसे स्वप्न दर्ज करा दें जो ग़ैब की बातों पर आधारित हों। और मैं न केवल इसी को पर्याप्त समझूंगा कि पहले का आपको सबूत दूँ बल्कि आपके मुकाबले पर भी यदि शक्तिशाली खुदा ने चाहा अपने स्वप्नों को दर्ज कराऊंगा और जैसा कि आपका दावा है कि मैं कुर्आन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता हूँ यही मेरा दावा है कि

मैं दिल-व-जान से उस प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उस प्यारी किताब पवित्र कुर्आन पर ईमान रखता हूँ। अब इस लक्षण से परीक्षा की जाएगी कि अपने दावे में सच्चा कौन है और झूठा कौन है। यदि मैं उस लक्षण के अनुसार जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र कुर्आन ने ठहरा दिया है, पराजित रहा तो फिर आप सच्चे रहेंगे और मैं आपके कथनानुसार काफ़िर, दज्जाल, बेईमान, शैतान, महा झूठा, और झूठ गढ़ने वाला ठहरूंगा और इस स्थिति में आप के वे समस्त दूषित विचार सही और सच्चे होंगे कि जैसे मैंने बराहीन अहमदिया में धोखा किया और लोगों का रुपया खाया तथा दुआ की स्वीकारिता के वादे पर लोगों का माल बरबाद किया और कृतघ्नता में जीवन व्यतीत किया, परन्तु यदि खुदा तआला की उस इनायत (कृपा) ने जो मोमिनों और सच्चों एवं सदाचारी लोगों के साथ होती है मुझे सच्चा कर दिया तो फिर आप बताएं कि ये सब नाम उस समय आपकी मौलवियों वाली प्रतिष्ठा के योग्य ठहरेंगे या उस समय भी आपके लिए बचने का कोई मार्ग शेष रह जाएगा। आप ने मुझे बहुत दुःख दिया और सताया। मैं सब्र करता गया परन्तु आपने उस सामर्थ्वान खुदा का लेशमात्र भय न किया जो आप की वास्तविकता से परिचित है। उसने मुझे बतौर भविष्यवाणी आप के बारे में और फिर आपकी विचारधारा रखने वाले लोगों के बारे में खबर दी कि **إِنِّي مُهَيِّئُ مَنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ** अर्थात् मैं उसको अपमानित करूंगा जो तुझे अपमानित करने की चिन्ता में है।

निश्चित समझो कि अब वह समय निकट है कि अल्लाह तआल उन समस्त आरोपों में आपका झूठा होना सिद्ध कर देगा और जो आरोप लगाने वालों तथा झूठे लोगों पर जो अपमान और शर्मिन्दगियां आती हैं उन समस्त अपमानों की मार आप पर डालेगा। आप का दावा है कि मैं कुर्आन और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता हूँ। अतः यदि आप बात में सच्चे हैं तो परीक्षा के लिए मैदान में आए ताकि खुदा तआला हमारा और तुम्हारा फैसला स्वयं करे और जो झूठा और दज्जाल है, का मुंह काला हो जाए तथा मेरे दिल से इस समय सच के समर्थन के लिए एक बात निकलती है जिसे मैं रोक नहीं

सकता क्योंकि वह मेरे से नहीं बल्कि मेरे रब्ब का इल्का है जो बड़े जोर से जोश मार रहा है और वह यह है कि जबकि आपने मुझे काफ़िर ठहराया और झूठ बोलना मेरी स्वभाविक विशेषता ठहराई तो अब आपको महाप्रतापी अल्लाह तआला की क्रसम है कि उपरोक्त पद्धति के अनुसार मेरे मुक्राबले पर तुरन्त आ जाओ ताकि देखा जाए कि पवित्र कुर्आन और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार कौन झूठा, दज्जाल और काफ़िर सिद्ध होता है और यदि इस तब्लीग़ के बाद हम दोनों में से कोई वचन भंग करने वाला रहा तथा अत्यन्त अतिशयोक्ति, काफ़िर कहने, झुठलाने और पापी कहने के बावजूद मैदान में न आया तथा गीदड़ की भांति दुम दबाकर भाग गया तो वह निम्नलिखित इनाम का अधिकारी होगा-

- (1) ला----- न ----- त
- (2) ला----- न ----- त
- (3) ला ----- न ----- त
- (4) ला ----- न -----त
- (5) ला ----- न -----त
- (6) ला ----- न -----त
- (7) ला ----- न -----त
- (8) ला ----- न ----- त
- (9) ला ----- न ----- त
- (10) ला ----- न -----त

ये पूरी दस हैं।

यह वह फैसला है जो खुदा तआला स्वयं कर देगा। क्योंकि उसका वादा है कि मोमिन बहरहाल विजयी रहेगा। जैसा कि वह स्वयं फ़रमाता है -

(अन्सि-4/142) لَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤٢﴾

अनुवाद - ऐसा कदापि नहीं होगा कि काफ़िर मोमिन पर राह प्राप्त करे।

अतः फ़रमाता है:

(अलअन्फाल-30) **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا**
(अलहदीद-29) **وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ**

अर्थात् हे मोमिनो! यदि तुम मुत्तक्री बन जाओ तो तुम में और तुम्हारे ग़ैर में ख़ुदा तआला एक अन्तर रख देगा। वह अन्तर क्या है कि तुम्हें एक प्रकाश (नूर) प्रदान किया जाएगा जो तुम्हारे ग़ैर (अतिरिक्त) में कदापि नहीं पाया जाएगा अर्थात् इल्हाम और दुआ की स्वीकारिता तथा स्पष्ट चमत्कारों का प्रकाश (नूर)।

अतः स्पष्ट है कि जिस ने झूठ को भी नहीं छोड़ा वह ख़ुदा तआला के आगे कैसे मुत्तक्री (संयमी) हो सकता है और उस से चमत्कार कैसे जारी हो सकते हैं। सारांश यह कि इस पद्धति से हम दोनों की गुप्त वास्तविकता खुल जाएगी और लोग देख लेंगे कि कौन मैदान में आता है और कौन पवित्र आयत के अनुसार **لَهُمُ الْبُشْرَى** और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस **اصدثكم حديثاً** के सच्चा सिद्ध होता है। इस के साथ एक और बात भी सच्चों को परखने का माध्यम है जिसे ख़ुदा तआला स्वयं ही पैदा करता है और वह यह है कि कभी मनुष्य किसी ऐसी विपत्ति में ग्रस्त हो जाता है कि उस समय झूठ के अतिरिक्त छुटकारे तथा सफलता का अन्य कोई बहाना (उपाय) उसे दिखाई नहीं देता तब उस समय वह आजमाया जाता है कि क्या उसके स्वभाव में सच है या झूठ तथा क्या उस संवेदनशील समय में उसकी ज़बान पर सच जारी होता है या अपनी जान, सम्मान और माल का भय करके झूठ बोलने लगता है। इस प्रकार के उदाहरण इस ख़ाकसार के सामने कई बार आए हैं जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन करना समय चाहता है, यद्यपि तीन उदाहरण इस उद्देश्य से प्रस्तुत करता हूं कि यदि आपको उनके बराबर भी कभी सच्चाई को परखने के अवसर प्राप्त हुए हैं तो आपको अल्लाह तआला की क़सम है तो आप उनको सबूत के साथ ज़रूरी प्रकाशित करें ताकि ज्ञात हो कि आप का केवल दावा नहीं बल्कि परीक्षा और विपत्ति की गिरफ्त में आकर भी आप ने सच को नहीं तोड़ा। उन सब में से एक यह घटना है कि मेरे पिता श्री (वालिद साहिब) के स्वर्गवास के बाद मिर्जा आजम

बेग साहिब लाहौरी ने क़ादियान की जायदाद में भागीदार होने का मुझ पर तथा मेरे स्वर्गीय भाई गुलाम क़ादिर पर गुरदासपुर की अदालत में जायदाद में हिस्सेदारी का मुकद्दमा दायर कर दिया और मैं प्रत्यक्षतः जानता था कि उन भागीदारों को जायदाद से कुछ मतलब नहीं क्योंकि वह एक खोई हुई चीज़ थी जो सिखों के समय में समाप्त हो चुकी थी और मेरे पिता श्री ने अकेले ही मुकद्दमे करके उस जायदाद तथा अन्य देहात को फिर से पाने के लिए आठ हजार रुपए के लगभग खर्च और हानि सहन की थी, जिसमें वे लोग एक पैसे के भी भागीदार नहीं थे। अतः उन मुकद्दमों के दौरान जब मैंने विजय के लिए दुआ की तो यह इल्हाम हुआ कि- **أَجِيبْ كُلَّ دُعَائِكَ إِلَّا فِي شُرِّ كَائِكَ** अर्थात् मैं तेरी हर एक दुआ स्वीकार करूंगा परन्तु भागीदारों के बारे में नहीं। मैंने इस इल्हाम को पाकर अपने भाई और सब स्त्री, पुरुष और परिजनों को एकत्र किया। उनमें से कुछ अब तक जीवित हैं। स्पष्ट तौर पर कह दिया कि भागीदारों के साथ मुकद्दमा मत करो। यह ख़ुदा की इच्छा के विरुद्ध है परन्तु उन्होंने स्वीकार न किया और अन्त में असफल हुए, किन्तु मेरी ओर से हजारों रुपया की हानि उठाने के लिए दृढ़ता प्रकट हुई। इसके वे सब जो अब दुश्मन हैं गवाह हैं। चूंकि ज़मींदारी का समस्त कारोबार मेरे भाई के हाथ में था, इसलिए मैंने उनको बार-बार समझाया परन्तु उन्होंने न माना और अन्ततः हानि उठाई।

उन सब में से यह एक घटना है कि संभवतः पन्द्रह या सोलह वर्ष का समय गुज़रा होगा या शायद इस से कुछ अधिक हो कि इस ख़ाकसार ने इस्लाम की सहायता में आर्यों के मुकाबले पर एक ईसाई के प्रेस में जिसका नाम रलियाराम था और वह वकील भी था तथा अमृतसर में रहता था और उसका एक अखबार भी निकलता था। एक लेख प्रकाशित करने के लिए एक पैकेट के रूप में जिसकी दोनों तरफें खुली हुई थीं, भेजा। उस पैकेट में एक पत्र भी रख दिया। चूंकि पत्र में ऐसे शब्द थे जिनमें इस्लाम की सहायता और दूसरे धर्मों के खण्डन की ओर संकेत था। लेख को प्रकाशित कर देने के लिए भी आग्रह भी किया था। इसलिए वह ईसाई धार्मिक विरोध के कारण क्रोध से उत्तेजित हुआ तथा संयोग से उसे

शत्रुतापूर्ण प्रहार के लिए यह अवसर मिला कि किसी पृथक पत्र का पैकेट में रखना कानून की दृष्टि से अपराध था जिसका इस खाकसार को कुछ भी ज्ञान न था, और ऐसे अपराध के दण्ड में डाक के कानूनों के अनुसार पांच सौ रुपए जुर्माना या छः माह तक की कैद है। उसने मुखबिर बनकर डाक अधिकारियों से इस खाकसार पर मुकद्दमा दायर करा दिया तथा इस से पूर्व कि मुझे इस मुकद्दमे की कुछ सूचना हो स्वप्न में अल्लाह तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि रलियाराम वकील ने एक सांप मेरे काटने के लिए मेरे पास भेजा है और मैंने उसे मछली की तरह तल कर वापस भेज दिया है। मैं जानता हूं कि यह इस बात की ओर संकेत था कि अन्ततः वह मुकद्दमा जिस ढंग से अदालत में फैसला पाया वह एक ऐसा उदाहरण है जो वकीलों के काम आ सकता है। निष्कर्ष यह कि मैं इस अपराध में गुरदासपुर जिला अदालत में बुलाया गया और जिन-जिन वकीलों से मुकद्दमे के लिए मशवरा लिया गया उन्होंने यही मशवरा दिया कि झूठ के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं और यह सलाह दी कि इस प्रकार बयान दे दो कि हम ने पैकेट में पत्र नहीं डाला, रलियाराम ने स्वयं डाल दिया होगा और तसल्ली देने के लिए कहा कि ऐसा बयान करने से गवाही पर फैसला हो जाएगा और दो झूठे गवाह देकर बरीयत हो जाएगी अन्यथा मुकद्दमे की स्थिति बहुत कठिन है छुटकारे का अन्य कोई उपाय नहीं। परन्तु मैंने उन सब को उत्तर दिया कि मैं किसी स्थिति में सच को छोड़ना नहीं चाहता जो होगा वह होगा। तब उसी दिन या दूसरे दिन मुझे एक अंग्रेज की अदालत में प्रस्तुत किया गया और मेरे मुकाबले पर डाक विभाग का अफसर सरकारी मुद्दई की हैसियत से उपस्थित हुआ। उस समय अदालत के जज ने अपने हाथ से मेरा बयान लिखा और सर्वप्रथम उसने यही प्रश्न किया कि क्या यह पत्र तुम ने अपने पैकेट में रख दिया था यह पत्र और यह पैकेट तुम्हारा है। तब मैंने अविलम्ब उत्तर दिया कि यह मेरा ही पत्र और मेरा ही पैकेट है तथा मैंने इस पत्र को पैकेट के अन्दर रख कर रवाना किया था। परन्तु मैंने टैक्स की हानि पहुंचाने के लिए यह कार्य बुरी नीयत से नहीं किया बल्कि मैंने इस पत्र को इस लेख से कुछ अलग नहीं

समझा और न इसमें कोई निजी बात थी। इस बात को सुनते ही ख़ुदा तआला ने उस अंग्रेज़ के दिल को मेरी ओर फेर दिया और मेरे मुक़ाबले पर डाक-विभाग के अफसर ने बहुत शोर मचाया और अंग्रेज़ी में लम्बे-लम्बे भाषण दिए जिनको मैं नहीं समझता था, किन्तु इतना समझता था कि प्रत्येक भाषण के बाद वह जज अंग्रेज़ी भाषा में नो-नो करके उसकी सब बातों को अस्वीकार कर देता था। अन्ततः जब वह मुद्दई अफसर अपने समस्त कारण कर चुका और अपनी समस्त भड़ास निकाल चुका तो जज ने फैसला लिखने की ओर ध्यान दिया और शायद एक-डेढ़ पंक्ति लिख कर मुझे से कहा कि अच्छा आप के लिए विदाई। यह सुनकर मैं अदालत के कमरे से बाहर हुआ और अपने वास्तविक उपकारी का धन्यवाद किया जिसने एक अंग्रेज़ अफसर के मुक़ाबले पर मुझे ही विजय प्रदान की। और मैं भली भाँति जानता हूँ कि उस समय सच की बरकत से ख़ुदा तआला ने उस विपत्ति से मुझे मुक्ति दी। मैंने इस से पहले यह स्वप्न भी देखा था कि एक व्यक्ति ने मेरी टोपी उतारने के लिए हाथ मारा, मैंने कहा क्या करने लगा है। तब उसने टोपी को मेरे सिर पर ही रहने दिया और कहा कि ख़ैर है, ख़ैर है।

उनमें से एक उदाहरण यह है कि मेरे बेटे सुलतान अहमद ने एक हिन्दू पर इस आधार पर नालिश की कि उसने हमारी ज़मीन पर मकान बना लिया है, मकान को गिराने का यह दावा था मुक़द्दमे के क्रम में एक बात घटना के विरुद्ध थी जिसके सबूत से वह मुक़द्दमा डिस्मिस होने के योग्य ठहरता था और मुक़द्दमे के डिस्मिस होने की स्थिति में न केवल सुलतान अहमद को बल्कि मुझे भी जायदाद नष्ट होने की हानि उठानी पड़ती थी। तब विरोधी सदस्य ने अवसर पाकर मेरी गवाही लिखा दी और मैं बटाला गया तथा बाबू फ़तुद्दीन सब पोस्टमास्टर के मकान पर जो बटाला-तहसील के पास है जा ठहरा। मुक़द्दमा एक हिन्दू जज के पास था, जिसका नाम याद नहीं रहा, परन्तु वह एक पांव से लंगड़ा भी था। उस समय सुलतान अहमद का वकील मेरे पास आया कि अब मुक़द्दमे की पेशी का समय है क्या आप बयान देंगे? मैंने कहा वह बयान दूंगा जो सही और सच बात है। तब उसने कहा फिर आपको कचहरी जाने की

क्या आवश्यकता है, मैं जाता हूँ ताकि मुकद्दमे से अलग हो जाऊँ। अतः वह मुकद्दमा मैंने अपने हाथों से केवल सच को दृष्टिगत रखते हुए स्वयं खराब किया और सच बोलने को **إِبْتِغَاءَ لِمَرْضَاتِ اللَّهِ** (खुदा की प्रसन्नता के लिए) प्राथमिकता दी। आर्थिक हानि को तुच्छ समझा। ये अन्तिम दो उदाहरण भी बिना सबूत नहीं। पहली घटना का गवाह शेख अली अहमद वकील गुरदासपुर तथा सरदार मुहम्मद हयात खान साहिब सी.ए.स.आई हैं। मुकद्दमे की मिस्ल गुरदासपुर के दफ्तर में मौजूद होगी। और दूसरी घटना का गवाह बाबू फ़तुद्दीन और स्वयं वकील जिसका इस समय मुझे नाम याद नहीं और वह न्यायकर्ता जिसकी चर्चा कर चुका हूँ जो अब शायद लुधियाना में चला गया है, संभवतः इस मुकद्दमे को सात वर्ष बीत गए होंगे, हाँ याद आया इस मुकद्दमे का एक गवाह बटाला का पटवारी नबी बख्श भी है।

अब हे हज़रत शेख साहिब! यदि आप के पास भी इस श्रेणी की विपत्ति (परीक्षा) का कोई उदाहरण हो जिसमें आपकी जान, सम्मान, धन और सच बोलने की हालत में आपको बरबाद होता दिखाई दिया हो और आपने सच को न छोड़ा हो तथा माल और जान की कुछ परवाह न की हो तो खुदा के लिए अपनी वह घटना उसके पूर्ण सबूत के साथ प्रस्तुत की जाए, अन्यथा मेरा तो यह विश्वास है कि इस युग के अधिकतर मुल्ला और मौलवियों की बातें ही बातें हैं अन्यथा एक पैसे पर ईमान बेचने को तैयार हैं। क्योंकि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्तिम युग के मौलवियों को बहुत बुरी मख़लूक बताया है और आप के मुजद्दि साहिब **नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान** (स्वर्गीय) 'हुज्जुल किराम:' में स्वीकार कर चुके हैं कि वह अन्तिम युग यही युग है। अतः ऐसे मौलवियों का संयम और तक्रवा बिना सबूत स्वीकार करने से आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन का झूठा होना अनिवार्य आता है। अतः आप उदाहरण प्रस्तुत करें और यह प्रस्तुत न कर सकें तो सिद्ध होगा कि आपके पास केवल सच बोलने का दावा है, किन्तु कोई दावा बिना परीक्षा के स्वीकार करने योग्य नहीं। आप का आन्तरिक हाल खुदा तआला को मालूम

होगा कि आप कभी झूठ और झूठ गढ़ने की गंदगी से दूषित हुए या नहीं या आपको मालूम होगा जो आप की हालतों से परिचित होंगे। जो व्यक्ति परीक्षा के समय सच्चा निकलता है और सच को नहीं छोड़ता उसके सच पर मुहर लग जाती है। यदि यह मुहर आपके पास है तो प्रस्तुत करें अन्यथा खुदा तआला से डरें। ऐसा न हो कि वह आप को बेनकाब करे।

आपकी इन निरर्थक और ईर्ष्यापूर्ण बातों से मुझे क्या हानि पहुंच सकती है जो आप लिखते हैं कि तुम मुख्तारी और मुकद्दमेबाज़ी का काम करते रहे हो। आप इन झूठ गढ़ने से रुक जाएं। आप भली भांति जानते हैं कि यह खाकसार इन व्यवसायों में कभी नहीं पड़ा कि दूसरों के मुकद्दमें अदालतों में करता फिरे। हां पिता श्री (वालिद साहिब) के समय में अधिकांश वकीलों के माध्यम से अपनी ज़मींदारी के मुकद्दमे हुए थे और कभी आवश्यकतानुसार मुझे स्वयं भी जाना पड़ता था, किन्तु आप का यह विचार कि वे झूठे मुकद्दमें होंगे एक शैतानियत की दुर्गन्ध से भरा हुआ है। क्या हर एक मुकद्दमा करने वाला ज़रूरी झूठा मुकद्दमा करता है या ज़रूरी झूठ ही कहता है।

हे टेढ़ा स्वाभाव रखने वाले शेख! खुदा जाने तेरी किस हालत में मृत्यु होगी। क्या जो व्यक्ति अपने अधिकारों की रक्षा के लिए या अपने अधिकारों को मांगने के लिए अदालत में मुकद्दमा करता है उसे ज़रूरी झूठ बोलना पड़ता है? कदापि नहीं, बल्कि जिसे खुदा तआला ने सच की शक्ति प्रदान की हो और सच से प्रेम करता हो वह स्वाभाविक तौर पर झूठ से नफ़रत करता है। और जब कोई सांसारिक लाभ झूठ बोलने पर ही निर्भर हो तो उस लाभ को छोड़ देता है परन्तु अफ़सोस कि गंदगी खाने वाला इन्सान प्रत्येक इन्सान को गन्दगी खाने वाला ही समझता है। झूठ बोलने वाले हमेशा कहा करते हैं कि झूठ बोले बिना अदालतों में मुकद्दमा नहीं कर सकते। अतः उनका यह कहना उस हालत में सच्चा है कि जब एक मुकद्दमाबाज़ किसी हालत में अपनी हानि को सहन करने वाला न हो और अकारण हर एक मुकद्दमे में सफल होना चाहे। परन्तु जो व्यक्ति सच को बहर हाल प्राथमिकता दे वह ऐसा क्यों करेगा। जब किसी ने अपनी हानि सहन

कर ली तो फिर वह क्यों झूठ का मुहताज होगा।

अब यह भी स्पष्ट रहे कि यह भी सच है स्वर्गीय पिती श्री के समय में मुझे अपने ज़मींदारी के कुछ मामलों में हक़दार होने के लिए अदालतों में जाना पड़ता था, परन्तु पिता श्री के मुक़द्दमें केवल इस प्रकार के थे कि कुछ किसान जो अपने ज़िम्मे कुछ शेष रख लेते थे या बिना आज्ञा कोई पेड़ काट लेते थे या जब कुछ देहात के नम्बरदारों से तअल्लुका का स्वामी होने के अधिकार अदालत द्वारा वसूल करने पड़ते थे, और वे सब मुक़द्दमें इस उत्तम व्यवस्था के कारण कि मुहासिब देहात अर्थात् प्रायः उनमें पटवारी की गवाही पर्याप्त होती थी जटिल नहीं होते थे और झूठ का उनसे कुछ संबंध न था, क्योंकि सरकारी लेखों पर फैसला होता था। चूंकि उस युग में भूमि की क्रद्र नहीं थी, इसलिए ज़मींदारी में हमेशा घाटा उठाना पड़ता और कभी किसानों के कम मुक़द्दमों के मुक्राबले पर स्वयं घाटा सहन करके रियायत करनी पड़ती। बुद्धिमान लोग जानते हैं कि एक ईमानदार ज़मींदार अपने किसानों से ऐसा व्यवहार कर सकता है पूर्ण संयमी और मुत्तक़ी हैसियत से हो तथा ज़मींदारी एवं सदाचार में कोई भिन्नता नहीं। इसके बावजूद कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि पिता श्री के स्वर्गवास के बाद मैंने कभी इस पत्र के मुक़द्दमे के अतिरिक्त जिसका वर्णन कर चुका हूं कोई मुक़द्दमा किया हो। यदि मैं मुक़द्दमा करने से स्वाभाविक तौर पर घृणा करने वाला न होता मैं पिता श्री के स्वर्गवास के बाद जो पन्द्रह वर्ष का समय गुज़र गया आज़ादी से मुक़द्दमे किया करता। और फिर यह भी याद रहे कि इन मुक़द्दमों को महाजनों के मुक़द्दमों की तरह समझना मूर्खों का काम है। मैं इस बात को गुप्त नहीं रख सकता कि कई पीढ़ियों से मेरे ख़ानदान में ज़मींदारी चली आती है और अब भी है तथा ज़मींदार को कभी मुक़द्दमे की आवश्यकता पड़ जाती है। परन्तु यह बात एक न्यायप्रिय व्यक्ति की दृष्टि में हानि का स्थान नहीं ठहर सकती। हदीसों को पढ़ें कि वह अन्तिम युग में आने वाला और उस युग में आने वाला कि जब कुरैश से बादशाही जाती रहेगी तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल (नस्ल) एक फूट और परेशानी में पड़ी हुई होगी,

जमींदार ही होगा। और मुझे खुदा तआला ने खबर दी है कि वह मैं हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों में साफ लिखा है कि अन्तिम युग में धर्म का एक सहायक पैदा होगा उसका यह लक्षण होगा कि वह हारिस होगा अर्थात् जमींदार होगा। इस स्थान पर आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि प्रत्येक मुसलमान को चाहिए कि उसे स्वीकार कर ले तथा उसकी सहायता करे। अतः विचार करो कि जमींदार होना तो मेरी सच्चाई का एक लक्षण है न कि हानि का स्थान नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से स्वीकार करने का आदेश है न कि अस्वीकार करने का।

चश्म बद अंदेश कि बर कन्दा बाद
ऐब नुमायद हुनरिश दर नजर

(अनुवाद- बुरा चाहने वाले की दृष्टि नष्ट हो जाए जिसे हुनर और फ़न (कला) भी दोष दिखाई देता है।)

हां आपके पिता श्री मुकद्दमेबाजी हानि का स्थान हो तो कुछ आश्चर्य नहीं क्योंकि आप जानते हैं कि अंग्रेजी शासन में अधिकतर ब्याज खाने वालों की मुख्तारी में उन की उम्र गुजरी और जिस प्रकार बन पड़ा उन्होंने कुछ लोगों के मुकद्दमें मजदूरी पर लिए यद्यपि वह कानूनी तौर पर न मुख्तार न वकील बल्कि फेल किए हुए भी नहीं थे परन्तु पेट भरने के लिए सब कुछ किया। यह खाकसार तो अपनी जमींदारी के मुकद्दमों के अतिरिक्त जिन में अधिकतर आप के पिता श्री जैसे बल्कि सम्मान और प्रतिभा उनसे बढ़कर मुख्तार भी किए हुए थे। अन्यो के मुकद्दमों से कभी कोई मतलब नहीं रखता था और मुझको याद है बल्कि आपको भी याद होगा कि एक बार आपके पिता श्री ने भी बटाला में हजरत मिर्जा साहिब (स्वर्गीय) की सेवा में अपनी इच्छा व्यक्त की थी कि मुझे कुछ मुकद्दमों के लिए नौकर रखा जाए ताकि बतौर मुख्तार अदालतों में जाऊं। परन्तु चूंकि जमींदारी के मुकद्दमों की पैरवी करने की उनमें योग्यता नहीं थी इसलिए विवशता व्यक्त की थी।

उसका कथन - आप ने इल्हामी बेटा पैदा होने की भविष्यवाणी की अर्थात्

झूठ बोला।

मेरा कथन- आप अपनी नीचता से नहीं रुकते। खुदा जाने आप किस खमीर के हैं। उस भविष्यवाणी में कौन सी झूठी बात निकली। यदि आप का मतलब यह है कि भविष्यवाणी के बाद एक लड़का पैदा हुआ और मर गया तो क्या आप यह सबूत दे सकते हैं कि किसी इल्हाम में यह विषय दर्ज था कि वह मौऊद (वादा दिया गया) लड़का वही है यदि दे सकते हैं तो वह इल्हाम प्रस्तुत करें। याद रहे कि ऐसा कोई इल्हाम नहीं। हां यदि मैंने अपने विवेक से कहा हो कि शायद यह लड़का वही मौऊद लड़का है तो क्या इस से यह सिद्ध हो जाएगा कि इल्हाम ग़लत निकला। आपको ज्ञात नहीं कि कभी मुल्हम अपने इल्हाम में इज्तिहाद (अपने विवेक से काम लेना) भी करता है और कभी वह विवेक ग़लत भी हो जाता है, परन्तु इस से इल्हाम का महत्त्व और प्रतिष्ठा में कुछ अन्तर नहीं आता। सैकड़ों बार प्रत्येक को ऐसा संयोग होता है कि एक स्वप्न तो सच्चा होता है परन्तु ताबीर (स्वप्नफल) में ग़लती हो जाती है। यह हिदायत और यह मारिफ़त का रहस्य तो विशेषतः पवित्र कुर्आन में वर्णन किया गया है, परन्तु उनके लिए जो आंखें रखते हैं। मैं डरता हूँ कि आज तो आप ने मुझ पर ऐतराज़ किया कभी ऐसा न हो कि कल रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ऐतराज़ कर दें और कहें कि आंजनाब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस वह्यी के सत्यापन के लिए अर्थात् तवाफ़्र* के उद्देश्य से दो सौ कौस की यात्रा की थी वह तवाफ़्र उस वर्ष न हो सका और समझने में ग़लती हुई। अफ़सोस कि द्वेष की अधिकता से **فذهب وهلى** की हदीस भी आपको भूल गई। मुझे तो आप के अंजाम की चिन्ता लगी हुई है। देखें कहां तक नौबत पहुंचती है।

और लड़के की भविष्यवाणी तो सच्ची है ज़रूरी पूरी होगी और आप जैसे इन्कार करने वालों को खुदा तआला अपमानित करेगा। हे सच्चाई के दुश्मन! जबकि समस्त भविष्यवाणियों के सामूहिक शब्द ये हैं कि कुछ लड़के मृत्यु को

*तवाफ़्र - इस्लामी परिभाषा में पवित्र काबा की परिक्रमा को कहते हैं जो मक्का में है।
(अनुवादक)

भी प्राप्त होंगे और एक लड़का खुदा तआला से हिदायत में पराकाष्ठा पाएगा तो फिर आप का ऐतराज इस बात पर खुला-खुला तर्क है कि अब आप का अन्तःकरण विकृत हो चुका है। आप ने यह तो यहूदियों के उलेमा का चित्रण कर दिया। अब आगे देखें क्या होता है।

उसका कथन - इस से प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि जो व्यक्ति लोगों पर झूठ बोलने में निडर हो सकता है वह खुदा पर झूठ बोलने से कैसे रुक सकता है?

मेरा कथन - इन बातों से सिद्ध होता है कि आप का स्वभाव उन आरोपों से खाली नहीं जिन के आप के पिता श्री जिनके कुछ पत्र आपके स्वभाव तथा आप की प्रशंसनीय विशेषताओं के वादे में मेरे पास भी शायद किसी बस्ते में पड़े होंगे अपनी ज़बान से स्वयं प्रसिद्ध कर गए हैं। ★ हे भाग्यशाली! प्रथम सिद्ध तो क्या होता कि अमुक, अमुक व्यक्ति के सामने इस खाकसार ने कभी झूठ बोला था। अपने सच की अनिवार्यता की जो मैंने साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं उनके समक्ष कोई उदाहरण तो प्रस्तुत करो। ताकि आप का मुंह इस योग्य ठहरे कि आप उस व्यक्ति की आलोचना कर सको जो कठिन परीक्षा के समय सच्चा निकला। और सच को हाथ से न छोड़ा। मैं चकित हूँ कि आपके सिर पर कौन सा जिन्न सवार है जो आप के दोषों को बेनकाब कर रहा है।

अन्त में आप को स्मरण रहे कि आप का यह सर्वथा बनाया हुआ झूठ है कि **إلهام كلب يموت على كلب** को अपने ऊपर ला रहे हैं मैंने किसी

★नोट- आपको इस खाकसार के वे उपकार भूल गए जबकि मैं आपके पिता श्री को आप के दोषों को बेनकाब करने से रोकता रहा। आप भली भाँति जानते हैं कि मैंने उस सच्चे आरोप को कभी पसन्द नहीं किया जो आपके पिता श्री आपके बारे में अखबारों में प्रकाशित कराना चाहते थे और मैं आप के दोषों पर पर्दा डालने और स्वभाव की पवित्रता का हमेशा सहायक रहा तथा उन्हें रोकता रहा। परन्तु मेरे उपकार का आप ने यह बदला दिया कि मैंने तो सच्चे आरोपों से आपको बचाया, परन्तु आपने अपने मुबारक स्वभाव की माँग के अनुसार झूठ बोलने का आरोप मुझ पर लगा दिया। अब मुझे विश्वास हुआ कि आप के पिता श्री निस्सन्देह सच्चे थे। इसी से।

से हरगिज़ यह नहीं कहा कि इस के सत्यापनकर्ता आप हैं, और आप जो कुछ कठोर शब्दों की शिकायत करते हैं यह भी अनुचित है। आप की सख्त गालियों के उत्तर में आपके द्वारा काफ़िर ठहराने के बाद, आपके द्वारा दज्जाल, शैतान और कज़़ाब कहने के बाद यदि हम ने आप की वर्तमान स्थिति के अनुसार आप को कुछ सच-सच कह दिया तो क्या बुरा किया। अतः **وَاعْلُظْ عَلَيْهِمْ** (अत्तहरीम-66/10) का भी तो एक समय है।

आप का यह विचार कि जैसे यह खाकसार बराहीन अहमदिया के विक्रय में लोगों से दस हजार रुपया लेकर खा गया है। आपको यह उस शैतान ने पाठ पढ़ाया है जो हर समय आप के साथ रहता है। आपको कैसे ज्ञात हो गया कि मेरी नीयत में बराहीन अहमदिया का छापना नहीं। यदि बराहीन प्रकाशित होकर प्रसारित हो गई तो क्या उस दिन शर्म की मांग नहीं होगी कि आप डूब मरें। हर एक विलम्ब (देर) कुधारणा पर आधारित नहीं हो सकती। और मैंने तो विज्ञापन भी दे दिया था कि प्रत्येक जल्दबाज़ अपना रुपया वापस ले सकता है। बहुत सा रुपया वापस भी कर दिया। पवित्र कुर्आन जिस की खुदा की प्रजा को बहुत आवश्यकता थी और जो लोह महफूज़ (सुरक्षित) में सदैव से जमा था। तेईस वर्ष में उतरा। आप जैसे कुधारणाओं के मारे हुए लोग ऐतराज़ करते रहे कि -

لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً (अलफ़ुर्क़ान-25/33)

उसका कथन- आप ने जिस समय से मसीह मौऊद होने का दावा प्रसिद्ध किया है उस दिन से आप का कोई भाषण, कोई पत्र, कोई पुस्तक झूठ से खाली नहीं।

मेरा कथन- हे नामः सियाह (जिसका कर्म पत्र (आमाल नामः) बिल्कुल काला हो)। इस बेफ़ायदा झूठ के उत्तर में क्या कहूं और क्या लिखूं। खुदा तआला तुझे स्वयं ही उत्तर दे कि अब तू सीमा से बाहर निकल गया। हे **अभागो इन्सान!** तू इन झूठे आरोपों के साथ कब तक जीवित रहेगा, कब तक तू इस लड़ाई में जो खुदा तआला से लड़ रहा है, मौत से बचता रहेगा। यदि तूने मुझे या किसी ने अंधेपन से झूठ बोलने वाला समझा तो यह कुछ नई बात नहीं, आप

के समान स्वभाव वाले अबू जहल और अबू लहब भी खुदा तआला के सच्चे नबी को झूठा जानते थे। मनुष्य जब द्वेष की अधिकता के कारण अन्धा हो जाता है तो सच्चे की प्रत्येक बात उसे झूठी ही मालूम होती है। परन्तु खुदा तआला सच्चे का अंजाम शुभ (अच्छा) करता है और झूठे के अस्तित्व को मिटा देता है।

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ (अन्नहल-16/129)

उसका कथन- (आप ने) बहस से पलायन करके अनेक प्रकार के लांछन और झूठी तथा सारहीन बातों का विज्ञापन दे दिया।

मेरा कथन- ये आप के सब झूठ बेफायदा हैं जो आपकी प्रकृति की मांग के कारण बिना सोचे समझे आप के मुंह से निकल रहे हैं अन्यथा जो लोग मेरे और आपके लेखों को ध्यान पूर्वक देखते हैं वे स्वयं फैसला कर सकते हैं कि क्या ये झूठे और पलायन इस खाकसार की विशेषता है या स्वयं आप ही की यदि आप चालाकी की बातें न करें तो और कौन करे। एक तो कानून बघारने वाले शेख हुए, दूसरे चार अक्षर पढ़ने का मस्तिष्क में कीड़ा। किन्तु अच्छी तरह स्मरण रखो वह दिन आता है कि स्वयं खुदा तआला प्रकट कर देगा कि हम दोनों में से कौन झूठा और झूठ गढ़ने वाला तथा खुदा तआला की दृष्टि में दयालु अपमानित एवं बदनाम है और खुदा तआला आकाशीय सहायताओं से किस का सम्मान प्रकट करता है। थोड़ा सब्र करो और अंजाम (परिणाम) को देखो।

उसका कथन- आप में रहमत (दया) और हमदर्दी का थोड़ा सा भी प्रभाव होता तो जिस समय मैंने आपके मसीह होने के दावे पर अपना विरोध जताया था आप तुरन्त मुझे अपने पास बुलाते या मेरे घर पर आते।

मेरा कथन- हे हज़रत! आप को आने से किस ने मना किया था, या मेरी डयोढ़ी पर चौकीदार थे, जिन्होंने अन्दर आने से रोक दिया? क्या इससे पूर्व आप पूछ-पूछ कर आया करते थे। आपके तो पिता श्री भी बीमारी और ज्वर की हालत में भी बटाला से गिरते-पड़ते मेरे पास आ जाते थे फिर आपके सामने नई रोक कौन सी आ गई थी, और जबकि आप अपनी निजी कंजूसी निजी ईर्ष्या और शेख नजदी के गुणों, घमंड और अहंकार को किसी हालत में छोड़ने वाले नहीं थे तो

मैं आपको अपने मकान पर बुला कर क्या हमदर्दी और रहमत करता। हां मैंने आपके मकान पर भी जाना हित के विरुद्ध समझा। क्योंकि मैंने आपके स्वभाव में अभिमान और अहंकार का माद्दः ज्ञात कर लिया था और मेरे नज़दीक यह बात समय के अनुसार थी आप को एक रेचक★ (मुस्लिम) दिया जाए और जहां तक हो सके आपके अन्दर से वह माद्दः (तत्त्व) सफ़ाई के साथ निकाल दिया जाए अतः अब तक कुछ कमी प्रतीत नहीं होती ख़ुदा जाने किस ग़ज़ब का तत्त्व आप के पेट में भरा हुआ है। ख़ुदा तआला जानता है कि मैंने आप की गालियों पर बहुत सब्र किया। बहुत सताया गया और आप को रोका गया और अब पापी कहने पर बहर हाल सब्र कर सकता हूं, परन्तु कभी आप की गाली-गलौज के मुकाबले में केवल इस नीयत से कठोर शब्दों की शैली अपनाता हूं ताकि वह दूषित माद्दः (तत्त्व) जो मौलवियत की ग़लत कल्पना से आपके दिल में जमा हुआ है और जिन्न की भांति आप को चिपटा हुआ है वह पूर्णतया निकल जाए। मैं सच-सच कहता हूं और ख़ुदा तआला जानता है कि मैं विवेक के तौर पर यह विश्वास रखता हूं कि आप केवल मरे हुए बाप-दादों के नाम पर सम्मान चाहते हैं और ज्ञान, दिरायत* और फ़िक्रः के ज्ञान (और बुद्धिमत्ता) से सर्वथा अनभिज्ञ, मूर्ख तथा कुंठित बुद्धि व्यक्ति हैं, जिनको वास्तविकताओं तथा मआरिफ़ के कूचे की तरफ़ लेशमात्र भी गुज़र नहीं। और इसके साथ यह विपत्ति भी लगी हुई है कि अकारण अभिमान तथा अहंकार ने आप को तबाह ही कर दिया है। जब तक आप को अपनी इस मूर्खता का ज्ञान न हो और मस्तिष्क से अहंकार का कीड़ा न निकले, तब तक आप न कोई संसार की नेकी प्राप्त कर सकते हैं न धर्म की। आपका बड़ा मित्र वह जो इस प्रयास में लगा रहे जो आपकी मूर्खता और अहंकारों को आप पर सिद्ध करे। मैं नहीं जानता कि आप को किस बात पर गर्व है। लज्जाजनक (शर्मनाक) प्रकृति के साथ और इस मोटी समझ तथा

★रेचक (मुस्लिम) दस्त लाने वाली औषधि, जुलाब। (अनुवादक)

*हदीस के वे नियम जिनका उद्देश्य किसी रिवायत को बौद्धिक तौर पर परखना है।
(अनुवादक)

सतही विचार (ऊपरी मन) पर यह अभिमान और यह गर्व। ऐसी मूर्खता, और घूर्तता, निर्लज्जता, नीचता तथा पथ भ्रष्टता से खुदा की पनाह।

आप का यह विचार कि मैंने अब उपद्रव के लिए पत्र भेजा है ताकि बटाला के मुसलमानों में फूट पड़े। मेरे अजीज़! ये आपके स्वाभाविक भ्रम हैं। मैंने फूट के लिए नहीं बल्कि आप की खराब और कमजोर हालत पर रहम करके पत्र भेजा था ताकि आप पाताल में न गिर जाएं और मृत्यु से पूर्व सच्चाई को समझ लें। मुसलमानों में फ़साद और फूट डालना तो आप का ही आचरण है। यही तो आप का मज़हब और पद्धति है, जिसके कारण आप ने एक मुसलमान को काफ़िर, बेईमान और दज्जाल कहा है तथा उलेमा को धोखे देकर कुफ़्र के फ़त्वे लिखवाए और अपने गुरु नज़ीर हुसैन पर मृत्यु के दिनों के निकट यह उपकार किया कि उसके मुंह से कुफ़्र का कलिमा कहलवाया और उसकी वृद्धावस्था के तक्रवे (संयम) पर मिट्टी डाली। *نَجِّيرِ هُوسَينَ تَوَ اَفْرِیْ بِاِ بَرِّیْ مَرَدَه تَو* नज़ीर हुसैन तो जीर्ण आयु में ग्रस्त और की भांति सोचने-समझने की शक्ति से आज़ाद हो गया था। यह आप ने ही शिष्य होने का कर्तव्य अदा किया कि उसके अन्तिम समय और मरने की अवस्था में उसके मुंह पर ऐसी घृणास्पद कालिमा पोत दी कि अब संभवतः वह क़ब्र में ही उस कालिमा (सियाही) को ले जाएगा। खुदा तआला का दरबार कोई खाला जी का घर नहीं है। जो व्यक्ति मुसलमान को काफ़िर कहता है उसे वही परिणाम भुगतने पड़ेंगे जिनका अकारण के काफ़िर कहने वालों के लिए उस रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वादा दे रखा है जो ऐसा न्यायप्रिय था जिस ने एक चोर की सिफ़ारिश के समय बहुत क्रोधित होकर फ़रमाया था कि मुझे क्रसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान (प्राण) है कि यदि **मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पुत्री फ़ातिमा** चोरी करे तो उसका भी हाथ काटा जाएगा।

उसका कथन - (इस स्थिति में क़ादियान पहुंच सकता हूं) कि मुसलमानों पर आप का झूठ और छल खोलूं, परन्तु मुझे आशंका है कि आप मेरी जान को हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

मेरा कथन - अब आप किसी उपाय या बहाने से पलायन नहीं कर सकते।

अब तो आपकी सेवा में दस लानतें भेंट कर दी हैं और अल्लाह तआला की क्रसम भी दी है कि आप आसमानी तरीके से मेरे साथ सच और झूठ का फैसला कर लें। यदि आप मुझे झूठा समझने में सच्चे हैं तो मेरी इस बात को सुनते ही मुकाबला करने के लिए खड़े हो जाएंगे अन्यथा इन समस्त लानतों को हजम कर जाएंगे और कच्चे एवं बेकार के बहानों से टाल देंगे। और मैं आप को मारना नहीं चाहता एक ही है जो आपके न रुकने की स्थिति में मार देगा और अपने धर्म को आप के इस उपद्रव से मुक्ति देगा। और आप को क्रादियान आने की कुछ आवश्यकता नहीं यदि अल्लाह और रसूल के निशान के अनुसार परीक्षा के लिए तैयार हों तो मैं स्वयं बटाला, और अमृतसर और लाहौर में आ सकता हूं तासियह रूपे शवद हर कि दरोगशः बाशिद

अब हम नीचे शेख बटालवी साहिब का उत्तर लिखते हैं और वह यह है -
बटाला, ज़िला-गुरदासपुर (1 जनवरी 1893 ई.) नम्बर-प्रथम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मिर्जा गुलाम अहमद साहिब क्रादियानी खुदा आप को हिदायत करे और सीधे मार्ग पर लाए। आप का 31, दिसम्बर 1892 ई. का पत्र मैंने आश्चर्य से पढ़ा। मैं आप की इन गीदड़ भबकियों से नहीं डरता। बल्कि इस डरने को शिर्क समझता हूं और उनके मुकाबले में कुर्आन की यह आयत प्रस्तुत करता हूं -

وَحَاجَّه قَوْمُهُ ۖ قَالَ اتَّخَذُ جُؤَيْي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدِنِ ۖ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۖ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۖ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨١﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۖ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٢﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٣﴾

(सूरह अल अन्आम- 6/81-83)

क्रादियानी साहिब! मैं कुर्आन और पहली किताबों को, इस्लाम धर्म तथा पहले धर्मों को, अन्तिम युग के नबी तथा पहले नबियों को सच्चा जानता और मानता हूँ और उसकी यह अनिवार्यता तथा शर्त है कि आप को झूठा जानूँ और आप का इन्कारी हूँ। क्योंकि आप की आस्थाएं, शिक्षाएं, आप के आचरण और आदतें पहली किताबों, पहले धर्मों तथा पहले नबियों की विरोधी और विपरीत हैं। इसलिए उन किताबों, धर्मों और नबियों को मानना तब ही सही और सच्चा हो सकता है जबकि आप की आस्थाओं तथा शिक्षाओं को झूठा और आप को गुमराह समझूँ जिस पर निम्नलिखित आयतें प्रमाण हैं -

فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقَىٰ

(सूरह अलबक्ररह- 2/257)

وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ

(सूरह अन् निसा 4/61)

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ
إِنَّا بَرَاءٌ مِّنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ

(सूरह अलमुमतहिना-60/5)

इस्लाम धर्म की विरोधी गलत आस्थाओं और पहले धर्मों के अतिरिक्त झूठ बोलना तथा धोखा देना आप की ऐसी अनिवार्य विशेषता बन गई है कि जैसे वह आप के स्वभाव का एक अंग है। बराहीन अहमदिया के लिखने से पहले के समय आपके जीवन-चरित्र का मैं विस्तृत ज्ञान नहीं रखता परन्तु 'बराहीन अहमदिया' के लिखने के समय से झूठ बोलना, धोखा देना आपने ग्रहण कर लिया है विशेष तौर पर सन् 1886 ई. से जब से आप ने इल्हामी बेटा पैदा होने की भविष्यवाणी की और इस प्रकार की भविष्यवाणियां प्रसिद्ध की हैं, विशेषतः सन् 1890 ई. से जब से आप ने मसीह मौऊद होने का दावा प्रसिद्ध किया है उस से आप का कोई लेख, कोई भाषण, कोई पुस्तक खाली नहीं है। इस से अनुमान हो सकता है कि पहले समय में विशेष तौर पर मुख्तार बनने की परीक्षा

में फेल होने और फिर अदालत में वर्षों अपने मुकद्दमें करने के समय आपका यही हाल रहा होगा।

इस से हर एक समझ सकता है कि जो व्यक्ति लोगों पर झूठ बोलने और उनको धोखा देने में ऐसा निर्भीक हो वह खुदा पर झूठ बोलने में कि मैं मुल्हम हूं और मुझे इल्हाम हुआ है कि अमुक व्यक्ति मुझे बेटी न देगा तो मर जाएगा★ और अमुक व्यक्ति मुझे मसीह न मानेगा तो वह अज़ाब में ग्रस्त होगा। किस प्रकार रुक सकता है और इस इल्हाम के दावे में कैसे सच्चा समझा जा सकता है।

आप इस प्रकार के तीन हजार इल्हामों के सच्चा होने के दावेदार हैं। मैं उन तीन हजार में से केवल तीन इल्हामों के सच्चा होने पर आपको मुल्हम मान लूंगा और यह समझूंगा कि मैंने आप की आस्थाओं और शिक्षाओं को सच्चाई की विरोधी तथा आपको बद अख्लाक़ (दुःशील) और गुमराह समझने में ग़लती की। उन तीन हजार में से जिन तीन इल्हामों को आप बहुत सच्चा समझते हैं। उदाहरणतया दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के बारे में इल्हाम या शेख़ महर अली की रिहाई के बारे में इल्हाम या दिलीप सिंह की असफल हो कर वापसी के बारे में इल्हाम या आप के भावी और काल्पनिक ससुर की मृत्यु हो जाने के बारे में इल्हाम तथा उदाहरण इत्यादि। इनको आप किसी ऐसी मज्लिस (सभा) में जहां दोनों पक्षों के लोग बराबर हों और तीन विभिन्न धर्मों के न्यायकर्ता या धर्म एवं

★ यह भविष्यवाणी सच्ची थी जो अपनी निर्धारित समय सीमा के अन्दर पूरी हो गई क्योंकि भविष्यवाणी का विषय यह था कि यदि मिर्ज़ा अहमद बेग़ होशियारपुरी अपनी बेटी नहीं देगा तो निकाह करने के बाद तीन वर्ष की अवधि तक मृत्यु पा जाएगा। अतः मिर्ज़ा अहमद बेग़ ने इस इल्हाम को सुनने के पश्चात् पांच वर्ष तक अपनी बड़ी बेटी का निकाह किसी जगह नहीं किया और जीवित रहा। फिर पांच वर्ष के बाद उस ने एक जगह उसका निकाह कर दिया और निकाह के छठे माह भविष्यवाणी की समय सीमा में मर गया। यदि यह मनुष्य का काम है तो बटालवी को क्रसम है कि ऐसे सबूत का कोई उदाहरण प्रस्तुत करे जिसकी खुदा तआला ने सच्चाई प्रकट कर दी हो या स्वयं ही बना कर दिखा दे, वरना उस लानत से डरे जो सच्चाई के दुश्मनों पर ऐसी शीघ्र उतरती है जैसा कि पर्वत की चोटी से नीचे की तरफ़ पत्थर। इसी से

पंथ से आजाद लोग हैं सिद्ध कर दें और सरलतापूर्वक सफल हों।

तीन न सही चलो एक ही अपने काल्पनिक अन्तिम इल्हाम का जिसको आप ने जल्सा मेला सालाना में अपने अनुयायियों और अपने जाल में फंसाए लोगों में जो अधिकतर ना समझ लोग थे और कुछ स्वार्थी नेचरी तथा कुछ तमाशा देखने वाले जिन को वस्तु-स्थिति को छान-बीन से कुछ मतलब न था बड़े जोर-शोर से वर्णन किया था निश्चित तौर पर इल्हाम होना सिद्ध कर दें।

अब बहादुर हैं तो मैदान में निकलें अन्यथा इन डींगें मारने से शर्म करें। अपने दया-सागर के जोश और प्रवाह में आने का जो आपने वर्णन किया है, इसमें भी आप ने अपनी पुरानी सुन्नत झूठ और धोखा देने से काम लिया है। आपको रहमत (दया) से क्या संबंध। रहमत और हमदर्दी का तो आप में माद्दः (तत्त्व) ही नहीं। आपके कार्य, गतिविधियां और बातें स्पष्ट तौर पर गवाही दे रहे हैं कि आप परले दर्जे के निर्दयी, स्वार्थी, पापी और अंहकारी व्यक्ति हैं। आप का जुबान और हज्जाज बिन यूसुफ की तलवार दोनों जुड़वा हैं। आप ने अपने विरोधियों तथा ऐतराज करने वालों को उस हालत और उस समय में जबकि आप उनको मख्दूमि और अख्बी के सम्बोधन से याद करते और उनकी नेक नीयत के इकरारी थे, बेहया, बेईमानी, दरिन्दा, मुंह से झाग निकालने वाला कुत्ता कल्बुन यमूतो अला कल्बिन, कमीना, जंगली इत्यादि-इत्यादि शब्दों से याद किया है। क्या रहमत और मानव जाति की सहानुभूति यही मायने रखती है?

आप मुसलमानों का दस हजार से अधिक रुपया पुस्तक बराहीन अहमदिया का मूल्य और दुआ की स्वीकारिता का लालच देकर खा चुके हैं और बराहीन अहमदिया पुस्तक अभी ऐसे लापता है जैसे कहते हैं शेर का अर्थ शाइर के पेट में होता है और दुआओं की स्वीकारिता के प्रत्याशी (उम्मीदवार) आप का मुंह देख रहे हैं। क्या हमदर्दी और रहम इसी का नाम है?

जब मुझे आप से संभावित वली होने की दृष्टि से सुधारणा थी तो मैंने कई बार आप से विनती की कि आप मुझे अपने पास ठहरा कर रहमत और बरकत के लक्षण दिखाएं। आप ने कभी हां न की। एक बार मैंने आप को यह भी

कहा था कि आप के विरोधी और इन्कारी अच्छे रहे कि आप उनको आसमानी निशान दिखाने के लिए पुरस्कार के वादे पर बुलाते हैं। हम मित्र लोगों को इनाम के वादे के बिना भी नहीं बुलाते तो आप हंस कर चुप हो गए। फिर जब आप ने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो मैंने अपना विरोध जताकर आप के पास आना और मित्रवत् व्यक्तिगत बातचीत करना चाही तो आप बुलाने का वादा देते-देते लुधियाना में जाकर विराजमान हो गए और वहां जाकर शत्रुवत् बहस का अखाड़ा जमा कर नाजायज़ और बहस को टालने की शर्तों की शरण ली। फिर जब लुधियाना में आपके घर पर पहुंचकर आपको बातचीत पर मजबूर किया तो आपने इस शान्तिपूर्ण बातचीत को अधूरा छोड़कर शत्रुवत् अखाड़ा जमाने का प्रबन्ध किया और देहली, पटियाला, लाहौर और सियालकोट इत्यादि में शत्रुता पूर्ण बहस का झंडा बुलंद किया और फिर बहस से पलायन करके नाना प्रकार के झूठे आरोप और झूठी बातों के विज्ञापन दिए। और इसी बीच आसमानी फैसला लिख डाला, जिसमें बेरहमी और गाली-गलौज में कोई कसर नहीं छोड़ी इस बेरहमी और अंहकारपूर्ण कार्रवाइयों का परिणाम यह निकला कि मुसलमानों की जमाअत में फूट पड़ गई। भाई, भाई से और दोस्त, दोस्त से अलग हो गया। क्या रहमत और हमदर्दी का यही प्रभाव है।

आप में रहमत और हमदर्दी का थोड़ा सा भी प्रभाव होता तो जिस समय मैंने आप के मसीह के दावे पर अपना विरोध व्यक्त किया था आप तुरन्त मुझे अपनी जगह पर बुलाते या मेरे घर पर आते (जैसा कि पहले भी आप से ऐसा होता रहा तथा कम से कम तीन बार आपने मेरे गरीब घर पर आकर एकता का सम्पर्क व्यक्त किया था) और इस प्रकार से आप अपने नए दावे को सिद्ध कर दिखाते। आप ने अब जो यह पत्र भेजा है यह भी आप के स्वार्थ और बुरी नीयत से खाली नहीं। इसमें स्वार्थ यह है कि आप के मुरीद आपको नेक नीयत और अपने दावे में दृढ़ तथा विरोधियों के मुकाबले के लिए तैयार समझें। और फूट की नीयत यह है कि दूसरे पक्ष से जैसे को तैसा उत्तर मिले तो इस से बटाला के मुसलमानों में फूट पड़े। यह आपके इल्हाम के दावे, सच्चाई और भलाई चाहने तथा रहमत का उत्तर है।

अब मैं आप की इस विनती का कि "खाकसार आप के और आप के अनुयायियों के इल्हामों और स्वप्नों से डर कर आप के पास पहुंचे और आप आज्ञाकारी हो जाए या आप को उन डराने वाले इल्हामों तथा स्वप्नों को प्रकाशित करने की इजाजत दे।" उत्तर देता हूं।

आप का खाकसार को अपने पास बुलाना यदि इस लिए है कि मैं आप की ग़लत आस्थाओं के बारे में आप से कुछ पूछूं तो इस दृष्टि से आना व्यर्थ है। हम मुसलमानों को आप की ग़लत आस्थाओं के खण्डन में अब कोई सन्देह नहीं है। इसलिए इसमें कुछ पूछने की कोई आवश्यकता नहीं।

हां आप को कुछ सन्देह और शंका हो तो आप जिस समय चाहें पुरानी आदत के अनुसार घर पर आएं।

पुराने नियम के अनुसार आप की आवभगत होगी और आपकी सन्तुष्टि की जाएगी इन्शा अल्लाह।

यदि खाकसार को अपने पास बुलाने का उद्देश्य यह है कि आप मुझे कोई आकाशीय निशान दिखाएंगे तो इस दृष्टि से आना न केवल बेफायदा है बल्कि गुनाह तथा हानि का कारण है। जिस व्यक्ति की आस्थाएं इस्लाम और पहले धर्मों (दीनों) की विरोधी हों उस से आकाशीय निशान की आशा रखना मोमिन का काम नहीं। यदि वह कुछ चालाकी और बाज़ीगरी से मस्मरेज़म इत्यादि के द्वारा दिखाई भी दे तो उस पर विश्वास करना इस्लाम के विरुद्ध है। इस बात को आप भी अपने विज्ञापन में स्वीकार कर चुके हैं।

हां इस उद्देश्य से मेरा वहां पहुंचना वैध बल्कि पुण्य का कारण है कि मैं वहां पहुंच कर आपकी आसमानी निशान दिखाने से असमर्थता को लोगों पर प्रकट करूं और मुसलमानों पर आप का झूठ और छल खोलूं। क्योंकि मेरे विचार में आपको मस्मरेज़म इत्यादि में थोड़ा भी ज्ञान नहीं और आपके पास जो हथियार तथा झूठ एवं छल का जाल है वह केवल जुबान की चतुराई और तुकबन्दी है। परन्तु मुझे इस स्थिति में क़ादियान पहुंचने में यह आशंका है कि आप मेरी जान को हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे और इस से अपने इल्हाम को कि यह व्यक्ति

बावन वर्ष का होकर मृत्यु पा जाएगा जिसको आपके हवारी और मित्र मियां चट्टू रेशम विक्रेता और मियां रजबुद्दीन शाली कोब लाहौर इत्यादि आपस में फैला रहे हैं सच्चा कर दिखाएंगे, (यद्यपि वास्तव में कभी सच्चा नहीं हो सकता क्योंकि मैं बावन वर्ष की आयु पूरी कर चुका हूं। 17, मुहर्रम 1256 हिज्री मेरी पैदायश है और अब 1310 हिज्री गुज़र रहा है) और कम से कम यह कि मुझे अपमानित करने का उपाय करेंगे। अतः यदि आप मेरे इस उद्देश्य को ध्यान में रख कर मुझे अपने पास बुलाना चाहते हैं तो मेरी इस आशंका को एक नियमित पत्र से जो अदालत में रजिस्टर्ड हो दूर कर दें।

आपने इस ज़िम्मेदारी को लिखित तौर पर स्वीकार किया तो इस का मसौदा आप के पास भेजा जाएगा। इस स्थिति में यह ख़ाकसार क़ादियान में उपस्थित होगा और जो कार्य आप की सेवा करने का यहां करता है वहां बैठ कर करेगा कथित शर्त अस्वीकार करने की स्थिति में मैं क़ादियान नहीं आ सकता। ऐसी स्थिति में अपने और अपने अनुयायियों के इल्हाम और स्वप्न जो मेरे बारे में हुए हैं अनुमति मांगी है। इस से मुझे आश्चर्य हुआ और विश्वास हुआ कि आप इल्हाम के दावे में बहुत झूठे हैं। ख़ुदा के इल्हाम को प्रकाशित करने तथा प्रचार करने के लिए दूसरों की इजाज़त के क्या मायने? ★ प्रथम तो जो इल्हाम किसी वली या वली को किसी व्यक्ति को डराने के लिए होता है उसका प्रकाशन एवं प्रचार उस इल्हाम का वही उद्देश्य होता है और यदि आप का मुलहिम आप

★नोट:- बटालवी साहिब के इस बयान से उनका कुर्आन का ज्ञान और हदीस का अध्ययन खूब प्रकट हो रहे हैं। उन्हें ज्ञात रहे कि ख़ुदा के प्रत्येक मुल्हम को तीन प्रकार के इल्हाम होते हैं- एक 'वाजिबुत्तब्लीग' (जिन का लोगों में प्रचार करना अनिवार्य होता है), दूसरे वे इल्हाम जिनको अभिव्यक्त करने या न करने में मुल्हम लोगों को अधिकार दिए जाते हैं। यदि अभिव्यक्त करना हित में समझें तो अभिव्यक्ति कर दें अन्यथा गुप्त रखें। इल्हाम का तीसरा प्रकार वह है जिन की अभिव्यक्ति से मुल्हम लोग मना किए जाते हैं। यही विभाजन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में मौजूद है। यह इल्हाम दूसरे प्रकार का था जिसे अभिव्यक्त करने या न करने का इस ख़ाकसार को अधिकार दिया गया था। और अंबिया भी हर एक बात ख़ुदा तआला से हल नहीं करते बल्कि इस संसार में अपने विवेचन से भी काम लेते हैं। अतः विचार कर। (इसी से)

को ऐसे इल्हाम करता है जिस का प्रकाशन पुनर्विचार तथा पुनः आदेश के बिना वैध नहीं होता तो आप अपने मुल्हिम ही से क्यों नहीं पूछ लेते कि मैं इस इल्हाम को प्रकाशित करूँ या न करूँ और यदि करूँगा तो किसी कानून के शिकंजे में तो न फंसाया जाऊँगा। आप की इस इजाजत मांगने से मालूम होता है कि आप इल्हाम की आड़ में मुझे गालियाँ देना चाहते हैं और ऐसे शब्द लिखने और प्रसिद्ध करने का इरादा रखते हैं जिस से मेरी मान हानि हो तथा मेरी और मेरे परिजनों एवं रिश्तेदारों के दिल को ठेस और कष्ट पहुँचे। आप ने पहले भी इस प्रकार के इल्हाम मेरे बारे में प्रकाशित किए हैं और इसके साथ आप कानूनी पकड़ की भी आशंका रखते हैं तथा समय के पदाधिकारी वर्ग अपने मुल्हिम (इल्हाम करने वाले अर्थात् खुदा) की अपेक्षा शक्तिशाली समझते हैं। इसलिए मैं ऐसे इल्हाम को सार्वजनिक तौर पर प्रकाशित करने की इजाजत नहीं दे सकता। हाँ इस प्रकार की इजाजत से मैं रुक भी नहीं सकता कि आप अपने तथा अपने अनुयायियों के इल्हामों की जहाँ तक कि कानून उन के प्रकाशन की अनुमति देता है प्रकाशित करें और अपने कमजोर और डरपोक मुल्हिम को (जो निस्सन्देह खुदा तआला नहीं बल्कि फ़रिश्तों का उस्ताद (शैतान) है) समय के पदाधिकारी वर्ग से पराजित समझ कर उस की आज्ञा का पालन करने को समय के पदाधिकारी वर्ग के कानून के अधीन रखें। आप ने इस के विरुद्ध किया तो आपको अदालत में फिर किसी आरामगाह में आना पड़ेगा। आपके पहले इल्हाम भी मेरी दृष्टि में हैं और उन के बारे में उनके निवारण का इरादा भी अभी तक स्थगित नहीं हुआ है।

मैं यह कहना भी उचित नहीं समझता हूँ कि यदि आप खुदा तआला से वार्तालाप करने का सौभाग्य रखते हैं और खुदा तआला से संक्षेपों का विवरण पूछ सकते हैं तथा इसके साथ मानव जाति से सहानुभूति रखते हैं (जैसा कि आपने अपने पत्र में दावा किया है) तो मुझे डराने और धमकाने की बजाए आप मेरे बारे में पहले खुदा तआला से यह मालूम करें कि आपके जो डराने वाला इल्हाम इस व्यक्ति के बारे में हुआ है वह अटल और निश्चित तौर पर घटित होने वाला है या उसका घटित होना अधर में लटका हुआ है। और जो डर या

अज्ञाब उसमें वर्णन किया गया है इस के अधीन (आज्ञाकारी) हो जाने की स्थिति में उस व्यक्ति से दूर हो सकता है।

अतः यदि खुदा तआला आप को यह बता दें कि वह अटल नहीं अधर में लटका हुआ है तो आप खुदा से दुआ करें कि वह मुझे आपको पहचानने की तौफ़ीक़ दे और आप के अधीन कर दे★ और मुझ से वह अज्ञाब दूर कर दे। और इस बात में अपने दया सागर को जोश में लाएं और उस दयालु नबी की सुन्नत (पद्धति) पर अमल करें जिसको उसकी क़ौम ने मारमार कर रक्त रंजित (खून से लथ पथ) कर दिया था, वह अपने चेहरे से खून पोंछता और यह कहता था **اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ** तथा आहज़रत की इस सुन्नत पर अमल करें कि जब आप के पास पर्वतों के फ़रिश्ते ने उपस्थित होकर कहा कि खुदा तआला ने मुझे आप के पास इसलिए भेजा है कि यदि आप चाहें तो मैं आपके इन्कार करने वालों तथा विरोधियों को पर्वत के नीचे कुचल दूँ। तो आप ने फ़रमाया- मैं यह नहीं चाहता, मैं आशा करता हूँ कि इनकी नस्लों से ऐसे लोग पैदा होंगे जो खुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) पुकारेंगे।

और यदि खुदा तआला आप को यह ख़बर दे कि यह इल्हाम अटल और निश्चित तौर पर घटित होने वाला है तो फिर आप मुझे बुलाने से अलग हों और अपने अनुयायियों को वह इल्हाम सुना कर उन पर अपनी नुबुव्वत और विलायत (वली होना) सिद्ध करें। इस स्थिति में मुझे बुलाना व्यर्थ है, क्योंकि अज्ञाब के अटल वादे के बाद किसी नबी ने तब्लीग़ नहीं की।

और यदि आप अपनी इस धमकी पर हठ करते रहेंगे तो सच्चाई को तलाश करने वाला तथा न्यायकर्ता जान लेंगे कि आप इस बुलाने और डराने में धोखा करते हैं तथा झूठे हैं।

मैं अन्त में आप को यह भी सूचना देता हूँ कि यदि मैं आपके विरोध में

★**फुट नोट-** खुदा तआला किसी मुल्हम की दुआ से उस का मार्ग-दर्शन करता है जिसके दिल पर गुमराही और टेढ़े पन का प्रभुत्व नहीं होता अन्यथा **فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ** (अस्सफ़-6) के अनुसार मार्ग-दर्शन पाने से वंचित रहता है। (इसी से)

सही नीयत और सच्चाई पर हूं और इस्लाम धर्म की सहायता कर रहा हूं और इसमें अहंकार को कुछ अधिकार नहीं देता तो खुदा तआला मेरी सहायता करेगा और आप का मार्ग-दर्शन करके सच्चाई तथा इस्लाम धर्म का आज्ञाकारी (अधीन) करेगा अन्यथा कठोर अज्ञाब में डालकर मार देगा, और यदि मेरी नीयत में खराबी है तो इस का बदला खुदा मुझे स्वयं देगा। आप का डराना और धमकाना व्यर्थ और बेकार है विशेष तौर पर ऐसी स्थिति में कि मैं आपको महा झूठा समझता हूं और इस विश्वास को इस्लाम धर्म का भाग समझता हूं। इसलिए उचित है कि आप इन गीदड़ भबकियों को छोड़ दें और सच के अधीन हो जाएं। बाक़ी आपकी अपनी इच्छा।

وما علينا إلا البلاغ المبين- लेखक- अबू सईद मुहम्मद हुसैन अफ़ल्लाहुअन्हो

यह पत्र मुसलमानों के एक सार्वजनिक जल्से में पढ़ा गया। जल्से के प्रतिष्ठित लोगों ने इसके विषय को पसन्द किया और इसके मसौदे पर हस्ताक्षर किए। उनमें से कुछ प्रसिद्ध नाम ये हैं -

(1) मुहम्मद फैज़ मुहियुद्दीन कादिरी उफ़्रिया अन्हो

(2) अहमद अली उफ़्रिया अन्हो (3) मुहम्मद आजम उफ़्रिया अन्हो (4) शेख़ अमीर बख़्श (5) हाफ़िज़ गुलाम कादिर (6) नूर मुहम्मद (7) शेख़ अमीर बख़्श (8) नबी बख़्श ज़ैलदार बटाला (9) बरकत अली (10) मुहम्मद इस्हाक पुत्र क़ाज़ी नूर अहमद (11) फ़क़ीर शेख़ मुहम्मद वाइज-ए-इस्लाम नक़्शबन्दी मख़दूमि अहसनी (12) मुहम्मद इब्राहीम इमाम ज़ामिअ मस्जिद (13) हकीम अता मुहम्मद (14) अली मुहम्मद (15) मिस्कीन मुहम्मद अहमदुल्लाह (16) फ़क़ीर शम्सुद्दीन (17) मुहम्मद अली थानेदार (पेन्शनर) (18) हुसैन बख़्श अपील नवीस।

और बहुत से लोग हैं जिनकी संख्या एक सौ से अधिक है।

प्रत्युत्तर शेख बटालवी (जवाबुल जवाब)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली

अलहम्दुलिल्लाह वस्सलाम अला इबादिहिलजीनस्तफ़ा। तत्पश्चात् आपका रजिस्टर्ड पत्र मुझे दिनांक 4 जनवरी 1893 ई. को मिला। यद्यपि आपका यह पत्र जो झूठ, आरोप तथा अनुचित स्वयं बनाए हुए झूठों का एक संकलन है इस योग्य नहीं था कि मैं आपको इसका कुछ उत्तर लिखता केवल मुंह फेर लेना ही पर्याप्त था। परन्तु चूंकि आप ने अपने पत्र के पृष्ठ 2 और 3 में इस खाकसार की तीन भविष्यवाणियों का वर्णन करके अन्त में उस तीसरी भविष्यवाणी को रेखांकित कर दिया है जो 10, मई 1888 के 'नूर अफ़्शा' तथा मेरे 10, जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन में दर्ज है और आपने इकरार किया है कि यदि उस इल्हाम का सच्चा होना सिद्ध हो जाए तो मैं आपको मुल्हम स्वीकार कर लूंगा और समझूंगा कि मैंने आपकी सच्चाई की विरोधी आस्थाओं, शिक्षाओं तथा आपको असभ्य और गुमराह समझने में ग़लती की। इसलिए इस खाकसार ने फिर आपकी हालत पर रहम करके आपको उस इल्हामी भविष्यवाणी के सबूत की ओर ध्यान दिलाना उचित समझा। वह भविष्यवाणी जैसा कि आप स्वयं अपने पत्र में वर्णन कर चुके हैं यही थी कि यदि मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी अपनी बेटी इस खाकसार को न दे, किसी अन्य से निकाह कर दे तो निकाह के दिन से तीन वर्ष के अन्दर मृत्यु पा जाएगा। इस भविष्यवाणी की यह बुनियाद नहीं थी कि अकारण मिर्ज़ा अहमद बेग की बेटी की मांग की गई थी बल्कि यह बुनियाद थी कि विरोधी पक्ष, जिनमें से मिर्ज़ा अहमद बेग भी एक था, इस खाकसार कि निकट संबंधी, परन्तु धर्म के कट्टर विरोधी थे। और इन में से एक तो दुश्मनी में इतना बढ़ा हुआ था कि महा प्रतापी ख़ुदा और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुल्लम खुल्ला गालियां देता था और अपना धर्म नास्तिक रखता था तथा निशान की मांग

का एक विज्ञापन भी जारी कर चुका था। और ये सब मुझे मक्कार समझते थे और निशान मांगते थे, रोज़ा, नमाज़ और इस्लामी आस्थाओं पर उपहास किया करते थे। अतः ख़ुदा तआला ने चाहा कि इन पर अपना समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा करे। अतः उसने निशान दिखाने में वह पहलू अपनाया जिन का इन समस्त अधर्मी (नास्तिक) निकट संबंधियों पर प्रभाव पड़ता था। ख़ुदा से डरने वाला व्यक्ति समझ सकता है कि जीवन-मरण मनुष्य के अधिकार में नहीं है। और ऐसी भविष्यवाणी जिसमें एक व्यक्ति की मृत्यु को उसकी बेटी के निकाह के साथ जो ग़ैर से हो संलग्न कर दिया गया और मृत्यु की सीमा निर्धारित कर दी गई मनुष्य का काम नहीं है। चूँकि यह इल्हामी भविष्यवाणी स्पष्ट तौर पर वर्णन कर रही थी कि मिर्ज़ा अहमद बेग की मृत्यु और जीवन उसकी लड़की के निकाह से संलग्न है। इसलिए पाँच वर्ष तक अर्थात् जब तक उस लड़की का किसी दूसरी जगह निकाह न किया गया, मिर्ज़ा अहमद बेग जीवित रहा। और फिर 7, अप्रैल 1892 ई. में अहमद बेग ने उस लड़की का एक जगह निकाह कर दिया और भविष्यवाणी के अनुसार तीन वर्ष के अन्दर अर्थात् निकाह से छठे महीने में जो 30, सितम्बर 1892 ई. थी मृत्यु पा गया। और इसी विज्ञापन में यह भी लिखा था कि यद्यपि निकाह के दिन से मृत्यु की तिथि तीन वर्ष तक बताई गई है परन्तु दूसरे क़स्फ़ से ज्ञात हुआ कि कुछ बहुत समय नहीं गुज़रेगा। अतः ऐसा ही हुआ कि निकाह और मृत्यु में केवल छः महीने बल्कि इस से भी कम दूरी रही अर्थात् जैसा कि मैं लिख चुका हूँ कि 7, अप्रैल 1892 ई. को निकाह हुआ और 30 सितम्बर 1892 ई. को मिर्ज़ा अहमद बेग इस नश्वर संसार से कूच कर गया। अब थोड़ा ख़ुदा तआला से डर कर कहें कि यह भविष्यवाणी पूरी हो गई या नहीं? और यदि आप के दिल को यह धोखा हो कि कैसे विश्वास हो कि क्योंकि यह इल्हामी भविष्यवाणी है क्यों वैध नहीं की यह ज्योतिष विद्या इत्यादि द्वारा हो तो इसका उत्तर यह है कि ज्योतिषियों की इस प्रकार की भविष्यवाणी नहीं हुआ करती, जिसमें अपने व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से इस प्रकार की शर्तें हों कि यदि अमुक व्यक्ति हमें बेटी दे तो जीवित रहेगा

अन्यथा निकाह के बाद तीन वर्ष तक बल्कि बहुत जल्द मर जाएगा। यदि संसार में किसी नजूमी या ज्योतिषी की इस प्रकार की प्रकट हुई है तो वह उसके सबूत के साथ प्रस्तुत करे इसके अतिरिक्त इस भविष्यवाणी के साथ विज्ञापन में एक दावा प्रस्तुत किया गया है अर्थात् यह कि मैं खुदा तआला की ओर से आया हूँ और खुदा के वार्तालाप से सम्मानित हूँ तथा खुदा की ओर से मामूर हूँ। मेरी सच्चाई का निशान यह भविष्यवाणी है। अब आप यदि खुदा तआला का कुछ भी भय रखते हैं तो समझ सकते हैं कि ऐसी भविष्यवाणी जो खुदा की ओर से होने के लिए बतौर सबूत प्रस्तुत की गई है उसी हालत में सच्ची हो सकती थी कि जब वास्तव में यह खाकसार खुदा की ओर से हो। क्योंकि खुदा तआला एक झूठ गढ़ने वाले की भविष्यवाणी को जो एक झूठे दावे के लिए सच्चाई के गवाह के तौर पर वर्णन की गई हरगिज़ सच्ची नहीं कर सकता। कारण यह कि इसमें खुदा की सृष्टि (मख्लूक) को धोखा लगता जैसा कि अल्लाह तआला स्वयं सच्चे मुद्दई (दावेदार) के लिए यह लक्षण ठहरा कर फ़रमाता है -

وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ^ط (अलमोमिन-40/29)

तथा फ़रमाता है -

فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبَةٍ أَحَدًا - إِلَّا مَنْ ارْتَضَى مِنْ رَسُولٍ (अलजिन्न- 72/27-28)

रसूल का शब्द सामान्य है जिसमें रसूल, नबी और मुहद्दिस सम्मिलित हैं। अतः इस भविष्यवाणी के इल्हामी होने के लिए एक मुसलमान के लिए यह प्रमाण पर्याप्त है कि खुदा की ओर से होने के दावे के साथ यह भविष्यवाणी वर्णन की गई और खुदा के साथ यह भविष्यवाणी वर्णन की गई और खुदा तआला ने उसे सच्चा करके दिखा दिया। यदि आपके नज़दीक यह संभव है कि एक व्यक्ति वास्तव में मुफ़्तरी (झूठ गढ़ने वाला) हो और सर्वथा झूठ बोल कर कहे कि मैं खुदा का खलीफ़ा खुदा की ओर से मामूर तथा समय का मुजद्दि और मसीह मौऊद हूँ। और मेरी सच्चाई का निशान यह है कि यदि अमुक व्यक्ति मुझे अपनी लड़की नहीं देगा और किसी दूसरे से निकाह कर देगा तो निकाह के बाद तीन वर्ष तक, बल्कि इससे बहुत निकट मृत्यु पा जाएगा और खुदा के

लिए इसका उदाहरण प्रस्तुत करो, अन्यथा याद रखो कि मरने के पश्चात् इस इन्कार और झुठलाने और काफ़िर कहने के बारे में पूछे जाओगे। खुदा तआला स्पष्ट तौर पर फ़रमाता है कि -

(अलमोमिन-40/29) **إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ** ﴿٢٩﴾

सोचकर देखो कि इसके यही मायने हैं जो व्यक्ति अपने दावे में झूठा हो उसकी भविष्यवाणी कदापि पूरी नहीं होती। शेख साहिब अब समय है समझ जाओ और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शेखी काम नहीं आएगी। यदि कोई नजूमी या ज्योतिषी अथवा जाफ़री इस खाकसार की तरह दावा करके कोई भविष्यवाणी दिखा सकता है तो उसका उदाहरण प्रस्तुत करो तथा कुछ अखबारों में दर्ज करा दो। और याद रखो कि हरगिज़ प्रस्तुत नहीं कर सकोगे। ऐसा नजूमी तबाह होगा। खुदा तआला तो अपने नबी को फ़रमाता है कि यदि वह एक बात भी अपनी ओर से बनाता तो उसकी प्राण-धमनी काट दी जाती फिर यह क्योंकर हो कि प्राण-धमनी काटने की बजाए खुदा तआला इस खाकसार को जो आप की दृष्टि में काफ़िर, मुफ़्तरी, दज्जाल, कज़्जाब है दुश्मनों के मुक़ाबले पर यह सम्मान दे कि दावे के समर्थन में भविष्यवाणी पूरी करे। कभी संसार में यह हुआ है कि झूठे की खुदा तआला ने ऐसी सहायता की हो कि वह ग्यारह¹¹ वर्ष से खुदा तआला पर यह झूठ बांध रहा हो कि उसकी विलायत की वह्यी तथा मुहद्दिस होने की वह्यी मुझ पर उतरती है और खुदा तआला उसकी प्राण-धमनी न काटे बल्कि उसकी भविष्यवाणियों को पूरा करके आप जैसे दुश्मनों को लज्जित, शर्मिन्दा तथा निरुत्तर करे और आप की कोशिश का परिणाम यह हो कि आप की कुफ़्र बाज़ी से पहले तो जल्सा सालाना में कुल 75 आदमी सम्मिलित हों और आप की कुफ़्र बाज़ी मेहनत तथा लोगों के रोकने बाद तीन सौ सत्ताईस³²⁷ मित्र गण एवं निष्कपट लोग सच्चाई के प्रसार पर दौड़े चले आएँ। अब इससे अधिक क्या लिखूं। मैं इस पत्र को लिख कर इन्शा अल्लाह प्रकाशित कर दूंगा। और मुझे इस बात की आवश्यकता नहीं कि इस इल्हामी भविष्यवाणी की परीक्षा के लिए बटाला में कोई सभा आयोजित करूं। उचित है कि आप भी अपने 'इशाअतुस्सुन्न:'

में मेरे इस पत्र को प्रकाशित कर दें और साथ में यह बात भी लिख दें कि अब आपको स्वीकार करने में क्या बहाना है, न्यायवान लोग स्वयं देख लेंगे कि वह बहाना सही है या ग़लत है।

पुनः यह कि अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मैं अपने दावे में सच्चा हूँ, न मुफ़्तरी हूँ, न दज़्जाल, न कज़्ज़ाब इस युग में कज़्ज़ाब, और दज़्जाल और मुफ़्तरी इस से पहले कुछ कम नहीं थे ताकि ख़ुदा तआला सदी के सिर पर भी एक मुजद्दि की बजाए जो उसकी ओर से भेजा गया हो एक दज़्जाल को खड़ा करके और भी उपद्रव और फ़साद डाल देता। परन्तु जो लोग सच्चाई को न समझें और वास्तविकता को मालूम न करें और कुफ़्रबाज़ी की ओर दौड़ें, मैं उन का क्या उपचार करूँ। मैं उस तीमारदार (परिचारक) की भांति जो अपने स्वजन रोगी के शोक में ग्रस्त होता है इस अज्ञानी क्रौम के लिए बहुत शोकान्वित हूँ और दुआ करता हूँ कि हे महा प्रतापी शक्तिमान ख़ुदा, हे मार्ग-दर्शन और रास्ता बताने वाले! इन लोगों की आंखें खोल और स्वयं इन को विवेक प्रदान कर और स्वयं इन के दिलों को सच्चाई और सदाचार का इल्हाम कर। मैं विश्वास रखता हूँ कि मेरी दुआएं व्यर्थ नहीं जाएंगी, क्योंकि मैं उसकी तरफ से हूँ और उसकी तरफ बुलाता हूँ। यह सच है कि यदि मैं उसकी तरफ से नहीं हूँ और एक झूठ गढ़ने वाला हूँ तो वह बड़े अज़ाब से मुझे तबाह करेगा क्योंकि वह झूठ गढ़ने वाले को कभी वह सम्मान नहीं देता जो कि सच्चे को दिया जाता है। मैंने जो एक भविष्यवाणी जिस पर आप ने मेरे सच्चे और झूठे होने का दारोमदार डाल दिया, आपकी सेवा में प्रस्तुत की है। यही मेरी सच्चाई और झूठ को पहचानने के लिए एक पर्याप्त गवाही है। क्योंकि संभव नहीं कि ख़ुदा तआला कज़्ज़ाब और झूठ गढ़ने वाले की सहायता करे। परन्तु इसके साथ मैं यह भी कहता हूँ कि इस भविष्यवाणी के बारे में दो भविष्यवाणियां और हैं जिनको मैं 10, जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन में प्रकाशित कर चुका हूँ जिनका विषय यही है कि ख़ुदा तआला उस स्त्री को विधवा करके मेरी तरफ लौटाएगा। अब इन्साफ़ से देखें कि न कोई मनुष्य अपने जीवन पर विश्वास कर सकता है और न किसी दूसरे के बारे में दावा

कर सकता है कि वह अमुक समय तक जीवित रहेगा या अमुक समय तक मृत्यु पा जाएगा। परन्तु मेरी इस भविष्यवाणी में न एक बल्कि छः दावे हैं। 1. निकाह के समय तक मेरा जीवित रहना, 2. निकाह के समय तक उस लड़की के पिता का निश्चित तौर पर जीवित रहना, 3. निकाह के बाद उस लड़की के पिता का जल्दी से मरना जो तीन वर्ष तक नहीं पहुंचेगा। 4. उसके पति का ढाई वर्ष की अवधि तक मर जाना। 5. उस समय तक कि मैं उस से निकाह करूं उस लड़की का जीवित रहना। 6. फिर अन्ततः यह विधवा होने की समस्त रस्मों को तोड़ कर उसके निकट संबंधियों के कड़े विरोध के बावजूद मेरे निकाह में आ जाना।

अब आप ईमानदारी से कहें कि क्या ये बातें मनुष्य के अधिकार में हैं और तनिक अपने दिल को थाम कर सोच लें कि क्या ऐसी भविष्यवाणी सच्चे हो जाने की हालत में मनुष्य का काम हो सकती है। फिर यदि उस भविष्यवाणी पर जो लड़की के पिता के बारे में है जो 30, सितम्बर 1892 ई. को पूरी हो गई आपका दिल नहीं मानता तो आप 'इशाअतुस्सुन्नः' में अपने इक्करार के अनुसार एक विज्ञापन दे दें कि यदि यह दूसरी भविष्यवाणियां भी पूरी हो गईं तो अपने गलत विचारों से तौबा करूंगा और दावे में सच्चा समझ लूंगा तथा इसके साथ खुदा तआला से डर कर यह भी इक्करार कर दें कि एक तो उनमें से पूरी हो गयी और यदि इस भविष्यवाणी के पूरा हो जाने का आपके दिल में अधिक प्रभाव न हो तो इतना तो जरूरी होना चाहिए कि जब तक अन्त प्रकट न हो जुबान को रोके रखें। जब एक भविष्यवाणी पूरी हो गई तो उसका कुछ तो रोब आप के दिल पर पड़नी चाहिए। आप तो मेरे मरने के प्रतीक्षक तथा मेरी बदनामी के दिनों की प्रतीक्षा में हैं जब कि खुदा तआला मेरे दावे की सच्चाई पर निशान प्रकट करता है। यदि आप अब भी न मानें तो मेरा आप पर जोर ही क्या है। किन्तु स्मरण रखें कि मनुष्य अपने इन्कार के प्रारंभिक दिनों में किसी सन्देह के कारण माजूर (बहाना करने वाला) ठहर सकता है परन्तु निशान देखने पर हरगिज़ माजूर (बहाना करने वाला) नहीं ठहर सकता। क्या यह भविष्यवाणी जो पूरी हो गई कोई ऐसी संयोग की बात है जिसकी खुदा तआला को कुछ भी खबर नहीं! क्या उस

के ज्ञान और इरादे के बिना एक दज्जाल की सहायता में यह भविष्यवाणी स्वतः घटित हो गई? क्या यह सच नहीं कि झूठे मुद्दई की भविष्यवाणी हरगिज़ पूरी नहीं होती। यही कुर्आन की शिक्षा है और यही तौरात की। यदि आप में इन्साफ़ का कुछ भाग है और संयम का कुछ कण है तो अब जुबान को बन्द कर लें। खुदा तआला का प्रकोप आपके प्रकोप से बहुत बड़ा है।

ما يفعل الله بعذابكم ان شكرتم وامنتم والسلام على من اتبع الهدى
وما استكبر وما لى-

खाकसार - गुलाम अहमद उफ़ियल्लाहु अन्हो

नीचे हम प्रिय नवाब सरदार मुहम्मद अली ख़ान साहिब का पत्र लिखते हैं। यह पत्र नवाब साहिब ने किसी अन्य सत्याभिलाषी की प्रेरणा से लिखा है, अन्यथा नवाब साहिब स्वयं इस खाकसार से एक विशेष निष्ठा तथा प्रेम का संबंध रखते हैं और इस जमात के तन-मन से समर्थक हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

रूहानी चिकित्सक मुकर्रम-व-मुअज़्ज़म

सल्लमहुल्लाहु तआला

अस्सलामो अलै कुम। बन्दा तबियत की खराबी के कारण उत्तर से असमर्थ रहा। अलहमदुलिल्लाह कि अब ख़ैरियत से हूँ। आशा है कि आप भी ख़ैरियत से होंगे। रुपया मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब के हाथ भेजा गया है। आशा है कि मिर्ज़ा साहिब ने आप से सब हाल वर्णन कर दिया होगा।

जब से कि दावा **मसीले मसीह** का प्रचार हुआ है प्रत्येक व्यक्ति एक अद्भुत दुबिधा में पड़ा हुआ है। यद्यपि कुछ विशेष लोगों की यह हालत है कि उनको कोई सन्देह पैदा न हुआ हो, खाकसार तभी से असमंजस में है कभी आप का दावा ठीक मालूम होता है और कभी असमंजस की हालत हो जाती है मानो कशमकश की स्थिति है। अब तर्क-वितर्क बहुत हो चुका। अपनी तो इस से संतुष्टि नहीं होती, क्योंकि प्रतिकूल और अनुकूल बातों ने दिल की विचित्र

हालत कर दी है, बल्कि कभी-कभी **इस्लाम** के सच्चे होने में सन्देह हो जाता है। इसका कारण यह है कि एक ओर खुदा तआला पवित्र कुर्आन में फ़रमाता है कि जिसने हमारे मार्ग में कोशिश की हम उस को अपना मार्ग दिखाते हैं और दूसरी तरफ यह आश्चर्य है कि वह वादा पूरा नहीं होता, यद्यपि किसी ने इस्तिखार: न किया हो परन्तु सैकड़ों लोग दिलो जान से प्रयासरत हैं कि हम को सीधा मार्ग ज्ञात हो जाए और सच्चाई प्रकट हो।

अब निम्नलिखित बातें ऐसी मालूम होती हैं कि जिससे अब सच्चाई प्रकट हो।

प्रथम - अब कोई बहाना इस प्रकार का नहीं रहा कि अब विरोधियों को मुबाहले के लिए न बुलाया जाए क्योंकि जैसा कि आपने मौलवी अब्दुल हक के उत्तर में लिखा था कि जब तक मुबाहसा होकर मुबाहले की मांग न हो मुबाहला नहीं हो सकता, क्योंकि यह मतभेद विवेचनात्मक (इज्तिहादी) है किन्तु अब यह बात नहीं रही बल्कि विरोध बहुत बढ़ गया है और हुज्जत पूरी हो चुकी। अब आपको विरोधियों से मुबाहला करना चाहिए और ध्यान करके अल्लाह तआला से इस बात की आज्ञा मांगनी चाहिए कि मुबाहला किया जाए। और उस मुबाहले का प्रभाव निकट समय में हो जो माह-दो माह से अधिक न हो कि लोग दूर की समय-सीमा से घबरा जाते हैं। यदि यह कहा जाए कि मुबाहले से जो लोग न मानने वाले नहीं हैं नहीं मानेंगे। इसमें गुज़ारिश यह है कि जो न मानने वाले हैं वे न मानें परन्तु वे लोग जो दुबिधा में हैं वे ज़रूरी मान जाएंगे। एक यह बड़ा भारी लाभ है कि बैअत कर चुके लोगों का ईमान मज़बूत हो जाएगा। बहरहाल अब मुबाहला अनिवार्य है।

द्वितीय - 'निशान-ए-आसमानी' में आपने जो इस्तिखार: के बारे में फ़रमाया है कि बैर और प्रेम से पवित्र होकर, क्योंकि इस हालत में शैतान हस्तक्षेप करता है और फिर विचार के अनुसार इल्का होता है। अतः इन दोनों बातों से बरी होकर अमल करना चाहिए। अब इस बात में बड़ी मुश्किल सामने आ गई। पहली- या तो आदमी विरोधी होगा या समर्थक। अतः इस पत्र के अनुसार समर्थक लोगों को समर्थन में और विरोधियों को विरोधी इल्का (इल्हाम) होगा। सारा दारोमदार

कल्पना-शक्ति पर रहा। दूसरे- इन्सानों की विशेषता है कि जिस बात से रोका जाए उस तरफ स्वाभाविक रूप से झुकेगा। अतः यदि आप यह बात प्रकट न करते तो शायद ऐसा विचार भी न होता परन्तु जब प्रकट किया गया तो कुछ न कुछ विचार ज़रूरी पैदा होगा और कल्पना-शक्ति रंग दिखाएगी। तीसरे - जबकि यह इस्तिखारः वास्तव में विरोधियों के लिए है और विरोधियों को अपने विरोध के कारण से विरोधी इल्का हुआ तो फिर हुज्जत किस प्रकार पूरी हुई इस प्रकार शैतानी इल्का होने की गुंजायश है। अब इन तीनों अवस्थाओं के कारण बड़ी मुश्किल का सामना है। इस्तिखारः किस प्रकार किया जाए जबकि हर अवस्था में शैतानी इल्का होने की संभावना है और बैर एवं प्रेम से मुक्त होना कठिन तो काम किसी प्रकार चले। इसके लिए भी खुदा के लिए ध्यान लगा कर दुआ करें कि इस्तिखारः शैतानी इल्का से पवित्र हो। जो कोई इस्तिखारः करे चाहे अनुकूल हो या प्रतिकूल सब पर समानरूप से वास्तविक सच्चाई खुल जाए और इसमें से शैतान का हस्तक्षेप जाता रहे। चूंकि यह अहम बात है इसलिए शैतान से बचने के लिए खुदा से सहायता मांगना अनिवार्य है। और आश्चर्य है कि खुदा के कार्य पर शैतान विजयी हो। यदि खुदा तआला हमारी सहायता न करेगा और हमें शैतानी इल्का से नहीं बचाएगा तो हम हिदायत कैसे पाएंगे। अतः जब खुदा की सहायता के बिना कोई बात नहीं हो सकती तो विनती है कि आप दुआ करें कि इस इस्तिखारे में शैतान का हस्तक्षेप न रहे और इस का विज्ञापन दिया जाए और मेहरबानी करके दस-पन्द्रह दिन में ध्यान देकर इजाजत मांगें, खाकसार भी इस्तिखारः के लिए तैयार है। जिस समय आपको इन तीनों बातों के बारे में इल्का हो जाएगा कि यह इस्तिखारः शैतानी इल्का से बरी है और इस का प्रभाव विरोधी और अनुकूल (मित्र) पर एक समान होगा, उस समय खाकसार इस्तिखारः करेगा और अधिक से अधिक एक माह तक सही उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी। उत्तर से अभिप्राय यह पत्र नहीं बल्कि जो बात आपको इस्तिखारः के बारे में ध्यान और दुआ के बाद मालूम हो वह हैं।

तृतीय -कोई विलक्षण मामला होना चाहिए ताकि लोगों पर हुज्जत स्थापित हो।

इन तीनों बातों के बारे में मैं अत्यन्त सम्मानपूर्वक निवेदन करता हूँ कि इस बारे में खुदा के लिए ध्यान दें क्योंकि तर्क-वितर्क बहुत हो चुका, और इस से शंका बढ़ती जा रही है अब प्रमाणित हो चुका अब दूसरी तरफ ध्यान देना चाहिए।

पाए इस्तिदलालियान चौबीन बुवद
पाए चौबीन सख्त बेतम्कीन बुवद
गर बइस्तिदलाल कारे दीन बुदे
फ़ख़ राज़ी राज़दारे दीन बुदे

अनुवाद- दलीलों पर भरोसा करने वालों का पैर लकड़ी का होता है और लकड़ी का पैर बहुत कमजोर होता है। अगर धर्म का दारोमदार दलीलें पेश करने पर होता तो फाखरूद्दीन राज़ी धर्म के राज़दान होते।

और मैं अत्यन्त विनयपूर्वक आपको उसी एक खुदा की क़सम देकर कहता हूँ जिसने आप को, मुझ को और कुल कायनात को पैदा किया कि उपरोक्त तीनों कथित बातों के लिए ध्यान करके दुआ करें और दुआ में यह भी दरख्वास्त हो कि समय-सीमा निकट हो न कि दूर। चूँकि दोनों तरफ रिश्ता नाजुक है और धार्मिक कार्य है। इस पत्र को धृष्टता न समझें बल्कि लाभ युक्त समझें। चूँकि मैं आप की बैअत में हूँ। इस लिए दिल की संतुष्टि के लिए आपको कष्ट दिया गया।

एक और बात याद आई कि अब पत्र का विश्वास जाता रहा, क्योंकि जो आप के श्रद्धालु हैं वे आप के पत्र का विश्वास करेंगे और जो विरोधी हैं वे विरोधियों का विश्वास करेंगे। बीच में पिस गए वे लोग जो दोनों पत्रों को न्यायपूर्वक देख कर फैसला करना चाहते हैं। इसलिए उनको किसी का भी विश्वास न रहा, क्योंकि इनका न कोई विशेष संबंध और संगत आप से है और न विरोधियों से। इनकी तो हर समय परीक्षा रहेगी।

इस पत्र को कम से कम तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ें। यद्यपि यह पत्र देखने में आप के नाम है परन्तु इसकी बहुत सी इबारतें दूसरों के भ्रमों को दूर करने के लिए हैं यद्यपि देखने में आप ही सम्बोधित हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

प्रिय भाई नवाब मुहम्मद अली खान साहिब सल्लमहुल्लाह तआला

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू।

एक सप्ताह से बल्कि दस दिन से अधिक समय गुज़र गया कि आप का पत्र पहुंचा था। चूंकि इसमें बहुत सी बातें पूछी गई थीं और मुझे पुस्तक 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' लिखने के कारण फ़ुर्सत नहीं थी क्योंकि प्रतिदिन लेख तैयार करके दिया जाता है। इसलिए मैं उत्तर लिखने से असमर्थ रहा और आपकी तरफ से मांग भी नहीं थी। आज मुझे विचार आया कि चूंकि आप एक निष्कपट प्रेमी हैं और आप का पूछना सर्वथा नेक इरादे और नेक नीयत पर आधारित है। इसलिए कुछ बातों से आपको अवगत करना तथा आप के लिए जो अच्छा है उस से सूचित करना एक आवश्यक बात है। इसलिए कुछ पंक्तियां आप की जानकारी के लिए नीचे लिखता हूं। -

यह सच है कि जब से इस खाकसार ने अल्लाह तआला के आदेश से मसीह मौऊद होने का दावा किया है तब से वे लोग जो अपने अन्दर निर्णय-शक्ति नहीं रखते विचित्र प्रकार की दुविधा और असमंजस में पड़ गए हैं और आप कहते हैं कि तर्क-वितर्क से फैसला नहीं हो सकता। मुबाहले के लिए अब तैयार होना चाहिए और आप यह भी कहते हैं कि कोई निशान भी दिखाना चाहिए।

(1) मुबाहले के बारे में आप के पत्र से कुछ दिन पूर्व मुझे स्वयं खुदा तआला ने इजाज़त दे दी है और यह खुदा तआला के इरादे से आपके इरादे का मिलन है कि आप के दिल में यह खयाल आया। मुझे मालूम होता है कि अब इजाज़त देने में दूरदर्शिता यह है कि प्रथमयता इस समय मुबाहलः केवल इसलिए उचित नहीं था कि अभी विरोधियों को भली भांति समझाया नहीं गया था और वे मूल वास्तविकता से पूर्णतया अपरिचित थे और काफ़िर ठहराने पर भी उन का वह जोश न था जो इसके बाद हुआ परन्तु अब 'आईना कमालात-ए-इस्लाम'

लिखने के बाद स्पष्टीकरण अपनी पूर्णता को पहुंच गया और अब इस पुस्तक को देखने से एक थोड़ी योग्यता का मनुष्य भी समझ सकता है कि विरोधी लोग अपनी राय में सर्वथा गलती पर हैं। इसलिए मुझे आदेश हुआ है कि मैं मुबाहले की दरख्वास्त को पुस्तक आईना 'कमालात-ए-इस्लाम' के साथ प्रकाशित करूं। अतः वह दरख्वास्त इन्शाअल्लाह प्रथम भाग के साथ ही प्रकाशित होगी। प्रारंभिक दिनों में मेरा यह भी विचार था कि मुसलमानों से क्यों मुबाहल: किया जाए, क्योंकि मुबाहल: एक दूसरे पर लानत भेजने को कहते हैं और मुसलमान पर लानत भेजना उचित (जायज़) नहीं, परन्तु अब चूंकि वे लोग बड़े हठपूर्वक मुझे काफ़िर ठहराते हैं और शरीअत का आदेश यह है कि जो व्यक्ति किसी मुसलमान को काफ़िर ठहराए यदि वह व्यक्ति वास्तव में काफ़िर न हो तो वह कुफ़्र उलट कर उसी पर पड़ता है जो काफ़िर ठहराता है। इसी आधार पर मुझे यह आदेश हुआ है कि जो लोग तुझ को काफ़िर ठहराते हैं और बीवी बच्चों वाले हैं और फ़त्वा कुफ़्र के सरगना हैं उन से मुबाहले की दरख्वास्त कर।

(2) निशान के बारे में आपने जो लिखा है यह भी उचित है। वास्तव में मनुष्य दो प्रकार के होते हैं। प्रथम वे जो प्रतिभाशाली और बुद्धिमान हैं और अपने अन्दर निर्णय-शक्ति रखते हैं तथा प्रतिद्वन्दियों के वाद-विवाद में से जो वर्णन सत्य की प्रतिष्ठा और बरकत एवं प्रकाश अपने अन्दर रखता है उस वर्णन को पहचान लेते हैं और झूठ जो कृत्रिमता और बनावट की दुर्गन्ध रखता है वह भी उनकी दृष्टि से छिपा नहीं रहता। ऐसे लोग उदारणतया हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पहचानने के लिए इस बात के मोहताज नहीं हो सकते कि उनके सामने डंडे का सांप बना दिया जाए और न हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को पहचानने के लिए मुहताज हो सकते हैं कि उनके हाथ से लक़्वा मारे तथा कोढ़ियों का अच्छा होते देख लें और न हमारे सय्यद-व-मौला हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में ऐसे उच्च श्रेणी के लोगों ने कभी चमत्कार की मांग की। कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि महान सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कोई चमत्कार देख कर ईमान लाए थे बल्कि वे बुद्धिमान थे और हार्दिक प्रकाश रखते थे।

उन्होंने आंखें मूंद लीं और सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुंह देख कर पहचान लिया था कि यह झूठों का मुंह नहीं है। इसलिए खुदा तआला के नज़दीक सत्यनिष्ठ (सिद्दीक़) और ईमानदार ठहरे। उन्होंने सच को देखा तथा उनके दिल बोल उठे कि यह अल्लाह की तरफ से है।

दूसरे प्रकार के वे लोग हैं जो चमत्कार और करामात मांगते हैं उनकी हालतों को खुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में प्रशंसा के साथ वर्णन नहीं किया और अपना क्रोध व्यक्त किया है। जैसा कि एक स्थान पर फ़रमाता है -

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لِّيُؤْمِنُوا بِهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا
الْآيَاتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١١٠﴾

(अलअन्आम-110)

अर्थात् ये लोग पुख्ता कसमें रखते हैं कि यदि कोई निशान देखें तो ज़रूरी ईमान ले आएंगे। उन को कह दे कि निशान तो खुदा तआला के पास हैं और तुम्हें ख़बर नहीं कि जब निशान भी देखेंगे तो कभी ईमान नहीं लाएंगे। फिर फ़रमाता है -

يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ أَمَنَتْ مِنْ قَبْلُ

(अलअन्आम-159)

अर्थात् जब कुछ निशान प्रकट होंगे तो उस दिन ईमान लाना बेफ़ायदा होगा और जो व्यक्ति केवल निशान के देखने के बाद ईमान लाया है उसे वह ईमान लाभ नहीं देगा।

फिर फ़रमाता है -

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٠٩﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي
ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ

(यूनुस- 10/49,50)

अर्थात् काफ़िर कहते हैं कि वे निशान कब प्रकट होंगे और यह वादा कब पूरा होगा। अतः उनको कह दे कि मुझे इन बातों में कोई अधिकार नहीं। न मैं अपने लिए हानि का मालिक हूँ न लाभ का, सिवाए उसके जो खुदा चाहे। हर

एक गिरोह के लिए एक समय निर्धारित है जो टल नहीं सकता। और फिर अपने रसूल को फ़रमाता है -

وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ
أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَى فَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٦﴾ (अलअन्आम-36)

अर्थात् यदि तुझ पर (हे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन काफ़िरों का विमुख होना बहुत भारी है। अतः यदि तुम में शक्ति है तो पृथ्वी में सुरंग खोद कर या आकाश पर सीढ़ी लगा कर चला जा। और उनके लिए कोई निशान ले आ। और यदि ख़ुदा चाहता तो इन सब को जो निशान मांगते हैं हिदायत दे देता। अतः तू जाहिलों में से मत हो।

अब इन समस्त आयतों से मालूम होता है कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक युग में काफ़िर निशान मांगा करते थे बल्कि क्रसमें भी खाते थे कि हम ईमान लाएंगे। परन्तु अल्लाह तआला की दृष्टि में वे प्रकोप के पात्र थे और उन के प्रश्न व्यर्थ थे, बल्कि अल्लाह तआला बहुत स्पष्ट तौर पर फ़रमाता है कि जो व्यक्ति निशान देखने के बाद ईमान लाए उसका ईमान स्वीकृत नहीं जैसा कि अभी आयत **لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا** का उल्लेख हो चुका है तथा इसी के करीब करीब एक दूसरी आयत है, और वह यह है -

وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ
قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾

(अलआराफ़-102)

अर्थात् पहली उम्मतों में जब उनके नबियों ने निशान दिखलाए तो लोग उन निशानों को देख कर भी ईमान न लाए, क्योंकि वे निशान देखने से पहले झुठला चुके थे। इसी प्रकार ख़ुदा उन लोगों के दिलों पर मुहरें लगा देता है जो इस प्रकार के काफ़िर हैं जो निशान से पहले ईमान नहीं लाते।

ये समस्त आयतें और पवित्र कुर्आन की ऐसी ही और बहुत सी आयतें

जिन का इस समय लिखना विषय का विस्तृत होना है पूर्ण सहमति के साथ बता रही है कि निशान चाहने वाले खुदा के प्रकोप के पात्र होते हैं। और जो व्यक्ति निशान देख कर ईमान लाए उसका ईमान स्वीकार नहीं। इस पर दो आरोप आते हैं। प्रथम यह कि निशान मांगने वाले खुदा के प्रकोप के पात्र क्यों हैं। जो व्यक्ति अपनी सन्तुष्टि के लिए यह परीक्षा करना चाहता है कि यह व्यक्ति खुदा की ओर से है या नहीं। प्रत्यक्षतः वह निशान मांगने का अधिकार रखता है ताकि धोखा न खाए और खुदा से बहिष्कृत को खुदा का स्वीकृत (मक्बूल) न समझ ले।

इस भ्रम का उत्तर यह है कि सम्पूर्ण पुण्य (सवाब) ईमान पर आधारित होता है और ईमान इसी बात का नाम है कि जो बात ग़ैब के पर्दे में हो उसे सुदृढ़ लक्षणों की दृष्टि से स्वीकार किया जाए अर्थात् इतना देख लिया जाए कि उदाहरणतया सच्चाई के कारण, झूठ के कारणों पर विजयी हैं तथा मौजूद लक्षण एक व्यक्ति के सच्चा होने पर उसके झूठा होने की अपेक्षा बहुत अधिक पाए जाते हैं।

यह तो ईमान की सीमा है परन्तु यदि इस सीमा से बढ़कर कोई व्यक्ति निशान मांगता है तो खुदा के नज़दीक पापी है। इसी के बारे में अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है कि निशान देखने के बाद उसे ईमान लाभ नहीं देगा। यह बात विचार करने से शीघ्र समझ में आ सकती है कि मनुष्य ईमान लाने से खुदा तआला की प्रसन्नता क्यों प्राप्त करता है। इसका कारण यही है कि जिन चीज़ों को हम ईमान के तौर पर स्वीकार कर लेते हैं वे हर प्रकार से हम पर प्रकट नहीं होतीं। उदाहरणतया मनुष्य खुदा तआला पर ईमान लाता है परन्तु उसको देखा नहीं, फ़रिश्तों पर भी ईमान लाता है परन्तु वे भी नहीं देखे, स्वर्ग और नर्क पर ईमान लाता है और वे भी नज़र से ग़ायब हैं, केवल सुधारणा से मान लिया है। इसलिए खुदा के नज़दीक सच्चा ठहर जाता है। यह सच उसके लिए मुक्ति का कारण हो जाता है अन्यथा प्रकट है कि स्वर्ग और नर्क तथा फ़रिश्ते खुदा तआला की एक सृष्टि (मख़्लूक) है उन पर ईमान लाना मुक्ति (निजात) से क्या संबंध रखता है। जो वस्तु वास्तविक तौर पर उसका मौजूद

होना प्रकट है। यदि हम उसे मौजूद मान लें तो हम किसी प्रतिफल के अधिकारी ठहर सकते हैं उदाहरणतया यदि हम यह कहें कि सूर्य के अस्तित्व पर ईमान लाए और पृथ्वी पर ईमान लाए कि मौजूद है और चन्द्रमा के मौजूद होने पर भी ईमान लाए तथा इस बात पर ईमान लाए कि संसार में गधे भी हैं और घोड़े भी हैं और खच्चर भी और बैल भी तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के पक्षी भी तो क्या इस ईमान से किसी पुण्य (सवाब) की आशा हो सकती है। फिर क्या कारण है कि जब हम उदाहरणतया फ़रिश्तों के अस्तित्व पर ईमान लाते हैं तो खुदा तआला के नज़दीक मोमिन ठहरते हैं और पुण्य (सवाब) के पात्र बनते हैं और जब हम उन समस्त जानवरों पर ईमान लाते हैं जो पृथ्वी पर हमारी दृष्टि के सामने मौजूद हैं तो एक कण भर भी सवाब नहीं मिलता, हालांकि फ़रिश्ते और अन्य समस्त वस्तुएं समान रूप से खुदा तआला की मख़्लूक (सृष्टि) हैं। अतः इसका यही कारण है कि फ़रिश्ते ग़ैब (परोक्ष) के पर्दे में हैं और अन्य वस्तुएं निश्चित तौर पर हमें मालूम हैं। यही कारण है कि क़यामत के दिन ईमान लाना स्वीकार नहीं होगा। अर्थात् उस समय कोई व्यक्ति खुदा तआला के चमत्कारों को देख कर और उस के फ़रिश्तों, स्वर्ग तथा नर्क को देखकर यह कहे कि अब मैं ईमान लाया तो स्वीकार न होगा। क्यों स्वीकार न होगा? इसी कारण से कि उस समय कोई ग़ैब का पर्दा बीच में न होगा ताकि उस से मानने वाले की सच्चाई सिद्ध हो।

अब पुनः थोड़ा विचार करके इस बात को समझ लेना चाहिए कि ईमान किस बात को कहते हैं और ईमान लाने पर क्यों सवाब मिलता है। आशा है कि आप खुदा तआला के फ़ज़ल से थोड़ा सा विचार करके इस बात को शीघ्र समझ जाएंगे कि ईमान लाना उस प्रकार से स्वीकार करना अभिप्राय है कि जब कुछ कोने अर्थात् पहलू किसी वास्तविकता के कुछ पहलू को जिस पर ईमान लाया जाता है गुप्त हों और बारीक दृष्टि से सोचकर तथा अति वरीय लक्षणों को देखकर उस वास्तविकता को इस से पूर्व कि वह पूर्णतया खुल जाए स्वीकार कर लिया जाए, यह ईमान है जिस पर सवाब संकलित होता है। यद्यपि रसूलों, नबियों और औलिया किराम अलैहिमिस्सलाम से निस्सन्देह निशान प्रकट होते हैं

परन्तु नेक आदमी जो खुदा तआला के प्रिय हैं उन निशानों से पहले अपने यही विवेक के साथ स्वीकार कर लेते हैं। जो लोग निशानों के बाद स्वीकार करते हैं वे लोग खुदा तआला की दृष्टि में अपमानित और महत्त्वहीन हैं, बल्कि पवित्र कुर्आन बुलन्द आवाज़ से वर्णन करता है कि जो लोग निशान देखे बिना सच्चाई को स्वीकार नहीं कर सकते वे निशान के बाद भी स्वीकार नहीं करते। क्योंकि निशान के प्रकट होने से पहले वे स्पष्ट इन्कार करने वाले होते हैं और खुल्लम-खुल्ला कहते फिरते हैं कि यह व्यक्ति कज़्ज़ाब और झूठा है क्योंकि इसने कोई निशान नहीं दिखाया और इनकी गुमराही (पथ भ्रष्टता) का बड़ा कारण यह होता है कि खुदा तआला भी अपने बन्दों की परीक्षा के कारण निशान दिखाने में जानबूझ कर देर और विलम्ब करता है और वे लोग झुठलाने तथा इन्कार करने में बढ़ते जाते हैं यहाँ तक कि इन्कार में बढ़ते-बढ़ते अपनी रायों को सुदृढ़ कर लेते हैं और दावे के साथ कहने लगते हैं कि यह व्यक्ति वास्तव में झूठा है मुफ्तरी है, मक्कार है, झूठ बोलने वाला है झूठा है और खुदा तआला की तरफ से नहीं है। अतः जब वे कट्टरता के साथ अपनी राय को स्थापित कर चुकते हैं और भाषणों तथा लेखों के द्वारा मज्लिसों में बैठ कर और मिम्बरों पर चढ़ कर अपनी स्थायी राय संसार में फैला देते हैं कि वास्तव में यह व्यक्ति कज़्ज़ाब है। तब उस समय खुदा का फ़ज़ल ध्यान देता है कि अपने असहाय बन्दे का सम्मान और सच्चाई प्रकट करने के लिए अपना कोई निशान प्रकट करे, तो कोई ग़ैबी (परोक्ष से) निशान प्रकट होता है जिससे केवल वे लोग लाभान्वित होते हैं जो पहले मान चुके थे और सच्चाई के सहायकों में सम्मिलित हो गए थे या वे जिन्होंने अपनी जुबानों और अपनी लेखनियों और अपने विचारों को विरोधात्मक अभिव्यक्ति से बचा लिया था। किन्तु वह अभागा गिरोह जो विरोधात्मक इरादों को व्यक्त कर चुके थे वे निशान देखने के बाद भी उसे स्वीकार नहीं कर सकते। क्योंकि वे तो अपनी रायें खुले आम प्रकाशित कर चुके, विज्ञापन दे चुके, मुहरें लगा चुके कि यह व्यक्ति वास्तव में बहुत झूठा है। इस लिए अब अपनी प्रसिद्ध की हुई राय से विरोधी इक्रार करना उनके लिए मृत्यु से भी अधिक कठिन हो जाता है। क्योंकि

इस से उनकी नाक कटती है और हजारों लोगों पर उनकी मूर्खता सिद्ध होती है कि पहले तो बड़ी धूम धाम से दावा करते थे कि यह व्यक्ति ज़रूरी झूठा है, ज़रूरी झूठा है और क्रसमें खाते तथा अपनी बुद्धि और ज्ञान का प्रदर्शन करते थे अब उसी का समर्थन करते हैं।

और मैं इस से पूर्व वर्णन कर चुका हूँ कि ईमान लाने पर सवाब इसी कारण मिलता है कि ईमान लाने वाला सच्चाई के कुछ लक्षणों की दृष्टि से ऐसी बातों को स्वीकार कर लेता है जो अभी गुप्त हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में मोमिनों की परिभाषा की है कि **يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ** अर्थात् ऐसी बात को स्वीकार कर लेते हैं कि वह अभी ग़ैब के पर्दे में है। जैसा कि आदरणीय सहाबा किराम ने हमारे सय्यदुल मौला अलैहि वसल्लम को स्वीकार कर लिया और किसी ने निशान नहीं मांगा तथा कोई सबूत नहीं चाहा और यद्यपि इसके बाद अपने समय पर वर्षा के समान निशान बरसे तथा चमत्कार प्रकट हुए परन्तु आदरणीय सहाबा ईमान लाने में चमत्कारों के मुहताज नहीं हुए। यदि वे चमत्कारों के देखने पर ईमान को निर्भर रखते तो एक उनकी लेशमात्र महानता सिद्ध न होती और जन साधारण में गिने जाते तथा ख़ुदा तआला के मान्य और प्रिय लोगों में सम्मिलित न हो सकते। क्योंकि जिन-जिन लोगों ने निशान मांगा ख़ुदा तआला ने उन पर आक्रोश प्रकट किया और वास्तव में उन का अंजाम अच्छा न हुआ और प्रायः वे बेईमानी की हालत में ही मरे। सारांश यह कि ख़ुदा तआला की समस्त किताबों से सिद्ध होता है कि किसी क्रौम के लिए निशान मांगना मुबारक नहीं हुआ और जिसने निशान मांगा वही तबाह हुआ। इंजील में भी हज़रत मसीह फरमाते हैं- कि इस समय के हरामकार (पापी) मुझ से निशान मांगते हैं इनको कोई निशान नहीं दिया जाएगा।

मैं पहले भी लिख चुका हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति के दिल में स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि मनुष्य बिना किसी निशान के सच और झूठ में अन्तर कैसे कर सकता है और यदि निशान देखने के बिना किसी को ख़ुदा की तरफ़ से होने वाला स्वीकार किया जाए तो संभव है कि इस स्वीकार करने में धोखा हो।

इसका उत्तर वही है जिसका मैं पहले उल्लेख कर चुका हूँ कि खुदा तआला ने ईमान का सवाब प्रायः इसी बात से प्रतिबंधित कर रखा है कि निशान देखने से पहले ईमान हो तथा सच और झूठ में अन्तर करने के लिए यह पर्याप्त है कि कुछ लक्षण जो सत्यापन का कारण हो सकें अपने हाथ में हों और सत्यापन का पलड़ा झुठलाने के पलड़े से भारी हो। उदाहरणतया हज़रत सिद्दीक़ अकबर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए तो उन्होंने कोई चमत्कार नहीं मांगा और जब पूछा गया कि क्यों ईमान लाए तो वर्णन किया कि मुझ पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अमीन (अमानतदार) होना सिद्ध है और मैं विश्वास रखता हूँ कि उन्होंने कभी किसी मनुष्य के बारे में भी झूठ को इस्तेमाल नहीं किया कहां यह बात कि खुदा तआला पर झूठ बांधें। ऐसी ही अपनी-अपनी रुचि के अनुसार प्रत्येक सहाबी आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक-एक नैतिक या शिक्षा संबंधी श्रेष्ठता देखकर तथा अपनी बारीक दृष्टि से उसे सच्चाई का कारण ठहरा कर ईमान लाए थे, और उन में से किसी ने भी निशान नहीं मांगा था। सच्चे और झूठे में अन्तर करने के लिए उनकी निगाहों में यह पर्याप्त था कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक्वा (संयम) की उच्च श्रेणियों पर हैं। अपने पद की अभिव्यक्ति में बड़ी बहादुरी एवं दृढ़ता रखते हैं और जिस शिक्षा को लाए हैं वह अन्य समस्त शिक्षाओं से शुद्धतम, पवित्रतम तथा सर्वथा प्रकाश है और आप सम्पूर्ण प्रशंसित शिष्टाचार में अद्वितीय हैं और उन में खुदा के लिए उच्च स्तर के जोश पाए जाते हैं तथा उनके चेहरे पर सच्चाई बरस रही है। इन्हीं बातों को देख कर उन्होंने स्वीकार कर लिया कि वह वास्तव में खुदा तआला की ओर से हैं। यहां यह न समझा जाए कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चमत्कार प्रकट नहीं हुए बल्कि समस्त नबियों से अधिक प्रकट हुए परन्तु खुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि प्रारंभ में खुले-खुले चमत्कार गुप्त रहते हैं ताकि सच्चे की सच्चाई तथा झूठों का झूठ परखा जाए। यह समय आजमायश (परीक्षा) का होता है और इसमें कोई खुला-खुला निशान प्रकट नहीं होता। फिर जब पवित्र दिलों का एक गिरोह अपनी

बारीक दृष्टि से ईमान ले आता है और जानवरों के समान लोग शेष रह जाते हैं। और फिर उन पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूरा करने के लिए या फिर उन पर अज़ाब उतारने के लिए निशान प्रकट होते हैं परन्तु उन निशानों से वही लोग लाभ प्राप्त करते हैं जो पहले ईमान ला चुके थे। और बाद में ईमान लाने वाले बहुत कम होते हैं क्योंकि प्रतिदिन झुठलाने के कारण उनके दिल कठोर हो जाते हैं और अपनी प्रसिद्ध की हुई रायों को वे बदल नहीं सकते। अन्ततः उसी कुफ़्र और इन्कार में नर्क में प्रवेश कर जाते हैं।

मेरी हार्दिक इच्छा है और मैं दुआ करता हूँ कि आपको यह बात समझ आ जाए कि वास्तव में ईमान को समझने के लिए यह बात आवश्यक है कि गुप्त बातों को मान लिया जाए और जब एक चीज़ की वास्तविकता हर प्रकार से स्पष्ट हो जाए यह एक बड़ा भाग उसका खुल जाए तो फिर उसका मान लेना ईमान में शामिल नहीं। उदाहरणतया अब जो दिन का समय है यदि मैं यह कहूँ कि मैं इस बात पर ईमान लाता हूँ कि अब दिन है, रात नहीं है तो मेरे इस मानने में क्या विशेषता होगी और इस मानने में मुझे दूसरों पर क्या खूबी है। नेक मनुष्य का पहला लक्षण यही है कि इस मुबारक बात को समझ ले कि ईमान किस चीज़ का नाम है, क्योंकि संसार के प्रारंभ से जितने लोग नबियों का विरोध करते आए हैं उनकी अक़लों पर यही पर्दा पड़ा हुआ था कि वे ईमान की वास्तविकता को नहीं समझते थे और चाहते थे कि जब तक दूसरी देखी और महसूस की हुई बातों की भांति नबियों की नुबुव्वत तथा उनकी शिक्षा स्पष्ट न हो जाए तब तक स्वीकार करना उचित नहीं और वे मूर्ख यह नहीं सोचते थे कि खुली हुई चीज़ को मानना ईमान में कैसे सम्मिलित होगा। वह तो ज़्यामति और हिसाब की भांति एक विद्या हुई न कि ईमान। अतः यही पर्दा था जिसके कारण अबू जहल और अबू लहब इत्यादि प्रारंभ में ईमान लाने से वंचित रहे और फिर जब अपने झुठलाने में दृढ़ हो गए और विरोधी रायों पर हठ कर चुके उस समय आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई के खुले-खुले निशान प्रकट हुए। तब उन्होंने कहा कि अब स्वीकार करने से मरना बेहतर है अतः दूरदर्शिता

से सच्चे की सच्चाई को पहचानना नेक लोगों का काम है और निशान मांगना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण और भाग्यहीन लोगों का आचरण है जिसके कारण करोड़ों इन्कारी नर्क का ईंधन हो चुके हैं। खुदा तआला अपने नियम को परिवर्तित नहीं करता। वह जैसा कि उसने कह दिया है उन्हीं के ईमान को ईमान समझता है जो अधिक हठधर्मी नहीं करते और अति वरीय लक्षणों को देख कर तथा सच्चाई के लक्षणों को पाकर सच्चे को स्वीकार कर लेते हैं और सच्चों का कलाम उसकी ईमानदारी, उसकी दृढ़ता तथा स्वयं सच्चे का मुंह उन के नज़दीक उनकी सच्चाई पर गवाह होता है। मुबारक वह जिन को लोगों की पहचानने की बुद्धि प्रदान की जाती है।

इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति एक अनुकरणीय नबी अलैहिस्सलाम का अनुयायी है उसके कथन और खुदा की किताब पर ईमान लाता है उसकी परीक्षा नबियों की परीक्षा की भांति करना एक प्रकार की मूर्खता है क्योंकि नबी इस लिए आते हैं ताकि एक धर्म से दूसरे धर्म में सम्मिलित करें और एक क्रिब्ल: (केंद्र) से दूसरा क्रिब्ल: निर्धारित कराएं तथा कुछ आदेशों को निरस्त करें और कुछ नए आदेश लाएं। परन्तु यहां तो ऐसी क्रान्ति (इन्किलाब) का दावा नहीं है, वही इस्लाम है जो पहले था, वही नमाज़ें हैं जो पहले थीं, वही मान्य रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जो पहले था और वही पवित्र किताब है जो पहले थी। वास्तविक धर्म में से कोई ऐसी बात छोड़नी नहीं पड़ी जिस से इतना आश्चर्य हो। **मसीह मौऊद** का दावा इस स्थिति में भारी और सावधानी योग्य होता जबकि इस दावे के साथ नऊजुबिल्लाह धर्म के कुछ आदेशों की कमी या बढ़त होती तथा हमारी व्यावहारिक स्थिति दूसरे मुसलमानों से कुछ भिन्न होती। अब जबकि इन बातों में से कोई भी नहीं, विवादित बात केवल मसीह का जीवित रहना और मृत्यु पा जाना है और मसीह मौऊद का दावा वास्तव में इस समस्या का एक भाग है तथा इस दावे से अभिप्राय कोई क्रियात्मक इन्किलाब नहीं और न इस्लामी आस्थाओं पर इसका कुछ विरोधात्मक प्रभाव है। तो क्या इस दावे को स्वीकार करने के लिए किसी बड़े चमत्कार या करामत की आवश्यकता

है, जिसका मांगना रिसालत के दावे में जन साधारण की पुरानी परिपाटी है। एक मुसलमान जिसे खुदा तआला ने इस्लाम की सहायता के लिए भेजा जिसके उद्देश्य ये हैं कि ताकि लोगों पर इस्लाम की खूबियां प्रकट करे और आजकल के फल्सफ़ी इत्यादि आरोपों से इस्लाम का पवित्र होना सिद्ध कर दे तथा मुसलमानों को अल्लाह और रसूल की मोहब्बत की ओर प्रेरित करे क्या उसको स्वीकार करना एक न्यायप्रिय और खुदा से डरने वाले मनुष्य कोई कठिन बात है?

मसीह मौऊद का दावा यदि अपने साथ ऐसे साधन रखता जिनसे शरीअत के आदेशों और आस्थाओं पर कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ता तो निस्सन्देह एक गंभीर विषय था, किन्तु देखना चाहिए कि मैंने इस दावे के साथ किसी इस्लामी वास्तविकता को उलटा दिया है, इस्लाम के कौन से आदेशों में से एक कण भी कम या अधिक कर दिया है। हां एक भविष्यवाणी के वह अर्थ किए गए हैं जो खुदा तआला ने अपने समय पर मुझ पर खोले हैं और पवित्र कुआन उन अर्थों के सही होने पर गवाह है तथा सही हदीसों भी उनकी गवाही देती हैं। फिर न मालूम कि इतना क्यों शोर और कोलाहल है!

हां एक सत्याभिलाषी भी यहां एक प्रश्न कर सकता है, और वह यह कि मसीह मौऊद का दावा स्वीकार करने के लिए कौन से लक्षण मौजूद हैं, क्योंकि किसी मुद्दे की सच्चाई मानने के लिए लक्षण तो चाहिए विशेषतौर पर आजकल के युग में जो छल-प्रपंच और बेईमानी से भरा हुआ है और झूठे दावों का बाज़ार गर्म है।

इस प्रश्न के उत्तर में मेरा केवल यह कहना पर्याप्त है कि सत्याभिलाषी के लिए निम्नलिखित बातें बतौर लक्षणों एवं प्रतीकों के हैं।

(1) प्रथम आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह भविष्यवाणी जो अर्थ संबंधी निरन्तरता तक पहुंच गयी है, जिसका मतलब यह है कि खुदा तआला ने वादा किया है कि वह प्रत्येक सदी के सर पर ऐसे व्यक्ति को भेजेगा जो धर्म को पुनः ताज़ा कर देगा और उसके आडम्बरों को दूर करके उसे पुनः अपनी असली शक्ति और ताक़त पर ले आएगा। इस भविष्यवाणी की दृष्टि से

ज़रूरी था कि कोई व्यक्ति इस चौदहवीं सदी के सर पर भी ख़ुदा तआला की तरफ से भेजा जाता और वर्तमान खराबियों के सुधार के लिए पहल करता। तो यह ख़ाकसार ठीक समय पर मामूर हुआ। इस से पहले सैकड़ों वलियों ने अपने इल्हाम से गवाही दी थी कि चौदहवीं सदी का मुजद्दिद मसीह मौऊद होगा और सही नबवी हदीसों पुकार-पुकार कर कहती हैं कि तेरहवीं सदी के बाद मसीह का प्रकटन है। अतः क्या इस ख़ाकसार का यह दावा इस समय ठीक अपने स्थान और अपने समय पर नहीं है। क्या यह संभव है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन झूठा हो जाए। मैंने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि यदि मान लिया जाए कि चौदहवीं सदी के सर पर मसीह मौऊद पैदा नहीं हुआ तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कई भविष्यवाणियां झूठी होती हैं और सैकड़ों महान साहिबे इल्हाम झूठे ठहरते हैं।

(2) - इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि जब उलेमा से यह प्रश्न किया जाए कि चौदहवीं सदी का मुजद्दिद होने के लिए इस ख़ाकसार के अतिरिक्त और किस ने दावा किया है तथा किस ने ख़ुदा की तरफ से आने की सूचना दी है और मुल्हम तथा मामूर होने का दावा किया है। तो इसके उत्तर में वे बिल्कुल खामोश हैं और किसी व्यक्ति को प्रस्तुत नहीं कर सकते जिसने ऐसा दावा किया हो और यह स्मरण रखना चाहिए कि मसीह मौऊद होने का दावा ख़ुदा की ओर से मुल्हम और मुजद्दिद के दावे से कुछ बड़ा नहीं है। बिल्कुल स्पष्ट है कि जिसको यह पद प्राप्त हो कि वह ख़ुदा तआला से परस्पर बात करने वाला हो उसका नाम ख़ुदा की ओर से चाहे मसीले मसीह हो और चाहे मसीले मूसा हो। ये समस्त नाम उसके बारे में वैध हैं। मसील (समरूप) होने में कोई वास्तविक श्रेष्ठता नहीं। असली और वास्तविक श्रेष्ठता अल्लाह की ओर से इल्हाम प्राप्त करने वाले और उससे बात करने वाले को है। फिर जिस व्यक्ति को ख़ुदा तआला से वार्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया तथा किसी धार्मिक सेवा के लिए ख़ुदा की ओर से मामूर हो गया, तो अल्लाह तआला समय की स्थिति के अनुसार उस का कोई नाम रख सकता है। यह नाम

रखना तो कोई बड़ी बात नहीं। इस्लाम में लोग मूसा, ईसा, दाऊद, सुलेमान, याकूब इत्यादि बहुत से नाम नबियों के नाम पर रख लेते हैं इस शुभ शकुन की नीयत से कि उनके सदाचार उन्हें प्राप्त हो जाएं। फिर यदि खुदा तआला किसी को अपने साथ वर्तमान हित के अनुसार उसका कोई नाम भी रख दे तो इस में क्या असंभव वाली बात है?

और इस युग के मुजद्दिद का नाम मसीह मौऊद रखना इस हित पर आधारित मालूम होता है कि इस मुजद्दिद का महान कार्य ईसाइयत के आधिपत्य का खण्डन करना और उनके प्रहारों को दूर करना तथा उनके फ़ल्सफ़े को जो कुर्आन का विरोधी है का शक्तिशाली तर्कों के साथ खण्डन करना और उन पर इस्लाम का समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करना है। क्योंकि सबसे बड़ी आपदा इस युग में इस्लाम के लिए जो खुदा की सहायता के बिना दूर नहीं हो सकती ईसाइयों के फ़ल्सफ़ियों जैसे प्रहार तथा धार्मिक आलोचनाएं हैं जिनका निवारण आवश्यक था कि खुदा तआला की ओर से कोई आए। और जैसा कि मुझ पर कश्फ़ी तौर पर खोला गया है हज़रत मसीह की रूह इन झूठ गढ़ने के कारण जो उन पर इस युग में किए गए अपने मसील के तौर पर उतरने के लिए बहुत जोश में थी और खुदा तआला से निवेदन करती थी कि इस समय मिसाली तौर पर उसका नुज़ूल हो। अतः खुदा तआला ने उसके जोश के अनुसार उसकी मिसाल को दुनिया में भेजा ताकि वह वादा पूरा हो जो पहले से किया गया था।

यह खुदा के रहस्यों में से एक रहस्य है कि जब किसी रसूल या नबी की शरीअत उस के निधन के पश्चात् बिगड़ जाती है और उसकी मूल शिक्षाओं और निर्देशों को परिवर्तित करके उसकी ओर व्यर्थ और अनुचित बातें समबद्ध की जाती हैं और अकारण का झूठ बना कर यह दावा किया जाता है कि वे समस्त कुफ़्र और दुराचार की बातें उस नबी ने ही सिखाई थीं, तो उस नबी के दिल में उन खराबियों और झूठे आरोपों को दूर करने के लिए एक अत्याधिक ध्यान एवं उच्च स्तरीय जोश पैदा हो जाता है। तब उस नबी की रूहानियत चाहती है कि पृथ्वी पर उसका कोई स्थानापन्न (क्रायम मुक्राम) पैदा हो।

अब ध्यानपूर्वक इस मारिफ़त की बारीक बात को सुनो कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को दो बार यह अवसर हुआ कि उनकी रूहानियत ने प्रतिरूप चाहा। प्रथम जब उन के निधन पर छः सौ वर्ष गुज़र गए और यहूदियों ने इस बात पर सीमा से बढ़कर आग्रह किया कि वह नऊज़ुबिल्लाह धोखेबाज़ और झूठा था और उसका जन्म अवैध था। इसीलिए वह सूली पर चढ़ाया गया। ईसाइयों ने इस बात में अतिशयोक्ति की कि वह ख़ुदा था, ख़ुदा का बेटा था और संसार को मुक्ति देने के लिए उसने सलीब पर जान (प्राण) दी अतः जबकि मसीह अलैहिस्सलाम की बाबरकत शान में नीच यहूदियों ने अत्यन्त असभ्य जिरह की और तौरात की उस आयत के अनुसार जो पुस्तक 'इस्तिस्ना' में है कि जो व्यक्ति सलीब पर खींचा जाए वह लानती होता है। नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को लानती ठहराया और ठग, झूठा तथा अपवित्र जन्म वाला ठहराया और ईसाइयों ने उनके प्रशंसा में अतिशयोक्ति करके ख़ुदा ही बना दिया तथा उन पर यह झूठा आरोप लगाया कि यह शिक्षा उन्हीं की है। तब ख़ुदा की सूचना द्वारा मसीह की रूहानियत जोश में आई और उसने उन समस्त आरोपों से अपनी बरीयत चाही तथा ख़ुदा तआला से अपना प्रतिरूप चाहा। तब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित हुए जिनके अवतरण के बहुत से उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह भी था कि उन समस्त अनुचित आरोपों से मसीह का दामन पवित्र सिद्ध करें और उसके पक्ष में सच्चाई की गवाही दें। यही कारण है कि हज़रत मसीह ने यूहन्ना की इंजील के अध्याय 16 में कहा है कि -

मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि तुम्हारे लिए मेरा जाना ही लाभप्रद है। क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो सांत्वना देने वाला (अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम पास न आएगा। फिर यदि मैं जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा और वह आकर दुनिया को गुनाह से, सच्चाई से और न्याय से दोषी ठहराएगा। गुनाह से इसीलिए के वे मुझ पर ईमान नहीं लाए, सच्चाई से इसलिए कि मैं अपने बाप के पास जाता हूँ। और तुम मुझे फिर न देखोगे। न्याय से इसलिए कि इस संसार के सरदार पर आदेश किया गया है। जब वह रूहे हक़ आएगी तो तुम्हें सम्पूर्ण

सच्चाई का मार्ग बता देगी। वह रूहे हक़ मेरी बड़ाई करेगा इसलिए कि वह मेरी चीज़ों से पाएगी। 261 - वह सांत्वना देने वाला जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा वही तुम्हें सब चीज़ें सिखाएगा - लूका अध्याय 13 आयत 35 से। मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि मुझ को न देखोगे उस समय तक कि तुम कहोगे मुबारक है वह जो खुदा वन्द के नाम पर (अर्थात् मसीह अलैहिस्सलाम के नाम पर) आता है।

इन आयतों में मसीह का यह वाक्य कि मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा इस बात पर स्पष्ट रूप से मार्ग दर्शन करता है कि मसीह की रूहानियत उसके आने की मांग करेगी और यह वाक्य कि बाप उसको मेरे नाम से भेजेगा। इस बात को सिद्ध करता है कि वह आने वाला, मसीह की सम्पूर्ण आध्यात्मिकता पाएगा और अपनी विशेषताओं के एक पक्ष के अनुसार वह मसीह होगा जैसा कि एक पहलू के अनुसार वह मूसा है। बात यह है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त नबियों के नाम अपने अन्दर एकत्र रखते हैं क्योंकि वह पवित्र अस्तित्व विभिन्न विशेषताओं का संग्रह है। अतः वह मूसा भी है और ईसा भी, आदम भी है और इब्राहीम भी, यूसुफ़ भी है और याकूब भी। इसी की ओर अल्लाह तआला संकेत करता है -

(अलअन्आम-91) **فِيهِدُهُمْ اقْتَدَا**

अर्थात् हे खुदा के रसूल! तू उन समस्त निर्देशों को अपने अस्तित्व में एकत्र कर ले जो प्रत्येक नबी विशेष तौर पर अपने साथ रखता था। इस से सिद्ध है कि समस्त नबियों की प्रतिष्ठाएं आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व में सम्मिलित थीं और वास्तव मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी की ओर संकेत करता है। क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ये अर्थ हैं कि अत्यधिक प्रशंसा किया गया और प्रशंसा पराकाष्ठागत प्रशंसा तभी समझी जा सकती है जब नबियों की समस्त विभिन्न विशेषताएं एवं विशिष्ट गुण आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में एकत्र हों। अतः पवित्र कुर्आन की बहुत सी आयतें हैं जिन का इस समय लिखना विषय को लंबा करने का कारण होगा इसी की ओर मार्ग दर्शन करती हैं

बल्कि बड़ी स्पष्टतापूर्वक बताती हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पवित्र अस्तित्व अपनी विशेषताओं एवं खूबियों की दृष्टि से नबियों का संग्रह था। प्रत्येक नबी ने अपने अस्तित्व के साथ अनुकूलता देखकर यही सोचा कि मेरे नाम पर वह आने वाला है। पवित्र कुर्आन एक स्थान पर फ़रमाता है कि सबसे अधिक इब्राहीम से अनुकूलता रखने वाला यह नबी है। और बुख़ारी में एक हदीस है जिसमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मसीह से मेरी सर्वाधिक अनुकूलता है और उसके अस्तित्व से मेरा अस्तित्व मिला हुआ है। इस हदीस में हज़रत मसीह के उस वाक्य की पुष्टि है कि वह नबी मेरे नाम पर आएगा। अतः ऐसा ही हुआ कि हमारा मसीह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब आया तो उसने मसीह नासिरी के अपूर्ण कार्यों को पूर्ण किया और उसकी सच्चाई के लिए गवाही दी और उसे उन झूठे आरोपों से बरी ठहराया जो यहूदियों तथा ईसाइयों ने उस पर लगाए थे और मसीह की रूह को प्रसन्नता पहुंचाई। यह मसीह नासिरी की रूहानियत का पहला जोश था जो हमारे सरदार, हमारे मसीह खातमुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव से अपने उद्देश्य को पहुंचा। अलहमदुलिल्लाह।

फिर दूसरी बार मसीह की रूहानियत उस समय जोश में आई जब ईसाइयों में दज्जालियत की विशेषता सर्वांग तौर पर आ गयी जैसा कि लिखा है कि दज्जाल नुबुव्वत का दावा भी करेगा और ख़ुदाई का भी। ऐसा ही उन्होंने किया। नबी होने का दावा इस प्रकार से किया कि ख़ुदा के कलाम में अपनी ओर से वे हस्तक्षेप किए, वे नियम बनाए और वह अक्षरांतरण और संशोधन किया जो एक नबी का काम था। जिस आदेश को चाहा स्थापित कर दिया और अपनी ओर से आस्थाएं और इबादत के तरीक़े बना लिए और ऐसी आज्ञादी से अनुचित हस्तक्षेप किया कि जैसे उन बातों के लिए उन पर ख़ुदा की वह्यी उतर गई। अतः ख़ुदा की किताबों में इतना अनुचित हस्तक्षेप दूसरे रंग में नुबुव्वत का दावा है। और ख़ुदाई का दावा इस प्रकार कि उनके दार्शनिकों ने यह इरादा किया कि किसी प्रकार ख़ुदाई के समस्त कार्य हमारे अधिकार में आ जाएं जैसा कि उनके विचार इस

इरादे पर गवाह हैं कि वे दिन-रात इन चिन्ताओं में पड़े हुए हैं कि किसी प्रकार हम ही पानी बरसाएं और वीर्य को किसी उपकरण में डालकर स्त्री के गर्भाशय में पहुंचा कर बच्चे भी पैदा कर लें। उनकी आस्था है कि खुदा का प्रारब्ध (तक्दीर) कुछ चीज़ नहीं बल्कि हमारी असफलता ग़लत उपाय के कारण प्रारब्ध का रूप ले लेती है। संसार में जो कुछ खुदा की ओर सम्बद्ध किया जाता है वह केवल इस कारण है कि पहले युग के लोगों को प्रत्येक चीज़ के प्राकृतिक कारण ज्ञात नहीं थे और अपने थक जाने की सीमा के अन्त का नाम खुदा और खुदा का प्रारब्ध (तक्दीर) रखा था। अब भौतिक कारणों का क्रम जब पूर्णरूपेण लोगों को ज्ञात हो जाएगा तो ये ग़लत विचार स्वतः दूर हो जाएंगे। अतः देखना चाहिए कि यूरोप और अमरीका के दार्शनिकों के ये कथन खुदाई का दावा है या कुछ और है। इसी कारण से इन चिन्ताओं में ग्रस्त हैं कि किसी प्रकार मुर्दे भी जीवित हो जाएं। और अमरीका में ईसाई दार्शनिकों का एक वर्ग इन्हीं बातों का अनुभव कर रहा है। बारिश बरसाने का कारखाना तो प्रारंभ हो गया उनकी इच्छा है कि इसकी बजाय कि लोग बारिश के लिए खुदा तआला से दुआ करें या इस्तिस्का (पानी मांगना) की नमाज़ पढ़ें, सरकार में एक प्रार्थना-पत्र दे दें कि अमुक खेत में बारिश बरसाई जाए। यूरोप में यह प्रयास हो रहा है वीर्य गर्भाशय में ठहराने के लिए कोई मशीन बनाई जाए। और यह भी कि जब चाहें लड़का पैदा कर लें और जब चाहें लड़की। एक पुरुष का वीर्य लेकर किसी पिचकारी में डालकर किसी स्त्री के गर्भाशय में चढ़ा दें। इस उपाय से उसे गर्भवती बना दें। अब देखना चाहिए कि यह खुदाई पर अधिकार करने की चिन्ता है या कुछ और है। यह जो हदीसों में आया है कि **दज्जाल** प्रथम नबुव्वत का दावा करेगा फिर खुदाई का यदि उसके यह अर्थ लिए जाएं कि कुछ दिन नबुव्वत का दावा करके फिर खुदा बनने का दावा करे तो यह अर्थ पूर्णतः झूठ पर आधारित है क्योंकि जो व्यक्ति नबुव्वत का दावा करेगा उस दावे में ज़रूरी है कि वह खुदा तआला की हस्ती का इक्रार करे और यह भी कहे कि मुझ पर खुदा तआला की ओर से वह्यी उतरती है और जनता को वह कलाम सुनाए जो उस पर खुदा तआला की ओर से उतरता है

तथा एक उम्मत बनाए जो उसे नबी समझती और उसकी किताब को ख़ुदा की किताब समझती है। अब समझना चाहिए कि ऐसा दावा करने वाला उसी उम्मत के सामने ख़ुदा होने का दावा कैसे कर सकता है क्योंकि वे लोग कह सकते हैं कि तू बड़ा झूठ गढ़ने वाला है। तू पहले तो ख़ुदा तआला का इक्रार करता था, अब इस से इन्कार है और अब स्वयं ख़ुदा बनता है। फिर जब पहली बार तेरे ही इक्रार से तेरा झूठ सिद्ध हो गया तो दूसरा दावा क्योंकर सच्चा समझा जाए। जिसने पहले ख़ुदा तआला की हस्ती का इक्रार कर लिया और स्वयं को बन्दा स्वीकार कर लिया और अपने बहुत से इल्हाम लोगों में प्रकाशित कर दिए कि यह ख़ुदा तआला का कलाम है वह उन समस्त इकरारों से विमुख हो कर ख़ुदा कैसे ठहर सकता है तथा ऐसे महा झूठे को कौन स्वीकार कर सकता है। अतः ये अर्थ जो हमारे उलेमा लेते हैं सर्वथा ग़लत हैं। सही अर्थ नुबुव्वत के मामलों में हस्तक्षेप और ख़ुदाई के दावे से अभिप्राय ख़ुदाई के मामलों में हस्तक्षेप हैं जैसा कि आजकल ईसाइयों से ये हरकतें प्रकट हो रही हैं। उनमें से एक फ़िर्का (सम्प्रदाय) इंजील को ऐसा तोड़-मरोड़ रहा है कि जैसे वह नबी है और उस पर आयतें उतर रही हैं और एक फ़िर्का ख़ुदाई के कार्यों में इतना हस्तक्षेप कर रहा है कि जैसे वह ख़ुदाई को अपने क़ब्जे में करना चाहता है।

सारांश यह कि इस युग में ईसाइयों की दज्जालियत पराकाष्ठा तक पहुंच गयी है और उसको स्थापित करने के लिए उन्होंने अपने धन को पानी की भांति बहा दिया है और करोड़ों लोगों पर दुष्प्रभाव डाला है। भाषण से, लेख से, धन से, स्त्रियों से, गाने से, बजाने से, तमाशे दिखाने से, डाक्टर कहलाने से। निष्कर्ष यह कि हर एक पहलू से, हर एक उपाय से, हर एक पद्धति से, हर एक देश पर उन्होंने प्रभाव डाला है। अतः छः करोड़ तक ऐसी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं जिसका उद्देश्य यह है कि संसार में ईसा की उपासना की अपवित्र पद्धति प्रसारित हो जाए। तो इस युग में दूसरी बार हज़रत मसीह की रूहानियत को जोश आया और उन्होंने दोबारा मिसाली तौर पर संसार में अपना नुज़ूल (उतरना) चाहा, और जब उनमें मिसाली नुज़ूल के लिए अत्यधिक ध्यान एवं इच्छा पैदा

हुई तो खुदा तआला ने इस इच्छानुसार वर्तमान दज्जाल को मिटाने के लिए ऐसा व्यक्ति भेज दिया जो उनकी आध्यात्मिकता का आदेश था। वह आदेश मसीह अलैहिस्सलाम का रूप धारण कर मसीह मौऊद कहलाया। क्योंकि उसमें ईस्वी वास्तविकता का समावेश था। अर्थात् ईस्वी वास्तविकता उससे संगठित हो गई थी। और मसीह की रूहानियत की मांग से वह पैदा हुआ था। अतः उसमें ईस्वी वास्तविकता ऐसी प्रतिबिंबित हो गई जैसा कि दर्पण में आकृतियां। चूंकि वह आदर्श हजरत मसीह की रूहानियत की मांग से प्रकट हुआ था, इसलिए वह ईसा के नाम से नामित किया गया। क्योंकि हजरत ईसा की रूहानियत ने सर्वशक्ति सम्पन्न महा प्रतापी (खुदा) से अपने जोश के कारण अपना एक सदृश चाहा और चाहा कि ईस्वी वास्तविकता उस सदृश में रखी जाए, ताकि उस सदृश का उतरना हो। अतः ऐसा ही हो गया। इस वर्णन में इस भ्रम का भी उत्तर है कि उतरने के लिए मसीह को क्यों विशिष्ट किया गया। यह क्यों न कहा गया कि मूसा उतरेगा या इब्राहीम उतरेगा या दाऊद उतरेगा। क्योंकि यहां स्पष्ट तौर पर खुल गया कि वर्तमान उपद्रवों की दृष्टि से मसीह का उतरना ही आवश्यक था क्योंकि मसीह की ही क्रौम बिगड़ी थी और मसीह की क्रौम में ही दज्जालियत फैली थी। इसलिए मसीह की रूहानियत को ही जोश आना आवश्यक था। यह वह गूण आध्यात्म ज्ञान है जो कश्फ के द्वारा इस खाकसार पर खुली है और यह भी खुला कि यों प्रारब्ध है कि एक युग गुजरने के बाद जो भलाई, सुधार और तौहीद के प्रभुत्व का युग होगा। फिर संसार में उपद्रव, शिर्क और अन्याय लौटेगा और कुछ, कुछ को कीड़ों की भांति खाएंगे और अभ्यता बहुत बढ़ेगी तथा मसीह की उपासना दोबारा आरंभ हो जाएगी और सृष्टि (मख्लूक) को खुदा बनाने की मूर्खता बड़े जोर से फैलेगी, और यह सब खराबियां संसार में ईसाई धर्म से इस अन्तिम युग के अन्तिम भाग में फैलेगी। तब फिर मसीह की रूहानियत अत्यधिक जोश में आकर जलाली (प्रतापी) तौर पर अपना नुजूल (उतरना) चाहेगी। तब एक प्रकोपी रूप में उसका नुजूल हो कर उस युग का अन्त होगा और संसार की पंक्ति लपेट दी जाएगी। इस से ज्ञात हुआ कि मसीह

की उम्मत की मूर्खतापूर्ण करतूतों के कारण मसीह की रूहानियत के लिए यही प्रारब्ध था कि संसार में तीन बार उतरे।

इस स्थान पर यह नुक्तः भी याद रखने योग्य है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानियत भी इस्लाम की आन्तरिक खराबियों के प्रभुत्व के समय हमेशा प्रकट होती रहती है और मुहम्मदी वास्तविकता का समावेश हमेशा किसी पूर्ण अनुयायी में होकर प्रकट होता है और जो हदीसों में आया है कि **महदी** पैदा होगा और उसका नाम मेरा ही नाम होगा और उसका सदाचार मेरा ही सदाचार होगा। यदि ये हदीसें सही हैं तो यह उसी रूहानियत के उतरने की ओर संकेत है परन्तु वह उतरना किसी विशेष व्यक्ति में सीमित नहीं। सैकड़ों ऐसे लोग गुजरे हैं जिनमें मुहम्मदी वास्तविकता प्रमाणित थी और ख़ुदा के नज़दीक ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) तौर पर उनका नाम **मुहम्मद** या **अहमद** था। लेकिन चूंकि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दयनीय उम्मत उन खराबियों से ख़ुदा के फ़ज़ल से सुरक्षित रही है जो हज़रत ईसा की उम्मत के सम्मुख आई और आज तक हज़ारों सदाचारी और मुत्तक़ी (संयमी) लोग इस उम्मत में मौजूद हैं कि जो सांसारिक मोह-माया को त्याग किए हुए हैं। मस्जिदों में पांच समय तौहीद की अज़ानों की ऐसी गूँज पड़ती है कि मुहम्मदी तौहीद की किरणें आकाश तक पहुंचती हैं। फिर कौन सा अवसर था कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानियत को जोश आता जैसा कि हज़रत मसीह की रूह में ईसाइयों के हृदय विदारक बातों, घृणित कार्यों, शिर्क से भरी हुई शिक्षाओं, नुबुव्वत में अनुचित हस्तक्षेपों और ख़ुदा तआला की बराबरी करने ने पैदा कर दिया। इस युग में यह जोश हज़रत मूसा की रूह को भी अपनी उम्मत के लिए नहीं आ सकता था क्योंकि वह तो नष्ट हो गई। और अब संसार में उनकी सन्तान कुछ लाख से ज़्यादा नहीं और वह भी

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ (अलबक्रह-62)

के पात्र और अपने सांसारिक विचारों में डूबे तथा नज़रों से गिरे हुए हैं परन्तु ईसाई क्रौम इस युग में चालीस करोड़ से कुछ अधिक है और बड़े जोर से अपने

दज्जाली विचारों को फैला रही है और सैकड़ों प्रकट से अपनी शैतानी योजनाओं को दिलों में घर कर रही है। कुछ इसाई धर्मोपदेशकों के रूप में फिरते हैं, कुछ गवैये बनकर गीत गाते हैं, कुछ कवि बनकर तस्लीस के संबंध में गज़लें सुनाते हैं, कुछ योगी बन कर अपनी विचार धाराओं को प्रसिद्ध करते फिरते हैं कुछ ने यही सेवा ली है कि संसार की समस्त भाषाओं में अपनी अक्षरांतरित इंजील का अनुवाद करके और इसी प्रकार अन्य पुस्तकें इस्लाम के विरोध में प्रत्येक भाषा में लिखकर बांटते फिरते हैं, कुछ थियेटर के रंग में लोगों के दिल में इस्लाम का बुरा चित्र जमाते हैं और इन कार्यों में करोड़ों रुपया व्यय होता है और कुछ लोग एक सेना बना कर मुक्ति सेना नाम रख कर एक-एक देश में भ्रमण करते हैं और इसी प्रकार अन्य कार्रवाइयों ने भी जो उनके पुरुष भी करते हैं तथा उनकी स्त्रियां भी खुदा के करोड़ों लोगों में चरम सीमा तक पहुंचाई है और बात चरम सीमा तक पहुंच गई है। इसलिए ज़रूरी था कि इस युग में हज़रत मसीह की आध्यात्मिकता जोश में आती और अपने समरूप (सदृश) के नुज़ूल के लिए जो उसकी वास्तविकता से एकरूप हो, मांग करती। अतः इस ख़ाकसार की सच्चाई को पहचानने के लिए यह एक बड़ा लक्षण है परन्तु उनके लिए जो समझते हैं।

इस्लाम के सूफ़ी जो क़ब्रों से वरदान मांगने के आदी हैं और इस बात को भी मानते हैं कि एक दिवंगत (स्वर्गवासी) खुदा के नबी या वली की रूहानियत कभी एक मर्द-ए-ख़ुदा में आ जाती है जिसको कहते हैं कि अमुक वली मूसा के क़दम पर है और अमुक इब्राहीम के क़दम पर या मुहम्मद-पंथी और इब्राहीम पंथी नाम रखते हैं वे इस गूण रहस्य की ओर ज़रूरी ध्यान दें।

(3) इस विनीत की सच्चाई का तीसरा लक्षण यह है कि कुछ अल्लाह द्वारा सान्धिय प्राप्तों ने इस विनीत के बहुत से वर्ष पहले इस विनीत की आने की ख़बर दी है यहां तक कि नाम और स्थान एवं आयु के विषय में विस्तारपूर्वक बताया है जैसा कि निशान-ए-आसमानी में लिख चुका हूं।

(4) इस ख़ाकसार की सच्चाई का चौथा लक्षण यह है कि इस ख़ाकसार ने बरकतों के मुक्राबले के लिए बारह हज़ार के लगभग पत्र और विज्ञापन अन्य

धर्मों की ओर भेजे। विशेष तौर पर पादरियों में से शायद एक भी प्रसिद्ध पादरी यूरोप, अमरीका और हिन्दुस्तान में शेष नहीं रहा होगा जिसकी ओर रजिस्टर्ड पत्र न भेजा हो। परन्तु सब पर सच्चाई का रोब छा गया। अब जो हमारी क्रौम के मुल्ला-मौलवी लोग इस प्रचार में मीनमेख करते हैं। वास्तव में यह उनका झूठ बोलना और गंदगी खाना है। मुझे यह निश्चित तौर पर खुश ख़बरी दी गई है कि यदि कोई धर्म का विरोधी मेरे सामने मुक़ाबले पर आएगा तो मैं उस पर विजयी हूंगा और वह अपमानित होगा। फिर ये लोग जो मुसलमान कहलाते हैं और मेरे बारे में सन्देह करते हैं, क्यों इस युग के किसी पादरी से मेरा मुक़ाबला नहीं कराते? किसी पादरी या पंडित को कह दें कि यह व्यक्ति वास्तव में झूठ गढ़ने वाला है, इसके साथ मुक़ाबला करने में कुछ हानि नहीं, हम उत्तरदायी हैं। फिर खुदा तआला स्वयं फैसला कर देगा। मैं इस बात पर सहमत हूँ कि संसार की जितनी जायदाद अर्थात् भूमि इत्यादि बतौर विरासत मेरे हिस्से में आई है झूठ बोलने वाला निकलने की स्थिति में वह सब उस पादरी या पंडित को दे दूंगा। यदि वह झूठा निकला तो उसके इस्लाम लाने के अतिरिक्त मैं उस से कुछ नहीं मांगता। मैंने यह बात अपने मन में दृढ़तापूर्वक ठहराई है और दिल की गहराई से वर्णन की है। अल्लाह तआला की क्रसम खा कर कहता हूँ कि मैं इस मुक़ाबले के लिए तैयार हूँ और विज्ञापन देने के लिए तत्पर। बल्कि मैंने तो बारह हज़ार विज्ञापन प्रकाशित कर दिए हैं, बल्कि मैं बुलाते-बुलाते थक गया। कोई पंडित-पादरी नेक नीयत से सामने नहीं आया। मेरी सच्चाई के लिए इस से बड़ा और क्या प्रमाण हो सकता है कि मैं इस मुक़ाबले के लिए हर समय उपस्थित हूँ। यदि कोई मुक़ाबले पर कुछ निशान दिखाने का दावा न करे तो ऐसा पंडित या पादरी केवल अख़बार के माध्यम से यह प्रकाशित कर दे कि मैं केवल अकेला कोई विलक्षण बात देखने के लिए तैयार हूँ और यदि विलक्षण बात प्रकट हो जाए और मैं उसका मुक़ाबला न कर सकूँ तो तुरन्त इस्लाम स्वीकार करूंगा। तो यह प्रस्ताव भी मुझे स्वीकार है, मुसलमानों में से कोई हिम्मत करे और जिस व्यक्ति को काफ़िर नास्तिक कहते हैं और दज्जाल नाम रखते हैं किसी पादरी के

मुक़ाबले पर उसकी परीक्षा कर लें और स्वयं केवल तमाशा देखें।

(5) - इस ख़ाक़सार की सच्चाई का पांचवा लक्षण यह है कि मुझे सूचना दी गई है कि मैं उन मुसलमानों पर भी अपने क़स्फ़ी और इल्हामी विद्याओं में विजयी हूँ। उनके मुल्हमों को चाहिए कि मेरे मुक़ाबले पर आएँ। फिर यदि ख़ुदा की सहायता और आकाशीय वरदान तथा निशानों में मुझ पर विजयी हो जाएं तो जिस छुरी से चाहें मुझे ज़िब़ह कर दें मुझे स्वीकार है, और यदि मुक़ाबला करने की शक्ति न हो तो कुफ़्र के फ़त्वे देने वाले जो इल्हाम के तौर पर मेरे सम्बोधित हैं अर्थात् जिन्हें सम्बोधित करने के लिए मुझे ख़ुदा का इल्हाम हो गया है पहले लिख दें और प्रकाशित करा दें कि यदि कोई विलक्षण बात देखें तो बिना वाद-विवाद दावे को स्वीकार कर लें। मैं इस कार्य के लिए भी उपस्थित हूँ। और मेरा दयालु ख़ुदा मेरे साथ है। परन्तु मुझे यह आदेश है कि मैं ऐसा मुक़ाबला केवल कुफ़्र के इमामों (पेशवाओं) से करूँ, उन्हीं से मुबाहलः करूँ और यदि वे चाहें तो उन्हीं से यह मुक़ाबला करूँ, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि वे कभी-कभी मुक़ाबला नहीं करेंगे क्योंकि सच्चाई का उन पर रोब है और वे अपने अन्याय तथा अत्याचार को भली-भांति जानते हैं। वे कभी-कभी मुबाहलः नहीं करेंगे, परन्तु मेरी ओर से शीघ्र ही पुस्तक 'दाफ़िउल वसाविस' में उनके नाम विज्ञापन जारी हो जाएंगे।

रहे वे लोग जो न इमाम हैं और न प्रकाण्ड विद्वान हैं और न उनका फ़त्वा है। उन के लिए मुझे आदेश है कि यदि वे विलक्षण निशान देखना चाहते हैं तो संगत में रहें। ख़ुदा तआला स्वच्छन्द और निस्पृह है। जब तक किसी में विनय एवं विनम्रता नहीं देखता उसकी ओर ध्यान नहीं देता। किन्तु वह इस ख़ाक़सार को नष्ट नहीं करेगा और संसार पर अपने समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा कर देगा। कुछ अधिक देर नहीं होगी के वह अपने निशान दिखा देगा परन्तु मुबारक वह जो निशानों से पूर्व स्वीकार कर गए। वे ख़ुदा तआला के प्रिय बन्दे हैं और वे सच्चे हैं जिन में छल नहीं। निशानों के मांगने वाले पछतावे से अपने हाथों को काटेंगे कि हमें ख़ुदा की प्रसन्नता एवं उसका सान्धिय प्राप्त न हुआ जो उन बुजुर्ग

लोगों को हुआ जिन्होंने लक्षणों से स्वीकार किया और कोई निशान नहीं मांगा।

अतः यह बात याद रखने योग्य है कि खुदा तआला अपने इस सिलसिले को बिना सबूत नहीं छोड़ेगा। वह स्वयं फ़रमाता है जो बराहीन अहमदिया में दर्ज है -

"कि दुनिया में एक नज़ीर (सतर्क करने वाला) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया लेकिन खुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली प्रहारों से उसकी सच्चाई प्रकट करेगा।"

जिन लोगों ने इन्कार किया और जो इन्कार के लिए तैयार हैं उनके लिए अपमान और बरबादी सुनिश्चित है। उन्होंने यह भी न सोचा कि यदि यह मनुष्य का बनाया हुआ झूठ होता तो कब का नष्ट हो जाता। क्योंकि खुदा तआला झूठ गढ़ने वाले का ऐसा दुश्मन है कि दुनिया में ऐसा किसी का दुश्मन नहीं। वे मूर्ख यह भी विचार नहीं करते कि क्या यह दृढ़ता और साहस किसी झूठे में हो सकता है। वे मूर्ख यह भी नहीं जानते कि जो व्यक्ति एक ग़ैब (अदृश्य) शरण से बोल रहा है वही इस बात से विशिष्ट है कि उसके कलाम में तेजस्व और रोब हो। यह उसी का जिगर और दिल होता है कि एक व्यक्ति समस्त संसार का मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो जाए। निस्सन्देह प्रतीक्षा करो कि वे दिन आते हैं बल्कि निकट है कि दुश्मन अपमानित होगा और दोस्त अत्यन्त ही प्रसन्न होंगे। कौन है दोस्त? वही जिसने निशान देखने से पहले मुझे स्वीकार किया और जिसने अपनी जान और माल तथा सम्मान को ऐसा न्योछावर कर दिया कि जैसे उसने हज़ारों निशान देख लिए हैं। अतः यही मेरी जमाअत है, और मेरे हैं जिन्होंने मुझे अकेला पाया और मेरी सहायता की, मुझे शोकाकुल (गमगीन) देखा और मेरे हमदर्द हुए और अपरिचित होकर फिर परिचितों जैसा सम्मान किया। खुदा तआला की उन पर रहमत (दया) हो। यदि निशानों को देखने के बाद कोई खुली सच्चाई को मान लेगा तो मुझे क्या और उसको प्रतिफल क्या और खुदा के यहां उसका सम्मान क्या। मुझे वास्तव में उन्होंने ही स्वीकार किया है जिन्होंने मुझे बारीक नज़र से देखा और विवेक से मेरी बातों को तोला और मेरी स्थितियों को

परखा तथा मेरे कलाम (बातों) को सुना और उन पर विचार किया। तब इतने लक्षणों से खुदा तआला ने उन के सीनों को खोल दिया और मेरे साथ हो गए। मेरे साथ वही है जो मेरी इच्छा के लिए अपनी इच्छा का त्याग करता है और अपने नफ़्स को छोड़ने और लेने के लिए मुझे हक़म (निर्णायक) बनाता है और मेरे मार्ग पर चलता है और आज्ञा का पालन करने में फना होने वाला है और अंहवाद को त्याग दिया है। मुझे आह भर कर यह कहना पड़ता है कि खुले निशानों के अभिलाषी वह प्रशंसनीय सम्बोधन और सम्माननीय पद खुदा तआला के दरबार में नहीं पा सकते जो उन सत्य निष्ठों को मिलेंगे जिन्होंने गुप्त भेद को पहचान लिया और जो अल्लाह तआला की छत्र-छाया में एक गुप्त बन्दा था। उसकी सुगंध उसको आ गई। मनुष्य की इसमें क्या खूबी है। उदाहरणतया एक राजकुमार को अपनी सेना और शान-शौकत (रोबदाब) में देखकर फिर उसे सलाम करे। गुणवान व्यक्ति वह है जो भिक्षुओं के भेस में उसे पाए और पहचान ले। परन्तु मेरे अधिकारवश में नहीं कि यह प्रतिभा किसी को दूं। एक की है जो देता है वह जिसको प्रिय रखता है उसको ईमानी विवेक प्रदान करता है। इन्हीं बातों से हिदायत पाने वाले हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाते हैं, और यही बातें उनके लिए जिनके दिलों में टेढ़ापन है अधिकतर टेढ़ेपन का कारण हो जाती हैं। अब मैं जानता हूं कि निशानों के बारे में मैं बहुत कुछ लिख चुका हूं और खुदा तआला जानता है कि बात सच और सही है कि अब तक खुदा तआला की ओर से मेरे लिए तीन हजार के लगभग या कुछ अधिक वे मामले जारी हुए हैं जो इन्सान की शक्तियों से श्रेष्ठतर हैं और भविष्य में इनका दरवाज़ा बन्द नहीं। इन निशानों के लिए छोटी-छोटी समय सीमाओं का वर्णन करना सभ्यता से दूर है। खुदा स्वच्छंद और निःस्पृह है। जब **मक्का** के काफ़िर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछते थे कि निशान कब प्रकट होंगे तो खुदा तआला ने कभी यह उत्तर न दिया कि अमुक तिथि को निशान प्रकट होंगे। क्योंकि यह प्रश्न ही असभ्यतापूर्ण था तथा उद्दण्डता से भरपूर था। मनुष्य इस बेकार और निराधार संसार के लिए वर्षों प्रतीक्षाओं में समय व्यय कर देता है। एक परीक्षा देने के लिए कई वर्षों से

तैयारी करता है। वह इमारतें प्रारंभ करा देता है जो वर्षों में समाप्त हों, वह पौधे बाग में लगाता है जिन का फल खाने के लिए एक लम्बी अवधि तक प्रतीक्षा करना आवश्यक है। फिर खुदा तआला के मार्ग में क्यों जल्दी करता है? इसका कारण इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि धर्म को एक खेल समझ रखा है। मनुष्य खुदा तआला से निशान मांगता है और अपने दिल में सुनिश्चित नहीं करता कि निशान देखने के बाद उसके मार्ग में कौन सी जान-तोड़ कोशिश करूंगा और किस सीमा तक संसार का त्याग करूंगा और कहां तक खुदा के मामूर बन्दे के पीछे होकर चलूंगा बल्कि लापरवाह मनुष्य निशान के एक तमाशे की भांति समझता है। हवारियों ने हज़रत मसीह से निशान मांगा था कि हमारे लिए माइदः (खानों से भरा थाल) उतरे ताकि हमारे कुछ सन्देह जो आप के बारे में हैं दूर हो जाएँ। अतः अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में कहानी के तौर पर हज़रत ईसा को फ़रमाता है कि उन को कह दे कि मैं इन निशान को प्रकट करूंगा परन्तु इसके बाद यदि कोई व्यक्ति मुझ यथा योग्य नहीं मानेगा तो मैं उस पर वह अज़ाब उतारूंगा जो आज तक किसी पर नहीं उतारा होगा। तब हवारी इस बात को सुन कर निशान मांगने से तौबा करने वाले हो गए। खुदा तआला फ़रमाता है कि जिस क्रौम पर हमने अज़ाब उतारा है निशान दिखलाने के बाद उतारा है। पवित्र कुर्आन में कई स्थानों पर फ़रमाता है कि निशान उतरना अज़ाब उतरने की भूमिका है। कारण यह कि जो व्यक्ति निशान मांगता है उस पर अनिवार्य हो जाता है कि निशान देखने के बाद तुरन्त संसार के प्रेम से पृथक हो जाए और फ़क्रीरों वाली गुदड़ी पहन ले तथा खुदा का प्रतिष्ठा और प्रताप देखकर उसका हक़ अदा करे। परन्तु चूंकि लापरवाह इन्सान इस श्रेणी का आज्ञापालन कर नहीं सकता। इसलिए शर्त के तौर पर निशान देखना उस के पक्ष में वबाल हो जाता है क्योंकि निशान के बाद उस पर खुदा तआला की हुज्जत पूर्ण हो जाती है यही कारण है कि यदि फिर भी पूर्ण आज्ञाकारी करने में कुछ कमी रखे तो खुदा तआला का प्रकोप उस पर छा जाता है और उसे नष्ट कर देता है।

आपका तीसरा प्रश्न इस्तिखारः के लिए है जो वास्तव में इस्तिखारः है। अतः

आप पर स्पष्ट हो कि जिन कठिनाइयों का आप ने उल्लेख किया है वास्तव में इस्तिखार: में ऐसी कठिनाइयां नहीं हैं। मेरे पत्र में मेरा तात्पर्य केवल इतना है कि इस्तिखार: ऐसी हालत में हो कि जब प्रेम भावनाएं तथा शत्रुता की भावनाएं किसी लेख के कारण जोश में न हों। उदाहरणतया एक व्यक्ति किसी से शत्रुता रखता है और क्रोध और शत्रुता के आवेग में हो गया है। तब वह व्यक्ति जो उसका शत्रु है उसे स्वप्न में कुत्ते या सुअर के रूप में दिखाई दिया है या किसी अन्य दरिन्दे के रूप में दिखाई दिया है तो वह विचार करता है कि शायद यह व्यक्ति खुदा के नज़दीक कुत्ता या सुअर ही है परन्तु उस का यह विचार ग़लत है क्योंकि शत्रुता के जोश में जब शत्रु स्वप्न में दिखाई दे तो प्रायः दरिन्दों के रूप में या सांप के रूप में दिखाई देता है। इस से यह परिणाम निकालना कि वास्तव में वह बुरा आदमी है कि जो ऐसे रूप में प्रकट हुआ, एक ग़लती है। बल्कि चूंकि देखने वाले की तबियत और विचार में वह दरिंदों के समान था इसलिए स्वप्न में भी उसको दरिन्दा हो कर दिखाई दिया। अतः मेरा आशय यह है कि स्वप्न देखने वाला निजि सोच-विचारों से खाली हो और तसल्ली के साथ, सच्चे दिल से केवल सच्चाई के प्रकटन के उद्देश्य से इस्तिखार: करे। मैं यह वचन नहीं दे सकता कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक अच्छी या बुरी हालत में ज़रूर स्वप्न आ जाएगा, परन्तु आपके बारे में कहता हूं कि यदि आप चालीस दिन तक सच्चाई को प्राप्त करने के उद्देश्य से निशान आसमानी (पुस्तक) में लिखी शर्तों के अनुसार इस्तिखार: करें तो मैं आपके लिए दुआ करूंगा। क्या ही अच्छा हो कि यह इस्तिखार: मेरे सामने हो ताकि मेरा ध्यान (आपकी ओर) अधिक हो। आप के लिए कुछ मुश्किल नहीं। लोग साधारण और नफ़ल के तौर पर भी हज करने को जाते हैं परन्तु यहां नफ़ली हज से पुण्य (सवाब) अधिक है तथा लापरवाह रहने में हानि और ख़तरा। क्योंकि यह सिलसिला आसमानी है और हुक्म रब्बानी।

सच्चा स्वप्न सच्चाई के लक्षण स्वयं प्रकट कर देता है। वह दिल पर एक प्रकाश का प्रभाव डालता है और लोहे की कील के समान अन्दर घुस जाता है और दिल उसे स्वीकार कर लेता है। और उसकी रूहानियत और जलाल (प्रताप)

रोम-रोम पर छा जाता है। मैं आप से प्रण करता हूँ कि यदि आप मेरे सामने मेरे मार्ग दर्शन और शिक्षा के अनुसार इस कार्य में व्यस्त हों तो मैं आपके लिए बहुत कोशिश करूंगा। क्योंकि आपके बारे में मेरा विचार बहुत अच्छा है और खुदा तआला से चाहता हूँ कि आपको नष्ट न करे तथा शिक्षा-दीक्षा और हिदायत तथा भलाई में उन्नति दे। अब मैंने आपका बहुत समय ले लिया अब समाप्त करता हूँ। सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुकरण किया।

आपका पत्र दोबारा पढ़कर एक बात कुछ अधिक विवरण की मुहताज मालूम हुई और वह यह है कि इस्तिखार: के लिए ऐसे दुआ की जाए कि प्रत्येक व्यक्ति का इस्तिखार: शैतान के हस्तक्षेप से सुरक्षित हो। मेरे प्रिय! यह बात खुदा के प्रकृति के नियम (कानून-ए-कुदरत) विरुद्ध है कि वह शैतानों को उनके उचित स्थानों से निलंबित कर दे। अल्लाह तआला पवित्र कुर्आन में फ़रमाता है -

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى الْفَى الشَّيْطَانُ
فِي أَمْنِيَّتِهِ ۖ فَيَنْسُخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ أَيْتَهُ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿٥٣﴾ (अलहज्ज-53)

अर्थात् हमने कोई ऐसा रसूल और नबी नहीं भेजा कि उसकी यह हालत न हो कि जब वह कोई तमन्ना करे अर्थात् अपने नफ़्स से कोई बात चाहे तो शैतान उसकी इच्छा में कुछ न मिला दे। अर्थात् जब कोई रसूल या कोई नबी अपने प्रवृत्ति (नफ़्स) से किसी बात को चाहता है तो शैतान उसमें भी हस्तक्षेप करता है तब पढ़ी जाने वाली वह्यी जो जलाल, तेज, रोब और पूर्ण रोशनी रखती है उस हस्तक्षेप को दूर कर देती है और खुदा की इच्छा को शुद्ध करके दिखा देती है। यह इस बात की ओर संकेत है कि नबी के दिल में जो विचार पैदा होते हैं और जो कुछ खतरे उसके नफ़्स में पैदा होते हैं वास्तव वह सब वह्यी होती है। जैसा कि पवित्र कुर्आन इस पर गवाह है -

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ﴿٤٥﴾ (अन्नज्म-4,5)

परन्तु कुर्आन करीम की वह्यी दूसरी वह्यी से जो केवल अर्थों के लिए

अल्लाह की ओर से होती है पूर्ण अन्तर रखती है और नबी के समस्त कथन ग़ैर मत्ल में सम्मिलित होते हैं। क्योंकि रूहुल कुदुस की बरकत और चमक हमेशा नबी के साथ संलग्न रहती है तथा उसकी प्रत्येक बात बरकत से भरपूर होती है। वह बरकत रूहुल कुदुस से उस कलाम में रखी जाती है। इसलिए नबी की प्रत्येक बात जो नबी के पूर्ण ध्यान से और उस के विचार की पूर्ण व्यस्तता से उसके मुंह से निकलती है वह निस्सन्देह वह्यी होती है। और समस्त हदीसों इसी श्रेणी की वह्यी में सम्मिलित हैं जिनको ग़ैर मत्लुव्व वह्यी कहते हैं। अब अल्लाह तआला कथित पवित्र आयत में फ़रमाता है कि इस निम्नस्तर की वह्यी में जो हदीस कहलाती है कुछ स्थितियों में शैतान का हस्तक्षेप भी हो जाता है और वह उस समय कि जब नबी का दिल एक बात के लिए तमन्ना करता है तो उसका विवेक ग़लती कर जाता है और नबी की विवेचनात्मक ग़लती भी वास्तव में वह्यी की ग़लती है। क्योंकि नबी तो किसी हालत में वह्यी से खाली नहीं होता। वह अपने आप से खोया जाता है और खुदा तआला के हाथ में एक उपकरण के समान होता है। चूंकि प्रत्येक बात जो उसके मुंह से निकलती है वह्यी है, इसलिए जब उसके विवेचन में ग़लती हो गयी तो वह्यी की ग़लती कहलाएगी न कि विवेचन की ग़लती। अब खुदा तआला इसी का उत्तर पवित्र कुर्आन में देता है कि कभी नबी की इस प्रकार की वह्यी जिसको दूसरे शब्दों में विवेचन (इज्तिहाद) भी कहते हैं शैतान के स्पर्श से मिल जाती है, और यह उस समय होता है कि जब नबी कोई तमन्ना करता है कि यों हो जाए। तब ऐसा ही विचार उसके दिल में गुज़रता है, जिस पर नबी स्थायी राय क़ायम रकने के लिए इरादा कर लेता है। तब तुरन्त बड़ी वह्यी जो खुदा का कलाम और वह्यी मत्लुव्व और निगरान है नबी को उस ग़लती पर सतर्क कर देती है और मत्लुव्व वह्यी (कुर्आनी वह्यी) शैतान के हस्तक्षेप से पूर्णतया शुद्ध होती है क्योंकि वह अपने अन्दर बहुत तेज और प्रताप तथा प्रकाश रखता है और कौल-ए-सक़ील (भारी भरकम कथन) और शदीदुन्नुज़ूल (प्रबल) भी है। उसकी तीव्र किरणें शैतान को जलाती हैं। इसलिए शैतान उसके नाम से दूर भागता है और निकट नहीं आ सकता तथा उसके चारों

ओर फ़रिश्तों का पूर्ण संरक्षण रहता है। परन्तु ग़ैर मल्लुव्व वह्यी जिसमें नबी का विवेचन भी सम्मिलित है यह शक्ति नहीं रखती इसलिए तमन्ना के समय जो कभी-कभी विवेचन के सिलसिले में बराबर पैदा हो जाती है तब शैतान नबी या रसूल के विवेचन के सिलसिले में न होने के बराबर पैदा हो जाती है शैतान नबी या रसूल के विवेचन में हस्तक्षेप करता है फिर मल्लुव्व वह्यी उस हस्तक्षेप को दूर कर देती है। यही कारण है कि नबियों की कुछ विवेचनाओं में गलती भी हो गई है। जो बाद में दूर की गई।

अब कलाम का खुलासा यह है कि जिस हालत में खुदा तआला का यह कानून-ए-कुदरत है कि नबी बल्कि रसूल की एक प्रकार की वह्यी में भी जो ग़ैर मल्लुव्व वह्यी है पवित्र कुर्आन की व्याख्या के अनुसार शैतान का हस्तक्षेप हो सकता है तो फिर किसी अन्य व्यक्ति को कब यह अधिकार पहुंचता है कि इस यह कानून-ए-कुदरत के परिवर्तन की विनती करे। इसके अतिरिक्त स्वप्न की शुद्धता और सच्चाई, अपनी अन्तःकरण की पवित्रता, सच्चाई और शुद्धता पर निर्भर है। यही शाश्वत प्रकृति का नियम है जो उसके रसूले करीम के माध्यम से हम तक पहुंचा है कि सच्चे स्वप्नों के लिए ज़रूरी है कि जागने की अवस्था में मनुष्य हमेशा सच्चा और खुदा तआला के लिए ईमानदार हो। कुछ सन्देह नहीं कि जो व्यक्ति इस नियम पर चलेगा और अपने दिल को सच बोलने तथा सद्मार्ग पर चलने और व्यवहार कुशलता का पूर्णरूप से पाबन्द कर लेगा तो उसके स्वप्न सच्चे होंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है - **قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا** (अश्शम्म-10) अर्थात् जो व्यक्ति झूठे विचारों, झूठी नीयतों, झूठे कर्मों तथा झूठी आस्थाओं से अपने नफ्स को पवित्र कर ले वह शैतान की रोक से मुक्ति पा जाएगा और आखिरत में दण्डों से आजाद होगा और शैतान उस पर विजयी नहीं हो सकेगा। ऐसा ही एक अन्य स्थान पर फ़रमाता है -

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ (अलहिज्र-43)

अर्थात् हे शैतान मेरे वह बन्दे जिन्होंने मेरी प्रसन्नता के मार्गों पर क्रदम मारा है (अनुसरण किया है) उन पर तेरा अधिकार नहीं हो सकता। अतः जब

तक मनुष्य समस्त टेढ़ेपन, बुरे विचारों और अशिष्ट तरीकों को छोड़कर केवल खुदा की चौखट पर गिरा हुआ न हो जाए तब तक वह शैतान की किसी आदत से अनुकूलता रखता है और शैतान अनुकूलता के कारण उसकी ओर लौटता है और उस की ओर दौड़ता है। और जब कि हालत यह है तो मैं खुदा के प्रकृति के नियम के विपरीत कौन सा उपाय कर सकता हूँ किसी के स्वप्न में शैतान उस से दूर रहे। जो व्यक्ति इन मार्गों पर चलेगा जो रहमानी (खुदाई) मार्ग हैं शैतान स्वयं उस से दूर रहेगा।

अब यदि यह प्रश्न हो कि जब शैतान के हस्तक्षेप से पूर्णरूप से अमन नहीं तो हम अपने स्वप्नों पर कैसे भरोसा कर लें कि वे रहमानी (खुदाई) हैं। क्या संभव नहीं कि एक स्वप्न को हम रहमानी समझें और वास्तव में वह शैतानी हो और या शैतानी समझें और वास्तव में वह रहमानी हो। तो इस भ्रम का उत्तर यह है कि रहमानी स्वप्न अपने प्रताप, बरकत और श्रेष्ठता तथा नूरानयत से स्वयं ज्ञात हो जाता है। जो चीज़ पवित्र झरने से निकली है वह अपने अन्दर पवित्रता और खुशबू रखती है और जो चीज़ अपवित्र तथा गन्दे पानी से निकली है उसकी मलिनता तथा उसकी दुर्गन्ध (बदबू) तुरन्त आ जाती है। सच्चे स्वप्न जो खुदा तआला की ओर से आते हैं वे एक पवित्र सन्देश की भांति होते हैं वे एक पवित्र सन्देश की भांति होते हैं, जिनके साथ अस्त-व्यस्त विचारों का कोई संग्रह नहीं होता और अपने अन्दर एक प्रभावी शक्ति रखती है तथा दिल उसकी ओर खींचे जाते हैं और रूह गवाही देती है कि यह खुदा तआला की ओर से है क्योंकि उसकी श्रेष्ठता और प्रताप फ़ौलाद की कील की भांति दिल के अन्दर धंस जाती है। और कभी ऐसा भी होता है कि एक व्यक्ति सच्चा स्वप्न देखता है और खुदा तआला उसके किसी साथ बैठने वाले को गवाह बनाने के लिए वही स्वप्न या उससे मिलती-जुलती दिखला देता है तब उस स्वप्न को दूसरे के स्वप्न से कुछ शक्ति मिल जाती है। अतः उचित है कि आप किसी अपने मित्र को स्वप्न का साथी बना लें जो योग्यता और संयम रखता हो। उसको कह दें कि जब कोई स्वप्न देखे लिख कर दिखलाए और आप भी लिखकर दिखाएं। तब आशा है कि सच्चा स्वप्न आएगा तो उसके

कई भाग आपके स्वप्न में और उस साथी के स्वप्न में मिले-जुले होंगे और ऐसी समानता होगी कि आप आश्चर्य करेंगे। अफ़सोस यदि आप मेरे सामने ऐसा इरादा कर सकते तो मैं भरपूर आशा रखता था कि कुछ कुदरत का चमत्कार प्रकट होता। मेरी हालत एक विचित्र हालत है। कुछ दिन ऐसे गुज़रते हैं कि ख़ुदा के इल्हाम वर्षा की भांति बरसते हैं तथा कुछ भविष्यवाणियां ऐसी होती हैं कि एक मिनट के भीतर पूरी हो जाती हैं और कुछ लम्बे समय के बाद पूरी होती हैं। संगत में रहने वाला वंचित नहीं रह सकता कुछ न कुछ ख़ुदाई सहायता देख लेता है जो उसकी दूरदर्शी दृष्टि के लिए पर्याप्त होती है। अब मैं निरन्तर देखता हूँ कोई मामला होने वाला है। मैं बिल्कुल नहीं कह सकता वह जल्द होगा या देर से होगा परन्तु आकाश पर कुछ तैयारी हो रही है ताकि ख़ुदा तआला कुधारणा रखने वालों को दोषी और अपमानित करे। कोई दिन या रात ऐसी कम ही गुज़रती है कि मुझे सांत्वना नहीं दी जाती। यही पत्र लिखते-लिखते यह इल्हाम हुआ -

يَجِيءُ الْحَقُّ وَيَكْشِفُ الصِّدْقُ وَيَخْسِرُ الْخَاسِرُونَ يَأْتِي قَمَرُ الْأَنْبِيَاءِ
وَأَمْرُكَ يَتَأْتِي - إِنَّ رَبَّكَ فَاعْلَلْ مَا يُرِيدُ

अर्थात् सच प्रकट होगा और सच्चाई स्पष्ट हो जाएगी और जिन्होंने कुधारणाओं से हानि सहन की वे अपमान और बदनामी की हानि भी सहन करेंगे। नबियों का चन्द्रमा आएगा और तेरा काम प्रकट हो जाएगा। तेरा रब्ब जो चाहता है करता है परन्तु मैं नहीं जानता कि यह कब होगा। जो व्यक्ति जल्दी करता है ख़ुदा तआला को उसकी लेशमात्र भी परवाह नहीं। वह निःस्पृह (ग़नी) है वह दूसरे का मुहताज नहीं। अपने कार्यों को बुद्धिमत्ता और हित को देखते हुए करता है और प्रत्येक व्यक्ति की परीक्षा लेकर फिर अपना समर्थन दिखाता है। यदि पहले से निशान प्रकट होते तो बड़े सहाबा और अहले बैअत के ईमान तथा दूसरे लोगों के ईमानों में अन्तर क्या होता। ख़ुदा तआला अपने प्रियजनों तथा प्यारों का सम्मान प्रकट करने के लिए निशान दिखाने में कुछ विलम्ब डाल देता है ताकि लोगों पर प्रकट हो कि ख़ुदा तआला के विशेष बन्दे निशानों के मुहताज नहीं होते और ताकि उनकी प्रतिभा एवं दूरदर्शिता सब पर प्रकट हो जाए

तथा उनके उच्च पदों में किसी को आपत्ति न हो। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से प्रारंभ में बहत्तर लोग इस बुरे विचार से विमुख हो गए और मुर्तद हो गए कि आप ने उनको कोई निशान नहीं दिखलाया। उन में से बारह क़ायम रहे और फिर बारह में से एक मुर्तद हो गया। जो क़ायम रहे उन्होंने अन्त में बहुत से निशान देखे और ख़ुदा के नज़दीक सच्चे गिने गए।

मैं आप को पुनः कहता हूँ कि यदि आप चालीस दिन तक मेरी संगत में आ जाएं तो मुझे विश्वास है कि मेरे संगत का आप पर प्रभाव पड़े। यद्यपि मैं प्रतिज्ञा के तौर पर नहीं कह सकता परन्तु मेरा दिल गवाही देता है कि कुछ ऐसा प्रकट होगा जो आप की खींचकर विश्वास की ओर ले जाएगा। मैं यह देख रहा हूँ कि कुछ होने वाला है परन्तु अभी ख़ुदा तआला अपने अनादि नियम से दो गिरोह बनाने चाहता है। एक वह गिरोह जो सुधारणा की बरकत से मेरी ओर आते जाते हैं। दूसरे वह गिरोह जो कुधारणा के दुर्भाग्य से मुझ से दूर जाते हैं।

मैंने आप के इस वर्णन को अफ़सोस के साथ पढ़ा जो आप फ़रमाते हैं कि केवल तर्क-वितर्क से फैसला नहीं हो सकता। मैं आपको प्रेम, सहानुभूति और रहम करते हुए इस ओर ध्यान दिलाता हूँ कि संसार में अधिकतर फैसले तर्क-वितर्क से ही होते हैं। यहां तक कि केवल बातों के सबूत या सबूत हीन होने की दृष्टि से एक व्यक्ति को अदालत नितान्त इत्मीनान के साथ फांसी दे सकती और एक व्यक्ति को क़त्ल के आरोप से बरी कर सकती है। घटनाओं के सबूत होने या सबूत न होने पर समस्त मुकद्दमे फैसला पाते हैं। किसी पक्ष से यह प्रश्न नहीं होता कि कोई आसमानी निशान दिखाए तब डिग्री होगी या केवल इस स्थिति में मुकद्दमा डिस्मिस होगा कि जब प्रतिवादी (मुद्दआ अलैहि) से कोई चमत्कार प्रकट हो, बल्कि यदि कोई वादी (मुद्दई) घटनाओं को सिद्ध करने के बजाए एक सुई का सांप बना कर दिखा दे या काग़ज़ का कबूतर बना कर अदालत में उड़ा दे तो कोई न्यायाधीश केवल इन कारणों की दृष्टि से उसे डिग्री नहीं दे सकता जब तक नियमित रूप से दावा सही सिद्ध न हो और घटनाएं परखी न जाएं। अतः जिस स्थिति में घटनाओं का परखना आवश्यक है और मेरा

यह बयान है कि मेरे समस्त दावे पवित्र कुर्आन, नबी हदीसों तथा पहले वलियों की पूर्व भविष्यवाणियों से प्रमाणित हैं और मेरे विरोधी जो कुछ तावीलों (मूल अर्थों से हटकर व्याख्याएं) से असल मसीह को दोबारा संसार में उतारना चाहते हैं उन पर न केवल सबूतों के अभाव का इल्जाम है बल्कि यह असंभव विचार व्यापक तौर पर पवित्र कुर्आन के स्पष्ट आदेशों के विरुद्ध है। इसके प्रत्येक पहलू में इतनी खराबियां हैं और इतने दोष हैं कि संभव नहीं कि कोई व्यक्ति इन सब को अपनी नज़र के सामने रख कर फिर उसको व्यापक तौर पर खंडनीय न कह सके। तो इन वास्तविकताओं, मआरिफ़, तर्कों और प्रमाणों को निरर्थक तर्क-वितर्क कैसे कह सकते हैं। पवित्र कुर्आन भी तो प्रत्यक्ष तौर पर तर्क-वितर्क ही है जो बहुत शानदार चमत्कार और सब चमत्कारों से बढ़कर है। तर्क संगत प्रमाण तो प्रथम श्रेणी पर आवश्यक होते हैं। इसके बिना निशान तुच्छ हैं। याद रहे कि जिन सबूतों पर प्रतिवादी को अदालतों में मृत्यु-दण्ड दिया जाता है वह सबूत उन सबूतों से कुछ बढ़कर नहीं हैं जो कुर्आन, हदीस, प्रतिष्ठित लोगों तथा आदरणीय वलियों के कथन मेरे पास मौजूद हैं परन्तु ध्यानपूर्वक देखना और मुझ से सुनना शर्त है।

मैंने इन सबूतों को सफाई के साथ 'आईना कमालात-ए-इस्लाम' पुस्तक में लिखा है और खोलकर दिखाया है कि जो लोग इस प्रतीक्षा में अपनी आयु और समय को नष्ट करते हैं कि हज़रत मसीह दोबारा अपने पार्थिव शरीर के साथ संसार में आएंगे वे खुदा के आशय से कितने दूर जा पड़े हैं और कैसे उन्हें चारों ओर के उत्पातों तथा खराबियों ने घेर लिया है। मैंने इस पुस्तक में सिद्ध कर दिया है कि **मसीह मौऊद** ने पवित्र कुर्आन में यह वर्णन किया है वह तभी सही और दुरुस्त होगा कि जब मसीह मौऊद से अभिप्राय कोई मसीले मसीह लिया जाए जो इसी उम्मत में पैदा हो और दज्जाल से अभिप्राय एक गिरोह लिया जाए। दज्जाल स्वयं एक गिरोह को कहते हैं। निस्सन्देह हमारे विरोधियों ने बड़ी अपमान जनक ग़लती अपने लिए चुनी है अर्थात् कुर्आन हदीस को एक ओर छोड़ दिया है वह अपनी अत्यन्त मूर्खता से अपनी ग़लती पर सतर्क नहीं होते तथा

अपने मोटे और सतही विचारों पर अहंकारी हैं परन्तु उनको लज्जित करने वाला समय निकट आता जाता है।

मैं नहीं जानता कि मेरे इस पत्र का आपके दिल पर क्या प्रभाव पड़ेगा परन्तु मैंने आपके सामने एक वास्तविक नक्शा खींचकर दिखा दिया है। भेंट करना अत्यावश्यक है। मैं चाहता हूँ कि जिस प्रकार हो सके 27 दिसम्बर 1892 ई. को जल्से में जरूरी आएँ खुदा ने चाहा तो आपके लिए बहुत लाभप्रद होगा। जो यात्रा खुदा के लिए की जाती है वह अल्लाह के नज़दीक एक प्रकार की इबादत होती है। अब दुआ पर समाप्त करता हूँ।

ایدکم اللہ من عنده ورحمکم فی الدنیا والاخرۃ

अनुवाद- अल्लाह अपनी ओर से आपकी मदद करे और आप पर रहम करे इस लोक में और परलोक में भी।

वस्सलाम खाकसार

गुलाम अहमद- क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर

10, दिसम्बर 1892 ई.

چون مرا نورے پئے قومے مسیحی دادہ اند
مصلحت را ابن مریم نام من بنادہ اند

चूँकि मुझे ईसाई क्रौम के लिए एक प्रकाश दिया गया है। इस कारण मेरा नाम इब्ने मरयम रखा गया।

می درخشم چون قمر تا بم چو قرص آفتاب
کور چشم آنانکه در انکارها افتاده اند

मैं चन्द्रमा के समान प्रकाशमान हूँ और सूर्य के समान चमकता हूँ। वे अंधे हैं जो इन्कार में पड़े हुए हैं।

بشنوید اے طالبان کز غیب بکنند این ندا
مصلحتی باید کہ در ہر جا مفاسد زادہ اند

हे अभिलाषियो! सुनो ग़ैब से यह आवाज़ आ रही है कि एक मुस्लिह

(सुधारक) की आवश्यकता है क्योंकि हर स्थान पर बिगाड़ पैदा हो गए हैं।

صادق و از طرف مولیٰ با نشانها آدم
صد در علم و هدیٰ بر روی من بکشاده اند

मैं सच्चा हूँ और मौला की ओर से निशान लेकर आया हूँ। ज्ञान और
हिदायत के सैकड़ों दरवाजे मुझ पर खोले गए हैं।

آسمان بارد نشان الوقت میگوید زمین
این دو شاهد از بچے تصدیق من استاد اند

आकाश निशान बरसा रहा है और पृथ्वी पुकार रही है कि यही समय है,
मेरी तस्दीक (सत्यापन) के लिए ये दो गवाह मौजूद हैं।



अत्तबलीग (धर्म का संदेश लोगों तक पहुंचाना)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली

पंजाब, हिन्दुस्तान, अरब देश, फारस, रोम, मिस्र, ईरान, तुर्किस्तान तथा अन्य देशों के पीरों के पुत्रों, गद्दी नशीनों और बिदअती फ़कीरों, संसार से विरक्त लोगों, सूफियों और आश्रमों के एकान्तवासियों की ओर

एक सभा में मेरे निष्ठावान मित्र हुब्बी फ़िल्लाह मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी ने दिनांक 11, जनवरी 1893 ई. वर्णन किया कि इस पुस्तक 'दाफ़िउल वसाविस' में उन फ़कीरों और पीरों को भी बतौर दावत तथा समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए एक पत्र सम्मिलित होना चाहिए था जो बिदअतों में दिन-रात डूबे और ख़ुदा की किताब के उद्देश्य से पूर्णतया विरुद्ध आचरण करते हैं, और इस सिलसिले से जिसको ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से स्थापित किया है बेख़बर हैं। अतः मुझे आदरणीय मौलवी साहिब की यह सलाह (परामर्श) बहुत पसन्द आयी और यद्यपि मैं पहले भी वर्तमान समय के फ़कीरों और हिन्दुस्तान तथा पंजाब के उलेमा के सन्दर्भ में कुछ चर्चा का उल्लेख कर आया हूँ। परन्तु मैंने प्रशंसित मित्र की राय में सहमति के साथ यही समयानुसार हित में समझा कि एक स्थायी पत्र ऐसे फ़कीरों की ओर लिखा जाए जो शरीअत एवं सुदृढ़ धर्म से दूर जा पड़े हैं और मेरा इरादा

था कि यह पत्र उर्दू में लिखूं परन्तु रात को कुछ इल्हामी संकेतों से ऐसा ज्ञात हुआ कि यह पत्र अरबी भाषा में लिखना चाहिए और यह भी इल्हाम हुआ कि इन लोगों पर बहुत कम प्रभाव पड़ेगा। हां समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होगा और शायद अरबी में पत्र लिखने में यह उद्देश्य हो कि जो लोग फ़क्कीरी और सूफीवाद का दावा करते हैं ग़फ़लत के पदों में रहने और धर्म से प्रेम संबंधों के अभाव के कारण उन्होंने कुर्आन पढ़ने तथा अरबी जानने की ओर ध्यान ही नहीं दिया। वे अपने दावे में झूठे हैं और सम्बोधन के योग्य नहीं। क्योंकि यदि उनको अल्लाह तआला और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम होता तो वे अवश्य प्रयास करके वह भाषा सीखते जिसमें खुदा तआला का प्रिय और बुद्धिमत्तापूर्ण कलाम उतरा है और यदि उन पर खुदा तआला की दया-दृष्टि होती तो उनको अपना पवित्र कलाम समझने के लिए सामर्थ्य प्रदान करता और यदि उन्हें पवित्र कुर्आन से सच्चा प्रेम होता तो वे गद्दी नशीनों के आश्रमों को आग लगाते और बैअत करने वालों से हजार दिल के साथ विमुख हो जाते तथा सर्वप्रथम पवित्र कुर्आन के ज्ञान प्राप्त करते और वह भाषा सीखते जिसमें पवित्र कुर्आन उतरा है। अतः उनके धर्म में अपूर्ण होने तथा मुनाफ़िक (वह व्यक्ति जिस के मुंह पर कुछ और अन्दर कुछ और हो) होने के लिए यह तर्क पर्याप्त है कि उन्होंने पवित्र कुर्आन की यथायोग्य क़द्र नहीं की। उससे वह प्रेम नहीं लगाया जो लगाना चाहिए था इसलिए उनका खोट प्रकट हो गया। देखना चाहिए कि बहुत से अंग्रेज़ पादरी ऐसे हैं जिन्होंने विरोध के जोश से पचास-पचास वर्ष के होकर अरबी भाषा को सीखा है और पवित्र कुर्आन के अर्थों का ज्ञान पाया है फिर जिस व्यक्ति को पवित्र कुर्आन के प्रेम का दावा है बल्कि स्वयं को पीर और शैख़ कहलवाता है, उसमें यदि प्रेमियों के लक्षण न पाए जाएं और पूर्णतया पवित्र कुर्आन के अर्थों तथा वास्तविकताओं से वंचित हो तो इस बात से यही एक तर्क पर्याप्त है कि वह अपने फ़क्कीरी के दावे में कपटी है। प्रत्येक सच्चा प्रेमी अपने प्रियतम की भाषा को सीख लेने की रुचि रखता है। फिर जिस व्यक्ति को खुदा के प्रेम का दावा है परन्तु उसके कलाम

को जानने से लापरवाही है वह सच्चा प्रेमी हरगिज़ नहीं है। या यों कहो कि उसकी हालत दो पक्ष से खाली नहीं। या तो उसने जान बूझ कर पवित्र कुर्आन के अर्थ जानने और कुर्आन की भाषा सीखने से मुख फेरा है तो इस पक्ष का हाल तो अभी मैं वर्णन कर चुका हूँ कि यह निर्दयता वलियों के यथायोग्य नहीं। वलियों को कुर्आन से बहुत प्रेम होता है, और प्रेमी को अपने प्रियतम से कदापि सब्र नहीं होता तथा पूर्ण प्रेम की बरकत से कुर्आन की भाषा का जानना उन पर आसान हो जाता है और ज्ञान प्राप्त करने के जो मार्ग दूसरों पर दुष्कर होते हैं वे उन पर आसान हो जाते हैं। चूंकि निर्दयता निफ़ाक़ (दिल में कुछ बाहर कुछ) का एक विभाग है। इसलिए यह मुनाफ़िक़ों वाली आदत, आलस्य और सुस्ती उन से जारी नहीं हो सकती, क्योंकि पवित्र कुर्आन तो उन का प्राण होता है। फिर वे अपने प्राण से कैसे अलग हो सकते हैं। वास्तव में जो व्यक्ति वलियों की पद्धति में होकर न पवित्र कुर्आन के अर्थ समझता है और न उसकी वास्तविकताओं तथा मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानों) का ज्ञान रखता है वह कुर्आन का प्रेमी नहीं बल्कि भांड शैतान है। यदि अनादि कृपा (इनायत) उसकी साथी होती तो उसे इस महान दौलत से वंचित न रखती। अतः अपमानित एवं बहिष्कृत के लिए इस से बढ़कर अन्य कोई लक्षण नहीं कि उसको संसार में आकर तथा मुसलमान कहला कर इतना भी प्राप्त न हो कि पवित्र कुर्आन के अर्थ, आवश्यक विद्याओं और चमत्कारी मआरिफ़ से पूर्णतया अपरिचित हो। और दूसरा पक्ष यह है कि ऐसा व्यक्ति अत्यन्त मूर्ख, मंद बुद्धि, चौपाए और जानवरों जैसा हो, जिसको मानवीय शक्तियों, स्मरण-शक्तियों और विचार शक्ति से बहुत कम भाग मिला हो। इसलिए वह कुर्आनी भाषा के जानने पर शक्ति न रखता हो तो ऐसा व्यक्ति भी वली होने तथा खुदा के सानिध्य के सम्माननीय पद से सम्मानित नहीं हो सकता। ऐसे व्यक्ति को वली समझने वाले भी वहशियों और गधों से कुछ कम नहीं होते क्योंकि वे अत्यन्त श्रेणी की मूर्खता के कारण इस पद तक नहीं पहुंचते कि जिस व्यक्ति को वह नेमत नहीं दी गई जो ईमान का केन्द्र है फिर दूसरी नेमतों से वह कब लाभान्वित हो

सकता है। यदि उससे दूसरा चमत्कार प्रकट भी हो तो वह इस्तिदराज (नास्तिक से प्रकट होने वाला चमत्कार) है न कि करामत। और ऐसा अन्याय तो किसी प्रकार से नहीं हो सकता कि वली होने का मुद्दई मानवीय शक्तियों के साधारण स्तर से भी गिरा हुआ हो। क्योंकि खुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि जिन को अपने सानिध्य के इनामों से सम्मानित करता है वे लोग मानवीय विशेषताओं में से भी एक बड़ा भाग रखते हैं। अतः यह बुद्धिमत्ता मालूम होती है कि यहां खुदा तआला ने अरबी पत्र की ओर संकेत किया, क्योंकि उसकी दृष्टि में समस्त लोग जो काम छोड़ बैठने और उपेक्षा या प्रतिभा की कमी के कारण कुआनी भाषा तथा कुआन के अर्थों से वंचित हैं, इस योग्य ही नहीं हैं कि उनको सम्माननीय मनुष्य समझ कर उन से सम्बोधन किया जाए। बल्कि उन्होंने अपनी इस स्थायी लापरवाही और मूर्खता प्रिय होने से मुहर लगा दी है कि उनको पवित्र कुआन से प्रेम का कुछ संबंध नहीं और वे वास्तव में पवित्र कुआन के मार्ग का अनुकरण नहीं करते बल्कि अन्य मार्गों में भटक रहे हैं और यदि कष्ट कल्पना के तौर पर उनको किसी प्रकार की रुचि भी प्राप्त है तो उनकी रूह इक्रार नहीं कर सकती कि वह पवित्र कुआन द्वारा है। क्योंकि पवित्र कुआन से तो उनका कुछ सम्बन्ध ही नहीं और न उसका कुछ अभ्यास है और न उनकी रूह यह इक्रार कर सकती है कि रसलू करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्ण प्रेम से उन्होंने कोई श्रेणी प्राप्त की है। क्योंकि उन्होंने पवित्र कुआन से ही पूर्ण प्रेम नहीं किया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किस प्रकार पूर्ण प्रेम कर सकते थे, क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का महत्त्व पवित्र कुआन के माध्यम से खुलता है जिसने पवित्र कुआन को नहीं देखा उसने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या देखा। निष्कर्ष यह कि वे इन कारणों से प्रेम-योग्य नहीं थे। उनकी निफ़ाक़ की हालत पूर्णतया प्रकट थी। इसलिए उनकी ओर तबलीग़ का पत्र लिखना अनावश्यक समझा गया। और आश्चर्य कि ऐसे लोगों के अनुयायी यह नहीं सोचते कि किसी वली की प्रथम श्रेष्ठता और विशेषता यह है कि उसे

कुर्आन का ज्ञान प्रदान किया जाए। क्योंकि वही तो हम मुसलमान लोगों का अग्रगामी (अनुकरणीय), पेशवा, पथ-प्रदर्शक और रहनुमा (रहबर) है। यदि उसी से बेखबरी (बेसुधी) हुई तो फिर पग-पग पर तबाही और मौत मौजूद है। जिस पर खुदा तआला ने कृपा न की कि अपने पवित्र कलाम का ज्ञान उसे प्रदान करता और उस की वास्तविकताओं से अवगत करता तथा उसकी मआरिफ़ पर सूचित करता। ऐसे अभागे व्यक्ति पर अन्य कृपा और क्या होगी। हालांकि वह स्वयं फ़रमाता है कि मैं जिसको वास्तविक पवित्रता प्रदान करता हूँ उस पर कुर्आन के ज्ञान के झरने खोलता हूँ अतः फ़रमाता है जिसको चाहता हूँ कुर्आन का ज्ञान देता हूँ और जिसको कुर्आन का ज्ञान दिया गया उसे वह चीज़ दी गई जिसके बराबर कोई चीज़ नहीं। मैं विश्वास रखता हूँ कि हमारे इस वर्णन से प्रत्येक सच्चा मुसलमान सहमत होगा सिवाए उस व्यक्ति के कि जो कोई आस्तीन में गुप्त मूर्ति रखता है तथा पवित्र कुर्आन के सच्चे प्रेम और सच्ची मुग्धता से भाग्यहीन तथा वंचित है।

अब हम अगले पृष्ठ पर अरबी भाषा में पत्र लिखते हैं और वह यह है-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

अत्तबलीग

भारत के मशाइख और अफगानिस्तान, मिस्र
तथा अन्य देशों के सूफियों की ओर

समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है, जिसकी दया उसके हर कार्य तथा तकदीर में उसके क्रोध पर प्रबल है, और जिसके प्रकाश हर अंधेरी रात पर हावी हैं। अल्लाह ही वह हस्ती है, कि हर तंगी के समय उदारता की एक सेना उसके पास से आती है, जो उसकी दया की ओर बुलाती है। पेड़ों पर मौजूद हर पत्ता, पत्थरों से चमकने वाली हर रोशनी, रात और दिन में जो कुछ भी परिवर्तन तुम देखते हो, और वह सब जो धरती और आकाश में है, वह अल्लाह की दया की ओर बुलाता है। और उसकी दया के चिन्हों में से यह है कि उसने अवतार और सचेत कर्ता (नजीर) भेजे और हिदायत (सन्मार्ग) के घरों की आधारशिला रखी। और उसकी महान रहमत की निशानियों में से वह चौदहवीं का चाँद है जो बस्तियों की मां (अर्थात् मक्का) से एक ऐसी रात में उदय हुआ जो बहुत अंधकारमय हो गई थी। अतः उसने समस्त अंधकारों को दूर कर दिया और प्रत्येक सुजाखी आंख के सम्मुख एक जलता हुआ दीपक रख दिया। हमारे पास वह शब्द नहीं जिनसे हम उसके महान उपकारों का धन्यवाद कर सकें। उसने समस्त संसारों को जगाया और सोने वालों से नींद को दूर कर दिया और उसने हर एक दुख-तक्लीफ़ का जो उसे धर्म के मार्ग में कभी भी उठानी पड़ी, प्रसन्नता पूर्वक सामना किया और हर उस व्यक्ति के लिए जिसका उद्देश्य ईश्वर हो, अल्लाह की खातिर अपने स्वाभिमान की कुर्बानी के आदर्श की बुनियाद रखी। वह अल्लाह में फना हुआ और उसने अल्लाह की खातिर संघर्ष किया और अल्लाह ही की ओर उसने बुलाया और संसार को जैसा कि करना चाहिए था, पवित्र किया। अतः धन्य है वह जवाँ

मर्द। हे मेरे रब ! तू उस रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमारी ओर से इस से भी उत्तम प्रतिफल प्रदान कर जो तू सृष्टि में से किसी को देता है और तू हमें उसके समूह में सम्मिलित होने की अवस्था में मृत्यु दे और उसी की उम्मत में से हमें (कयामत के दिन) उठा और उसी के चश्मे से हमें तृप्त कर और उसी चश्मे को हमारे लिए घाट बना दे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमारे लिए लोक परलोक में स्वीकृत सिफारिश करने वाला सिफारिशी बना दे। हे मेरे रब! तू हमारी यह दुआ स्वीकार कर। और हमें इस शरणस्थली में शरण दे। हे मेरे रब! हे मेरे रब! तू इस दयालु नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर और हर उस व्यक्ति पर जिसने आप से प्रेम किया और आपके आदेश का पालन किया और आपके मार्गदर्शन का अनुपालन किया दुरूद व सलाम और बरकत (आशीर्वाद, शांति और अध्यात्मलाभ) भेज। तत्पश्चात् हे भारत तथा अन्य देशों के लोगो, तपस्वियो और माशाइख! जो बिद'अतों (धर्म में नयी बात) तथा कुप्रथाओं में लिप्त हो, जान लो कि मैं तुम्हें धर्म के आदेश पहुँचाने के लिए नियुक्त किया गया हूँ और कुरआन के उन रहस्यों को याद दिलाने के लिए, जिन्हें तुम भूल चुके हो। मुझे मेरे रब ने तुम्हारे बारे में इलहाम द्वारा बताया है कि इन लोगों को दूर से बुलाया जाता है, अर्थात् तुम बहुत दूर जा पड़े हो। और मेरा रब जो चाहता है करता है, और वह हर चीज़ पर हावी है। हे मेरी क्रौम! अल्लाह से डरो और विधर्मी लोगों की इच्छाओं का अनुसरण मत करो। और उस उम्मी नबी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करो जो समस्त ब्रह्माण्ड के लिए दयास्वरूप हैं। हे मेरे भाइयो! जान लो कि अल्लाह ने मुझे तुम्हारी ओर तथा समस्त संसार वालों की ओर मुहद्दस बनाकर भेजा है। अतः तुम उस से डरो और रसूलों का अपमान न करो और बिदअत की गंदगी से बचो और धर्म में नई बातों को सम्मिलित करने से बचो और अल्लाह के नेक बन्दे बनो। हे मेरी क्रौम! मैं अल्लाह का बंदा हूँ, उसने अपनी ओर से अपनी रहमत से मुझ पर उपकार किया है और अपनी ओर से मुझे पूर्व नबियों का ज्ञान सिखाया है, और उसने मुझे इस शताब्दी के आरंभ में भेजा है ताकि मैं उन लोगों को सावधान करूँ

जिनके पूर्वजों को सचेत नहीं किया गया ताकि गुनहगारों का रास्ता खुलकर सामने आ जाए। उसने मुझे पुकार कर कहा कि मेरे भक्तों से कह दे कि मैं खुदा की ओर से **आदेशित** हूँ और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ और उसने मेरा वह नाम रखा है जो उस क्रौम के नाम से अनुकूलता रखता है जिसे निरुत्तर करने तथा मुल्जिम ठहराने के लिए मुझे भेजा गया है और वह ईसाई लोग हैं जिन्होंने धरती में विद्रोह किया और अल्लाह वालों को कमजोर करना चाहा, और गलत चीज़ को सुंदर बना कर दिखाया है ताकि वे इसके माध्यम से सच्चाई को मिटा दें, और वह एक हद से बढ़ी हुई क्रौम है। और उन्होंने बहुत से लोगों को अपने छल-कपट से नष्ट कर दिया और अपनी अज्ञानता में उद्दंडता का व्यवहार किया और इस्लाम के मामलों को उलट दिया और लोगों को अपने अंधविश्वासों की ओर आकर्षित किया और खुला-खुला जादू गढ़ लाए। तो अल्लाह ने उनके दिलों की ओर झांका तो उन्हें झूठा दज्जाल, भटका हुआ और भटकाने वाला पाया। उन्होंने अपने तौर तरीके पूरी तरह से भ्रष्ट कर दिए और अपने रब के खिलाफ विद्रोह कर दिया और अन्य क्रौमों को भी बिगाड़ना चाहा। वे धर्मों को वैसे ही नष्ट कर देते हैं जैसे बैल खेत की हरियाली को नष्ट कर देता है और वे शरारत और उपद्रव करना चाहते हैं और विनम्रता धारण करने वाले नहीं हैं। उनकी समझ और हिकमत ने लोगों को मोह (परीक्षा) में डाल दिया है और उनकी गुमराही का रहस्य बढ़ गया है और वे सांसारिक विज्ञान और उद्योग और शिल्प की गहरी समझ रखते हैं। उन्होंने फ़सादों की आग भड़काई और प्रलोभनों (फ़ितनों) की नदियाँ बहा दीं और बड़ा षड्यंत्र रचा और वे उस सीमा तक पहुँच गए कि जिसका उदाहरण तुम पहले लोगों के छल-कपट में कदापि नहीं पाओगे। उन्होंने इस्लाम के विनाश के लिए अपने साहस को जुटाया और अपनी धन-दौलत नीच लोगों को बहकाने में लुटा दी। और मुसलमानों के दिलों पर अपने हाथ डाले, जबकि इस्लाम के विद्वान उनके लीडरों की नज़र में कंगाल या मांस के उस टुकड़े की तरह थे जो उनके दाँतों के नीचे हो। और हमारी क्रौम हंसी ठट्ठा करने वालों के उपहास का निशाना थी। तो अल्लाह ने चाहा कि उजाले को अँधेरे से

अलग कर दे और गंदगी और पवित्रता के बीच फैसला कर दे और कमजोरों पर उपकार करे। और उसने उनके फ़ितने को इस्लाम के लिए एक बड़ी आपदा समझा और उनके दिनों को अंधेरे के कारण भयानक रातों की तरह पाया और उन्हें फ़ितनों में एक उद्दंड क्रौम पाया। आदम के जन्म के दिन से लेकर हमारे आज के दिन तक बल्कि क्रयामत के दिन तक उसके समान कोई फ़ितना नहीं है, और उससे भी बढ़कर यह कि वे राजा बन गए और पृथ्वी पर प्रबल हो गए और वे ख़ूब फले-फूले और पृथ्वी को अपनी बहुतायत से भर दिया, और आतंक और शानो शौकत में बढ़ गए। और अल्लाह ने उनके धन और संतान और उनके ज्ञान और कला और उनके उद्योग और शिल्प कौशल को आशीर्वाद दिया और उसने उनके इरादों और उनके विचारों और उनके दृष्टिकोणों में उनकी मदद की और अपनी ओर से उनको परखने के लिए उन पर सारे द्वार खोल दिए। तो वे अंधे और बहरे और अहंकारी हो गए। और अल्लाह ने हमारे विद्वानों और तपस्वियों (ज़ाहिदों) के दिलों को टेढ़ा कर दिया और उनके दिलों की रोशनी को बुझा दिया, यहाँ तक कि वे उसी अज्ञानता की ओर लौट गए, जिससे वे निकाले गए थे क्योंकि वे धरती में फसाद करते थे और सुधार करने वालों में से नहीं थे। अतः वे इच्छाओं पर मर मिटे और उनके विचारों में कमज़ोरी आ गई और वे निर्बल तथा सुस्त हो गए और अज्ञानता की हवा ने उनकी धूल उड़ा दी और उनकी सारी शक्ति नष्ट हो गई तो वे मुर्दे के समान हो गए। और जब अल्लाह तआला ने हमारे रईसों पर दृष्टि डाली तो उन्हें हद से बढ़ा हुआ, बेपरवाह, धर्म और संयम से मुंह फेरने वाला और अत्याचारी पाया। इसलिए उसने उनके तथा उनकी इच्छाओं के बीच दूरी डाल दी और उन्हें उन संपत्तियों से वंचित कर दिया, जिनसे उनके दिल जुड़े हुए थे। और उनकी अधिकांश संपत्ति और ज़मीनें उनके कब्ज़ा से निकाल दीं और वह सब कुछ जिस पर वे जमे बैठे थे, नष्ट कर दिया और भूख और गरीबी की पीड़ा से चेहरे विकृत हो गए और अमीरों की आग बुझ गई और उनकी हड्डियां तोड़ डाली गईं और उनके तीरों को चूर चूर कर दिया गया, ताकि उनके नीच लोग जान लें कि वे बलवा करने वालों में

से हैं। ईसाइयों के आंकड़ों और उनके नेताओं के जाल ने समुद्र की मछलियों से लेकर आकाश की ऊंचाइयों तक घेराव कर लिया। और उनकी नावें लहरों को चीरते हुए भटके हुए समुद्र में चल पड़ीं। और उन के प्रताप से पृथ्वी के सब लोग कांप उठे, तो वे उनके सामने सजदे में गिर पड़े और कोई घर, कोई निवास्थल और घोंसला ऐसा न रहा जिस में शिकारियों के हाथ न जा पहुंचे हों। और उन्होंने अत्याचार की ओर अपने क्रदम बढ़ाए यहाँ तक कि उन्होंने रसूलों की किताबों पर नज़र डाली और उनकी व्याख्या अपने मत के अनुसार की और उनमें कुछ बातें मिला दीं और कुछ बातें कम कर दीं, मानो कि वे नबियों और रसूलों में से हों। फिर उन्होंने अल्लाह की हुकूमत और ईश्वरीय मामलों की ओर रुख किया और उन मामलों में हस्तक्षेप किया जिनमें उन्हें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं था। वे अपने उपायों पर प्रसन्न हुए और उन्होंने स्वयं को हर चीज़ पर समर्थ समझा मानो कि वे समस्त संसार के उपास्य (खुदा) हैं। अतः वे लापरवाह हो गए और उन्होंने बहुत विद्रोह किया और अपने अहंकार, अविश्वास में उन्होंने नास्तिकों के कान भी काट डाले। अतः नबूव्वत का दावा करने और खुदा होने का दावा करने का यही अर्थ है। तो जो समझने वाले हैं वे समझ लें। उनके भ्रष्टाचार से पृथ्वी दूषित हो गई थी और लोग उनके शृंगार, उनकी बुद्धि और उनके फलों, उनके स्वादिष्ट भोजन, उनके बगीचों और उनकी सुंदर महिलाओं की चमक दमक की ओर जल्दी से दौड़ पड़े।

अल्लाह जिसकी चाहता है रक्षा करता है और वह सबसे अच्छा रक्षक है, और लोगों के कर्म और विश्वास, संयम और पवित्रता, नियतों और विचारों, कर्म, वचन, नेत्र, कान, धर्म, श्रद्धा, शिष्टाचार और उनके उपकारों, प्रेमभाव, कृपा के दस्तूर और उनके बेटों, भाइयों, बेटियों और महिलाओं और उनकी तपस्या तथा विवेक और उनके हाथों और जुबानों पर एक बड़ा तूफान आया और चारों ओर से फसाद की हवा चल पड़ी और हर जगह अंधेरा फैल गया और एक भयानक भूकंप ने जीवों को हिला दिया और उनके होश उड़ गए और वे हैरान-परेषान लोगों के समान हो गए। और वे नहीं जानते थे कि धरती वालों के लिए अज़ाब

(यातना) का इरादा किया गया है या उनके रब ने उन पर दया करने का इरादा किया है, और वे परोक्ष के रहस्य (खुलने) की प्रतीक्षा में थे, और गुमराही के समुद्र में उनके जहाज टूट फूट गए थे और चारों ओर से लहरें उठने लगीं और निकट था कि वे डूब जाते।

तब मेरे रब ने मुझे आसमान से पुकारा और कहा:- * "हमारी आँखों के सामने और हमारे इलहाम के अनुसार एक कश्ती तैयार कर, और उठ (और लोगों को आने वाले अज़ाब से) सावधान कर, क्योंकि तुम उन लोगों को चेतावनी देने के लिए नियुक्त किए गए हो जिनके पूर्वजों के पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया था, ताकि अपराधियों का रास्ता साफ दिखाई दे सके। हमने तुझे मरियम पुत्र मसीह बनाया है, ताकि ईसाई धर्म स्वीकार करने वालों पर मैं अपनी हुज्जत पूरी कर सकूँ। तू कह कि यह मेरे प्रभु की कृपा है और मैं अपने आप को हर तरह की उपाधियों से अलग रखता हूँ। और मुझे अल्लाह तआला का हुक्म मिला है और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ। वह समय को देखता है और उसकी युक्तियों को जानता है और हर चीज़ के उसके पास खजाने हैं। जब वह कुछ इरादा करता है, तो वह कहता है: 'हो जा' तो वह होने लगता है। तू कह क्या तुम अल्लाह तआला के कामों पर आश्चर्य करते हो, फिर कह अल्लाह की महिमा बड़ी विचित्र है वह जिसे चाहता है उठाता है और जिसे चाहता है नीचे गिरा देता है। वह जिसे चाहता है सम्मान देता है और जिसे चाहता है अपमानित करता है और जिसे चाहता है अपना सानिध्य प्रदान करता है, जो कुछ वह करता है उसके बारे में वह पूछा नहीं जाता है और लोग जो कुछ करते हैं उसके बारे में उनसे पूछा जाएगा।

तू कह कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने मेरा दुःख दूर कर दिया और मुझे वह चीज़ दी जो समस्त प्राणियों में से किसी को नहीं दी गई। और वे कहते हैं कि यह किताब अविश्वास और झूठ से भरी हुई है। तू कह कि आओ हम अपने बेटों और तुम्हारे बेटों, अपनी स्त्रियों और तुम्हारी स्त्रियों,

* यह इल्हाम अरबी भाषा में हैं यहाँ केवल उनका अनुवाद लिखा जा रहा है। प्रकाशक

अपने पुरुषों और तुम्हारे पुरुषों को बुला कर गिड़गिड़ा कर झूठे लोगों पर लानत (अज़ाब) भेजें। और मेरे बन्दों को सत्य की ओर बुला और उन्हें अल्लाह के (चमत्कार के) दिनों की शुभ सूचना दे और उन्हें एक उज्ज्वल पुस्तक की ओर बुला। जो लोग तेरी बैअत (निष्ठा की प्रतिज्ञा) करते हैं वे (तेरी नहीं बल्कि) ईश्वर के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है और वे जहाँ कहीं भी होंगे, अल्लाह उनके साथ होगा बशर्ते कि वे अपनी निष्ठा के प्रति सच्चे हों। उन्होंने कहा कि अगर तुम अल्लाह से प्यार करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तुमसे प्यार करेगा। और वह तुम्हें अपना विशेष प्रकाश प्रदान करेगा और तुम्हें एक विशिष्ट चिह्न देगा और तुम्हें उन लोगों में सम्मिलित करेगा जो उसके द्वारा सहायता प्राप्त हैं। निश्चय ही अल्लाह परहेज़गारों के साथ है और अल्लाह भलाई करने वालों के साथ है।"

ये हैं वह इलहाम जो मेरे रब ने मुझे उसी समय और इससे पहले किए थे। वह जिसे चाहता है इनाम देता है और वह तमाम इनाम देने वालों से बेहतर है। और औलिया (संतों) में से उसके कुछ ऐसे बंदे हैं जिनको आसमान पर पैगंबर का नाम दिया जाता है क्योंकि वे अपने जौहर और स्वभाव में उनके समान हैं और क्योंकि वे उनके प्रकाश से प्रकाश प्राप्त करते हैं और वे उनकी प्रकृति (आचरण, स्वभाव) पर पैदा किए गए हैं। इसीलिए अल्लाह तआला उन्हें उनका उत्तराधिकारी बनाता है और उन्हें उनके पूर्वजों के नाम से पुकारता है। और वह ऐसा ही करता है और वह सर्वश्रेष्ठ है। और आत्माओं (रूहों) का आत्माओं से संबंध होता है जिनकी सूक्ष्मता को जाना नहीं जा सकता और जो लोग परस्पर समानता रखते हैं उनमें एक समरूपता होती है और उनमें से कुछ के नाम दूसरों पर लागू होते हैं और इसी प्रकार अल्लाह का विधान जारी है और यह वह बात हो जो ज्ञानियों से छिपी नहीं है। वास्तव में, अल्लाह तआला विषम है और विषम को पसंद करता है, और इसीलिए यह उसकी निरंतर सुन्नत है कि वह कुछ औलिया को कुछ नबियों के पदचिह्नों पर भेजता है। अतः जिसको किसी नबी के पदचिह्नों पर भेजा जाए तो उसे ख़ुदा के यहां उस अमानतदार पैगंबर के नाम

से पुकारा जाता है, और अल्लाह तआला उसे उस पैगंबर की आत्मा के रहस्य, उसके जौहर की सच्चाई और उस पैगंबर के चरित्र की पवित्रता और उस पैगंबर के गुणों की विशेषता प्रदान करता है। उसके गुणों को उस नबी के गुण और उसके स्वभाव को उस नबी के स्वभाव और उसके नाम को उस नबी के नाम के साथ जोड़ देता है। और वह उसके इरादों को उस नबी के इरादों के और उसकी तवज्जो को उस नबी की तवज्जो और उसके उद्देश्यों को उस नबी के उद्देश्यों के अनुसार बना देता है। और उन दोनों को प्रकाश देने और प्रकाश लेने में आमने-सामने रखे दो दर्पणों की तरह बना देता है मानो वे एक ही वस्तु हैं और यही शुद्ध आत्माओं में एक होने का रहस्य है। तो यही वह भेद है जिसे ध्यान में रखते हुए अल्लाह तआला ने मेरा नाम मसीह मौऊद रखा है। इसलिए तुम इस भेद के बारे में सोचो और जल्दबाजी करने वालों में से न बनो। अल्लाह कदापि ऐसा नहीं है कि वह हमारे नबी खातमुन्नबियीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी भेजे और न ही वह ऐसा है कि नबूव्वत की श्रृंखला को बंद करने के बाद फिर जारी करे। और कुरआन के कुछ आदेशों को रद्द कर दे या उनमें कुछ बढ़ोतरी कर दे और अपने वादे के खिलाफ़ करे और भूल जाए कि उसने कुरआन को पूरा कर दिया है। और धर्म में नए-नए प्रलोभन (फ़िल्ले) पैदा कर दे। क्या तुम मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में नहीं पढ़ते कि मसीह उसकी उम्मत में से ही होगा और उसकी शरीयत के सारे नियमों पर चलेगा और नमाज़ियों के साथ नमाज़ पढ़ेगा और पवित्र कुरआन ऐसी आयतों से भरा पड़ा है जो इस बात की गवाही देती हैं कि मरियम के बेटे मसीह की मृत्यु हो गई है और वह अपने भाइयों इब्राहीम और मूसा के साथ जा मिला है। और उसकी मौत की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी, और वह ख़बर देने वालों में सबसे सच्चा है। क्या तुम कुरआन में नहीं पढ़ते हो:

(आले इमरान- 3/56) **يَعِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ**

अर्थात : हे ईसा! निश्चित रूप से मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ।

(अल मायदा-5/118) **فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي**

अर्थात : और जब तू ने मुझे मृत्यु दे दी।

और क्या तुम नहीं पढ़ते कि:

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ

(आले इमरान-3/145)

अर्थात: मुहम्मद केवल अल्लाह के रसूल हैं और उससे पहले सभी रसूल गुजर चुके हैं। क्या तुम इमाम बुखारी की सहीह (बुखारी) में नहीं पढ़ते कि मुतवफ्फीक का अर्थ मुमीतुका है? (अर्थात यह कि मैं तुझे मौत देने वाला हूँ)। अतः इन गवाहियों के बाद संदेह करने वालों के लिए कोई स्थान नहीं बचा है। और तुम संसार के पालनहार की आयतों को छोड़कर किस बात पर ईमान लाओगे? क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मसीह की निशानियों तथा उसके प्रकट होने के समय के बारे में कहा है कि वह क्रूस को तोड़ देगा और सूअरों को मार देगा। तो जान लो कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस बात की ओर संकेत किया था कि वह ऐसे समय में आएगा कि जब क्रूस की पूजा की जाएगी, और सूअर अधिकता से खाए जाएंगे और क्रूस के पुजारियों का सम्पूर्ण पृथ्वी पर आधिपत्य होगा। अतः वह आकर उनके प्रभुत्व को तोड़ डालेगा और उनके क्रूस को टुकड़े-टुकड़े कर देगा और उनके भवनों को ढा देगा, और उनके ऊंचे दावों को तर्कों और प्रमाणों से नष्ट कर देगा। हे लोगो! तुम मुस्तफ़ा अलैहिस्सलाम की उच्च महिमा को याद रखो, ऊंचे आसमानों वाले रब की आप पर सलामती हो। ईसाइयों की पुस्तकें पढ़ो और ब्रह्मांड के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान पर उनके आक्रमण को देखो।

तो हे मुसलमानों की औलाद ! तुम इब्न मरियम की तारीफ़ बढ़ा चढ़ाकर न करो और न ईसाइयों की मदद करो। क्या हमारे रसूल के लिए तो मौत और ईसा के लिए ज़िंदगी है? यह तो फिर बहुत घटिया बंटवारा है, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सरदारों के सरदार स.अ.व. के लिए सम्मान नहीं चाहते? क्या तुम मुझसे ऐसी हदीसों को आधार बना कर बहस करते हैं जिनमें मसीह के बारे में

कहा गया है कि वह जल्द ही प्रकट होगा और अन्य हदीसों को भूल जाते हो? तुम एक हिस्सा लेते हो और दूसरा हिस्सा छोड़ देते हो और शोधकर्ताओं की पद्धति को छोड़ देते हो। और हजरत खैरुल वरा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों में इब्न मरियम का नाम तुम्हें धोखे में न डाल दे यह तो केवल अल्लाह की ओर से एक परीक्षा है, ताकि वह तुममें से सही समझने वालों और गलत समझने वालों को उजागर कर दे और ताकि अल्लाह उन लोगों को बदला दे जो सब्र करते हैं और जो अपने बारे में अच्छे विचार रखते हैं, और हद से बढ़ने वालों पर अज़ाब उतारे। और उसकी ऐसी सुन्नतें (आचरण व्यवहार) इसी तरह (पहले भी) गुज़र चुकी हैं। तो जो कोई शोध करने वालों में हो, वह अच्छी तरह से खोजबीन करे। निश्चित रूप से एलिय्याह और उसके आने के क्रिस्से में अभिलाषियों के लिए एक संतोषजनक उदाहरण मौजूद है। इसलिए तुम सुसमाचार (इंजील) को पढ़ो और उसके वचनों पर पैनी नज़र और ईमानदारी से मनन करो। जब यहूदियों ने कहा, हे यीशु! तू कैसे दावा कर सकता है कि तू ही मसीहा है हालांकि ज़रूरी था कि उससे पहले एलिय्याह आए जैसा कि नबियों के धर्मग्रंथों में बताया गया है। उसने कहा कि एलिय्याह तुम्हारे पास आ चुका है, परन्तु तुम ने उसे नहीं पहचाना। और आपने याह्या की ओर संकेत करके कहा: यही एलिय्याह है यदि तुम विश्वास करो तो (मान लो)। तो उन्होंने कहा निश्चित रूप से तू झूठा है। क्या तू ऐसे नए अर्थों का आविष्कार करता है जो हमने अपने पूर्वजों से नहीं सुने? आपने कहा, "हे मेरी क्रौम! मैंने अल्लाह के बारे में कोई झूठ नहीं गढ़ा, लेकिन तुम नबियों की किताबों के रहस्यों को नहीं समझते।" यह वह मामला है जिसका अल्लाह के पैगंबर यीशु ने निर्णय कर दिया है और इसमें मुसलमानों के लिए एक सीख है। एक इंसान का आसमान से उतरना अल्लाह की सुन्नत में से नहीं है और यदि है, तो उसकी मिसाल पिछले ज़मानों में से प्रस्तुत करो यदि तुम सन्मार्ग पर हो। और कोई एक घटना भी हमारे बीच ऐसी नहीं घटी जिसकी मिसाल पहले न गुज़री हो, और इसी की ओर अल्लाह तआला ने संकेत किया है जो सभी सच्चों से अधिक सच्चा है:-

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا (अल अहज़ाब- 33/63)

अर्थात- तू अल्लाह तआला की सुन्नत में कोई बदलाव नहीं पाएगा।

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ (अल अंफाल 8/39)

अर्थात- अवश्य ही अग्रगण्य (उनकी तरह) की सुन्नत (परंपरा) गुज़र चुकी है।

दो विवादित पक्षों ने अपनी राय में मतभेद किया, उनमें से एक के पास तो अपने दावे के समान मिसाल मौजूद थी और दूसरे के पास कोई मिसाल नहीं थी। तो दोनों मतभेद करने वालों में से सच्चाई के करीब कौन है? इंसफ की आँख से देखो। हे लोगो! संयम धारण करो, संयम धारण करो!! अक्ल से काम लो, अक्ल से काम लो!! और फैज़-ए-आवज़ (गुमराही के ज़माने) की इच्छाओं का पालन न करो। और याद रखो जो मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था। निश्चय ही, मैं तुम्हारे पास उन मामलों में निर्णायक (हकम-अदल) बन कर आया हूँ जिनका फैसला अनिवार्य था तो तुम मेरी गवाही स्वीकार करो। वास्तव में, मुझे वह ज्ञान दिया गया है जो तुम्हें नहीं दिया गया और न दिया जाएगा। और यदि तुम मेरे मामले में संदेह में हो, तो आओ ताकि अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच फैसला कर दे और वह रब सबसे सामर्थ्यवान और शक्तिशाली है। वास्तव में, वह सच्चे लोगों के साथ है, वह सुनता है और देखता है और अल्लाह तआला ने इसी समय मुझे खुशखबरी दी और कहा: हे ईसा! मैं शीघ्र ही तुझे बड़े-बड़े निशान दिखाऊँगा। तो यदि तुम सन्मार्ग के अभिलाषी हो, तो निर्णय का कौन सा तरीका इससे अधिक मार्ग दर्शन करने वाला है? और निश्चित रूप से मैं ऐसे समय में आया हूँ जब अंधकार छा गया है और सत्य क्षय के कारण विलुप्त हो गया है। और ये दिन मरी के दिन थे जिसमें बहुत सी क्रौमों का नाश हो गया, और इस्लाम लम्बी यात्रा के कारण दुबला और कमज़ोर हो गया, और घोर अंधेरी रात में पथिक के समान उसके लिए कोई आश्रय या शरण न थी। और (इस्लाम के) अभिलाषी उस भूखे आदमी की तरह थे जिसका पेट भूख से जल रहा हो

तथा भूखे रहने से सिमट गया हो। तो मेरे रब ने मुझे पर व्हयी प्रकट की, जो भी व्हयी की। तो मैं उस आवाज़ पर 'उपस्थित हूँ' कहते हुए उठा, तो मेरे रब ने मुझे उन चीज़ों के बारे में बताया जो भविष्य में होने वाली हैं और जो गुज़र चुकी हैं और उसने मुझे चुन लिया और हर दुख और विपत्ति से बचाया है। और उस ने मुझे हर एक विरोधी और झुठलाने वाले पर विजय पाने की खुशखबरी दी और मेरी ओर इलहाम किया कि मैं हर अंधे शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला हूँ और उसने कहा कि मैं उसे अपमानित करूँगा जो तेरा अपमान करने का इरादा रखता है और उसने मुझे पर अनगिनत उपकार किए। और कहा कि, तू जहाँ भी हो मैं तेरे साथ हूँ। मैं तेरी सहायता करूँगा और मैं हमेशा के लिए तेरा सहारा बनूँगा और तेरा मज़बूत कंधा बनूँगा। और मुझे आदेश दिया कि मैं लोगों को कुरआन और आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म की ओर बुलाऊँ अर्थात् वह जिसने तबलीग (धर्म प्रचार) की सुन्नत जारी की और संघर्ष करने तथा कठिनाई को सहन करने के लिए प्रोत्साहित किया। मैं कोई पैगंबर नहीं हूँ, लेकिन अल्लाह का मुहद्दस्स और कलीमुल्लाह हूँ, ताकि मैं मुस्तफा (सअव) के धर्म का नवीनीकरण (तजदीद) करूँ। और उसने मुझे शताब्दी के आरंभ में भेजा है और मुझे अपनी ओर से सन्मार्ग के ज्ञान सिखाए हैं। यदि तुम मेरे मामले में संदेह करते हो और समझते हो कि तुम मेरा विरोध करने में सही हो और सोचते हो कि तुम्हारी निकटता (ईश्वर से) मेरी अपेक्षा अधिक है तो देखो मैं मुक्राबले के मैदान में खड़ा हूँ ताकि तुम्हारी सच्चाई के चिन्ह देखूँ और तुम्हें अपनी प्रतिष्ठा के चिन्ह दिखाऊँ। मैं तुम्हें उस खुदा की क़सम देता हूँ जो धरती और आकाश का निर्माता है कि तुम मुझे एक पल के लिए भी मोहलत न दो और मुझे हराने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाओ और अल्लाह से अपनी जीत की दुआ करो। और तुम्हारे लिए हराम है कि तुम पीछे रहो और टालो और बराबरी की जगह मुक्राबला करने के लिए न निकलो। और तुम सबको मेरे विरुद्ध इकट्ठा करो और एक ही धनुष से सारे तीर चलाओ, तब तुम जान लोगे कि किसका नाश होता है और किसको अल्लाह तआला सुरक्षित और सलामत रखता है। और यदि

तुम मुझे स्वीकार कर लो, तो अल्लाह तुम्हें आशीर्वाद (बरकत) देगा और तुम्हें समृद्ध करेगा और तुम्हें भाग्यशाली करेगा और तुम्हें शांति प्रदान करेगा और वह तुम्हारे लिए (समृद्धि के) पहले दिन वापस लौटाएगा और तुम अल्लाह की सुरक्षा में रहने लगोगे। तुम्हारा रब तुम पर दया करेगा और तुमसे राजी होगा और हर प्रकार की बुराई तुमसे अलग और दूर हो जाएगी।

हे मेरी क्रौम! मैं काफिर नहीं हूँ जैसा कि बुरे उलमा प्रॉपगण्डा करते हैं और मुझ पर झूठे आरोप लगाते हैं। मैंने अपने रब पर कोई झूठ नहीं गढ़ा और न ही मैं अपनी ओर से तुमसे कुछ कहता हूँ, और जिसने झूठ गढ़ा वह विफल हो गया। और मैं वास्तव में अपने दिल से विश्वास करता हूँ कि इस संसार का एक शाश्वत, अनादि - अनन्त, अद्वितीय शक्तिशाली और उदार, हर दिखाई देने वाली और छिपी हुई हर चीज़ पर शक्तिशाली, निर्माता (खुदा) है। और मैं विश्वास रखता हूँ कि अल्लाह के पास सानिध्य प्राप्त फ़रिश्ते हैं, जिनमें से प्रत्येक का एक निश्चित स्थान है। कोई फ़रिश्ता अपने स्थान से न तो उतरता है और न ही चढ़ता है। और क़ुरआन में उनके उतरने के बारे में जो कुछ कहा गया है वह किसी मनुष्य के ऊपर से उतरने जैसा नहीं है और न ही उनका चढ़ना इंसान के नीचे से ऊपर चढ़ने जैसा है, क्योंकि इन्सान के उतरने में एक स्थान से हटने, परिश्रम और थकान की गंध महसूस होती है जबकि फ़रिश्तों को न तो थकान और मेहनत का अनुभव होता है और न ही उनमें कोई परिवर्तन आता है। इसलिए उनके उतरने और चढ़ने की अन्य चीज़ों पर अटकलें न लगाओ, बल्कि उनका उतरना और चढ़ना उसी रंग में है, जैसे अल्लाह तआला का अपने सिंहासन (अर्श) से संसार के निकटतम आसमान पर उतरना और चढ़ना, क्योंकि अल्लाह ने उनके अस्तित्व को (अरकाने) ईमान में शामिल किया है और फरमाया:

(अल मुद्दस्सिर - 74/32) مَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ

अर्थात् तेरे रब की सेनाओं को केवल वही जानता है।" अतः तुम उनके उतरने और चढ़ने पर विश्वास कर लो। और (उनके) उतरने और चढ़ने के भेद में हस्तक्षेप न करो यह बात अच्छी और परहेज़गारी के करीब है। और अल्लाह

तआला ने उन्हें उन लोगों के गुणों से गुणी किया है जो (इबादत में) खड़े रहते हैं, जो सजदा करते हैं, पंक्तिबद्ध रहते हैं, उसका गुणगान करते हैं और अपने निर्धारित स्थानों पर डटे रहते हैं। और उसने इन विशेषताओं को उनके लिए स्थायी बनाया है जो उनसे अलग नहीं हो सकती और उन्हें इन विशेषताओं से विशिष्ट कर दिया है। तो फ़रिश्तों के लिए यह कैसे जायज़ हो सकता है कि वे अपना सज्दा और क़याम छोड़ दें और अपनी कतार तोड़ दें और उसकी महिमा करना और पवित्रता का गुणगान करना छोड़ दें और अपने निर्धारित स्थान को छोड़ कर धरती पर उतर आएँ और ऊँचे आकाश को खाली कर दें? बल्कि वे अपने सिंहासन पर बैठे एक राजा की तरह अपने-अपने स्थान पर स्थापित रहते हुए कार्य करते हैं। और तुम जानते हो कि अल्लाह हर रात के आखिरी हिस्से में (निचले) आसमान की तरफ़ उतरता है और यह नहीं कहा जा सकता कि वह अर्श को छोड़ देता है और फिर दूसरे समय में उसकी ओर चढ़ता है। अतः ऐसे ही फ़रिश्ते हैं जो अपने रब के रंगों में ऐसे ही रंगीन होते हैं जैसे साया अपने मूल के रंग में रंगीन होता है। हम उनकी असलियत नहीं जानते लेकिन उन पर ईमान रखते हैं। हम उनकी हालतों की तुलना एक इंसान की हालतों से कैसे कर सकते हैं जिसके गुणों की वास्तविकता और विशेषताओं की सीमाओं तथा चाल चलन को हम जानते हैं? और अल्लाह ने हमें इससे मना किया है और कहा है :

(अल मुद्दस्सिर - 74/32) وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ

अर्थात् "तुम्हारे रब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता।" अतः हे बुद्धिमानो! अल्लाह से डरो और जैसा कि अल्लाह ने हम पर प्रकट किया है, हम मानते हैं कि मरियम पुत्र ईसा मर गए हैं और अपने धर्मी भाइयों और नबियों में शामिल हो गए हैं और उन्हें उस स्थान पर उठाया गया है जहां याहया थे और हम आस्था रखते हैं कि हमारे रसूल, खैरुल रुसुल, अफज़ल-उल-मुर्सलीन और खातम-उल-नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और आप हर उस व्यक्ति से श्रेष्ठ हैं जो भविष्य में आएगा या जो पहले गुज़र चुका है। उन्होंने मुझे स्वयं सलूक (साधना) के मार्ग पर चलाया है और मुझे अपने पवित्र हाथ से प्रशिक्षित

किया है और उसने मुझे अपना प्रताप और अपनी बादशाहत दिखाई है और उन्होंने मुझे अपने उच्च रहस्यों का ज्ञान दिया है। और हम आस्था रखते हैं कि कुरआन की प्रत्येक आयत, जो कि सूक्ष्म मार्गदर्शन से भरा एक महासागर है, और वे घटनाएँ और दुनिया तथा परलोक के वह ज्ञान, जो कुरआन और उसके कथन के विपरीत हैं, वे अमान्य (झूठे) हैं।

और हम आस्था रखते हैं कि स्वर्ग सत्य है और नर्क सत्य है और मरने के बाद इकट्ठे किया जाना सत्य है और पैगम्बरों के चमत्कार सत्य हैं। और हम मानते हैं कि मुक्ति (नजात) इस्लाम में तथा हमारे पैगंबर सैय्यदुल वरा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करने में है। और हम हर उस चीज़ से घृणा करते हैं जो इस्लाम के विरुद्ध है, और हम हर उस चीज़ पर ईमान लाते हैं जो हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए हैं, चाहे हम उसकी सर्वोच्च वास्तविकता को न भी जानते हों। और जो कोई भी हमारे खिलाफ इसके विपरीत कुछ कहता है तो उसने निश्चित रूप से झूठ बोला है और हमें बदनाम किया है, इसलिए तुम अल्लाह से डरो और हर कंजूस और नीच की बातों की पुष्टि न करो जो अजगर के समान मेरी ओर दौड़ा और अपनी राय की कमजोरी के कारण मुझे काफिर ठहराने की ओर प्रेरित हुआ और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया। और तुम जान लो कि इस्लाम मेरा दीन है और एकेश्वरवाद पर मेरा ईमान है और मेरा दिल न तो रास्ता भटका है और न ही गुमराह हुआ है। और जिसने कुरआन को छोड़ा और अटकल बाज़ी के हिसाब से चला, वह उस आदमी की तरह है जिसे बुरी तरह से चीर-फाड़ दिया गया हो और एक घातक गड्ढे में गिर गया और नष्ट हो गया। और अल्लाह जानता है कि मैं इस्लाम का प्रेमी और हज़रत खैरुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फिदा और अहमद मुस्तफा का गुलाम हूँ। नौजवानी से ही आप मेरे प्रिय हैं और अल्लाह के सामर्थ्य ने इस पुस्तक के लिखने हेतु मेरा मार्गदर्शन किया ताकि मैं विरोधियों को अल्लाह के उज्ज्वल धर्म की ओर बुलाऊँ। इसलिए मैंने हर विरोधी को किताब भेजी और मैंने हर बूढ़े और जवान को इस्लाम की ओर बुलाया और मैंने वादा किया कि मैं

(सच्चाई के) अभिलाषियों को निशान (चमत्कार) दिखाऊंगा और निशान दिखाने में असमर्थ रहने पर बहुत सा धन देने का वादा किया। अतः उनके मुंह अपमान और लज्जा से विकृत हो गए, और कोई उन में से न आया और न सामना किया और न उन्होंने चैलेंज स्वीकार किया और न ही कोई अच्छा या बुरा शब्द मुंह से निकाला और उनमें से न तो किसी ने एड़ लगाई और न निकट आया।

तो यह एक विचार विमर्श करने वाली क्रौम के लिए मेरी सच्चाई और नेकी की निशानियों में से एक है, जिसने मुझे पहचाना उसने मेरी पुष्टि की और जिसने मुझे नहीं पहचाना उसने मेरी पुष्टि नहीं की और जो व्यक्ति किसी मामले में कोशिश करे तो अल्लाह उस पर बात खोल देता है। अतः धन्य हैं वे हृदय जो प्रयत्न करते हैं, बैठे रहने से वृक्ष का फल नहीं मिलता और जो व्यक्ति कोई मार्ग नहीं अपनाता वह छोटी सी वस्तु का भी स्वामी नहीं बन सकता। और जो खोजते हैं वह पा लेते हैं। अतः हे मेरी क्रौम! सत्य को जाने बिना मेरा इन्कार न करो, और बिना प्रमाण के मुझे न झुठलाओ, और मुझे गालियां न दो, और न मुझे भला-बुरा कह कर दुःख पहुँचाओ, और न अल्लाह के ग़ैब के कामों में दखलअंदाजी (हस्तक्षेप) करो और जिस चीज़ को तुम नहीं जानते उस पर ज़िद न करो। हो सकता है कि तुम किसी आदमी को काफ़िर कहो, हालांकि वह अल्लाह की नज़र में मोमिन हो, और यह भी हो सकता है कि तुम किसी को पापी ठहराओ हालांकि वह अल्लाह की नज़र में नेक हो। अल्लाह अपने बंदों के दिलों को देखता है जबकि तुम नहीं देखते।

हे मेरी क्रौम! यदि मैं झूठा हूँ, तो अल्लाह मुझे दंड देने के लिए पर्याप्त है, लेकिन यदि मैं सही हूँ, तो मुझे डर है कि तुम अपने अत्याचार के कारण पकड़े न जाओ।

हे भारत के तथाकथित सूफ़ियो! तुम में से नेक (धर्मी) लोग थोड़े से हैं और विधर्मी बहुत अधिक हैं। और तुम में से वे लोग भी हैं जो विरक्ति (रहबानियत) की ओर गए हैं और जो उन्हें आदेश दिया गया था उसे छोड़ दिया है और वे अल्लाह से नहीं डरते और न ही परवाह करते हैं और जब नमाज़ के लिए खड़े

होते हैं, तो आलस्य की स्थिति में खड़े होते हैं, और वे (हिंदू) ब्राह्मणों की तपस्या के लिए तेज़ी से दौड़ पड़ते हैं और अपने तेज़ तर्रार घोड़ों के खुरों को लहूलुहान करते हैं, और अपनी ऊंटनियों के पांवों को घायल करते हैं, और समझते हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हम कुरआन पर ईमान ले आए हैं, हालांकि वे उस पर ईमान नहीं रखते, और कहते हैं कि हम (पैगम्बर की) सुन्नत का अनुसरण करते हैं, हालांकि वे उसका अनुसरण नहीं करते हैं और वे पथभ्रष्टता की ओर लौटने वाले हैं। दरअसल जिन लोगों ने सच्चाई को पाया है, वे ऐसे लोग हैं जो भौतिक चीज़ों से जुड़े होने के बावजूद उनसे अलग रहते हैं। और वे अल्लाह की ओर ऐसे मुड़ते हैं मानो न उनकी कोई पत्नी है, न बच्चे, न ऊँटनी और न घोड़ा। और वे अपने सारे परिवार और माल पर अल्लाह को तरजीह (प्राथमिकता) देते हैं। तो यही वे लोग हैं जो सामर्थ्य पाने वाले हैं। और ऐसे ही लोगों पर उनके रब की कृपा और दया है और यही लोग सन्मार्ग प्राप्त हैं। और तुम्हारे बीच ऐसे लोग हैं जो अवैध को वैध बनाने के इच्छुक हो गए और उन्होंने अपनी तामसिक इच्छाओं का पालन किया और विनाश तथा मृत्यु के रेगिस्तान में चल पड़े और अपना सामान और खाद्य पदार्थ और पैसा बर्बाद कर दिया। और वह अपने पड़ाव के स्थानों तथा पानी के घाट को भूल गया और अपने रब को नाराज़ कर लिया और प्रचण्ड वायु ने उनकी नावों को तोड़ डाला और वह डूबने वालों में से हो गया। क्या वह देखता नहीं कि सफर खर्च को अपने पास रखना लोक और परलोक का एक सिद्धांत है और उसे इस दुनिया में इन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है और वह इस दुनिया में धन और उन चीज़ों को जिनको लोग पसंद करते हैं अर्जित करने से थकता नहीं। अतः जब दुनिया छोड़ने का समय आएगा तो उसे निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि वह अनन्त निवास के घर (अर्थात् परलोक) खाली हाथ जा रहा है। और उनमें से वह भी है जिसने अच्छे और बुरे कर्मों को परस्पर मिला दिया है, और कुफ़्र को ईमान के साथ मिला दिया है, और विश्वास को संदेह से भ्रमित कर दिया है और निजी स्वार्थ की ओर झुकाव का मन बना लिया है। और (शांतिमय) तट से निकलकर अन्धकार

के गहरे समुद्र में जा पड़े और अपनी जान को विनाश के मार्गों और तबाही के जंगलों में गिरा दिया और अपने साथ वह सलूक किया जो एक पागल भी नहीं कर सकता। धिक्कार है उन पर कि उन्होंने धर्म में कई बिदअतें (पाखंड) पैदा कीं और उनमें से हर एक ने जो चाहा उसका पालन किया। उन पर और उनके द्वारा रचे गए पाखंडों पर अफसोस है। और कितने ही पाखंड हैं जिनकी नहूसत उन्होंने अपने ऊपर अनिवार्य कर ली है और वे इसके बड़े हुए बिगाड़ पर खुश हैं, वे ब्राह्मणों के पाखंडों और काफिरों तथा दुराचारियों के चालचलन की पैरवी कर रहे हैं और उन्होंने उन में से हर आचरण को अपनाया है जैसे ध्यान लगाना, क़ल्ब जारी करना और क़ब्र पर बैठे रहना तथा उनकी परिक्रमा करना और क़ब्रों को सजदे करना और वे इन बातों पर गर्व करते हैं। और उनकी उपासना नमाज़ में और नमाज़ के बाहर, अपने मशाइख की कल्पना करने के अलावा और कुछ नहीं है और (इस प्रकार) वे उन्हें अल्लाह के साथ भागीदार बनाते हैं। और वे अपनी पीर परस्ती को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर समझते हैं, और कहते हैं कि हमने न तो पैगंबर को देखा है न ही हम क़ुरआन को जानते हैं। हमारा नबी तो हमारा शेख ही है और उसके कथन हमारा क़ुरआन है और वास्तव में हम ही सही रास्ते पर हैं।

يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا^٢ وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ^٣ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ^٤ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا^٥ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ^٦
بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ^٧ (अल बक्रा 2/10,11)

अनुवाद: वे अल्लाह और ईमान वालों को धोखा देना चाहते हैं लेकिन (वास्तव में) वे अपने अलावा किसी को धोखा नहीं देते हैं और वे समझते नहीं हैं। उनके दिलों में एक रोग था, फिर अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और उन पर एक दुखद अज़ाब आ रहा है, क्योंकि वे झूठ बोलते थे। तू उन्हें तक्वा (संयम) और सच्चाई पर चलने से दूर और इस्लाम के संस्कारों से रहित देखता है। और उनकी जीवन शैली तथा उनके चेहरों से वह दिखाई देता है

जिसे वे छिपाते हैं, उनका वातावरण अत्यधिक ठंडा है और उनका अंधेरा घटाटोप है और उनकी समझ-बूझ मवेशियों की तरह है और उनकी तपस्या मृगतृष्णा की तरह है और वे समझते हैं कि वे ज्ञानी हैं। उनका जीवन नष्ट हो, वे सामान्य मामलों के समय लोमड़ियों जैसा व्यवहार करते हैं और झगड़ों के समय भेड़ियों जैसा। वह लोगों की दक्षिणा पर प्रसन्न होते हैं, परन्तु उनके न देने और सेवा से इन्कार करने पर त्योंरी चढ़ाते हैं। वे अमीरों की शरण लेते हैं तथा गरीबों से मुंह मोड़ते हैं और शिकायत करते हैं। पानी से खाली बर्तन की तरह होते हुए भी वे सोचते हैं कि वे बहुत बुद्धिमान हैं। और वे बड़ा चढ़ाकर कहने वाले घमण्डियों से बहुत प्रसन्न होते हैं, और कुछ समझते नहीं। उनको परखने और उनके ज्ञान, विवेक तथा आध्यात्मिकता का मूल्यांकन करने का तरीका बहुत सरल है और वह यह है कि उनके सामने पवित्र कुरआन पेश किया जाए और उनसे पूछा जाए क्योंकि पवित्र कुरआन अद्भुत रहस्यों और अध्यात्म ज्ञान से भरा है, लेकिन कुरआन की सच्चाई को वही लोग पाते हैं जो पवित्र होते हैं और उसके रहस्य को कोई नहीं जान सकता और न ही कोई उसके गुप्त अर्थों से अवगत हो सकता है, सिवाय उसके जिसे अल्लाह के रंग से हिस्सा मिला हो। तो धन्य हैं वे जो इस रंग में रंगे हुए हैं और ये वह लोग हैं कि अल्लाह ने प्रेम के मार्ग से उनके दिलों में घर कर लिया है और उनकी आत्माओं को पवित्र और शुद्ध किया। और उन्हें निखारा है और अपनी ओर उनका रफा किया है। इसलिए वे सदा अपने प्रिय (खुदा) को याद करते रहते हैं। वे अपने पूरे दिल से सच्चाई की ओर खिंचे चले आते हैं और अपने प्यारे की याद में फना हो गए हैं, उन्होंने अपनी आत्मा को कुर्बान कर दिया है और अपनी मन्नत पूरी कर दी है और वे पूरी तरह से अल्लाह के हो गए हैं और अपने आप से पूरी तरह से अलग हो गए हैं। उनके पास अल्लाह के सिवा कुछ भी शेष नहीं रहा, तुम उन्हें जीवित समझते हो, हालांकि वे फना हो चुके हैं। उन्होंने रक्तपात करने वालों के समान नंगी तलवारें अपने ऊपर सूत रखी हैं और वे अपने प्राणों में से ऐसे निकल गए हैं जैसे सांप अपनी कैंचुली से निकल जाता है। और अल्लाह उनकी सच्चाई और निष्ठा को देख रहा है जबकि वे लोगों की

नज़रों से छिपे हुए हैं। उनकी शांति, उनका ख़ुदा के प्रति समर्पण, उनकी दृढ़ता और ख़ुदा के प्रति उनके लगाव ने स्वर्गदूतों (फरिश्तों) को भी चकित कर दिया है, जबकि अज्ञानी उन पर हंसते हैं।

वे (अज्ञानी) उन पर झूठे आरोप लगाकर उन्हें कष्ट देते हैं। और वे तरह-तरह के झूठे आरोपों से उन्हें काफिर ठहराते हैं। उनके रहस्यों को केवल अल्लाह ही जानता है और वे उसी की शरण में हैं। और जिन लोगों ने सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी और उस में सन्तुष्ट हो गए और अवज्ञाकारी बन गए और तक्रवा (परहेज़गारी) का खून किया और उस बात के पीछे चल पड़े जिसका उन्हें ज्ञान नहीं था, तो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा कि वे किस लौटने के स्थान पर लौटेंगे (अर्थात् स्वर्ग या नर्क)। वे लोगों से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते, हालाँकि वे अपनी जानों के गवाह हैं। उनकी ऊँची नाक और बड़ी-बड़ी पगड़ियों ने उन्हें सच्चाई स्वीकार करने से रोक रखा है, जिसके कारण उन्होंने जान-बूझकर अल्लाह की ओर बुलाने वाले को अस्वीकार कर दिया। उनमें से हर एक सुन्नत की आलोचना करता है और बिद्अतों को आमंत्रित करता है और उन्हें बढ़ावा देता है और कहता है कि तुम मेरे संयम और मेरी गरीबी को देखो। हालाँकि वे कुछ नहीं जानते फिर भी स्वयं को ख़ुदा का सानिध्यप्राप्त समझते हैं। वे लोगों की ओर देखते हैं लेकिन अल्लाह की ओर नहीं देखते। वे इस्लाम पर मुसीबतों के हमलों को नहीं देखते और अपनी ख़्वाहिशों के सामने ऐसे जमे बैठे हैं जैसे बहुदेववादी अपनी मूर्तियों के सामने बैठे होते हैं और उन्हें कोई परवाह नहीं है। धर्म का घर नष्ट हो गया है और वे बेपरवाह हैं। और इस्लाम का दूध सूख गया है और वे सो रहे हैं। और शरीयत का महत्त्व कम हो गया है और वे खुशियाँ मना रहे हैं, उनके लिए मुहब्बत की आग और ख़ुदा की याद की तपन, विचार विमर्श के शोले, धूप की तपिश और अंगारों की जलन के सिवा कुछ नहीं और वे पसंद करते हैं कि उनकी प्रशंसा उन कामों पर की जाये जो उन्होंने नहीं किए। वे मुजाहिदात (साधना) के कारण कमज़ोर होने का दिखावा करते हैं हालाँकि वे संयम से खाली हैं। वे अपनी तहज्जुदों (मध्यरात्रि की नमाज़) का उल्लेख करते

हैं, हालांकि फरज़ नमाज़ों की उपेक्षा करने वाले हैं। न तो उन्हें क्षमावान ख़ुदा की वाणी से कोई अंश मिला है और न ही मासूरा हदीसों से, लेकिन वे कवियों की कविता का खूब उल्लेख करते हैं। इस्लाम पर मुसीबतें और मुश्किलें टूट पड़ी हैं, लेकिन वे बेख़बर हैं। वे रत्ती भर भी शोक नहीं करते और तामसिक इच्छाओं में डूबे हुए हैं। और मैं उन्हें रोशन शरीयत पर उपहास करने वालों तथा सृष्टि के पथप्रदर्शक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों का मज़ाक उड़ाने वालों के समान पाता हूँ। वे कवियों के काव्य को कुरआन की तुलना में प्राथमिकता देते हैं और वे उन पर आनन्दित होकर नाचते हैं। वे कुरआन सुनते हैं लेकिन न रोते हैं और न ही गिड़गिड़ाकर कर दुआ करते हैं। वे ऐसे लोग हैं जो हिदायत के मार्ग से भटक गए हैं और उन्होंने उजियाले की अपेक्षा अन्धकार को पसन्द किया, वे अंधेरी रात में अंधी ऊंटनी के समान हैं। न तो कोई उनका हाल चाल पूछने वाला है और न ही कोई खैर ख़बर लेने वाला, वे जहां चाहते हैं वहां जाते हैं। और अल्लाह की क्रसम! वास्तव में, मैं उनको देखता हूँ कि वे भ्रष्ट हो गए हैं और बंजर भूमि की तरह हो गए हैं और गंदे खरपतवार से भर गए हैं। वे मवेशियों की तरह रेंगते हैं और सीधे खड़े नहीं होते। अपव्यय उनकी आदत है और हिंसा तथा दमन उनकी जीवन शैली है और दिग्भ्रमित ब्राह्मणों की परंपराएं उनके अध्यात्मज्ञान का अंत है। और शायरों की शायरी उन के अचैतन्य का ईंधन है और उनके दिल का भोजन है। उन्होंने अपने रब को त्याग दिया है और दुनिया से चिपट गए हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर परदे डाल दिए तो वे समझ नहीं पाते, उन्होंने क्रब्र में दफ़न होने वालों को अपनी ताकत का स्रोत बनाया है और क्षमावान रब की शरण के लाभों को बर्बाद कर दिया और वे अवज्ञा करते हैं और उससे रुकते नहीं। उन्होंने ऐसे राजा को छोड़ दिया है जिसने सम्पूर्ण देश को अपने अधीन कर लिया है और हर उस नीच का अनुसरण किया है जिसके पास गुज़ारे का कोई साधन भी नहीं है। उन्होंने अल्लाह पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपनी ही जानों पर जुल्म किया है। वे प्रशंसकों की अतिशयोक्ति से फ़ितने में पड़ गए हैं और अनदेखा करने वालों की अनदेखी ने उन्हें तबाह

कर डाला है। और उन्होंने कुरआन से अध्यात्म प्रकाश प्राप्त नहीं किया है, बल्कि वे कवि लोक में भटक रहे हैं। वे अपने मुरीदों (भक्तों) के पापों की मैल कुचैल तो धोना चाहते हैं, हालांकि वे स्वयं विभिन्न प्रकार के पापों में लिप्त हैं और जानते नहीं। हे मूर्ख और अज्ञानी! तू पहले अपने हृदय को पवित्र हाथों से धोने के लिए उठ खड़ा हो फिर अपने भाई को पवित्र हाथ से धोने के लिए खड़ा होना। और तू लोगों से वह बात न कह जो तू स्वयं नहीं करता, नहीं तो वे हंसेंगे। तू अपने भाइयों के शरीर को कैसे धो सकता है जबकि तेरा अपना शरीर मैला हो चुका है और उसकी गंदगी जम चुकी है और तेरी हालत यह है कि तू स्वयं सन्मार्ग पर नहीं चलता, तो वे उसका अनुसरण कैसे करेंगे। और यदि तुम मेरे पैगंबर होने के बारे में संदेह में हो, तो मुकाबले के लिए तैयार हो जाओ और प्रतापी अल्लाह की ओर से उत्कृष्टता और सच्चाई दिखाने के लिए तैयार हो जाओ। निस्संदेह हम इन निशानों को दिखाने के लिए तैयार हैं। जान लो कि सारी विलायत दुआओं के कुबूल होने में है और अल्लाह तआला के समक्ष दुआ की कुबूलियत के सिवा विलायत का दावा करने का कोई मतलब नहीं है। तो बस मुकाबला और मुकाबला! और यदि तुम मुकाबले से भागना चाहते हो, तो तुम झूठे हो। आओ! अल्लाह तुम्हें शांति के बागों में दाखिल करेगा। और तुम कूड़े के ढेर की हरियाली पर जानबूझ कर खुश न हो जाओ, अल्लाह तुम्हें नेकी की तरफ बुला रहा है तुम्हें क्या हो गया है कि तुम जवाब नहीं देते? और तुम्हारे बीच से ही एक उपदेशक तुम्हें जगा रहा है, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सो रहे हो? और ग़ैब (परोक्ष) का हाथ तुम्हें खींच रहा है, अतः हे मेरी क्रौम! तुम क्यों पीछे हट रहे हो? निश्चय ही तुम्हारे पास अल्लाह की खबरें आ गई हैं, तो तुम जानबूझ कर क्यों भूल रहे हो? सत्य आ गया और असत्य भाग गया और तुम सन्देह में पड़े हुए हो। और तुम्हारे लिए निशानियाँ स्पष्ट हो गई हैं, परन्तु तुम अंधे होते जा रहे हो। क्या तुम नहीं देखते कि पृथ्वी पर भूकंप आया हुआ है और फ़िल्नों ने घेराव किया हुआ है और दिल मर गए हैं और हर मुसीबत इस्लाम पर उतर आई है और हर आफत उस पर टूट पड़ी और हावी हो गई है?

दुश्मन जाग चुके हैं और तुम सो रहे हो। मैं तुम्हारी हर एक कथनी और करनी में और तुम्हारे द्वारा किए जाने वाले हर कार्य में आडंबर (बिदअते) देखता हूँ। इसी प्रकार उन क़ब्रों में भी जो तुम ऊँची-ऊँची बनाते हो, और उन वस्त्रों में भी जिनको तुम रंगते हो और उन कविताओं में भी जिनको तुम गाते हो और जो चाल तुम चलते हो, और जो कथाएं तुम गर्व से सुनाते हो और घमण्ड करते हो, और तुम्हारी दाढ़ियों में भी जिनको तुम बढ़ा लेते हो या मूँढते हो, और तुम्हारे पक्षियों में जिनका तुम शिकार करते हो, मैं उन सब में नई-नई बातें (बिदअते) देखता हूँ। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अपनी लापरवाही पर आंसू नहीं बहाते या पछतावा नहीं करते? और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह से नहीं डरते और न भयभीत होते हो और न ही तुम्हारे दिलों में दर्द पैदा होता है। तुम अपने उस दिन को भूल गए हो जिसमें तुम अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे। मैं तुम्हारी इन आँखों में जिनको तुम संसार की ओर फैलाते हो, फ़साद देखता हूँ। और तुम ऊँचाई से देखने वाले बाज़ के समान क्रोधातुर नज़र से देखते हो और तुम सांसारिक मुर्दों पर गिरते हो। और इसी प्रकार तुम्हारी जीभ में भी (मैं फसाद देखता हूँ), जिसे तुम (अपने) भाइयों पर पैना और दराज़ करते हो। और तुम साँप की तरह अपनी जीभ लहराते हो और रुकते नहीं हो। उसी तरह तुम्हारी राय में भी (मैं फसाद देखता हूँ), जिसमें तुम गलती करते हो और सही राय पर नहीं पहुँचते तुम बुद्धिमान और मूर्ख के बीच अंतर नहीं कर सकते और चीज़ों को खलत-मलत कर देते हो, और केवल स्तही विचार आने पर तुम गालियां देते हो और चुगली करते हो। और अपनी विलायत पर गर्व करते हुए और मुकाबले के निमंत्रण से पीठ दिखाते हो और पराजित होकर भी लज्जित नहीं होते बल्कि अपनी दानशीलता में एक-दूसरे से गर्व के साथ मुकाबला करते हो। और मैं जानता हूँ कि तुम केवल एक निर्जीव पत्थर हो, अल्लाह की रूह तुम्हारे पास भी नहीं फटकी और तुम निश्चित रूप से मर चुके हो। यदि तुम किसी बात पर अडिग हो, तो कौन सी बात तुम्हें रोकती है कि तुम स्वयं इस मैदान में निकलो और अखाड़े में उतरो और मैदान में मुकाबला करो और बढ़ चढ़ कर मुकाबला

करने वालों के समान आओ जैसा कि तुम दावा करते हो।

अतः यदि तुम मुकाबले पर आओ तो तुम मुझे आँखों के झपकने से भी तेज अपने मुकाबले पर आने वाला पाओगे और अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अपमान में ग्रस्त कर देगा और तुम पराजित हो जाओगे। मैं तो इस्लाम की सरबुलंदी के लिए आया हूँ और तुम मेरा विरोध कर रहे हो। और मैं तो चाहता हूँ कि अल्लाह के धर्म का नवीनीकरण (तजदीद) करूँ और तुम रुकावट बन रहे हो। क्या तुम नहीं देखते कि इस्लाम कंगाल हो गया है और उसकी ऐसी हालत हो गई है जिसे देखने वालों ने कभी नहीं देखा और न कहने वालों ने इस स्थिति के बारे में कभी कुछ कहा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम्हें इस बात से कपकपी नहीं होती और न दुखी होते हो? क्या कारण है कि तुम्हारा स्वाभिमान नहीं जागता और न तुम्हें क्रोध आता है। हे मूर्खों! तुम मर्द हो या नामर्द? क्या तुम नहीं देखते कि फ़िल्ने (उपद्रव) संगीन हो गए हैं और उनका अंधकार फैल गया है और उसने घेर लिया है। और धरती ने जो उसके अंदर था बाहर निकाल फेंका है और खाली हो गई है। और बिदअतें बहुत बढ़ गई हैं। और पवित्र कुरआन की शिक्षाओं का पालन समाप्त हो गया है और दिल पृथ्वी की ओर झुक गए हैं तथा दुनियादारी की ओर मुड़ गए हैं। राय बिदअतों के नीचे दब गई हैं और इच्छाएं संयम की सीमा से आगे निकल गई हैं और हर क्रौम ने अपने धर्म को बिगाड़ दिया है और गुमराह हो गई है तो उसके बाद अब और क्या रह गया है जिस की प्रतीक्षा करने वाले प्रतीक्षा कर रहे हैं? अल्लाह की क्रसम! मैं उसी की तरफ़ से हूँ और उसी के हुक्म से मैंने लोगों को आमन्त्रित किया है, अतः आजमाने वाले आजमा लें। मैं विद्वानों तथा मशाइख के सामने शाप और आशीर्वाद रखता हूँ, अतः वे उनमें से जो चाहें ले लें और जिस तरफ़ चाहें झुक जाएं। शाप तो उन लोगों के लिए है जो गलत धारणा का पालन करके मुझे झुठलाते हैं और केवल अटकल बाज़ी से मुझे काफ़िर ठहराते हैं। वे न तो सत्य को जानते हैं, और न सोच विचार से काम लेते हैं और न वे मुझसे वह मांगते हैं जिससे उनके दिल चंगे हो जाएं, और न ही मेरे पास आते हैं ताकि निशान (चमत्कार) देखकर संदेहों से मुक्ति पाएं जैसा

कि संयमी लोग किया करते हैं। सुनो, निसंदेह ये वही लोग हैं जो दुनिया और आखिरत (लोक-परलोक) में बदनसीब हुए और इन्हीं पर अल्लाह की लानत है, क्योंकि ये कुधारणा (बदजनी) कर रहे हैं और बिना ज्ञान के मुसलमानों को काफ़िर करार देते हैं।

और जहां तक बरकत का मामला है तो यह उन लोगों के लिए है जो मेरे वचन सुनते और मेरे निशान (चमत्कार) देखते हैं, और अपने बारे में अच्छे विचार (हुस्ने ज़न) रखते हैं और सत्य को ग्रहण करते हैं और अहंकार नहीं करते। तो यही वे लोग हैं जो इस लोक और परलोक में धन्य हुए और सत्य की खोज के लिए खड़े हुए, और फिर खोज कर भी रहे हैं। वे आँख मूँद कर नहीं चलते और हर शंका पर प्रश्न करते हैं, ताकि वे उस (शंका) से मुक्त हो जायें। और वे असत्य पर हठ नहीं करते और न लापरवाही करते हैं, तो उन्हीं पर अल्लाह की कृपा, उसकी रहमत और उसकी बरकतें हैं और उन पर ही रहम किया जाएगा। हे लोगो! यदि तुम्हें संदेह है तो मुझसे पूछ लो और अल्लाह से रोकर गिड़गिड़ाते हुए दिल से दुआ करो और उससे सच्चाई पूछो वह तुम पर सच्चाई खोल देगा। और उन लोगों के साथ न बैठो जो अपनी शरारतों में मगन हैं और सन्मार्ग का अनुसरण नहीं करते और सत्याभिलाषी नहीं और अहंकारी हैं। हे लोगो! वास्तव में, मसीह का अवतरण एक परोक्ष (ग़ैब) का मामला था तो अल्लाह ने जैसे चाहा अपने परोक्ष को प्रकट कर दिया अब तुम अल्लाह के परोक्ष के विषय में विवाद न करो और न जान बूझकर अपनी हद से आगे बढ़ो। और यदि तुम इस बारे में जो कुछ मैंने कहा है और जो मैंने अपने बारे में दावा किया है किसी संदेह में हो तो मेरी बस्ती में आ जाओ और कुछ दिन मेरे साथ रहो, फिर अल्लाह तुम्हारे सामने मेरे अंतरतम को प्रकट कर देगा और उसका निर्णय कर देगा जिसके बारे में तुम मतभेद करते हो। और यदि तुम सामर्थ्य रखते हो तो अपनी सच्चाई के निशान दिखाने के लिए और मेरी सच्चाई को देखने के लिए आओ, और मेरे विरुद्ध अपने सवारों, प्यादों, विधर्मी भाइयों और क्रब्र के उपासक ज़िन्दा लोगों को इकट्ठा करो और मुझे शाप (बददुआएं)

दो और मुझे कोई मोहलत न दो। फिर यदि तुम विजयी हो जाओ तो जिस चाकू से चाहो मुझे क़त्ल कर दो। और जान लो कि अल्लाह तुम्हें रुसवा करने वाला है और वह केवल अपने बन्दे की मदद करेगा। और केवल अपने धर्म को विजयी करेगा। और हे फसादियो! वह तुम्हें नष्ट कर देगा। निस्संदेह अल्लाह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र, बहुदेववाद और बिद्अत को पसन्द नहीं करता और उसके शत्रु ही नष्ट होने वाले हैं। निश्चय ही वह मेरे साथ है और उसने मुझे मसीह के अवतरण के रहस्य से सूचित किया है, जबकि वह (रहस्य) तुमसे छिपा रहा। यह अल्लाह की ओर से एक परीक्षा थी। वह जो चाहता छुपाए रखता है और जो चाहता है प्रकट करता है, और परोक्ष की बातों के बारे में उसकी यही सुन्नत है। तो विनाश है उनके लिए जो अल्लाह के अदृश्य मामलों के बारे में बहस करते हैं मानो कि वे उनको पूरी तरह से परिधि में लिए बैठे हैं और उसके सब भेदों से परिचित हैं, और वे (इन बातों से) डरते नहीं। हे लोगो! हर वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है तो मेरे फलों से तुम मुझे शीघ्र ही पहचान लोगे, फिर तुम क्यों झगड़ते हो। और तुम अपनी जीभ को कुफ़्र से और अपने हाथों को बुराई से रोको, और कहहार खुदा की नाराज़गी से डरो और अल्लाह से इन भेदों के प्रकट होने की प्रार्थना करो तो शीघ्र ही तुम्हें बता दिया जाएगा।

निश्चित रूप से मैं तुम्हें एक ऐसे मामले की ओर बुलाता हूँ जिसमें तुम्हारी भलाई का फल और ज़रूरतों का प्रावधान है और वह यह है कि तुम में से हर एक को प्रयास करना चाहिए और अल्लाह से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उसे ऐसा स्वप्न (रो'या) दिखाए जो वास्तविकता को प्रकट करे या ऐसा इल्हाम करे जो तर्क के योग्य हो। अल्लाह सब कुछ करने में सक्षम है, इसलिए तुम पूरे दिल से जो कुछ भी मांगोगे, वह तुम्हें देगा। अतः तुम रात के आखिरी हिस्से में उठकर वुजू करो और फिर कुछ रकअत नमाज़ पढ़ो और रो-रो कर दुआ करो। और पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद और सलाम भेजो, फिर अपने लिए क्षमा मांगो और खुदा तआला से इसके बारे में ज्ञान चाहो। यह प्रक्रिया चालीस दिनों तक नियमित रूप से करो और उकताओ नहीं। तो निश्चित रूप से

तुम अल्लाह की ओर से ऐसा मामला देखोगे जो तुम्हारा सत्य की ओर मार्गदर्शन करेगा और तुम संदेह से मुक्त हो जाओगे जैसे नेक लोग मुक्ति पाते हैं। तो तुम्हें क्या हो गया है कि तुम नेक लोगों के आदर्श पर नहीं चलते और संयमियों के मार्ग को नहीं अपनाते? तुम पसंद करते हो कि अपने भाइयों को बिना ज्ञान के ज़ालिम और काफ़िर ठहराओ। तो अल्लाह के निकट तुम पकड़े जाओगे और तुम्हें जवाबदेह ठहराया जाएगा। क्या तुम (किसी को) काफ़िर ठहराने को छोटी बात समझते हो, हालाँकि अल्लाह की नज़र में वह बहुत बड़ी बात है। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह से नहीं डरते और न ही सोच-विचार करते हो? हे लोगो, तौबा करो! तौबा करो! इससे पहले कि तौबा के दरवाज़े बंद हो जाएं और तुम देखते रह जाओ। हे लोगो! तथाकथित सूफियों के जमावड़े (मज्लिसों) से बचो जो कहते हैं कि हम चिश्ती हैं और हम क़ादरी हैं, वे तुम्हारे पास भेड़ों के भेष में आते हैं हालाँकि वे चीर-फाड़ करने वाले भेड़िए हैं तुम उन्हें देखोगे कि वे गाने बजाने के रसिया हैं और बेमिसाल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत से मुंह फेरने वाले हैं और उनमें से अधिकतर पापी हैं। वे गाने बजाने वाली बनी सँवरी स्त्रियों के प्रति बहुत आकर्षण रखते हैं और उन्होंने प्रबुद्ध शरीयत को त्याग दिया है और बेलगाम होकर अपनी इच्छाओं का पालन किया है, इसलिए वे उन्हीं पर तुले हुए हैं। उन्हें कुरआन की शिक्षाओं का कोई ज्ञान नहीं है और उनके स्वभाव को फुरक़ान-ए-मजीद (कुरआन) के गंभीर रहस्य छू कर भी नहीं गुज़रे, जबकि वे समझते हैं कि वे (इसके) वास्तविक अर्थों को समझने में सफल हो चुके हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह की ओर बुलाए उसका अनुसरण करो तो कहते हैं हम नहीं जानते कि कौन बुलाने वाला है हम स्वयं सन्मार्ग पर हैं और दूसरों को सन्मार्ग दिखाने वाले हैं। और जब उन्हें अल्लाह की ओर तथा उसके रसूल की सुन्नत की ओर बुलाया जाता है, तो वे अहंकार से मुंह फेर लेते हैं। वे अल्लाह के नबियों का मज़ाक उड़ाते हैं और उनसे उपहास करते हैं और कहते हैं कि मुहद्दसियत, ख़ुदा से संवाद का सौभाग्य और उसका रसूल होने का सौभाग्य कुछ चीज़ नहीं है और हम चाहें

तो अपने निम्न अनुयायी को भी इस स्तर तक पहुँचा सकते हैं, लेकिन हम ऐसे मामलों को नापसंद करते हैं। अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी है, इसलिए वे सच्चाई को नहीं देखते और न ही उनकी मंशा है देखने की और डरते नहीं हैं, और जिसे खुदा ने अपने बन्दों के लिए भेजा है उसका तिरस्कार करते हैं और कहते हैं कि अल्लाह ने हमें सूचित कर दिया है कि वह काफ़िर और झूठा है। वे अपनी बात पर अड़े रहते हैं हालांकि वे झूठ बोल रहे हैं। कहते हैं समस्त बरकतें तो बैअत से जुड़ी हुई हैं और इस व्यक्ति को मशाइख में से किसी शैख की बैअत का सौभाग्य प्राप्त नहीं है। हालाँकि उनकी बैअत केवल एक घाटे का सौदा है। उनकी बात साफ़ झूठ है जिसको गढ़ने वालों ने गढ़ लिया है, हाय अफसोस है ऐसे लोगों पर! क्या वे नहीं जानते कि मसीह अपने सारे ज्ञान के साथ आकाश से उतरेगा और पृथ्वी से कुछ भी नहीं लेगा। उन्हें क्या हो गया है कि वे समझ बूझ से काम नहीं लेते। क्या वे नहीं जानते कि जो लोग अपने रब की ओर से भेजे जाते हैं उन्हें किसी की बैअत की आवश्यकता नहीं होती और वे केवल अपने रब से ही सीखते हैं। और वे सभी प्रकार का ज्ञान उसी से लेते हैं। उसी की सहायता से वे देखते हैं, सुनते हैं और बोलते हैं। उनमें अल्लाह की रूह बसती है इसलिए वे केवल उसकी रूह की सहायता से बोलते हैं, और उसके माध्यम से वे हर सदप्रवृत्ति को प्रकाशित करते हैं जिसकी फितरत सही हो, और उसी के माध्यम से वे आशीर्वाद देते हैं और उसी के माध्यम से वे ज्ञान के खजाने की जानकारी देते हैं। और वे हर उस व्यक्ति पर अल्लाह की हुज्जत को स्थापित करते हैं जो सत्य के इन्कार तथा झुठलाने पर हठ करता है और अल्लाह की ओर से उनकी सहायता की जाती है।

अल्लाह तआला उनके दिलों में पवित्र कुरआन की शिक्षाएं डालता है और उन्हें समय की दुर्लभ घटनाओं की अधिकता से जानकारी देता है और उन्हें वह सब कुछ देता है जो दूसरों को नहीं दिया जाता और वे औरों की अपेक्षा विशिष्ट किए जाते हैं। और वह उन्हें ऐसा साम्राज्य देता है, जो उनके सिवा किसी और को नहीं मिलता, और उन्हें विशेष अनुग्रह प्रदान किए जाते हैं। हे उद्दंड और

इन्कार करने वालो ! तुम्हारे लिए यह सौभाग्य कहाँ? हे झूठो! यदि तुम्हारी बैअत और तुम्हारे मशाइख की बैअत में कोई असर है तो वह असर मुझे दिखाओ और अगर तुम्हारी संगति और उनकी संगति में कोई अध्यात्मलाभ है तो क्या बात है कि मुझे वह अध्यात्मलाभ दिखाई नहीं देता, क्या तुम साबित कर सकते हो? हे झूठ गढ़ने वालो! तुम स्वयं भी नष्ट हो गए हो और तुम ने बहुत से लोगों को भी नष्ट कर दिया है। क्या कारण है कि तुम्हारी बैअत से लोगों को कोई लाभ नहीं हुआ है? और न ही तुम स्वयं उससे लाभान्वित होते हो। और तुम्हारी सभा तो केवल भीड़ और तमाशबीनों का जमावड़ा है। तुम्हारी सभाओं में कुरआन तो पढ़ा नहीं जाता बल्कि तुम शैरो शायरी (काव्यों) के साथ मनोरंजन करते हो।

और जिन लोगों ने तुम्हारी बैअत की है, मैं उनमें अल्लाह की मुहब्बत और उसके रसूल की मुहब्बत नहीं देखता, क्योंकि मैं उन्हें दुराचार और गुनाह से रुकने वाले नहीं देखता, बल्कि गुनाहों की तरफ दौड़ते और एक दूसरे से आगे निकल जाते हैं। वे अल्लाह को छोड़ कर उनकी और झुकते हैं जो वास्तविक सहारा नहीं हैं और वे क़ब्रों को पूजते हैं और उन से शरण मांगते हैं जिन में कोई शक्ति नहीं, और वे संसार की निकृष्ट चीज़ों पर आँधे मूँह गिरते हैं और उसी से अपना पेट भरते हैं। वे अपनी उद्दंडता के कारण उसे पसंद करते हैं, और अपने दुर्भाग्य के कारण उस पर टूट पड़ते हैं और उसमें वे हद से बढ़े हुए हैं। वे कुरआन का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं रखते और न ही उसे पढ़ते हैं और आखिरत (परलोक) के लिए कुछ जमा नहीं करते, बल्कि केवल दुनियादारी के लिए मेहनत करते हैं। हे लोगो! तौबा करो, तौबा करो क्योंकि दिन पूरे हो गए हैं और अल्लाह का समय निकट आ गया है। अतः धन्य है वह आँख जो सोचती है और देखती है। धन्य है वह कान जिसने ध्यान दिया और सुना। धन्य है वह क़दम जो सत्य की ओर उठा और दौड़ा। और धन्य हैं वे लोग जो सत्य को स्वीकार करते हैं और उससे मुँह नहीं फेरते।

हे मुसलमानो! अल्लाह तुम्हें सच्चा मुसलमान बनाए ! जान लो कि मैं वास्तव में अल्लाह की ओर से हूँ, और गवाह के तौर पर अल्लाह काफ़ी है।

और (यह भी) जान लो कि वह वास्तव में मेरी सहायता करता है और मेरा समर्थन करता है और मुझे सिखाता है और मुझे इलहाम करता है, और उसी ने मुझे ऐसे अध्यात्मज्ञान प्रदान किए हैं जिन्हें उसके सिखाए बिना कोई नहीं जान सकता। सो तुम्हें क्या हो गया है कि तुम मुझे स्वीकार नहीं करते और न ही छानबीन करते हो। हे लोगो, मेरे पास आओ और शर्माओ मत और अपनी आँखें खोलो और बंद मत करो। और अल्लाह की सुरक्षा में प्रवेश करो और दूर मत जाओ। और अपने आप को घृणा और शत्रुता से पवित्र करो और अपवित्र मत बनो। और पश्चाताप् (तौबा) करने की जल्दी करो और विलम्ब न करो। और कुधारणा (बद्जनी) में हद से आगे न बढ़ो और परहेजगारी अपनाओ और (बद्जनी से) बचो और सब्र और दुआ के साथ मदद माँगो। जल्दबाज़ी न करो और अल्लाह से विनम्रता पूर्वक दुआ करो और अपने रब के समक्ष झुक जाओ। अपने पूरे दिल और अपने पूरे ध्यान और अपने पूरे दृढ़ संकल्प और अपनी पूरी ईमानदारी के साथ उससे मेरी और मेरे मामले की सच्चाई पूछो। तुम पर वह मामला खोल दिया जाएगा और तुम्हें उत्तर दिया जाएगा। नरमी करो, हे लोगो! नरमी करो और गाली गलौच में हद से आगे न बढ़ो। और अल्लाह के उन चमत्कारों का, जो तुम्हारी आँखों से छिपे हुए हैं, इन्कार करने से डरो और शोर न मचाओ। हे जल्दबाज़ो! अपने ऊपर दया करो और अत्याचार मत करो। हे भारत के मशाइख! यदि तुम अपने आप को कुछ समझते हो, तो क्या कारण है कि तुम मेरा मुक्राबला नहीं करते और न ही मेरे सामने आते हो। मैं तुम्हें अपने उत्साह में सन्मार्ग से भटका हुआ, अहंकारी और आत्ममुग्ध के रूप में देखता हूँ। और तुम्हें प्रशंसा करने वालों और अतिशयोक्ति करने वालों ने नष्ट कर दिया है। आओ कि हम महिमावान रब को पुकारें और कहा सुनी से परहेज करें, और अल्लाह से प्रमाण और दलील माँगें और अल्लाह से निवेदन करें कि वह हमारे और तुम्हारे बीच फैसला कर दे ताकि सच्चाई स्पष्ट हो जाए और नष्ट होने वाले नष्ट हो जाएं। और अल्लाह की क्रसम! मैं तुम्हारे बारे में विश्वास रखता हूँ कि तुम लोमड़ियाँ हो और शेर बनते हो और साधारण पक्षी हो और चील बनते हो।

और ऐसे ही तुम मेरे बारे में विचार करते हो इसलिए हम अल्लाह को हमारे और तुम्हारे बीच निर्णायक बनाते हैं, ताकि अल्लाह तआला सच्चों को सम्मान प्रदान करे और झूठे नुकसान उठाएं। यदि मेरी इस नेमत में जो अल्लाह ने मुझे प्रदान की है, तुम्हें भी हिस्सा मिला है तो मेरी पुकार पर निकल आओ और मेरा सामना करो और जल्दी करो और मुझे मोहलत न दो। और अल्लाह की क्रसम! मैं तुम में एक भी नेक आदमी नहीं देखता सिवाए इसके जैसे काले बालों की लट में कोई एक आध सफेद बाल हो। और मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुमने अल्लाह के बंदों को गुमराह कर दिया है और इस्लाम को घायल कर दिया है और घायल करते चले जा रहे हो। और वास्तव में मेरे रब ने मुझे इसलिए भेजा है ताकि मैं तुम्हें ऐसे मार्ग बताऊँ जिनपर तुम चलो और ऐसे कर्म बताऊँ जिनको तुम कर सको और मैं तुम्हें ऐसे शिष्टाचार सिखाऊँ जिनसे तुम सभ्य बन जाओ। अतः तुम मेरी बात का उत्तर दो कि क्या तुम मेरे निमंत्रण को स्वीकार करते हो या अस्वीकार करते हो?

हे बेपरवाहो! तुम्हें क्या हो गया है कि तुम इस्लाम और उसकी तकलीफों और नई तथा अजीबोगरीब मुसीबतों को नहीं देखते और न हमदर्दी रखते हो? यह वह समय है जिसमें हर जंगल की बुराई और हर भयानक मामले की बुनियाद इकट्ठी हो गई है। और यह युग अजीबोगरीब प्रलोभन (फ़ित्ने) और अछूते विज्ञान लेकर आया है, जिसमें अनैतिकता के लक्षण उसी प्रकार दिखाई देते हैं जितने उस दुष्ट स्त्री में दिखाई देते हैं जिससे नौजवान आलिंगन करते हैं और उसे अच्छा समझते हैं। हे लोगो! मैं तुम्हारे पास ऐसे समय में आया हूँ कि जब निकट था कि सूर्यास्त हो जाए और इस्लाम का नूर पर्दे के पीछे छुप जाए। अतः तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ज़माने को नहीं देखते और न ही उस नूर को स्वीकार करते हो जो अपने समय पर प्रकट हुआ है और पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों पर संदेह करते हो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ठिठुर गए हो और तुम्हारी ऊँटनी थक कर बैठ गई है और उसने अपने कान लटका दिए हैं। और तुम भी थक गए हो और अपनी दोनों टांगों पर गिर गए हो और तुम में कोई

हिलडुल बाकी नहीं रही और न ही तुम सांस ले रहे हो। क्या तुम सो रहे हो या मर गए हो? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम न सुनते हो और न ही उत्तर देते हो? क्या तुम सांसारिक जीवन को पसंद करते हो और अपने बाप दादा की मौत को याद नहीं करते और न ही तुम डरते हो। हाय अफसोस धर्म के मामले में तुम्हारे कमजोर हो जाने पर और तुम्हारे अपने शरीरों को मोटा करके सुंदर करने पर, और तुम्हारे इस्लाम की हमदर्दी से और ज्ञान तथा विश्वास से खाली हो जाने पर, और उन (विशेषताओं) पर जिनका तुम दावा करते हो। क्या तुम सच्चाई से दूर फेंकने वाली आंधी और कष्टदायक फ़िल्मों को नहीं देखते जो अकलमंदों को नष्ट कर रहे हैं? क्या तुम शताब्दी के आरंभ को नहीं देखते जिसकी तुम प्रतीक्षा कर रहे थे? क्या तुम अंधकार के साए और नीच लोगों के समूह के आक्रमणों को नहीं देखते? अतः तुम क्यों नहीं जागते हो? क्या तुम देखते नहीं कि इस्लाम भयभीत अनाथ के समान हो गया है और मुसलमानों की हिम्मतें थके मांदे कमजोर ऊंट की तरह हो गई हैं। और अल्लाह का भय खोई हुई संपत्ति के समान हो गया है और कुरआन का ज्ञान जीवित ही दफनाए जाने वाले के समान हो गया है। तुम यह सब देखते हो फिर भी जानबूझकर अज्ञानी बनते हो। हे लोगो! अपने चिंतन मनन में सतर्क रहो और नज़रों में ईमानदारी पैदा करो और परोपकारी खुदा से मुंह न फेरो और अल्लाह की नेमत को न झुठलाओ जो अपने नियत समय पर आई है और मुंह फेरते हुए पीठ न दिखाओ और अगर तुम मेरी बात सुनोगे और मेरे उपदेश की ओर ध्यान दोगे और मेरी उन वसीयतों की ओर तवज्जो करोगे जो आज मैं तुम्हें कर रहा हूँ तो अल्लाह तुमसे प्रसन्न हो जाएगा और तुम्हें सफल करेगा और तुम्हें बहुतायत प्रदान करेगा और अपनी बरकतें (आशीर्वाद) तुम पर उतारेगा और तुम्हारी औलाद और तुम्हारी नस्लों में और तुम्हारी फसलों में और तुम्हारे व्यापार और इमारतों में और तुम्हारी सरदारी में बरकत देगा और तुम्हें पवित्र जीवन प्रदान करेगा तो तुम अल्लाह की सुरक्षा में आ जाओगे और उसकी छत्रछाया के नीचे जीवन व्यतीत करोगे। और यदि तुम अपनी दुष्टता से बाज़ न आए और अल्लाह के आदेशों को तुमने अपने दिलों में स्थान न दिया, तो तुम

अपने पापों के कारण पकड़े जाओगे और तुम्हारे दोषों की आग तुम्हें भस्म कर देगी और अल्लाह तुम्हें दूसरों के लिए किस्से कहानियाँ और देखने वालों के लिए सबक बना देगा। और वह तुम्हारी धूल उड़ा देगा और तुम्हें जड़ से उखाड़ फेंकेगा। तो कहने का मतलब यह कि केवल तुम्हारे निशान शेष रह जाएंगे और तुम नष्ट हो जाओगे। और अल्लाह तुम्हारे पीछे अपनी तलवार तान लेगा और तुम पर उसको हावी कर देगा जो तुम्हें कष्ट देगा और तुम्हारा अपमान करेगा और तुम हर तरफ से धुतकारे जाओगे। निश्चय ही अल्लाह तआला चाहता है कि वह अपने धर्म का समर्थन करे और अपने बन्दे की सहायता करे। क्या यही तुम्हारा इस्लाम है कि तुम उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए हो? क्या तुम उस पेड़ को उखाड़ सकते हो जिसे अल्लाह ने लगाया है? क्या तुम अल्लाह से लड़ोगे? हे मेरे रब! तेरा आना कितना रोबनाक है, जब तू किसी क्रौम की सहायता करने के लिए आता है, तो वह प्रबल (गालिब) हो जाती है।

हे मेरे रब! तेरी तलवार क्या ही खूब काटने वाली है। जब तू इसे किसी समूह पर सून्त लेता है तो फिर वे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते हैं। अल्लाह तआला नए रूप में प्रकट हुआ है तो हे बेपरवाह लोगो! तुम उसके (सम्मान के) लिए खड़े हो जाओ और अगर तुम ने जानबूझकर लापरवाही बरती और मुंह फेरा तो शीघ्र ही तुम इस समय को याद करोगे और बहुत पछताओगे। तुम अपने से पहली क्रौमों की ओर देखो उन्होंने अल्लाह की अवज्ञा की तो उसने उनके चेहरों पर प्रहार किया और उनको लड़ाइयों तथा दर्दनाक हालात के द्वारा पकड़ा और उनको विभिन्न मुसीबतों और नाना प्रकार की आपदाओं से नष्ट कर दिया। और तुम कोई उनसे श्रेष्ठ नहीं हो और अल्लाह न तो कमजोर हुआ है और न ही थक गया है और न बेसुध हुआ है। अतः तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के तेज से न डरते हो और न थरते हो और हमने तुम्हारे बारे में थोड़ी सी बात ही की है और तुम्हारी बहुत सी रुसवाइयों पर पर्दा डाला है (अर्थात् उनको उजागर नहीं किया) और हमने लानत मलामत करने की अपेक्षा छुपाने को अच्छा समझा है ताकि तुम अपने बारे में कृतज्ञ (शुक्रगुजार) हो और तौबा करो।

अरब के बुजुर्गों तथा सदाचारियों की ओर

हे मूल रूप से अरब देश के संयमियो तथा बुजुर्ग लोगो! तुम पर सलामती हो। हे नबी के देश के निवासियो और अल्लाह के महान घर के पड़ोसियो! तुम पर सलामती हो। तुम इस्लाम की क्रौमों में से सर्वश्रेष्ठ हो और महान तथा प्रतिष्ठावान खुदा की जमात के सबसे श्रेष्ठ लोग हो। कोई भी क्रौम तुम्हारी शान तक नहीं पहुंच सकती, तुम सम्मान, महानता और प्रतिष्ठा में सबसे आगे बढ़ गए हो। और तुम्हारे लिए यह गर्व ही पर्याप्त है कि अल्लाह ने अपनी वह्यी को आदम से शुरू किया और उस पैगंबर पर समाप्त किया जो तुम में से था, और तुम्हारी भूमि उसकी मातृभूमि और ठिकाना और उसका जन्मस्थान थी। और सृष्टि के पथप्रदर्शक मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में तुम्हें क्या पता कि वह किस शान के नबी हैं। आप का उपकार हर छोटे-बड़े पर सिद्ध है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह्यी ने समस्त लापता अर्थों तथा रहस्यों तथा गंभीर बिंदुओं को स्पष्ट कर दिया है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म ने सत्य के वह समस्त ज्ञान तथा सन्मार्ग के तरीके जो कि मुर्दा थे उनमें जान डाल दी। हे अल्लाह! ज़मीन में जितनी पानी की बूंदें, धूल के कण, जिंदे और मुर्दे हैं और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जाहिर या छुपा हुआ है उन सबकी संख्या के बराबर तू मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद, रहमत, सलामती और बरकत नाज़िल फ़रमा और हमारी तरफ़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतना सलाम पहुंचा जो आसमान को किनारों तक भर दे। भाग्यशाली है वह क्रौम जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुलामी का बोझ अपनी गर्दनो पर उठा ले और भाग्यशाली है वह दिल जो आप तक पहुंचा, आप से मिला और आप की मुहब्बत में फ़ना हो गया। हे उस देश के निवासियो ! जिस पर मुहम्मद मुस्तफा के पवित्र क़दम पड़े हैं, अल्लाह तआला तुम पर रहम करे और तुमसे राज़ी हो और तुम्हें खुश

रखे। हे अल्लाह के बंदो! मैं तुम्हारे बारे में बहुत हुस्न-ए-ज़न (सुधारणा) रखता हूँ और मेरी रूह तुम से मिलने के लिए प्यासी है। मैं तुम्हारे देशों तथा बस्तियों का इसलिए बहुत इच्छुक हूँ ताकि मैं उन स्थानों को देख सकूँ जहाँ सर्वश्रेष्ठ हस्ती (आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के क़दम पड़े और उस मिट्टी को अपनी आँखों का सुरमा बनाऊँ और उस की भलाई और भले लोगों से मिलूँ और उस के विशेष आसार और विद्वानों से (मिलूँ) और मेरी आँखें उस देश के औलिया तथा बड़े बड़े पवित्र स्थलों को देखकर ठंडी हों। मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह मुझे तुम्हारा देश देखना नसीब करे और अपनी असीम कृपा से मुझे तुम्हें देखने की खुशी नसीब करे।

हे मेरे भाइयो! मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम्हारी मातृभूमि से प्यार करता हूँ, मुझे तुम्हारी सड़कों की मिट्टी और तुम्हारी गलियों के पत्थरों से प्यार है, और मैं तुम्हें दुनिया की हर चीज़ पर प्राथमिकता देता हूँ। हे अरब के जिगर के टुकड़ो! अल्लाह तआला ने तुमको विशेष बरकतों और असंख्य गुणों और बड़ी-बड़ी रहमतों का आशीर्वाद दिया है। तुम्हारे बीच अल्लाह का वह घर है जिसके कारण बस्तियों की माँ (मक्का) को बरकत दी गई, और तुम्हारे बीच उस पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मज़ार है जिसने पूरी दुनिया में एकेश्वरवाद को फैलाया और अल्लाह का तेज प्रकट किया और उसकी महिमा दिखाई। और तुम में से ऐसे लोग थे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की पूरे दिल से, पूरी आत्मा से और अपने पूरे दिमाग से मदद की, और अपना माल और अपनी जानें अल्लाह के धर्म तथा उसकी पवित्र पुस्तक के प्रचार-प्रसार के लिए न्योछावर कर दीं। अतः तुम इन विशेषताओं से विशिष्ट हो और जिसने तुम्हारा सम्मान नहीं किया उसने अन्याय किया और उल्लंघन किया। हे मेरे भाइयो, मैं अपना यह पत्र टूटे हुए दिल और बहते आँसुओं के साथ तुम्हें लिख रहा हूँ इसलिए तुम मेरी बात सुनो। अल्लाह तआला तुम्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

मैं वह व्यक्ति हूँ कि अल्लाह तआला ने अपनी विशेष कृपा से मेरा पोषण किया है और मुझ पर पूर्ण उपकार किया और उसने मुझसे किसी चीज़ की

कमी नहीं की और मुझे उन लोगों में से बनाया जिनसे वह वार्तालाप करता और जिनको इलहाम करता है और उसने मुझे अपनी ओर से ज्ञान प्रदान किया है और अपने पसंदीदा मार्गों तथा संयम के गलियों की ओर मेरा मार्गदर्शन किया और मुझ पर उसने अपने बड़े बड़े भेद खोले। अतः कभी तो उसने ऐसे वार्तालाप से मेरी सहायता की जो बहुत स्पष्ट थे और उनमें न ही कोई संदेह था और न कोई शक। और कभी उसने मुझे ऐसे कश्फ के प्रकाश से प्रकाशमान किया जो चमकदार दिन के समान स्पष्ट थे। और उसके महान उपकारों में से यह भी है कि उसने मुझे इस दौर और इस ज़माने के लिए इमाम और खलीफ़ा बनाया है और मुझे मुजद्दिद के तौर पर इस सदी के आरंभ में अवतरित किया है ताकि मैं लोगों को अंधेरी से प्रकाश की ओर निकालूं और उन्हें गुमराही तथा उपद्रव के मार्गों से निकालकर संयम की चौड़ी सड़क की ओर ले जाऊं। और उसने मुझे वह चीज़ दी जो दिलों को स्वस्थ करती है और महसूस होने वाले संदेह दूर करती है और सृष्टि से अंधेरी को दूर करती है। निस्संदेह उसने इस ज़माने को मुश्किलों में क़ैद और जटिल समस्याओं में फंसा हुआ पाया और बिदअतों, बुराइयों तथा अंधकारों के नीचे नष्ट होने वाला पाया। तो उसने इरादा किया कि वह इस ज़माने के लोगों को इन आफतों तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की विपत्तियों से मुक्ति दे। उसने पादरी तथा ईसाई दार्शनिकों के उपद्रव को देखा कि वे लोगों के बीच से निकलकर जंगलों तक फैल गया है और इरादों से शुरू होकर बुरे कर्मों को व्यावहारिक रूप से करने तक और पृथ्वी की सतह से उठकर पहाड़ों तक पहुंच गया है। और उसने देखा जो उन्होंने बहुत बड़ी उद्दंडता की है और उन्होंने अपने मामले को अतिशयोक्ति में चरम तक पहुंचा दिया है और प्रतिष्ठावान रब ने देखा कि उनके उपद्रव की बारीकियों तथा उनकी बुद्धि की सूक्ष्मता से और उनकी चालाकियों की विचित्र बातों से और उनके ज्ञान के जादू तथा उनकी कलाओं के इंद्रजाल से और उनके बहुत बड़े धोखे की वजह से बहुत से लोग परीक्षा में डाले गए हैं। और उसने देखा कि वे लोगों के धर्म और उनके ईमान को लूट रहे हैं और वह लोगों के दिलों तथा

उनकी आंखों और उनके कानों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं और लोगों को गुमराह करने के लिए ज्ञात तथा अज्ञात हर प्रकार के रास्तों पर दूर तक चले जाते हैं और अपने छल-कपट से अंधकार को प्रकाश के समान दिखा रहे हैं और उनकी तहरीकों से ही हिंदुओं में से एक क्रौम जो अपना नाम आर्य रखती है, निकली है। और वे कहते हैं कि हम केवल अपनी पुस्तक "वेद" पर विश्वास करते हैं, जो दुनिया के आरंभ में प्रकट हुई थी। हालाँकि, उनके वेदों में सूर्य, चंद्रमा, तारे, अग्नि, जल और वायु उपासना की शिक्षा के अलावा और कुछ नहीं है। और यदि उनकी पत्नियां उनके लिए पुत्र उत्पन्न नहीं करती हैं, तो उनके वेद उन्हें आदेश देते हैं कि वे अपनी पत्नियों को व्यभिचार करने की अनुमति दें ताकि वे उनके लिए बच्चे पैदा कर सकें। अपनी मुक्ति के लिए उन्होंने हमेशा इस प्रथा को जारी रखा है, उनकी भाषा में इस प्रक्रिया को नियोग कहते हैं और वे इसे एक पवित्र कार्य मानते हैं। तो यह उनका धर्म विधान है और ये उनकी किताब के आदेश हैं और फिर भी वे अपने लोगों को इस्लाम स्वीकार करने से रोकते हैं और खैरुल वरा (मुहम्मद सअव) को बड़ी दुष्टता और द्वेष भाव से गाली देते हैं और गाली गलौज तथा अपमान पर हठ करते हैं और इस्लाम के विरुद्ध किताबें लिखते हैं और उनकी इस्लाम के खिलाफ लिखी गई किताबें केवल मनगढ़त तथा झूठी बातों का एक संग्रह हैं और ये सभी बुराइयाँ पादरियों के कारण पैदा हुई हैं। धरती पर भयंकर भूकंप उठा है। अतः अल्लाह ही सबसे अच्छा संरक्षक तथा सहायक है।

और एक महान मुबारक निशान यह है कि जब उसने ईसाइयों के उपद्रव को देखा और पाया कि वे (इस्लाम) धर्म से बहुत अधिक रोकते हैं और देखा कि वे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को कष्ट देते हैं और आपका अपमान करते हैं और इब्न मरियम (अर्थात् ईसा मसीह) की बहुत बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा करते हैं, तो स्वाभिमान के कारण उसका क्रोध भड़क उठा। और उसने मुझे पुकारा और कहा, "मैं तुम्हें इब्न मरियम बनाता हूँ और अल्लाह हर बात पर समर्थ है। तो, मैं अल्लाह का वह स्वाभिमान हूँ, जो कि सही समय

पर जोश में आया ताकि जो लोग ईसा के बारे में अतिशयोक्ति करते हैं, उन्हें पता चले कि ईसा अल्लाह के एक होने की तरह अकेला नहीं है, और यह कि अल्लाह तआला समर्थ है कि वह अपने नबी सअव की उम्मत में से एक को ईसा बना दे और यह वादा पूरा होने वाला था। हे भाइयो! ये वह बात है जिसे अल्लाह ने पिछली सदियों की नज़रों से छुपा कर रखा था और इसका विवरण हमारे समय में प्रकट किया। वह जो चाहता है छुपाता है और जो चाहता है उसे प्रकट कर देता है और इसके उदाहरण अतीत में बीत चुके हैं। और इस गुप्त विधि को अपनाने में दो प्रमुख युक्तियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिए उत्तम और अधिक उपयुक्त समझा है।

पहली तो यह है कि यह ख़बर ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरों में से एक थी और इसके प्रकटन का समय बहुत दूर था। और अल्लाह तआला जानता था कि वह इसको लंबे समय के बाद और कई क्रौमों के इस दुनिया से चले जाने के बाद ही प्रकट करेगा। और वह यह भी जानता था कि पहली क्रौमों को इस संक्षिप्त (या अस्पष्ट) ख़बर की व्याख्या से तथा उसके विवरण से कोई लाभ नहीं होगा। और वह जानता था कि इस ख़बर के प्रकट होने से पहले वे सभी मर जाएंगे और इसका विवरण उनके लिए किसी काम न आएगा। इसलिए उसने चाहा कि जो उन्हें नहीं मिल सका उसके बदले में वह उन्हें ईमान लाने का पुण्य दे और उनके (उस पर) ईमान लाने के बाद उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। इसलिए उसने अपनी वही में इस ख़बर के विवरण को छोड़ दिया, और उसने संक्षेप में एक रहस्य की तरह एक सूक्ष्म संकेत दिया और इस मामले को रूपकों के साथ अलंकृत किया और इसे लाक्षणिकताओं तथा गुप्त संकेतों से सुसज्जित किया। और उसने इस मामले को अक्रल, समझ और अटकलों से दूर रखा ताकि वह उनकी परीक्षा ले सके कि उनमें से कौन इस को स्वीकार करता है। अतः वे ईमान ले आए और अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया और उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान दिया क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के बारे में सुधारणा (हुस्न-ए-ज़न) से काम लिया और उस बात पर ईमान ले आए जिसके बारे में वे सच्चाई नहीं जानते

थे और न ही उसके स्वरूप की कोई समझ रखते थे।

और दूसरी युक्ति यह है कि अल्लाह तआला ने इरादा किया था कि वह बाद में आने वालों की भी परीक्षा ले जैसे उसने पहले लोगों की परीक्षा ली थी ताकि वह उनके पापों को क्षमा कर दे और ईमान लाने के समय उनका मार्गदर्शन करे। वे इससे पहले बुरे काम कर रहे थे और इसमें उन्होंने कई सदियां और लंबा समय बर्बाद कर दिया था। कामुक इच्छाओं ने उनको अपने वश में कर लिया था यहाँ तक कि वे स्वयं पर नियंत्रण न रख सके और उन्होंने अपनी इच्छाओं की पूर्ति की और वे एक चटियल मैदान की तरह बन गए। तो अल्लाह ने इस संक्षिप्त और छुपी खबर को उनकी आस्था के विपरीत प्रकट किया ताकि इसके माध्यम से उनके मार्ग, ज्ञान और समझ का परीक्षण किया जा सके। और ताकि वह ईमान लाने वालों को अपनी ओर से कुछ दयादृष्टि प्रदान करे और इस मामले को उनके लिए अपनी प्रसन्नता प्राप्त करने का साधन बना दे, और यह सब उसकी ओर से एक परीक्षा थी ताकि वह निष्ठावान मोमिनों को दूसरों से अलग कर दे और उन पर कृपा और दया करे और ताकि उन लोगों की अक्लों को लज्जित करे जिन्होंने स्वयं को बहुत बड़ा समझा। और अल्लाह के बंदे तथा उसके प्रचार-प्रसार को हंसी ठट्ठा और मजाक का निशाना बनाया और अल्लाह तआला के काम ऐसे ही हैं कि जब वह किसी पापी क्रौम की परीक्षा लेना चाहता है तो कभी-कभी उन पर एक पहले से बताई हुई खबर को संदिग्ध कर देता है और उनकी बुद्धि तथा समझ को उल्टा कर देता है जिससे वे न तो अल्लाह तआला के वादे के भेद को समझ पाते हैं और न ही उस वादे के पूरा होने के समय को, यह इसलिए ताकि उनको उनके पूर्व पापों का बुरा मजा चखाए और वह उनको उन लोगों में से बना देता है जिन्होंने एक सच्चे बंदे से शत्रुता की और अत्याचार में बढ़ गए। अतः इस खबर की वास्तविकता उनकी आंखों में अजनबी बना दी जाती है तो वे उसे मनगढ़त और झूठ समझते हैं और बुद्धिमानों की तरह सन्मार्ग को नहीं अपनाते और उस गुप्त खबर में छुपे संकेतों को नहीं देखते और अल्लाह तआला की परीक्षा से नहीं डरते जो विशेष रूप से मुजरिमों के भाग्य में

आई है और वे अंधे की तरह झगड़ते हैं। क्या लोगों ने समझ रखा है कि उनके केवल यह कह देने से कि हम ईमान ले आए हैं वे छोड़ दिए जाएंगे और उनको किसी परीक्षा में नहीं डाला जाएगा ? हालांकि ऐसे मामलों में अल्लाह की सुन्नत पहले बीत चुकी है। और उनमें से हर दिल जो डरता है उसके लिए सबक है। अतः दूरबीन नज़र रखने वालो! सबक हासिल करो और अगर तुम पर यह बात संदिग्ध है तो जानकारों से पूछो। क्या तुम आश्चर्य करते हो कि तुम्हारे सामने पूर्व लोगों का तरीका आ गया है और क्या तुम आश्चर्य करते हो कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी ओर इस भविष्यवाणी की सच्चाई खोलने वाला निर्णायक (हकम) भेजा है। अतः उस निर्णायक ने इस भविष्यवाणी के चेहरे से पर्दा उठा दिया है। क्या यह तुम्हारी निगाहों में कोई अप्रिय बात है और तुम भूल गए हो जो तुम्हें बताया गया था कि मसीह तुम्हारे पास निर्णायक और न्यायकर्ता (हकम-अदल) बनकर आएगा? फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अपने निर्णायक की बात स्वीकार नहीं करते? क्या तुम उसे भूल गए हो जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था और कड़ा निर्देश दिया था और अगर तुम अपने आपको सन्मार्ग और सच्चाई पर समझते हो तो तुम इस पर कोई पूर्व उदाहरण क्यों नहीं प्रस्तुत करते जबकि अल्लाह तआला ने फरमाया है कि उसकी सुन्नत के उदाहरण पहली क़ौमों में पाए जाते हैं। क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जिसे आसमान की ओर उठाया गया हो फिर वह कुछ सदियों के बाद उतरा हो जैसा कि तुम ईसा के बारे में आस्था रखते हो? अल्लाह की क़सम यह बात अल्लाह की सुन्नत से बाहर है और तुम कदापि अल्लाह की पुस्तकों में इस जैसा कोई निशान नहीं पाओगे। और तुम सिहाह (हदीस की प्रथम छः प्रमाणित पुस्तकों) में पढ़ चुके हो कि मसीह अपने मृत्यु प्राप्त भाइयों से जा मिला है और उसने अपने भाई यह्या के पास स्थान प्राप्त किया और यह कि अल्लाह तआला उन लोगों से जो मुसलमान होने की हालत में मर गए वादा कर चुका है कि वे दुनिया की तरफ नहीं लौटाए जाते और वह सौभाग्य वाले घर में हमेशा रहते हैं और हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि मुझे ख़बर दी गई है

कि मैं ईसा से आधी आयु पाऊंगा, इसमें ईसा की मृत्यु (वफ़ात-ए-मसीह) पर दलील है उस व्यक्ति के लिए जो दिल रखता है या जो विचार विमर्श करता है और दूरदर्शिता से काम लेता है। अतः अहले हदीस को उसके मुताबिक निर्णय करना चाहिए जो सिहाह-ए-सित्ता में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है और वह मसीह के सशरीर ऊंचे आसमान पर उठाए जाने को साबित करने से पहले उसके उतरने की हदीसों पर बहस न करें और अगर अल्लाह चाहता तो अवश्य उनके कान खोल देता और उनकी आंखों को दृष्टि प्रदान करता और उनके दिलों को समझ प्रदान करता परन्तु उसने चाहा कि उसने जो योग्यताएं उन्हें प्रदान की हैं उनमें उन्हें आजमाए और ताकि अल्लाह उसको रुसवा करे जो लोक-परलोक में अपनी रुसवाई चाहता है। और अगर अहले हदीस ईमान ले आते और संयम धारण करते तो अल्लाह अवश्य उनसे उनकी बुराइयां दूर कर देता और उनको सच्चाई में लिख लेता लेकिन उन्होंने ग़लत किया और जल्दबाज़ी की और उन्होंने अपने लिए टेढ़ी राह अपनाई और वे पहले गुज़रे हुए मूर्खों के पदचिह्नों पर चले और उन्होंने वह सब कुछ भुला दिया जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी। और उन्होंने अपने सांसारिक जीवन के लिए सुख-समृद्धि चाही। अतः वे अल्लाह को अपने षड्यंत्रों से कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे यद्यपि वे अपने षड्यंत्र से पहाड़ भी उसकी जगह से हिला दें और तू उनको अल्लाह की पकड़ से बचने वाला न समझ और न ही तुम खुदा से शत्रुता को मामूली बात समझो, अल्लाह अपना वादा पूरा करेगा और अपने बंदे की सहायता करेगा। अगर वह सुलह (मैत्री) के लिए झुक जाएं तो यह उनके लिए बेहतर होगा और अगर वह उद्दंडता करें तो अल्लाह अवश्य उनको अपमानित और तिरस्कृत करेगा। निस्संदेह मैं इस संदेश में उन पर अपनी हुज्जत पूरी कर चुका हूं और अपनी सच्चाई की दलीलें उन के सम्मुख वर्णन चुका हूं परन्तु उन्होंने इंसाफ की नज़र से नहीं देखा। क्या वे नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने विभिन्न स्थानों पर मसीह की मृत्यु (वफ़ात-ए-मसीह) की ख़बर दी है और सारा कुरआन उस से भरा पड़ा है जबकि तू मसीह के जीवित होने के सबूत के लिए कुरआन में

एक शब्द या एक अक्षर भी नहीं पाएगा और कुरआन में मसीह का यह कथन तेरे लिए पर्याप्त है कि :

كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ
الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ۔ (अल माइदह- 5/118)

{अर्थात: (हे खुदा) मैं उन पर निगरान था जब तक मैं उनमें रहा, तो जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उन पर निगरान रहा}। अतः तू देख कि इससे किस प्रकार सिद्ध होता है कि मसीह मृत्यु को प्राप्त हो गया और गुजर गया। अगर मसीह का नुज़ूल और उनका दोबारा आना मुकद्दर होता तो मसीह अपने कथन में अवश्य दो निगरानियों का वर्णन करते और अपनी बात : كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا : (मैं उन पर निगरान था) के साथ यह भी कहते कि أَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَرَّةً أُخْرَى (अर्थात मैं दूसरी बार भी उन पर निगरान हूंगा) और पहली गवाही को ही पर्याप्त न समझते। अल्लाह तआला ने फरमाया है: فِيهَا تَحْيَوْنَ (कि तुम इसी धरती में जिओगे। अल आराफ़- 7/26) और इस तरह लोगों की ज़िन्दगी को इसी धरती से विशिष्ट कर दिया जिस प्रकार कि उसने उनकी मौत को भी इसी धरती से विशिष्ट किया है। क्या तुम अल्लाह की किताब और उसके नबी की गवाही को छोड़ते हो और दूसरे कथनों को अपनाते हो, अत्याचारियों के लिए बहुत ही बुरा बदला है। हे लोगो! निस्संदेह अल्लाह ने मुझे इस भेद से सूचित कर दिया है और मुझे उसका ज्ञान दिया है जिसको तुम नहीं जानते। और उसने मुझे तुम्हारी तरफ निर्णायक और न्यायकर्ता बनाकर भेजा है ताकि मैं तुम पर वह कुछ प्रकट करूँ जो तुम पर छुपा हुआ था इसलिए तुम झगड़ो मत और न ही बहस करो और उसके इस कथन पर विचार करो कि

يُعِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ
الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ۔ (आले इमरान- 3/56)

अर्थात हे ईसा निस्संदेह मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ। और तुझे अपनी ओर उठाने वाला हूँ, और मैं तुझे उन लोगों से अलग कर दूँगा जिन्होंने इन्कार किया

था, और मैं तेरे अनुयायियों को क्रयामत तक उन लोगों पर प्रभुत्व (गलबा) देने वाला हूँ जिन्होंने इन्कार किया।) हे बुद्धिमानो! इस आयत को पढ़ो और फिर विचार विमर्श करो और देखो कि अल्लाह ने कैसे मसीह की मृत्यु से आरंभ किया है और फिर सम्पूर्ण घटना क्रम को जो ईसा के बारे में है कैसे स्वभाविक क्रम से वर्णन फरमाया है यहां तक कि उसने **يوم القيمة** (क्रयामत के दिन) पर इस आयत का अंत किया है। और इस क्रम में मसीह के उतरने के बारे में कुछ भी वर्णन नहीं किया और न ही इस बारे में कोई नई बात बताई। और अल्लाह के निकट मसीह का उतरना (वास्तव में) उस (मसीह) के इरादों तथा उसकी तवज्जो का, उस द्योतक (मजहर) पर उतरना है जो मसीह का स्थानापन्न है और गुणों के दृष्टिकोण से उसके निकट हुआ। अतः मसीह ने उसको अपने रंग में रंगीन किया और अपने रूप में ढाल दिया यहां तक कि वह ऐसा द्योतक बन गया जो एकता के अर्थों में उसके अंदर डूब गया और फना ही हो गया और गुणों में असल के बिल्कुल समान हो गया यहां तक कि मसीह की इंद्रियां उसकी इंद्रियों के और मसीह के आचरण-व्यवहार उसके आचरण-व्यवहारों के और मसीह के जोहर उसके जोहरों के और मसीह का स्वभाव उसके स्वभाव के निकटतम हो गया। यहां तक कि वे दोनों एक अस्तित्व के समान हो गए और खुदा तआला के निकट उन दोनों का नाम एक ही हो गया।

और अगर तुझे इच्छा है कि तू इस भेद की गहराई तक पहुंचे और उसके कारणों पर अधिक स्पष्ट तौर पर सूचना पाए तो तू ध्यान से सुन मैं तुझे इस बात के बारे में सन्मार्ग (हिदायत) के भेदों में से वह खोल कर बताता हूँ जो मेरे रब ने मुझे सिखाए हैं और वह ये हैं कि अल्लाह ने इस ज़माने में ईसाइयों का प्रभुत्व और उनकी गुमराही चरम सीमा तक पहुंची हुई पाई और उसने देखा कि वह स्वयं भी गुमराह हुए और बहुत से लोगों को भी गुमराह कर दिया है और उन्होंने अपने शिर्क तथा कुफ्र से धरती को मैला कर दिया है और उसमें बहुत उपद्रव मचाया है और लोगों में अपना झूठ और मनगढ़त बातें और अपने छल कपट को फैला दिया है और गुनाहों तथा तामसिक

इच्छाओं के द्वार खोल दिए हैं, अतः इस महाउपद्रव को देखकर अल्लाह का स्वाभिमान जोश में आया तो स्वाभिमानी खुदा ने अपने कलिमा और अपने नबी (ईसा अलैहिस्सलाम) को उनकी उम्मत के फ़िल्नों से और धरती में उनके फसाद से और उनकी करतूतों से सूचित किया और यह ख़बर देना अल्लाह तआला की सुन्नत में से है और तू अल्लाह तआला की सुन्नत में कभी कोई परिवर्तन और बदलाव नहीं पाएगा। और जब मसीह ने यह सुना कि उनकी उम्मत ने धरती के लोगों को नष्ट कर दिया है और तमाम लोगों को बहकाने का इरादा किया है और अपने रब के समक्ष बहुत बड़ा दुस्साहस किया है तो अपनी उम्मत पर अफसोस करते हुए उनकी बेक्रारी और व्याकुलता बढ़ गई और उनको उस व्यक्ति की तरह दुख हुआ जिसे मुसीबत से ग्रस्त लोगों की चिंता रहती है या उसकी तरह जिस पर पीड़ितों की सहायता करना फ़र्ज हो। अतः आप ने अल्लाह तआला से अपना एक नायब नियुक्त करने की दुआ की और निवेदन किया कि आपका नायब आप की हक़ीक़त से जुड़ा हुआ हो और आपके जोहर के समान हो और आप के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आपके अंगों के स्थानापन्न (क्रायम मुक्राम) हो और आपके इरादों के प्रकटन के लिए द्योतक ठहरे। अतः आपने इस इच्छा के लिए धरती की ओर ध्यान दिया तो खुदा तआला की तक्रदीर ने यह मांग की कि उसे एक ऐसा नायब दिया जाए जिसमें उसकी मिसाली सूरत की छाप हो जिस प्रकार ऊँचे आकाश के तारों के रूप तालाबों के जल में प्रतिबिम्बित होते हैं। अतः मैं वह नायब हूँ जिसे अल्लाह ने अपने स्वाभिमान से ईसाई वर्चस्व के युग में और मसीह की रूह को राहत देने के लिए और अपनी सामान्य सृष्टि पर दया करते हुए और उनकी हालत पर रहम करते हुए मुझे भेजा है। अतः मैं अल्लाह की ओर से आया हूँ ताकि सूली (क्रूस) को तोड़ दूँ जिस की शान को बहुत बुलंद किया गया है और सूअर का वध करूँ ताकि उसके बाद वह कभी जीवित न किया जाए। और मेरे रब ने मुझे निर्धारित समय के लिए चुन लिया है और मेरा रब अपने वादे के विपरीत नहीं करता, न ही वह वादा खिलाफी करता है। और

अल्लाह का वादा था कि वह मसीह को ईसाई विचारधारा के तूल पकड़ने और इसाईयों की गुमराहियों के वर्चस्व के समय भेजेगा।

और हे बुद्धिमानो! यदि तुम हमारे द्वारा कही गई बातों के बारे में संदेह में हो तो अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शब्दों **يَكْسِرُ الصَّلِيبَ** (अर्थात वह सूली को तोड़ेगा) पर विचार करो, और तुम अपनी आँखें खोलो और अपने ज़माने तथा उस क्रौम को जिसने बड़े-बड़े उपद्रव मचाए हैं, ध्यान से देखो फिर अल्लाह के लिए गवाही दो कि क्या सूली तोड़ने वाले के आगमन का समय आ गया है या नहीं? अल्लाह की क्रसम! मैं अपने रब की ओर से भेजा गया हूँ और उस ने मेरे हृदय में मसीह के मन की इच्छाएं तथा विचार डाल दिए हैं, और मैं मसीह की इच्छाओं तथा इरादों के लिए एक पात्र बना हूँ, यहाँ तक कि मेरी जान और मेरी आत्मा उन से भर गई, और मुझे मसीह के अस्तित्व की लड़ी में पिरो दिया गया यहाँ तक कि मेरी आत्मा में उनकी आत्मा का अक्स दिखाई देने लगा और उनके अस्तित्व का प्रेम मेरे हृदय में उंडेला गया और उससे एक बिजली चमकी जिसे मेरी आत्मा ने पूरी तरह से समाहित कर लिया और मैं उसके अस्तित्व से इतनी मजबूती से चिपक गया कि कल्पना से परे है, मानो मैं वही हूँ और मैंने स्वयं को खो दिया है और मसीह ने मेरे दर्पण में प्रकट होकर चेहरा दिखाया है, यहाँ तक कि मैंने समझा कि मेरा दिल, मेरा कलेजा और मेरी नसें और मेरे शरीर का हर हिस्सा उसकी उपस्थिति से भर गया है। और यह कि मेरा अस्तित्व उसके अस्तित्व के जोहर का एक टुकड़ा है और यह मेरे महान रब का काम था और वह मेरे मामले में आरंभ से ही मुझसे ऐसे निकट था जैसे समुद्र से कश्ती। फिर वह और निकट हुआ और नीचे की तरफ झुका, तो वह मुझसे ऐसा हो गया जैसे मुश्कीजे में पानी और उसकी रूह मेरे शरीर में रच बस गई। अतः मैं ऐसी चीज़ बन गया जो नज़र नहीं आती। और मैंने अपने आप को उस चीनी के समान पाया जो पानी में इस प्रकार घुल गई कि दोनों में परस्पर कोई अंतर न रहा। मैंने अपनी रूह की छठी इंद्री से यह पाया कि वह मेरे अस्तित्व के साथ जुड़ गया है और

मैं उसके अस्तित्व में लिपट गया हूँ और हम एक ही चीज़ की तरह हो गए हैं जिस पर एक ही नाम चरितार्थ होता है। मेरा स्वभाव उसके महान स्वभाव में कहीं खो गया। यह वह बात है जिसका हमें हमारे रब की ओर से ज्ञान दिया गया है। अतः जो निर्णय तू करना चाहे कर और अल्लाह से डर और दुनिया की इच्छाओं की ओर न झुक।

इस जगह सारांश यह है कि नबियों का, जो खुदा तआला की ओर जा चुके हैं हर दौर में जब भी अल्लाह तआला उसका अवसर पैदा करे, धरती की ओर उतरना होता है। अतः जब इस उतरने (नुज़ूल) का समय आता है तो अल्लाह तआला उनकी नज़रें दुनिया की ओर फेर देता है। अतः वे उसमें उपद्रव तथा अत्याचार पाते हैं और धरती को देखते हैं कि वह बुराई, झूठ, शिकंसा तथा कुफ्र से भर गई है और जब उनमें से किसी को यह ज्ञान होता है कि यह बुराईयां तथा उपद्रव उसकी उम्मत की उद्दंडता से पैदा हुए हैं तो उसकी रूह अत्यंत व्याकुल हो जाती है और अल्लाह से दुआ करती है कि वह उसे धरती में उतारे ताकि वह उन्हें अपने प्रवचन से सन्मार्ग की ओर लाए तो अल्लाह उसके लिए नायब पैदा कर देता है जो उसके जौहर में उसके समान होता है और उस नायब के अस्तित्व पर उसकी रूह प्रतिबिंब के तौर पर उतरती है और वह नायब उसके नाम और उसके ज्ञान का वारिस हो जाता है फिर वह उसके इरादों के अनुकूल कर्म करता है। अतः यही एलिया के उतरने से जो पहली पुस्तकों में वर्णन आया है, और ईसा के उतरने से और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मेहदी के रूप में आचरण तथा चरित्र के दृष्टिकोण से उतरने से अभिप्राय है। और कोई भी मुहद्दस (मुलहम) ऐसा नहीं है जिसे नबियों के उतरने से थोड़ा या ज़्यादा हिस्सा न मिलता हो। जो भी पक्षपात की गंदगी से स्वयं को अलग कर ले वह इस बारे में संदेह में नहीं पड़ता और वह कुरआन तथा सुन्नत को उसका व्याख्याकार पाता है।

हे प्रियजनो! निस्संदेह अल्लाह तआला की हस्ती एक विचित्र हस्ती है और अल्लाह तआला के कामों में विचित्र भेद हैं उसकी सूक्ष्म बातों तक इंसान

की समझ कदापि नहीं पहुँच सकती और इन्हीं भेदों में से फरिश्तों तथा जिनों का उदाहरण (तमस्सुल) है और इन्हीं में से मसीह के उतरने की वास्तविकता है जिसका समझना सूक्ष्म है और अधिकतर लोगों का उसकी गहराई तक पहुँच पाना कठिन है अतः वे वास्तविकता को नहीं समझ सकते। और मैं उनकी फितरत में क्रोध के सिवा कुछ नहीं देखता और इस रहस्य से वास्तव में पर्दा उठाने वाला अल्लाह तआला का कलाम (अर्थात् कुरआन) है। अतः तुम पवित्र कुरआन की ओर देखो वह कैसे अपनी महान आयतों में नुज़ूल (उतरने) के अर्थ वर्णन करता है और खुदा तआला के कथन- **وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ** (और हमने लोहा उतारा। सूरह हदीद- 57/26) और खुदा तआला के कथन- **قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ** (निस्संदेह हमने तुम पर लिबास उतारा है। सूरह आराफ़-7/27) और खुदा तआला के कथन- **وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ** (उसने तुम्हारे लिए पशु उतारे हैं। अज्जुमर-39/7) और खुदा तआला के कथन- **وَمَا تُنْزِلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ** (और हम उसे एक ज्ञात अंदाजे के अनुसार उतारते हैं। अल हिज़्र- 15/22) खुदा के इन कथनों तथा इसी प्रकार दूसरे कथनों पर विचार करो और तुम जानते हो कि यह चीज़ें आसमान से नहीं उतरतीं बल्कि धरती और मिट्टी की तहों में पैदा होती हैं। अगर तुम अल्लाह तआला की किताब पर विचार करो तो वह तुम पर स्पष्ट कर देगी कि मसीह के उतरने की वास्तविकता भी इन्हीं में से है जिनका हमने यहां वर्णन किया है। अतः तुम हमारी बात पर सोच विचार करो। अल्लाह की किताब में मतभेद होना संभव नहीं है तुम कदापि उसके अध्यात्म ज्ञानों में कोई विरोधाभास नहीं पाओगे और सार गर्भित कथन जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है और जो हमारे तथा हमारी क्रौम के बीच निर्णय करता है वह सूरह अत्तारिक की एक महान आयत है जो उस भेद को याद दिलाती है जिससे दुनियादार लोग लापरवाह हैं अर्थात् खुदा का यह कथन कि :

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ - وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ - إِنَّهُ لَقَوْلُ فَصْلٍ - وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ - إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا - وَأَكِيدُ كَيْدًا - (अत्तारिक-86/12-17)

(क्रसम है मूसलाधार बारिश वाले आसमान की और वनस्पति उगाने

वाली धरती की निस्संदेह वह अवश्य एक निर्णायक किताब है न कि कोई बेहूदा किताब। जरूर वे कोई चाल चलेंगे और मैं भी एक चाल चलूंगा। सूरह अत्तारिक- 86/12-17)

अतः हे प्रियजनो! जान लो कि यह आयत उन भेदों का ठाठें मारता हुआ समुद्र है जिन तक कोई विचार विमर्श करने वाला पहुंच नहीं सका और सृष्टि की समझ उनको छू भी नहीं सकी जबकि मेरे रब ने मुझे इस आयत के भेद समझाए हैं और उन्हें मेरे साथ ही विशिष्ट कर दिया है। इसका विवरण यह है कि अल्लाह तआला ने इस आयत में संकेत किया है कि आसमान प्रभाव डालने वाली शक्तियों का संग्रहीता है और धरती प्रभाव स्वीकार करने वाली शक्तियों की संग्रहीता है और आसमान से धरती की ओर आदेश उतरता है और धरती उस आदेश को स्वीकार करती है तथा इंकार नहीं करती और इसमें इस तरफ इशारा है कि तमाम वह चीजें जो आसमान में हैं अर्थात् सूर्य, चंद्रमा, सितारे, फरिश्ते और पवित्र वजूद अर्थात् रसूलों, नबियों, सिद्दीकों तथा दूसरे मोमिनो की रूहें धरती में पाई जाने वाली चीजों पर ऐसे हिसाब से प्रभाव डालती हैं जिनको दृष्टिगत रखने का खुदा की हिकमत मांग करती है। अतः आसमान धरती की ओर उतरने और बार-बार आने की असीमित प्रकारों के साथ प्रभाव डालता है और धरती उन प्रभावों को अनगिनत और बेहिसाब प्रकारों में फट कर और अपने अंदर समो कर स्वीकार कर लेती है। अतः इस रजअ और सदअ (प्रभाव डालना और प्रभाव स्वीकार करना) के विभिन्न परिणामों में से वह चीजें हैं जो धरती की सतहों में पैदा होती हैं जैसे चांदी, सोना, लोहा, बहुमूल्य जवाहिरात तथा अन्य चीजें और इन्हीं में से खेतियां, वृक्ष, पेड़-पौधे, फल तथा स्रोत और नदियां भी हैं, और हर वह चीज भी है जो धरती के फटने से बाहर निकलती है और ऊंट, गधे, घोड़े, धरती पर रेंगने वाले समस्त जीव और हवा में उड़ने वाले समस्त पक्षी हैं और इन्हीं में से इंसान भी है जिसे सर्वश्रेष्ठ बना कर पैदा किया गया है और समस्त रेंगने तथा चलने वाले जीवों पर उसे श्रेष्ठता प्रदान की गई है। और इन्हीं में से वह्यी, नबूव्वत, रिसालत, बुद्धि तथा विवेक, शालीनता तथा कुलीनता, मूर्खता तथा

अज्ञानता, मूढ़ता तथा नीचता और निर्लज्जता है। और इसकी विभिन्न प्रकारों में से ही नबियों तथा रसूलों का प्रत्येक उस व्यक्ति पर प्रतिबिंब के रूप में उतरना है जो उनके स्वभाव से मेल खाता हो और उनके जैसे गुण अपने अंदर रखता हो, साथ ही साथ उनके चरित्र, ईमानदारी और पवित्रता में उनसे समानता रखता हो। और इससे पता चलता है कि सितारों की प्रभावशीलता सिद्ध हैं जिनकी गवाही कुरआनी आयतें देती हैं और केवल एक अज्ञानी और सुस्त दिमाग ही उन पर संदेह कर सकता है जो कुरआन पर विचार नहीं करता और एक अंधे व्यक्ति की तरह बहस करता है। और यह 'रजअ' तथा 'सदअ' का सिलसिला आकाशों और धरती में उस दिन से चल रहा है जब से अल्लाह ने उन्हें पैदा किया और कहा:

اٰتِيَا طَوْعًا وَّ كَرْهًا ۚ قَالَتَا اَتَيْنَا طَائِعِيْنَ

(हा मीम सजदह- 41/12)

(अर्थात हे आकाश और पृथ्वी!) तुम दोनों स्वेच्छा से या ज़बरदस्ती चले आओ। उन दोनों ने कहा: हम स्वेच्छा से हाज़िर हैं।) तो आकाश पृथ्वी की ओर इस प्रकार आकर्षित हुआ जैसे नर-मादा की ओर। और इसीलिए खुदा ने आकाश के लिए "रजअ" और पृथ्वी के लिए "सदअ" शब्द चुना है यह संकेत करने के लिए कि निश्चित रूप से ये दोनों हमेशा इकट्ठे होते रहते हैं जैसे नर-मादा इकट्ठे होते हैं। और उनमें से कोई एक-दूसरे को नकार नहीं सकता और न ही एक दूसरे की अवज्ञा कर सकता है। और आकाशीय प्रभाव निरंतर उतरते रहते हैं और पृथ्वी उन्हें बार-बार स्वीकार करती है। और यह दोनों का सिलसिला एक क्षण के लिए भी नहीं टूटता। और यदि ऐसा न हो तो धरती और जो कुछ उसमें है निश्चित ही नष्ट हो जाए। और अल्लाह तआला इस सूरह के आरंभ में फरमाता है : اِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ (अर्थात निस्संदेह वह उसके वापस ले जाने पर समर्थ है। सूरह अत्तारिक- 86/9) और उसके बाद फरमाया है: وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ (अर्थात क्रसम है मूसलाधार बारिश वाले आसमान की। सूरह अत्तारिक- 86/12) अतः तुझे क्या मालूम कि अल्लाह ने इन 'रजअ' (अर्थात लौटने के शब्दों) को

इकट्ठा वर्णन करके किस ओर संकेत किया है। तो जान ले कि इसमें इस ओर संकेत है कि इंसान का मरने के बाद पुनः जी उठना अल्लाह की कुदरत में से है जैसा कि वह पवित्र लोगों की रूहों को अक्स के तौर पर बार-बार लौटने वाले आसमान से इस धरती की ओर लौटाता है जो बार-बार फटने वाली और तमाम ज़िन्दगी पाने वालों की जन्मस्थली है। यह एक महान और सूक्ष्म बिंदु है तू उसे मज़बूती से पकड़ ले। अल्लाह तआला तुझे उत्तम सन्मार्ग प्रदान करे। यह उतरने (नुज़ूल) की हक़ीक़त है जिसमें वह मतभेद करते हैं। यह उसकी ओर से एक आदेश है ताकि वह इस मामले को निपटा दे जिसका उसने निर्णय किया और मुक़द्दर कर दिया। और तुम जान लो कि अल्लाह तआला परोक्ष की ख़बरों को वर्णन करने में विभिन्न ढंग अपनाता है कभी तो ऐसे शब्दों में बताता है कि जो वांछित वास्तविकताओं की व्याख्या करने वाले होते हैं और उनके घाट तथा उनकी चरागाह दिखाते हैं और उसे प्रकट कर देते हैं जो उसका उद्देश्य होता है। और कभी-कभी वह लाक्षणिकताओं तथा रूपकों की शैली में बोलता है ताकि मामला गुप्त रहे और इस तरह से लोगों की परीक्षा ले। और कभी-कभी अल्लाह की आदत और उसकी सुन्नत इस प्रकार भी जारी हुई है कि वह ऐसी घटनाओं को, जिनका छुपाना युक्ति संगत हो, गुप्त तथा परदे में रखता है। वह ऐसी इच्छाओं को पैदा करता है जो मतों में विभिन्न मार्गों की ओर ले जाती हैं और जब वह किसी घटने वाली घटना की परिस्थितियों को गुप्त रखना चाहता है तो ऐसे अवसरों पर वह किसी बड़ी घटना को छोटा और निम्न स्तर का दिखाता है और एक छोटी और निम्न स्तर की घटना को बड़ा और दुर्लभ करके दिखाता है और खुशख़बरी की घटना को डरावना और डरावनी घटना को खुशख़बरी का रूप दे देता है। अतः यह चार प्रकार उन घटनाओं की हैं जो अल्लाह की सुन्नतों में पाई जाती हैं जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि जहां तक महान और बड़ी घटना का संबंध है जिसको अल्लाह छोटा और निम्न स्तर का बना कर दिखाता है तो उसका उदाहरण पवित्र क़ुरआन में (जंगे) बदर की घटना है, उस व्यक्ति के लिए जो विचार विमर्श करता है। निस्संदेह अल्लाह तआला ने अपने रसूल

को स्वप्न में (जंगे) बदर के अवसर पर इस्लाम के शत्रुओं को कम संख्या में दिखाया था ताकि मुसलमानों के दिलों से भय दूर हो और वह अपने उस इरादे को पूरा करे जिसका वह निर्णय कर चुका था।

शेष रही वह घटना जिसे अल्लाह बड़ा और दुर्लभ बनाकर दिखाना चाहता है उसका एक उदाहरण कुरआन में फरिश्तों की मदद की खुशखबरी है ताकि ईमान वालों के दिल मजबूत हों और उन्हें इस जगह पर कोई डर न हो। तो निश्चित रूप से अल्लाह सर्वशक्तिमान ने पवित्र कुरआन में ईमान लाने वालों को एक वादा दिया और खुशखबरी दी कि वह उनकी पाँच हज़ार स्वर्गदूतों (फरिश्तों) के साथ मदद करेगा। और उस ने इस बड़ी संख्या को उनके लिये शुभसमाचार स्वरूप बनाया, क्योंकि स्वर्गदूतों में से एक ही अपने रब की आज्ञा से पृथ्वी को तहस नहस करने की शक्ति रखता है। तो पाँच हज़ार (फरिश्तों) की नहीं बल्कि पाँच की भी ज़रूरत नहीं थी, लेकिन अल्लाह उन्हें एक बड़ी सहायता दिखाना चाहता था। तो उसने एक ऐसा शब्द अपनाया, जिससे बज़ाहिर सहायकों की प्रचुरता समझी जाती है और निहितार्थ की दृष्टि से उसने जो चाहा इरादा किया। फिर उसने बद्र की जीत के बाद ईमानवालों को सूचित किया कि फरिश्तों की संख्या उनके स्पष्ट शब्दों पर निर्भर नहीं थी, बल्कि इसका एक और अर्थ था जिसकी वास्तविकता को केवल अल्लाह ही अपने सर्वोच्च ज्ञान से जानता है। और उसने ऐसा इसलिए किया ताकि उनके दिल इस खुशखबरी से संतुष्ट हो जाएं और ताकि वह उनकी सुधारणा और आशा को बढ़ाए। और शेष रही खुशखबरी देने वाली वह घटना जिसे अल्लाह ने चेतावनी के रूप में दिखाने का इरादा किया तो उसका उदाहरण कुरआन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वृत्तांत में है कि जब अल्लाह तआला ने चाहा कि उन की ओर दया पूर्वक ध्यान दे और उन्हें अपने सानिध्य में उन्नति दे और उन्हें अपना प्रिय मित्र बनाए तो उन्हें रूपक (तमस्सुल) के तौर पर स्वप्न में दिखाया गया कि वह अल्लाह तआला का सानिध्य प्राप्त करने के लिए मानो अपने प्यारे बेटे की बलि दे रहे हैं और उसका अर्थ केवल मेंडा कुर्बान करना था न कि बेटे को। परन्तु इब्राहीम

अलैहिस्सलाम (स्वप्न के) व्यवहारिक रूप को त्यागने से डरे और शीघ्र आदेश का पालन करने के लिए खड़े हुए और अपने बेटे की बलि देने का प्रयत्न किया। और यह घटना जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सपने में देखी थी व्यावहारिकता पर आधारित न थी क्योंकि यदि ऐसा होता तो अनिवार्य था कि इब्राहीम अपने बेटे की बलि देने पर समर्थ हो पाते जैसा कि उन्होंने ने स्वप्न में देखा था परन्तु इब्राहीम अलैहिस्सलाम उसकी बलि देने पर समर्थ न हो सके। अतः सिद्ध हुआ कि इस स्वप्न का कुछ और ही अर्थ था जिसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम न समझ सके। और एक बंदा भला उस बात को कैसे समझ सकता है जिसे अल्लाह ने उसको समझाने का इरादा न किया हो बल्कि अल्लाह ने उसे गुप्त रखना चाहा हो। और तू जानता है कि नबियों की वह्यी में स्वप्न का झूठा होना वर्जित है। अतः जान ले कि इब्राहीम के स्वप्न में बेटे की बलि देना केवल एक लाक्षणिक तथा रूपक के तौर पर था ताकि अल्लाह आप को अपनी ओर से रहमत के तौर पर भयभीत करे, और लोगों को इब्राहीम की निष्ठा और अल्लाह के प्रति उसकी आज्ञाकारिता दिखाए और इब्राहीम की सच्चाई और वफादारी और अपने खुदा की आज्ञाकारिता की परीक्षा ले, तो इब्राहीम ने अविलंब अपने प्यारे बेटे को माथे के बल लिटा दिया ताकि उसकी बलि दे। हे मेरे रब! तू हम पर दया कर, अपने पैगंबर स.अ.व. के माध्यम से, और इब्राहीम के माध्यम से जिसने वफादारी की और तेरा आशीर्वाद देखा और भलाई तथा सफलता पाई। और यह घटना दज्जाल की घटना से समानता रखती है क्योंकि उसे भयानक बनाया गया है और उसमें तीव्रता रखी गई है उस में आतंक भर दिया गया है और इस मामले को चरम तक पहुंचाया गया है हालांकि यह केवल दज्जाली इरादों की एक सतत श्रृंखला है। और उसमें न खुदाई की सुगन्ध है, न खुदाई गुणों का कोई अंश है। और यह केवल प्रलोभनों और भ्रमों और पथभ्रष्टता की ओर बुलाने की एक श्रृंखला है जो निःस्पृह खुदा की ओर से एक परीक्षा स्वरूप हैं। और यह कैसे संभव हो सकता है कि अल्लाह तआला का कोई भागीदार पैदा हो? और वह आकाशों और पृथ्वी के राज्य पर राज करता हो और उसके साथ स्वर्ग तथा नर्क हो, और

पृथ्वी के सभी खजाने हों और आसमानों के बादल और समुद्र का पानी और आकाश का सूर्य उसके आदेश के अधीन हों। वह जीवित भी करता हो और मारता भी हो। वह (अल्लाह) पवित्र है, निर्दोष है, उसका कोई भागीदार नहीं। वह पवित्र है और बुलंद शान वाला है। बात ऐसी नहीं है बल्कि यह (दज्जाल का वर्णन) एक सूक्ष्म रूपक है जो एक क्रौम के अस्तित्व के बारे में खबर देता है जो धरती में प्रभुत्व पाएगी और हर एक बुलंदी से दौड़ी चली आएगी और यह इसाई लोग हैं जो छल-कपट तथा कलाओं के विचित्र निर्माण में दूसरों से आगे बढ़ गए हैं और उन्होंने धरती को पहले से बहुत अधिक आबाद किया है। और तुम उनके कर्मों में असामान्य विशेषताएं देखते हो मानो कि वे जादू करते हैं। उनके आविष्कारों तथा नायाब निर्माणों से लोग आश्चर्य में पड़ गए हैं और उन्होंने अपने कामों तथा यंत्रों से बहुत लोगों को गुमराह कर दिया है उनके छल कपट धरती पर फैल गए हैं और उन्होंने समस्त धरती को अपवित्र कर दिया है और असत्य को सत्य के साथ मिला दिया है। वे लोगों को शिर्क, बेक़ैदी और नास्तिकता की ओर बुलाते हैं और वे (निरंतर) ऐसा ही करते रहते हैं। यह किस प्रकार संभव है कि दज्जाल यहूदियों की क्रौम में से पैदा हो हालांकि उन पर क्रयामत के दिन तक अपमान और दरिद्रता डाल दी गई है अतः उनको कभी भी हुक्मत नहीं मिलेगी और न ही ग़ालिब आएंगे। क्या तुम अल्लाह का वादा नहीं पढ़ते अर्थात् उसका कथन :

وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا

(आले इमरान- 3/56)

अर्थात् : और मैं तेरे अनुयायियों को उन लोगों पर प्रभुत्व (ग़लबा) देने वाला हूँ जिन्होंने इन्कार किया।) क्या तुम दूरबीनी से काम नहीं लेते? क्या तुम पवित्र कुरआन पर विचार नहीं करते कि किस प्रकार उसने अल्लाह के अतिरिक्त समस्त उपास्यों को हमारे क़दमों के नीचे डाल दिया है और हमें क्रयामत तक एकेश्वरवाद के बुलंद होने की खुशख़बरी दी है। अतः तुम्हारे दिल कैसे टेढ़े हो गए और तुम इन बातों पर ईमान लाते हो जो कुरआन की विरोधी हैं और तुम शिर्क

करते हो। क्या अल्लाह तआला आखिरी ज़माने में किसी को अपना भागीदार बना लेगा चाहे गिनती के कुछ दिन ही क्यों न हों? सावधान तुम जो निर्णय करते हो बहुत बुरा है। और शेष रही अल्लाह की प्रसिद्ध जारी सुन्नत के अनुसार घटना, जिसे अल्लाह ने अछूते और दुर्लभ रूप में दिखाना चाहा है तो उसका उदाहरण कुरआन करीम में फिरौन के स्वप्न वाली घटना है जब उसने कहा:

إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عِجَافٍ وَسَبْعَ سُثُلٍ خُضْرٍ
وَأُخْرَى يُسْتِطَاعُ فَلَانُهَا الْمَلَأَ أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِن كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ
(सूरह यूसुफ़-12/44)

(अर्थात मैं सात मोटी गाय देखता हूँ जिन्हें 7 दुबली पतली गाय खा रही हैं और सात हरी भरी बालियाँ और कुछ दूसरी सूखी हुई थीं (देखता हूँ) हे सरदार! मुझे स्वप्न के बारे में अर्थ समझाओ अगर तुम सपनों के अर्थ कर सकते हो।) और इसी तरह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का स्वप्न है कि :

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ۔ (सूरह यूसुफ़-12/5)

अर्थात- (याद करो) जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा : हे मेरे पिता! निश्चित रूप से मैंने स्वप्न में 11 नक्षत्र तथा सूर्य और चंद्रमा को देखा है (और मैंने उन्हें अपने लिए सजदा करते हुए देखा है।) अतः यह वह उदाहरण हैं जो हमारे और हमारी क्रौम के बीच उस मामले में जिसमें वे मतभेद करते हैं निर्णायक तथा पर्याप्त हैं और उनके साथ मसीह के उतरने की घटना समानता रखती है जिसको अल्लाह ने छुपाए रखा जैसा कि उसने इन घटनाओं को रूपकों के द्वारा छुपाए रखा है अतः यदि तुम विवेक रखते हो तो समझ जाओ। अल्लाह तआला की सुन्नत में यह नहीं है कि वह हर समय और हर युग में अपनी सूचनाओं से पर्दा उठा दे बल्कि कुछ युगों में वह अपने बंदों की परीक्षा लेता है और अपनी सूचनाओं को छुपा देता है और भेदों की ओर केवल संकेत करता है जबकि वे उनकी समझ नहीं रखते। और जहां तक इस अछूती और दुर्लभ घटना का संबंध है

जिसे अल्लाह तआला ने जाने पहचाने रंग में दिखाना चाहा तो कुरआन में उसका उदाहरण वह है जिसको अल्लाह ने स्वर्ग की नेमतों, उसकी नेहरों, उसके दूध, उसके वृक्षों, उसके फलों, परिंदों के मांस के बारे में सूचना दी है जिन्हें सब लोग जानते हैं और उनको पाने की इच्छा रखते हैं। वह जिसे चाहता है छुपाए रखता है और जिसे चाहता है प्रकट करता है और उसके हर कार्य में युक्तियाँ, हिकमतें और परीक्षाएं होती हैं, लेकिन अधिकांश लोग नहीं जानते हैं। वे शरीयत के बाहरी रूप और उसकी खाल को जानते हैं और शरीयत के मूल से अनभिज्ञ हैं, और जब उनके लिए एक रहस्य प्रकट किया जाता है तो उनकी आँखें उसे तुच्छ समझती हैं और बदज़नी करते हैं और इन्कार कर देते हैं और कहते हैं: उम्मत कैसे गलती में पड़ गई? और हम कैसे मान सकते हैं कि वे सभी गलत हैं और तुम सही हो।

हाय अफ़सोस लोगों पर वे क्यों नहीं जानते कि अल्लाह तआला अपने मामलों पर पूर्ण नियंत्रण रखता है? इसलिए जब वह कुछ छुपाने का इरादा रखता है तो समझने वाले भी उसे नहीं समझ सकते। और वे कुरआन में उसकी सुन्नत को पढ़ते हैं और फिर भी लापरवाही करते हैं। क्या वे नहीं जानते कि कभी-कभी अल्लाह नबियों में से करीबी लोगों से भी किसी बात को छुपाता है और वे इस छुपाने से परीक्षा में पड़ जाते हैं और कोई भी उम्मत उन बातों को समझने में नबियों से आगे नहीं बढ़ सकती, और अल्लाह ऐसा नहीं है कि वह किसी क्रौम को परीक्षा लिए बिना छोड़ दे।

أَحْسَبِ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ

(अल अनकबूत- 29/3)

(अर्थात : क्या लोग सोचते हैं कि उन्हें केवल यह कहने पर कि "हम ईमान ले आए" छोड़ दिया जाएगा और उनकी परीक्षा नहीं ली जाएगी?)

बेशक अल्लाह हर देश को अपनी गैब (परोक्ष) की खबरों से परखता है और उमर फ़ारूक और उनके जैसे और लोग भी ऐसी खबरों से असमंजस में पड़ गए थे, क्या तुम उनसे बढ़कर हो? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की परीक्षा से नहीं डरते और न तुम्हारे अन्दर भय पैदा होता है? संभव है कि

मसीह के आने की भविष्यवाणी तुम्हारे लिए एक परीक्षा हो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम संयम धारण नहीं करते हैं? क्या तुम्हारी समझ पहले लोगों से अधिक सही है या अल्लाह की परीक्षाओं से तुम्हारे लिए मुक्ति है? तुम्हें क्या हुआ है कि तुम विचार नहीं करते? बेशक पहले भी परीक्षाएं आ चुकी हैं। धन्य हैं वे लोग जो अपनी आँखें खोलते हैं और सबक लेते हैं, और वे (विरोध करने वाले) कहते हैं, हम इस मसीह पर क्यों ईमान लाएं? क्योंकि हमें यह शुभ समाचार दिया गया है कि वह दमिश्क की मीनार के पास उतरेगा और दज्जाल को मार डालेगा और शत्रुओं से लड़ेगा और वे पराजित हो जाएंगे। और इस प्रकार वे निर्बल तर्क देते हैं और निश्चय उनकी समझ भटक गई है, अतः वे ठोकर खा गए हैं। क्या वे नहीं जानते कि मसीह मौऊद युद्धों को समाप्त कर देगा? क्या वे सही बुखारी नहीं पढ़ते हैं या भूल गए हैं? और उन्हें यह खबर कहाँ से मिली कि मसीह सीरिया की राजधानी दमिश्क में उतरेगा, और वे किस दलील पर विश्वास करते हैं?

क्या अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उनके साथ दमिश्क गए थे? और आप ने उन्हें मीनार और उतरने का स्थान दिखाया था या आप ने उन्हें कागज़ के एक टुकड़े पर इस (मीनार) की तस्वीर दिखाई थी और वे उसे अच्छी तरह पहचानते हैं और उससे अनजान नहीं? या वह (दमिश्क) एक ऐसा शहर है जो हरमैन (मक्का मदीना) से भी अधिक श्रेष्ठ है और जो अन्य शहरों पर श्रेष्ठता रखता है और जिसमें पवित्र लोग रहते हैं। पैगंबर-ए-खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में जो दमिश्क शब्द वर्णन हुआ है वह उन्हें धोखे में न डाले, क्योंकि इसका बहुत व्यापक अर्थ है जिसके विभिन्न अर्थ हैं जो कि विद्वान लोगों को ज्ञात हैं। तो इनमें से एक अर्थ यह है कि यह एक शहर का नाम है और एक यह है कि यह किनआनी वंश की एक क्रौम के सरदार का नाम है और एक अर्थ ऊंटनी और ऊंट हैं। और एक अर्थ ऐसे व्यक्ति के हैं जो अपने हाथों से जल्दी काम करता है। और इसके कई अन्य अर्थ भी हैं तो इस अर्थ में ऐसी विशेष बात क्या है जिस पर हठ करते हैं और अन्य अर्थों से मुंह

फेर लेते हैं? और इसी तरह हदीस में जो **المنارة** (अल-मनारह) शब्द वर्णन हुआ है उसका अर्थ प्रकाश का स्थान है और कभी-कभी यह शब्द ऐसे ऊंचे चिन्ह पर भी लागू होता है जो रास्ता दिखाता है। तो यह इस बात का एक संकेत है कि आने वाले मसीह को ऐसे प्रकाशों से पहचाना जाएगा जो उसके दावे से पूर्व प्रकट होंगे। अतः वह उस मसीह के लिए निशान के तौर पर होंगे जिससे लोग मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे। इसका उदाहरण पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला का यह कथन है कि :

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا (सूरह अहज़ाब-33/47)

(अर्थात और अल्लाह की ओर से उसके आदेश से बुलाने वाले और एक प्रकाशमान कर देने वाले सूर्य के तौर पर। अनुवादक)

जिस प्रकार दीपक अपने प्रकाश से पहचाना जाता है उसी प्रकार मसीह भी अपने मीनार से पहचाना जाएगा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में दमिश्क के पूर्वी ओर किसी मीनारे का अस्तित्व सिद्ध नहीं और न ही आपने इस ओर संकेत किया है, अगर ऐसा होता तब तो झूठे लोग संदेह में पड़ जाते। बल्कि यह सुन्नत से सिद्ध रूपक हैं जिन्हें ज्ञानी लोग पहचानते हैं और इस बारे में केवल दुष्ट लोग ही वाद विवाद करते हैं। क्या वह अल्लाह की सुन्नतों पर विचार नहीं करते या क्या उनके पास कोई नई चीज़ आई है जो पहले न आई थी इसलिए वह उससे अनजान हैं? दमिश्क शहर और उसके मीनार की विशेषता में क्या भेद है? अगर तुम अल्लाह के भेदों का अनुसरण करते हो और अधार्मिकता नहीं करते तो हमें खुल कर बताओ। क्या तुम इस रूपक से आश्चर्यचकित हो और जानते नहीं कि रूपक नबियों के कथन की शैली हैं। और वे इन शैलियों में बात करते हैं। तुम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कथन को याद करो। मेरा अभिप्राय आपके कथन : **غَيْرَ عَتَبَةٍ بِأَيْدِكَ** (अर्थात तू अपने द्वार की चौखट बदल दे) से है। फिर इस्माइल अलैहिस्सलाम की ओर देखो कि वह अपने बाप के संकेत से क्या समझे, क्या वह **عَتَبَةٍ** से चौखट समझे या अपनी पत्नी? अतः हे मुसलमानो! विचार करो। और उमर फारूक रज़ि अल्लाह अन्हो

की ओर देखो कि उन्होंने किस प्रकार द्वार के तोड़े जाने से अभिप्राय अपनी मौत समझी न कि असल में द्वार का टूटना। और यदि चाहो तो सही बुखारी में हुजैफा रजि अल्लाह की हदीस पढ़ लो ताकि तुम समझ पाओ। वह कहते हैं कि मसीह मौऊद केवल दज्जाल और याजूज-माजूज के प्रकटन के समय आएगा परन्तु हम उनमें से किसी को निकलते नहीं देख रहे तो यह किस प्रकार जायज़ है कि मसीह पहले आ जाए और वे (अर्थात् दज्जाल इत्यादि) बाद में आएँ? इसका उत्तर यह है कि स्पष्ट हो अल्लाह तआला तुम्हें सन्मार्ग नसीब करे कि निस्संदेह यह दो नाम एक ऐसी क्रौम के हैं जिसके समूह हमारे इस युग में जो कि अंतिम युग है हर ओर फैल गए हैं। जबकि एक गुण उनमें परस्पर एक जैसा है और वह रूस तथा बरतानिया की क्रौमों और उनके भाई बंध हैं और उनमें दज्जाल पादरियों की फौज तथा इंजील के मुनादी करने वाले हैं जो सत्य को असत्य के साथ खलत-मलत करते हैं और छल-कपट से काम लेते हैं और हिंदुस्तान ने उनके लिए ठिकाना उपलब्ध कर दिया। और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात सत्य सिद्ध हुई है कि वे पूर्वी देशों से निकलेंगे अतः वे हिंदुस्तान के पूर्व से निकलने वाले हैं। और यदि दज्जाल हमारे कथन के अतिरिक्त कोई और होता और उसी प्रकार याजूज माजूज की क्रौम उस क्रौम के अतिरिक्त कोई और होती तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन में मतभेद तथा विरोधाभास अनिवार्य ठहरता है और अल्लाह की क्रसम हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन इससे पूर्णतः पवित्र है परन्तु तुम लोग स्वयं सत्य से बहुत दूर जा पड़े हो। क्या तुम अल्लाह की किताब के बाद सबसे सही किताब (बुखारी) में नहीं पढ़ते कि मसीह सूली को तोड़ेगा? तो इसमें इस ओर एक स्पष्ट संकेत है कि मसीह ऐसी क्रौम के समय में आएगा जो सूली का सम्मान करती होगी क्या तुम समझते नहीं? और यह भी स्पष्ट हो चुका है कि ये लोग सत्य के शत्रु हैं और अपनी इच्छाओं में बहक रहे हैं और यह भी स्पष्ट हो चुका है कि वे धरती के पूर्वी तथा पश्चिमी इलाकों के मालिक बन गए हैं और वे प्रत्येक ऊँचे स्थान से दौड़े आ रहे हैं। और धर्म तथा शरीयत में उनकी बेईमानियाँ और

उनके हर एक काम में जो वह करते हैं उनके उपद्रव प्रकट हो चुके हैं क्या तुम अपने दिमागी काल्पनिक दज्जाल के लिए इस धरती पर कदम रखने की गुंजाइश भी देखते हो, जब तक कि यह लोग इसमें मौजूद हैं? आश्चर्य है तुम्हारी बुद्धि पर कि तुम इस ईसाई क्रौम के विद्वानों के अतिरिक्त कहां से दज्जाल गढ़ रहे हो और तुम किस धरती पर उसको हावी करोगे? क्या तुम जानते नहीं कि मसीह केवल सूली के पुजारियों के समय में आएगा? अतः तुम कहां बहकाए जाते हो? क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने इन क्रौमों को धरती के अधिकतर भागों पर प्रभुत्व प्रदान किया है और उन पर बादलों से मूसलाधार वर्षा की है और उनको हर प्रकार के संसाधन प्रदान किए हैं और उनकी हर काम में सहायता की है? तो तुम उन लोगों की उपस्थिति में किसी और को कैसे अनुमान कर सकते हो कि वह सम्पूर्ण पृथ्वी का मालिक होगा? हाय अफ़सोस तुम्हारी बुद्धि पर! तुम जाग रहे हो या सोए हुए हो? क्या तुम भूल गए हो कि तुम ने इक्रार किया था कि मसीह सूली को तोड़ने के लिए आएगा? अतः जब संपूर्ण धरती पर दज्जाल ही का प्रभुत्व (गलबा) होगा तो फिर उसकी उपस्थिति में सूली और उसके बादशाहों का किस प्रकार प्रभाव होगा? क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? हे लापरवाहो! क्या तुम जानते नहीं कि यह दोनों बातें आपस में विपरीत हैं? तो यह एक ही समय में कैसे इकट्ठी हो सकती हैं? और अगर तुम यह विचार करते हो कि दज्जाल मक्का मदीना के अतिरिक्त अल्लाह की शेष समस्त धरती पर अपना प्रभुत्व बना लेगा तो सूली के प्रभुत्व और सूली वालों के लिए कौन सी जगह शेष रह जाएगी? क्या तुम इसको सिद्ध कर सकते हो या इस पर कोई गवाह प्रस्तुत कर सकते हो? तुम्हें क्या हुआ है कि तुम इस विरोधाभास को नहीं समझते हालांकि तुम्हारे कुछ कथन कुछ अन्य कथनों के विपरीत हैं। क्या तुमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों में धोखा किया है फिर भी तुम अपनी सच्चाई पर क़समें खाते हो और उन लोगों को गुमराह करते हो जो दिल, बुद्धि तथा विवेक में कमज़ोर हैं। और तुम अपने झूठ को उनकी नज़रों में सुंदर बना कर दिखाते हो और अल्लाह तथा उसके रसूल की बातों में कमी

बेशी करते हो। चाहे तुम कितना भी चाहो और एक दूसरे के सहायक भी बन जाओ तब भी तुम इन विरोधाभासों को कदापि दूर नहीं कर सकते और न ही उन बातों में परस्पर एकमत हो सकते हो। अतः तुम जानते बूझते हुए झूठ की ओर बिल्कुल न झुको और यदि तुम सत्य को स्वीकार करो और संयम धारण करो तो अल्लाह तआला निस्संदेह तुम्हारी ओर दयापूर्वक ध्यान देगा और जो बीत चुका उसे क्षमा कर देगा। अतः चाहिए कि अहले हदीस इस बारे में विचार विमर्श करें और जो कोई सही मार्ग दिखाए जाने के बाद भी उसको नहीं अपनाता तो ऐसे लोग ही दुराचारी हैं। हे लोगो! अंतिम युग के लक्षण प्रकट हो चुके हैं तो फिर क्यों मसीह के आगमन में संदेह करते हो। आओ ताकि मैं तुमको उनमें से कुछ पढ़कर सुनाऊं शायद तुम सन्मार्ग प्राप्त करो। और उनमें से एक निशानी यह है कि उपद्रव तथा गुमराहियों की आग ने पूरब और पश्चिम तक लोगों को इकट्ठा कर दिया है और इसमें संयमी क्रौम के लिए एक सीख है। और इब्लीस लोगों के आगे से भी और उनके पीछे से भी और उनके दाएं-बाएं से भी आ गया है और वे अपने कर्मों के कारण नष्ट किए गए हैं। और अल्लाह की परीक्षा से वही बचा है जिस पर उसने दया की है। और उनके तथा उनके ईमान के बीच गुमराहियों की लहर आ गई है अतः वह डुबोए जाने वाले हैं। उनमें से बहुत से मुर्तद होने के बाद कुफ़र तथा शत्रुता में बढ़ गए हैं और वे अपने झूठे आरोपों में हद से बढ़ रहे हैं। उन्होंने भरसक प्रयत्न किया है कि वे इस्लाम के प्रकाश को बुझा दें परन्तु वे उसे हानि नहीं पहुंचा सके और न ही उस पर विजयी हो सके। और उन्होंने अल्लाह की किताब को छुआ तो उसे प्रकाशमान दलीलों तथा प्रकाश से भरा हुआ पाया और असफल होकर वापस लौटे। निस्संदेह यह उन लोगों की नज़र में बहुत बड़ी बात है जो अत्याचार पूर्वक बहस करते हैं परन्तु अत्याचारी लोग अल्लाह से नहीं डरते और न ही वे अपनी दुनिया को छोड़ते हैं और न संयम धारण करते हैं। अतः अल्लाह तआला उनके दिलों के नूर को और उनकी आंखों की नज़र को उनके दुराचार के कारण ले गया और उनको अंधेरों में छोड़ दिया फलस्वरूप वे देखते नहीं। उनके दिल पर्दों में हैं और

उनकी आंखें उन दर्पणों के समान हैं जिनमें कुछ भी सफ़ाई शेष न रही हो। वे केवल खाना पीना ही जानते हैं और उन्होंने एक ख़ुदा को छोड़ दिया और (स्वयं निर्मित) ख़ुदा के भागीदारों पर जमकर बैठे हुए हैं। उनका उपद्रव बहुत बढ़ गया है और मुसलमानों पर उनके अत्याचार बढ़ गए हैं और दिन प्रतिदिन उनका वृक्ष उन्नति करता जा रहा है और उनका विकास तथा फलना फूलना प्रतिदिन प्रगति पर है। वे हर इलाके में दिखाई दे रहे हैं और अपनी दुनिया में बढ़ते चले जा रहे हैं और तू देखता है कि इस्लाम एक सूखे वृक्ष के समान हो गया है जिस पर कोई फल नहीं लगता और उसकी मुर्गी ने अंडे देने बंद कर दिए हैं और कोई अंडा शेष नहीं रहा। अतः चाहिए कि रोने वाले रोएं। अमानतदारी तथा उसके अवसर समाप्त हो चुके हैं, दियानतदारी का निशान तक मिटा दिया गया है और उसकी लाश उठा दी गई है, ज्ञान को जीवित ही दफन कर दिया गया है और ज्ञानी लोग मर गए हैं शेष जो ज्ञानी (उलमा) रह गए हैं वे अजगरों के समान हैं जो धर्म और ईमान को जानते ही नहीं और इच्छाओं की ओर लपकते जाते हैं। और जो स्वयं को मुसलमान कहते हैं उन में से अधिकतर अपने रब की अवज्ञा करते हैं, शराब पीते हैं, व्यभिचार करते हैं, लोगों पर अत्याचार करते हैं और गवाहियों में झूठ बोलते हैं, आज्ञापालन से इन्कार करते हैं और दान-दक्षिणा करने के लिए हाथ नहीं बढ़ाते, बल्कि बुराई की ओर हाथ बढ़ाते हैं। और ये सभी विपत्तियाँ उन पर, पश्चिमी विज्ञान के उनके दिलों में घर कर लेने और उनके देश में ईसाई धर्म की अनर्गल स्वतंत्रता के बाद, पड़ी हैं। इसलिए उन्हें उनकी ओर ही इकट्ठा किया जा रहा है। यह वही ख़बर है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट तौर पर समझाया था और तुम उसे 'सहीह बुखारी' में पढ़ते या सुनते हो। तो तुम पाश्चात्य विज्ञान के प्रलोभनों को देखो कि किस प्रकार वे प्रलोभन (फ़ितने) युवाओं को पाश्चात्य सभ्यता की ओर ले जा रहे हैं। हे ईमानवालो! देखो कैसे अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी को सच कर दिखाया। और जान लो कि आग से अभिप्राय प्रलोभन की आग है जो पश्चिम से आई और उसने संयम के वस्त्र

जला दिए। कभी वह आग मूर्खों को अपनी लपटों से डराती है और कभी वह उनकी आंखों में अपनी चमक सुंदर करके दिखाती है, और उसने उन्हें उनकी अंतरात्मा के खिलाफ बहकाया इसलिए वे उसके प्यार में पड़ गए।

तो, तुम इन खबरों से उनके बाहरी अर्थ न समझो और जो कुछ तुम देख रहे हो उस से इन्कार मत करो। और जान लो कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शब्दों की शान बुलंद है और उनको केवल वही समझ सकता है जिसे अल्लाह ने अध्यात्मज्ञान दिया है और एक समझने वाला दिल, एक देखने वाली आंख तथा सुनने वाले कान दिए हैं और जो अपने रब की ओर से अंतर्दृष्टि प्राप्त हो। और उसे सिवाय उन लोगों के कोई नहीं पा सकता जिनकी अपनी आँखें शेष न बची हों और न ही उनका अपना नामो निशान शेष रहा हो और वे अल्लाह के रसूल में ही फ़ना हो गए हों, यहाँ तक कि उन पर अपने दिल के आदेश लागू नहीं होते बल्कि वे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों के अधीन होते हैं। यही वे लोग हैं जिनके दिल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान से भर दिए जाते हैं और उन्हें आपके प्रकाश से हिस्सा दिया जाता है और आप के चश्मे (स्रोत) से ही वे पीते हैं और उन्हें शुद्ध आबरू और तत्त्व-ज्ञान में से हिस्सा दिया गया है। और उन्हें उस प्याले से पिलाया जाता है जिसमें तसनीम (स्वर्ग की एक नहर) का मिश्रण होता है। वे अल्लाह के प्रताप तथा प्रभुत्व के द्वारा पवित्र किए जाते हैं और उसकी सुरक्षा में रखे जाते हैं। फिर उनका वारिस एक ऐसा अच्छी फितरत वाला व्यक्ति होता है जो उनकी बातों को अच्छी धारणा (हुस्न-ए-जन्न) के साथ और स्वीकार करने के इरादे से सुनता है और उनका अनुसरण करता है और उनके साथ जुड़ा रहता है और अपने स्वयं के आवेग को तोड़ने के लिए, उन (पैगंबरों) के अस्तित्व को प्राथमिकता देता है और प्रेम से उनमें फ़ना हो जाता है फिर वह बहुमूल्य मोती के रूप में प्रकट होता है। और सारी प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे भी उनमें से बनाया इसलिए आजमाने वाले आजमा लें। निश्चय ही मैं अपने रब की ओर से बुद्धि और विवेक के साथ आया हूँ ताकि मैं उन को वह बातें खोल कर

बता दूँ जिनमें वे मतभेद रखते हैं। और उन्होंने इस्लाम में फूट डाल दी है और मुसलमानों को टुकड़ों में विभाजित कर दिया है और वे एक दूसरे पर हमला करते हैं और उन्हें काफिर कहते हैं। तो अब हम उन्हें खुले मैदान में बुलाते हैं, क्या उनमें से कोई मुकाबले पर आने वाला है? और निश्चित रूप से हमने उन्हें मुकाबले पर बुलाया है और वे इससे इन्कार कर रहे हैं। क्या उन्होंने किसी बात का कोई पक्का फैसला किया है? तो हमने भी कर लिया है। या वे समझते हैं कि अल्लाह अच्छे और बुरे में भेद नहीं करेगा? उन्हें क्या हो गया है, वे क्या क्या सोचते हैं? और निश्चित रूप से मैं अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ और उनको क्षमा करता हूँ, शीघ्र ही उन्हें पता चल जाएगा।

और अन्तिम युग की निशानियों में से, जो अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कुरआन में बताई हैं, ऐसी दुर्लभ घटनाएं हैं जो तुम इस समय देख रहे हो और उन्हें मौजूद पाते हो। निस्सन्देह उसने हमारे लिए अपने चिन्हों को स्पष्ट कर दिया है, जैसा कि उसने फरमाया :

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ - وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ - وَإِذَا الْغِشَارُ عُطِّلَتْ -
وَإِذَا الْتُفُوسُ زُوِّجَتْ - وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ -

(सूरह तकवीर : 81/4,7,5,8,11)

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا - وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ - وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ -

(सूरह इनशिक्राक : 84/4,5)

وَإِذَا الْكُوَاكِبُ انْتَشَرَتْ -

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ -

अनुवाद: "और जब पहाड़ चलाए जाएंगे और जब समुद्र फाड़े जाएंगे और जब दस महीने की गर्भवती ऊँटनियाँ लावारिस छोड़ दी जाएंगी। और जब लोग आपस में मिला दिए जाएंगे और जब पुस्तकें प्रकाशित की जाएंगी। और जब पृथ्वी भूकंप से हिला दी जाएगी। और जब पृथ्वी फैला दी जाएगी और जो कुछ

उसमें है निकाल फेंकेगी और खाली हो जाएगी। और जब तारे झड़ जाएंगे और जब जंगली जानवर इकट्ठे किए जाएंगे।"

इन सब में एक विचारशील क्रौम के लिए अन्तिम युग की खबरें हैं। जहां तक पहाड़ों के हिलने का सवाल है, तुमने अपनी आंखों से देखा है कि कैसे पहाड़ों को अपने स्थान से हटा दिया गया है और उनकी श्रृंखला को ध्वस्त कर दिया गया है। और उनकी चोटियाँ तराई से मिल गई हैं और उनकी पंक्तियाँ टूट गई हैं। तुम उनकी घाटियों में चलते और दौड़ते फिरते हो। और बाकी रहा नदियों का फाड़ना तो तुमने देख लिया है कि अल्लाह ने एक क्रौम भेजी है जिन्होंने नदियों को फाड़कर नेहरें बना दी हैं और वह उन नदियों को निरंतर फाड़ते चले जा रहे हैं और नदियों को फाड़ने के ज्ञान की बारीकियों को भली-भांति जानते हैं और उन्होंने उन नहरों को प्रत्येक बंजर भूमि तक पहुंचाया है ताकि वह धरती को आबाद करें और सूखा (अकाल) की मुसीबतों को वहां के निवासियों से दूर करें। और वह ऐसा ही करते हैं ताकि वह धरती से यथावत लाभ उठा सकें और वह व्यवहारिक रूप से लाभ उठा भी रहे हैं। बाकी रहा ऊंटनियों को बेकार कर देना तो यह रेलगाड़ी की ओर इशारा है जिसने ऊंटनियों तथा ऊंटों को बेकार कर दिया अब उन पर सवारी नहीं होती और लोग रेलगाड़ी पर सफर करते हैं और उसी से भारवहन तथा भारी सामान उठाने का काम लेते हैं और धरती को लपेटने के समान एक देश से दूसरे देश शीघ्र पहुंच जाते हैं। यह अल्लाह तआला की हम पर तथा दूसरे लोगों पर अनुकंपा है परन्तु अधिकतर लोग (उसका) धन्यवाद नहीं करते। अल्लाह ने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं ताकि वे उसके भेद को समझ न सकें और उनके कानों में बहरापन है इसलिए वे सुन नहीं सकते। और जब वे लोगों के आविष्कारों में से कोई एक आविष्कार देखते हैं, चाहे वह काफिरों के हाथों से ही क्यों न हो, तो उसे ले लेते हैं ताकि उससे लाभ उठाएं और जब वे अल्लाह की रहमत का कोई करिश्मा देखते हैं तो उसको झुठला देते हैं। और जहां तक लोगों के आपस में मिलाए जाने का संबंध है तो उसके कई रूप हैं इसमें टेलीग्राफ की ओर संकेत है जो कि लोगों की हर कठिन घड़ी

में सहायता करता है और वह दूर के इलाके में रहने वाले प्रियजनों की खबरें लाता है और उनके समाचार बताता है पूर्व इसके कि पूछने वाला अपनी जगह से उठे। और प्रश्न-उत्तर की प्रक्रिया को पूरब तथा पश्चिम में रहने वालों के बीच चलाता है मानो वे आपस में मिल रहे हैं। और वह व्याकुल लोगों को उन लोगों के हालात के बारे में बहुत थोड़े समय में जानकारी देता है जिनके बारे में उनको कोई डर होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह दो लोगों को, दूर-दूर के स्थानों से इस तरह मिला देता है कि वह एक दूसरे से इस प्रकार बात करते हैं मानो कि उनके बीच कोई पर्दा नहीं और मानो वे एक दूसरे के निकट हैं। और इससे जल तथा थल मार्गों की सुरक्षा और हानि के दूर करने की ओर भी संकेत मिलता है अतः लोग एक देश से दूसरे देश बिना किसी डर के सफर करते हैं और इसमें संदेह नहीं कि इस ज़माने में देशों के बीच परस्पर संबंध और लोगों के बीच परस्पर परिचय बढ़ गए हैं। अतः वे प्रतिदिन एक दूसरे से मिलाए जाते हैं। अल्लाह तआला ने व्यापारियों को व्यापारियों से, एक सरहद वालों को दूसरी सरहद वालों से, हुनरमंदों को हुनरमंदों से मिला दिया है। अतः वे लाभ प्राप्त करने और नुकसान को दूर करने में परस्पर एकमत हैं। प्रत्येक नेमत, आनंद, वस्त्र, भोजन और खुशी में परस्पर एक दूसरे का सहयोग करने वाले हैं और एक भूभाग से दूसरे भूभाग की ओर हर चीज़ लाई जाती है। अतः तू देख कि अल्लाह ने लोगों को किस तरह मिला दिया है मानो कि वे एक ही कश्ती में बैठे हुए हैं और उन परस्पर मिलाए जाने के माध्यमों में से थल और जल की सवारियों पर लोगों का सफर करना भी है क्योंकि वे उन यात्राओं में परस्पर एक दूसरे से परिचय प्राप्त करते हैं। और इन्हीं मिलाए जाने के माध्यमों में से पत्र भेजने का सिलसिला भी है क्योंकि उनके भेजने के लिए उत्तम माध्यम उपलब्ध हो गए हैं। अतः तू देखता है कि वह पत्र संसार के दूर-दूर इलाकों तथा धरती के किनारों तक भेजे जाते हैं। और यदि तू गहरी नज़र से देखे तो उन पत्रों की अधिकता तुझे आश्चर्य में डाल देगी और तू इसका उदाहरण पहले ज़माने में कदापि नहीं पाएगा। और इसी तरह तुझे मुसाफिरों और व्यापारियों की अधिकता

आश्चर्यचकित कर देगी। अतः लोगों को मिलाने और परस्पर परिचय के यह माध्यम हैं जिनका इससे पहले कोई नामो निशान नहीं था। मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ कि बताओ क्या तुमने इससे पहले इसका कोई उदाहरण देखा था या तुम पुस्तकों में पढ़ा करते थे? और पुस्तकों के प्रकाशन की जो ख़बर है तो यह उनके माध्यमों की ओर संकेत है जो कि प्रिंटिंग प्रेस हैं। जैसा कि तू देखता है कि अल्लाह तआला ने एक क़ौम को खड़ा किया जिन्होंने प्रिंटिंग प्रेस की मशीनों का आविष्कार किया। तो हिंदुस्तान में और उसके अतिरिक्त अन्य देशों में कितनी अधिकता से प्रेस मौजूद हैं। यह अल्लाह का काम है ताकि वह हमारे काम में हमारी सहायता करे और ताकि वह हमारे धर्म और हमारी पुस्तकों को प्रकाशित करे और ताकि वह हमारे अध्यात्मज्ञान को हर क़ौम तक पहुंचा दे ताकि वे इसे ध्यान से सुनें और सन्मार्ग (हिदायत) प्राप्त करें। और जहां तक धरती के हिलाए जाने तथा उसके अपने अंदर की चीज़ों को निकाल फेंकने का संबंध है तो यह उस महान परिवर्तन की ओर संकेत है जिसे तुम अपनी आंखों से देख रहे हो और संकेत है धरती के ज्ञान-विज्ञान के प्रकट होने तथा उसकी दुर्लभ चीज़ों की ओर, और उसके आविष्कार और उसकी कलाओं और बहानों और छल कपट की ओर, और हर उस चीज़ की ओर जो वे करते हैं। और जहां तक सितारों के बिखर जाने का संबंध है तो यह उलमा के उपद्रवों तथा उनमें से संयमी लोगों के गुज़र (मर) जाने की ओर संकेत है जैसा कि तुम देखते हो कि ज्ञान के लक्षण मिट गए हैं और समाप्त हो चुके हैं और जिन्हें ज्ञान दिया गया था उनमें से कुछ तो मर चुके हैं और कुछ अंधे-बहरे हो गए हैं फिर अल्लाह ने रहमत के साथ उनकी ओर ध्यान दिया परन्तु वे फिर से अंधे और बहरे हो गए और उनमें से अधिकतर दुराचारी हैं और अल्लाह तआला उनके हर काम को देख रहा है। और जहां तक जानवरों के इकट्ठा करने का संबंध है तो यह मूर्खों तथा दुराचारियों की अधिकता की ओर तथा ईमानदारी और संयम के समाप्त हो जाने की ओर संकेत है। अतः तुम अपनी आंखों से देखते हो कि किस प्रकार नेकी (भलाई) का कुआं सूख गया है और उसका पानी गहराई में चला गया है

और अधिकतर लोग बुराइयों में आगे बढ़ रहे हैं और वे धार्मिक विषयों में दोगली प्रवृत्ति का रवैया अपनाते हैं। जब वे बुराई को देखते हैं तो उसे ले लेते हैं और जब कोई भलाई देखते हैं तो उससे मुंह मोड़ लेते हैं।

वे काफिरों के कामों को प्यार से देखते हैं और अल्लाह तआला की कारीगरी से मुँह फेर लेते हैं। हे लोगो! अल्लाह की नेमतों (उपकारों) को देखो, कैसे उसने तुम्हारे लिए इस युग को आधुनिक वस्तुओं से सुसज्जित किया है और उसे एक नए रूप में ढाला है। और उसे ऐसे अद्भुत कामों से भर दिया है जो तुम्हारे पुरखों की आंखों ने नहीं देखा था और तुम उसके माध्यम से सम्पन्न हो गए हो। और यूरोप के लोगों को तुम्हारे तथा तुम्हारे संबंधियों के लिए रेल निर्माण का ज्ञान प्रदान किया ताकि तुम आभारी रहो। तुम इस आविष्कार को देखो कि कैसे अल्लाह के आदेश से रेगिस्तानों तथा आबादियों में यह चलती है। तुम दिन-रात उस पर सवारी करते हो और बिना थके तुम जहां चाहो वहां पहुंच जाते हो। इसी तरह उन्होंने पश्चिमी देशों को, इसके अतिरिक्त अन्य आविष्कार कृषि और युद्ध और भवन निर्माण संबंधी उपकरण और आटा पीसने और कपड़े बुनने के उपकरण और भारवहन हेतु विभिन्न उपकरण और ऐसे उपकरण जो शहरों और घरों की सजावट से संबंधित हैं और इन समस्त कामों को सरल बनाने से संबंध रखते हैं, उनकी समझ दी। अतः तुम उनमें रुचि रखते हो और उनको प्रयोग करते हो। और हर महीने-साल आपको कई अजीबो-गरीब आविष्कार देखने को मिलते हैं, जिनको तुम्हारी आँख ने कभी नहीं देखा था। तो उनमें से कुछ आपके दैनिक जीवन में काम देती हैं और आपको शारीरिक श्रम से बचाती हैं जैसे माचिस की डब्बियाँ जिससे तुम आग जलाते हो और मिट्टी का तेल जिससे तुम अपना दिया जलाते हो। और उनमें से कुछ अन्य आविष्कार हैं जो तुम्हारे घरों की सजावट हैं तो आप उन्हें खुशी से ले लो। तो देखो और विचार करो कि अल्लाह तुम्हारा पालनहार वह दयालु पालनहार (रब) है जिसने तुम्हें पृथ्वी की समस्त दुर्लभ चीजें प्रदान की हैं और उनसे तुम्हारे घर भर दिए हैं। तो तुम आकाशीय दुर्लभ चीजों (दिव्य प्राणियों) के अवतरण पर क्यों आश्चर्य करते हैं? और उन्हें असंभव

समझते हो। तुम अपनी सांसारिक चीजों से खुश होते हो जो कुछ दिनों के लिए हैं और परलोक के लिए आवश्यक सामग्री (पुण्य कर्म) पर निगाह नहीं डालते और न ही परवाह करते हो। तो तुम मसीह के अवतरण से और आध्यात्मिक अनुग्रह (रूहानी फज़ल) के दिनों के आगमन पर क्यों आश्चर्य करते हो, जबकि तुम अल्लाह के अनुग्रह के चमत्कार देख रहे हो जो नए-नए रूपों और अजीब-अजीब शैलियों में तुम्हारे शरीरों को आराम और सकून देने के लिए प्रकट हो चुके हैं जिन का उदाहरण तुम अपने बाप दादाओं के ज़माने में नहीं पाते। अतः क्या तुम काफ़िरों के अद्भुत कामों को मान लेते हो और अल्लाह के काम का इन्कार करते हो? और अल्लाह की कुदरत से तो तुम मायूस हो जाते हो परन्तु लोगों की कुदरत से मायूस नहीं होते तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह के उन कुछ कर्मों के द्वारा जिनको तुम पहचानते हो और जिनको देखते हो, उसके विलक्षण तथा दुर्लभ कर्मों को नहीं पहचानते? क्या तुम इन अद्भुत बातों से इससे पहले परिचित थे जो तुम्हारे इस ज़माने में प्रकट हुई हैं अर्थात् रेलगाड़ी, टेलीग्राफ तथा अन्य आविष्कार? यह सब कुरआन में लिखी हुई थीं परन्तु तुम उन्हें समझ नहीं पा रहे थे और इसी प्रकार तुमने अपनी अज्ञानता के कारण मसीह के उतरने के रहस्य को भी नहीं समझा हालांकि यह भी अल्लाह की किताब में लिखा हुआ था और किसी इन्सान के बस की बात नहीं कि वह अल्लाह तआला के समझाने के बिना कुछ भी समझ सके, चाहे वह नबी ही क्यों न हो। बहुत ही आश्चर्य है तुम पर कि तुम आधुनिक आविष्कारों के स्वीकार करने में जो तुम्हारे शरीरों के लिए लाभदायक हैं संकोच नहीं करते परन्तु जब मैंने तुमको उस अल्लाह की कुदरत की ओर बुलाया जिसने हर चीज़ को बहुत ही अच्छा बनाया है, और तुमने उसे अपनी नज़रों में विचित्र तथा अचंभित करने वाला पाया है तो तुमने घृणा की और क्रोध का प्रदर्शन किया और तुमने जानते-बूझते हुए उसका इन्कार कर दिया। हे लोगो! मैं कोई अनुचित आदेश लेकर नहीं आया और निस्संदेह अल्लाह ने भी मेरी सच्चाई की गवाही दी है और तुम मेरे कुछ निशान (चमत्कार) भी देख चुके हो। और तुम मेरे ज़माने का वर्णन अल्लाह की किताब में भी पाते

हो जिस पर तुम ईमान रखते हो। और अल्लाह ने मेरे मामले को तुम्हारी नज़रों में अजनबी करके दिखाया ताकि वह तुम्हारे ज्ञान और तुम्हारे संयम की परीक्षा ले। अतः उसकी परीक्षा अचानक इस हाल में कि तुम लापरवाह थे, आ गई। हे मेरे भाइयो! अल्लाह की किताब को हाथों में पकड़ो और फिर उस पर विचार करो कि क्या अंतिम युग के सुधारक का समय आ चुका है या उसके आने में अभी कई लंबे युग तथा सदियां शेष हैं? तुम जानते हो कि मसीह अंतिम युग में आएगा और तुम अपनी आंखों से उसके लक्षण देख चुके हो और तुमने संसार के दुर्लभ कामों के दर्शन भी कर लिए हैं जिनको पवित्र कुरआन ने अंतिम युग के लक्षण बताया था और तुम उनसे लाभ भी उठा रहे हो।

अतः तुम्हें क्या हो गया है कि उन आकाशीय बातों पर ईमान नहीं लाते जिन पर पवित्र कुरआन की आयत दलालत कर रही है। इससे मेरा अभिप्राय खुदा का यह कथन है: **وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ** (अर्थात्- और जब आसमान की खाल उधेड़ दी जाएगी। सूरह तकवीर- 81/12) और तुम धरती की ओर झुक जाते हो और आकाशीय नेमतों से दूर जा रहे हो। इस के बारे में कृपालु रब्ब ने अपने फरमान- **وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ** (अर्थात्- और निस्संदेह हम उसके रखवाले हैं। सूरह हिज्र- 15/10) में एक और भी खुशखबरी दे रखी है परन्तु तुम अपने रब की खुशखबरियों को भूल जाते हो और उसकी आयतों के बारे में इन्कार से काम लेते हो। हे प्रियजनो! जान लो कि निस्संदेह आसमान और धरती बंद थे फिर अल्लाह ने उनको खोल दिया तो आसमान की अल्लाह के आदेश से खाल उतार दी गई और वह फट गया और दुर्लभ चीजें प्रकट हुईं ताकि अल्लाह तआला अपने बंदों की परीक्षा ले कि वे किस ओर रुझान रखते हैं और धरती के दुर्लभ काम आसमानी दुर्लभ कामों से पहले प्रकट हुए तो लोग उसके आविष्कारों तथा उसके ज्ञान और कलाओं की अद्भुत चीजों से धोखा खा गए और निकट था कि वे नष्ट हो जाते। अतः कृपालु रब्ब ने धरती की ओर देखा तो उसे घातक चीजों से और भ्रष्ट करने वाली वस्तुओं से भरा हुआ पाया। और उसने सृष्टि को देखा कि उसके नए नए आविष्कारों

पर मोहित हो गए हैं और उसने ईसाइयों को देखा कि वे स्वयं भी गुमराह हुए हैं और दूसरों को भी गुमराह कर रहे हैं, और उसने उनके दार्शनिकों को देखा कि उन्होंने अपने ज्ञान और अपनी दुर्लभ कलाओं से लोगों को धोखे में डाल दिया है। अतः इन ज्ञानों ने युवाओं के हृदयों पर ऐसा गहरा प्रभाव डाला है मानो उन पर जादू कर दिया गया हो। इसलिए वे वासनाओं और सुख सुविधाओं की पूर्ति की ओर आकर्षित हुए और मवेशियों और कीड़े मकोड़ों से जा मिले। उन्होंने अपने प्रभु की ओर अपने माता-पिता और अपने बड़ों की अवज्ञा की। उनके दिलों में अनैतिकता घर कर गई और बेशर्मी और बेहयाई उन पर हावी हो गई। इसलिए अल्लाह ने चाहा कि वह अपनी किताब के सम्मान और अपने अभिलाषियों के धर्म की उन दुर्लभ मामलों के फ़ितनों से सुरक्षा करे, जैसा कि उसने अपने कथन-

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (सूरह हिज़्र- 15/10)

"अर्थात् हमने ही इस स्मृति (क़ुरआन) को उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करेंगे।" में वादा किया है। अतः उसने अपना वादा पूरा किया और अपनी ओर से अपने दास की कृपा स्वरूप सहायता की, और मुझे व्ह्यी भेजी कि मैं सावधान करने के लिए खड़ा हो जाऊँ। उसने मेरे साथ अछूते बिंदु और ज्ञान और आकाशीय समर्थन उतारे ताकि उनके द्वारा वह ईसाइयों के अनोखे कामों और उनकी सूली को तोड़ दे और ताकि उनके साहित्य तथा साहित्यकारों को तिरस्कृत करे और उनके तर्क खंडित कर दे और उनके दूर तथा निकट वालों को निरुत्तर कर दे। अतः धरती की अद्भुत वस्तुएँ और उस के फ़ितनों का मज़हर (द्योतक) वह है जिसे दज्जाल माहूद के नाम से नामित किया गया है और आकाशीय अद्भुत वस्तुओं तथा उसके प्रकाशों का मज़हर वही है जो मसीह मौऊद के नाम से नामित किया गया है। ये दोनों प्रतिद्वंद्वी एक ही ज़माना में एक दूसरे के मुक़ाबला के लिए आमने सामने हुए हैं। अतः चाहिए कि सुनने वाले ध्यान से सुनें अतः मेरी सच्चाई के निशानों में से पहला निशान ये है कि मैं उन फ़ितनों के समय में भेजा गया हूँ जिनकी ओर अल्लाह की किताब ने इशारा किया है।

अतः मेरे रब ने मुझे आसमान से उतारा है जैसा कि उसने फ़िल्नों को धरती से निकाला और रूपकों की शैली में बातें कीं और मेरी सहायता की जैसे सच्चों की सहायता की जाती है। उस ज़माने पर विचार करो जिसमें अल्लाह ने मनुष्य को पैदा किया था। क्या पहली क्रौमों में इन फ़िल्नों की मिसाल और इन अद्भुत वस्तुओं की मिसाल सुनी है? अतः तुम्हें क्या हो गया है कि तुम विचार-विमर्श नहीं करते? हे इतिहासकारो! क्या तुम देखते नहीं कि किस प्रकार अल्लाह की आयतों का दार्शनिकों की बातों द्वारा खंडन किया जा रहा है और उनके साथ हंसी ठट्ठा किया जा रहा है और उनके खंडन में हजारों पुस्तकें लिखी जा रही हैं? क्या तुमने ऐसा उदाहरण सुना है? क्या तुमने इससे पहले कभी सुना है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इतना अपमान किया गया हो और आपको इतनी गालियां दी गई हों और आपके धर्म को ताने दिए गए हों और आप का मज़ाक उड़ाया गया हो जिस प्रकार कि तुम इस ज़माने में सुन रहे हो? या क्या पहले लोगों में से कभी किसी ने अल्लाह की किताब का अपमान और उसके रसूल का तिरस्कार ऐसे बुरे, दिल दुखाने वाले शब्दों में सुना है जिस तरह कि तुम्हारे कान इन बातों को सुन रहे हैं? हे सोने वालो! इस तूफान में अल्लाह की रहमत पर तुम क्यों आश्चर्य करते हो? क्या तुम देखते नहीं कि वह (शत्रु) कैसे तुमसे और तुम्हारे धर्म से हंसी ठट्ठा कर रहे हैं? अल्लाह ने उनको उनकी हंसी का दंड दिया और उन्हें बहरा और अंधा कर दिया अतः वे देख नहीं सकते हैं। हे प्रियजनो! क्या किसी पर ऐसा ज़माना आया है जैसा कि तुम पर आया? तुमने अहले किताब से बहुत सी कष्टदायक बातें सुनी और वह झूठ गढ़ने में और गालियों और दुख देने में बहुत आगे बढ़ गए हैं। और इस्लाम पर ऐसी ऐसी मुसीबतें डाली गई हैं कि घोड़ों की चरागाह में गधे चर रहे हैं और कुत्ते बड़ी उत्सुकता के साथ शेर की कछार में जाने के लिए व्याकुल हैं। अतः इसके बाद तुम किस युग की प्रतीक्षा कर रहे हो? और मेरी सच्चाई के निशानों में से एक यह भी है कि उसने मुझे अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण तथा पैरवी करने का सामर्थ्य प्रदान किया तो मैंने नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की कोई हदीस नहीं छोड़ी जिसका मैंने पालन नहीं किया और कठिनाइयों का कोई पहाड़ नहीं देखा जिस पर मैं नहीं चढ़ा। मेरे रब ने मुझे ईनाम प्राप्त समूह में सम्मिलित कर दिया। और मेरी सच्चाई के निशानों में से एक यह है कि उसने मुझ पर बहुत से परोक्ष के मामले (भविष्य की खबरें) प्रकट किए और वह अपने परोक्ष पर किसी को प्रभुत्व नहीं देता सिवाए उनके जिन्हें वह रसूल बना कर भेजता है। और मेरी सच्चाई के निशानों में से यह भी है कि वह मेरी दुआएं स्वीकार करता है और मेरी आवश्यकताओं को पूरा करता है और वह मेरी कथनी-करनी में बरकत रख देता है। और जिसने मुझसे मित्रता की वह उससे मित्रता करता है, और जिसने मुझसे शत्रुता की वह उससे शत्रुता रखता है। और लोग जो कुछ छुपाते हैं वह उसकी मुझे खबर देता है और उसने मेरी दुआओं को बहुत अधिकता से सुना है। और जब मैं उसके सम्मुख (विनम्रता पूर्वक) गिरा तो उसने मुझे बुलंदी प्रदान की और सम्मान दिया और उसने मेरी इतनी दुआओं को सुना जिन्हें मैं गिन नहीं सकता और मेरा ठिकाना अच्छा बनाया और मुझे ऐसी-ऐसी नेमतें (ईश्वर की कृपा) प्रदान कीं जिनका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मुझ पर लोक परलोक की रहमत पूरी की और मुझे उन लोगों में से बनाया जिनकी सहायता की जाती है। उसने मुझे संबोधित करके कहा : हे मेरे अहमद तू मेरा उद्देश्य और मुराद है और मैं तेरे साथ हूँ। तू मेरे निकट मेरे एकेश्वरवाद तथा एकत्व के स्थान पर है तो अब समय आ गया है कि तेरी सहायता की जाए और तू लोगों में पहचाना जाए। तू मेरे निकट ऐसे स्थान पर है जिसे लोग नहीं जानते। अतः उसने मुझसे ऐसे महान शब्दों में वार्तालाप किया कि यदि मुझे सारी दुनिया भी मिल जाती तो वह मुझे इतनी प्रसन्नता न देती जितनी कि इन प्रिय शब्दों ने मुझे प्रसन्नता दी है। अतः मेरी रूह उसके मार्ग में कुर्बान है। वह लोक-परलोक में मेरा मित्र है, मुझे जब भी भूख, प्यास और कष्ट पहुंचता है तो वह मेरी सहायता के लिए आता है और मैं उसकी नेमतों को अपने ऊपर निरंतर उतरते हुए देखता हूँ उन लोगों की तरह जो थकते नहीं हैं। और मेरी सच्चाई की निशानियों में से एक यह भी है कि उसने मुझे कुरआन का ज्ञान

प्रदान किया है और मुझे कुरआन मजीद के ऐसे सूक्ष्म बिंदु समझाए हैं जिनको केवल पवित्र लोग ही पा सकते हैं। और मेरी सच्चाई की निशानियों में से यह भी है कि उसने मेरा प्रशिक्षण किया और बहुत ही अच्छा प्रशिक्षण किया और उसने सब्र तथा स्वीकृति को और मेरी अपने रब के साथ मोहब्बत और अपने रसूल के अनुसरण को मेरी आस्था बनाया और उसने मेरे स्वभाव में अध्यात्मज्ञान के भेद भर दिए हैं और उसने मुझे विभिन्न विषयों की दूरअंदेशिया और उनके दोषों की समझ प्रदान की है और मुझे उन लोगों में सम्मिलित किया है जो विशेष हैं। हे अरब के मशाइख और मक्का मदीना के प्रतिष्ठित लोगो! यह वह खबरें और उपदेश हैं जिनको मैंने हिंदुस्तान के उलमा के सम्मुख प्रस्तुत किया है और मैंने उनको सावधान किया परन्तु वह सावधान नहीं हुए और मैंने उपदेश किया परन्तु उन्होंने सीख नहीं ली और मैंने उनको जगाया परन्तु वे न जागे और अज्ञानता के गुमानों में पड़ गए और उन्होंने मेरा इंकार किया और झुठलाया। उन्होंने मेरे ग़रेबान को पकड़ा और वह अपनी बात पर हठ करते रहे। मैंने उन पर अपनी हुज्जत पूरी की और उन पर मेरी सच्चाई पूरी तरह स्पष्ट हो गई और उन्होंने मेरे पैग़ाम का इन्कार किया जबकि उनके दिल मेरी सच्चाई पर विश्वास कर चुके हैं परन्तु वे अपनी ज़बानों से इंकार कर रहे हैं। और मैंने देखा है कि उनके दिल भयभीत हैं और उनकी रूह में हसरत और तड़प है और उन पर सच्चाई प्रकट हो चुकी है और वे जानबूझ कर अज्ञानी बन रहे हैं। मैं उनको देखता हूँ कि वह आपस में बिखरे हुए हैं और मेरे मामले में वह विभिन्न समूहों में बैठ गए हैं। अतः उनमें से कुछ ने मेरा सत्यापन किया और वह उनमें से कमज़ोर और संयमी लोग हैं। और उनमें से कुछ ने मेरा इन्कार किया और मुझे झुठलाया और अहंकार तथा क्रोध से वशीभूत होकर मुझे अपनी नज़रों में तिरस्कृत समझा और वही हैं जो अहंकार करने वाले हैं। और निस्संदेह मैं देखता हूँ कि सत्यापन करने वाले बढ़ते जा रहे हैं और झुठलाने वाले कम होते जा रहे हैं। और मेरा रब धरती को उसके किनारों की ओर से कम करता चला आ रहा है और दिलों को समझ प्रदान कर रहा है, आंखों को खोल रहा है, कुधारणाओं को दूर कर रहा है। जो

लोग मेरे पास संयमियों वाला विवेक लेकर आ रहे हैं वे मुझे पहचान लेते हैं और मेरी बैअत कर लेते हैं। उनके संयम की दूरदर्शिता को वह (अल्लाह) तेज़ कर देता है अतः वे असमंजस में नहीं पड़ते। और मेरे रब ने मुझे ख़बर दी है कि मैं लोगों के लिए नूह की कश्ती के समान हूँ। अतः जो व्यक्ति मेरे पास आकर मेरी बैअत में सम्मिलित होगा वह नष्ट होने से बच जाएगा। अतः खुशख़बरी है ऐसी क्रौम के लिए जो मुक्ति पाते हैं। मैं लोगों को केवल कुरआन का आदेश सुनाता हूँ और कुरआन तथा उस रब की ओर बुलाता हूँ जिसकी ओर वे लौटाए जाएंगे। निस्संदेह अल्लाह तआला ने लोगों के दिलों, अंगों, आखों, कानों और नीयतों में गुनाहों, बुराइयों, और जुर्म को देखा और उन्हें देखा कि वे भिन्न-भिन्न प्रकार के पापों और भूलों में लिप्त हैं तो उसने अपने बंदों में से एक बंदे को खड़ा किया ताकि उनको धर्म का मग़ज और शरीयत की वास्तविकता की ओर बुलाए जिसका स्वाद लोगों ने नहीं चखा था और वे उससे दूर पड़े हुए थे।

हे भाइयो! जो अरब और मिश्र और सीरिया इत्यादि देशों में रहते हो निस्संदेह मैंने जब देखा कि यह नेमत एक महान नेमत है और ऐसा दस्तर-ख़्वान (वरदान) है जो आसमान से उतरा है और यह सम्मानित निशान अल्लाह तआला की ओर से है तो मेरे दिल ने पसंद न किया कि मैं आपको इस नेमत से दूर रखूँ। अतः मैंने समझा कि प्रचार प्रसार करना आवश्यक हक़ है और ऐसा अनिवार्य क़र्ज़ है जिसको बिना चुकाए रहा नहीं जा सकता। लो यह मैं हूँ! मैंने तुम्हें वही कुछ कहा जो मुझ पर मेरे रब ने प्रकट किया और मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि तुम क्या उत्तर देते हो। और अल्लाह की क्रसम मैं उस ख़ुदा की ओर से अवतरित हूँ जिसने हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समस्त लोगों के मार्गदर्शन के लिए भेजा था और मैं अल्लाह की ओर से जानता हूँ कि वह मुझे व्यर्थ नहीं जाने देगा। और उसी ने मुझे विलायत की चादर ओढ़ाई है (अर्थात् वली बनाया है) और उसने मुझे विलायत ही के जाम में से पिलाया है और मुझे वह कुछ दिया है जो सानिध्य प्राप्त लोगों को दिया जाता है और मैं उसकी बरकतों को अपनी सांसों और अपने दिल पर और अपनी जीभ पर और अपनी समझ बूझ और कथन और

अपने घर की दीवारों और अपने द्वार की दहलीज और उसकी चौखट पर उतरते देख रहा हूँ। तो क्या तुम मुझे स्वीकार करोगे? और संभव है कि तुम एक चीज़ को नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो और हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसंद करो हालांकि वह तुम्हारे लिए हानिकारक हो, अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते और मैं अपने रब पर भरोसा रखने वाला हूँ और अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। और अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह अपनी सृष्टि को (तामसिक) इच्छाओं की गंदगी से साफ कर दे और उनको नेकी करने के काम और चयनित लोगों की आवाज़ को स्वीकार करने का इलहाम करे और उनको लोक परलोक में अपमान और बड़ी मुसीबतों से बचाए और उन्हें सच्चों में सम्मिलित कर दे। और हमारी अंतिम दुआ यही है कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हों जो ईमान प्रदान करता है और कान खोलता है और आंख को दृष्टि प्रदान करता है और कुधारणाओं को दूर करता है।

परिशिष्ट

जीवन के कुछ हालात और कृपालु ख़ुदा की कुछ कृपाओं का वर्णन

हे भाइयो! जब मैंने अपना पत्र लिख लिया और बात पूरी कर ली तो मेरे दिल में डाला गया कि मैं कुछ अपने जीवन के हालात और अपने बाप दादाओं के हालात से पर्दा हटाऊँ ताकि तुम जान लो कि अल्लाह ने मुझ पर कितने उपकार किए हैं। उसने उपकारों तथा नेमतों के हाथ से मेरा पोषण किया है और ताकि तुम को मेरे कामों और मेरे इरादों की पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाए और ताकि मेरा निवास स्थान और मेरा ठिकाना और मेरा मर्तबा तुम पर पूर्णतः स्पष्ट हो जाए और शायद अल्लाह तआला इस माध्यम से तुम्हारे दिलों को फेर दे और तुम मेरे पास सन्मार्ग के अभिलाषी होते हुए आओ या तुम मुझसे पत्राचार करो और मुझसे पूछो। तो जान लो, अल्लाह तुम्हारी सहायता करे कि मेरे बाप दादा फारसी मूल के थे और क्रौम के सरदारों तथा अमीरों में से थे। फिर रहमान ख़ुदा

की तबदीर उनको समरकंद ले गई और वे उस इलाके में कुछ समय रहे और अल्लाह बेहतर जानता है कि वे वहां कितने समय तक रहे। मैं केवल उतना ही जानता हूं जितना मुझे उनके लेखों से पता चला है जो वे लिखते थे। फिर उन्हें हिंदुस्तान की ओर जाने का विचार आया तो उन्होंने अपने देश से यात्रा की और उसके एक इलाके में जा उतरे जिसे पंजाब कहते हैं और उन्होंने पंजाब के निकट पवित्र उपजाऊ अच्छी हवा और मीठे पानी वाला इलाका पाया तो उन्होंने वहां डेरे डाल दिए और वहीं स्थाई निवास के लिए ठहर गए और वे अपनी क्रौम के कुछ लोगों समेत यात्रा पर थे, उनमें से कुछ सरदार थे और कुछ सेवक थे।

अतः अल्लाह ने उनको उस धरती में शरण दी और उनको सम्मान का ठिकाना प्रदान किया और संतुष्टि प्रदान की तो उन्होंने उस इलाके में एक बस्ती बसाई और इस्लामपुर उसका नाम रखा (जो क्रादियान के नाम से प्रसिद्ध है) यह नाम इसलिए रखा गया था क्योंकि उन्होंने चाहा था कि वह इस बस्ती में मुसलमानों में से एक सम्मानित समूह को आबाद करें ताकि वे एक दूसरे के सहायक हों और अपने आप को शत्रुओं से सुरक्षित रख सकें और जब उन्हें किसी बगावत का सामना करना पड़े तो उस पर विजई हो सकें। वे उस (बस्ती) में आबाद हुए और मालिक बन गए और फले फूले और उनको बरकत दी गई। यह घटना चुगताई शासकों के शासनकाल की है जो उनकी हमनस्ल क्रौम में से थे। उस ज़माने में हुकूमत की बागडोर बाबर नामी बादशाह के हाथ में थी और वह उन लोगों में से था जो शरीफों का सम्मान करते थे। अतः उसने उनको मान सम्मान से रखा और उन्हें बहुत सी बस्तियां जागीर के तौर पर प्रदान कीं और उसने उनको उन इलाकों के सरदार और रईस और साहिबे मिल्कियत लोगों में से बनाया। अतः उन्होंने इकबाल के मरतबों में प्रगति की और वे मालो-दौलत और ज़मीन जायदाद और सरदारी में बढ़ गए और अपनी हुकूमत और दौलत के साथ-साथ वे अल्लाह का संयम धारण करते और भलाई के मार्गों पर चलते थे और उनकी हुकूमत के दौर में इस्लाम का चेहरा उनकी प्रजा और उनकी क्रौमों में रोशन हो गया और वे संयमी थे और क्रौमों उनका आज्ञापालन करती

थीं और वे नेकियों और भलाई के कामों को करने में रुचि रखते थे और अल्लाह की पुस्तक को मजबूती से थामे हुए थे और अल्लाह के धर्म की सहायता करते थे और वे लोगों की वास्तविक कठिनाइयों में उनकी सहायता करते थे। फिर उन दिनों के बाद इस्लामी साम्राज्य का तख्ता पलट गया और उसमें कमजोरी ने घर कर लिया ताकि बादशाहों में से जो मुजरिम हैं उनको अल्लाह तआला अपमानित करे और उनको दण्ड मिले क्योंकि वे खुदा की हदबन्दियों को भूल गए थे और हद से बढ़ गए थे। अतः उनके रास्ते अलग-अलग हो गए इस हाल में कि एक दूसरे पर चढ़ाई करने लगे और वे अपने ही लोगों का वध करते थे और फसाद करते थे। और उन्होंने हर प्रकार की भलाई और नेकी को छोड़ दिया और ऐसी चीज़ की ओर आकर्षित हो गए जो संयम के विपरीत थी और वे अपने कर्मों में हद से बढ़ गए थे और उनमें अच्छे व्यवहार वाला कोई शेष न रहा और न कोई ऐसा रहा जो कमजोर और मुसीबत में पड़े हुए लोगों पर रहम करता हो बल्कि उनमें से कुछ ने कुछ को तलवारों से दंड दिया और उन्होंने इरादा कर लिया कि अपने साथियों को खा जाएं और अपने भाइयों और बुजुर्गों और बाप-दादाओं का समूल विनाश कर दें और उसके बाद वे ऐसे हो जाएं कि हुकूमत में उनका कोई भागीदार न हो और वे अकेले रह जाएं। और उनमें से अधिकतर लोग बुराईयां करते थे और छोटी से छोटी तामसिक इच्छाओं को भी पूरा करते थे और अल्लाह के फर्जों तथा सीमाओं को फलाँगते हुए वे अपनी भौतिक इच्छाओं के जाल की ओर तेज़ी से बढ़ रहे थे फिर भी कमी नहीं करते थे और दुनिया में से जो कुछ उनके पास था उस पर प्रसन्न थे और ग़लत रास्तों की टोह में लग गए और ऐसे मार्ग अपनाए जो बुराई की ओर ले जाने वाले थे और उन्होंने उद्दंडता की और टेढ़े मार्गों पर चल पड़े और उनका मामला अंत में परस्पर फसाद पर जा ठहरा और अच्छाई से बुराई में गिर गए अतः उनके दिन बदल दिए गए और उनके ज़माने को तहस-नहस कर दिया गया ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अल्लाह तआला नहीं चाहता कि दुराचारी लोग उसकी धरती के वारिस हों और उनमें से कुछ लोग उन लोगों के समान हो गए जो इस्लाम धर्म से विमुख हो गए हों और

उन्होंने सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श का पालन छोड़ दिया और वे अल्लाह की नेमतों को पहचानते नहीं थे और न ही धन्यवाद करते थे। अतः अल्लाह उन पर क्रोधित हुआ और उसने उनके साम्राज्य को नष्ट कर दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। और उसने ऐसी क्रौमों को भेजा जो उनके देशों पर चढ़ाई करती थीं और उनके साम्राज्य को आपस में बांट रही थीं और यह देश के उथल-पुथल होने का समय था और वे अपने इलाकों की सीमाओं में स्वतंत्र शासक थे। और मेरे बाप दादा उनमें से थे जो अपनी सीमाओं में शासन करते थे और अपनी बस्तियों पर एक सत्ताधारी बादशाह के समान थे। उनकी प्रजा के झगड़े उनके सामने प्रस्तुत होते थे तो वे जिस प्रकार चाहते थे निर्णय करते थे और वे केवल अल्लाह से डरते थे और न किसी से अनुमति का निवेदन करते थे और न अनुमति लेते थे। फिर मेरे बाप दादाओं में से सज्जन लोग अल्लाह से जा मिले और उनके बाद ऐसे लोग आए जिन्होंने मुहम्मद सअव के आदर्शों को नष्ट कर दिया और उनका भली-भांति ध्यान न रखा और वे बिदअतों (आडंबरों) में तथा बुरी रस्मों में पड़ गए और उनसे नफरत न की और दुनियादारी के लिए उनके दिल जल रहे थे। और उन दिनों में तमाम मुसलमानों के शासकों और उनके बादशाहों के समूहों पर भी ऐसी ही हवा चल रही थी और वे अल्लाह के आज्ञा पालन से लापरवाह हो गए थे और उन्होंने पवित्र कुरआन के आदेशों की अवज्ञा की और जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते तो आलसी लोगों की तरह खड़े होते थे और दिखावा करते थे और निष्ठा का प्रदर्शन न करते थे। और अल्लाह ने उन्हें देखा तो ऐसे शरीरों के समान पाया जिनमें आत्मा न हो। और उसने उन्हें देखा कि वे दुनिया पर औंधे मुंह गिर गए हैं और दुनियादारी के सिवा अच्छे कामों से भी बिदकते थे और वे अपनी सांसारिक मुहिम की तो खूब चिंता करते थे परन्तु धर्म की कोई परवाह नहीं करते थे। वे इस संसार की गंदगी में लथपथ हो गए थे और परलोक से बेखबर थे। इसलिए उन्होंने परलोक का जीवन नहीं माँगा और न माँगना चाहते थे। तो अल्लाह तआला की युक्ति ने उन्हें सावधान करना चाहा और उसने इरादा किया कि वह

उन से देश छीन ले और ऐसे लोगों को दे दे जो मूर्तियों के पुजारी थे... और अनपढ़ थे और ज्ञान तथा विवेक नहीं रखते थे। तो अल्लाह ने उनके समर्थन तथा बुलंदी के लिए और मुसलमानों के पेड़ को काटने और उन्हें टुकड़े टुकड़े करने के लिए अजीब अवसर पैदा कर दिए ताकि उन्हें पता चले कि उन्होंने अपने रब की अवज्ञा की है और यह कि वे अत्याचारी हैं। ...अल्लाह ने उनकी खूब सहायता की और वे हर जगह विजयी होते जाते थे। उन दिनों, मेरे पूर्वजों पर भी मुसीबतें आ पड़ीं ...और उनका देश तथा राजपाट छीन लिया। और उन्होंने राज्य को उनके हाथ से लेकर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और उनकी संपत्ति लूट ली और उनके घरों को उजाड़ दिया और उनकी पीढ़ियों को तितर-बितर कर दिया और उनके पुस्तकालय को जला दिया और उसमें अल्लाह की किताब क़ुरआन की लगभग 500 प्रतियां जला दीं। मुसलमान उसको देख रहे थे और रो रहे थे। और उन्होंने उनकी मस्जिदों को मूर्ति गृह बना दिया। और हम में से बहुतों को तलवारों से मार डाला और हमारे सम्माननीय लोगों को अपमानित किया यहां तक कि जब चिंता और व्याकुलता अपने चरम पर पहुंच गई और मेरे पूर्वजों को गम और चिंताओं ने घेर लिया और धरती विस्तृत होने के बावजूद उन पर तंग हो गई। और वे अपने भाइयों, गुलामों और सेवकों के एक समूह के साथ अपने राज्य से निकाले गए तो वे जगह-जगह भटकते रहे। काफ़िरों ने उनके शहरों में कुफ़्र की निशानियों को प्रमुख बना दिया और इस्लाम की निशानियां मिटा दीं तथा उन्हें कूड़ा करकट बना दिया और तमाम मामलों को उलट दिया और वे ऐसा ही किया करते थे। उन दिनों में मुसलमानों को एक बड़ी मुसीबत और बहुत कष्ट का सामना करना पड़ा, कोई मस्जिद में अज़ान नहीं दे सकता था और न क़ुरआन को ऊंची आवाज़ से पढ़ सकता था और न कोई किसी हिंदू को अल्लाह के धर्म (इस्लाम) में सम्मिलित कर सकता था और न ही गाय ज़िबह कर सकता था और इन सब कामों का दंड मृत्यु और सब कुछ छीन लेना था और अगर कोई नरमी होती तो कम से कम फिर हाथ पांव काटे जाते और अगर किसी पर दया की जाती तो कैद बा मुशक्कत दी जाती थी यहां तक कि वह उनके सामने

भूख से क़ैद में ही मर जाता था। मुसलमान पीड़ित, घायल और लुटे पुटे थे और हर समय उन्हें मारा-पीटा जाता था। उनके लिए न तो कोई भागने की जगह थी और न ही कोई शरण स्थल और न कोई मुक्तिदाता था और न ही कोई दया करने वाला और हर द्वार से उनको धुत्कारा जाता था। वे घर तो बनाते थे परन्तु उसमें रहना नसीब नहीं होता था, वे माल तो कमाते थे परन्तु उससे लाभ नहीं उठा पाते थे और हर ओर से उन पर आक्रमण किए जाते थे और उन्हें लूटा जाता था। उन्हें कभी तो क़ैद कर लिया जाता और कभी उनका वध कर दिया जाता था और कभी-कभी गुलाम बना लिए जाते थे। वे अपनी मेहनत से खेती-बाड़ी करते थे परन्तु जो फसल वे काटते थे उसमें से कुछ खा नहीं पाते थे और न इकट्ठा कर सकते थे। शहर वीरान कर दिए गए और रास्ते भयानक बना दिए गए, खेतियां नष्ट कर दी गईं और धन संपत्ति बर्बाद कर दी गई और मस्जिदें वीरान और ज्ञान दफन कर दिए गए। मुसलमान उनकी नज़रों में टिड्डियों के समान थे और वे अपमान में बढ़ते रहे। उनमें से कई समूह दूसरे शहरों की ओर हिजरत (प्रवास) कर गए थे और अपने घरों तथा देशों को छोड़ दिया था और वे बहुत जल्दी में सफर करते थे। उनमें से अधिकतर काफ़िरों के हाथों में क़ैदियों के समान थे और दुराचारी लोग अजगरों की तरह मोमिनों पर आक्रमण करते थे और उनको निगल जाते थे। तब मुसलमान अपने रब की ओर झुके और उन्होंने अपने आप को कृपालु ख़ुदा के समक्ष डाल दिया और वे माथे के बल मस्जिदों में गिर गए। और उन काफ़िरों के विरुद्ध बद्दुआएं करने लगे और उस अज़ाब के दूर होने के लिए गिड़गिड़ाने लगे और उनमें से हजारों का वध कर दिया गया इस कारण कि उन्होंने अज़ान दी या नमाज़ पढ़ी या गाय को ज़िबह किया या काटा। और उनके लिए कोई अदालत न थी जिसके सामने वे अपनी समस्याएं प्रस्तुत करते और न कोई शरण लेने का स्थान था जिसके द्वार पर वे रोते। वे हर समय अपने रब की ओर ध्यान करते थे। उन्हें दुख दिया गया और यातनाएं दी गईं और निकट था कि उनके प्राण निकल जाएं इस हाल में कि वे मातम कर रहे होते और मरसिया कह रहे होते और वे बुरी तरह से झिंजोड़े गए और

बड़ी बेदर्दी से उनका वध किया गया और पूर्णतः तितर-बितर कर दिए गए यहां तक कि यतीमों का शोर और विधवाओं का रोना और कमजोरों की चीखो-पुकार अर्श पर पहुंची और काफिरों के कदमों के नीचे ज़मीन कांप उठी। सानिध्य प्राप्त लोगों ने अल्लाह की रहमत के दामन को पकड़ा और शिफाअत की।

अतः जब कमजोरों और बेचैन लोगों की दुआएं अल्लाह तआला के समक्ष इकट्ठी हो गईं और उसके साथ सानिध्य प्राप्त लोगों की तवज्जो सम्मिलित हो गई और हर ओर से संसाधन इकट्ठे हो गए और अल्लाह तआला ने देखा कि मुसलमानों को माल और जान और परिवार और मान सम्मान तथा घरों और आस्थाओं और कर्मों के बारे में नुकसान पहुंचाया गया है और उसने देखा कि मुसीबत अपने चरम को पहुंच गई है तो उसने गुनाहगारों पर दया दृष्टि की और उसने अपनी क्रौम को याद किया जो उसके ऐसे चयनित भक्तों में से थे कि यदि लज्जित होते हुए इस्तगफार (प्रायश्चित) करते हैं तो उनको क्षमा कर दिया जाता है और जब वे रोते हुए रहमत के उतरने के लिए दुआ करते हैं तो उन पर रहम किया जाता है और जब वे सहायता के लिए गिड़गिड़ाते हुए पुकारते हैं तो उनकी सहायता की जाती है और जब वे किसी मुसीबत के समय सजदा करते हैं तो अल्लाह उनकी ओर शीघ्र ध्यान देता है और उनकी सहायता की जाती है। और जब वे तौबा करते हुए आए तो उनकी तौबा स्वीकार की गई और उनकी दुआएं क़बूल कर ली गईं और उनका रोना गिड़गिड़ाना सुना गया ...अतः अल्लाह ने चाहा कि मुसलमानों के घावों को भर दे और उनकी गर्दनो को जुल्म करने वालों के जुए से आज़ाद कराए और उन्हें फिरौनी लोगों की क़ैद से निकाले और उन पर एहसान करे जो कमज़ोर समझे जाते थे। तो उसने दूर देश से एक क्रौम को बुलाया तो वह उनके सुनसान घरों की ओर दौड़े चली आई और धरती को उसकी सीमाओं से कम करती चली आई। अतः वह विजयी सेना के समान आए और जिन्हें जीत और सफलता की खुशख़बरी दी गई, वे फ़िरोजपुर नामक एक गाँव के समतल मैदान में उतरे। उसके आगमन की सुगन्ध से मुसलमान प्रसन्न हो रहे थे ...और अल्लाह ने मुसलमानों की आंखों को उनके सहायकों के झंडे

दिखा कर ठंडा कर दिया था। ...अब हम तुम्हें उस क्रौम के कुछ हालात बताते हैं जिसको अल्लाह ने मुसलमानों के लिए अपनी दयादृष्टि का माध्यम बनाया और उनको हमारे लिए स्वाभिमानी सहायक या ऐसा अतिरिक्त माल बनाकर भेजा जो बिना किसी परिश्रम के हाथ लग जाए ताकि वह दुख देने वालों तथा अधिकारों का हनन करने वालों को उनके किए का दंड दे। और उस क्रौम को अमन दे जिनको डराया गया था और मैं समझता हूँ कि मैं उनका वर्णन विशेष रूप से (सिखों के) वर्णन से अलग करके करूँ। यह अल्लाह तआला के उपकार के सम्मान के तौर पर है ताकि अल्लाह हमें उन लोगों में से बना दे जो उसकी नेमतों (वरदानों) का सम्मान करते हैं और धन्यवाद करते हैं और ताकि मैं अपने आक्रा (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के रास्ते पर चलूँ जिसने लोगों का धन्यवाद करने की सुन्नत को जारी किया और फरमाया :

مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ فَلَمْ يَشْكُرِ اللَّهَ

अर्थात् जिसने लोगों का धन्यवाद नहीं किया उसने अल्लाह का धन्यवाद भी नहीं किया। और हम उसके द्वारा प्रशंसा में अतिशयोक्ति के फ़ितने से या आलोचना को अनदेखा करने से बच जाएँ और हम तो केवल सच्ची बात ही कहेंगे। अतः चाहिए कि गवाही देने वाले गवाह रहें।

अंग्रेज़ी सरकार और कैसरा-ए-हिंद का वर्णन

अल्लाह उसे हमारी ओर से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे

हे भाइयो! जान लो कि हम अत्याचारियों के हाथों से मुक्ति पा गए हैं इस मलिका की हुकूमत की छत्रछाया में जिसका नाम हमने शीर्षक में लिखा है, जिसकी हुकूमत में हम खुशहाल हुए जिस प्रकार मूसलाधार वर्षा के समय धरती हरी भरी हो जाती है। यह महारानी अपने देश और राज्य के दृष्टिकोण से मल्लिका جبا (ज़बाअ) से भी अधिक मान-सम्मान और बुलंद शान वाली है। हे अल्लाह तू उसके अस्तित्व को और उसकी दानशीलता में हमारे लिए भलाई रख दे और उसके देश को रूस की चालों तथा उसके षड्यंत्रों से सुरक्षित रख।

निस्संदेह हमने इस महारानी से अत्यधिक उपकार और खुशहाली पाई है। तो यदि हमने उसका हक अदा करने में लापरवाही की तो मानो हमने अल्लाह का हक अदा करने में लापरवाही की है। निस्संदेह अल्लाह के निकट पशुओं से भी बुरे वे दुष्ट लोग हैं जो उपकारियों को कष्ट देते हैं और सुख देने वालों के पीछे ही पड़ जाते हैं। अतः अल्लाह उनके जीवन रूपी वृक्ष पर कुल्हाड़ी चलाता है और वे काटे जाते हैं।

हे लोगो! निस्संदेह हम इस सम्माननीय महारानी के दौर से पहले हर प्रकार से धुतकारे हुए और असहाय थे। हम न किसी सकून की जगह का नाम जानते थे और न ही हम किसी ठिकाने के मालिक थे। ...और हम बियाबान जंगल में तन्हा रह जाने वालों की तरह हो गए थे और अपने देश से निष्काशित अंगारों के समान जल रहे थे। अतः अल्लाह ने हमें उन सब मुसीबतों से मुक्ति दी और हमारी सहायता चांद जैसे चेहरे और चमकदार मोती के रंग वाली क्रौम के द्वारा की। अतः उनके आने से हमारे आराम और खुशी के दिन लौट आए और हमने उनकी बदौलत अपने शहरों तथा अपने भाई बंधुओं की सूरत देखी। हमें आबाद करने में उन्होंने हमारी सहायता की और (इसके लिए) कटिबद्ध हुए। अतः हम एक समय के बाद आराम और समृद्धि पाने वाले लोगों में सम्मिलित हो गए और उनके झंडे देख कर सुबह के समय सूर्य के उदय होने के समान हम सामने आ गए और हमने उनकी कृपादृष्टि से ऐसी शक्ति पाई जैसे शरीर रूह से शक्ति पाता है। उनके आगमन से हम ने मुसीबतों, भूख और अकाल को अलविदा कहा जिसने हमारी आंखों में अंगारे भड़काए हुए थे और हम उन लोगों में से हो गए जो समृद्धि पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं और अमन चैन की नींद सोते हैं। और पहली बात जो हमने उनके उपकारों तथा नेमतों में से पाई वह अमन और दुष्ट प्रवृत्ति लोगों की अत्याचारों तथा मूर्ति पूजकों के अत्याचारों से मुक्ति है। अतः उन्होंने हमें हर भय से अमन दिया और हमारी दिलजोई की और हमारी बेचैनी को दूर किया। अतः हम स्वर्ग में दाखिल हो गए बाद इसके कि हम ऐसे लोगों में से थे जिनको यातना दी जाती थी और इस पवित्र दौर में

हम साहिबे जायदाद और कारोबार करके रोजी-रोटी कमाने वाले बन गए और समृद्ध लोगों में से हो गए।...

तो सभी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जिन्होंने हमारे भय को शांति में परिवर्तित कर दिया और हमें एक दयालु, कृपालु रानी दी। हम उसके सेवकों में अन्याय करने वालों जैसा दबदबा नहीं देखते, और न ही डसने वाले और काटने वाले सांपों के समान उनका तेजी से जीभ चलाना देखते हैं, बल्कि वे कमजोरों पर दया करते हैं। और हम उनके अधीन खतरों में भी घुस जाते हैं और अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मुसीबतों में प्रवेश कर जाते हैं। और हम उन लोगों में से हो गए हैं जिन्हें न कोई भय है और न कोई दुख। और अगर किसी अवसर पर हमें अपने घरों को खुला छोड़ना पड़े और अचानक उनसे दूर जाना पड़े तो हमें कोई नुकसान नहीं होता है बल्कि हम हर एक चोर उचक्के से सुरक्षित रहते हैं, मानो हम अपने घर से अलग ही नहीं हुए थे और न ही अपने घर तथा पड़ोसियों को छोड़ कर यात्रा पर गए थे। तो हे लापरवाहो! हम कृतघ्न (नाशुक्रे) कैसे बन जाएं? वास्तव में, उन्होंने हमें धर्म के प्रचार-प्रसार और पुस्तकों के संकलन में और तर्क प्रस्तुत करने और उपदेश तथा प्रवचन करने में और लोगों को इस्लाम की ओर बुलाने और नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात अदा करने में पूरी आज़ादी दी है। और वे अधिकतर शरिया कानून के आधार पर शरिया मामलों का फैसला करते हैं। और मुसलमानों के मामलों में, वे इस्लाम के विद्वानों से फतवे लेते हैं और ज़बरदस्ती नहीं करते हैं, और वे हर आदेश, निर्णय, क़ानून को जारी करने और उसे लागू करने के समय सावधानीपूर्वक जांच करते हैं और जल्दबाज़ी नहीं करते। और जब दो मुस्लिम पक्ष उनकी अदालतों में पेश होते हैं, तो वे उन्हें एक मुस्लिम पंचायत स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें सलाह देते हैं कि दोनों पक्ष अपने-अपने लोगों में से एक-एक निर्णायक बना लें। जब वे इसे स्वीकार कर लेते हैं तो वे बहुत खुश होते हैं। और उनके समय में, इस्लाम की शिक्षाएं और खैरुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत (आदर्श) आम हो गई है और केवल कट्टरपंथी ही इन मामलों से

इन्कार करते हैं। उन्होंने कितने ही मदरसे बनाए हैं और सभी प्रकार की कलाओं को प्रचलित किया है और जो बातें लगभग समाप्त हो गई थीं उन्हें बाहर निकाला है और उन्होंने इसी संबंध में परीक्षा के नियम निर्धारित किए हैं ताकि छात्र को सम्मान प्राप्त हो या अपमान। निःसंदेह उन्होंने शिक्षा के नियमों को तथा समझाने की विधि को बहुत ही अच्छे ढंग से पूर्ण किया है और उन्होंने इस संबंध में सभी प्रकार की समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान किया है। इन सब बातों के बावजूद शिक्षा का खर्चा कम है और उसके दिन भी गिने-चुने हैं और उसके लाभ बहुत हैं। अतः चाहिए कि रश्क (किसी को हानि पहुँचाये बिना उस जैसा बनने की भावना) करने वाले रश्क करें। मेरी आयु की क्रसम, वास्तव में यह एक ऐसी क्रौम है जिसे अल्लाह ने हमारे लिए और हमारी भलाई के लिए भेजा है। उन्होंने उनको मार डाला है जो हमें मारते थे और उन्होंने हमारे गले में आशीर्वाद की माला डाल दी है। इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम उनका अपने दिल, आत्मा और जीभ से धन्यवाद करें, और उपकार का प्रतिफल केवल उपकार ही है, इसलिए मुस्लिम लोगों को इस क्रौम का सम्मान के साथ स्वागत करना चाहिए और अच्छे और सम्मानित लोगों की तरह उनका आज्ञापालन करना चाहिए। और हम में से जिसने भी उनकी अवज्ञा की, या उनसे बग़ावत की या उनसे युद्ध किया, तो यही वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की सीमाओं का उल्लंघन किया और यही लोग अज्ञानी हैं। और उनके उपकारों का धन्यवाद न करना मोमिनों के लिए वर्जित है यहाँ तक कि वह (अंग्रेज़ सरकार- अनुवादक) खुद अपनी स्थिति बदल ले। और किसी मोमिन पुरुष या मोमिन महिला के लिए राजा के उचित आदेशों की अवज्ञा करना जायज़ नहीं है जो उसके मान-सम्मान और संपत्ति की रक्षा करता है और उसके परिवार का ध्यान रखता है और दया करता है और दुः ख दूर करता है और भलाई के कामों को बढ़ावा देता है। तो फतवा के अभिलाषियों! इस फतवे को ले लो, और अल्लाह के आदेश पर कान धरो और तामसिक भावनाओं के बहकावे में न आओ और बिना किसी जानकारी के फतवा देने वाले विद्वानों की राय न मानो।

वे खुद गुमराह हैं और दूसरों को गुमराह करते हैं। हमने भारत की इस रानी से कई उपकार और महान आशीर्वाद देखे हैं, तो हम उन्हें कैसे भूल सकते हैं और हम उनके (रानी) के प्रति कृतघ्न कैसे हो सकते हैं और अल्लाह अपने बन्दों के लिए कृतघ्नता (नाशुक्रि) पसंद नहीं करता, जबकि उन पर उपकार किया गया हो। इसमें कोई शक नहीं कि क्रैसरा (रानी) मुसलमानों की दो भुजाओं में से एक है, वह इस्लाम की निशानियों की रखवाली है और भलाई करने वालों में से है। उसका अस्तित्व हमारे लिए लाभकारी है और उसकी उदारता हमारे लिए दया का स्रोत है और वह हमें दुख देने पर खुश नहीं है। और अल्लाह ने उसे जुल्म करने से और उस को अनदेखा करने से बचाया है। और उसने अपनी विशाल तलहटी में विभिन्न क्रौमों को शरण दी है। और हर वर्ग उसके उपकारों से खुश है। और जहां तक पादरियों के उपद्रव और उनके अत्याचारों और उनकी ज़हरीली हवाओं के चलने और दार्शनिकों की भूलों के प्रसार और उनके विचारों के प्रचार की बात है, तो इसमें इस रानी की तनिक भी संलिप्तता नहीं है और यह सरकार उनकी हिमायत के आरोप से बरी है। हां, परन्तु ये तो केवल स्वतंत्रता के परिणाम हैं, जिस स्वतंत्रता का पूरा-पूरा हिस्सा हर क्रौम को दिया गया है, और महारानी के कानून ने पादरियों को मुसलमानों पर अधिक अधिकार नहीं दिया, बल्कि उसने इस मामले में दोनों के साथ समान व्यवहार किया है तो संदेह करने वालों को संदेह क्यों है? और जो यह सोचता है कि पादरी इस सरकार की संस्थाओं में से एक संस्था है और वे रानी के आदेश से उपदेश करते हैं, तो वह बहुत गलत सोचता है और अन्याय करता है। क्या महारानी इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार को रोकती है? उसकी क्रौम तथा उसकी सरकार के आसपास के क्षेत्रों के कितने ही लोगों ने इस्लाम स्वीकार किया है और उन क्षेत्रों में मस्जिदों की नींव रखी गई है और वह आबाद हुई हैं। अतः तुम्हें क्या हुआ है कि तुम समझते नहीं हो? और उसके उपकार एक क्रौम को छोड़कर किसी दूसरी क्रौम से विशिष्ट नहीं हैं, ऐसा विचार उन लोगों का है जो सतही विचारधारा के लोग हैं और वह मामले की वास्तविकता से बेखबर हैं। उसके द्वारा मिलने वाले लाभों के लक्षणों की

और देखो कि किस प्रकार उसने हर शहर में उपयोगी परिषदों (मज्लिसों) की स्थापना की है, जिनमें से कुछ साहित्यिक परिषदें हैं और कुछ शहरों में व्यवस्था चलाने के लिए प्रशासनिक परिषदें हैं। उसने इन परिषदों को बुद्धिमान पुरुषों और बुद्धिजीवियों की एक सलाहकार समिति के साथ सुसज्जित किया है। और ज्ञान की धाराएँ जारी की हैं और छात्रों के लिए मदरसे खोले हैं और गरीबों के लिए छात्रवृत्ति निर्धारित की है और उनकी भरपूर मदद की है। हे मुसलमानो ! जब तक यह रानी निरन्तर ऐसा करती रहे, उसका धन्यवाद करो और अल्लाह से दुआ करो कि वह इस महारानी के सम्मान को बनाए रखे और दुष्ट रूस के विरुद्ध उसकी सहायता करे और उसे उन लोगों में सम्मिलित करे जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए हैं और उसे दोनों लोकों की भलाई नसीब करे। और उसे उन लोगों में से बनाए जिनको दोनों लोकों में हिस्सा दिया गया है और वह भाग्यशाली हैं। हे हिंद की महारानी ! अल्लाह तुझे नष्ट होने से बचाए और तेरे पिछले दुख दर्द भुला दे। निस्संदेह तूने शांति की स्थापना के लिए जहां तक तेरा बस चलता था प्रयत्न किया है। तू ने पूरी स्वतंत्रता दी है और तू ने मुसलमानों को प्राणघातक गमों से मुक्ति दी है और तूने उनके लिए दुर्लभ मोतियों वाली सीपियां निकाली हैं। और हमने तुझसे दिलों का आराम और आंखों की ठंडक और दुखों का इलाज पाया है। क्या ही अच्छा हो अगर तू मुसलमान हो जाए। अल्लाह तुझे हमारी ओर से उत्तम प्रतिफल दे और तुझे वह कुछ दे जिसकी तेरे दिल में इच्छा है। मुसलमानों के वंशज तेरे एहसानों को कभी नहीं भूलेंगे और कुरआन को मानने वालों के साहित्य से तेरा नाम नहीं मिटेगा। युग तो समाप्त हो जाएगा परन्तु तेरी विशेषताओं का गुणगान कभी समाप्त नहीं होगा, अतः तुझे बधाई हो। हे असहायों पर उपकार करने वाली महारानी! मैंने अपने दिल में तेरे गुणों के बारे में सोचा तो मैंने तुझे अत्यंत बुद्धिमान पाया तेरी राय बादल की तरह जटिल रास्तों से होकर गुजरती है, और तेरा विवेक और तेरी समझ छुपे हुए सूक्ष्म विषयों तक बाज के शिकार पर झपटने की तरह पहुंच जाती है और तथ्यों की खोज में तेरे पास शानदार उपलब्धियां हैं और अल्लाह की कृपा से, तू उन लोगों

में से एक है जो विभिन्न मुद्दों की जांच में सही निर्णय लेते हैं और गलतियां नहीं करते हैं। हे महारानी! तू हर निष्ठावान जौहर को पहचान लेती है और गंभीर चिंतन तथा अंतर्दृष्टि के द्वारा न्याय और निष्पक्षता की बारीकियों को समझ लेती है। तू अपनी इस योग्यता में बड़े उत्तम स्वभाव और अच्छे संदर्भ के महान उदाहरण रखती है, और प्रशंसा योग्य लोग स्वयं तेरी प्रशंसा करते हैं। तेरे गुणों तथा विशेषताओं की सुंदरता की कल्पना करके, जिसकी सुगंध पूरे विश्व में फैल चुकी है, मेरे दिल में यह बात डाली गई है कि मैं तुझे एक बहुत महत्वपूर्ण बात की सूचना दूं ताकि तेरा पद कृपालु खुदा की दृष्टि में ऊंचा हो जाए। मैं इसका उल्लेख केवल अपनी निष्ठा के जोश से कर रहा हूं क्योंकि मेरी निष्ठा इसकी मांग करती है कि मैं तुझे तेरी भलाई की ओर बुलाऊं और तेरा धन्यवाद करने के कर्तव्यों की उपेक्षा न करूं। वास्तव में, कर्मों का आधार नियतों पर होता है, और ईमानदार केवल इरादों की ईमानदारी से पहचाने जाते हैं, और एक ईमानदार व्यक्ति के लिए यह उचित नहीं है कि वह किसी मामले के बारे में यदि महसूस करे कि इसमें उसके हितैषी की भलाई है तो वह उसे छिपाए रखे, बल्कि उन्हें उनके हित की बात बता देना चाहिए। हे आदरणीय और महान रानी! मुझे आश्चर्य है कि ज्ञान और समझ-बूझ की पूर्णता के बावजूद, तू इस्लाम धर्म को नकारती है, और इस विषय पर गंभीरता से विचार नहीं करती, जिस गंभीरता से तू बड़े मामलों पर विचार करती है। तू तो अंधेरी रात में देख लिया करती है लेकिन अब तो सूरज चमक उठा है, तो ऐसा क्या है जो तू दिन चढ़े नहीं देख रही? हे महान रानी! अल्लाह तेरी मदद करे। जान ले कि दरअसल इस्लाम धर्म, प्रकाश का एक व्यापक स्रोत और आध्यात्मिक नहरों का उद्गम है और फलों का बाग है और कोई भी धर्म नहीं परन्तु वह इसकी ही एक शाखा है, अतः तू इसकी सुंदरता और अलंकरण और इसके स्वर्ग को देख और उन लोगों में से हो जा जिनको उन में से भरपूर जीविका प्रदान की जाती है और वे पेट भर खाते हैं। और निश्चित रूप से यह धर्म एक जीवित धर्म है, बरकतों से भरपूर और निशानों का मजहर (चमत्कारों का द्योतक) है। वह अच्छी बातों का हुक्म देता है और बुरी बातों से

मना करता है, और जो कोई उसके खिलाफ कुछ कहता या वर्णन करता है, तो उसने निश्चित रूप से झूठ बोला है, और हम झूठ बोलने वालों से अल्लाह की शरण में आते हैं। और उनके सच को छिपाने तथा झूठ को अपने यहां पनाह देने के कारण अल्लाह ने उन्हें शाप दिया है और उनके दिलों से फ़ितरत के प्रकाश खींच लिए हैं, इसलिए वे अपने हिस्से के प्रकाश को भूल गए हैं और पक्षपात तथा अपने अन्य कर्मों से प्रसन्न हैं। हे रानी! वास्तव में, यह कुरआन दिलों को पवित्र करता है और उन्हें रोशन करता है और आध्यात्मिक आनंद और खुशी दिखाता है, और जो कोई भी इसका पालन करता है तो वह ऐसा प्रकाश प्राप्त करता है जो नबियों ने पाया। और उसका प्रकाश केवल उन्हीं को मिलता है जो पृथ्वी पर विद्रोह या शरारत नहीं करते हैं और उसके प्रकाश में रुचि रखते हुए उसके पास आते हैं। तो ये वही लोग हैं जिनकी आँखें खोल दी जाती हैं और जिनकी आत्माएँ शुद्ध हो जाती हैं, फिर अचानक वे प्रबुद्ध (साहिबे बसीरत) हो जाते हैं। और निश्चित रूप से, अल्लाह की कृपा से, मैं उन लोगों में से एक हूँ, जिन्हें अल्लाह ने कुरआन-ए-मजीद के नूर (अध्यात्मज्ञान) दिए हैं। और जिन्होंने कुरआन में से पूरा पूरा हिस्सा पाया है। तो उसने मेरे दिल को प्रबुद्ध कर दिया और मेरी आत्मा ने सन्मार्ग को पा लिया जैसे कि खुदा को पाने वाले लोग पा लिया करते हैं। फिर उसके बाद मेरे रब ने मुझे लोगों को अपना पैग़ाम देने के लिए भेजा और मुझे रोशन निशान (चमत्कार) दिए गए ताकि मैं उसकी सृष्टि को उसके धर्म में बुलाऊँ। कितने भाग्यशाली हैं वे जो मुझे स्वीकार करते हैं और मृत्यु को याद करते हैं या निशान मांगते हैं और उन निशानों को देखने के बाद ईमान ले आते हैं। अतः हे महारानी निस्संदेह अल्लाह ने तुझे संसार की नेमतों में से बड़े बड़े उपहार प्रदान किए हैं, इसलिए अब तू परलोक के राज्य की इच्छा रख और पश्चाताप कर और अद्वितीय खुदा का अज्ञापालन कर जिसने किसी को पुत्र नहीं बनाया, और न ही उसके राज्य में उसका कोई भागीदार है, और उसकी महानता का गुणगान कर। क्या तुम उसे छोड़ कर ऐसे लोगों को उपास्य बनाते हो जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते हैं बल्कि वे स्वयं पैदा किए

गए हैं। और यदि तू इस्लाम के बारे में संदेह में है, तो मैं इसकी सच्चाई के निशान दिखाने के लिए खड़ा हूँ। और वह हर हाल में मेरे साथ है। जब मैं उससे दुआ करता हूँ तो वह मेरी दुआ स्वीकार करता है, और जब मैं उसे पुकारता हूँ तो वह मेरी पुकार का उत्तर देता है और जब मैं उसकी मदद मांगता हूँ तो वह मेरी मदद करता है। और मुझे पता है कि वह हर मैदान में मेरी मदद करेगा और मुझे बर्बाद नहीं करेगा। तो, क्या तू क्रयामत के दिन से डरते हुए मेरी निशानियों को देखने और मेरी सच्चाई के दीदार की इच्छा रखती है। हे महारानी! पश्चाताप कर, पश्चाताप कर और ध्यान से सुन। ध्यान से सुन, अल्लाह तेरी दौलत और तेरी हर चीज़ में बरकत डाले और तू उन लोगों में से हो। जिन पर दया की जाती है। तो अगर परीक्षण के दौरान मेरा झूठ प्रकट हो जाए तो अल्लाह की क्रसम मैं राजी हूँ कि मुझे मार दिया जाए या सूली पर चढ़ा दिया जाए या मेरे हाथ और पैर काट दिए जाएँ और उन लोगों में मिला दिया जाए जो ज़िबह कर दिए जाते हैं। लेकिन अगर मेरी सच्चाई सामने आती है, तो मैं तुझ से इसके अलावा कोई इनाम नहीं मांगता हूँ कि तू उस हस्ती की ओर लौट आए जिसने तुझे पैदा किया और तेरा पालन-पोषण किया और तुझे मान-सम्मान दिया और वह सब कुछ दिया जो तूने उससे मांगा। हे महान देशों की रानी और भारत के महारानी! तू मेरे निमंत्रण को सुन और उन लोगों में से न बन जिनके हृदय सत्य के वर्णन पर संकुचित हो जाते हैं और वे विमुख हो जाते हैं। हे आदरणीय महारानी! अल्लाह तेरे दुखों को दूर करे और तेरे आयु और तेरे पुत्र की आयु लम्बी करे और तुझे स्वस्थ रखे और दुश्मनों तथा ईर्ष्यालु लोगों की बुराई से तेरी रक्षा करे। वास्तव में, मैंने ये उपदेश विशेष रूप से तेरे तथा तेरे वंश के लिए दया स्वरूप लिखे हैं, और मैं तेरे लिए रात के आशीर्वाद (बरकतें) और दिन के आशीर्वाद और हुकूमत के आशीर्वाद और युद्ध के मैदान में आशीर्वाद के लिए दुआ करता हूँ। हे पृथ्वी की रानी! तू इस्लाम कबूल कर ले तो तू अमन में आ जाएगी। तू इस्लाम को स्वीकार कर ले तो अल्लाह तुझे क्रयामत के दिन तक फ़ायदा पहुँचाता रहेगा। और तू शत्रुओं से सलामत और सुरक्षित रहेगी और

अल्लाह द्वारा नियुक्त संरक्षक तेरी रक्षा करेंगे। हे सम्माननीय रानी! मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसे अल्लाह ने इस दुनिया से परलोक की ओर खींच लिया है और मैं इस दुनिया से दो रोटि और एक कटोरी पानी के अलावा और कुछ नहीं मांगता हूँ और मेरा दिल भौतिक इच्छाओं से फेर दिया गया है। मैं दुनिया में कोई पद और मान-सम्मान और वैभव नहीं चाहता। और मैं उन लोगों में से होना चाहता हूँ जिनके लिए स्वर्ग में सिंहासन रखे जाएंगे और उन्हें स्वर्ग की नेमतों में से जीविका प्रदान की जाएगी। और वे परमेश्वर के पवित्र दरबार के बागों से तृप्त होंगे।

हे महारानी! मैं मुसलमानों में से एक हूँ। अल्लाह तआला ने मुझे अपना ज्ञान दिया है और उसने मुझे अपना नूर, अपना प्रकाश और अपनी चमकार प्रदान की है उसने मेरे समक्ष दैवीय राज्य प्रकट किया है और अपनी मुहब्बत उसने मेरे दिल में डाली है और उसने मुझे पृथ्वी का राज्य दिखाया और मेरे दिल को उससे विमुख कर दिया है और मेरा ध्यान उस से फेर दिया है। तो आज वह सांसारिक राज्य मेरी दृष्टि में मुर्दे के समान है बल्कि उससे भी अधिक बदबूदार है। और ऐसे ही सांसारिक जीवन की हर प्रकार की सुख समृद्धि और धन और पुत्रों के संबंध में मेरी यही स्थिति है। और हे रानी! मैं अपने लेख के अंत में केवल अल्लाह की खातिर तुझे सलाह देता हूँ और वह यह है कि मुसलमान तेरे विशेष सहायक हैं और तेरे देश में उन्हें एक विशेषता प्राप्त है जिसे तू अच्छी तरह से समझती है, इसलिए मुसलमानों का विशेष ध्यान रख और उनकी आँखों को ठंडा कर और उनके दिलों में अपना प्यार डाल दे। फिर उनमें से अधिकांश को अपने करीबी लोगों में से बना ले और उन्हें प्रत्येक दूसरी क्रौम पर श्रेष्ठता दे और उन्हें विशेष बना ले, विशेष बना ले और इसी में बरकतें (आशीर्वाद) और हित हैं।

तू उन्हें राजी कर दे क्योंकि तूने उनके देश में प्रवेश किया है और तू उनकी देखभाल कर क्योंकि तू उनके घर में ठहरी है और अल्लाह ने तुझे उनका देश दिया है जिसमें तुम्हारी गणना के अनुसार उन्होंने लगभग एक हजार साल तक राज किया है। इसलिए अपने प्रभु का धन्यवाद करते हुए और उन पर कृपा

दृष्टि कर निःसंदेह अल्लाह कृपा करने वालों से प्रेम करता है। राज्य अल्लाह का है, वह जिसे चाहता है दे देता है और जिससे चाहता है छीन लेता है। और वह धन्यवाद करने वालों का राज लंबा कर देता है। हे सम्मानित रानी! इसमें कोई शक नहीं कि भारत के मुसलमानों के दिल तेरे साथ हैं और मुझे उनमें बगावत की गंध नहीं आती, न ही मुझे उनमें द्वेष तथा शत्रुता की आग दिखाई देती है, और वास्तव में वे तेरे प्यादे और सवार हैं जो तुझ पर अपने प्राणों की आहुति देने के लिए और आज्ञाकारिता की शर्तों को पूरा करने के लिए तैयार हैं और वे तेरे लिए उतार-चढ़ाव की सभी कठिनाइयों को सहन करने वाले हैं, बल्कि वे दुश्मन पर चढ़ाई करने और उसका सामना करने के अवसरों पर प्रथम श्रेणी के सेवक हैं, और वे तेरे फैसलों तथा उन्हें लागू करने के अवसरों पर तेरे सहायक हैं। तेरा इशारा उनके लिए एक आदेश है और तेरी आज्ञाकारिता उनके लिए बड़ी बात है, इसलिए तू उनकी ओर से कोई विश्वासघात या आपत्ति नहीं देखेगी, बल्कि हे भारत की महारानी! वह ऐसी क्रौम है जिनकी एक विशेष महिमा थी और उनके पास सिंहासन और हुकूमत थी और वे मूर्तिपूजकों पर इस प्रकार शासन करते थे जैसे एक चरवाहा भेड़-बकरियों का ध्यान रखता है। अतः उनके बुरे कामों के कारण उनके दिन बदल गए, और उन पर...अत्याचार किए गए, और वे तेरे शासनकाल के आने की इस प्रकार उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे जैसे रोज़ेदार ईद के चाँद को ऊँचाइयों पर चढ़ कर देखते हैं। और वे तेरी कृपा और दयादृष्टि की इस प्रकार प्रतीक्षा कर रहे थे जैसे एक गर्भवती महिला एक खुशहाल बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा कर रही होती है। और वे तेरे आने के साथ विजय प्राप्त करना चाहते थे, और निश्चय ही उन पर ऐसे दिन बीते हैं जब वे शासन करते थे और हुकूमत की कमान उनके हाथ में थी। कभी-कभी उन पदों की याद उनके दिलों में जलन पैदा कर देती है क्योंकि आदतों को जड़ से उखाड़ना मुश्किल काम है। और मैंने तुझे यह सब केवल एक सलाह के तौर पर कहा है और सभी कर्मों का आधार निय्यतों पर होता है। और अल्लाह की क्रसम ! उनका मान-सम्मान करने और कुछ पद तथा उपहार देकर उनका

सम्मान उन्हें वापस लौटाने में ही भलाई है। और मैं इस बात को अच्छा नहीं समझता कि उन्हें नष्ट करने तथा सांपों के समान मारने की योजना बनाई जाए। और कोई प्राणी ऐसा नहीं है कि वह खुदा की आज्ञा के बिना मर जाए या उसे पृथ्वी से निर्वासित कर दिया जाए। तो, हे दयालु रानी! तू उन से मेहरबानी कर तो अल्लाह तेरे साथ अच्छा व्यवहार करेगा। अगर तू मेरी बातों में कड़वाहट महसूस करे तो अन्देखा कर क्योंकि सच्चाई कड़वाहट से खाली नहीं होती और क्षमा की उम्मीद सिर्फ सम्माननीय लोगों से ही रखी जा सकती है।

निस्संदेह मैं मुसलमानों को देखता हूँ कि वे गरीबी से पीड़ित हैं और रईसों के वंशजों के घरों में ईंटों और पत्थरों के अलावा कुछ भी नहीं बचा है। पगड़ियां सिरों से गिर गईं और केवल सुराही और कटोरियां ही गिरवी रखने के लिए बची हैं। कभी वे दरबारियों और नौकर-चाकरों वाले और धन संपत्ति और खुफिया सैन्य बल रखने वाले होते थे और आज मैं उनके नौकर-चाकर केवल उनके हाथ और पैर ही देखता हूँ। और मैं उन्हें समय चक्र के कारण मदहोशों के समान देखता हूँ हालांकि वे मदहोश नहीं हैं, लेकिन दुःख के कारण उन पर ऐसी स्थिति आ गई है जो लोगों पर कठिनाइयों के बढ़ जाने के समय और उनसे बचने के सारे रास्ते बंद हो जाने के समय होती है। और निश्चय ही मैं ने तुझे रईस और महान पाया है, और राजाओं में तेरे तुल्य कोई नहीं मिलता और अल्लाह ने तुझे बुद्धिमानी और तत्परता प्रदान की है। तू अपनी प्रजा की कड़ी मेहनत से सहानुभूति करती है स्वयं थोड़ा-सा आराम करती है और अपना समय अपनी प्रजा की देखभाल करने और उनके हितों के बारे में सोचने में व्यतीत करती है। और तू स्वयं दुःख उठाती है ताकि लोग आराम कर सकें। मुझे विश्वास है कि तूने भारत में अपने नायबों से कहा है कि वे मुसलमानों के रईसों को दूसरों पर वरीयता दें और उन्हें विशेष सम्मान के साथ देखें और उन्हें विशेष रूप से अपने करीबी बनाएं, लेकिन नायबों ने सभी के साथ समान व्यवहार किया है और उन्होंने मुसलमानों के सम्मान के हितों का ठीक से ध्यान नहीं रखा है बल्कि उनकी दुर्दशा देखकर उनकी मदद करने का विचार भी उन्हें

नहीं आया। यह मैंने भारत में मुसलमानों की स्थिति के बारे में कुछ बताया है। और शेष रहे मूर्तियों के पुजारी जो खुद को हिंदू और आर्य कहते हैं, वे ऐसी क्रौम हैं जिन्होंने अपना जीवन दास और गुलामों के रूप में बिता दिया है। उन पर गुमनामी की स्थिति में सदियां बीत गईं। वे ऐसे गुमनाम थे कि कोई उन्हें पहचानता न था या ऐसे अप्रसिद्ध थे कि उन्हें कोई नहीं जानता था। और हे रानी जलीला! तू जानती है कि ये वे लोग हैं जिनकी शक्तियाँ नष्ट हो गई हैं और जो लंबे समय तक जंगलों में भटकते हुए फिरते रहे, यहां तक कि उनकी चमड़ी दागदार हो गई और उनकी सेनाएं काट कर रख दी गई हैं और उनकी आत्माओं की लगाम को खूब कस दिया गया है और उनकी हिम्मत तोड़ दी गई है। इसलिए जहां भी उनको हांका जाता है, वे चलते चले जाते हैं और कोई बहाना भी नहीं बनाते। वे सम्मान पाना नहीं चाहते हैं और उनके दिलों में गुलामी की कायरता है, इसलिए वे बहादुरी नहीं दिखाते हैं। इस में रहस्य यह है कि वे लगातार कई शताब्दियों तक सेवक रहे हैं न कि शासक। और वे गरीबी तथा दरिद्रता के आदि थे न कि सम्मान और शासन वाले और अन्य क्रौमों के राजा एक के बाद एक उन पर आते रहे और वे इसके आदी हो चुके हैं। मुसलमानों की स्थिति उस पानी जैसी है जो नीची और ढलान वाली ज़मीन की ओर ही बहता है और पत्थरों (मूर्ति) के पुजारियों की मिसाल लूत की क्रौम की तरह है या उन गधों की तरह है जिन्हें चलाने के लिए तुझे चाबुक या छड़ी की ज़रूरत होती है। ये (मूर्ति पूजक) सड़ी हुई हड्डियाँ हैं और वे (मुसलमान) वह क्रौम हैं जो ऊँचाई पर चढ़ते थे और चढ़ते हैं। यही मैंने देखा है और यह मैंने तुझ से केवल ईमानदारी और करुणा के साथ कहा है। निर्णय तेरे हाथ में है, और हम तो आज्ञाकारी हैं।

परिशिष्ट

कुछ विशेष परिस्थितियों के बारे में जो उन लोगों के लिए उपयोगी हैं जो मेरे और मेरे पूर्वजों और मेरे कुछ धार्मिक भाइयों की जीवनी के बारे में अधिक जानना चाहते हैं।

सभी प्रशंसाएँ अल्लाह तआला के लिए ही हैं जिस ने आध्यात्मिक विद्वानों मुहद्दसों को नबियों का वारिस बनाया और जिसने उन्हें सबसे अच्छे तरीके से प्रशिक्षित किया और उनका समस्त मैलापन दूर किया और उन्हें एक झरने के स्वच्छ पानी की तरह साफ बनाया। और उन्हें ज्ञान सिखाया तथा उनके ज्ञान को शुद्ध किया। उन्हें अध्यात्म ज्ञान दिया और उस ज्ञान को पूर्ण किया। और उनको परम ज्ञान की बुलंदियों तक पहुंचाया और उन्हें सामर्थ्य प्रदान किया। इसलिए उसने उनकी नियतों और उनके कार्यों में और उनकी कथनी और करनी में सूक्ष्म अनुरूपता पैदा की यहां तक कि वे शुद्ध और पवित्र हो गए और वे अपनी चमक दमक में शुद्ध सोने की डली की तरह दिखने लगे। और उसने उन्हें आत्मसंतुष्टि प्रदान की और उनके आध्यात्मिक प्रकाश को पूर्ण किया और उसने अपने चेहरे को लोगों के लिए खुशी और संतुष्टि का स्रोत बनाया और उन्हें अपने अतिरिक्त हर एक से अलग कर दिया। उनके मान सम्मान को ऊंचा किया। उन्हें दृढ़ता प्रदान की और उनकी बुद्धि एवं विवेक को प्रकाशमान किया। उनकी दूरदर्शिता तथा इलहाम को शुद्ध किया। उनकी कलम को तलवारों जैसे जोहर प्रदान किए, और उनके वचनों को मोतियों की तरह चमक प्रदान की। उसने उन्हें हर भय से अमन दिया और उन्हें हर चीज प्रदान की, इसलिए अल्लाह धन्य है, जो देने वालों में सबसे सम्मानित है। मेरे स्वामी, कृपालु, प्रतापी, पवित्र खातमुन्नबिय्यीन और पैगंबरों के गौरव पर आशीर्वाद और शांति (दरूद व सलाम) हो। जो सन्मार्ग प्राप्त करने और प्रतिष्ठित तथा चयनित होने और अल्लाह के बंदों पर दया करने के मामले में अगलों और पिछलों से आगे बढ़ गए हैं यहां तक कि आपको अल्लाह तआला के कुछ नामों से नामित किया गया। ऐसा कोई सम्मान

नहीं है, जिसमें आप सबसे पहले न हों और कोई ऐसी अच्छाई नहीं है, जिसकी ओर आप ने मार्गदर्शन न किया हो। आप ही प्रत्येक मार्गदर्शन के स्रोत हैं और जो कोई आपके अलावा किसी और से मार्गदर्शन मांगता है वह नष्ट होने वालों में से एक है। तत्पश्चात् हे मेरे भाइयो! मैं उचित समझता हूँ कि मैं अपनी कुछ परिस्थितियों और अपने पूर्वजों के हालत का कुछ वर्णन करूँ ताकि तुम ज्ञान और अंतर्दृष्टि में वृद्धि कर सको और मेरा सामर्थ्य केवल अल्लाह के द्वारा दिया गया है, जिसने मुझे अपनी रूह से बोलने का सामर्थ्य दिया है, वही मेरा रब्ब, मेरा मोहसिन और मेरा शिक्षक है। वही है जिसने मुझे विश्वास के प्रकाश से प्रबुद्ध किया है। तो हे मेरे भाइयो! जान लो कि मेरा नाम गुलाम अहमद है और मेरे पिता का नाम गुलाम मुर्तजा है और उनके पिता का नाम अता मुहम्मद और अता मुहम्मद पुत्र गुलाम मुहम्मद पुत्र फ़ैज मुहम्मद पुत्र मुहम्मद क़ाश्म पुत्र मुहम्मद असलम पुत्र मुहम्मद दिलावर पुत्र अलादीन पुत्र जाफ़र बेग पुत्र मुहम्मद बेग पुत्र अब्दुल बाक़ी पुत्र मुहम्मद सुल्तान था जो स्वर्गीय मिर्ज़ा हादी बेग के पुत्र थे। तो यह मेरा नाम है और ये मेरे पूर्वजों के नाम हैं, अल्लाह हमें और उन्हें क्षमा करे और वह सबसे बढ़ कर रहम करने वाला है।

यदि तुम मेरे पते की जानकारी के बारे में सूचित होना चाहते हो जो मुझे पत्र पहुँचाने के लिए आवश्यक है तो तुम अपने पत्र के लिफ़ाफ़े पर इस प्रकार लिखो:- अर्थात् क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, अमृतसर डिवीज़न, भारत के प्रांतों में से पंजाब प्रांत। उस पर मेरा नाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी लिख दो, इशाल्लाह यह मुझ तक पहुँच जाएगा और अल्लाह सबसे अच्छा पहुँचाने वाला है। अब मैं तुम्हारे सम्मुख कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन करता हूँ जिन्हें स्पष्ट रूप से बताने में मैं भलाई समझता हूँ और जिसे तुम विश्वास के साथ नहीं जानते, उसे समझाने का माध्यम हैं। तो, हे गणमान्य सज्जनों, जान लो! बेशक, मेरे पूर्वज (जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है) बड़े जागीरदार थे और उनका पेशा ज़मीनदारी था। वह हुकूमत करने वाले, बस्तियों वाले और जागीरदार थे और एक बहुत ही सम्मानित और शुद्ध नस्ल (वंश) से संबंध

रखते थे। और प्रतिष्ठावान और तेजस्वी, सरदारी वाले और शराफत वाले और अत्यंत भाग्यशाली थे, और खुदा के दरबार में सानिध्य प्राप्त, और इस क्षेत्र के आस-पास के धर्मावलम्बियों के शेष लोगों में से थे। और उनमें से कुछ प्रसिद्ध बुजुर्गों में से थे। वह उन गिने चुने लोगों में से थे जो शुद्धता तथा सच्चरित्रता की सूक्ष्मताओं और विभिन्न अच्छाइयों का ध्यान रखने वाले थे, और वह उन लोगों में से एक थे जिनके पास बहुत समय था, जिनके करामत और निशान और असाधारण चमत्कार देखे जाते थे, और वे उपासना करने वाले और दुनिया से अलग थलग थे। वह इस देश में अविश्वासियों और दुराचारियों के बीच रहे। अतः उन पर बड़ी बड़ी विपत्तियाँ आईं, जिनका हम पाठकों के लिए पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, और हम उनके बाद एक कमजोर पीढ़ी थे और कमजोर समझे जाने वालों में से थे। ...और हमारे बाप दादाओं को अपने घरों से निकाल दिया तो मेरे दादा इधर-उधर भटकते हुए ही मृत्यु को प्राप्त हो गए। और मैंने सुना है कि उनकी मृत्यु जहर दिए जाने से हुई थी। और मेरे पिता एक परदेश में एक यात्री के समान अनाथ हो गए, जिसका मार्गव्यय समाप्त हो चुका हो, और ऐसा खाली हाथ हो जैसे अंधेरी रात में दुर्भाग्य से पीड़ित यात्री होता है जो परेशान व्यक्ति के समान शहरों की गलियों में घूमता है और नहीं जानता कि दायां किधर है और बायां किधर। उन दिनों, मेरे पिता का पेशा यात्रा की कठिनाइयों को सहन करना या किताबें पढ़ना था। या मुझे किताबें पढ़ना रह गया था और मैंने अपने स्वर्गीय पिता जी से बार-बार सुना, वह कहते थे कि मैंने जो कुछ भी पढ़ा है, वह कठिनाइयों और बेवतनी के दिनों में और घर से दूर रहकर पढ़ा है। वह अक्सर कहा करते थे कि मैंने खास और आम तमाम लोगों को परखा है जैसे एक आपदा ग्रस्त व्यक्ति परखता है। और मैंने उन अवांछनीय चीजों को देखा जिनसे मैं कतराता था और वे भयभीत लोग थे। कभी-कभी मेरे पिता बिना ठिकाने के एक पथिक की तरह इधर-उधर भटकते रहे। क्योंकि उन्हें पूर्वजों की भूमि से निकाल दिया गया था और लौटने से रोका गया था। और वे जुल्म करने वालों के हमले, कष्ट देने वालों की पीड़ा, और हत्यारों के

आक्रमण, लुटेरों के शिकार, हमलावरों के निवाले, और अत्याचारियों के हाथों में कैदी थे। फिर लंबे समय के बाद और दुख का सामना करते हुए, उन्होंने आजीविका के साधन की तलाश में कश्मीर जाने का फैसला किया कि संभवतः अल्लाह तआला उनकी मुसीबत को दूर करे और उनकी बीमारी को ठीक करे और उनकी तक्रदीर दुःख और दर्द के बाद आराम के दिन ले आए और वे खुशहाल हो जाएं। और उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि मेरे रब ने मुझे वजूद का लिबादा पहनाया और वह मुझे छिपे हुए कोनों से प्रदर्शन स्थल पर ले आया और मैं एक पवित्र धार्मिक परिवार में पैदा हुआ था। ये वह दिन थे जब अल्लाह ने मेरे पिता के भय को अमन में बदल दिया और तंगी को दूर कर दिया और वे समृद्ध लोगों में से हो गए और शासक ने उन्हें आश्रय दिया और मेरे पिता के कष्ट और भटकने को देख कर उनका दिल नरम हो गया। तो जब उस शासक ने उनसे बात की, और उनके खुदाई ज्ञान और बुद्धि और महान चरित्र को देखा, तो उसकी दूरदर्शिता ने गवाही दी कि वह बहुत चमकदार मोती हैं, इसलिए उसने तुरंत आपकी मदद करने और आपको अपना सानिध्य प्रदान करने का इरादा किया और अपने विशेष समूह में सम्मिलित कर लिया और कहा, कि डर मत। वास्तव में तू आज से हमारे सम्माननीय साथियों में से एक है। इस प्रकार अल्लाह ने मेरे पिता को आशीर्वाद दिया और आपको उनकी दृष्टि में प्रिय बना दिया। और आपको सम्मान और लोकप्रियता और आराम दिया और आपको इनाम तथा अनुग्रह के साथ देखा और आपको आराम पहुँचाया। यह अल्लाह की कृपा और उसकी रहमत थी और वह बड़ा रहम करने वाला है।

और मैंने अपनी माँ को कई बार यह कहते सुना है कि जिस दिन से तेरा जन्म हुआ, उस दिन से हमारे दिन बदल गए उससे पहले हम कठिनाइयों, मुसीबतों और विभिन्न प्रकार के दुखों में फंसे हुए थे। तेरे आगमन से हमारे घर हर भलाई आई और तू धन्य लोगों में से है। मेरे पिता एक अवस्था से दूसरी अवस्था में और एक स्थान से दूसरे स्थान पर तब तक उन्नति करते गए जब तक कि वह इकबाल की ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच गए। अल्लाह ने मेरे पिता को मर्यादा

और मान सम्मान प्रदान किया और कोई कमी नहीं छोड़ी और आप धनवानों में से एक बन गए। तब मातृभूमि की याद और छोड़ी हुई चरागाहों और हवेलियों के लिए प्रेम की स्मृति ने आप पर विजय प्राप्त की। इसलिए आपने परदेस और मातृभूमि से दूरी के तंबू उखाड़ दिए और अपने परिवार तथा रिश्तेदारों के पास लौटने के लिए घोड़े पर काठी कसी, और सकुशल अपने रिश्तेदारों के पास हंसी खुशी, मालो-दौलत लेकर सुख-समृद्धि के साथ लौटे। और यह अल्लाह तआला का काम है, जिसने हमारे दुख-दर्द हमसे दूर कर दिए, और हम पर कृपा की, और स्वयं हमारा संरक्षक बन गया, और हम पर उपकार किया और वह सबसे बढ़कर उपकार करने वाला है।

फिर मेरे पिताजी ने इरादा किया कि अपने भाग्य को कृषि में आजमाएं ताकि वह कष्ट दायक यात्रा से और अपने परिवार से दूर कर देने वाली जुदाई से मुक्ति पाएं। तो आपने अपने लिए उचित समझा कि एक जागीर ले कर उस में खेती बाड़ी करें। फिर आप ने अल्लाह की कृपा से अपनी आर्थिक अवस्था को अच्छा बना लिया और सुगमता से जीविका का प्रबंध कर लिया। आपको कुछ बस्तियां वापस लौटा दी गईं जो आपके पूर्वजों से भूतकाल में छीन ली गई थीं। अल्लाह ने आपको अत्यंत कमजोरी के बाद शक्ति दी और अल्लाह ने आपके लिए उन चीजों में बरकत रख दी जो उसके पहले बहुत ही बुरी हालत में थीं और यह सब कुछ खुदा की कृपा और रहमत से हुआ। यद्यपि यह बात अकल पर पर्दा पड़े लोगों पर गुप्त है ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात पूरी हो कि आने वाला मौऊद ज़मींदारों में से होगा। यह मेरे जन्म तथा छोटी आयु के दिनों के कुछ हालात हैं और जब मैं बड़ा हुआ और जवानी में क़दम में रखा तो मैंने कुछ फ़ारसी पढ़ी और कुछ अरबी व्याकरण की पुस्तकें और कुछ सूक्ष्म ज्ञान (दर्शन और तर्कशास्त्र इत्यादि) और कुछ चिकित्सा संबंधी पुस्तकें पढ़ीं। मेरे पिता बहुत बड़े वैद्य थे और इस कला में बड़ी महारथ रखते थे। अतः उन्होंने मुझे इस विषय की कुछ पुस्तकें पढ़ाई और उस कला में महारत प्राप्त करने के लिए मुझे खूब प्रेरणा देते रहे। अतः जितना अल्लाह

ने चाहा मैंने पढ़ा फिर मेरे दिल में इस ओर रुचि न रही। और इसी तरह मुझे हदीस, उसूल और फिका (धर्मशास्त्र) के ज्ञान में गहराई में जाने का इतना ही अवसर मिला जैसे मूसलाधार बारिश के मुकाबले पर फुहार होती है और मेरा दिल इस तरफ आकर्षित न हुआ कि मैं इन ज्ञानों को सीखने के लिए पूरी तरह कमर कस लूं और यह कि मैं उनकी औपचारिक डिग्री प्राप्त करूं या मुहद्दसों की तरह हदीस की किताबों के लिए डिग्रियों का सिलसिला कायम करूं। मैं रूहानी लोगों के गिरोहों को पसंद करता था और मैं अपने दिल को कुरआन की ओर तथा उसके सूक्ष्म ज्ञानों, बिंदुओं और अध्यात्म ज्ञान की ओर आकर्षित पाता था। और पवित्र कुरआन की मोहब्बत मेरे दिल में बस गई थी और मैंने देखा कि वह (कुरआन) मुझे भिन्न भिन्न प्रकार के अध्यात्म ज्ञान और विभिन्न प्रकार के फल देता है जो न कभी समाप्त होते हैं और न कोई उनसे रोकता है और मैंने देखा कि वह ईमान को मज़बूती देता है और विश्वास में बढ़ाता है। और अल्लाह की क़सम वह ऐसा दुर्लभ मोती है जिसका ज़ाहिर भी नूर है और आंतरिक भी नूर है, उसके ऊपर भी नूर है और नीचे भी नूर है और उसके हर शब्द और हर अक्षर में नूर है। वह एक रूहानी बाग है जिसके गुच्छे खूब झुके हुए हैं और उसके अंदर नेहरें बहती हैं। सौभाग्य का हर प्रकार का फल उसमें पाया जाता है और हर रोशनी उससे ली जाती है उसको छोड़ कर जो कुछ है वह कांटों की सेज है। उसके अध्यात्म लाभ के घाट बड़े सुंदर हैं अतः पीने वालों के लिए खुशख़बरी है। निस्संदेह उसने स्वयं मेरे दिल में उसके कुछ नूर डाल दिए हैं जिनको किसी और ढंग से प्राप्त करना मेरे लिए संभव नहीं था।

ख़ुदा की क़सम अगर कुरआन न होता तो मेरे लिए ज़िन्दगी का कोई मज़ा न होता। मैंने उसका हुस्न एक लाख यूसूफ से भी अधिक पाया अतः मैं उसकी ओर पूरी तरह से आकर्षित हुआ और मेरे दिल में वह रच बस गया। उसने मेरी इस प्रकार परवरिश की जिस प्रकार कि माँ के पेट में बच्चे की परवरिश की जाती है और मेरे दिल पर उसका एक अजीब प्रभाव है और उसकी सुंदरता मुझे स्वयं से बेसुध कर देती है और मुझे कश्फ से मालूम हुआ है कि पवित्र स्वर्ग

को कुरआन के पानी से सींचा जा रहा है। यह एक ऐसा सागर है जिसमें जीवन का पानी मौजें मार रहा है जो इसे पीता है वह जीवित हो जाता है, बल्कि वह दूसरों को जीवित करने वाला बन जाता है। अल्लाह की क्रसम! मैं उसका चेहरा किसी भी चीज़ से ज़्यादा ख़ूबसूरत देखता हूँ। उस चेहरे को सुंदरता के सांचे में ढाला गया है और पूर्ण सौंदर्य का वस्त्र उसे पहनाया गया है। मैं उसे एक सुंदर कद-काठी, मुलायम गालों और उचित अंगों के साथ पूरी तरह से आनुपातिक पाता हूँ। उसे हर तरह की सुंदरता और हर तरह का नूर और प्रकाश भरपूर मात्रा में दिया गया है। वह इतना सुंदर है कि उसे पसंदीदा अनुपात और आकर्षक सुंदरता के साथ सही अनुपात दिया गया है जो एक प्रेमी में होना चाहिए। उदाहरण के लिए, बड़ी और सुंदर आंखें, चौड़ी भौहें, लाल गाल, पतली कमर, चमकीले दांत नोकीले दांत, खड़ी नाक, आधी खुली आँखें, कोमल पोरे, लंबे और सुंदर बाल, और हर वह गुण है जो दिल को मोह ले और आंख को आकर्षित करे और एक सुंदर व्यक्ति में सराहनीय माना जाता है। कुरआन के अलावा अन्य सभी पुस्तकें दोषपूर्ण रचनाएं हैं या एक गर्भवती महिला के गर्भ से गिरा हुआ एक अधूरा नाल (लोथड़ा) है कि अगर आंख है तो नाक नहीं और अगर नाक है तो आंख नहीं। और तू उन किताबों के चेहरों को धिनौने और बदबूदार रूप में देखता है, और उन अन्य किताबों का उदाहरण एक ऐसी औरत की तरह है, कि जब वह अपने चेहरे से अपना बुर्का और नकाब उतारती है, तो क्या देखते हैं कि वह ऐसी कुरूप है कि जिसकी आंखें चुंधिया गई हैं, गालों पर काले धब्बे पड़े हैं, गंजेपन से बाल झड़ गए हैं, दांत पीले हो गए हैं, गालों की लाली पीली पड़ गई है, उसका चौदहवीं के चंद्रमा जैसा चहरा अँधेरी रातों की तरह अपनी रोशनी खो चुका है और उसका चाँद टूट गया है और उसकी चमक अन्धकार में बदल गई है, और बुढ़ापे ने उसकी शक्ति को क्षीण कर दिया है। तो वह गली सड़ी, दुर्गंधयुक्त और दुर्गंध फैलाने वाली लाश के समान है जो लोगों की नाक को कष्ट देता है और आंखों के आनंद को बर्बाद करता है। उस महिला के घरवाले अपनी बेइज्जती पर शर्म से रोते नज़र आ रहे हैं और साफ-सफाई पसंद करने

वाले हैं वह उसे मिट्टी में गाड़ देना चाहते हैं या अपने पास से किसी गड़ढे में फेंक देना चाहते हैं। अतः सभी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं और फिर मैं कहता हूं कि सभी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं, जिसने मुझे कुरआन के प्रकाश और आशीर्वाद का भरपूर हिस्सा दिया है, और उसके बहुमूल्य मोतियों से मेरी गरीबी को दूर किया और उसके फलों से मेरा पेट भर दिया है। और उसने मुझे बाहरी और आंतरिक नेमतें (आशीष) प्रदान की हैं। और मुझे अपनी ओर आकर्षित लोगों में से बनाया है। मैं जवान था अब बूढ़ा हो गया हूं। मैंने जो भी दरवाज़ा खोलना चाहा, वह मेरे लिए खोला गया। मैंने जो भी वरदान माँगा वह मुझे मिल गया, जो मैं जानना चाहता था उसका सत्य मुझ पर प्रकट किया गया। मैंने जब भी दर्द के साथ दुआ की वह स्वीकार हो गई और यह सब मेरे उस प्रेम के कारण है जो मुझे कुरआन से है और अपने आका और मौला सैय्यदुल मुर्सलीन (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ है। हे अल्लाह, तू आकाश के तारों और धरती के कणों की गणना के बराबर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेज। उसी मोहब्बत के कारण जो मेरे स्वभाव में है अल्लाह तआला आरंभ से ही मेरे साथ है जब मैं पैदा हुआ और जब मैं अपनी मां की गोद में दूध पीता बच्चा था और जब मैं विद्यार्थियों के साथ पढ़ा करता था। और जब मैं 20 साल की आयु को पहुंचा तो उस समय मेरे दिल में यह प्रेम डाला गया कि मैं धर्म की सहायता करूं और हिंदू, ब्राह्मणों तथा पादरियों से शास्त्रार्थ करूं। मैंने उन शास्त्रों के बारे में बहुत ही लाभदायक पुस्तकें भी लिखीं। उन में से मेरी एक पुस्तक बराहीन-ए-अहमदिया है जो एक दुर्लभ पुस्तक है। उसकी शैली पर पहले जमानों में कोई पुस्तक नहीं लिखी गई। अतः जिसे संदेह हो वह उसे पढ़ ले उसमें मैंने नास्तिकों के कथनों (विचारधाराओं) पर अकाट्य प्रमाणों की काटने वाली तलवारें सोंती हैं और मैंने असत्य का समर्थन करने वाले शैतानों पर उन (तर्कों) के शोले बरसाए हैं। इस सोंती हुई तलवार से हर शत्रु का सिर झुका दिया गया है। और नक़ल तथा अकल के विशेषज्ञों और न्यायप्रिय लोगों के सम्मुख उन शत्रुओं की कलाई खुल चुकी है। इस पुस्तक बराहीन-ए-अहमदिया में

ज्ञान के सूक्ष्म तथा दुर्लभ बिंदु मौजूद हैं। और पवित्र सही इल्हाम हैं और महान कशफ उनके अवसरानुकूल हैं और हर वह चीज़ उस में पाई जाती है जो इस्लाम धर्म के अध्यात्म ज्ञान के मोतियों को चमक प्रदान करती है। इसी प्रकार मेरी और भी पुस्तकें हैं जो गुणवत्ता में उसके समान हैं उनमें से सुरमा चश्मा आर्य, तौजीहे मराम, इज़ाला औहाम और फतेह इस्लाम हैं। एक अन्य पुस्तक जो इन सब से आगे बढ़ गई है मैंने उसको इन्हीं दिनों में लिखा है उसका नाम दाफिउल वसाविस (आईना कमालाते इस्लाम) है जो उन लोगों के लिए बहुत ही लाभदायक है जो इस्लाम का सौंदर्य देखना चाहते हैं और विरोधियों के मुंह बंद करना चाहते हैं। यह वह पुस्तकें हैं जिनकी ओर हर मुसलमान मोहब्बत और प्रेम से देखता है और उनके अध्यात्म ज्ञान से लाभान्वित होता और मुझे स्वीकार करता है और मेरे दावे का सत्यापन करता है सिवाय उपद्रवियों की औलाद के जिनके दिलों पर अल्लाह तआला ने मुहर लगा दी है तो वह मुझे स्वीकार नहीं करते।

और जब मैं अपनी पुख्ता उम्र को पहुंचा और 40 वर्ष का हो गया तो मेरे पास मेरे रब की ओर से उपकार की सुगंध लेकर वह्यी (ईश वाणी) की ठंडी हवा आई ताकि मेरे अध्यात्म ज्ञान और मेरे विश्वास को बढ़ाए और मेरे पर्दे उठ जाएं और ताकि मैं विश्वास करने वालों में से हो जाऊं। तो सबसे पहले जिस चीज़ का द्वार मुझ पर खोला गया वह सच्चे सपने थे। अतः मैं जो स्वप्न भी देखता था वह प्रकाशमान दिन के समान स्पष्ट तौर पर पूरा हो जाता था और मैंने उन्हीं दिनों में 2000 के लगभग या उससे अधिक सच्चे सपने देखे उनमें से कुछ मेरी याददाश्त में अब तक सुरक्षित हैं और बहुत से मैं भूल गया हूं संभवतः अल्लाह तआला फिर किसी समय दोबारा वह स्वप्न दिखा दे और हम इसकी उम्मीद रखते हैं। मैंने एक बार जवानी के प्रारंभिक दिनों में जब कि स्वभाव का मैलान खेलकूद की ओर होता है, सपने में देखा कि मैं एक मकान के अंदर गया हूं जिसमें मेरे नौकर चाकर मौजूद हैं। मैंने उन्हें कहा कि मेरे मकान को सही और मेरे बिस्तर को पाक साफ़ करो क्योंकि अब मेरा समय आ गया है, इसके बाद मेरी आंख खुल गई। उस समय मुझे अपनी जान का खतरा महसूस हुआ और

मेरा विचार इस ओर गया कि अब मेरे देहांत का समय आ गया है। और जवानी के प्रारंभिक दिनों में एक रात मैंने सपने में देखा कि मैं एक भव्य मकान में हूँ जो बहुत पवित्र और साफ है और उसमें आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चर्चा हो रही है। मैंने लोगों से पूछा कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहां विराजमान हैं तो उन्होंने एक कमरे की ओर संकेत किया तो मैं दूसरे लोगों के साथ मिलकर उस कमरे के अंदर चला गया और जब मैं हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुआ तो हुज़ूर बहुत प्रसन्न हुए और आपने मुझसे बेहतर तौर पर मेरे सलाम का उत्तर दिया। आपका सौंदर्य और कोमलता और आपकी प्यार भरी निगाह मुझे अब तक याद है और वह मुझे कभी भूल नहीं सकती। आप की मोहब्बत ने मेरा मन मोह लिया और आपके सुंदर चेहरे ने मुझे अपना प्रेमी बना लिया। उस समय आपने मुझे फरमाया कि हे अहमद! तुम्हारे दाएं हाथ में क्या चीज़ है? जब मैंने अपने दाएं हाथ की ओर देखा तो मालूम हुआ कि मेरे हाथ में एक पुस्तक है। और वह मुझे अपनी ही एक पुस्तक मालूम होती है। मैंने निवेदन किया कि हुज़ूर यह मेरी एक पुस्तक है। आपने पूछा: इस पुस्तक का क्या नाम है तब मैंने हैरान होकर किताब को दोबारा देखा तो उसे उस किताब के समान पाया जो मेरे पुस्तकालय में थी और जिसका नाम "कतबी" है। मैंने कहा या रसूल अल्लाह उसका नाम कतबी है। फरमाया अपनी यह किताब कतबी मुझे दिखाओ। जब हुज़ूर ने उसे लिया तो हुज़ूर का मुबारक हाथ लगते ही वह एक सुंदर फल बन गयी जो देखने वालों के लिए पसंदीदा थी। जब हुज़ूर ने उसे फलों के समान चीरा तो उससे बहते पानी की तरह शुद्ध शहद निकला और मैंने शहद की ठंडक हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाहिने हाथ पर उंगलियों से कोहनियों तक देखी और शहद हुज़ूर के हाथ से टपक रहा था और आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मानो मुझे इसलिए दिखा रहे हैं ताकि मुझे आश्चर्यचकित करें। फिर मेरे दिल में यह विचार डाला गया कि द्वार की चौखट के पास एक मुर्दा पड़ा है जिसका जीवित होना अल्लाह तआला ने इस फल के द्वारा मुक़द्दर किया हुआ है और यही मुक़द्दर है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसको जीवन प्रदान करें।

मैं इसी विचार में था कि अचानक वह मुर्दा जीवित होकर मेरी ओर दौड़ता हुआ मेरे पास आ गया और मेरे पीछे खड़ा हो गया परन्तु उसमें कुछ कमजोरी थी, मानो वह भूखा था। तब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्कुरा कर मेरी ओर देखा और उस फल के टुकड़े किए और एक टुकड़ा उनमें से हुजूर ने स्वयं खाया और शेष मुझे दे दिए। उन सब टुकड़ों से शहद टपक रहा था और फरमाया: हे अहमद इस मुर्दा को एक टुकड़ा दे दो ताकि उसे खा कर वह शक्ति प्राप्त करे। मैंने दिया तो उसने लालचियों की तरह उसी जगह उसे खाना आरंभ कर दिया। फिर मैंने देखा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुर्सी ऊंची हो गई है यहां तक की छत के निकट जा पहुंची है और मैंने देखा कि उस समय आपका चेहरा ऐसे चमकने लगा कि मानो उस पर सूर्य और चंद्रमा की किरणें पड़ रही हों। मैं आप के मुबारक चेहरे को देख रहा था और खुशी तथा भाव विभोर अवस्था के कारण मेरे आंसू बह रहे थे। फिर मैं जाग गया और तब भी मैं रो रहा था। फिर अल्लाह ने मेरे दिल में यह बात डाली कि वह मरा हुआ व्यक्ति इस्लाम है और अल्लाह उसे अब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आध्यात्मिक कृपा से अब मेरे हाथ पर फिर से जीवित करेगा। और तुम्हें क्या पता शायद यह समय निकट हो। अतः तुम इसकी प्रतीक्षा करो। और इस सपने में सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वयं अपनी वाणी से, अपने प्रकाश से, और अपने (पवित्र उद्यान के) फलों के उपहार से मुझे प्रशिक्षित किया। इसलिए, मैं आपका शिष्य हूं, बिना इस बात के कि मेरे और आपके बीच कोई माध्यम हो। और ऐसी ही मुहद्दसीन की स्थिति होती है। और एक दिन जब मैंने शाम की फर्ज़ (नमाज़) और सुन्नतें पूरी कीं और मैं अभी जाग ही रहा था, मुझे नींद या ऊँघ नहीं आई और मैं सो नहीं रहा था अतः मैं उसी स्थिति में था जब अचानक मैंने दरवाज़े पर दस्तक सुनी। तो मैंने देखा कि दस्तक देने वाले तेज़ी से मेरी ओर आ रहे हैं, अतः जब वे मेरे पास आए, तो मैंने उन्हें पांच धन्य लोगों के रूप में पहचाना अर्थात् हज़रत अली, उनके दोनों बेटे (हसन और हुसैन) और उनकी पत्नी फातिमा अल-जुहरा और सैय्यद अल-मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, आए हैं। हे मेरे अल्लाह तू

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और आप की औलाद पर क्रयामत के दिन तक दुरूद और सलाम भेज और मैंने देखा कि हज़रत फ़ातमा ने मेरा सिर अपनी जांग पर रखा और उन्होंने दया पूर्वक मुझे देखा जिसे मैंने आपके चेहरे से पहचाना तो मैं अपने दिल में समझ गया कि मैं हुसैन के समान हूँ और मैं हज़रत हुसैन से उनके कुछ गुणों और जीवनी में समानता रखता हूँ। और अल्लाह भली-भांति जानता है और वह सब से बढ़कर जानने वाला है। और मैंने देखा कि अली रज़ी अल्लाह अन्हों मुझे एक किताब दिखाते हैं और कहते हैं कि यह कुरआन की व्याख्या है जिसको मैंने लिखा है और मुझे ख़ुदा ने आदेश दिया है कि मैं आपको दूँ। तब मैंने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम देख रहे थे और सुन रहे थे परन्तु आप कुछ बोलते नहीं थे। मानो आप मेरे कुछ गमों के कारण गमगीन हैं। और मैंने जब आपको देखा तो आपका वही चेहरा था जो मैंने पहले देखा था। आपके नूर से घर प्रकाशमान हो गया। अतः पवित्र है वह ख़ुदा जो नूर और नूरानी अस्तित्वों का सृष्टा है।

और एक रात मैं कुछ लिख रहा था तो इस दौरान में सो गया तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा और आपका चेहरा चौदहवीं के चांद के समान था। अतः आप मेरे निकट हुए मानो कि आप मुझसे गले मिलना चाहते हैं। फिर आपने मुझे गले लगाया और मैंने देखा कि नूर (तेज) आपके चेहरे से फूट रहे हैं और मुझ पर उतर रहे हैं, मैं उन को महसूस होने वाले नूरों की तरह देख रहा हूँ। यहां तक कि मुझे विश्वास हो गया कि मैं आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं बल्कि शारीरिक आंखों से उन नूरों को महसूस कर रहा हूँ। मैंने नहीं देखा कि आप गले लगाने के बाद मुझसे अलग हुए हों और न यह देखा कि आप चले गए हों। फिर उन दिनों के बाद मुझ पर इलहाम के द्वार खोले गए मेरा रब मुझसे संबोधित हुआ और फरमाया :-

يا احمد بارك الله فيك- الرَّحْمَنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ- وَ لَتَسْتَبِينَ سَبِيلَ الْمَجْرَمِينَ- قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ وَ

انا اول المؤمنين يا عيسى اتي متوفيك ورافعك الي و مطهرك من الذين كفروا وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا الى يوم القيامة- انك اليوم لدينا مكين امين- انت متي بمنزلة توحيدى و تفريدى فحان ان تعان و تعرف بين الناس ويعلمك الله من عنده تقيم الشريعة- و تحيى الدين انا جعلناك المسيح بن مريم- و الله يعصمك من عنده ولو لم يعصمك الناس- والله ينصرك ولو لم ينصرك الناس- الحق من ربك فلا تكونن من الممترين- يا احمدي انت مرادى و معى- انت وجيه فى حضرتى- اخترتك لنفسى- قل ان كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله و يغفر لكم ذنوبكم و يرحم عليكم وهو ارحم الراحمين-

अनुवाद :- हे अहमद! खुदा ने तुझे में बरकत रख दी है। रहमान खुदा ने तुझे कुरआन सिखाया ताकि तू उन लोगों को सावधान करे जिनके बाप-दादा सावधान नहीं किए गए। यहां तक कि मुजरिमों का मार्ग स्पष्ट हो जाए। तू कह दे कि मैं खुदा की ओर से आदेशित (मामूर) हूं और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूं। हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु दूंगा और तुझे अपनी ओर उठाऊंगा और काफिरों के हर एक आरोप और इल्जाम से तुझे पवित्र करूंगा और तेरे अनुयायियों को उन लोगों पर जो इन्कार करते हैं कयामत के दिन तक प्रभुत्व प्रदान करूंगा। आज तू मेरे निकट सम्मानित और अमीन है। तू मेरी तौहीद और एकत्व जैसा है तो अब वह समय आ गया है कि तेरी मदद की जाए और तुझे लोगों के बीच प्रसिद्ध किया जाए और अल्लाह तुझे अपनी तरफ से सिखाएगा। तू शरीयत के कानून की स्थापना करेगा और धर्म को पुनर्जीवित करेगा। हमने तुझे मसीह पुत्र मरियम बनाया है, और अल्लाह तेरी रक्षा करेगा, भले ही लोग तेरी रक्षा न करें, और अल्लाह तेरी मदद करेगा, भले ही लोग तेरी मदद न करें। यह तेरे रब की ओर से सच्चाई है, इसलिए तू संदेह करने वालों में से मत बन। हे मेरे अहमद! तू मेरा उद्देश्य है और मेरे साथ है। तू मेरी दरगाह में प्रतिष्ठित है। मैंने

तुझे अपने लिए चुन लिया है तू कह दे कि, "यदि तुम ईश्वर से प्रेम रखते हो, तो आओ और मेरा अनुसरण करो, ताकि ईश्वर भी तुमसे प्यार करे और तुम्हारे पापों को क्षमा करे और तुम पर दया करे, और वह सबसे अधिक दयालु है।" ये मेरे कुछ इल्हाम हैं। और मेरे समस्त इल्हामों में से यह भी एक इल्हाम है कि:

“انا جعلناك المسيح بن مريم”

अर्थात- निश्चय ही हमने तुझे मसीह इब्न मरियम बनाया है। और अल्लाह की क्रसम! मैं एक समय से जानता था कि निस्संदेह मुझे मसीह इब्ने मरियम बनाया गया है और मैं उसके स्थान पर अवतरित हुआ हूं परन्तु मैंने उसके अर्थ करते हुए उसको छुपाए रखा बल्कि मैंने अपनी आस्था भी न बदली और मैं उसी पहली आस्था पर मजबूती से डटा रहा। मैंने 10 साल इज्जहार करने में विलंब किया और मैंने जल्दबाजी नहीं की और न मैंने किसी दोस्त और दुश्मन और न किसी और को उसकी खबर दी। यदि तुम संदेह में हो तो हिंदुस्तान के उलमा से पूछ कर देख लो कि मेरे इस इल्हाम - "या ईसा इन्नी मुतवफ्फिका" (अर्थात हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा) पर कितना समय बीत गया है या बराहीने अहमदिया पढ़ लो। और मैं अल्लाह तआला के अधिकार, उसकी रजामंदी और आदेश का प्रतीक्षक था यहां तक कि मुझ पर यह इल्हाम बार-बार हुआ और बात पूरी तरह स्पष्ट हो गई और खुदा तआला की ओर से निरंतर सूचित किया जाने लगा और यह इल्हाम इतनी अधिकता से हुआ जिसकी संख्या खुदा तआला ही जानता है और मुझे इस ऐलान के लिए इन शब्दों में संबोधित किया गया कि-فاصدع بما توامر- अर्थात तू खोलकर वर्णन कर दे जिसका तुझे आदेश दिया गया है और ऐसे लक्षण प्रकट हुए जिनको औलिया और चयनित लोगों की अकल ही पहचानती हैं। और सुबह पूर्णता चमक उठी और इस मामले का बार-बार कड़ा आदेश दिया गया और हृदय संतुष्ट हो गया और दिल को तसल्ली हो गई और दिल ने फतवा दिया कि यह स्पष्ट हो गया कि यह अल्लाह तआला की वही है और शैतानों की तरफ से कोई मिलावट नहीं है। फिर मैंने केवल इसी को पर्याप्त नहीं समझा बल्कि उसको मैंने अल्लाह की किताब कुरआन और सुन्नत के आलोक में जांचा परखा

और मैंने अल्लाह से दुआ की कि वह मेरी सहायता करे। अतः अल्लाह तआला ने उन दोनों पवित्र कुरआन और सुन्नत में मुझे सूक्ष्म दृष्टि प्रदान की और मुझे सहायता प्राप्त लोगों में सम्मिलित किया और मुझ पर कुरआन तथा हदीस के स्पष्ट प्रमाणों से प्रकट हो गया कि मसीह इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और अपने नबी भाइयों के साथ जा मिले हैं। मैं जानता था कि मसीह की मृत्यु स्पष्ट और अकाट्य कुरआन तथा हदीस के प्रमाणों से सिद्ध है और मैं यह भी जानता था कि मेरे इलहामों में कोई अस्पष्टता नहीं और न संदेह और न मिलावट है और उसके साथ मेरा यह भी विश्वास था कि मुसलमानों की मसीह के उतरने के बारे में आस्था सत्य है जिसमें कोई संदेह की बात नहीं इस कारण मेरे लिए इन दोनों आस्थाओं की समानता बैठाना कठिन था। और मैं हैरान-परेषान था इसलिए, मैं केवल ग्रंथों के प्रमाणों से संतुष्ट नहीं हुआ क्योंकि हदीसों में मैंने मतभेद के धुएं की हल्की सी गंध महसूस की थी, भले ही हमारे हाथों में निश्चित और मजबूत तर्क थे, और पूरा कुरआन भी हमारे साथ था, लेकिन मैं इसे पूरी तरह से स्पष्ट करना चाहता था जो हर तरफ से चमकता हो और जो दृढ़ विश्वास तक पहुंचा दे, इसलिए मैंने अल्लाह से दुआ की और खुद को उसके सामने डाल दिया ताकि मुझ पर 'नुजूल' (मसीह के पुनर्आगमन) का रहस्य प्रकट हो सके और दज्जाल की वास्तविकता प्रकट हो ताकि सुन कर विश्वास कर सकूं और आंखों देखे के समान देखूं। तब उसकी कृपा मुझे सिखाने और समझाने हेतु आकर्षित हुई और मुझे इलहाम द्वारा बताया गया कि 'नुजूल' (उतरना) अपने मूल अर्थ में सत्य है, लेकिन मुसलमान उसकी वास्तविकता को नहीं समझे। क्योंकि अल्लाह तआला ने उसको छुपाने का इरादा किया हुआ था। अतः लोगों की इस समझ पर उसकी तक्रदीर और योजना और आजमाइश विजयी हो गई। अतः उसने उनके ध्यान को आध्यात्मिक वास्तविकता से शारीरिक विचारों की ओर फेर दिया और वह इसी पर संतुष्ट हो गए और यह खबर उस दाने के समान जो अपनी बाली में रह जाता है कई सदियों तक छुपी और गुप्त रही यहां तक कि हमारा युग आ गया। इस्लाम असहाय हो गया

था और गुनाहों की अधिकता हो गई थी और सलीब के पुजारियों (ईसाइयों) का धर्म हावी हो गया था। अतः उन्होंने मुसलमानों पर मनगढ़त आरोपों और झूठ के साथ आक्रमण किए और उन्होंने उन आशिकों के खून बहाने को हलाल करार दे दिया जो मक्का मदीना के शिकार की तरह सुरक्षित थे, हम पर इतनी मुसीबतें ढाई गईं जिनको हम गिन नहीं सकते। धरती हमारे लिए तंग हो गई और हमारी आंखें सहायता करने वालों की प्रतीक्षा करते करते सूज गईं। अल्लाह ने इरादा किया कि वह सुबह को उदय करे और गुप्त अर्थों से पर्दा हटा कर सत्य के समस्त अभिलाषियों की सहायता करे और मोमिनों के दिलों को स्वस्थ करे। और हम उसके अधिक हकदार तथा योग्य थे क्योंकि हमने अपनी आंखों से मसीह की प्रशंसा में अतिशयोक्ति और मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध अभद्रता को देखा था और हमने (मसीह के बारे में) शिर्क तथा झूठ के साथ-साथ (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध) गाली गलौज भी देखी थी और हम दो प्रकार की आगों से जलाए गए थे। अतः अल्लाह ने हम पर वास्तविकता खोल दी ताकि आग हम पर ठंडी और सलामती वाली हो जाए और लाचारों की सहायता करना अल्लाह पर अनिवार्य है। अतः मेरे रब ने मुझे सूचना दी कि (मसीह का) उतरना एक रूहानी मामला है न कि शारीरिक और उसका उदाहरण पहले लोगों की घटनाओं में बीत चुका है और अल्लाह अपनी सुन्नत और अपनी आदतों को नहीं बदलता और न ही अल्लाह किसी पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ डालता है। वह ऐसे ही करता है और वह बिगड़े काम बनाने वालों में सर्वोत्तम है। इसमें भेद यह है कि विनाशकारी हवाओं के चलने और असुरक्षित मार्गों के गढ़े जाने के समय नबियों का इस दुनिया की ओर प्रतिरूपी तौर पर नुजूल और उतरना होता है। अतः जब किसी उपद्रव के पैदा होने से जो किसी नबी को कष्ट देता है उस नबी के प्रतिरूप के उतरने या आने का समय आता है तो वह नबी अपने रब से अपने नूरों के मवाद (अवशेष) अपने इरादों और दृष्टिकोण के द्योतक (मज़हर) और अपनी आध्यात्मिकता के वारिस की मांग करता है ताकि वह द्योतक लोगों को जागरूक करने और प्रोत्साहित करने वाला हो। तो (उस नबी)

की खातिर उसका रब अपने बंदों में से एक बंदे को तैयार करता है और उस नबी के इरादे (उस बंदे) के दिल में डाल देता है। फिर यह बंदा उस नबी से अत्यंत समानता रखने वाला और अपने जौहर के दृष्टिकोण से उससे निकटतम होता है और रंग रूप के दृष्टिकोण से उससे ऐसी पूर्ण समानता रखता है मानो कि वह वही है। और जो कुछ उस नबी की असहाय क्रौम में दोष पैदा हो गया होता है उसे वह दूर करके कमी की भरपाई करता है और यह आसमानी भेदों में से एक बड़ा भेद है जिसको सामान्य बुद्धि समझ नहीं सकती, उसकी समझ केवल उन लोगों को ही दी जाती है जिन्हें अल्लाह की ओर से ज्ञान प्रदान किया गया हो। और वह आंख जिसमें दोष हो उसके लिए संभव नहीं कि वह पहली रात के चांद को देख सके। अतः बधाई हो उनके लिए जो विवेक रखते हैं अल्लाह तआला की कुदरत ऐसी ही चल रही है कि वह भविष्य की खबरों के ऊपर से पूर्ण रूपेण पर्दा केवल उनके घटित होने के निर्धारित समय पर ही उठाता है, निर्धारित समय से पहले कुछ मामले पेचीदा और कुछ अर्थ पर्दे में और छुपे रह जाते हैं जो उन लोगों के लिए परीक्षा के तौर पर होते हैं जो उन भविष्यवाणियों के प्रकटन का समय पाते हैं। उनके जमाने में अल्लाह उस मुहर को तोड़ता है ताकि उनकी परीक्षा करके उनका अपमान या सम्मान करे। निस्संदेह मुसलमानों की परीक्षा लेने के बारे में उसकी सुन्नत बीत चुकी है। इस (परीक्षा) से अशांति नहीं फैलती ★ क्योंकि जो उद्देश्य है

★**अनुवाद :-** मुकाशिफात (रहस्योद्घाटन) के रास्तों में, कश्फ़ी मामलों की व्याख्या का सबसे शक्तिशाली और महान रक्षक वह ज्ञान है, जो भविष्य में इस मौलिक दुनिया में घटित होने वाली भविष्यवाणियों की व्याख्या के बारे में ग़लत सोच से बचाने वाले एक क़ानून की तरह है। और वह ज्ञान (सिद्दीकों) धर्मियों को दिया जाता है। किसी कश्फ़ी मामले को उन अर्थों से फेरना जो इस ज्ञान में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं, जायज़ नहीं सिवाय किसी ऐसे मज़बूत सबूत की मौजूदगी के जो विश्वास तक पहुंचाने वाला हो। क्योंकि इस ज्ञान को मुकाशिफात (रहस्योद्घाटन) के गुप्त रहस्यों को खोलने के लिए एक शब्दकोश के तौर पर घोषित किया गया है जिसके नियम बहुत पक्के हैं और उनका पालन करना ईमान वालों के लिए अनिवार्य है। जिस प्रकार लोगों की ज़बानों पर जारी प्रचलित भाषाएं इस संसार में शब्दकोश संबंधी विवादों को तय करने में निर्णायक हैं और उस भाषा को बोलने वालों के लिए पक्के सबूत हैं, उसी तरह, कश्फ़ी मामलों

वह अपने मजबूत संदर्भों और शुद्धता के साथ ही अपनी सूरत पर कायम रहता है और कोई रुकावट उसमें नहीं आती। अल्लाह केवल इस विषय के प्रकटन के रूपों को नया करता है ताकि वह देखे कि कौन इस वीरान स्थान (अर्थात गलत आस्था) को, जिसमें उसके बाप-दादा रहते रहे थे, छोड़ने के लिए तैयार होता है। सच्चाई यही है कि गलत समझ बूझ से ही कुधारणा पैदा होती है अन्यथा खुदा तआला का वादा तो हर सूरत में अविलंब प्रकट हो जाता है और अल्लाह अपने वादे के खिलाफ कुछ नहीं करता। कितने ही वादे हैं जो उसने हमसे किए और फिर जिस तरह वादा किया था उसी तरह उसने हमसे वादा निभाया और वह वादा निभाने वालों में सर्वश्रेष्ठ है। मेरी आयु की क्रसम, मूर्खों ने पूरे कुरआन को अपने दिमागों में सुरक्षित नहीं रखा और वह कुछ आयतों पर तो ईमान लाए और कुछ आयतों का उन्होंने इंकार कर दिया और कुरआन तथा हदीस को टुकड़े-टुकड़े बना दिया। मैं उन्हें मतभेदों और झगड़ों की जंजीरों में जकड़े हुए देखता हूँ। अगर वे (दोनों के बीच) समानता के लिए विचार विमर्श करते तो अल्लाह अवश्य उन पर अध्यात्म ज्ञान के द्वारों में से कोई द्वार खोल देता परन्तु उन्होंने आंखें बंद कर ली और कुरआन को त्यागी हुई चीज़ के समान छोड़ दिया तो अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर कर दी और उनको गुमराह छोड़ दिया।

और उसके बाद अब दज्जाल के बारे में सुनो जिसकी वास्तविकता मैं तुम्हें स्पष्ट और शुद्ध इलहाम से बताता हूँ और वह एक अकाट्य तर्क है जो **शेष हाशिया-** की व्याख्या का ज्ञान और उसके नियम हैं जो कश्मी विवादों का निर्णय करने के लिए सर्वसम्मति से निर्णायक हैं। और उन्हें लिसान-ए-अजल ने संकलित किया है। जो कोई इस आदेश का इन्कार करता है, वह एक बड़े अपराध का दोषी है और वह गलत काम करने वालों में से एक है। उदाहरण के लिए, यदि तू सपने में देखे कि तूने जूता पहना है, तो इसकी व्याख्या करते समय, तेरे लिए जायज़ नहीं कि तू जूते से वही अर्थ समझे जो इस भौतिक संसार की भाषा में इस शब्द का मतलब लिया जाता है बल्कि तेरे लिए अनिवार्य है कि तू उस शब्दकोश की ओर देखे जिसे अल्लाह ने इस आध्यात्मिक ज्ञान के लिए बनाया है और फिर जूते की व्याख्या पत्नी या आजीविका के रूप में करे। इसलिए तू इस भेद को मजबूती से थाम ले क्योंकि यह तुझे ठोकर खाने वालों की विपत्तियों से बचाएगा। इसी से

विरोधियों के लिए अच्छी तरह से तैयार किया गया है जिस प्रकार भालों को सीधा किया जाता है। तुम उसे पकड़ लो और भूलने वाले या जानबूझकर भूलने वाले ना बनो। हे प्रियजनो ! मुझे बताया गया है कि दज्जाल को एक वचन के रूप में वर्णन करने का उद्देश्य उसके एक होने का इजहार नहीं बल्कि एक वर्ग विशेष अभिप्राय है अर्थात् उस वर्ग के तमाम लोग दज्जाली विचारों में एक समान होंगे जैसा कि शब्द दज्जाल से भी प्रकट होता है। और इस नामकरण में सोचने वालों के लिए निशान हैं। अतः दज्जाल शब्द से अभिप्राय दज्जाली विचारों की एक जंजीर है जिसकी कड़ियां एक दूसरे से ऐसी मिली हुई हैं जैसे एक सांचे की बनी हुई ईंटों की पक्की इमारत हो जिसकी ईंटें रंग, सामग्री, साइज और मजबूती में एक जैसी हों और उनको परस्पर मिलाकर और बाहर से मिट्टी से लीप कर मजबूत कर दिया गया हो या वह सवारों के एक ऐसे समूह की तरह है जो एक दूसरे के पीछे चलते हैं और वह ऐसी ऊंटनियों पर सवार हैं जो तेज रफ्तार, मजबूत शरीर वाली हैं और वह अपनी तेजी के कारण देखने वालों की नज़र में बिल्कुल एक ही तरह की दिखाई देती हैं। और इसका उदाहरण कुरआन में दुखान (धुएं) की खबर है, जो वास्तव में तीव्र भूख के कारण बिखरे हुए विचारों की एक श्रृंखला है, और इसे एक चीज़ के रूप में नामित किया गया है और कहा गया है:

يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُحَانٍ مُّبِينٍ (अददुखान: 44/11)

(अर्थात् जिस दिन आकाश में एक साफ साफ धुआँ दिखाई देगा। अनुवादक)

इस रहस्य को केवल बुद्धिमान लोग ही जानते हैं और मंदबुद्धि लोगों की समझ इसके करीब नहीं आ सकती है।

दरअसल, लोगों की आदत चाहे वह अरब हों या विदेशी, कुछ इस तरह की बनी रहती है कि जब वे कुछ लोगों में एकरूपता की स्थिति देखते हैं, तो वे उन्हें एक ही चीज़ मानते हैं, जैसे कि अलग-अलग दवाएं होती हैं और जब उन्हें आपस में मिलाकर कूटा और पीसा जाता है, तो उनका स्वभाव तथा प्रभाव एक समान होता है, इसलिए तेरे यह कहने में कोई हर्ज नहीं है कि यह एक ही चीज़

है जो सभी को मिला कर गून्दने से प्राप्त हुई है। तू जानता है कि जब लोग एक जगह इकट्ठा होते हैं और वे बसने के लिए वहां डेरा डाल दें और उनकी एक सामाजिक व्यवस्था हो जाए और उनका एक दूसरे के साथ एक मजबूत रिश्ता हो जाए और उनके वंश और ऐसे पारस्परिक संबंध हो जाएं जो न टूट सकें। और न कमजोर पड़ सकें और उनको मजबूती प्राप्त हो जाए और उनका उस स्थान से किसी और स्थान की ओर कूच करने का भी कोई इरादा न हो, तो अगर तू चाहे उनके जमावड़े का नाम बस्ती रख सकता है और उनके जमावड़े पर एक व्यक्ति के समान आदेश लागू होंगे हालांकि वास्तव में वह एक नहीं और तुझ पर कोई दोष न होगा। और अगर ऐसा संयोग हो कि वे तुझे मिलने के लिए आए तो तू अगर चाहे तो कह सकता है कि मेरे पास शहर आया और तू उनका इस तरह वर्णन कर सकता है जैसे एक व्यक्ति का वर्णन किया जाता है। और तुझ पर कोई आपत्ति नहीं करेगा सिवाए उसके जो अज्ञानी हो या जानबूझकर अज्ञानी बना हुआ हो। अतः जिस प्रकार विभिन्न स्थानों पर एक का नाम चरितार्थ होता है हालांकि वह एक नहीं होता इसी तरह सत्प्रवृत्ति लोगों पर और उन पर जिनको अरबों की भाषा की शैलियों तथा उनके सूक्ष्म रूपकों से हिस्सा मिला है, गुप्त नहीं कि उन रूपकों के कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक और फैले हुए हैं और किसी एक अंदाज़ में सीमित नहीं हैं। अतः तू विचार कर यहां तक कि तुझे विश्वास हो जाए। और मुझे उस क्रौम पर आश्चर्य होता है जो दज्जाल के बारे में समझते हैं कि वह लोगों में से एक आदमी है। और वे कहते हैं कि यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में हुआ था, और यह अब तक मौजूद है। यह उन पर और उनकी राय पर अफ़सोस है कि वे यह निर्णय कैसे करते हैं। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा है कि, "मैं अल्लाह की क़सम खाता हूं कि धरती पर कोई भी जीवित आत्मा नहीं है जो सौ साल बीत जाने के बाद भी जीवित रहेगी।" इसका मतलब था कि एक सौ साल बीतने तक सभी लोग मर जाएंगे और एक भी व्यक्ति नहीं बचेगा। उन्हें क्या हो गया है कि वे बुखारी और मुस्लिम (हदीस की पुस्तकें) पढ़ते हैं और

फिर मुसलमानों को गुमराह करते हैं। हे प्रियजनो ! इस आस्था को अपनाने में दो बड़ी मुसीबतें हैं जिन्होंने बहुत से मुसलमानों को कुफ्र की आग में डाल दिया और उन्हें बगीचों (स्वर्ग) के फल खाने से रोक दिया है। अतः तुम अपने मार्ग से आगे न बढ़ो और हद से बढ़ने वालों में से न बनो। उनमें से पहली मुसीबत वह है जिसका मैंने वर्णन किया है अर्थात् जिससे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश की अवहेलना आवश्यक ठहरती है जिसको आप ने सौगंध देकर अनिवार्य किया था। अतः तुम अपमान करने से बचो और सम्मान करने वाले बनो और अल्लाह तथा उसके रसूल से आगे मत बढ़ो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा तुम्हारे लिए स्पष्ट रूप से वर्णन कर देने के बाद अवज्ञा न करो और जान लो कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे हैं और आप अपनी इच्छाओं से नहीं बोलते बल्कि वह एक वट्टी है जो की गई है। अतः विनम्रता का पहलू झुकाव और रसूलुल्लाह के आदेश की अवज्ञा मत करो। और दूसरी मुसीबत तो स्पष्ट ही है जिसको वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। क्या तुम पवित्र कुरआन तथा रहमान खुदा की शिक्षा की ओर नहीं देखते कि किस प्रकार उसने एक महान एकेश्वरवाद पर लोगों को स्थापित किया है और अनेकेश्वरवादियों के तौर तरीके से उन्हें मना किया है। अतः तुम अपने दिलों में सोचो कि किस तरह संभव है कि दज्जाल इस तरह प्रकट हो जैसे कि तुम अनुमान करते हो और वह मुर्दों को जीवित करे, चमत्कार दिखाए और बादलों, सूरज, चंद्रमा तथा समुद्रों को अपने वश में करे और उसका आदेश ऐसा होना चाहिए कि जब वह कुछ करने का इरादा करे, तो उससे कहे कि हो जा तो वह हो जाए। क्या आपने कुरआन से यही सीखा है? क्या यही कुरआन की शिक्षा है? क्या यही वह चीज़ है जिसके लिए अरब सरदारों और कुरैश नेताओं का खून बद्र के मैदान में और हर लड़ाई में बहाया गया था? और मुसलमानों ने उन शत्रुओं को करारी शिकस्त दी? अतः गवाही दो और गवाही छुपाने वालों में से मत बनो। यह कैसे हो सकता है कि कुरआन की शिक्षाओं को रद्द कर दिया जाए और छिलके के समान फेंक दिया जाए और एक चीज़ के सुव्यवस्थित

तथा संकलित होने के बाद फिर से उसे बिखेर दिया जाए? और अचानक प्रकट होने वाला दज्जाल मानवजाति को गुमराह करने के लिए आ जाए। तुम नेकी की चारदीवारी से क्यों निकलते हो और क्रयामत के दिन को क्यों भूलते हो और धरती में सुधार हो जाने के बाद क्यों उसमें उपद्रव करते हो? अल्लाह से डरो और उल्लंघन करने वालों में से मत बनो। जिस आक्रा सअव ने लाठी से मूर्तियों को तोड़ा और जब उनसे पूछा गया, "क्या अल्लाह के सिवा कोई और भी समर्थ है?" तो उन्होंने कहा: "नहीं।" क्या वह तुम्हें पवित्र कुरआन के खिलाफ और महान ऐकेश्वरवाद के खिलाफ बातें सिखाता है? बिल्कुल नहीं। वास्तव में, आप अल्लाह और उसके ऐकेश्वरवाद के लिए हर स्वाभिमानी से बढ़ कर स्वाभिमान रखने वाले हैं। तो झूठ मत बोलो और उस आक्रा को बदनाम मत करो और शैतानों के शिकार मत बनो। ये दो मुसीबतें तुम्हारी आस्था में हैं और तुम्हारे धर्म पर, तुम्हारे ऐकेश्वरवाद पर, तुम्हारी धार्मिकता पर ये दो मुसीबतें हैं। और बाकी जो अर्थ मैंने समझाया है और जो मैंने सिखाने का प्रयास किया है, वह बिल्कुल अच्छा है। इसमें न कोई डर है, न शिर्क (बहुदेववाद) की गंध है, न ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इन्कार की आवश्यकता है बल्कि यह आंखों की ठंडक है, और यह दोनों (लोक और परलोक) के बोझ से मुक्ति (मोक्ष) है। इसलिए इसे स्वीकार करो और आभार व्यक्त करने वालों में से हो जाओ।

और वह (दज्जाल) जो आपकी राय में एक नाजुक महिला की संतान है और एक सुंदर कमजोर महिला का दूध पिया है, न कि विद्रोही शैतान का, उसके बारे में तुम कैसे यह गुमान करते हो कि वह शैतानों जैसा मजबूत होगा? और कुछ नगमों में उसके समान बल्कि उस से बढ़कर होगा और लोहे के समान कठोर होगा और उसका एक शरीर होगा जो लंबाई में 70 हाथ से कम नहीं होगा। हे दो सुशील स्वतन्त्र (माता-पिता) की संतान! उसके बारे में विचार तो करो क्या यह जायज़ है कि उसके प्रकट होने के समय अल्लाह स्वयं निष्क्रिय होकर रह जाए और दज्जाल हर काम और अत्याचार पर समर्थ हो जाए? और सूरज, चांद, अग्नि, जल, स्वर्ग, धरती के खजाने और बादल का हर टुकड़ा उसके आदेश

के अधीन हो जाए और वह एक ही क्षण में सारी धरती का चक्कर लगा ले और अपने आज्ञापालन के झंडे तले पूरब और पश्चिम को इकट्ठा कर ले और लोगों के शवों पर कुल्हाड़ी चलाए और उन्हें दो टुकड़े कर दे फिर उनको पुनः जीवित कर दे? और लोगों को कुरआन की आयत :

فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ (अज़्ज़ुमर 39/43)

(अर्थात और वह रोक लेता है उसे जिसकी मौत का उसने निर्णय किया होता है) झूठी करके दिखाए। हर इरादे को पूरी शक्ति से व्यवहारिक रूप देने वाला, एकेश्वरवाद को अपने पांव तले कुचलने वाला और उससे हंसी ठट्ठा करने वाला हो हमारा रब पवित्र है उससे जो वह वर्णन करते हैं और समस्त प्रशंसाएं संसार के पालनहार अल्लाह ही के लिए हैं। हे लोगो! निस्संदेह इस ख़बर के नीचे एक भेद है और उस भेद को समझना नेकी है। अतः तुम उसे मुस्कराते हुए चेहरे से स्वीकार करो और सौभाग्यशालियों में से हो जाओ अल्लाह तुम पर दया करे और वह सब दया करने वालों से बढ़कर दया करने वाला है। हे प्रियजनों! यह वह आस्था है जो अल्लाह तआला ने मुझे स्वयं सिखाई है और मुझे उस पर स्थापित किया है जबकि कुछ मंदबुद्धि उसे सही नहीं मानते। और उन्होंने मेरे इस कथन को अच्छा नहीं जाना और संदेह में पड़ गए। उन्होंने इसे अनुचित समझा और मुझे काफिर ठहराने में जल्दबाज़ी की हालांकि उन्होंने मेरे अंतर्मन और मेरे बाहरी व्यवहार को तथा भेदों को नहीं समझा और उन्होंने (मुझ पर) आरोप लगाए, काफिर ठहराया, शैतानों की तरह मनगढ़त बातें बनाकर प्रस्तुत कीं, ताकि उन दिल दुखाने वाली बातों से मेरी बहुत बदनामी हो या मुझ पर कोई दोष या दाग लगे और ताकि वह दिलों को अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से धोखा दें और मैं लोगों की नज़रों में काफिरों जैसा दिखाई दूं। मैंने उनके दिलों को देखा कि वह ईर्ष्या द्वेष से दुर्गंध युक्त हो चुके हैं और गल सड़ चुके हैं, उनमें घाव हो गए हैं और बदबू पैदा हो गई है और वे ऐसे लोगों में से हैं जो अहंकार से नाक भीं चढ़ाते हैं और लोगों को अपनी बातों के डंक से कष्ट देते हैं। सांप के समान अपनी जीभ को लपलपाते हैं उनमें न कोई प्रेमभाव शेष रहा है

और न ही कोई बुद्धि, मानो कि अंधेरे कुएं में पड़े हैं और डूब जाने वालों में से हैं।

हे प्रियजनो! मैंने अपनी क्रौम को रात को भी बुलाया और दिन को भी मगर मेरी दावत ने उन्हें भागने के सिवा किसी चीज़ में नहीं बढ़ाया। फिर मैंने उन्हें ऊंची आवाज़ से भी बुलाया फिर मैंने उनके लिए ऐलान भी किए और बहुत गुप्त रूप से भी काम लिया और मैंने कहा कि अपने रब से क्षमा मांगो और अल्लाह से मेरे बारे में इस्तख़ारा करो और सच्चाई पूछो और दुआ करो तो वह इलहाम से तुम्हारी सहायता करेगा और तुम पर ख़बरें प्रकट कर देगा। परन्तु उन्होंने मेरी बात न सुनी और अहंकार तथा उद्दंडता करते हुए विमुख हो गए और वे इस बात पर राज़ी हो गए कि अपने भाइयों को काफ़िर ठहराएँ हालांकि उनके पास कोई दलील नहीं थी सिवाय इसके कि उन्होंने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो इस दावे पर गवाही देने वाली हदीस प्रस्तुत करो हालांकि वे अल्लाह की किताब को पढ़ते हैं और उसमें वह हर बात लिखी पाते हैं जो मैंने उनसे कही है और वे सिहाह-ए-सित्ता (हदीस की प्रसिद्ध 6 पुस्तकें) भी पढ़ते हैं और उनमें भी वह सब कुछ लिखा पाते हैं जो मैंने उन के सम्मुख प्रकट किया है। परन्तु अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर कर दी है और वे अंधे लोग हैं। मेरी यह राय नहीं है कि सब की सब रिवायतें तहकीक के दृष्टिकोण से मौजूअ (अर्थात् कमज़ोर) हैं बल्कि उनमें से केवल कुछ बनावटी हैं और उसके साथ-साथ उनमें बहुत से मतभेद और विरोधाभास भी हैं। इसी कारण उम्मत फिरकों में बंट गई और क्रौम की एकता बिखर गई है। अतः उनमें हंबली, शाफ़ई, मालकी, हनफी और शीओं के फ़िके हैं हालांकि इसमें कोई संदेह नहीं कि असल शिक्षा तो एक ही थी परन्तु फ़िकों ने उसके बाद परस्पर मतभेद कर लिया। तुम देखते हो कि हर फ़िका उस (आस्था) पर प्रसन्न है जो उसके पास है और हर फ़िके ने अपने मत के लिए एक किला बना रखा है और वह नहीं चाहता कि उससे बाहर निकले चाहे उससे बेहतर अवस्था भी उसे मिल जाए। वह अपने भाइयों से सख्त जंग के लिए किलाबंद हैं। अतः इस अवस्था में अल्लाह तआला ने मुझे भेजा है

ताकि मैं उनके किलों को खाली कराऊं और जो दूर है उसे निकट करूं और गुनहगार को डराऊं ताकि मतभेद दूर हो जाए। और कुरआन ही समस्त लोगों का स्वामी और धर्म का मार्गदर्शक हो जाए। अतः मैं उनके पास आया तो उन्होंने मुझे काफिर ठहराया और मुझे झुठलाया, मुझे बोहतानों और खुले खुले झूठों का निशाना बनाया। मैं उनके ज्ञान को रद्दी और उनकी गुलाम रूपी गर्दनों में तौक पड़ा हुआ देखता हूं। उनकी आपत्तियां और बहाने बनाना सब बेकार जाता है और उनकी शक्लों को बिगाड़े हुए लोगों जैसी पाता हूं। अल्लाह ने मुझे उनमें निर्णायक बनाकर भेजा है परन्तु उन्होंने मुझे नहीं पहचाना और मुझे नास्तिकों में सम्मिलित किया और मुझे अपनी गाली गलौज से कष्ट दिया। मैंने उनकी ओर से बहुत से अत्याचार और अधिकारों का हनन देखा मेरे लिए उन्होंने मामलों को उलट पलट दिया और चाहा कि मुझे दुनिया से उठा दें परन्तु अल्लाह तआला ने मुझे उनके उपद्रव से बचाया और वही सर्वश्रेष्ठ बचाने वाला है। मैंने उनमें से हर एक को अपने अंधेपन में ही चलते हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके मार्गदर्शन को त्यागते हुए देखा तो मैंने कहा हे मूर्ख पक्षपातियो! तुमने जो भी किया है बुरा किया है। और अपने विचारों पर हठपूर्वक अड़े हुए हो "और तुम तलवार उठाने में जल्दी करते हो" मैं तो भक्तों के संरक्षक अल्लाह की ढाल के नीचे हूं और तुम कदापि सामर्थ्य नहीं रखते कि मुझे नुकसान पहुंचा सको चाहे द्वेष तुम्हारी त्वचा को जला दे और क्रोध तुम्हारे गालों को झुलसा दे। अफ़सोस है तुम पर! मैं तुम में से कोई विनम्र और डरने वाला नहीं देखता। खजूर का फल चुन लिया गया है और बिना फल के वृक्ष शेष रह गए हैं और मैं तुम्हारे अंदर जीवन के कोई लक्षण नहीं पाता, तुम केवल मुर्दों की भांति हो और केवल उन लोगों की भांति हो जिन्हें हलाहल नामी विष पिला दिया गया हो। अल्लाह की क्रसम मैंने बार-बार उन्हें कहा कि काफ़िर ठहराने के भयानक क्रदम को न उठाओ क्योंकि वह ख़तरे के आने की जगह हैं और तबाही के सूखे रेगिस्तान हैं। आओ जो चीज़ तुम्हें खटकती है मैं उसे दूर कर दूं और हर तीर जो तुम्हें लगा है उसे निकाल दूं परन्तु न उन्होंने अपनी ज़बानों को लगाम

दी और न ही वे मेरे पास एक संयमी, ईमानदार की तरह आए। फिर मैंने कहा कि हे उलमा! तुम मुझे अल्लाह की किताब (कुरआन) के प्रमाण दिखाओ ताकि मैं तुमसे सहमत हो जाऊं और तुम मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई हदीस दिखाओ ताकि मैं तुम्हारा साथी बन जाऊं क्योंकि मैं तो अल्लाह की किताब और उसके रसूल की हदीसों में मसीह इब्ने मरियम की मृत्यु के सिवा कुछ नहीं पाता। तो यदि तुम मुझे झूठा समझते हो तो मुझे इसके विपरीत कुछ दिखाओ और यदि तुम अपने रब की ओर से आने वाली किसी स्पष्ट दलील पर स्थापित हो तो फिर क्यों मेरे सामने कोई खुली खुली दलील प्रस्तुत नहीं करते? अगर तुम मेरी परीक्षा लेना चाहते हो तो आओ मेरी सच्चाई के निशान देखो या अपने निशानों में से कुछ दिखाओ फिर अगर मेरे मुंह का झूठ पाया जाए तो मेरी खाल उधेड़ दो और मेरा वध कर दो लेकिन अगर मैं विजयी हुआ और मेरी बात सच्ची निकली तो तुम्हें चाहिए कि मेरा पीछा छोड़ दो और अल्लाह से डरो और अपने रब के सामने अवज्ञा में हद से न बढ़ो। निस्संदेह उसकी नज़र इंसान के तौर-तरीके पर है और वह तुम्हारे हर क़दम को देखता है और तुम्हारे सूक्ष्म विचारों को भी जानता है। अतः तुम्हें क्या हो गया है कि उससे डरते नहीं जबकि अल्लाह तुम्हारे प्रांगण में उतर आया है सो तुम उसके आज्ञाकारी होते हुए खड़े हो जाओ। ईमान मानवता का नूर है और ईमान का नूर इरफ़ान (अध्यात्म ज्ञान) है जिसने इन दोनों को खो दिया तो वह कीड़ा है न कि इंसान जिसने इस भेद को जान लिया तो मानो उसने नेकी को पहचान लिया। अतः उठो और उस मज़्ज को तलाश करो जो बहुत ही गुप्त, अर्थों के अंदर छुपे अर्थ और नूर का नूर है। अतः तुम छिलकों पर ही प्रसन्न न हो जाओ, असल जीवन को अपनाओ और मैं फिर कहता हूँ कि वास्तविक जीवन को अपनाओ, आंखें खोलो। मैं फिर कहता हूँ आंखें खोलो और मुर्दों की तरह न बनो। यह है वह बात जो मैंने उनसे कही थी। मैंने अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द कर दिया है वही मेरा रब है मेरी गर्दन उसी के जुए के नीचे है। मैं जानता हूँ कि वह मुझे असहाय नहीं छोड़ेगा न वह मुझे नष्ट करेगा और न ही वह मुझे मारे मारे फिरने

वालों में से बनाएगा।

हे प्रियजनो! अब मैं तुम्हारे लाभार्थ अपने कुछ स्वप्न और कश्फ़ वर्णन करता हूँ। मैंने उस स्वप्न में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा और उससे पहले भी निकट के समय में मुझे आपको देखने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका था आप ने मुझे अपना चाबुक बनाया और मुझे मुक्राबले के लिए तैयार किया ताकि मैं फिरौनों और अत्याचारियों से जंग करूँ। हे सज्जनो! मैंने आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बरकतों और फल पाने के बाद आपको कई बार देखा है। अब मैं उनमें से कुछ तुम्हारे लिए वर्णन करता हूँ ताकि तुम मेरे मामले में विचार करो। और ताकि तुम मेरी ओर दूरदर्शियों की भाँति देखो। क्रौम मुझसे जंगली बैल के समान भाग गई है। उन्होंने इंसानियत के न्याय और विवेक को छोड़ दिया और दहकते हुए अंगारे के समान हो गए और वे खूंखार जानवरों के समान गुराँते हुए और पत्थर जैसे कठोर हृदय वाले व्यक्ति के समान उठ खड़े हुए। उन्होंने मेरे सामने अपनी गंदी दुर्गंध प्रकट की और अपने बिगड़े हुए चेहरे दिखाए और वह सब बगावत और उद्दंडता से मुझे कष्ट देने और मेरा अपमान करने में सहमत हो गए। वे मेरे विरुद्ध झूठ गढ़ने में इस प्रकार एक दूसरे से आगे बढ़ने लगे जिस प्रकार घुड़दौड़ में हिस्सा लेने वाले दो घोड़े मुक्राबला करते हैं ताकि कहीं अपने साथियों से पीछे न रह जाएं। अतः जब मैंने उनकी धरती को बंजर और उनके आसमान को बादलों से रहित पाया तो उनसे विमुख हो गया और अपने निरन्तर बहने वाले साफ़ पानी के साथ तुम्हारे पास आया।

हे प्रियजनो! हम तुम्हारे पास तुम्हारी भलाई में रुचि रखते हुए एक उपहार लेकर आए हैं जिसमें रूहानी माँओं की छातियों का दूध है। अतः तुम उसे पीने के लिए क़दम बढ़ाओ और मेरे पास आज्ञाकारी बन कर आओ।

अब मैं पाठकों की सुविधा के लिए अपने स्वप्न सुनाता हूँ।

हे गणमान्य लोगो! मैंने एक स्वप्न में देखा कि मानो मैं एक बड़े जमावड़े में और दोस्तों के एक बड़े समूह के बीच बैठा हूँ और मैं श्रोताओं के सामने एक मज़बूत दिल और सरस-सुबोध शैली में कुछ अध्यात्मज्ञान वर्णन कर रहा हूँ।

वह स्थान बड़ा स्वच्छ और शोभायमान है, जिसके दर्शन से दुःख दूर हो जाता है और जिसके दर्शन करने से देखने वाले को प्रसन्नता होती है, मैं समझता हूँ कि यह मेरा ही घर है और उस घर का क्या कहना जिसमें मैंने सैय्यद अल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भेंट की और मैं अपने पास एक आदमी को देखता हूँ जो विद्वानों में से नहीं बल्कि मूर्खों में से है। वह घुटने के बल बैठा है। वह अपनी बुद्धि के अभाव के कारण मेरी बातों का इन्कार करता जाता है और अपने दुर्भाग्य के कारण वह झगड़ने पर उतारू है। इस पर मेरा क्रोध तीव्र हो गया और मैंने कहा, "इन विद्वानों का बुरा हो, ये निश्चय ही धर्म के शत्रु हैं।" फिर मैंने कहा, क्या कोई व्यक्ति है जो उसे इस स्थान से ऐसे निकाल दे, जैसे दुष्ट और नीच लोग निकाले जाते हैं, और इस अधम से घर को शुद्ध करे?

इस पर मेरा एक सेवक खड़ा हुआ और उसने उस (दुष्ट) आदमी को मेरी नज़र से और मेरे स्थान से दूर करने का इरादा किया, ताकि वह मुझे उसके चीखने-चिल्लाने से शांति दे सके। मैंने देखा कि उसने उसे घर से बाहर निकालने के लिए पकड़ा, उसका गला दबाया, उसे धक्के दिए और दूर धकेल दिया, जबकि वह आदमी चिल्ला रहा था और पीड़ा और भय से विलाप कर रहा था और वहाँ से निकलना नहीं चाहता था यहाँ तक कि उसे निकाल दिया गया और वह नज़रों से ओझल हो गया। फिर मैंने अपनी आँखें उठाई तो क्या देखता हूँ कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे पास ही सामने खड़े हैं, मानो वह खुद को छिपाए हुए देख रहे हों कि वहाँ क्या हो रहा है। आप को देखकर मैं भयभीत हो उठा। मैं उठा और आपके लिए प्रतिष्ठित स्थान ढूँढ़ने लगा और सेवकों की तरह खड़ा हो गया। फिर जब मैं आपके निकट गया और आपका पवित्र चेहरा देखा, तो वह वही चेहरा था जो मैंने पहले भी देखा था। मैंने दुनिया में उससे ज़्यादा खूबसूरत चेहरा कोई नहीं देखा और आप उसी प्रकार खूबसूरत लोगों की मुहर हैं जैसे आप नबियों और अवतारों की मुहर हैं।

मैंने आपके हाथ में एक किताब देखी। मैं देखता हूँ कि यह मेरी किताब "आईना कमालत-ए-इस्लाम" है जिसे मैंने "बराहीन-ए-अहमदिया" के बाद लिखा

है। आप ने अपनी एक उंगली उस स्थान पर रखी जहाँ आप की प्रशंसा की गई थी और एक अंगुली उस स्थान पर रखी जहाँ पर सहाबा की प्रशंसा का वर्णन किया गया था। और आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) दो जगहों पर निगाहें जमाए हुए थे और मुस्कुरा रहे थे और कह रहे थे कि यह मेरे लिए है और यह मेरे सहाबियों के लिए है और आप इस किताब को एक पाठक की तरह देख रहे थे। तब मुझ पर इल्हाम की अवस्था छा गई और अल्लाह तआला ने "आईना कमालत-ए-इस्लाम" के स्थानों में से एक की ओर इशारा करते हुए कहा: यह स्तुति मेरे लिए है, तब मैं जाग उठा। इस पर खुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा।

मैंने एक और स्वप्न में देखा मानो कि मैं हज़रत अली इब्न तालिब बन गया हूँ और लोग मुझसे मेरी खिलाफ़त के बारे में बहस कर रहे हैं। मैं उनके बीच एक ऐसे व्यक्ति के रूप में था जो उत्पीड़ित हो और जिसका तिरस्कार किया जा रहा है और उस के बारे में कुधारणा की गई हो, हालांकि वह इन चीज़ों से पवित्र हो। तो पैगंबर ने मेरी ओर देखा। मैं अपने आप को ऐसा समझ रहा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेटों जैसा हूँ और आप मेरे बुजुर्ग पूर्वजों में से हैं। आपने इस हाल में प्रेम पूर्वक फ़रमाया की हे अली! उनसे, उनके सहायकों से और उनकी खेती (अर्थात जो कुछ वे करते हैं उस) से अलग हो जा और उनको छोड़ दे। मैंने दिल में समझ लिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे उन उलमा को अनदेखा करने का आदेश दे रहे हैं और यह कि उनका वर्णन करना छोड़ दूँ और उनका और इनसे विमुख हो जाऊँ और इन फसादी लोगों के सुधार तथा प्रेम व्यवहार के बारे में इच्छा और आशा को तोड़ दूँ क्योंकि वे सुधार को स्वीकार नहीं करेंगे। अतः उनको नसीहत करने में समय लगाना, समय को बर्बाद करने के समान है। और उनसे सच्चाई को स्वीकार करने की इच्छा रखना कंजूस आदमी से दान की आशा रखने के समान है। और मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझसे प्रेम कर रहे हैं और मेरा सत्यापन कर रहे हैं और मुझ पर दया दृष्टि कर रहे हैं और संकेत कर रहे हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की छड़ी मेरे साथ है और आप मेरे सहायकों

में से हैं। और मैंने स्वप्न में अपने आपको अल्लाह के रूप में देखा और मैंने विश्वास कर लिया कि मैं वास्तव में वही हूँ और मेरा कोई इरादा या विचार या कोई कर्म अपनी ओर से शेष नहीं रहा। और मैं एक टूटे हुए बर्तन के समान हूँ बल्कि एक वस्तु के समान जिसको दूसरी वस्तु ने अपनी बगल में दबाया हो और अपने अस्तित्व में छुपा लिया हो यहां तक कि उसका निशान या गंध तक शेष न रही हो और वह खोई हुई चीज़ के समान हो गया हो। और अल्लाह के रूप में होने से मेरा अभिप्राय प्रतिबिंब का अपने मूल की ओर लौटना और उस मूल में खो जाना है जैसा कि मोहब्बत करने वालों पर कभी ऐसे हालात आते हैं और उसका विवरण यह है कि अल्लाह तआला ने जब अच्छाई की एक प्रणाली का इरादा किया तो उसने मुझे अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों (जाती तजल्लियात) के दृष्टिकोण से अपनी इच्छा, अपने ज्ञान, अपने अंगों और अपने एकेश्वरवाद के स्थानापन्न बना दिया ताकि अपने उद्देश्य को पूरा करे और अपने वादों को पूरा करे जैसा कि अब्दाल, अक्रताब और सिद्दीकों के बारे में उसकी आदत जारी है अतः मैंने देखा कि अल्लाह की रूह ने मुझे ढक लिया है और मेरे शरीर पर नियंत्रण कर लिया है और अपने अस्तित्व के अंदर मुझे लपेट लिया है यहां तक कि मेरा कोई काम भी अपना न रहा और मैं पूर्णतः खो गया हूँ और मैंने अपने शरीर की ओर देखा तो देखता हूँ कि मेरे अंग उस खुदा के अंग हैं और मेरी आंख उसकी आंख और मेरे कान उसके कान और मेरी जीभ उसकी जीभ है। मेरे रब ने मुझे पकड़ा और मुझे पूरी तरह ले लिया और उस पूरी तरह लेने को मजबूत बना दिया यहां तक कि मैं फना होने वालों में से हो गया और मैंने अपने अंतर्मन में उसकी कुदरत और शक्ति को जोश मारते हुए पाया और उसकी खुदाई मेरी आत्मा में मौजें मार रही थी और मेरे दिल के इर्द-गिर्द उसके दरबार के तंबू लगा दिए गए और मुझे उसके वैभव के प्रभुत्व ने टुकड़े-टुकड़े कर दिया। अतः न मैं शेष रहा और न मेरी इच्छा शेष रही और न मेरी तमन्नाएं और मेरे अंतर्मन की तमाम इमारतें ढेर हो गईं और रब्बुल आलमीन की इमारतें नज़र आने लगीं और मेरे अस्तित्व के टीले मिट गए और मेरे अहंकार के अवशेष नष्ट हो गए

और मेरे अपने अस्तित्व का कण मात्र भी शेष न रहा और खुदाई ने मुझ पर पूर्ण रूप से प्रभुत्व पा लिया और मैं उसकी ओर अपने सिर के बालों से लेकर अपने पांव के नाखूनों तक खींचा गया। अतः मैं बगैर छिलके के मगज बन गया और बगैर तलछट तथा बीजों के तेल बन गया और मेरे तथा मेरी इच्छाओं के बीच दूरी पैदा कर दी गई। अतः मैं अदृश्य वस्तु के समान हो गया या ऐसी बूंद के समान हो गया जो फिर समुद्र में चली गई हो, और जिस को समुद्र ने अपनी ओट में छुपा लिया हो है और वह समुद्र की लहरों के नीचे छिपे हुए मनुष्यों के समान हो गया हो। तो मेरी ऐसी हालत हो गई थी कि मुझे नहीं पता था कि मैं पहले क्या था और मेरा अस्तित्व क्या था। और खुदाई मेरी नस-नस में समा गई, और मैंने स्वयं को लुटे हुए लोगों के समान पाया, मानो कि अल्लाह ने मेरे सभी अंगों को अपनी सेवा में वशीभूत कर लिया था और उन पर ऐसी शक्ति से शासन कर लिया था, जिससे बढ़कर संभव नहीं था। अतः मैं उसकी गिरफ्त और उसके अपना लेने से ऐसा हो गया मानो मेरा कोई वजूद ही नहीं और मुझे यकीन हो गया कि मेरे अंग मेरे नहीं बल्कि अल्लाह तआला के अंग हैं। और मैं सोच रहा था कि मैंने अपना सारा अस्तित्व खो दिया है और मैं अपनी त्वचा के भीतर से खींच लिया गया हूँ और अब न कोई झगड़ने वाला है और न कोई साथी और न कोई क्रब्जा करने वाला है जो विरोध कर सके। मेरे रब ने मेरे अस्तित्व पर नियंत्रण हासिल कर लिया है। और मेरा सारा क्रोध और धैर्य और मेरी मिठास और मेरी कड़वाहट और मेरी सक्रियता और मेरा ठहराव सब उसी का और उसके लिए हो गया।

और मैं अपने आप से पूरी तरह खाली हो गया था। और इसी बीच कि जब मैं इस अवस्था में था तब मैं कह रहा था: **"हम एक नई व्यवस्था और एक नया आसमान और एक नई पृथ्वी बनाना चाहते हैं।"** इसलिए मैंने सबसे पहले आकाश और पृथ्वी को बिना किसी भेद या क्रम के अमूर्त रूप में बनाया फिर मैंने उसे बिखेर दिया। और फिर मैंने उसे अल्लाह की मंशा के अनुसार व्यवस्थित किया। और मैंने अपने आप को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पाया जिसके पास

उन्हें बनाने की शक्ति है। फिर मैंने निचला आकाश बनाया और कहा: वास्तव में, हमने ही इस सांसारिक आकाश को दीपों से सजाया है। फिर मैंने कहा: अब हम मनुष्य को मिट्टी के निचोड़ से पैदा करेंगे। तब मेरा स्वभाव कश्फ़ से इल्हाम की ओर हस्तांतरित हुआ, और मेरे मुख से (ये शब्द) निकले: मैंने चाहा कि मैं खलीफा बनाऊँ तो मैंने आदम को पैदा किया। वास्तव में, हमने मनुष्य को बेहतरीन रूप में पैदा किया है और हम वैसा ही पैदा करने जा रहे हैं। और मेरे दिल में यह बैठा दिया गया कि अल्लाह तआला जब किसी आदम को पैदा करना चाहता है, तो वह छह दिनों के भीतर आकाश और पृथ्वी बनाता है। और हर वह चीज़ जिसकी ज़रूरत आसमानों और ज़मीन में होती है, वह पैदा करता है फिर छठे दिन के आखिर में आदम को पैदा करता है, और इसी तरह उसकी सुन्नत पहलों और बाद वालों में बराबर चली आती है और मेरे दिल में यह बात डाली गई कि यह निर्माण जो मैंने स्वप्न में देखा है यह आसमानी तथा सांसारिक समर्थनों की ओर संकेत करता है। और इसका अर्थ उद्देश्य के लिए उपयुक्त साधनों को बनाना है और हर उपयुक्त प्रकृति को सत्य स्वीकार करने के योग्य बनाना है ताकि वह नेक और पवित्र लोगों से मिल सके। और यह मेरे दिल में डाला गया कि अल्लाह तआला हर अच्छे और नेक स्वभाव को आसमान से बुलाएगा और कहेगा कि मेरे बन्दे की मदद के लिए तैयार हो जाओ और फुर्ती से उसके पास पहुँचो। और मैंने यह रो'या (स्वप्न) रबीउस्सानी 1309 हिजरी में देखा। तो बड़ा बरकत वाला है अल्लाह जो सच्ची वह्यी करने वाला है। और हम इस घटना से वह अर्थ भी नहीं लेते जो वहदतुल-वुजूद वालों की किताबों में लिए गए हैं। और इस घटना से हमारा तात्पर्य वह भी नहीं है जो हुलूलियों का धर्म है, बल्कि यह घटना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस से मेल खाती है अर्थात् बुखारी की उस हदीस से जिसमें अल्लाह के नेक बंदों के लिए नवाफ़िल (अतिरिक्त नमाज़ या पुण्य इत्यादि) के माध्यम से निकटता की स्थिति का वर्णन है।

हे प्रियजनो! अब मैं तुम्हारे सामने कुछ ऐसी परोक्ष (ग़ैब) की बातें वर्णन करता हूँ जो मेरे रब ने मुझ पर उतारी हैं ताकि वह उन्हें उन लोगों के लिए निशानी

बना दे जो सच्चाई की तलाश में हैं। तो उनमें से कुछ ये हैं कि अल्लाह ने मेरे चचेरे भाइयों को देखा और उनके अतिरिक्त मेरी माँ और मेरे बाप की ओर से मेरे रिश्तेदारों को भी देखा कि वे विनाशकारी चीजों में मगन हैं। और वे बुराइयों अर्थात् बुरी प्रथाओं और अंधविश्वासों और बिदअतों (नवाचारों) की बुराइयों में डूबे हुए हैं, और उनको देखा कि वे तामसिक भावनाओं के अधीन हैं और वासना की खोज में लगे हुए हैं, और अल्लाह के अस्तित्व से इन्कार करने वाले तथा उपद्रवी लोग हैं। और उसने उन्हें ऐसी बातों से जो उनको सभ्य बना सकती हैं, प्राणियों में सबसे अधिक अज्ञानी पाया, और इस घृणित संसार के लिए सबसे अधिक झगड़ालु पाया। उसने उन्हें आखिरत (परलोक) को याद करने में सबसे अधिक भुलक्कड़ और अल्लाह की तेज, उसकी महिमा, उसके क्रोध, उसकी उदारता और परलोक से सबसे अधिक बेखबर पाया। और यह भी देखा कि वे रीति-रिवाजों पर अड़े बैठे हैं। वे कय्यूम खुदा की महानता से बेखबर, निर्दोष पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्कार करने वाले और झुठलाने वाले हैं। और उसने देखा कि वे लोगों को बुराई और उपद्रव की ओर बुलाते हैं और अच्छे काम करने तथा हदीसों का पालन करने से रोकते हैं। इसके अलावा, वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान करते हैं, और वे नास्तिकता और धर्मत्याग के लिए तैयार हैं, और उसने देखा कि वे बड़े से बड़े पाप की ओर भागते हैं और उस खुदा के प्रकोप से नहीं डरते हैं जो सर्वज्ञ राजा है। और वे अल्लाह के रसूल, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में बुरा भला कहना बंद नहीं करते बल्कि निरंतर ऐसा करते जा रहे हैं। वे न तो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं और न ही शराब पीना और अपने बुरे चाल चलन को छोड़ते हैं। वे इस्लाम का उपहास करने पर जोर देते हैं और पाप, अत्याचार तथा अंधेरे में आक्रामक खूंखार जंगली जानवरों के क्रोध के समान क्रोध करते हैं।

यह ऐसा है मानो वे परत दर परत बादल हों जिनमें गड़गड़ाहट, बिजली और बिजली की आवाज़ तथा शोर हो, लेकिन उनके बीच से बारिश की एक बूंद भी नहीं टपकती। तो हम सरकशी करने वालों की बुराई से अल्लाह की पनाह

माँगते हैं। वे इसी अवस्था में थे कि इस दौरान मेरे रब ने मुझे अपने धर्म को नवीनीकृत करने और अपने पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की महानता प्रकट करने और आपके चमेली के फूल की खुशबू फैलाने के लिए चुना। और उसने मुझे इस्लाम धर्म और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत की ओर लोगों को आमंत्रित करने के लिए नियुक्त किया, और उसने मुझे अपने इल्हामों, संवादों और रहस्योद्घाटनों का एक पर्याप्त हिस्सा दिया। और उसने मुझे मुहद्दस बनाया। फिर जब यह खबर और न्यौता और दावा मेरे चचा के बेटों तक पहुँचा, और वे अल्लाह और उसके रसूल का इन्कार करने में बहुत बड़े हुए थे और अल्लाह के न्याय और नियति को झुठलाने वाले थे और वे नास्तिक लोगों में से थे। तो उस ईर्ष्या के कारण जो उनके अपने ही दिलों से पैदा हुई थी उनका क्रोध भड़क उठा जिस पर उन्होंने उद्दंडता और बगावत की और उपहास के तौर पर मुझसे निशान मांगे और कहा कि हमें ऐसे उपास्य का कोई ज्ञान नहीं जो किसी से वार्तालाप करता हो या किसी बात का सामर्थ्य रखता हो या किसी आदमी की ओर ईशवाणी भेजता हो और किसी चीज़ की जानकारी देता हो। यह तो केवल एक फैलाया जाने वाला धोखा है जो पहले लोगों से विरासत में लिया गया है। और यह सब कुछ सोची समझी साजिश, धोखा और चपलता है और यदि यह व्यक्ति सच्चा है तो हमें कोई निशान दिखाए। साथ ही वह अल्लाह और उसके रसूल से उपहास करते हैं और कहते हैं (अल्लाह उन्हें नष्ट करे) कि कुरआन मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बनाई हुई झूठी बातें हैं। ये मुर्तद लोगों में से थे और सारी क्रौम उनके साथ थी। और वे उनको उन बातों से मना नहीं करते थे और न उनको रोकते टोकते थे। अतः वह अपने कुफ्र और उद्दंडता में दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे थे और वे किसी दंड की परवाह करने वाले न थे।

एक रात ऐसा संयोग हुआ कि मैं अपने घर में बैठा हुआ था जब मेरे पास एक व्यक्ति रोते हुए आया। मैं उसके रोने से व्याकुल हो गया मैंने पूछा क्या तेरे पास किसी की मृत्यु की खबर आई है? उसने कहा उससे भी बढ़कर

और वह यह कि मैं उन लोगों के पास जो अल्लाह के धर्म से विमुख हैं बैठा हुआ था, तो उनमें से एक ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत बुरी गाली दी जो इससे पहले मैंने किसी काफिर के मुंह से भी नहीं सुनी थी और मैंने उन्हें देखा कि वे कुरआन को अपने कदमों के नीचे रखते हैं और ऐसे वाक्य बोल रहे हैं जिनका वर्णन करने से मेरी ज़बान कांपती है और वह कह रहे थे कि अल्लाह तआला का कोई अस्तित्व नहीं है और इस संसार में कोई ख़ुदा नहीं यह केवल झूठे लोगों का बनाया हुआ है। तो मैंने उसे कहा क्या मैंने तुझे उनके पास उठने-बैठने से डराया नहीं था? अतः अल्लाह से डर और उनके साथ कभी न बैठ और तौबा करने वालों में से हो जा। इस प्रकार ये लोग अपनी हद से बढ़ते गए और अपनी अज्ञानताओं में उद्दंड होते गए और उनका अहंकार दिन प्रतिदिन बढ़ता गया यहां तक कि उनकी राय यह हो गई कि अपने बेहूदा विचारों का प्रचार-प्रसार करें और कमअक्ल लोगों को अपने छल-कपट का शिकार बनाएं। अतः उन्होंने एक लेख लिखा जिसमें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां दीं और कुरआन के बारे में अपशब्द कहे गए थे और अल्लाह तआला के अस्तित्व से इन्कार किया था और साथ ही इस लेख में मुझसे मेरी सच्चाई के निशान और अल्लाह तआला के मौजूद होने के प्रमाण मांगे गए थे। उन्होंने अपना यह पत्र सभी दिशाओं और क्षेत्रों में भेजा और उसके द्वारा हिंदुस्तान भर के काफिरों की सहायता की और इतनी अशिष्टता दिखाई जिसका उदाहरण पहले फ़िराओं में भी नहीं सुना गया। अतः जब मुझे वह पत्र पहुंचा जो उनमें से ऐसे व्यक्ति ने लिखा था जो दुष्टता और आयु में उन सबसे बड़ा था और मैंने उस (पत्र) में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ऐसी अभद्र गालियां देखी जिनसे मोमिनों के दिल फटते और मुसलमानों के कलेजे टुकड़े-टुकड़े हो जाते थे और मैंने उस पत्र में नीच और मूर्खों की बातें और प्रज्वल शरीयत का अपमान और अल्लाह की किताब का तिरस्कार देखा तो मुझे अत्यधिक अफसोस के कारण गुस्सा आ गया। मैंने उस पत्र को देखा तो पाया कि वह ऐसे शब्द थे जिनके कारण निकट

था कि आसमान फट जाएं इसलिए मेरी आँखों से आँसू बह निकले।

और (मेरे भीतर) मेरी कराह मेरे गले तक उठी और मैं बहुत रोया। फिर मैंने दरवाजे बंद कर दिए और वहहाब खुदा से प्रार्थना की और स्वयं को उसके सामने डाल दिया और उसके सामने सजदा किया और रोते गिड़गिड़ाते हुए उसकी मदद का अभिलाषी हुआ और अपनी जीभ, अपने दिल और अपनी आंखों से जो कुछ भी हो सकता था वह मैंने किया जिसे केवल रब्बुल आलमीन ही जनता है और मैंने कहा, हे मेरे रब! हे मेरे रब, अपने दास की सहायता कर, और अपने शत्रुओं को नीचा दिखा। हे मेरे रब! मेरी प्रार्थना सुन और उसे स्वीकार कर। कब तक तू और तेरे रसूल उपहास का पात्र बनते रहेंगे, कब तक ये लोग तेरी किताब (पवित्र कुरआन) का खंडन करते रहेंगे और तेरे पैगंबर को बुरा भला कहते रहेंगे? हे हय्यो क्रय्यूम और सहायक खुदा, मैं तुझे तेरी दया का वास्ता देकर पुकारता हूँ। तब मेरे खुदा ने मेरी पुकार, मेरे आंसू और मेरी आह सुनी और मुझ पर दया की और मुझे पुकार कर कहा: मैंने उनकी अवज्ञा और अशिष्टता देखी है, मैं उन पर नाना प्रकार की विपत्तियाँ डालकर उन्हें आकाश के नीचे से नष्ट करूँगा, और तुम शीघ्र ही देखोगे कि मैं उनके साथ कैसा बर्ताव करता हूँ, और हम सब कुछ करने पर समर्थ हैं। मैं उनकी स्त्रियों को विधवा, और उनके बच्चों को अनाथ, और उनके घरों को उजाड़ दूँगा, और इस प्रकार वे अपनी बातों और हरकतों का स्वाद चखेंगे। किन्तु मैं उन्हें नष्ट नहीं करूँगा, बल्कि धीरे-धीरे पकड़ूँगा ताकि उन्हें अपनी हरकतों से मुड़ने का अवसर मिले। मेरी लानत (श्राप) उन पर, उनके घरों की दीवारों पर, उनके छोटों पर, और उनके बड़ों पर, और उनकी स्त्रियों और उनके पुरुषों पर, और उनके घर में आने वाले अतिथि पर भी। और उन सब पर लानत बरसेगी सिवाए उनके जो ईमान लाएं और अच्छे कर्म करें और उन से नाता तोड़ लें और उनकी जमाअत से दूर रहें। तो वही लोग हैं जिन पर रहम किया जाएगा।

यह मेरे रब की उस वह्यी (रहस्योद्घाटन) का सार है जो उसने मुझ पर उतारी। तो मैंने उन तक अपने रब का संदेश पहुँचा दिया, परन्तु न तो वे डरे और

न सत्यापन किया, अपितु वे अवज्ञा और इन्कार में बढ़ते गए, और उपहास में उन्होंने दीन के शत्रुओं जैसा ढंग अपना लिया। तो मेरे भगवान ने मुझे संबोधित करके कहा: हम उन्हें रुलाने वाले निशान दिखाएंगे और हम उन पर अजीबो गरीब मुसीबतें और अजीबोगरीब बीमारियाँ भेजेंगे, और हम उनका माल तंग कर देंगे, और हम उन पर मुसीबतों पर मुसीबतें डहाएँगे, और उन्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा। तो अल्लाह तआला ने उनके साथ ऐसा ही व्यवहार किया। उसने दुःखों, क़र्ज़ों और ज़रूरतों के बोझ से उनकी कमर तोड़ दी और उन पर नाना प्रकार की विपत्तियाँ और आपदाएँ उतारीं और उनके लिए मौत के द्वार खोल दिए कि शायद वे रुक जाएँ या सचेत हो जाएँ, लेकिन उनके दिल कठोर हो गए इसलिए वे न तो समझे और न चोक्ने हुए और न डरे। और जब निशान के प्रकट होने का समय निकट आया, तो उन दिनों ऐसा संयोग हुआ कि इन लोगों के एक बहुत करीबी रिश्तेदार जिसका नाम अहमद बेग था उस ने अपनी बहन की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने का इरादा किया, जिसका पति कई वर्षों से लापता था। और वह आदमी मेरा चचेरा भाई था और ज़मीन उसकी मिल्कियत थी। तो अहमद बेग की इच्छा थी कि वह अपनी बहन से ज़मीन हड़प ले और उस ज़मीन को अपनी बना ले और बहन के कब्जे से ज़मीन निकाल ले और फिर उसे हथिया ले। और वह बहन भी चाहती थी कि वह उसे ज़मीन भेंट स्वरूप दे दे और उसके भाई पर एहसान करे, हालांकि हम सभी उस ज़मीन के बराबर के वारिस थे। मेरे चचेरे भाई ने एक कारण से इस पर सहमति जताई क्योंकि उनकी बहन उसकी पत्नी थी और वे उसके रिश्तेदार थे। इसी तरह वह मेरे भी रिश्तेदार थे, लेकिन मेरा अधिकार उन पर अधिक था, इसलिए वे मेरी सहमति से पहले ज़मीन भेंट नहीं दे सकते थे और पहले मेरी सहमति ज़रूरी थी। तो अहमद बेग की पत्नी मेरे सामने आई और गिड़गिड़ाकर यह मांग की कि मैं अपना हक छोड़ दूँ और इस प्रस्ताव के लिए अपनी सहमति व्यक्त करूँ और मैं इस बारे में कोई विवाद न करूँ। सो यह निकट था कि मैं उस पर दया करता और उनकी दिलजोई के लिए ज़मीन दे देता ताकि शायद वह तौबा करे और हिदायत पाने वालों में से हो जाए।

फिर मैं लापता और जिसके हालचाल का कुछ ज्ञान नहीं उसके हाल के बारे में जल्दबाजी के दुष्प्रभाव से डर गया तो उसके दुष्प्रभाव और उसमें मौजूद नुकसान ने मुझे डराया। अतः मैंने अलीम और हकीम (सर्वज्ञानी बुद्धिमान) खुदा से मार्गदर्शन हेतु दुआ करना और कृपालु रब की ओर से सूचना पाने के लिए प्रतीक्षा करना उचित समझा ताकि मैं लापता व्यक्ति के अधिकार को हड़प करने से बरी हो जाऊँ और ताकि मैं अपने अत्याचार के कारण गड़ढा खोदने वाले की तरह न बनूँ और उन लोगों में मेरी गणना न हो जो अपने साथियों पर अत्याचार करते हैं और उनको नाकाम और असफल व्यक्ति के समान छोड़ देते हैं और वह उनके अधिकार हड़प करने में रुचि रखने वाले होते हैं और वे नहीं डरते कि वह अधिकारी अचानक आकर उनसे मांग करेंगे। अतः मैं उपहार करने से रुक गया जिस प्रकार एक संदेह में पड़ा हुआ व्यक्ति रुक जाता है। और मैंने उसके वर्णन को इस प्रकार लपेट दिया जैसे बही खाते लेखों को लपेट लेते हैं और मैं अल्लाह के फैसले की प्रतीक्षा करने लगा और मैं समझता था कि शीघ्र ऐसा ही होगा परन्तु मैं यह अनुमान भी नहीं करता था कि यह कोई मामला ऐसा है जिसके द्वारा अल्लाह एक हद से बढ़ी हुई क्रौम की परीक्षा लेना चाहता है जिन पर बेगैरती, बेहयाई और बेक़ैदी और नास्तिकता हावी हो चुकी है और वह काफ़िरों से जा मिले थे बल्कि वे कुफ़्र में उनसे भी बढ़कर थे और वह एक पापी क्रौम थे। अतः मैंने अहमद बेग की पत्नी से कहा कि मैं किसी बात का अन्तिम निर्णय करने वाला नहीं हूँ जब तक कि मैं अल्लाह तआला से उसके बारे में मार्गदर्शन न प्राप्त कर लूँ। अतः तू अपने घर वापस जा और जो कुछ तूने सुना है उस बात कहने वाले को बता दे जो उपहार स्वरूप भूमि की मांग कर रहा है और इंशाअल्लाह तू मुझे निष्ठावान लोगों में से पाएगी। अतः जब वह चली गई और उसका पति मेरे पास दौड़ते हुए आया और किसी व्याकुल व्यक्ति के समान मेरे पीछे पड़ गया और वह पागलों की तरह बदहवासी का प्रदर्शन कर रहा था यहां तक कि उसके दुःख ने उसको रुलाया और उसका सुकून समाप्त होता रहा और वह विनम्रता का स्वभाव धारण करते हुए कांपने लगा और जागीर

की भूख से उसका अंतर्मन जल रहा था और वह गला घुट जाने वालों के समान सांस ले रहा था। मैंने देखा कि वह अपने दुःख से मरा जा रहा था मानो कि गम उसे धरती पर पटक रहा है और गम उसका खून बहा रहा है और दुख-दर्द अचानक टूट पड़ने वाले कातिलों की तरह उस पर आक्रमणकारी है। जब मैंने उसकी पीड़ा को चरम तक पहुंचा हुआ देखा तो उसकी हालत पर मुझे दया आ गई और मैंने उसकी आंखों और रोने पर तरस खाया और मैंने इरादा किया कि मैं उसकी सहायता करूं और उसे कुछ लाभ पहुंचाऊं तो मैंने अति शीघ्र हमदर्दी के समान उसे तसल्ली देने का प्रयत्न किया। मैंने उसे कहा कि खुदा की क्रसम मेरा दिल तंग नहीं हुआ और न इस (उपहार) करने से हटा और न मैं उन लोगों में से हूं जो धन दौलत से प्रेम करते हैं बल्कि मैं उनमें से हूं जो परिणाम और अंत को याद रखते हैं। और मैं उन लोगों के समान नेमतों का लोलुप नहीं जो पशुओं के समान हैं। निस्संदेह मैं तुझ पर दया करूंगा और अवश्य तुझ पर उपकार करूंगा और मैं जानता हूं कि खुदा का सानिध्य प्राप्त करने का उत्तम माध्यम किसी की मुसीबतों का दूर करना है और मुक्ति प्राप्त करने के सबसे मजबूत माध्यमों में से जरूरतमंदों की हमदर्दी करना है और मैं तेरी सहायता के लिए तैयार हूं। परन्तु खुदा की क्रसम निस्संदेह मैंने अल्लाह तआला से वादा कर रखा है कि मैं उस बात की ओर आकर्षित नहीं हूंगा जिसमें संदेह हो और न मैं किसी ऐसे स्थान पर कदम रखूंगा जहां डगमगाने का अनुमान हो और न मैं मुतशाबिहात (अस्पष्ट बातों) के पीछे चलूंगा यहां तक कि अपने रब से उन बातों के बारे में मार्गदर्शन ले लूं। अतः अब मैं ऐसा ही करने वाला हूं और मैं अल्लाह से भलाई की आशा रखता हूं।

अतः तू मायूस होने वालों में से कदापि न बन और निस्संदेह मैं देखता हूं कि मशवरा कर लेना संयम के अधिक निकट है क्योंकि वारिस लापता है और हमें विश्वास नहीं कि वह मर गया है या जीवित मौजूद है। अतः यह उचित नहीं कि उसके माल के बारे में ऐसे जल्दी की जाए जैसे कि मुर्दों के माल के बारे में जल्दी की जाती है। अतः उचित यही है कि तू इधर-उधर की बातों से रुक

जाए यहां तक कि मैं अपने सर्वज्ञाता तेजस्वी ख़ुदा से मार्गदर्शन प्राप्त कर लूं और मैं विश्वास के मार्ग तलाश कर लूं। उसने कहा मुझे कोई आपत्ति नहीं परन्तु तेरे इस वादे के खिलाफ नहीं होना चाहिए। मैंने उसे कहा मेरा हर वादा रब्बुल आलमीन के आदेश से बंधा हुआ है। अतः वह इस हाल में चला गया कि वह अपने दुख की वजह से जिसने उसे बदहवास कर दिया था और बीमारों जैसा हो गया था। तो मैं अपने कमरे की ओर चल दिया और अपने ठिकाने पर बैठने का प्रबंध किया और मैंने पूर्ण रूप से अल्लाह की ओर ध्यान दिया ताकि वह मुझ पर अपनी इच्छा प्रकट करे और गुठली में से दाने की वास्तविकता फाड़ कर और मामले का मग्ज़ और उसका छिलका अलग करके दिखा दे। ख़ुदा की क्रसम अभी इतनी देर नहीं हुई थी जितनी देर जूतों के फीते बांधने में लगती है या सवारी पर काठी कसी जाती है कि अचानक मुझे ऊंघ आ गई और मुझे हमेशा जीवित रहने वाली हस्ती अल्लाह की ओर से इलहाम हुआ और मुझे ऐसे मामलों की जानकारी दी गई है जिनकी ओर कभी मेरा विचार भी न गया था और न उनका मुझे कुछ पता था तो अल्लाह तआला ने मुझे व्हयी की कि अपने लिए उस व्यक्ति की बड़ी लड़की से विवाह के लिए संदेश भेज और उसे कह कि पहले वह तुमसे ससुर-दामाद का संबंध स्थापित करे और उसके बाद तुम्हारे नूर से प्रकाश प्राप्त करे। अतः उसे कह कि मुझे आदेश दिया गया है कि जो भूमि तुमने मांगी है वह मैं तुम्हें दे दूँ और उसके अतिरिक्त कुछ और भूमि भी दूँ और इसी प्रकार तुम पर और कई प्रकार के उपकार करूँ इस शर्त पर कि तुम अपनी बड़ी लड़की का विवाह मुझ से कर दो और यह तुम्हारे और मेरे बीच एक समझौता है जिसे अगर तुम स्वीकार करोगे तो मुझे भी बहुत अच्छी तरह स्वीकार करने वाला पाओगे और अगर तुमने स्वीकार न किया तो याद रखो कि अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि इस लड़की का किसी और आदमी से विवाह करना, न इस लड़की के लिए अच्छा होगा न तुम्हारे लिए। और अगर तुम अपने इरादे से न रुके तो तुम पर मुसीबतें आएंगी और आखिरी मुसीबत तुम्हारी मौत होगी और तुम विवाह के बाद 3 साल के अंदर मर जाओगे। बल्कि तुम्हारी

मृत्यु निकट है और वह मृत्यु ऐसी अवस्था में आएगी कि तुम असावधान होंगे। और इसी तरह इस लड़की के पति की भी ढाई साल के अंदर मौत हो जाएगी। यह अल्लाह का फ़ैसला है, सो जो चाहो करो, निस्संदेह मैं तुम्हारा शुभ चिंतक हूँ। तो उसने मुंह बिसोरा और अपनी पीठ फेर कर चला गया और विमुख होने वालों में से एक हो गया। फिर मैंने अपने मन्नान और रहमान ख़ुदा के संकेत पर उसकी ओर एक चिट्ठी लिखी और मैंने उसमें लिखा:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तत्पश्चात् हे मेरे प्रिय! सुन ले तुझे क्या हो गया है कि तूने मेरी गम्भीरता को व्यर्थ समझा और मेरे सोने को खोटा समझा। अल्लाह की क्रसम मैं तुम पर बोझ डालना नहीं चाहता और ख़ुदा ने चाहा तो बेशक तुम मुझे उपकार करने वालों में से पाओगे। और देख, मैं तुझे लिखित वचन देकर भेज रहा हूँ, इसलिए यदि तूने मेरे घराने के न मानने पर भी मेरी बात मान ली तो मैं तुझे अपनी भूमि और अपने बाग का एक भाग दे दूंगा। और इस रिश्ते की वजह से हमारे बीच के मतभेद और लड़ाई-झगड़े ख़त्म हो जाएंगे। और अल्लाह तआला मेरी क्रौम और मेरे रिश्तेदारों के दिलों को सुधार देगा और मैं तेरी हर दिली मुराद को पूरा करूंगा और मैं तेरी गरीबी दूर कर दूंगा तो तू सफल हो जाएगा न कि नष्ट। सच बात यह है और सच्ची बात ही मैं कहता हूँ कि निस्संदेह में यह पत्र अपने साफ़ दिल और ईमानदारी से लिख रहा हूँ तो यदि तूने मेरी बात को स्वीकार कर लिया तो निस्संदेह तेरी मुझ पर कृपा होगी और तेरी ओर से मुझ पर उपकार और भलाई होगी। इस अवस्था में मैं तेरा धन्यवाद करूंगा और तेरी लंबी आयु के लिए रहीम ख़ुदा से दुआ करूंगा और निस्संदेह मैं तेरे साथ किए गए अपने वादे पर खरा उतरूंगा। निस्संदेह मैं तेरी बेटी को अपनी भूमि का और अपनी संपत्ति में से हर चीज़ का एक तिहाई हिस्सा दूंगा और तू मुझसे जो चीज़ भी मांगेगा मैं तुझे दूंगा और निस्संदेह में सच बोलने वालों में से हूँ। तू आपसी संबंधों का ध्यान रखने में और करीबी रिश्तेदारों से मोहब्बत करने और संबंधियों

के अधिकार पूर्ण करने में कदापि किसी को मेरे जैसा नहीं पाएगा। और तू मुझे अपनी मुसीबतों में मददगार और अपने बोझों को उठाने वाला पाएगा। अतः तू इन्कार में अपना समय व्यर्थ न कर और तू अपने प्यारे को अजनबी न समझ और शक करने वालों में से न बन। लो मैंने यह पत्र खुदा के आदेश से लिखा है अपनी ओर से नहीं लिखा। इसलिए इस पत्र को अपने संदूक में सुरक्षित रख क्योंकि यह अत्यंत ही सच्चे और ईमानदार की ओर से है और खुदा तआला जानता है कि निस्संदेह मैं इस मामले में सच्चा हूं और जो मैंने वादा किया है वह अल्लाह तआला की ओर से है। और जो मैंने कहा है मैंने स्वयं नहीं कहा बल्कि अल्लाह तआला ने अपने इलहाम से कहलवाया है। और यह मेरे रब की ओर से निर्देश था जिसे मैंने पूरा कर दिया है मुझे तेरी और तेरी बेटी की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही अल्लाह ने मुझ पर कोई तंगी डाली है और उसके अतिरिक्त बहुत सी औरतें हैं और अल्लाह ही नेक लोगों का ज़िम्मेदार होता है। अतः तू मेरे पत्र को संदेह की दृष्टि से मत देख क्योंकि मैंने उसे पूर्णतः भलाई और सच्चाई और नेक नीयत से लिखा है और तू लड़ाई झगड़े को छोड़ दे और परिणाम की प्रतीक्षा कर। यदि निर्धारित अवधि बीत गई और सच्चाई प्रकट न हुई तो मेरी गर्दन में रस्सी और मेरे पांव में बेड़ियां डाल देना और मुझे ऐसा दंड देना जो संसार में किसी को न दिया गया हो। तुमने मेरे रब की ओर से एक निशान मांगा था अतः यह तुम्हारे लिए एक निशान है। निस्संदेह वह निकट स्थान से इन्कार करने वालों को पकड़ लेता है और उनके बारे में अज़ाब देने वाली चीज़ों में से निकटतम और उनकी समझ में से निकटतम और उनके सम्मानों तथा शरीरों पर अत्यधिक प्रभाव डालने वाले मामलों को अपनाता है ताकि वह बहाना बनाने वालों पर उनकी कमजोरी प्रकट कर दे और अत्याचारियों के अहंकार को तोड़ दे। यह वह है जो मैंने अहमद बेग को 1304 हिजरी में लिखा था परन्तु उसने ध्यान न दिया और इन्कार किया और खामोश तथा निरुत्तर हो गया और मेरे साथ संबंध जोड़ने तथा सद्भवहार करने को नापसंद किया। वह मेरे इस पत्र से विमुख हुआ और शत्रुओं में से हो गया और उसके साथ उसकी क्रौम और

उसके खानदान के करीबी लोग भी मेरे शत्रु हो गए और वे नापसंद करते थे कि वह अपनी बेटियों की मेरे जैसे रिश्तेदारों के साथ शादी करें या ऐसे व्यक्ति से विवाह करें जिसकी एक और पत्नी पहले से मौजूद है। और उसकी बेटी जिसका हाथ मांगा गया था नौ उमर कुंवारी लड़की थी जबकि मैं उस समय 50 वर्ष से अधिक आयु का था। शत्रुता की आग की चिंगारियां खूब उड़ रही थीं और उसकी आग भड़क रही थी। अतः भाग्य ने उसको दुःख देने और बीमार करने के लिए उन रुकावटों को उसकी आंखों में सुंदर बना कर दिखाया तो वह (रिश्ता देने से) रुक गया हालांकि वह मेरी सच्चाई और मेरी पवित्रता और अल्लाह ही पर मेरे भरोसा करने और अल्लाह से मेरी मोहब्बत को खूब जानता है परन्तु उस पर दुर्भाग्य हावी हो गया और उसके अहंकार की बीमारी ने उसे मेरी शराफत और स्वीकारिता भुला दी। अतः वह इंकारी और विमुख हो गया और उस इंकार से मुझे कोई गम नहीं हुआ बल्कि मैं ऐसे खुश हो गया जैसे कैदी रिहाई के बाद और निराश व्यक्ति निराशा के बाद खुश होता है। और मैंने उसे महाकोपी अल्लाह के इशारे पर ही लिखा था अतः मैंने जान लिया कि अल्लाह तआला ने उस पर और उसके खानदान पर हुज्जत पूरी कर दी है और उसके लिए आपत्ति की कोई गुंजाइश शेष नहीं रही। और मैंने जान लिया कि अल्लाह अवश्य मेरी बातों को उनके दिलों पर हसरत का कारण बना देगा और वे अवश्य इन बातों को रोते हुए याद करेंगे। फिर उसके दिल पर भय और व्याकुलता हावी हो गई और मेरे इलहाम ने उसे दुःख में डाल दिया। अतः वह 5 साल तक रुका रहा और किसी व्यक्ति से अल्लाह के अज़ाब के डर से अपनी बेटी की शादी न की और न ही मंगनी की। अतः जब उस (अहमद बेग) ने अपनी लड़की का विवाह कर दिया तो उस पर अभी 6 महीने भी नहीं बीते थे कि अल्लाह ने उसको पकड़ लिया और उस पर दीमक की तरह की एक बीमारी हावी कर दी और उसे बीमारी के कब्जे में दे दिया और बुखार ने उसे कमजोर कर दिया और झूठे सम्मान ने उसे बदहवास कर दिया और मरने के निकट हो गया यहां तक कि अल्लाह की तबदीर ने उससे ज़िन्दगी का वस्त्र उतार लिया और उसको

मौत के सुपुर्द कर दिया और वह हसरत की मौत मरा और ऐसी आग में पड़ा जो दिलों पर लपकती है और वह बहुत व्याकुल हुआ और बहुत गम की हालत में इस दुनिया से रुखसत हुआ और क़ब्रों में कितनी ही हसरतें दफन हैं। इसमें निस्संदेह इंकार करने वालों के लिए कई निशान हैं। उसके परिवार वालों और रिश्तेदारों को दुख और मुसीबत ने आ पकड़ा वे मुसीबत के बवाल के कारण अपने चेहरों को पीट रहे थे और यही वे लोग हैं जो कहा करते थे कि हम नहीं जानते अल्लाह क्या है, यह जीवन तो हमारा (केवल) सांसारिक जीवन है हम मरते हैं और जीवित होते हैं और हमें दोबारा नहीं उठाया जाएगा। अतः उन्होंने उस ख़ुदा की मुलाकात की महरूमी की वजह से और उसके अध्यात्म लाभों के समाप्त हो जाने से बहुत बड़ा दुख उठाया और इस कारण भी कि उन्होंने देख लिया था कि इल्हाम ने अपनी चमक दिखाई है और भविष्यवाणी के एक पहलू के पूरा होने से उसके दोनों पहलू स्पष्ट हो गए और उस भविष्यवाणी के आरंभ से ही उसका परिणाम प्रकट हो गया। अतः वह दुःखी होने के साथ भयभीत भी थे और उन दिनों में नींद ने उनकी आंखों में झांक कर भी नहीं देखा। अंधकार के हावी होने की वजह से उसकी रात-दिन में न बदली और उनके यहां मुसीबतों का मेहमान आया तो उन्होंने उसे जिगर के कबाब और रोने पीटने का पानी प्रस्तुत किया। अतः जब उनके पास मौत की ख़बर और मरने वाले का वर्णन करते हुए अपने चेहरे और सर पीटने वालियों का विलाप पहुंचा तो वह उस मरने वाले के घर के प्रांगण और वीरान मकान की ओर तेजी से लपके। अतः उन्होंने आंसू बहाए और गिरेबान फाड़े और अपने गालों और सर को पीटा। औरतें रोते-पीटते हुए कह रही थीं कि - "आज हमारा वह दुश्मन जिसने हमें पहले से ख़बर दी थी सच्चा हो गया।" अतः हे सत्याभिलाषियो ! विचार करो। क्या ये अस्त व्यस्त सपने हैं? क्या यह मनुष्य का बनाया हुआ झूठ है? तुम मुर्दों के उन रिश्तेदारों से पूछो जिनके दिल शर्मिन्दा हैं और अपने मुर्दों पर रो रहे हैं और कह रहे हैं, "हाय हमारा दुर्भाग्य, निश्चित रूप से हम ही ग़लती पर हैं।" मेरे रब ने मुझे बधाई दी और कहा कि हम उसके पति को भी मार देंगे जैसे

हमने उसके पिता को मार डाला और उस लड़की को तेरी ओर वापस लौटाएंगे। यह सत्य तुम्हारे रब की ओर से है, अतः तुम सन्देह करने वालों में से न बनो। हम उसे केवल एक निश्चित अवधि के लिए मोहलत देंगे। तू कह कि, "उस समय की प्रतीक्षा करो, और मैं तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।" जब अल्लाह का वादा आएगा (तो कहा जाएगा), क्या यह वही है जिसको तुमने झुठलाया था या तुम अंधे थे? यह मेरे रब की तरफ़ से मुझे दी गई खुशखबरी है, अतः समस्त प्रशंसाएं ब्रह्माण्ड के रब के लिए हैं। मैंने सपना देखा कि मानो मैं अपने हाथ में एक सूँती हुई तलवार लिए एक मैदान में खड़ा था उसका दस्ता मेरे हाथ में है और उसका दूसरा सिरा आकाश में है, वह चमक रही है और बारिश की बूंदों की तरह उसमें से लगातार रोशनी बरस रही है। और मैं उस तलवार को उत्तर और दक्षिण में चलाता हूँ और प्रत्येक वार से धर्म के हजारों दुश्मनों को मार डालता हूँ। इस सपने में, मैंने अब्दुल्ला गज़नवी नाम के एक अच्छे बुजुर्ग को देखा, जिनका कई वर्ष पूर्व देहांत हो चुका है, तो मैंने उनसे इस सपने का अर्थ पूछा तो उन्होंने कहा, "तलवार से अभिप्राय वह सबूत हैं जो अल्लाह ने तुझे दिए हैं। और उसने तर्कों और प्रमाणों से तेरी सहायता की है। और उत्तर और दक्षिण में तलवारें मारने से अभिप्राय आकाशीय आध्यात्मिक निशान और तर्कसंगत दार्शनिक तर्क हैं जो तू इन्कार करने वालों को दिखाएगा। और शत्रुओं को मारने से अभिप्राय वाद-विवाद करने वालों को निरुत्तर करना है और उन तर्कों से उनका मुंह बंद कर देना है। यह तेरे स्वप्न का फल है और तू उन लोगों में से है जो सहायता प्राप्त हैं।

और बेशक मुझे (अब्दुल्लाह गज़नवी को) अपने उस ज़माने में जब मैं दुनिया में था, उम्मीद थी और विश्वास था कि इन गुणों वाला एक व्यक्ति प्रकट होगा लेकिन मुझे विश्वास नहीं था कि वह आप हैं और मैं आपके विषय में बेखबर था। और इन्हीं बातों में से एक यह है कि अल्लाह तआला ने मुझे खुशखबरी दी और फरमाया कि मैंने तेरा रोना और दुआएं सुनी और निस्संदेह मैं तुझे वह कुछ प्रदान करने वाला हूँ जो तूने मुझ से मांगा है और तू इनाम प्राप्त लोगों में से है।

तुझे क्या पता कि मैं तुझे क्या दूंगा मैं तुझे दया, अनुकम्पा, सानिध्य, विजय और फतह का निशान देने वाला हूँ। अतः तुझ पर सलाम है तू कामयाब लोगों में से है। निस्संदेह हम तुझे ऐसे लड़के की खुशखबरी देते हैं जिसका नाम अम्मा नवाइल और बशीर होगा। वह बड़ा खूबसूरत, दूरबीन नज़र रखने वाला और सानिध्य प्राप्त करने वालों में से होगा। वह आसमान से आएगा और उसके उतरने के साथ कृपा उतरेगी। वह नूर और पवित्र है और पवित्र किए हुए लोगों में से है। वह बरकतें फैलाएगा और लोगों को पवित्र चीज़ें देगा और धर्म की सहायता करेगा। वह बुलंद से बुलंद होता चला जाएगा और उन्नति करता चला जाएगा और हर बीमार का इलाज करेगा और वह अपनी फूंक (दम) से स्वस्थ करने वालों में से होगा। वह निश्चित रूप से मेरे निशानों में से एक निशान और मेरी सहायता का निशान होगा ताकि वे लोग जिन्होंने झुठलाया है जान लें कि मैं अपनी कृपाओं के साथ तेरे संग हूँ। और इसलिए कि ताकि उसके आगमन के साथ सत्य भी आ जाए और उसके आने से असत्य भाग जाए, और मेरी शक्ति और पराक्रम का वैभव प्रकट हो जाए, और ताकि मेरी महानता प्रकट हो जाए और धर्म का सिर ऊंचा हो जाए, और दलीलें सपष्ट हो जाएं, और ताकि जीवन के इच्छुक ईमान तथा नूर की मौत के हाथों से मुक्ति प्राप्त कर लें, और क्रब्र वालों को उनकी क्रब्रों से उठाया जाए, और ताकि वे लोग जान लें जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल और उसकी किताब का इन्कार किया है कि वे गलत थे और ताकि अपराधियों का साफ़ पता लग जाए। तो निश्चित रूप से आपको एक बुद्धिमान लड़का दिया जाएगा जो आपके अपने रक्त और वंश से होगा और वह हमारे प्रतिष्ठित दासों में से होगा। हमारी और से एक सुंदर मेहमान तेरे पास आ रहा है और वह हर प्रकार की अपवित्रता और दोष और बुराई और अभद्रता से पवित्र है और अच्छे लोगों में से होगा।

वह कलिमतुल्लाह (अल्लाह का आदेश) है, वह कलिमात-ए-तमजीदिया से पैदा किया गया है। वह बहुत विवेकी और बुद्धिमान और सुंदर होगा उसके हृदय को ज्ञान से भर दिया जाएगा और उसका दिल नर्म होगा। और उसका दिल साक्षात् सुलह होगा और उसे एक मसीही आत्मा (स्वास्थ्यवर्धक शक्ति) दी

जाएगी और उसे फरिश्तों के द्वारा सहायता दी जाएगी। सोमवार है। हे सोमवार के दिन तू धन्य है। तुझमें धन्य लोगों की आत्माएं आती हैं। एक धर्मी, उदार, बुद्धिमान और धन्य लड़का पहले और बाद में आने वालों का द्योतक होगा। वह परमप्रधान परमेश्वर का प्रकटीकरण होगा, और उसका आना ऐसा होगा मानो अल्लाह आसमान से उतरा हो। उसके प्रकटन के साथ संसारों के पालनहार की महिमा का प्रकटन होगा। तेरे पास वह प्रकाश आ रहा है, जो रहमान के इत्र से अभिषेक किया हुआ है, वह अल्लाह की कृपा की छत्रछाया में खड़ा होगा। वह गुलामों को छुड़ाएगा और क़ैदियों को आज़ाद कराएगा। उसकी महिमा बढ़ाई जाएगी और उसका नाम और उसकी शान बुलंद की जाएगी। उसका ज़िक्र और उसकी ख़ुशबू धरती के किनारों तक फैला दी जाएगी। वह इमाम हम्माम होगा। क़ौमों उससे लाभ पाएंगीं। उसके साथ स्वास्थ्य लाभ आएगा और बीमारी शेष नहीं रहेगी। उससे सृष्टि को लाभ होगा। वह एक फलदार शाखा की तरह जल्दी जल्दी बढ़ेगा। तब उसे उसकी आत्मा के मूल बिंदु (ख़ुदा) की ओर उठाया जाएगा जो उसका मूल स्थान है और यह सब होकर रहेगा। जिसको सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ख़ुदा ने मुक़द्दर किया है। तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो बेहतरीन तक्रदीर बनाने वाला है।★ और मैंने स्वप्न में

★हाशिया :- अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह भविष्यवाणी की थी कि मसीह मौऊद शादी करेगा और उसकी औलाद होगी, और इसमें यह संकेत है कि अल्लाह उसे एक नेक बेटा देगा जो अपने पिता के समान होगा और उसके प्रति अवज्ञाकारी नहीं होगा और अल्लाह के सम्माननीय बंदों में से होगा। और इसमें रहस्य यह है कि अल्लाह पैगम्बरों और संतों को बच्चों की खुशख़बरी तभी देता है जब उसने नेक लोगों का जन्म तय कर लिया होता है और यह वह खुशख़बरी है जो मुझे कई साल पहले और इस दावे से भी पहले दी गई थी। ताकि अल्लाह तआला इस ज्ञान के द्वारा मुझे उन लोगों की नज़रों में मशहूर कर दे जो दूरदर्शी हैं जबकि वे लोग लंबे समय से मसीह के इंतजार में नज़रें जमाए बैठे थे। और जहाँ तक अल्लाह के रसूल की क्रब्र में ईसा मसीह को दफ़नाने का सवाल है, जैसा कि इस हदीस में वर्णित है, तो यह एक शीर्ष रहस्य और एक संकेत है जिसे केवल वही प्रतिष्ठित इलहाम

देखा कि मानो मैंने किसी उद्देश्य से जाने के लिए अपने घोड़े पर काठी बाँधी है। और मुझे नहीं पता कि तैयारी कहां की है और मेरा लक्ष्य क्या है। हाँ, मैं अपने दिल में यह महसूस करता था कि किसी बात का जुनून मेरे दिल में है। मैंने कुछ हथियार रखे और नेक लोगों के समान अल्लाह पर भरोसा करके घोड़े पर फुर्ती से सवार हो गया। क्योंकि मैं उन लोगों की तरह नहीं था जो पीछे रह गए थे, तब मुझे ऐसा लगा मानो मैंने कुछ घुड़सवारों को देखा है जो हथियारबंद थे और मुझे मारने के लिए मेरे घर पर चढ़ाई करके आए हैं मानो वे मुझे नुकसान पहुँचाने के लिए गाली देते आ रहे हों और मैं एकदम अकेला हूँ। और मैं देख रहा हूँ कि मैंने उन हथियारों के अलावा कुछ खौद इत्यादि भी नहीं पहना था जो अल्लाह ने मुझे शरण के रूप में दिए थे। और मैदान ए जंग से पीछे हटना और डर के मारे अंदर बैठे रहना भी मंजूर नहीं था। इसलिए, मैं अपनी पूरी ताकत और प्रयास के साथ इस महत्वपूर्ण लक्ष्य

शेष हाशिया- प्राप्त लोग जानते हैं जिन्हें उनके रब की ओर से ज्ञान दिया गया है। तथ्य यह है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क्रब्र को जन्नत से मिला हुआ घोषित कर दिया है। तो ये दोनों (अर्थात् जन्नत और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्रब्र) हक्र के नूर की एक जड़ के दो तने हैं जिनमें से एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। और भीतरी प्रकाश के दो मुश्कीजे हैं जो सत्य के अभिलाषियों तक पहुँच रहे हैं। अल्लाह तआला की आदत इस तरह से चलती है कि वह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की क्रब्र को मृत्यु प्राप्त मोमिन के करीब उसी तरह लाता है जिस तरह वह जन्नत को जीविका प्राप्त करने हेतु करीब करता है और वह सबसे अच्छी जीविका प्रदान करने वाला है।

जब कोई ऐसा व्यक्ति मर जाता है जो अल्लाह के साथ निकटता और ईमानदारी का संबंध रखता हो, तो उसे अल्लाह के रसूल की पवित्र क्रब्र और जन्नत के उतना ही करीब किया जाता है, जितना कि वह खुदा से निकटता और ईमानदारी का संबंध रखता है। तो जो आत्मीयता और ईमानदारी में सबसे करीब है, मानो उसे पैगंबर की क्रब्र के अंदर और हज़रत ख़ातमुन्नबि-य्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ही दफ़नाया गया है। तो तुम यह खजूर ले लो और अंगारों से सावधान रहो, और जान लो कि मसीह को धरती पर उसी तरह उतारा गया जिस तरह दज्जाल इसी धरती से प्रकट हुआ है, इसलिए तू अपशकुन लेने वालों में से न हो। इसी से

के लिए निकल पड़ा जो मेरे सामने था और जो धर्म और दुनियादारी के पक्ष में सर्वोत्तम परिणाम देने वाला था।

इसी बीच मुझे हजारों लोग घोड़ों पर सवार होकर बड़े वेग से अपनी ओर आते दिखाई दिए। मैं उन्हें देखकर इतना खुश हुआ जैसे मुझे कोई लूट का माल मिल गया हो। मैंने अपने दिल में दुश्मन से लड़ने की ताकत महसूस की और मैंने इस प्रकार उनका पीछा करना शुरू कर दिया जैसे शिकारी अपने शिकार का पीछा करते हैं। तब मैंने उनका हाल जानने के लिये उनके पीछे अपना घोड़ा सरपट दौड़ाया और मुझे विश्वास था कि मैं अवश्य सफल हो जाऊंगा। फिर जब मैं उनके पास आया, तो मैंने देखा कि उनके कपड़े सड़े-गले और फटे हुए हैं, उनकी शक्ल घिनौनी है, और उनका रूप मुश्रिकों (बहुदेववादियों) जैसा है, और उनके वस्त्र दुष्टों जैसे हैं। मैंने उन्हें अपने घोड़ों को लुटेरों की तरह सरपट दौड़ाते हुए देखा और मैं पूरे ध्यान से उनकी शक्तों को देख रहा हूँ और पहलवानों तथा वीरों की तरह तेजी से उनकी ओर बढ़ रहा हूँ। मेरा घोड़ा इतना तेज चल रहा था मानो कोई अदृश्य गाइड उसे चला रहा हो जैसे सरहद के सिपाही ऊँटों को तेज दौड़ाते हैं। मैं उसके आगे बढ़ने की मनमोहकता से हैरान और चकित था। तब ये लोग मेरी शक्ति और मेरी योजना का विरोध करते हुए, मेरे फलों को नष्ट करने और उन्हें उखाड़ने के लिए दंगाइयों की तरह पेड़ों को लूटने के इरादे से तुरंत मेरे बगीचे में लौट आए। मेरे बगीचे में उनके प्रवेश ने मुझे परेशान कर दिया था और मैं बगीचे में उनके घुस आने और अत्याचार से मैं बहुत चिंतित हुआ। मैं बहुत व्याकुल हो गया और मेरा दिल बेचैन हो गया और मेरे विवेक ने मुझसे कहा कि वे लोग मेरे बगीचे के फलों को नष्ट करना चाहते हैं और शाखाओं को तोड़ना चाहते हैं, इसलिए मैं तेजी से उनकी ओर बढ़ा। मैं समझ गया कि यह समय बहुत खतरनाक है और मेरी भूमि दुश्मनों का ठिकाना बन गई है और मैं अपने दिल में कमजोर और डरे हुए लोगों की तरह भयभीत होने लगा। इसलिए मैं सच्चाई का पता लगाने के लिए बगीचे की

ओर चल पड़ा। जब मैंने अपने बगीचे में प्रवेश किया और ध्यान से देखा और जब मैंने उन शत्रुओं का ठिकाना खोजना आरम्भ किया, तो मैं ने उन्हें दूर से अपने बगीचे के बीच में मुर्दों के समान पड़े देखा। इस पर मेरी चिंता शांत हो गई और मैं संतुष्ट हो गया और मैं बड़े आनंद के साथ उनकी ओर दौड़ा और जब मैं उनके पास गया तो मैंने देखा कि वे सभी एक मुर्दे के समान मृत, अपमानित और प्रकोपित पड़े थे। उनकी खाल उतार दी गई थी, उनके सिर कुचल दिए गए थे, उनका गला काट दिया गया था और उनके हाथ-पैर काट दिए गए थे। और वे टुकड़े-टुकड़े होकर बिखेर दिए गए थे। वे उन लोगों की तरह मारे गए जिन पर बिजली गिरे और वे जल मरें। इसके बाद मैं उनके मरने के स्थान पर खड़ा हुआ, जहां वे लड़ाई के लिये इकट्ठे हुए थे, और मेरी आंखों से आंसू बह निकले। मैंने खुदा के दरबार में निवेदन किया कि हे मेरे रब! मेरी जान तेरे मार्ग में न्योछावर है। तूने मुझ गरीब पर विशेष कृपा की है और अपने भक्त की वह सहायता की है जिसका उदाहरण ब्रह्माण्ड में नहीं मिल सकता। हे मेरे रब ! तू ने पूर्व इसके कि दो समूह परस्पर लड़ते, दो शत्रु जंग करते और दो मर्द जंग के मैदान में उतरते अपने हाथों से उनको क्रल कर दिया। तू जो चाहता है करता है और तेरे जैसा कोई सहायक नहीं है। तूने ही मुझे बचाया और मुक्ति दी। हे समस्त दया करने वालों से बढ़कर दया करने वाले! अगर तू दया न करता तो संभव नहीं था कि मैं इन मुसीबतों से मुक्ति पा सकता। फिर मैं जाग गया और मैं उस समय अल्लाह तआला का धन्यवाद कर रहा था और विनम्रता पूर्वक झुक रहा था। अतः समस्त प्रशंसाएं ब्रह्मांड के पालनहार के लिए हैं। मैंने इस स्वप्न की यह व्याख्या की कि इसमें सांसारिक माध्यमों और मानवीय प्रयत्नों के हस्तक्षेप बिना अल्लाह तआला की ओर से सहायता और सफलता (की खुशखबरी) है ताकि वह मुझ पर अपनी नेमतें पूरी करे और मुझे ईनाम प्राप्त लोगों में से बना दे। अब मैं आपको इस स्वप्न की व्याख्या (ताबीर) बताता हूं ताकि आप समझ सकें। जहां तक सरो का फोड़ा जाना और मुख्य रंगों के काटे जाने का संबंध है तो इसका अर्थ

यह है कि शत्रुओं का अहंकार तोड़ा जाएगा और उनकी शानो शौकत समाप्त कर दी जाएगी और उन्हें असहायों के समान कर दिया जाएगा। और हाथों के काटने का अर्थ यह है कि उनकी मुकाबले की शक्ति और शास्त्रार्थ की ताकत समाप्त कर दी जाएगी और गिरफ्त करने से और मुकाबला करने की योजनाओं से उन को असमर्थ कर दिया जाएगा और उन्हें रोक दिया जाएगा। इसी प्रकार उनसे जंग के हथियार छीन लिए जाएंगे और उन्हें बेसहारा करना और उनको हर काम से रोक देना अभिप्राय है। बाकी रहा उनकी टांगों का काटा जाना तो इसका अर्थ यह है कि उन पर हुज्जत पूरी कर दी जाएगी और भागने के द्वार बंद कर दिए जाएंगे और उन पर संगीन आरोप लगाए जाएंगे और उनको कैदियों की तरह कर दिया जाएगा। यह अल्लाह का काम है जो हर बात पर समर्थ है। वह जिसे चाहता है दंड देता है और जिस पर चाहता है दया करता है और जिसे चाहता है पराजय देता है और जिसे चाहता है विजय प्रदान करता है कोई और उसे हराने वाला नहीं। जिन लोगों ने अल्लाह के रसूलों को झुठलाया और उसके बंदों को कष्ट दिया और अल्लाह की आयतों और उसकी मुलाक्रात का इन्कार किया यही वह लोग हैं जो उसकी रहमत से निराश हो चुके हैं। और जिन की कुधारणाओं ने उन्हें बर्बाद कर दिया है और जिनके अहंकार ने उन को नष्ट कर दिया है। अतः उनके कर्म व्यर्थ गए और वे नष्ट हो गए। हे ईमान लाने वालो! अल्लाह से डरो और उन लोगों से पीछे न रहो जो अल्लाह की ओर बुलाते हैं और सच्चों के साथ हो जाओ। बेशक मैंने तुम तक अपने रब का पैगाम पहुँचा दिया है और तुम्हें नसीहत कर दी है, फिर मैं उन लोगों पर कैसे अफसोस करूँ जो नसीहत करने वालों को पसंद नहीं करते।

बारंबार क्षमा करने वाले अल्लाह के उपकार के धन्यवाद के तौर पर कुछ सहायकों का उल्लेख

जब से मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने नियुक्त किया है और हय्यो कय्यूम कुदरतों वाले खुदा ने मुझे जीवित किया है, तब से मैं धर्म के सहायकों को देखने का बहुत उत्सुक रहा हूँ। यह उत्सुकता उससे भी बढ़कर है जो एक प्यासे को बहुत मीठे पानी के लिए होती है। मैं दिन-रात ईश्वर के सामने चिल्लाता था और कहता था कि हे मेरे रब! कौन मेरा सहायक है? हे मेरे रब! कौन मेरा सहायक है? मैं एक अकेला, असहाय व्यक्ति हूँ। तो जब एक के बाद एक निरंतर दुआओं के लिए हाथ उठे और आकाश मेरी दुआओं से भर गया, तब मेरी गिड़गिड़ाहट सुनी गई। और संसार के पालनहार की दया जोश में आई, तो मेरे रब ने मुझे एक बहुत ही नेक दोस्त दिया, जो मेरे सहायकों में प्रमुख है और मेरे ईमानदार दोस्तों में सबसे अच्छा है, और धार्मिक कामों में मेरे प्रियजनों का सार है।★ उसका नाम उसकी नूरानी विशेषताओं के समान नूरुद्दीन (अर्थात् धर्म का प्रकाश) है।

★**हाशिया :-** और अल्लाह की खातिर मेरे दोस्तों में से मुंशी जैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम बम्बई से हैं और मौलवी गुलाम इमाम साहब मणिपुर के हैं और हुब्बीफिल्लाह मौलवी गुलाम हसन साहब पेशावरी और महियुद्दीन अश्शरीफ़ टोंटी कोरन (टोटी कोरिन) और सरदार मुहम्मद विलायत खान साहब मद्रासी और हुब्बीफिल्लाह सय्यद जनाब मौलवी मुहम्मद अहसन साहब हैं और हुब्बीफिल्लाह मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी सल्लमहुल्लाह हैं जिन्होंने मेरी मदद की और मेरे इस लेख के अनुवाद में मेरी सहायता की। वह (मेरे) प्यारे और निष्ठावान मित्रों में से हैं और वह इन दिनों मेरे पास हैं। वह मेरी मुलाक़ात की इच्छा और मेरी सभाओं को पसंद करने के कारण अपना देश छोड़ने की और उस सफ़र को खुशी से अपनाने के लिए तैयार हुए हैं जो अज़ाब का एक टुकड़ा कहा जाता है। अतः अल्लाह उन्हें बदला दे और उन्हें सच्चाई और ईमानदारी की राह पर क़ायम रखे और उन पर दया करे और वह सब दयावानों में से सबसे बढ़कर है। और उन लोगों में से मिर्ज़ा खुदाबख़्श साहिब भी हैं और जो इन दिनों मेरे पास हैं और एक सदाचारी और निष्ठावान जवान हैं अल्लाह तआला ने उन के दिल को मेरी मुहब्बत के लिए खोल दिया है और उन के हृदय

वह जन्म स्थान से भैरवी और वंश से कुरैशी फारूकी है वह इस्लाम के सरदारों और महान पवित्र माता-पिता की संतानों में से एक है। अतः मैं उससे मिलकर बहुत खुश हुआ मानो बिछड़ी हुई खुशी मिल गई हो। और मैं इतना खुश हुआ जैसे हमारे सैय्यद और मौला (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हज़रत फारूक के मिलने से खुश हुए थे। और जब से वह मेरे पास आया और मुझसे मिला, मैं अपने दुखों को भूल गया हूँ। मैंने उन्हें धर्म का समर्थन करने और मदद करने के तरीकों में सबसे आगे पाया। किसी व्यक्ति के धन ने मुझे इतना लाभ नहीं पहुँचाया जितना उनके धन ने जो उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए दिया और कई वर्षों से देते आ रहे हैं। वह

शेष हाशिया- को सत्यनिष्ठा के फलों से भर दिया है और दृढ़ निश्चय रखने वालों के साथ उन को दृढ़ निश्चयी रखा है। और उन में से एक हुब्बीफिल्लाह हकीम फ़ज़लुद्दीन साहब भैरवी हैं। और हुब्बीफिल्लाह शेख़ रहमतुल्लाह साहब गुजराती हैं और हुब्बीफिल्लाह हकीम सय्यद अमीर अली शाह साहब और सय्यद हामिद शाह साहब हैं और हुब्बीफिल्लाह मुंशी गुलाम क़ादिर हैं जो फ़सीह सियालकोटी के नाम से विख्यात हैं और हुब्बीफिल्लाह नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब रईस मालेरकोटला और हुब्बीफिल्लाह सय्यद मुहम्मद तफ़ज़ज़ुल हुसैन साहब इटावी और हुब्बीफिल्लाह सय्यद हादी साहब और हुब्बीफिल्लाह मुहम्मद ख़ान साहब और मुंशी मुहम्मद अरोड़ा साहब और मुंशी ज़फ़र अहमद साहब कपूरथलवी और हुब्बीफिल्लाह मौलवी मुहम्मद मर्दान अली साहब और मौलवी मुहम्मद मज़हर अली साहब हैदराबादी और हुब्बीफिल्लाह मौलवी बुरहानुद्दीन साहब जेहलमी और हुब्बीफिल्लाह मीर नासिर नवाब साहब देहलवी और हुब्बीफिल्लाह क़ाज़ी ज़िआउद्दीन साहब क़ाज़ी कोटी और हुब्बीफिल्लाह मौलवी सय्यद मुहम्मद अस्करी ख़ान साहब और हुब्बीफिल्लाह क़ाज़ी गुलाम मुर्तज़ा साहब और हुब्बीफिल्लाह अब्दुल हकीम ख़ान साहब और हुब्बीफिल्लाह रशीदुद्दीन ख़ान साहब और हुब्बीफिल्लाह सय्यद ख़सलत अली शाह साहब और हुब्बीफिल्लाह मुंशी रुस्तम अली साहब और मेरे प्यारे मित्र मुंशी अब्दुल्लाह सिन्नौरी साहब और मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ़ बेग साहब सामानवी और मुहम्मद हुसैन साहब मुरादाबादी और क़ाज़ी ख़्वाजा अली साहब दुधियानवी। ये सब मेरे प्रिय मित्रों में से हैं इनमें से कुछ का हम ने वर्णन कर दिया है और कुछ इनमें से ऐसे हैं जिन का हम ने वर्णन नहीं किया और वे सब के सब निष्ठावानों में से हैं। इसी से

ज्ञान और अनुग्रह की पूर्णता में, स्वेच्छा से धन खर्च करने और उपहार देने में, अपने साथियों से आगे बढ़ गए हैं।

इस सबके साथ उनकी सहनशीलता रज्जा पर्वत (मक्का के एक पहाड़) से भी अधिक मजबूत है। उन्होंने अल्लाह की खातिर तमाम संबंध छोड़ दिए हैं और अपनी तमाम खुशी संसार के पालनहार अल्लाह के कलाम में रखी है। मैंने देखा है कि दानशीलता उनकी आदत और ज्ञान उनका उद्देश्य और सहनशीलता उनका चरित्र और भरोसा उनकी खुराक है। मैंने समस्त संसार में उन जैसा कोई विद्वान नहीं देखा और न ही सुख समृद्धि वाले लोगों में से उन जैसा कोई दरवेश और न अल्लाह तआला के मार्ग में खुदा की खातिर उन जैसा कोई खर्च करने वाला पाया है। जब वह मेरे पास आए और मुझे मिले और उन पर मेरी नज़र पड़ी तो मैंने उन्हें अपने रब के निशानों में से एक महान निशान पाया और मुझे विश्वास हो गया कि यह मेरी वह दुआ है जो मैं निरंतर करता चला आ रहा हूँ। मेरे मन में यह बात बैठ गई और मेरी समझ ने मुझे बता दिया कि वह अल्लाह के चुनिंदा बंदों में से है। मैं लोगों की प्रशंसा और तारीफ करना और उनकी विशेषताओं को लोगों में फैलाना इस डर से नापसंद करता हूँ कि कहीं यह उन को कोई नुकसान न दे परन्तु मैं देखता हूँ कि वह तो ऐसे लोगों में से हैं जिनकी तामसिक भावनाएं टुकड़े टुकड़े हो चुकी हैं और उनकी स्वभाविक इच्छाएं समाप्त हो चुकी हैं और वह ऐसी बातों से सुरक्षित हैं। और उसके कमाल (पूर्णता) की निशानियां में से एक यह है कि जब उसने इस्लाम के घाव देखे और उसे एक परदेसी असहाय के समान या उस वृक्ष के समान पाया जो अपने स्थान से उखाड़ दिया गया हो तो उन्होंने गहरा दुख का आभास किया और गम के मारे उनका जीवन बेचैन हो गया तो वह व्याकुल होकर धर्म की सहायता के लिए उठ खड़े हुए और ऐसी पुस्तकें लिखीं जो वास्तविकताओं और अध्यात्मिक ज्ञान से भरी हुई हैं और उनका उदाहरण पहले लोगों की पुस्तकों में नहीं पाया जाता। उनके लेख बावजूद संक्षिप्त होने के सरसता एवं सुबोधता से भरपूर हैं और उनके शब्द अत्यंत सुंदर, दिलरुबा और अच्छे हैं जो कि देखने वालों को मानो पवित्र शराब

पिलाते हैं। और उसकी पुस्तकों का उदाहरण उस रेशम जैसा है जो कई प्रकार की सुगंधों से तरबतर हो फिर उसमें मोती और याकूत और बहुत सी कस्तूरी लपेट दी जाए। फिर उसमें अंबर मिला दिया जाए और उस सारे मिश्रण को निचोड़ की तरह बना दिया जाए।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यह पुस्तकें समस्त प्रकार के लाभ से भरपूर हैं जो दूसरी पुस्तकों में विभिन्न स्थानों पर बिखरे हुए हैं साथ ही यह पुस्तकें बहुत से अछूते अर्थों और एक अलग ही ज्ञान पर आधारित होने की वजह से अन्य पुस्तकों पर प्राथमिकता ले गई हैं और इस वजह से भी दूसरी पुस्तकों से आगे बढ़ गई हैं कि यह दलीलों और प्रमाणों की रस्सियों से दिलों को अपनी ओर खींचती हैं। बधाई हो उस व्यक्ति को जो उनको प्राप्त करे और उनकी कदर पहचाने और ध्यान पूर्वक उनको पढ़े तो वह उन जैसा कोई सहायक नहीं पाएगा। और जो कोई चाहता हो कि कुरआन के गहरे भेदों को हल करे और प्रतापी खुदा की पुस्तक के रहस्यों पर सूचना पाए तो उसको चाहिए कि इन पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त और मगन हो जाए क्योंकि यह पुस्तकें उस चीज की जमानत देती हैं जिसको एक बुद्धिमान इच्छुक तलाश करता है। उनके सुगंधित पौधों की महक दिलों को मोहित करती है उनकी शाखों पर अधिकता से फल लगे हुए हैं और निस्संदेह वह एक बाग है जिसके गुच्छे झुके हुए और उसमें कोई बुरी बात सुनी नहीं जाती और पाक पवित्र लोगों के लिए उसमें अतिथि सत्कार का सामान है उन पुस्तकों में से एक फसलुल खिताब ले क़ज़ाया अहलुल किताब है और एक उनमें से "तस्दीक बराहीने अहमदिया है जिसमें शब्दों की सुंदरता और तरकीब की सुंदरता के साथ-साथ बेहतरीन अर्थ बड़ी सूचीबद्ध ढंग से जुड़े हुए हैं मानो कि वह लिखने वालों के लिए आदर्श हो गई है और बोलने वाले इच्छा करते हैं कि वह उन्हीं किताबों की के ढंग पर कुछ लिखे बड़े बड़े माहिर उलमा की ज़बाने उन किताबों की प्रशंसा करती हैं उन पुस्तकों के जवाहरात गले में पहने हुए जवाहरात से भी उत्तम हैं और उनके मोती समुद्रों के मोतियों से अच्छे हैं यह पुस्तकें उन हज़रत मौलवी साहिब के कमाल पर बड़ी दलील

हैं और आपकी सुगंध के झोंकों की प्रत्यक्ष रूप से दलील है। तुम अवश्य कुछ समय के बाद इन किताबों की सच्चाई जान लोगे। इन पुस्तकों में विद्वान लेखक ने पवित्र कुरआन के बिंदुओं की गंभीरता से और ध्यानपूर्वक व्याख्या की है और अपने शोध में परंपरा और ज्ञान को इकट्ठा करने का प्रयत्न किया है। अतः उनके महान साहस और उनके उज्ज्वल और लोकप्रिय विचारों को प्रणाम। आप मुसलमानों का गौरव हैं, आप को पवित्र कुरान से गूढ़ बिंदुओं को निकालने में और उसके वास्तविक ज्ञान के खजानों को बांटने में विचित्र योग्यता है। निस्संदेह, आप नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकाश से प्रबुद्ध हैं और आप एक अजीब मर्द और बेमिसाल जवान हैं। आपके हर पल से रहस्य के प्रकाश की धाराएँ निकलती हैं और आपकी कलम के प्रत्येक स्त्राव से विचारों के फव्वारे फूटते हैं। यह ईश्वर की कृपा है, वह जिसे चाहता है देता है, और ईश्वर सबसे अच्छा दाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप चुने हुए धर्मशास्त्रियों और लेखकों के सर का ताज हैं। लोग आपके उफनते हुए शुद्ध पानी से पीते हैं और आपके वक्तव्य के मोतियों को पवित्र शराब की भांति मोल खरीदते हैं, आप नेक और ईमान वालों का गौरव हैं। आपके हृदय में विलक्षण और सूक्ष्म और आध्यात्मिक तथा वास्तविक ज्ञान और रहस्यों तथा रहस्यों के रहस्य और आध्यात्मिक लोगों की चमक पर आधारित चमकदार प्रकाश हैं। जब वह अपने साफ़-सुथरे पवित्र शब्दों और अछूते ज़बानी नायाब वाक्यों के साथ वार्तालाप करते हैं तो मानो वह दिलों और रूहों को सुंदर गीतों और हल्की फुल्की दाऊदी बाँसुरियों से मोह लेते हैं और वह विलक्षण बिन्दु प्रस्तुत करते हैं। जब वह बात करते हैं और वाणी का आरंभ करते हैं तो उन के मुँह से बुद्धिमानी की बातें इस तरह निकलती हैं मानो कि वह निरंतर और जोश से बेहती हुई लहरें हैं जो श्रोताओं के मुहों तक पहुंच रही हैं। मैंने अपने चिंतन के घोड़े को उनकी विशेषताओं की ओर चलाया तो मैंने उनके ज्ञान तथा कर्मों और नेकी तथा दान दक्षिणा में उन्हें बेमिसाल पाया। वह बहुत ही बुद्धिमान, व्यापक विचार और भले लोगों में से चुनिंदा और

बेहतरीन लोगों में से प्रतिष्ठित हैं। उन्हें माल और दानशीलता प्रदान की गई है और आशाएं उनसे जोड़ी गई हैं और वह धर्म के सेवकों के सरदार हैं और मैं उन पर रश्क करने वालों में से हूं। उम्मीदवार उनके द्वार पर उपस्थित होते हैं और उन से राहत का सामान मांगते हैं। जो भी उनसे मिलने के लिए आता है और उनके घर का रुख करता है वह उससे मुंह नहीं फेरते और मोहताजों में से जो भी उन्हें मिलने आता है वह उसे अपनी दानशीलता से प्रदान करते हैं। और मेरी मुलाकात से पूर्ण हार्दिक रुचि के साथ ऐसी प्रसन्नता प्राप्त करते हैं जैसे दौलतमंद सोना मिलने से झूम उठता है। वह मोहब्बत और विश्वास के कदमों पर चलकर दूरदराज के इलाकों से मेरे पास आते हैं। वह एक पवित्र हृदय नौजवान है जो हमसे मोहब्बत करता है और हम उस से मोहब्बत करते हैं। वह अपनी समस्त शक्ति के साथ मेरी तरफ दौड़े आते हैं चाहे थोड़ा समय ही मिले। अल्लाह तआला ने उस पर नेकियों और दयाभाव के प्रतिफल के निरंतर इनाम बरसाए हैं उनके जीवन से अल्लाह तआला ने इस्लाम और मुसलमानों को सहायता प्रदान की है। उनका मेरे हृदय के साथ एक विचित्र संबंध है और उनका दिल अछूते रंग में रंगीन है वह मेरी मोहब्बत में विभिन्न प्रकार की निंदा, कठिनाइयां तथा अपने प्रिय देश एवं मित्रों की जुदाई बर्दाश्त करते हैं। मेरी बातें सुनने के लिए अपने देश की जुदाई उन्हें सरल प्रतीत होती है। मेरे निवास स्थान की मोहब्बत के लिए वह अपने देश को जिसके साथ उनकी यादें जुड़ी हैं छोड़ देते हैं। मेरी हर एक बात में इस प्रकार मेरी पैरवी करते हैं जैसे नब्ज़ की हरकत सांस की हरकत की पैरवी करती है। मैं उन्हें अपनी प्रशंसा में पूर्णता लीन देखता हूं। जब भी उनसे किसी चीज़ की मांग की जाती है वह देते हैं और कभी पीछे नहीं रहते और जब भी उन्हें किसी उद्देश्य की ओर बुलाया जाता है तो वह सबसे पहले उपस्थित होने वालों में से होते हैं। उनका दिल नेक, उनके शिष्टाचार महान, उनकी दानशीलता बादलों के मूसलाधार बरसने के समान है और उनकी संगत तथाकथित (नाम निहाद) निपट मुल्लों के दिलों को संवारती है। धर्म के शत्रुओं पर उनका आक्रमण क्रोधित युवा शेर के समान होता है। काफिरों पर उन्होंने पत्थर

बरसाए हैं और वेद के मानने वालों के विषयों की खूब छानबीन की है। वह मूर्खों की धरती में उतरे और उनको दंड दिया और उनकी धरती को तहस-नहस कर दिया। उन्होंने अपनी पुस्तकों को झुठलाने वालों का सिर कुचलने के लिए भालों को सीधा करने के समान बड़ी महारत और अच्छाई से तैयार किया। अतः खुदा ने उनके हाथों से वेद के मानने वालों को ऐसा रुसवा किया कि मानो उनके चेहरों पर राख फेंकी गई हो और स्याही मल दी गई हो और वह मुर्दों की तरह हो गए। उन्होंने पलटकर आक्रमण करना चाहा किंतु मुर्दे अपनी मौत के बाद कैसे जीवित हो सकते हैं। अतः वे वेद के अनुयायी असफल और नाकाम वापस चले गए। अगर उनमें तनिक भी लज्जा होती तो कभी लौट कर न आते परन्तु निर्लज्जता तो इस क्रौम के गले का हार बन चुकी है अतः वे आधे ज़िबाह किए हुए लोगों की तरह हमला करते हैं।

यह सम्मानित विद्वान मेरे सर्वाधिक प्रिय मित्रों में से हैं और उनमें से हैं जिन्होंने मेरी बैअत की है और बैअत के बंधन को निभाने की नियत से मेरे साथ निष्ठा भाव रखा और मुझसे इस बात पर वादा किया कि वह अद्वितीय खुदा पर किसी को प्राथमिकता नहीं देंगे। मैंने उन्हें उन लोगों में से पाया है जो अपने वादों को निभाते हैं और ब्रह्मांड के पालनहार से डरते हैं। वह इस ज़माने में जिसमें चारों ओर उपद्रव की चिंगारियां उड़ रही हैं उस साफ सुथरे पानी के समान है जो आसमान से बरसता है। वह बहुत ही कद्र करने योग्य हैं। मैंने किसी भी व्यक्ति के दिल में पवित्र कुरआन की ऐसी मोहब्बत महसूस नहीं की जैसे उनके दिल को पवित्र कुरआन के इश्क से भरा हुआ पाता हूं। पवित्र कुरआन की मोहब्बत उनके दिल में घर कर चुकी है उनके चेहरे में पवित्र आयतों की मोहब्बत चमकती है उनके दिल में रहमान खुदा की ओर से नूर डाले जाते हैं अतः वह उन नूरों के साथ पवित्र कुरआन के उन सूक्ष्म ज्ञानों को देखते हैं जो अत्यंत गहरे और छुपे हुए हैं। उनकी अक्सर विशेषताओं पर मुझे रश्क आता है। यह खुदा तआला की देन है वह अपने बंदों को जैसे चाहता है देता है और वह देने वालों में सर्वश्रेष्ठ है। अल्लाह तआला ने उनको बहुत

पहुंच वाला और बुद्धिमान बनाया है। उनके लेखों में वह मिठास और सुंदरता प्रदान की गई है जो दूसरी पुस्तकों में नहीं पाई जाती। उनके स्वभाव को खुदा तआला के कथन से पूरी पूरी समानता है। उन (कथनों) में बहुत से खजाने हैं जो उस सुशील जवान को प्रदान किए गए हैं। यह अल्लाह तआला की कृपा है और उसकी दी हुई चीज़ में कोई रुकावट नहीं बन सकता। उसके बंदों में से कुछ ऐसे भी हैं जिनको थोड़ी सी भी कृपा प्रदान नहीं की गई और कुछ दूसरे हैं जिनको बहुत कुछ प्रदान किया गया है परन्तु वह अल्लाह से हुज्जत बाज़ी नहीं कर सकते। मुझे मेरी आयु की सौगंध! वह बड़े-बड़े मैदानों के मर्द हैं। उन पर किसी का यह कथन चरितार्थ होता है कि हर ज्ञान के लिए महान मर्द होते हैं और हर मैदान के महान पहलवान होते हैं। इसी प्रकार उन पर यह कथन भी चरितार्थ होता है कि कुछ लोग कोने में दफ़न किए हुए होते हैं और कुछ आदमियों में महान योग्यताएं होती हैं। खुदा तआला उन्हें सलामत रखे और अपनी सुरक्षा में रखे। उन्हें अपनी रज़ामन्दी वाली और आज्ञापालन में बीतने वाली लंबी आयु प्रदान करे और अपने सानिध्य प्राप्त लोगों में से बनाए। मैं देखता हूं कि उनके होठों पर हिकमत (युक्ति संगत बातें) जारी है और आसमान के प्रकाश उनके पास इतनी अधिकता से आते हैं जिस तरह मेहमानों की आवभगत की जाती है। जब भी वह अल्लाह की किताब (कुरआन) की व्याख्या के लिए ध्यान लगाते हैं तो रहस्यों के चश्मे जारी कर देते हैं और अत्यंत सूक्ष्म अर्थ के चश्मे बहा देते हैं और ऐसे ऐसे बेमिसाल अध्यात्म ज्ञान प्रकट करते हैं जो पर्दों में छुपे होते थे। वह सूक्ष्म विषयों पर भी बड़ी बारीकी से नज़र रखते हैं और वास्तविकताओं की गहराई तक पहुंचकर खुला खुला नूर लाते हैं। जानकारी लोग उनके भाषणों के दौरान उनके शब्दों के चमत्कारों और अजीब प्रभावों को स्वीकारते हुए उन्हें ध्यान से सुनते हैं। वह शुद्ध सोने की डली की तरह सच्चाई दिखाते हैं और विरोधियों के संदेहों को जड़ से उखाड़ फेंकते हैं। यह युग फलसफा (दर्शन) की आँधियों का युग है, परन्तु इस से अधिक भ्रष्टाचार और बुराई उत्पन्न हो गई है। इन घटनाओं ने नवयुवकों को व्याकुल कर दिया

है, और विद्वान आध्यात्मिक ज्ञान के धन और दया के रहस्यों के रत्नों से ऐसे वंचित हो गए हैं, जैसे मांस को हटा देने के बाद हड्डियाँ नंगी रह जाती हैं। तो इस स्थिति में, यह जवान खड़ा हो गया और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुश्मनों पर ऐसे टूट पड़ा जैसे उल्का शैतानों पर गिरते हैं। तो वह (यानी हज़रत मौलवी साहब) विद्वानों के बीच आँख की पुतली के समान हैं और ज्ञान के आकाश में उज्ज्वल सूरज की तरह हैं। वह अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते और ऐसे सतही विचारों से खुश नहीं होते जिनका कोई गहरा आधार नहीं होता। बल्कि उनकी समझ धरती के भीतर गहरे छिपे सूक्ष्म रहस्यों के स्रोत तक पहुँचती है। उनके तो क्या ही कहने? अल्लाह ही उन्हें बदला दे। अल्लाह ने छिनी हुई पूंजी उनकी और लौटा दी है और वह धन्य लोगों में से हैं। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने हमें यह प्यारा दोस्त सही जगह पर, सही समय पर और बिल्कुल ज़रूरत के समय दिया। इसलिए, हम अल्लाह तआला से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें आयु, स्वास्थ्य और धन का आशीर्वाद दे और दुआ के स्वीकार होने के वह पल हमें नसीब करे जो उनके तथा उनके खानदान के लिए उचित हों। और मेरा विवेक गवाही देता है कि यह दुआ का स्वीकार होना★ एक प्रमाणित विषय है, न कि काल्पनिक और हम हर दिन

★**हाशिया :-** जान लो कि दुआ का स्वीकार होना खुदाई भेदों में से एक भेद है जिससे रूहानी लोगों को ही विशिष्ट किया गया है। अल्लाह का क़ानून इसी प्रकार जारी है कि वह अपने सानिध्य प्राप्त औलिया की दुआओं के समय इस संसार को, जिससे पैदाइश का सिलसिला जारी है और ग्रहों के प्रभावों को और लोगों के दिलों को अपने क़ब्ज़े में कर लेता है। अतः कभी-कभी उन (बुजुर्गों) की हिम्मत की वजह से एक रूढ़ी हवा पवित्र और साफ हवा में परिवर्तित हो जाती है और पवित्र हवा गंदी हवा बन जाती है और अल्लाह के आदेश से जो धरती तथा आकाश को चलाने वाला है पत्थर दिल नरम और मोहब्बत करने वाले स्वभाव बन जाते हैं तथा मोहब्बत करने वाले दिल पत्थर समान और सख्त स्वभाव बन जाते हैं। जब किसी वलीउल्लाह (अल्लाह के मित्र) को किसी अप्राप्त वस्तु की अत्यन्त आवश्यकता होती है और वह उसके मिलने के लिए पूरे ध्यान से दुआ करता है तो उसके इरादे के कारण वह वस्तु प्रकट हो जाती है और इसी तरह यदि कोई वलीउल्लाह किसी मौजूद चीज़ को समाप्त करने की ओर ध्यान करे तो यकायक

(अल्लाह की दया के) उम्मीदवारों में से हैं।

खुदा की कसम ! मुझे उनके शब्दों में एक नया गौरव दिखाई देता है। मैं उन्हें पवित्र कुरआन के रहस्यों को खोलने और उसके विषय तथा अर्थ को समझने में दूसरों से बढ़कर पाता हूँ। मैं उनके ज्ञान और बुद्धि को दो समानांतर पहाड़ों के रूप में देखता हूँ, मुझे नहीं पता कि कौन सा एक दूसरे से ऊंचा है। वह सुदृढ़ धर्म के बागों में से एक बाग है। हे मेरे रब! तू उन पर स्वर्ग से बरकत बरसा और शत्रुओं की हर बुराई से उनकी रक्षा कर। और वह जहां भी हों, तू उनके साथ हो। और उन पर लोक परलोक में रहम कर और तू रहम करने वालों में सबसे ज्यादा रहम करने वाला है। आमीन सुम्मा आमीन।

समस्त तारीफें उस अल्लाह तआला के लिए हैं, जो सबसे पहला और सबसे आखिरी है, जो दिखाई भी देता है और गुप्त भी है। वही लोक-परलोक में मेरा संरक्षक है। उसी की आत्मा ने मुझे वाकशक्ति प्रदान की और उसी के

वह समाप्त हो जाती है और यही मोजिजों (चमत्कार) की वास्तविकता है। भौतिकवादी विद्वानों की इंद्रियां इन चमत्कारों का आभास नहीं कर सकतीं और न ही दार्शनिकों की अक्लें इनका स्वाद चख सकती हैं। औलिया की इंद्रियां निश्चित रूप से और ही होती हैं जो खुदा तआला की ओर से आती हैं अतः जब उन औलिया को उन इंद्रियों में से अंश दिया जाता है तो वह नए वस्त्रों से सुसज्जित होते हैं और नए स्वर सुनते हैं ऐसे स्वर कि उनके समान इस संसार में किसी कान ने नहीं सुने होते उनकी बुद्धि को अत्यंत उत्तम स्तर पर साफ़ किया जाता है उन्हें अर्थों के निकालने और समझने का ज्ञान दिया जाता है बुद्धि उनके गहरे भेदों की बारीकियों पर आश्चर्य करती है जबकि हर मूर्ख और मन्दबुद्धि उनका इंकार करता है अल्लाह उनके हर हाल में उनके साथ होता है और उनकी मुहिमों और उनके कामों पर उसी का हाथ होता है जब वह धरती में कोई दरवाजा बंद कर देते हैं तो वह दरवाजा आसमान पर भी बंद कर दिया जाता है और जब **शेष हाशिया-** वह उसको खोलते हैं तो आसमान पर भी वह खोल दिया जाता है। आसमान उन औलिया के इरादों के साथ चलते हैं और मामलों को उनके इरादों के फिरने के अनुसार फेर दिया जाता है अल्लाह अपनी सृष्टि को उनके सम्मान और उनकी प्रतिष्ठा दिखा देता है ताकि विवेकी और सौभाग्यशाली लोग उनकी ओर आकर्षित हों। इसी से

हाथ ने मुझे प्रेरित किया। इसलिए, मैंने यह लेख अल्लाह की कृपा, मार्गदर्शन और इलहाम के साथ लिखा है। और गुनाह से बचने और नेकी करने की ताकत केवल अल्लाह (की सहायता) से मिलती है। धरती और आकाश में वही एक समर्थ है। हे मेरे रब! मैंने यह लेख केवल तेरी ताकत और शक्ति से और तेरे इलहाम की महकती लपटों से लिखा है। अतः हे समस्त संसार के पालनहार, सभी प्रशंसा तेरे ही लिए है। तू ही मेरा उपकार कर्ता, मेरा दाता, मेरी दोनों आँखों की रोशनी, मेरे दिल का आनंद और मेरे पैरों की ताकत हैं। मैं इस हालत में मरूँगा कि मैं अपने व्यवहार और अपने कथन तथा शब्दों से तेरे एहसानों का धन्यवाद कर रहा हूँगा। मेरी क्रब्र में मेरी हड्डियाँ और मेरी क्रब्र में मेरी धूल और आकाश में मेरी आत्मा तेरा धन्यवाद कर रही होगी। तेरी कृपा मेरे आभार पर हावी हो जाती है और तेरी नेमतों में मेरी आँखें, मेरे कान, मेरा दिल, मेरा सिर, मेरे अंग और मेरा बाहरी और मेरा आंतरिक शरीर डूब गया है। तू मेरे लिए एक मजबूत किला है। मैं आकाश और धरती की विपत्तियों से और हर चिकनी चुपड़ी बातें करने वाले ईर्ष्यालु से, खुली-खुली सच्चाई का इन्कार करने वाले से, हर बड़बोलेपन से, भड़कते गुस्से से, तमाम अँधेरों से, और हर उस व्यक्ति से तेरी शरण में आता हूँ जो तेरी ओर आने में बाधा बन जाता है।

"और हमारी अन्तिम पुकार यही है कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं, जो दुनिया का पालनहार है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कसीदः

क्रायनात के सरदार, मौजूदात के फ़ख़्र हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरबार में

يَا عَيْنَ فَيْضِ اللَّهِ وَالْعَرْفَانِ يَسْعَى إِلَيْكَ الْخَلْقُ كَالظَّمَانِ

हे अल्लाह के फ़ैज़-व-इफ़्रान (उपकार एवं अध्यात्म) के सागर! लोग तेरी ओर प्यासों की तरह दौड़ते आ रहे हैं।

يَا بَحْرَ فَضْلِ الْمُنْعِمِ الْمَنَّانِ تَهْوَى إِلَيْكَ الزُّمُرُ بِالْكَزَانِ

हे इनाम और एहसान करने वाले ख़ुदा के उपकार के सागर! लोग गिरोह दर गिरोह तेरी ओर मश्कीजे (घड़े) लिए प्यासों की भाँति दौड़े चले आ रहे हैं।

يَا شَمْسَ مُلْكِ الْحُسْنِ وَالْإِحْسَانِ نَوَّرَتْ وَجْهَ الْبَرِّ وَالْعُمَرَانِ

हे हुसन् और एहसान की दुनिया के सूरज! तूने सारी दुनिया को रोशन कर दिया है।

قَوْمٌ رَأَوْكَ وَأُمَّةٌ قَدْ أُخْبِرَتْ مِنْ ذَلِكَ الْبَدْرِ الَّذِي أَصْبَانِي

एक क्रौम ने तो तुझे देखा है और एक उम्मत ने उस चौदहवीं के चाँद की खबर सुनी जिसने मुझे (अपना) आशिक बना लिया है।

يَبْكُونَ مِنْ ذِكْرِ الْجَمَالِ صَبَابَةً وَتَأْلُمًا مِنْ لَوْعَةِ الْهَجَرَانِ

वे तेरी मुहब्बत की याद में रोते हैं और (तेरी) जुदाई के ग़म से उनके आँसू बह रहे हैं।

وَأَرَى الْقُلُوبَ لَدَى الْحَنَاجِرِ كُرْبَةً وَأَرَى الْغُرُوبَ تُسِيلُهَا الْعَيْنَانِ

और मैं देखता हूँ कि दिल बेचैनी से गले तक आ गए हैं और आँखें आँसू बहा रही हैं।

يَا مَنْ غَدَا فِي نُورِهِ وَضِيَائِهِ كَالنَّيِّرَيْنِ وَنَوَّرَ الْمَلَوَانَ

हे वह हस्ती जो अपनी छटा और तेज में चाँद और सूरज के समान हो गई

है और अपने नूर (ज्ञान) से रात और दिन को रोशन कर दिया है।

يَا بَدْرَنَا يَا آيَةَ الرَّحْمَنِ أَهْدَى الْهُدَاةِ وَأَشْجَعَ الشُّجْعَانِ

हे हमारे चौदहवीं के चाँद! हे रहमान खुदा के निशान! सब रहनुमाओं से बढ़कर और सब बहादुरों से निडर।

إِنِّي أَرَى فِي وَجْهِكَ الْمُتَهَلِّلِ شَأْنًا يَفُوقُ شَمَائِلَ الْإِنْسَانِ

मैं तुझ में एक ऐसी विशेषता देखता हूँ जो मानवीय विशेषताओं में सर्वोत्कृष्ट है।

وَقَدْ اقْتَفَاكَ أُولُو النُّهْيِ وَبِصَدْقِهِمْ وَدَعَا تَذَكُّرَ مَعَهْدِ الْأَوْطَانِ

बुद्धिमानों ने तुझे चुन लिया और तेरा अनुसरण किया और अपनी निष्ठा के कारण उन्होंने अपने वतनों की याद भी भुला दी।

قَدْ أَثَرُوكَ وَفَارَقُوا أَحْبَابَهُمْ وَتَبَاعَدُوا مِنْ حَلَقَةِ الْإِخْوَانِ

उन्होंने तुझे अपना लिया और दूसरों पर प्राथमिकता दी और अपने मित्रों से अलग हो गए और भाई बन्धों से दूरी अपना ली।

قَدْ وَدَّعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَنَفْسَهُمْ وَتَبَرَّءُوا مِنْ كُلِّ نَسَبٍ فَإِنْ

उन्होंने अपनी इच्छाओं और इरादों को बिल्कुल छोड़ दिया और हर प्रकार के नश्वर धन-दौलत से विमुख हो गए।

ظَهَرَتْ عَلَيْهِمْ بَيِّنَاتُ رَسُولِهِمْ فَتَمَرَّقَ الْأَهْوَاءُ كَالْأَوْثَانِ

जब उन पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खुले-खुले और रोशन सबूत ज़ाहिर हुए तो उनकी कामवासनाएँ बुतों (अर्थात् पुतले) की तरह टुकड़े-टुकड़े हो गईं।

فِي وَقْتِ تَرْوِيْقِ اللَّيَالِي نُورُوا وَاللَّهُ نَجَاهُمْ مِنَ الطُّوفَانِ

वे घोर अन्धकार के समय अन्धविश्वास से मुक्ति दिलाए गए और अल्लाह तआला ने उन्हें अन्धकार के तूफान से बचा लिया।

قَدْ هَاضَهُمْ ظُلْمُ الْإِنْسَانِ وَضَمِيمُهُمْ فَتَثَبَّتُوا بِعِنَايَةِ الْمَنَّانِ

मुखालिफ़ लोगों के जुल्म-व-सितम ने उन्हें मिटा डालने की कोशिश की। फिर

भी वे मुहसिन ख़ुदा की कृपा से अपने इरादे पर अटल रहे।

نَهَبَ اللَّيْثُ نُسُوبَهُمْ وَعِقَارَهُمْ فَتَهَلَّلُوا بِجَوَاهِرِ الْفُرْقَانِ

ओछे और दुराचारियों ने उनकी धन-सम्पदा को लूट लिया, मगर फ़ुर्कान (अर्थात् कुर्आन मजीद) के अनमोल मोती पाकर उनके चेहरे ख़ुशी से चमक उठे।

كَسَحُوا بَيُوتَ نَفُوسِهِمْ وَتَبَادَرُوا لِتَمَتُّعِ الْإِيقَانِ وَالْإِيمَانِ

उन्होंने अपने दिलों को अच्छी तरह साफ़ किया और यक़ीन (दृढ़विश्वास) और ईमान की दौलत से फ़ायदा उठाने के लिए तेज़ी से आगे बढ़े।

قَامُوا بِإِيَادِ الرَّسُولِ بَغْزِهِمْ كَالْعَاشِقِ الْمَشْغُوفِ فِي الْمِيدَانِ

वे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व वसल्लम की पैरवी में एक आशिक़ के समान अपने अभियान में डट गए।

فَدَمَّرَ الرَّجَالُ لِمَدَقِهِمْ فِي حُبِّهِمْ تَحْتَ السُّيُوفِ أَرِيقَ كَالْقُرْبَانِ

तो उन लोगों के ख़ून उनकी सत्यनिष्ठा और प्रेम के कारण तलवारों के नीचे कुर्बानियों की तरह बहाए गए।

جَاءُوكَ مِنْهُوَ بَيْنَ كَالْعُرْيَانِ فَسَرَّتْهُمْ بِمَلَا حِفِّ الْإِيمَانِ

वे तेरे पास लुटे-पिटे नंगे आदमी की तरह आए तो तूने उन्हें ईमान की चादरें ओढ़ा दीं।

صَادَقَتْهُمْ قَوْمًا كَرُوثٍ ذَلَّةً فَجَعَلَتْهُمْ كَسَبِيكَةِ الْعِيقِيَانِ

तूने उन्हें गोबर की तरह नीच क्रौम पाया। फिर उन्हें शुद्ध सोने की भाँति बना दिया।

حَتَّى انْتَنَى بَرٌّ كَمِثْلِ حَدِيقَةٍ عَذَّبَ الْمَوَارِدِ مُثْمِرِ الْأَغْصَانِ

यहाँ तक कि अरब उस बाग़ के समान हो गया जिसके झरने रुचिकर और मीठे हों और डालें फलों से लदी हुई।

عَادَتْ بِلَادُ الْعَرَبِ نَحْوَ نَضَارَةٍ بَعْدَ الْوَجْهِ وَالْمَحَلِّ وَالْخُسْرَانِ

सूखा और तबाही के बाद अरब फिर से हरा-भरा हो गया।

كَانَ الْحِجَازُ مُغَارِلَ الْغَزْلَانِ فَجَعَلَتْهُمْ فَانِينَ فِي الرَّحْمَانِ

हिजाज़ के रहने वाले मृगनयनी स्त्रियों से व्यभिचार में डूबे थे। तूने उन्हें रहमान ख़ुदा में लीन होने वाला बना दिया।

شَيْئَانِ كَانَ الْقَوْمُ عُمِيًّا فِيهِمَا حَسُو الْعُقَارِ وَ كَثْرَةُ النِّسْوَانِ

दो बातें थीं जिनमें अरब क्रौम अंधी हो रही थी, अर्थात् मजे ले लेकर शराब पीना और बहुत सी स्त्रियाँ रखना।

أَمَّا النِّسَاءُ فَحُرِّمَتْ إِنْكَاحُهَا زَوْجَالَهُ التَّحْرِيمُ فِي الْقُرْآنِ

औरतों के बारे में यह आदेश जारी हुआ कि उनका विवाह ऐसे व्यक्ति से जिसका निषेध कुर्आन में आ गया है अवैध (हराम) कर दिया गया है।

وَجَعَلَتْ دَسْكَرَةَ الْمُدَامِ مُحَرَّبًا وَأَزَلَّتْ حَانتَهَا مِنَ الْبُلْدَانِ

तूने शराबखानों को उजाड़ दिया और शहरों से शराब की दुकानें हटा दीं।

كَمْ شَارِبٍ بِالرَّشْفِ دَنَّا طَافِحًا فَجَعَلْتَهُ فِي الدِّينِ كَالنَّشْوَانِ

बहुत से थे जो मटके के मटके उड़ा जाते थे तूने उन्हें धर्म का मतवाला बना दिया।

كَمْ مُحَدِّثٍ مُسْتَنْطِقِ الْعِيدَانِ قَدْ صَارَ مِنْكَ مُحَدِّثَ الرَّحْمَنِ

कितने ही नई-नई धुन बजाने वाले और नाचने गाने वाले थे जो तेरे अनुसरण से रहमान ख़ुदा से संवाद का सौभाग्य पाने वाले हो गए।

كَمْ مُسْتَهَامٍ لِلرَّشُوفِ تَعَشُّقًا فَجَذَبَتْهُمْ جَذْبًا إِلَى الْفُرْقَانِ

कितने ही ख़ूबसूरत और सुरीली औरतों के पीछे आवारा घूम रहे थे। तूने उन्हें फ़ुर्क़ान (अर्थात् कुर्आन) की तरफ़ खींच लिया।

أَحْيَيْتَ أَمْوَاتَ الْقُرُونِ بِجُلُوءِ مَاذَا يُمَاطِلُكَ بِهَذَا الشَّانِ

तूने सदियों के मुर्दे अपने नूर से ज़िन्दा कर दिए। कौन है जो इस शान में तेरा हमतुल्य हो सके ?

تَرَ كُؤَالُ الْغُبُوقِ وَبَدَّلُوا مِنْ ذَوْقِهِ ذَوْقَ الدُّعَايِ بِلَيْلَةِ الْأَحْزَانِ

उन्होंने शाम की शराब छोड़ दी और उसके आनन्द को ग़म की रातों में दुआ के आनन्द से बदल दिया।

كَانُوا بِرَنَاتِ الْمَثَانِي قَبْلَهَا قَدْ أَحْصَرُوا فِي شُحِّهَا كَالْعَانِي

इससे पहले वे दो तारों (अर्थात् सारंगियों की साज और गानों की आवाज) के सुरों की चाहत में क़ैदियों के समान गिरफ़्तार थे।

قَدْ كَانَ مَرْتَعُهُمْ أَغْنَانِي دَائِمًا طُورًا بُغِيدٍ تَارَةً بِدَنَانٍ

उनके भोग-विलास का मैदान हमेशा ही राग-रंग था। कभी तो वे सुन्दर और नाजुक स्त्रियों से जी बहलाते और कभी शराब से।

مَا كَانَ فِكْرٌ غَيْرَ فِكْرِ غَوَانِي أَوْ شُرْبٌ رَاحٍ أَوْ خِيَالٍ جِفَانٍ

उन्हें सुन्दर नाचने-गाने वाली औरतों या शराब और उसके प्यालों के सिवा और कोई चिन्ता न थी।

كَانُوا كَمَشْغُوفِ الْفَسَادِ بِجَهْلِهِمْ رَاضِينَ بِالْأَوْسَاحِ وَالْأَدْرَانِ

वे अपनी उजड़ता के कारण लड़ाई-झगड़े के शौकीन थे और मैल-कुचैल एवं गन्दगी पर खुश थे।

عَيَّبَانِ كَانَ شِعَارَهُمْ مِنْ جَهْلِهِمْ حُمُقُ الْحِمَارِ وَوَثْبَةُ السَّرْحَانِ

उनकी मूर्खता के कारण उनमें दो दोष थे, (1) गधे की तरह अड़ना (2) भेड़िये की तरह हमला करना।

فَطَلَعَتْ يَاشَمْسُ الْهُدَى نُصْحًا لَهُمْ لِتُضِيَّتَهُمْ مِنْ وَجْهِكَ التُّورَانِي

अतः हे मार्गदर्शन के सूरज! तू उनकी भलाई के लिए उदय हुआ ताकि अपने प्रकाशमान चेहरे से उन्हें रौशन कर दे।

أُرْسِلْتَ مِنْ رَبِّ كَرِيمٍ مُحْسِنٍ فِي الْفِتْنَةِ الصَّمَاءِ وَالطُّغْيَانِ

तू महान कृपालु और उपकारी खुदा की ओर से भयावह उपद्रव और उद्दण्डता के चर्मोत्कर्ष के समय भेजा गया।

يَا لَلْفَتَى مَا حُسْنُهُ وَجَمَالُهُ رِيَاءُ يُصْبِي الْقَلْبَ كَالرَّيْحَانِ

वाह! क्या ही खूबसूरत और सुन्दर छवि वाला जवां मर्द (योद्धा) है! जिसकी सुन्दरता दिल को एक सुगन्धित पौधे की भाँति मोह लेती है।

وَجْهُ الْمُهَيَّمِنِ ظَاهِرٌ فِي وَجْهِهِ وَشُؤْنُهُ لَمَعَتْ بِهَذَا الشَّانِ

उसकी मुखकांति से खुदा का तेज प्रकट होता है और उसके इस तेज से खुदा की विशेषताएं चमक रही हैं।

فَلِذَا يُحَبُّ وَيَسْتَحِقُّ جَمَالَهُ شَغَفًا بِهِ مِنْ زُمْرَةِ الْأَخْدَانِ

इसीलिए तो वह अत्यन्त प्रिय है और उसकी सुन्दर छवि इस योग्य है कि सदाचारी मित्रों (अर्थात् ऋषियों, मुनियों और अवतारों) के गिरोह में से उससे असीम प्रेम किया जाए।

سُجُّمٌ كَرِيمٌ بَاذِلٌ خِلَ الثُّقَى خِرْقٌ وَفَاقٌ طَوَائِفَ الْفِتْيَانِ

वह सुशील, सुप्रतिष्ठित, दानवीर और संयमियों का मित्र है और ऐसी विशेषताएँ रखने वालों में से सबसे बढ़कर है।

فَاقَ الْوَرَى بِكَمَالِهِ وَجَمَالِهِ وَجَلَالِهِ وَجَنَانِهِ الرَّيَّانِ

वह अपनी विशेषता, छवि, प्रताप (रौब) और हमदर्दी में सारी सृष्टि से बढ़कर है।

لَا شَكَّ أَنَّ مُحَمَّدًا خَيْرُ الْوَرَى رَيْقُ الْكَرَامِ وَنُحْبَةُ الْأَعْيَانِ

निस्सन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठितों के प्रतिष्ठित और पुण्यात्माओं (मुकद्दसों) के पुण्यात्मा हैं।

تَمَّتْ عَلَيْهِ صِفَاتُ كُلِّ مَرِيَّةٍ خُتِمَتْ بِهِ نَعْمَاءُ كُلِّ زَمَانٍ

हर प्रकार की श्रेष्ठता की विशेषताएँ उस पर पूर्णरूप से पायी गयीं और उस पर हर युग की नेमतें समाप्त हो गईं।

وَاللَّهُ إِنَّ مُحَمَّدًا كَرِ دَافَةً وَبِهِ الْوُصُولُ بِسُدَّةِ السُّلْطَانِ

खुदा की क्रसम! निस्सन्देह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (खुदा के) नायब की तरह हैं और अब उन्हीं के माध्यम से खुदा की चौखट तक रसाई हो सकती है।

هُوَ فَخْرُ كُلِّ مُطَهَّرٍ وَمُقَدَّسٍ وَبِهِ يُبَاهَى الْعَسْكَرُ الرُّوحَانِي

वह प्रत्येक शुद्धात्मा और पवित्रात्मा का गर्व है और रूहानी (आध्यात्मिक) लोगों का गिरोह उसी पर गर्व करता है।

هُوَ خَيْرُ كُلِّ مُقَرَّبٍ مُتَقَدِّمٍ وَالْفَضْلُ بِالْخَيْرَاتِ لَا بِزَمَانٍ

वह हर गुज़रे हुए मुकर्रब (सानिध्यप्राप्त) से बढ़कर है और यह श्रेष्ठता श्रेष्ठतम् कार्यों की दृष्टि से है न कि युग की।

وَالظَّلُّ قَدْ يَبْدُو أَمَامَ الْوَابِلِ فَالظَّلُّ طَلٌّ لَيْسَ كَالْتَهْتَانِ

हल्की फुहार मूसलाधार वर्षा से पहले होती है और हल्की फुहार मूसलाधार वर्षा के समान नहीं हो सकती।

بَطْلٌ وَحِيدٌ لَا تَطِيشُ سَهَامُهُ ذُو مُصْمِيَّاتٍ مُؤَبِّقُ الشَّيْطَانِ

वह अद्वितीय सूरमा है जिसके तीर लक्ष्य से कभी नहीं भटकते। वह अचूक निशानों वाला (और) शैतान का जड़ से विनाश करने वाला है।

هُوَ جَنَّةٌ إِنِّي أَرَى أَثْمَارَهُ وَقُطُوفُهُ قَدْ ذُلِّلَتْ لِجَنَائِي

वह एक सुखद उपवन है। मैं देखता हूँ कि उसके फल और गुच्छे मेरे दिल की ओर झुका दिए गए हैं।

أَلْفَيْتُهُ بَحْرَ الْحَقَائِقِ وَالْهُدَى وَرَأَيْتُهُ كَالدُّرِّ فِي اللَّمَعَانِ

मैंने उसको ठोस सच्चाइयों और शिक्षाओं का सागर पाया और चमक-दमक में उसे मोतियों के समान देखा।

قَدَمَاتِ عَيْسَى مُطَرِّقًا وَنَبِيَّنَا حَيٌّ وَرَبِّي إِنَّهُ وَافَائِي

ईसा^अ तो सिर झुकाकर (अर्थात् प्राकृतिक विधानानुसार-अनुवादक) मृत्यु पा गए और हमारा नबी^{स.अ.व.} जीवित है और ख़ुदा की क़सम! उसने मुझसे भेंट भी की है।

وَاللّٰهُ إِنِّي قَدْ رَأَيْتُ جَمَالَهٖ بِعُيُونِ جِسْمِي قَاعِدًا بِمَكَانِي

ख़ुदा की क़सम! मैंने उसके सौन्दर्य को अपनी भौतिक आँखों से अपने मकान पर बैठे हुए देखा है।

هَإِنْ تَظَنَّنِيَتْ ابْنُ مَرْيَمَ عَاشِئًا فَعَلَيْكَ إِثْبَاتًا مِّنَ الْبُرْهَانِ

देख! यदि तू भी ईसा इब्ने मरयम को जीवित समझता है तो प्रमाण (दलील) द्वारा सिद्ध करना तुझ पर अनिवार्य है।

أَفَأَنْتَ لَا قَيْتَ الْمَسِيحَ بِبِقِظَةٍ أَوْ جَاءَكَ الْأَنْبَاءُ مِنْ يَّقْظَانِ

क्या तुम जागने की अवस्था में मसीह^{अ०} से मिल चुके हो या किसी जीते-जागते ने (देखकर) तुम्हें यह खबर दी है कि वह ज़िन्दा हैं।

أَنْظُرْ إِلَى الْقُرْآنِ كَيْفَ يُبَيِّنُ أَفَأَنْتَ تُعْرِضُ عَنْ هُدَى الرَّحْمَنِ

क़ुरआन को (खोलकर) देखो कि वह कैसे स्पष्ट तौर पर उसकी मृत्यु वर्णन कर रहा है। क्या तुम रहमान ख़ुदा की खुली-खुली हिदायत से मुँह फेरते हो।

فَاعْلَمْ بِأَنَّ الْعَيْشَ لَيْسَ بِثَابِتٍ بَلْ مَاتَ عِيسَى مِثْلَ عَبْدٍ فَإِنْ

जान लो कि यह जीवन नश्वर है और ईसा एक नश्वर इन्सान की भाँति मर चुके हैं।

وَنَبِيِّنَا حَيٌّ وَ إِنِّي شَاهِدٌ وَقَدْ افْتَتَفْتُ قَطَائِفَ اللُّقْيَانِ

और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवित हैं और मैं (इस बात का) गवाह हूँ और मैंने आप स.अ. व. की मुलाक़ात का सौभाग्य पाया है।

وَرَأَيْتُ فِي رَيْعَانِ عُمَرَى وَجْهَهُ ثُمَّ النَّبِيُّ بِيَقْظَتِي لَا قَانِي

मैंने तो अपनी युवावस्था में ही उनका पवित्र चेहरा देखा। फिर मेरे जागने की अवस्था में भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे मुलाक़ात का सौभाग्य प्रदान किया।

إِنِّي لَقَدْ أَحْيَيْتُ مِنْ أَحْيَائِهِ وَاهَا لِإِعْجَازٍ فَمَا أَحْيَانِي

निस्सन्देह मैं आप के ज़िन्दा करने से ही ज़िन्दा हुआ हूँ। सुब्हानल्लाह! क्या चमत्कार है और आप ने क्या ही अच्छा मुझे जीवित किया है।

يَا رَبِّ صَلِّ عَلَى نَبِيِّكَ دَائِمًا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا وَبَعَثْ ثَانٍ

हे मेरे रब्ब! अपने नबी पर हमेशा दरूद भेज, इस लोक में भी और परलोक में भी।

يَا سَيِّدِي قَدْ جِئْتُ بِأَبْكَ لَا هَفَاً وَالْقَوْمُ بِأَلَا كُفَّارٍ قَدْ آذَانِي

हे मेरे आक्रा! मैं इस हाल में तेरे द्वार पर सताया हुआ फ़रियादी बनकर आया हूँ कि लोगों ने काफ़िर कहकर मुझे बहुत दुःख पहुँचाया है।

يَفْرِي سَهَامُكَ قَلْبَ كُلِّ مُحَارِبٍ وَيَشْجُرُ عَزْمُكَ هَامَةَ الثُّعْبَانِ

तेरे तीर हर दुश्मन के दिल को चीर देते हैं और तेरा प्रण अजगर के सर को कुचल डालता है।

لِلّهِ دُرُّكَ يَا إِمَامَ الْعَالَمِ أَنْتَ السَّبُّوقُ وَسَيِّدُ الشُّجْعَانِ

हे सम्पूर्ण संसार के मार्गदर्शक (इमाम) तुझ पर धन्य-धन्य! तू सबसे बढ़कर है और सब बहादुरों का सरदार है।

أَنْظُرْ إِلَيَّ بِرَحْمَةٍ وَتَحَنُّنٍ يَا سَيِّدِي أَنَا أَحَقُّرُ الْعِلْمَانِ

तू मुझ पर करुणा एवं सहानुभूति की दृष्टि डाल। हे मेरे आका! मैं (तेरा) एक बहुत ही तुच्छ गुलाम हूँ।

يَا حَبِيبَ إِنَّكَ قَدْ دَخَلْتَ مَحَبَّةً فِي مُهَجَّتِي وَمَدَارِ كَيْ وَجَنَانِي

हे मेरे प्यारे! तेरी मुहब्बत मेरे खून में, मेरी जान में, मेरे हवास में और मेरे दिल में रच बस गई है।

مِنْ ذِكْرِ وَجْهِكَ يَا حَدِيقَةَ بَهْجَتِي لَمْ أَحُلْ فِي لَحْظٍ وَلَا فِي أَنْ

हे मेरे हर्षोल्लास के सुखद बाग! मैं एक पल के लिए भी तेरी याद से खाली नहीं रहता।

جِسْمِي يَطِيرُ إِلَيْكَ مِنْ شَوْقٍ عَلا يَا لَيْتَ كَأَنَّتْ قُوَّةَ الطَّيْرَانِ

मेरा शरीर पूरी मुहब्बत और लगाव के जोश से तेरी ओर उड़ना चाहता है। काश! कि मुझ में उड़ने की शक्ति होती।

القصيدۃ المبتکرة المحبّرة التي خاطری ابو عذرہا وقد
 اودعتها أشعاراً تشفى صدور المتفكرين وتروى أوامر الصادين
 यह अनुपम और सुन्दर क़सीदः मेरे स्वाभाविक चेतना से उत्पन्न रचना है
 मैंने इस क़सीदः को ऐसे अश्रूअर जड़े रखे हैं जो सोच-विचार करने वालों
 के सीनों को रोग मुक्त करेंगे और प्यासों की प्यास को तृप्त करेंगे।

بمُطَّلَعٍ على أسرار بالی بعالم عیبی فی کل حالی
 क़सम उस हस्ती की जो मेरे दिल के भेदों से अवगत है। और क़सम उस
 हस्ती की जो हर हाल में मेरे सीने के रहस्य (राज़) से परिचित है।
 بوجهٍ قد رأى أعشار قلبی بمستمعٍ لصرخی فی اللیالی
 क़सम उस हस्ती की जो मेरे दिल दिल के समस्त कोनों से परिचित है और
 क़सम उस हस्ती की जो रातों को मेरे रोने और गिड़गिड़ाने को सुनने वाला है।
 لقد أرسلت من رب کریم رحیم عند طوفان الضلال
 निस्सन्देह मैं कृपालु रब्ब की तरफ से पथभ्रष्टता (गुमराही) के समय भेजा
 गया हूँ।

وقد أعطیت برهاناً کریم وثقّفناه تثقیف العوالی
 और मुझे भाले जैसे (तेज़) प्रमाण दिया गया और उस प्रमाण को हमने
 हर वक्रता (टेढ़ेपन) से पवित्र कर दिया है जिस प्रकार कि भालों को सीधा किया
 जाता है।

فلا تقف الظنون بغير علم وخفّ أخذ المحاسب فی الجلال
 अतः तू मूर्खता से निराधार काल्पनिक बातों का अनुकरण न कर और
 प्रतापी हिसाब लेने वाले की पकड़ से डर।

تري آیات صدقی ثم تنسى لحاک الله مالک لا تبالی
 तू मेरी सच्चाई के निशान देखा था है फिर भूल जाता है। खुदा तेरा बुरा
 करे। क्या बात है कि तू परवाह नहीं करता।

تعال إلى الهدی دُلّاً خضوعاً إلى ما تکتسی ثوب الدلال

विनय और विनीतता से हिदायत की तरफ आ। तू कब तक घमण्ड का लिबास पहने रखेगा।

وإن ناضلتني فترى سهامي و مثلي لا يفرّ من النضال

यदि तू तीर चलाने में मेरा मुकाबला करे तो मेरे तीरों का तुझे पता लग जाएगा और मुझ जैसा व्यक्ति तीर चलाने के मुकाबले में भागा नहीं करता।

سهامي لا تطيش بوقت حرب وسيفي لا يغادر في القتال

लड़ाई के समय मेरे तीर निशाने से नहीं चूकते और मेरी तलवार लड़ाई में (किसी को) नहीं छोड़ती।

فإن قاتلتني فأريك أني مقيم في ميادين القتال

और यदि तू मुझ से युद्ध करे तो मैं तुझे दिखादूंगा कि निस्सन्देह में रणभूमि में डटा रहने वाला हूँ।

أبأ لا يذأ أترك أمر ربّي و مثلي حين يؤذى لا يبالي

क्या दुःख दिए जाने से मैं अपने रब्ब के कार्य त्याग दूँ? जबकि मुझ जैसा मनुष्य कष्ट दिए जाने पर परवाह नहीं करता।

و كيف أخاف تهديد الخناثي و قد أعطيت حالات الرجال

मैं नपंसुकों की धमकी से कैसे डर सकता हूँ जबकि मुझे मर्दों के मर्दानगी की दिए गए हैं

ألا اني أقاوم كلّ سهم و أقلّ الا كتنان عن التّبال

अवगत रहो कि मैं हर तीर का सामना करूंगा और मैं तीरों के डर से मोर्चा बन्द होने को पसन्द नहीं करता।

فإن حرباً فحربٌ مثل نارٍ و إن سلماً فسلمٌ كالزُّلال

यदि युद्ध चाहो तो (इधर से) युद्ध होगा अग्नि की भांति। और यदि सुलह चाहो तो (इधर से) सुलह होगी मीठे पानी की भांति।

و حربي بالدلائل لا السهام و قولي لهذم شأج القذال

और मेरी लड़ाई सबूतों के द्वारा होगी न कि तीरों से और मेरा कथन काटने वाली तलवार है जो गर्दन को तोड़ देने वाली है।

وفاق السيف نطقى فى الصقال قد اغتلت المكفر كالغزال

और मेरा कलाम चमक और तेज़ी में तलवार से बढ़कर है। मैंने निस्सन्देह काफ़िर कहने वाले को मृग के शिकार की भांति अचानक मार दिया है।

ولم يزل اللّثام يكفّرونى إلى أن جاء نصره ذى الجلال

और कमीने लोग मुझे काफ़िर कहने में लगे रहे यहां तक महा प्रतापी ख़ुदा की सहायता आ गई।

وقد جادلتنى ظلماً وزوراً و جاوزت الديانة فى الجدل

और निस्सन्देह तूने जुल्म (अन्याय) और झूठ के साथ मुझ से झगड़ा किया है और इस झगड़े में ईमानदारी को छोड़ गया है।

ولو قبل الجدل سألت منى جُذِبْتُ إلى الهدى قبل الوبال

यदि तू झगड़े से पहले मुझ से पूछ लेता तो विनाश से पहले हिदायत की ओर खींचा जाता।

لنا فى نصره الدّين المتين مساعٍ فى الترقى والكمال

सुदृढ़ धर्म की सहायता में हमारी ऐसी कोशिशें हैं जो उन्नति और उत्कर्ष पा रही हैं।

هدانى خالقى نهجاً قويمًا وربّانى بأنواع النّوال

मेरे स्रष्टा (ख़ालिक) ने मुझे सद्मार्ग पर चलाया है और भिन्न-भिन्न प्रकार के इनामों से मुझे प्रशिक्षण दिया है।

لقد أعطيت أسرار السرائر فسل إن شئت من نوع السّؤال

मुझे गुप्त से गुप्त रहस्य प्रदान किए गए हैं। यदि तू चाहे तो किसी प्रकार का प्रश्न करके पूछ कर देख।

وقد غوّصت فى بحر الفناء فعدتُ وفى يدى أبهى اللّآلى

और मैंने फ़ना (मौत) के समुद्र में डुबकी लगाई, फिर जब मैं लौटा तो मेरे हाथ में अत्यन्त चमकदार मोती थे।

رأيت بفضل ربّى سبل ربّى وإن كانت أدقّ من الهلال

मैंने अपने प्रतिपालक (रब्ब) के फ़ज़ल से ख़ुदा के मार्ग पा लिए हैं यद्यपि

वे पहले दिन के चन्द्रमा से भी अधिक बारीक थे।

و كم سرّ أرا في نور ربّي و آیات علی صدق المقال

और बहुत से भेद मेरे रब के प्रकाश ने मुझे दिखाए और मेरी बातों की सच्चाई पर निशान भी दिखाए हैं।

و علم يبهرنّ عقول ناس و رأي قد علا قنن الجبال

और बहुत सा ज्ञान भी दिया जो विरोधी लोगों की बुद्धियों पर विजयी हो जाएगा और बहुत से विचार दिए जो पर्वतों के शिखरों से भी ऊंचे हैं।

سعیّت و ما ونیت بشوق ربّي إلى أن جاء في ریا الوصال

मैंने अपने रब के प्रेम में प्रयास जारी रखा और कोई सुस्ती न की, यहां तक कि मुझे खुदा से मिलने की सुगंध आ गयी।

وقد أشربت كأساً بعد كأسٍ إلى أن لاحت لي نور الجمال

और मुझे प्याले पर प्याला पिलाया गया यहां तक कि मुझ पर वास्तविक सुन्दरता का प्रकाश प्रकाशमान हो गया।

وقد أعطيتُ ذوقاً بعد ذوق و نعماء المحبّة والدلال

और मुझे आनन्द पर आनन्द दिया गया तथा प्रेम और गर्व की नेमतें भी दी गईं।

وجدت حیات قلبي بعد موتي و عادت دولتي بعد الزوال

मैंने अपनी फ़ना (मौत) के बाद आत्मिक जीवन को पा लिया और मेरी दौलत चले जाने के बाद लौट आई।

لفاظات الموائد كان أكلی و صرتُ اليوم مطعام الإهالی

दस्तर ख़्वानों का बचा हुआ भोजन मेरी ख़ुराक था और आज मैं कई घरानों के खिलाने वाला बन गया हूं।

أزید بفضلہ یوماً فیوماً و أصلی قلب منتظر الوبال

मैं उसके फ़ज़ल से प्रतिदिन उन्नति कर रहा हूं और विनाश की प्रतीक्षा करने वाले के दिल को जला रहा हूं।

ألا يا حاسدي خف قهر ربي وما الوك نصحاً في المقال

हे मेरे इर्ष्यालु! मेरे रब्ब के प्रकोप से डर, और मैं तेरी हमदर्दी की बात कहने में कमी नहीं करता।

فلا تستكبرن بفور عجب وكم من مُزْدِه صيد النكال

अतः तू स्वयं को सबसे अच्छा समझने के जोश में हरगिज़ घमण्ड न कर। बहुत से घमण्डी मानसिक खेद उत्पन्न करने वाले अज़ाब का शिकार बन चुके हैं।

ألا يا خاطب الدنيا الدنيّه تذكّر يوم قرب الارتحال

हे कमीनी दुनिया के अभिलाषी (दुनिया से) प्रस्थान के निकट होने के दिन को याद कर।

سهام الموت تفجأ يا عزيزي ولو طال المدى في الانتقال

हे मेरे प्रिय! मौत के तीर अचानक आ लगते हैं चाहे (दुनिया में) मौत की अवधि लम्बी भी हो जाए।

هداك الله قد جادلت بغضا وما فكرت في قولي وقالي

ख़ुदा तुझे हिदायत (मार्गदर्शन) दे। तूने द्वेष के कारण झगड़ा किया है और मेरी बात पर विचार नहीं किया।

وكم اكفرتني كذباً وزوراً وكم كذبت من زيغ الخيال

और तूने झूठ और ग़लत बयानी से मुझे बहुत काफिर ठहराया है और अपने दूषित विचारों से मुझे बहुत झुटलाया।

وإني قد أرى قد ضاع دينك فقم واربأ به قبل الرّحال

और निस्सन्देह मैं देखता हूँ कि तेरा धर्म नष्ट हो गया है। अतः उठ और प्रस्थान करने से पहले उसे संभाल ले।

حياتك بالتغافل نوع نوم وأيام المعاصي كالليالي

तेरा लापरवाह जीवन एक प्रकार की निद्रा है और पापों के दिन रातों के समान हैं।

ولست بطالب الدنيا كزعمك وقد طلقْتُها بالاعتزال

और मैं संसार का अभिलाषी कदापि नहीं हूँ जैसा कि तेरा विचार है। मैंने

तो एकान्तवास के द्वारा उसे तलाक़ दे दी है।

ترکنا هذه الدنيا لوجهٍ و آثرنا الجمال على الجمال

हम ने यह संसार एक चेहरे (परमात्मा) के लिए त्याग दिया है और हम ने उसके सौन्दर्य को ऊंटों (अर्थात् धन-दौलत) पर प्राथमिकता दी है।

وإنك تزدري نطقي وقولي ولو صادفته مثل اللآلي فلا

तू मेरे कलाम और मेरी बात को तुच्छ समझता है चाहे तू ने उसे मोतियों के समान पाया हो।

تنظر الى زحفٍ فإني نظمت قصيدتي بالارتجال

अतः तू (इस में) किसी भारीपन के बारे में सोच-विचार न कर क्योंकि मैंने तो अपने क़सीदः को बिना सोच-विचार किए कहा है।

القصيدة (क़सीदा)

أمرت من الله الكريم الممجّد فقمْتُ ولم أكسل ولم أتبلّد

महान एवं दयालु ख़ुदा की ओर से मुझे भेजा गया है। तो मैंने इस के लिए कमर कस ली। न मैंने सुस्ती दिखाई और न कोई संकोच किया।

وهذا كتابي قد تلاءَ وجههُ تلاءُ سمطى لؤلؤ وزبرجد

और वह मेरी पुस्तक जिसका सौन्दर्य मोतियों और पन्ना (हरे रंग का बहूमूल्य पत्थर) की माला जैसी चमक लिए है प्रकाशमान हो गया है।

ترى نور العرفان فيه كأنه آية ذكاي أو بريق العسجد

तू उसमें आध्यात्म ज्ञान का प्रकाश इस प्रकार देखेगा कि वह मानो सूर्य की किरण या शुद्ध सोने की चमक है।

واني أرى فيه الشفاء لطالب ويشفى به قلب السعيد ويهتدى

और निस्सन्देह मैं उसमें सत्याभिलाषी का कल्याण पाता हूँ जिस से नेक

स्वभाव वाले दिल के दोष दूर किए जाते हैं और वह हिदायत पा जाते हैं।

وَأودعته أسرار علم وحكمة ورتبته مثل الثقيف المسند

और मैंने उस में ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता के रहस्यों का समावेश कर दिया है तथा मैंने उसे एक माहिर विश्वसनीय साहित्यकार की तरह क्रमबद्ध किया है।

وكم من لآلى فيه من سر الهدى فيا صاح فتشها ولا تتجدد

उसमें हिदायत के भेदों के कितने ही मोती हैं। अतः हे मेरे मित्र! उनको तलाश कर और जल्दबाजी से काम न ले।

وقد بان وجه الحق فيه وضاحاً كخدد نقى اللون لم يتجدد

और उमसों सच का चेहरा भली भांति प्रकट हो गया है ऐसे सुन्दर गाल के समान जिस पर बीमारी या कमजोरी के कोई लक्षण नहीं।

وإني من الله الكريم مجدداً ومنه مباراتى وسيفى وأجرى

मैं कृपालु खुदा की ओर से मुजद्दिद हूँ और उसी के पास से मुझे मुकाबले की शक्ति भी प्रदान हुई और तलवार एवं तेज़ रफ्तार घोड़ा भी।

والله إني من نخيل خميلة وحيتى بستانى يروح ويغتدى

और खुदा की क़सम मैं अत्यधिक फल देने वाला खजूर (का पेड़) हूँ और मेरा प्रियतम मेरे बाग़ को सुबह-शाम शोभा प्रदान करता है।

وقد خصنى ربي وألقى رداءه على فما تدرون ما تحت برجدى

और निस्सन्देह मेरे रब ने मुझे ही विशेष किया है और अपनी चादर से मुझे ढक लिया। तुम क्या जानो कि इस बेल-बूटे वाली चादर के नीचे क्या है!

وقد ذللت نفسى بتوفيق خالقى فليس كمثلى فوق مؤر معبد

अतः मेरा अस्तित्व मेरे स्रष्टा (खालिक) की दी हुई सामर्थ्य से आज्ञाकारी हो गया है और उस दुर्दशाग्रस्त मार्ग पर मुझ सा कोई नहीं।

نما كل علم صالح فى قريحى كأشجار مؤلى الاسرة أغيد

मेरे स्वभाव में हर नेक ज्ञान उस वृक्ष के समान बड़ा हुआ है जिसकी बहुत घनी और एक के नीचे एक हों।

فَجَدَّدْتُ تَوْحِيدًا عَفَتْ أَثَارُهُ وَطَهَّرْتُ أَرْضَ الدِّينِ مِنْ كُلِّ جَلَسِدٍ

मैंने उस तौहीद (एकेश्वरवाद) को जीवित किया है जिसके अवशेष मिट चुके थे और मैंने धर्म की पृथ्वी को हर मूर्ति से पवित्र किया है।

وَقَوْمِي يِعَادِيْنِي غُرُورًا وَنَخْوَةً مَتَى أَدْنُ رَحْمًا يَنْأَعْنِي وَيُبْعِدُ

और मेरी क्रौम घमंड और अभिमान के कारण मुझ से दुश्मनी करती है जब मैं दया-भाव से निकट होता हूं तो वह मुझ से अलग होकर दूर चली जाती है।

يَسْبَو مَا أَدْرِي عَلَى مَا يَسْبَنِي أَيْكْفَرُ مِنْ يُعْلَى لَوَائِي مُحَمَّد

वे मुझे गालियां देते हैं और मैं नहीं जानता कि वे किस बात पर मुझे गालियां देते हैं। क्या ऐसे व्यक्ति को काफ़िर कहा जा सकता है जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के झण्डे को ऊँचा करता है।

يَزَا حِمْنِي مِنْ كُلِّ بَابٍ فَتَحْتُهَا لِنَصْرِ رَسُولِ اللَّهِ حَبِّي وَسَيِّدِي

मैं अपने आक्रा और प्रिय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता के लिए जिस दरवाज़े को भी खोलता हूं वे मेरे विरोधी हो जाते हैं।

وَقَدْ أَكْفَرُونِي قَبْلَ كَشْفِ حِجَابِهِمْ وَيَعْلَمُ رَبِّي صَدَقَ قَوْلِي وَمَقْصَدِي

उन्होंने अपनी वास्तविकता का रहस्य खुलने से पहले ही मुझे काफ़िर ठहरा दिया है और मेरा रब्ब मेरे कथन की सच्चाई तथा मेरे उद्देश्य को खूब जानता है।

وَرُبَّ وَلِيٍّ لِلَّهِ بَرٌّ مَقْرَّبٌ يُرَى فِي عَيُونِ الْحَاسِدِينَ كَمُلْجِدٍ

और अल्लाह के बहुत से वली हैं जो नेक और सानिध्य प्राप्त (मुकर्रब) होते हैं परन्तु इर्ष्यालुओं की दृष्टि में नास्तिक और अधर्मी समझे जाते हैं।

وَأَيَقُظُّهُمْ رَحْمًا عَلَيْهِمْ وَشَفَقَةً وَلَكِنَّهُمْ أَعْدَائِي كُلِّ مَسْهَدٍ

मैंने उन पर रहमत और हमदर्दी करते हुए उन्हें जागरूक किया परन्तु वे हर जगाने वाले के दुश्मन हैं।

وَلَسْتُ بِتَارِكٍ أَمْرٍ رَبِّي مَخَافَةً وَلَوْ قَتَلُونِي بِالْحَسَامِ الْمَجْرَدِ

और मैं अपने रब्ब के आदेश को किसी के डर से छोड़ने वाला नहीं चाहे वह नंगी तेज़ तलवार से मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दें।

وَكَيْفَ أَخَافُ نَهْيَ قَوْمٍ مَفْتَدٍ مِثْلَ غَوَاءِ الذَّنَبِ بِلِصَوْتِ جُدُودٍ

और मैं एक मूर्ख क्रौम के शोर एवं कोलाहल से कैसे डर सकता हूँ जिन की आवाज़ भेड़िए की चीख तो दूर बल्कि भेड़ की आवाज़ जैसी है।

و كيف يؤثّر حجتى فى نفوسهم ولا حظّ من سر الهدى لضفّندد

और मेरा तर्क उनके दिलों में कैसे असर कर सकता है जबकि किसी मूर्ख के लिए हिदायत के रहस्यों में कोई हिस्सा नहीं होता।

تبينت الآيات حق فمارأوا وصالوا وخالوني على غير مرصد

वास्तव में समस्त निशान ख़ूब प्रकट हो चुके हैं परन्तु उन्होंने नहीं देखा और उन्होंने आक्रमण किया और मुझे समझा कि मैं किसी संरक्षण के बिना ही हूँ।

وإني أبنتُ لهم دلائل مقصدي وليس لهم أدنى الدلائل فى اليد

और मैंने अपने उद्देश्यों के समस्त तर्क उन पर स्पष्ट और खोल दिए हैं परन्तु उनके हाथ में तो छोटा तर्क भी नहीं।

وقد استتروا كالطير فى وُكناتها لما عجزوا من قبل غضبٍ محدّد

जब वे तेज़ की हुई तलवार का सामना करने से असमर्थ हो गए तो वे पक्षियों की भांति अपने घोंसलों में छुप कर बैठ गए।

فما قامونى فى مصافٍ وما اهتمدوا فقلنا اخسئوا لا خوفَ منكم لمهتدى

वे किसी मैदान में भी मेरे मुकाबले पर नहीं आए और न ही हिदायत पाई तो हमने कहा कि दूर हो जाओ। तुम से एक सन्मार्ग प्राप्त को कोई डर नहीं।

و كيف أعالج قلبٍ وجهٍ مسودّ غبيّ شقيّ فى البطالة ★ مفسد

★ هذا لفظ ذو معنيين: المعنى الأول فظاهر، والمعنى الثانى فهو اشارة الى بلدة اسمه "بتالة"، ويسكن فيها فتان مفسد اسمه شيخ محمد حسين، واليه أشرت فى هذه القصائد التى اقتضبتُها، ورسالتى التى كتبتها. وهذا امرء مفلس لم يُرضع ثدىّ الأدب ولم يُرزق من العلوم النخب وهو من الذين يؤثرون الثرائد ويدعون الفرايد، ومع ذلك هو عدو الحق خبيث الأنفاس دنىء النحاس ثعبان الاخفاس مع الفحيح الانتهاس أصلت لسانه على الغضب الجراز والفساس، وكشّر عن أنيابه كالذياب عند الافتراس، وانه صفر اليد من العلوم وأزمول كناس الوسواس و زاملة الخناس. سردتُ على كتابي فأبى، ودنوتُ ترحمًا فتحامى. فتاقت نفسى الآن الى أن أفصّ ختم سرّه الأخفى، ليعلم الناس أن الحق مبين والشيخ شيطين. منه

मैं 'बटाला' में रहने वाले पापी, मूर्ख, अभागे और उपद्रवी का इलाज कैसे कर सकता हूँ।

ويعلون دِعْصَ الرَّمْلِ هَرْبًا وَكَلِمَ كَرْبِ ثَوْرِ الْوَحْشِ يَخْشَوْنَ جَدَّ جَدِّي
और वे भागते हुए रेत के भुरभुरे टीलों पर इस प्रकार चढ़ते हैं जैसे जंगली बैलों का झुण्ड कठोर भूमि से डरता है।

وَقُلْتُ لَهُمْ يَا قَوْمَ خَفِّ قَهْرَ قَادِرٍ وَأَقْصِرْ وَمَهْلًا بَعْضَ هَذَا التَّشَدُّدِ
और मैंने उन्हें कहा - हे मेरी क्रौम। शक्तिशाली खुदा के प्रकोप से डर और इस आतंक में कुछ तो कमी और नरमी पैदा कर।

فَمَا تَرْكُوا أَوْ زَارَ شَرٍّ وَفْتَنَةٍ وَمَا خَافُوا نِيرَانَ يَوْمٍ مَبْدَدٍ
परन्तु उन्होंने उपद्रव और शरारत के हथियार न छोड़े और न ही टुकड़े कर देने वाले (क्रयामत के) दिन की आग से डरे।

وَقَدْ تَرَكَوْنِي نَخْوَةً وَتَبَاعَدُوا وَلَيْسَ فَوَادِي عَنْ هَوَاهِمٍ بِمَبْعَدٍ
और वह अपनी अहंकार से मुझे छोड़कर बहुत दूर चले गए। परन्तु मेरा दिल उनके खयाल से दूर नहीं है।

शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी के उस पर्चे का उत्तर जो उन्होंने 9, जनवरी 1893 ई. को लिखकर अपने पर्चा न.1 जिल्द-15 में प्रकाशित किया

خدا چوں بہ بند دو چشم کے نہ بیند و گر مہر تابد بے

(अनुवाद) खुदा जब किसी की दोनों आंखें बन्द कर देता है तो उसे कुछ दिखाई नहीं देता चाहे सूर्य कितना ही चमकता रहे।

शेख साहिब बटालवी ने फिर उस अखबार के पृष्ठ-22 में इस खाकसार पर यही आरोप लगाया है कि आप का कोई लेख झूठ से खाली नहीं। सच है इन्सान जिस समय घमंड और ईर्ष्या के कारण अंधा हो जाता है तो उस समय उसे अंधकार ही अंधकार दिखाई देता है। परन्तु स्मरण रहे कि ये आरोप कुछ नए

नहीं। खुदा तआला के जितने नेक लोग संसार में आए दुष्टों ने उन पर यही आरोप लगाए कि ये महाझूठे और अपनी ओर से बातें बनाने वाले और भोग-विलास के रसिया और लोगों का धन हड़पने वाले हैं परन्तु जब संसार इन दोनों गिरोह में फैसला न कर सका तब अन्त में उस ने जिसकी नज़र दिलों के पाताल तक पहुंचती है अपने आकाशीय फैसले से चमकते हुए सूरज की तरह दिखा दिया कि कौन झूठा और कौन सच्चा है। अतः इस समय मैं कुछ ज़रूरी नहीं समझता कि बार-बार अपनी सच्चाई के सबूत प्रस्तुत करूं। मैं भली भांति जानता हूं कि जिस पर मेरा भरोसा है और जो मेरे दिल को सबसे अधिक जानता है वह स्वयं फैसला करेगा। देखना चाहिए कि एक समय तक हमारे सय्यद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नीच काफ़िरों से अपने क्या कुछ नाम सुने और उन पर झूठ गढ़ने इत्यादि के कितने अनुचित आरोप लगाए गए, परन्तु चूंकि वे सच्चे थे और खुदा उनके साथ था इसलिए अन्ततः ओझल न रह सके और आकाश ने बड़ी शक्ति के साथ उन प्रकाशों को प्रकट करने के लिए जोश मारा तो तब समस्त झूठा कहने वाले ऐसे नष्ट हुए और लपेटे गए मानो उनका कोई अस्तित्व ही न था। याद रहे कि प्रायः ऐसे बारीक रहस्य नबियों से कथनों या कार्यों के रूप में प्रकटन में आते रहे हैं जो मूर्खों की दृष्टि में बहुत व्यर्थ और लज्जाजनक कार्य थे। जैसा कि हज़रत **मूसा** अलैहिस्सलाम का मिस्त्रियों के बरतन और कपड़े मांग कर ले जाना और फिर अपने प्रयोग में लाना और हज़रत **मसीह** का किसी वैश्या के घर में चले जाना और उस का प्रस्तुत किया हुआ इत्र जो वैध कारण से नहीं था प्रयोग करना और उसके लगाने से न रोकना और हज़रत **इब्राहीम** अलैहिस्सलाम का तीन बार ऐसे तौर से बात करना जो सरसरी तौर पर देखने में झूठ लगता था। फिर यदि कोई घमण्ड और आत्मप्रशंसा से इस आधार पर हज़रत मूसा के बारे में यह कहे कि नऊज़ुबिल्लाह वह अवैध माल खाने वाला था या हज़रत मसीह के बारे में अपने मुँह से यह कहे कि वह वैश्या के गन्दे माल को अपने काम में लाया, या हज़रत इब्राहीम के बारे में यह लेख प्रकाशित करे कि मुझे उन पर जितनी कुधारणा है उसका कारण उन का झूठ बोलना है तो ऐसे महापापी के

बारे में और क्या कह सकते हैं कि उसकी प्रकृति उन पवित्र लोगों की प्रकृति (स्वभाव) से विपरीत घटित हुई है तथा शैतान की प्रकृति के अनुसार उस दुष्ट की भी प्रकृति है। अतः हज़रत बटालवी साहिब याद रखें कि आप इस खाकसार के बारे में अपनी मूर्खता के कारण झूठ बोलने के जितने आरोप लगाते हैं वे इसी प्रकार के आरोप हैं जो इस से पहले नीच लोगों ने अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर किए हैं परन्तु आप पर अहंकार, घमण्ड और स्वयं को सब से अच्छा समझने का आरोप है जो उसी शैतान की विशिष्टता है जो आपका हमेशा का साथी है। यदि कोई झूठ हम से वास्तव में प्रकटन में आया है तो हम उसका दण्ड पाएंगे और खलीलुल्लाह (हज़रत इब्राहीम^{अ.}) की बातों की भांति हमारी कोई बात किसी नादान की नज़र में झूठ के रूप में मालूम हो तो यह उसकी मूर्खता होगी जो उसे एक दिन अवश्य लज्जित करेगी। खुदा तआला ऐसे लोगों से बचाए रखे जो शैतान का चोला पहनकर अपने अहंकार से मेरे समान दूसरा कोई नहीं कहते फिरें और अपनी निपट मूर्खता से दूसरों की आलोचना करें। मैं सच-सच कहता हूं कि क्रयामत के दिन शिर्क के बाद अहंकार जैसी कोई विपत्ति नहीं यह एक ऐसी विपत्ति है जो मनुष्य को दोनों लोकों में अपमानित करती है। खुदा तआला की दया प्रत्येक एकेश्वरवादी (खुदा को एक मानने वाला) का निवारण करती है परन्तु अहंकार का नहीं। शैतान भी एकेश्वरवादी होने का दम मारता था परन्तु चूंकि उसके सिर में अहंकार था और आदम जो खुदा की दृष्टि में प्रिय था जब उसने अपमान की दृष्टि से देखा और उसकी आलोचना की इसलिए वह मारा गया और सदैव के लिए उस पर लानत डाली गई। अतः पहला पाप जिस से एक व्यक्ति हमेशा के लिए तबाह हुआ अहंकार ही था। अब मैं महाप्रतापी खुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं जो दुराचारी और झूठ बनाने वाले को बिना दण्ड के नहीं छोड़ेगा कि खुदा तआला ने जैसे मुझे मसीह इब्ने मरयम ठहराया ऐसा ही आदम भी ठहराया और फ़रमाया कि **أَرَدْتُ أَنْ أَسْتَخْلِفَ فَخَلَفْتُ آدَمَ** अर्थात् मैंने इरादा किया कि संसार में अपना प्रतिनिधि नियुक्त करूं इसलिए मैंने आदम को पैदा किया अर्थात् इस विनीत को। फिर

जबकि मैं आदम ठहरा तो मेरे लिए एक आलोचक भी चाहिए था जो प्रथमतः लोगों की दृष्टि में फरिश्तों में सम्मिलित हो और फिर इब्लीस का रूप धरण करे। अतः अब मालूम हुआ कि वह आप ही हैं। और पुनः मैं क्रसम खाकर कहता हूँ कि यह वाक्य जो मैं ऊपर लिख आया हूँ यह महाप्रतापी खुदा का कलाम है और यदि यह महा प्रतापी खुदा का कलाम नहीं तो मैं दुआ करता हूँ कि खुदा तआला मुझे एक रात की भी छूट न दे और मुझे वह दण्ड दे जो किसी को न दिया हो। हे मेरे खुदा! हे मेरे पथप्रदर्शक! हे मेरे रहनुमा! यदि यह तेरा कलाम नहीं यदि तू ने ही मुझे खलीफ़ा नियुक्त नहीं किया, यदि तूने ही मेरा नाम ईसा नहीं रखा और तूने मेरा नाम आदम नहीं रखा तो मुझे जीवितों में से काट डाल। परन्तु यदि मैं तेरी ओर से हूँ और तेरा ही हूँ तो मेरी सहायता कर जैसा कि तू उनकी सहायता करता है जो तेरी ओर से आते हैं।

अन्ततः मैं इस बात का उल्लेख करने से भी नहीं रह सकता कि बटालवी साहिब का अहंकारियों का सरदार होना केवल मेरा ही विचार नहीं बल्कि मुसलमानों का एक बड़ा गिरोह इस पर गवाही दे रहा है और साथ ही लोग इस बात से भी आश्चर्य चकित हैं कि यह अहंकार किस कारण से और किसी आधार पर है। उदाहरणतया शैतान ने जो अहंकार किया तो उसका यह आधार था कि वह स्वयं को खानदानी शरीफ़ समझता था और **خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ** (आराफ़-13, अर्थात्- तूने मुझे तो अग्नि से पैदा किया है।) का दम मारकर हज़रत सफ़िउल्लाह (आदम^{अ.}) पर **خَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ** (आराफ़-13) अर्थात्- उसे गीली मिट्टी से पैदा किया है।) की आलोचना करता था तो यदि हज़रत बटालवी साहिब दूसरों की अपेक्षा स्वयं को एक विशेष तौर से खानदानी शरीफ़ समझते हैं तो इस का कोई सबूत देना चाहिए और कोई एक-आधी गवाही प्रस्तुत करनी चाहिए। और यदि अहंकार का कारण किसी प्रकार का ज्ञान है जो मियां शैख़ुलकुल या किसी और से प्राप्त किया है तो इसका भी सबूत चाहिए क्योंकि हमें अब तक इस बात का ज्ञान नहीं कि उनको कौन सा ज्ञान प्राप्त है। क्या वैद्य हैं या फ़िलास्फ़र हैं या खगोल शास्त्री हैं या तर्क शास्त्री या साहित्यकार या कुर्आन की वास्तविकताओं और मआरिफ़ में सब

से बढ़कर हैं या इमाम बुखारी की तरह कई लाख हदीसों कंठस्थ हैं। यदि इन बातों में से कोई बात भी नहीं तो फिर शैतानी अहंकार के अतिरिक्त उनके बारे में और क्या सिद्ध हो सकता। अब याद रहे कि अहंकार के साथ झूठ अनिवार्य पड़ा हुआ है बल्कि अत्यन्त गन्दा झूठ वह है जो अहंकार के साथ मिलकर प्रकट होता है यही कारण है कि अल्लाह तआला अहंकारी का सब से पहले िसर तोड़ता है, इसी प्रकार अब भी तोड़ेगा। यह तो सिद्ध हो चुका है कि मियां बटालवी का यह आचरण है कि अपना तो विशेष तौर पर मौलवी नाम रखा है और दूसरों का नाम जाहिल, मूर्ख और अनपढ़। और जिस पर बड़ी कृपा हुई उसे मुंशी करके पुकारा है, और हमारी जमाअत का नाम जाहिलों और मूर्खों की जमाअत रखा है।

अब मियां बटालवी बताएं कि उन्होंने स्वयं को मौलवी ठहराने और दूसरों का नाम मूर्ख और अनपढ़ रखने में सच बोला है या झूठ। मैं सच-सच कहता हूं जो मैं देखता हूं कि मियां बटालवी की जड़ों में झूठ रचा हुआ है और अहंकार की गन्दी प्रकृति ने इस झूठ को और भी जहरीला माद्दः (तत्व) बना दिया है। चूंकि शैतानी अहंकार ने उन पर अपना पूरा-पूरा बोझ डाल दिया है इसलिए एक जोर के साथ झूठ की गन्दगी उनके मुंह से बह रही है। फिर इसके साथ निर्लज्जता यह कि दूसरों का नाम झूठ बोलने वाला रखते हैं। मैं सौगंध खा कर कह सकता हूं कि यदि मेरे मुकर्रम-व मख्दूम मित्र मौलवी **हकीम नूरुद्दीन** साहिब अल्लाह तआला आपकी शान, आपके ज्ञान, आपकी उमर, आपके अध्यात्म लाभ और आपके नूर की बरकत और रोशनी को बढ़ाए, एक ओर खड़े होकर पवित्र कुर्आन के मआरिफ़ वर्णन करें और एक ओर मियां बटालवी फ़ुर्क़ान-ए-हमीद (कुर्आन) की कुछ गूढ़ रहस्य वर्णन करना चाहें तो मुझे विश्वास है और मानो मैं देख रहा हूं कि उनके मुकाबले पर यह बेचारा अधमुल्लाह अहंकार और अभिमान में गिरफ़्तार बटालवी ऐसा असहाय और पीछे रह जाए कि प्रत्येक बुद्धिमान उस पर हंसे। मुझे हर बार यही आश्चर्य होता है कि यह रात को लकड़ियां इकट्ठी करने वाला (भले-बुरे में अन्तर न करने वाला) अपने इस अनुचित अहंकार और स्पष्ट

झूठ के बावजूद अपने गरेबान में क्यों मुंह नहीं डालता तथा अपने नफ़्स की बुराई से उलेमा और विद्वानों का तिरस्कार पूर्वक नाम लेता है। इसी मौलवियत तथा इसके दूषित विचारों का फैसला बहुत आसान है जिसका अब खुदा के फ़ज़ल से समय आ गया है। इन्शाअल्लाह तआला मैं इस फैसले के लिए इस लेख के अन्त में एक व्यापक कसौटी वर्णन करूंगा। अब कुछ आवश्यक आरोपों का उत्तर देता हूँ और वह यह है -

उसका कथन - नबियों की भी भविष्यवाणियों का सच्चा होना ज़रूरी है या नहीं।

मेरा कथन - मूर्ख ऐतराज़ करने वाले के इस प्रश्न से यह उद्देश्य ज्ञात होता है कि जैसे इस खाकसार से कोई भविष्यवाणी घटना के विरुद्ध निकली है। अतः स्पष्ट हो कि यह फैसला तो आसान है। ऐतराज़ कर्ता पर अनिवार्य है कि एक जल्सा आयोजित करके इस खाकसार का वह इल्हाम प्रस्तुत करे कि जो उसके कथनानुसार असल इल्हाम में कोई ग़लती हो, न कि किसी वैचारिक और काल्पनिक ताबीर में। परन्तु ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ दण्ड भी होना चाहिए ताकि बार-बार झूठ बोलने की गन्दगी की तरफ न दौड़े।

उसका कथन - जिस व्यक्ति की कोई भविष्यवाणी सच्ची निकले और कोई झूठी। वह सच्ची भविष्यवाणी में मुल्हम हो सकता है।

मेरा कथन - हे पर्दे में पड़े हुए अज्ञानी! इस विनीत की कोई भविष्यवाणी अल्लाह तआला की कृपा से आज तक झूठी नहीं निकली बल्कि तीन हज़ार लगभग अब तक सच्ची निकलीं और निकलती जाती हैं। रही इज्तिहादी ग़लती इसके लिए बुखारी को खोल और "ज़हब वहली" का लेख याद कर। और उन लोगों की समानता से डर जो कुछ भविष्यवाणियों को समझने में की गई ग़लतियों को देख कर मुर्तद हो गए थे।

उसका कथन - ऐसा व्यक्ति यदि झूठ बोलता हो, लोगों के माल अवैध रूप से मारता हो... अन्त तक! तो फिर भी वह यदि उसकी कोई भविष्यवाणी सच्ची निकल आए। मुल्हमम वली, मुहद्दिस और खुदा का संबिधत हो सकता है?

मेरा कथन - आप जैसे अधम झूठ गढ़ने वालों ने नबियों पर भी यही आरोप लगाए थे। हज़रत इब्राहीम पर झूठ का आरोप, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा पर अवैध माल का। और इस युग के मूर्ख ईसाई इत्यादि। ऐसे ही आरोप आंहुज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर लगाते हैं कि अमुक काफ़िले का माल बिना किसी युद्ध के अवसर के लूट लिया। इसलिए इन आरोपों से उनकी पुस्तकें भरी पड़ी हैं। अब यदि यह प्रश्न हो कि एक व्यक्ति ने हज़ारों खून भी किए और माल भी लूटे तो वह सच्चा नबी कैसे हो सकता है। तो ऐसे मूर्ख का यही उत्तर होगा कि अपने उन पूर्ण प्रकाशों (नूरों) के कारण जो सत्यनिष्ठ के अतिरिक्त किसी को नहीं मिल सकते। बुद्धिमान व्यक्ति उन प्रकाशों की चमक देख कर उन बातों की सही तावील स्वयं अपनी खुदा के द्वारा दी गई बुद्धि से समझ लेगा और मूर्ख आरोपों पर जमेगा और सीधा नर्क की तरफ जाएगा। मूल वास्तविकता यह है कि सम्पूर्ण अधिकारों पर खुदा तआला का अधिकार विजयी है और हर एक शरीर और रूह तथा माल उसी का स्वामित्व (मिल्कियत) है। फिर जब मनुष्य अवज्ञाकारी हो जाता है तो उसका स्वामित्व असल मालिक की तरफ लौटता है। फिर उस वास्तविक मालिक को अधिकार होता है कि चाहे तो रसूलों के माध्यम के बिना अवज्ञाकारियों के मालों को नष्ट कर दे और उन के प्राणों को नास्ति के स्थान में पहुंचा दे और या किसी रसूल के माध्यम से यह प्रकोपी चमक उतारे, बात एक ही है। इसी प्रकार खिज़्र के कार्यों के समान हज़ारों मामले होते हैं जो नबियों और मुहद्दिसों पर उनकी खूबी प्रकट की जाती है और वे उन कामों के लिए नियुक्त किए जाते हैं और उनके कार्यों में जो लोग जल्दबाज़ी से विरोधात्मक हस्तक्षेप करते हैं वही हैं जो तबाह होते हैं।

उसका कथन - इस विनीत की बावन वर्ष की आयु पर पहुंचकर मृत्यु की भविष्यवाणी आप ने की है या नहीं?

मेरा कथन - मैंने आपके संबंध में यह भविष्यवाणी कदापि नहीं की, यदि किसी ने मेरी ओर से कहा है तो उसने झूठ बोला है। और आपकी यह सरासर कुधारणा और बेईमानी है कि बिना इसके कि मुझ से पूछते या मेरे किसी लेख

में पाते, मुझ पर अकारण यह इल्जाम लगा दिया।

उसका कथन - आपके कुछ मुरीद शराब पीते हैं और क्या आपके बड़े सहयोगी और मुरीद ने आप के मकान पर शराब नहीं पी।

मेरा कथन - झूठों पर खुदा की लानत। अब सिद्ध करो किसने मेरे मकान पर शराब पी और मेरे बैअत करने वालों में से कौन शराब पीता है। मैं देखता हूं कि लोग बैअत के बाद तुरन्त अपने चाल-चलन में एक पवित्र परिवर्तन दिखाते हैं। वे नमाज़ के पाबन्द होते हैं और निषिद्ध बातों से बचते हैं तथा धर्म को संसार पर प्राथमिकता देते हैं। और सच्चे संयमियों को इस बात की कुछ भी आवश्यकता नहीं कि कोई उन्हें नेक कहे। खुदा तआला दिलों को देख रहा है और उसका देखना पर्याप्त है।

अब मैं अपने वादे के अनुसार नीचे एक ऐसा मापदण्ड प्रकट करना चाहता हूं जिस से भली भांति स्पष्ट हो जाए कि यह खाकसार खुदा तआला से समर्थित है और हज़रत बटालवी साहिब अव्वल दर्जे के झूठे, दज्जाल और अंहकारियों के सरदार हैं। और वह लेख यह है कि हज़रत बटालवी साहिब के निरन्तर लेखों से पाठक गण को मालूम है कि उन्होंने इस खाकसार का नाम जाहिल, मूर्ख और अनपढ़ रखा है और इसके साथ यह भी दावा किया है कि यह खाकसार वास्तव में मुल्हम और मुहद्दिस नहीं है बल्कि झूठ गढ़ने वाला, झूठा और दज्जाल है और उनके कथनानुसार इस खाकसार के अस्तित्व में झूठ रचा हुआ है। और जब कुछ निशान उनको दिखाए गए तो उनके बारे में उनका यह कहना यह है कि कभी खुदा तआला झूठे मुद्दई की भी सहायता करता है। हालांकि जानता है कि यह मेरी सहायता उस झूठे के दावे की सच्चाई के लिए सबूत ठहर जाएगा, तब भी सहायता करता है तथा ऐसे झूठों को सामर्थ्य देता है कि वह रमल-विद्या (वह विद्या जो रेखाओं और अंकों के माध्यम से अदृश्य के बारे में बताती है) के द्वारा या जफ़र-विद्या के द्वारा कोई बात कह दें और वह बात पूरी हो जाए। अतः इस प्रकार के निशानों को बटालवी साहिब ने अपने निरर्थक बयानों से रद्द कर दिया है। परन्तु यहां एक और कसौटी है

जिसे हम नीचे लिखते हैं -

एक रूहानी (आध्यात्मिक) निशान जिस से सिद्ध होगा कि यह
खाकसार सच्चा और खुदा तआला से समर्थन प्राप्त है या नहीं।
और शौख मुहम्मद हुसैन बटालवी इस खाकसार को झूठा और
दज्जाल ठहराने में सच्चा है अथवा स्वयं झूठा और दज्जाल है।

बुद्धिमान समझ सकते हैं कि समस्त निशानों की वास्तविकताएं और
मआरिफ़ तथा सूक्ष्म रहस्यों के भी निशान होते हैं जो विशेष तौर पर उनको दिए
जाते हैं जो पवित्रात्मा (पाक नफ़्स) हों जिन पर महान कृपा हो जैसा कि

(अलवाक्रिअ: - 80) لَا يَمْسُهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ۖ

(अनुवाद - कोई उसे छू नहीं सकता सिवाए पवित्र किए हुए लोगों के।)

और यह आयत -

(अलबक्रर: - 270) وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۚ

(अनुवाद - और जिसे तत्त्वज्ञान दिया जाए तो निश्चित रूप से उसे अत्यधिक
भलाई प्रदान की गई) अनुवादक

बुलन्द आवाज़ से गवाही दे रही है। अतः यही निशान मियां मुहम्मद हुसैन
के मुकाबले पर मेरे सच और झूठ को परखने के लिए खुली-खुली निशानी
होगी। और इस फैसले के लिए उत्तम प्रबंध इस प्रकार हो सकता है कि एक
संक्षिप्त जल्सा करके फैसला करने वाले नियुक्त करके इस जल्सा में पवित्र
कुर्आन की कुछ सूरतें जिनकी इबारतें उसी आयत से कम न हो तफ़्सीर के
लिए चयन करे प्रस्तुत करें। फिर कुरआ डालकर उनमें से एक सूरह निकाल
कर उसकी तफ़्सीर परीक्षा के लिए यह बात अनिवार्य ठहराई जाए कि सरस-
सुबोध अरबी भाषा तथा मुक़फ़्फ़ा (अलंकृत गद्य) में लिखी जाए जो दस भाग
से कम न हो और जिस कद्र उसमें वास्तविकताएं एवं अध्यात्म ज्ञान युक्त
बातें लिखी जाएं वे नकल इबारत की तरह न हों बल्कि नए-नए और अदभुत
रहस्य हों जो किसी दूसरी किताब में न पाए जाएं। और इसके साथ ही कुर्आन

की मूल शिक्षा की विरोधी न हों बल्कि उनकी शक्ति और वैभव प्रकट करने वाले हों,★ और पुस्तक के अन्त में उत्तम, सरस, सुबोध अरबी भाषा में सौ शेर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नअत (यशोगान) और प्रशंसा में बतौर कसीदः दर्ज हों और जिस बहर* में वे शेर होने चाहिए वह बहर भी कुरअः डालकर उसी जल्से में तय की जाए और दोनों सदस्यों को इस कार्य के लिए चालीस दिन की मोहलत दी जाए। और चालीस दिन के बाद सार्वजनिक जल्से में दोनों सदस्य अपनी-अपनी तप्सीर और अपने-अपने अश्आर जो अरबी में होंगे सुना दें। फिर यदि यह खाकसार शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी से वास्तविकताओं और मआरिफ़ के वर्णन करने तथा सरस एवं सुबोध अरबी इबारत और (आहंजरत स.अ.व. की) प्रशंसा में आनन्दमयी अश्आर लिखने में असमर्थ और कम स्तर पर रहा या यह कि शेख मुहम्मद हुसैन इस विनीत के बराबर रहा तो यह विनीत उसी समय अपनी गलती का इक्रार करेगा और अपनी पुस्तकें जला देगा और शेख मुहम्मद हुसैन का अधिकार होगा कि उस समय शेख मुहम्मद हुसैन का अधिकार होगा कि उस समय इस खाकसार के गले में रस्सा डालकर यह कहे कि हे महा झूठे, हे दज्जाल, हे झूठ गढ़ने वाले! आज तेरी बदनामी प्रकट हुई, अब कहां है वह जिसे तू कहता था कि वह मेरी सहायता करने वाला है अब तेरा इल्हाम कहां है और तेरे विलक्षण निशान कहां छुप गए। परन्तु यदि यह खाकसार विजयी हुआ तो फिर चाहिए कि मियां मुहम्मद हुसैन उसी जल्से में खड़े होकर इन

★**हाशिया :-** यदि किसी के दिल में यह संदेह आए कि ऐसी नवीन वास्तविकताएं और मआरिफ़ जो पहली तप्सीरों में न हों वे कैसे स्वीकार किए जा सकते हैं और वह उन्हें पहली ही तप्सीरों में सीमित करे तो उसके लिए उचित है कि निम्नलिखित इबारत को देखे

ثمّ رايث كل آية كل حديث بحراموا جافيه من اسرار مالو كُتب شرح
سرواحد منها في مجلدات لما احاطته ورثيت الاسرار الخفية متبذلة في اشارات
القرآن والسنة فقضيت العجب قيوس الحرمين - 42-पृष्ठ

* बहर - शेर का वज़न छंद (अनुवादक)

शब्दों में तौबा करे कि हे उपस्थित गण! आज मेरा गुनहगार होना ऐसा खुल गया कि जैसे सूर्य के निकलने से दिन खुल जाता है और अब सिद्ध हुआ कि यह व्यक्ति सच पर है और मैं ही दज्जाल था और मैं ही महा झूठा था और मैं ही काफ़िर था और मैं ही अधर्मी था, और अब मैं तौबा करता हूँ सब गवाह रहें। तत्पश्चात् उसी जल्से में अपनी पुस्तकें जला दे और निम्नस्तर के सेवकों के समान पीछे होले।★

सज्जनो! यह फैसले का नियम है जो इस समय मैं ने व्यक्त किया है। मियां मुहम्मद हुसैन को इस पर बहुत आग्रह है कि यह खाकसार अरबी ज्ञानों से सर्वथा अनमिज्ञ और मूर्ख, नादान और अनपढ़ है* और कुर्आन के ज्ञान से बिल्कुल अज्ञान है और खुदा तआला से सहायता पाने के तो योग्य ही नहीं, क्योंकि महा झूठा और दज्जाल है तथा इसके साथ उनको अपने ज्ञान की श्रेष्ठता एवं वरीयता का भी दावा है, क्योंकि उनके नजदीक हज़रत मख़दूम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब जो इस खाकसार की दृष्टि में युग के प्रकाण्ड विद्वान तथा विद्याओं के संग्रहीता हैं, केवल एक हकीम हैं और भाई मुकर्रम मौलवी सय्यद अहसन साहिब जो मानो हदीस की विद्या के एक पुतले हैं केवल एक मुंशी हैं। फिर उनके इस दावे के बावजूद और मेरी इस अपूर्ण अवस्था जिसको वह बार-बार प्रकाशित कर चुके हैं, फैसले के इस नियम में कौन सा सन्देह शेष है। यदि वह इस मुक़ाबले के योग्य नहीं और अपने संबंध में भी झूठ बोला है और मेरे बारे में भी तथा मेरे माननीय और आदरणीय मित्रों के बारे में भी तो फिर ऐसा व्यक्ति किसी सीमा तक दण्ड के योग्य है क्योंकि महाझूठा और दज्जाल तो स्वयं हो और दूसरों को अकारण झूठा कह कर प्रसिद्ध करे। और यह बात भी याद रहे कि यह खाकसार वास्तव

★**हाशिया :-** शेख बटालवी को अधिकार होगा कि मियां शैखुलकुल और दूसरे समस्त अहंकारी मुल्लाओं को साथ मिला ले। (इसी से)

* देखो उनका फ़त्वा नं.4, जिल्द-13, पृष्ठ-115

में अत्यन्त कमजोर और तुच्छ है मानो कुछ भी नहीं। किन्तु खुदा तआला ने चाहा है कि अहंकारी का सिर तोड़े और उसे दिखा दे कि आकाशीय सहायता इस को कहते हैं। कुछ माह का समय हुआ है जिसकी तिथि मुझे याद नहीं कि मैंने एक लेख मियां मुहम्मद हुसैन का देखा जिसमें मेरे संबंध में लिखा हुआ था कि यह व्यक्ति महा झूठा, दज्जाल, बेईमान और इसके साथ बहुत मूर्ख, अनपढ़ तथा धार्मिक ज्ञानों से अपरिचित है। तब मैं खुदा के सामने रोया कि मेरी सहायता कर तो उस दुआ के बाद इल्हाम हुआ- ادعوني استجب لكم अर्थात् दुआ करो मैं स्वीकार करूंगा परन्तु मैं स्वाभाविक तौर पर नफ़रत करता था कि किसी के अज़ाब के लिए दुआ करूं। आज जो 29 शाबान 1310 हिज्री है इस लेख के लिखते समय खुदा तआला ने दुआ के लिए दिल खोल दिया। तो मैंने इस समय इसी प्रकार से दिल की आर्द्रता के साथ इस मुक़ाबले में विजय पाने के लिए दुआ की और मेरा दिल खुल गया और मैं जानता हूँ कि दुआ स्वीकार हो गयी तथा मैं जानता हूँ कि वह इल्हाम जो मुझे मियां बटालवी के बारे में हुआ था कि اِنِّیْ مُهَيِّئُ مِّنْ اَرْدَاهَا نَتَّكَ वह इस अवसर के लिए हुआ था मैंने इस मुक़ाबले के लिए चालीस दिन का समय तय करके दुआ की है वही समय सीमा मेरी जुबान पर जारी हुई। अब सज्जनो! यदि मैं इस निशान में झूठा निकला या मैदान से भाग गया या कच्चे बहानों से टाल दिया तो तुम सब गवाह रहो कि निस्सन्देह मैं महा झूठा और दज्जाल हूँ तो मैं प्रत्येक दण्ड का पत्र ठहरूंगा क्योंकि इस अवसर पर हर एक पहलू से मेरा झूठ सिद्ध हो जाएगा और दुआ का अस्वीकार होना खुल कर मेरे इल्हाम का झूठा होना भी सब पर प्रकट हो जाएगा। परन्तु यदि मियां बटालवी पराजित हो गए तो उनका अपमान, मुँह काला होना और जहालत एवं मूर्खता प्रकाशमान दिन के समान प्रकट हो जाएगी। यदि वह इस खुले-खुले फैसले को स्वीकार न करें और भाग जाएं और ग़लती का इक्रार भी न करें तो निस्सन्देह समझो कि उन के लिए खुदा तआला की अदालत से निम्नलिखित इनाम हैं -

- (1) लानत
- (2) लानत
- (3) लानत
- (4) लानत
- (5) लानत
- (6) लानत
- (7) लानत
- (8) लानत
- (9) लानत
- (10) लानत☆

विज्ञापनदाता

मिर्जा गुलाम अहमद क़ादियानी

30 मार्च 1893 ई.

रियाज़ हिन्द प्रेस क़ादियान से प्रकाशित

चेतावनी - यदि इसका उत्तर 1, अप्रैल से दो सप्ताह के अन्दर न आया तो आपका पलायन समझा जाएगा।

नोट - यदि मियाँ बटालवी साहिब इस निशान को स्वीकार न करें और किसी और प्रकार का निशान चाहें तो फिर उसके संबंध में दुआ की जाएगी परन्तु पहले विज्ञापन द्वारा प्रकाशित कर दें कि मैं इस मुकाबले से असमर्थ हूँ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

प्रलय (क्रयामत) की निशानी

प्रलय के निकट आने की निशानियों में से एक बड़ी निशानी यह है जो इस हदीस से ज्ञात होती है जिसको इमाम बुखारी अपनी सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अलआस से वर्णन करते हैं और वह यह है -

يُقْبَصُ الْعِلْمُ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ حَتَّى إِذَا لَمْ يَبْقَ عَالِمٌ اتَّخَذَ النَّاسُ رُؤْسًا
جُهَالًا فَسِيلُوا فَافْتَوَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ فَضَلُّوا وَأَضَلُّوا

अर्थात् उलेमा की मृत्यु हो जाने के कारण ज्ञान की मृत्यु हो जाएगी, यहां तक कि जब कोई आलिम (विद्वान) नहीं मिलेगा तो लोग अनपढ़ों को अपना अनुकरणीय और सरदार बना लेंगे और धार्मिक मामलों का निष्कर्ष निकालने के लिए उनकी ओर जाएंगे। तब वे लोग मूर्खता और अयोग्यता के कारण सच्चाई और भलाई की पद्धति के विपरीत फ़त्वा देंगे। तब स्वयं भी गुमराह होंगे तथा दूसरों को भी गुमराह करेंगे। फिर एक अन्य हदीस में है कि उस युग के फ़त्वा देने वाले अर्थात् मौलवी मुहद्दिस और इस्लामी धर्मशास्त्र के विद्वान उन समस्त लोगों से अधिक बिगड़े होंगे जो पृथ्वी पर रहते होंगे। फिर एक और हदीस में है कि वे कुर्आन पढ़ेंगे और कुर्आन उन के गलों से नीचे नहीं उतरेगा अर्थात् उस का पालन नहीं करेंगे। ऐसा ही इस युग के मौलवियों के बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं परन्तु इस समय हम बतौर नमूना उस हदीस का सबूत देते हैं जो ग़लत फ़त्वों के बारे में हम ऊपर लिख चुके हैं ताकि हर एक को मालूम हो कि आजकल यदि मौलवियों के होने से कुछ लाभ है तो केवल इतना कि उनके ये लक्षण देख कर क्रयामत याद आती है और क्रयामत के निकट होने का पता लगता है। और आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी की पूर्ण सत्यता हम अपनी आंखों से स्वयं देखते हैं।

इस संक्षेप का विवरण यह है कि चूंकि गत वर्ष अधिकांश लोगों के मशवरे से यह बात तय पाई थी कि हमारी जमाअत के लोग कम से कम वर्ष में एकबार धार्मिक आवश्यकताओं, इस्लाम के कलिम: को बुलन्द करने के मशवरे और सुदृढ़

शरीअत से लाभान्वित होने की नीयत से इस खाकसार से मुलाक़ात करें और उस मशवरे के समय यह भी हित के अनुसार समझकर निश्चित किया गया था कि 27 दिसम्बर को इस उद्देश्य से क़ादियान में आना अधिक उचित और उत्तम है क्योंकि ये छुट्टी के दिन हैं। नौकरी पेशा लोग इन दिनों में फ़ुर्सत रखते हैं और सर्दी के दिनों के कारण ये दिन सफ़र के लिए अनुकूल भी हैं। अतः लोगों और सच्चे दोस्तों ने इस मशवरे पर सहमत होकर प्रसन्नता व्यक्त की थी और कहा था कि यह उचित है। अब 7 दिसम्बर 1892 ई. को आधार पर इस खाकसार ने एक पत्र बतौर विज्ञापन समस्त सच्चे मित्रों की सेवा में भेजा जो रियाज़ हिन्द प्रेस क़ादियान में छपा था जिस के विषय का सारांश यह था कि इस जल्से के उद्देश्यों में से एक बड़ा उद्देश्य यह भी है ताकि प्रत्येक सच्चे दोस्त को अमने-सामने आकर लाभ प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो और उनकी धार्मिक जानकारीयों में वृद्धि हो और मारिफ़त बढ़े। अब सुना गया है कि इस कार्रवाई को बिद्अत बल्कि गुनाह सिद्ध करने के लिए एक बुजुर्ग ने हिम्मत करके एक मौलवी साहिब की सेवा में जिनका नाम रहीम बख़्श है और लाहौर में चीनियांवाली मस्जिद के इमाम हैं, एक फ़त्वा पूछा जिसका तात्पर्य यह था कि ऐसे जल्से पर निर्धारित दिन पर दूर से सफ़र करके जाने के बारे में क्या आदेश है और ऐसे जल्से के लिए यदि कोई मकान बतौर आश्रम (ख़ानक़ाह) के निर्मित किया जाए तो ऐसे सहायता देने वाले के बारे में क्या आदेश है। फ़त्वा पूछने में यह अन्तिम बात इसलिए बढ़ाई गई कि पूछने वाले ने किसी से सुना होगा जो हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब ने उस मज्लिस में मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब ने उस मज्लिस में अपने खर्च से जो संभवतः सात सौ रुपया या इससे कुछ अधिक होगा क़ादियान में एक मकान बनवाया जिसके खर्च की सहायता में बिरादरम हकीम फ़ज़लदीन साहिब भैरवी ने भी तीन-चार सौ रुपया दिया है। इस फ़त्वा पूछने के उत्तर में मियां रहीम बख़्श साहिब ने एक बहुत लम्बी इबारत एक असंबंधित हदीस लम्बे सफ़र की लिखी है जिसके संक्षिप्त शब्द ये हैं कि ऐसे जल्से पर जाना बिद्अत बल्कि गुनाह है और ऐसे जल्सों का करना नई बातें पैदा करना है जिसके लिए किताब और सुन्नत में

कोई गवाही नहीं और जो व्यक्ति इस्लाम में ऐसी बात पैदा करे वह बहिष्कृत है।

अब न्यायप्रिय लोग ईमान से कहें कि ऐसे मौलवियों और मुफ्तियों का इस्लाम में मौजूद होना क्रयामत का लक्षण है या नहीं? हे भले मानस! क्या तुझे मालूम नहीं कि धार्मिक ज्ञान के लिए सफ़र करने के बारे में केवल इजाज़त ही नहीं बल्कि और आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे फ़र्ज़ (अनिवार्य) ठहरा दिया है जिसका जान-बूझ कर त्याग करने वाला बड़े गुनाह का करने वाला और जान बूझकर इन्कार पर हठ करना और कुछ स्थितियों में कुफ़्र। क्या तुझे मालूम नहीं कि बड़ बल देकर कहा गया है कि

طَلِبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ وَ مُسْلِمَةٍ

और फ़रमाया गया है कि أَطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ كَانَ بِالصَّيْنِ

अर्थात् ज्ञान प्राप्त प्रत्येक मुसलमान पुरुष और स्त्री पर फ़र्ज़ है और ज्ञान को प्राप्त करो यद्यपि चीन में जाना पड़े। अब विचार करो कि जिस स्थिति में यह ख़ाक़सार अपने खुले-खुले और स्पष्ट शब्दों में विज्ञापन में लिख चुका कि प्रत्येक सच्चे निष्ठावान का यह सफ़र एक ज्ञान के उद्देश्य से होगा फिर यह फ़त्वा देना कि जो व्यक्ति इस्लाम में ऐसी बात पैदा करे वह बहिष्कृत है कितनी ईमानदारी, अमानतदारी, न्याय और संयम तथा पवित्रता से दूर है। रही यह बात कि एक निर्धारित तिथि पर समस्त भाइयों का एकत्र होना तो यह केवल प्रबंध है और प्रबंधपूर्वक कोई कार्य करना इस्लाम में कोई निन्दनीय बात और बिदअत नहीं।

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ कुधारण के गन्दे माद्दे (तत्त्व) को तनिक दूर करके देखो कि एक तारीख़ पर आने में कौन सी बिदअत है जबकि 27, दिसम्बर को प्रत्येक सच्चा दोस्त बड़ी आसानी से हम से मिल सकता है और इस संदर्भ में उनकी आपस में मुलाक्रात भी हो जाती है तो इस आसान ढंग से लाभ प्राप्त करना क्यों अवैध (हराम) है। आश्चर्य कि मौलवी साहिब ने इस ख़ाक़सार का नाम मर्दूद (बहिष्कृत) तो रख दिया परन्तु आपको वे हदीसें याद न रहीं जिनमें ज्ञान का प्राप्त करने के लिए ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफ़र करने के बारे में प्रेरणा दी है और जिनमें एक मुसलमान भाई की मुलाक्रात के लिए जाना अल्लाह तआला

को प्रसन्न करने का कारण बताया है और जिनमें सफ़र करके सदाचारी लोगों की ज़ियारत (दर्शन) करना पापों से क्षमा और गुनाहों से कफ़ारे का कारण लिखा है। याद रहे कि यह सरासर मूर्खता है कि लम्बे सफ़र की हदीस का यह मतलब समझा जाए कि ख़ाना काबः या मस्जिद-ए-नबवी या बैतुल मुक़द्दस के सफ़र के अतिरिक्त अन्य समस्त सफ़र अवैध (हराम) हैं। यह बात स्पष्ट है कि समस्त मुसलमानों को विभिन्न कारणों के लिए सफ़र करने पड़ते हैं। कभी सफ़र ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य ही से होता है और कभी सफ़र एक रिश्तेदार या भाई या बहन या पत्नी से मुलाक़ात के लिए या औरत का सफ़र अपने माता-पिता से मिलने के लिए या माता पिता का अपनी बेटियों से मिलने के लिए और कभी पुरुष अपने विवाह के लिए और कभी जीविका की तलाश के लिए और कभी सन्देश पहुंचाने के लिए और कभी नेक लोगों के दर्शन करने के लिए सफ़र करते हैं। जैसा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत **उवैस क़र्नी** से मिलने के लिए सफ़र किया था और कभी सफ़र जिहाद के लिए भी होता है चाहे वह जिहाद तलवार से हो चाहे मुबाहसे के तौर पर और कभी सफ़र मुबाहलः की नीयत से होता है जैसा कि आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध है कि कभी सफ़र अपने पीर (धर्म गुरु) से मिलने के लिए जैसा कि हमेशा बड़े औलिया जिनमें **शैख़ अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु अन्हो** और हज़रत **बयज़ीद वस्तामी** और हज़रत **मुईनुद्दीन चिश्ती** और हज़रत मुजद्दिद अलिफ़ सानी (बारहवीं सदी के मुजद्दि की है) अधिकतर इस उद्देश्य से भी सफ़र करते रहे जिन के सफ़रनामे (भ्रमण-कथाएं) अधिकतर उन के हाथ के लिखे हुए अब तक पाए जाते हैं। और कभी सफ़र फ़त्वा पूछने के लिए भी होता है, जैसा कि सही हदीसों से इसका वैध होना बल्कि कुछ परिस्थितियों में अनिवार्य सिद्ध होता है। इमाम बुख़ारी के सफ़र हदीस का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध हैं शायद मियां रहीम बख़्श को ख़बर नहीं होगी। कभी सफ़र (यात्रा) दुनिया के अजूबे देखने के लिए भी होता है, जिसकी ओर पवित्र आयत -

(अल् अनआम - 6/12) **قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ**

संकेत कर रही है और कभी सफ़र सत्यनिष्ठों की संगत में रहने के लिए

जिसकी ओर पवित्र आयत -

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾ (अतौब:9/119)

मार्ग-दर्शन करती है और कभी सफ़र रोगी का हाल पूछने के लिए बल्कि नेक लोगों का अनुकरण करने के लिए भी होता है। और कभी रोगी या रोगी की देखभाल करने वाला इलाज कराने के लिए सफ़र करता है और कभी अदालत में मुकद्दम: अथवा व्यापार इत्यादि के लिए भी सफ़र किया जाता है। ये समस्त प्रकार के सफ़र पवित्र कुआन और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों की दृष्टि से वैध (जायज़) हैं। बल्कि सदाचारी लोगों की ज़ियारत (दर्शन) और भाइयों से मुलाकात और ज्ञान-प्राप्ति के लिए सफ़र के संबंध में सही हदीसों में बहुत कुछ प्रेरणा पाई जाती है। यदि इस समय वे समस्त हदीसों लिखी जाएं तो एक पुस्तक बनती है। ऐसे फ़त्वे लिखाने वाले और लिखने वाले यह नहीं सोचते कि उनको भी तो प्रायः इस प्रकार के सफ़रों का सामना करना पड़ता है। अतः यदि तीन मस्जिदों के अतिरिक्त अन्य समस्त सफ़र वर्जित (हराम) हैं तो चाहिए कि ये लोग अपने सम्पूर्ण रिश्ते-नाते और निकट संबंधियों को छोड़ कर बैठ जाएं और कभी उनकी मुलाकात या उनकी हमदर्दी या उनकी बीमारी का हाल पूछने के लिए भी सफ़र न करें। मैं नहीं सोचता कि ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त जिसे द्वेष और मूर्खता ने अंधा कर दिया हो वह इन समस्त सफ़रों (यात्राओं) के वैध होने में संकोच में पड़ सके। सही बुखारी का पृष्ठ-16 खोल कर देखो कि ज्ञान-प्राप्ति के लिए यात्रा करने की कितनी खुश ख़बरी दी गई है। और वह यह है कि

من سلك طريقاً يطلب به علماً سهل الله له طريق الجنة

अर्थात् जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्ति के लिए सफ़र करे और किसी मार्ग पर चले तो खुदा तआला उस पर स्वर्ग का मार्ग आसान कर देता है। अब हे ज़ालिम मौलवी! थोड़ा इन्साफ़ कर कि तू ने अपने भाई का नाम जो तेरे समान कलिमा पढ़ने वाला अहले क़िब्ल: तथा अल्लाह रसूल पर ईमान लाता है मर्दूद (बहिष्कृत) रखा और खुदा तआला की रहमत और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ारिश से पूर्णतया वंचित ठहराया और बुखारी की उस सही हदीस की भी कुछ परवाह न की कि -

أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ خَالِصًا مِنْ قَلْبِهِ أَوْ نَفْسِهِ

और अपने फत्वे में मर्दूद ठहराने का कारण यह बताया कि ऐसा विज्ञापन क्यों प्रकाशित किया और लोगों को जल्से पर बुलाने के लिए क्यों दावत दी हे ख़ुदा से न डरने वाले तनिक आंख खोल और पढ़ कि उस 7 दिसम्बर 1892 ई. के विज्ञापन का क्या विषय है। क्या अपनी जमाअत को ज्ञान की प्राप्ति और धार्मिक समस्याओं के समाधान और इस्लाम की हमदर्दी तथा भ्रातृवत् मुलाकात के लिए बुलाया है, या उसमें किसी अन्य मेला, तमाशा और सुर और गिटार का वर्णन है। हे इस युग के इस्लाम के बदनाम मौलवियो! तुम महा वैभवशाली ख़ुदा से क्यों नहीं डरते? क्या एक दिन मरना नहीं? या तुम को हर एक (हिसाब की) गिरफ्त माफ़ है। सच बात को सुन कर तथा अल्लाह और रसूल के फ़रमान को देखकर तुम्हें यह विचार तो नहीं आता कि अब अपने हठ से रुक जाएं बल्कि मुक़द्दमाबाज़ लोगों की तरह यह विचार आता है कि आओ किसी प्रकार से बातें बना कर उसका खण्डन छापें ताकि लोग न कहें कि हमारे मौलवी साहिब को कुछ उत्तर न आया। इतनी निर्भीकता और बेईमानी और यह कंजूसी और वैर किसी आयु के लिए? आप को फ़तवा लिखने के समय वे हदीसों याद न रहीं जिनमें धर्म के ज्ञान के लिए और अपने सन्देहों को दूर करने के लिए तथा अपने धार्मिक भाइयों और परिजनों को मिलने के लिए सफ़र करने को अत्यधिक पुण्य (सवाब) और बहुत बड़े प्रतिफल का कारण बताया है। बल्कि सदाचारी लोगों की ज़ियारत के लिए सफ़र करना हमेशा से पहले नेक लोगों की सुन्नत चली आ रही है। और एक हदीस में है कि जब क़यामत के दिन एक मनुष्य अपने बुरे कर्मों के कारण कठोर गिरफ्त में होगा तो अल्लाह तआला उस से पूछेगा कि अमुक सदाचारी व्यक्ति की मुलाक़ात के लिए तू कभी गया था? तो वह कहेगा कि इरादा करके तो कभी नहीं गया परन्तु एक बार एक मार्ग में उससे मुलाक़ात हो गई थी तब ख़ुदा तआला कहेगा कि जा स्वर्ग में दाखिल हो जा, मैंने उसी मुलाक़ात के कारण तुझे क्षमा कर दिया। अब हे तंग दिल मौलवी! तनिक देख कि यह हदीस किस बात की प्रेरणा देती है। यदि किसी के दिल में यह धोखा हो कि इस धार्मिक जल्से के लिए एक विशेष तिथि क्यों निर्धारित की गई ऐसा कार्य

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से कब सिद्ध है? तो इसका उत्तर यह है कि बुखारी और मुस्लिम को देखो कि खाना बदोश (यायावर) आहज़रत सल्लल्लाहु वसल्लम की सेवा में मसअले पूछने के लिए अपनी फ़ुर्सत के समयों में आया करते थे और कुछ विशेष-विशेष महीनों में उनके गिरोह फ़ुर्सत पाकर रसूले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ करते थे। सही बुखारी में अबी जमरह से रिवायत है -

قال ان وفد عبد القيس اتوا النبي صلى الله عليه وسلم قالوا انّا نأتيك من
سقة بعيدة ولا نستطيع ان نأتيك إلا في شهر حرامٍ

अर्थात् अब्दुल क़ैस के सन्देश लाने वालों का एक गिरोह जो अपनी क्रौम की तरफ से आए थे आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा कि हम लोग दूर से यात्रा करके आते हैं और हराम (पवित्र) महीनों के अतिरिक्त हम सेवा में उपस्थित नहीं हो सकते। उनके कथन को आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार नहीं किया बल्कि स्वीकार किया। इस हदीस से भी यह मसअला निकलता है कि जो लोग ज्ञान की प्राप्ति या धार्मिक मुलाकात के लिए अपने किसी अनुकर्णीय की सेवा में उपस्थित होना चाहें वे अपनी फ़ुर्सत के अनुसार एक तिथि निर्धारित कर सकते हैं जिस तिथि में वे आसानी के साथ बिना किसी हानि के उपस्थित हो सकें। और इसी स्थिति को 27 दिसम्बर की तिथि में ध्यान में रखा गया है क्योंकि वे दिन छुट्टियों के होते हैं और नौकरी पेशा लोग उन दिनों में आसानी के साथ आ सकते हैं। और खुदा तआला पवित्र कुर्आन में फ़रमाता है कि इस धर्म में कोई हानि नहीं रखी गई। यह इस बात की ओर संकेत है कि यदि किसी योजना के अन्तर्गत या व्यवस्था द्वारा एक कार्य जो वास्तव में उचित एवं वैध है सरल और आसान हो सकता है तो वही योजना चुन लो कुछ भी हर्ज नहीं। इन बातों का नाम बिदअत रखना उन अंधों का काम है जिनको न धर्म की बुद्धि दी गई और न दुनिया की। इमाम बुखारी ने अपनी सही हदीस में किसी धार्मिक शिक्षा की मज्लिस पर तिथि निर्धारित करने के लिए एक विशेष अध्याय स्थापित किया है जिसका

शीर्षक यह है **من جعل لاهل العلم ايامًا معلومة** अर्थात् विद्या (इल्म) के अभिलाषियों को लाभ पहुंचाने के लिए विशेष दिनों को निर्धारित करना कुछ सहाबा की सुन्नत है। इस सबूत के लिए इमाम बुखारी अपनी सही में अबी वाइल से यह रिवायत करते हैं **كَانَ عَبْدُ اللَّهِ يَذْكُرُ النَّاسَ فِي كُلِّ خَمِيسٍ** अर्थात् अब्दुल्लाह ने अपने प्रवचनों के लिए जुम्मेरात का दिन निर्धारित किया था और जुम्मेरात में ही उसके प्रवचन पर लोग उपस्थित होते थे। यह भी याद रहे कि महा वैभवशाली खुदा ने पवित्र कुर्आन में उपाय और प्रबंध के लिए हमें आदेश दिया है और हमें मामूर किया है कि जो उत्तम उपाय और प्रबंध इस्लाम की सेवा के लिए हम हित में समझें और दुश्मन पर विजयी होने के लिए लाभप्रद समझें वही कार्यान्वित करें, जैसा कि वह जिसके नाम का सम्मान हो फ़रमाता है -

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ
(अनअन्काल-8/61)

अर्थात् धर्म के दुश्मनों के लिए हर प्रकार की तैयारी जो कर सकते हो करो और इस्लाम के कलिमः को बुलन्द करने के लिए जो शक्ति लगा सकते हो लगाओ। अब देखो कि यह पवित्र आयत कितनी बुलन्द आवाज से निर्देश दे रही है कि इस्लाम की सेवा के लिए जो उपाय प्रभावी हों सब करो और अपने चिन्तन की, अपने धन की, अपने उत्तम उपाय की सम्पूर्ण शक्ति इस मार्ग में खर्च करो ताकि तुम विजय पाओ। अब मूर्ख और अंधे और धर्म के दुश्मन मौलवी इस शक्ति का प्रयोग करने और कूटनीति का नाम बिदअत रखते हैं इस समय के यो लोग आलिम कहलाते हैं जिनको पवित्र कुर्आन की ही ज्ञान नहीं इन्नालिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। इस वर्णित आयत पर विचार करने वाले समझ सकते हैं कि हदीस नब्वी के अनुसार कि **إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ** इस्लाम की सेवा के लिए कोई उत्तम व्यवस्था सोचना बिदअत और गुमराही में सम्मिलित नहीं है। जैसे-जैसे समयानुसार कठिनाइयां समक्ष आती हैं या नए-नए तौर पर हम लोगों पर विरोधियों के प्रहार होते हैं, हमें वैसे ही नए-नए उपाय करने पड़ते हैं। अतः यदि वर्तमान हालत के अनुसार उन प्रहारों को रोकने का कोई उपाय और निवारण सोचें तो वह एक उपाय है बिदअतों से उसका कुछ संबंध नहीं। संभव है कि समय के इन्क्रिलाब

(परिवर्तन) के कारण हमारे सामने कुछ ऐसी नवीन कठिनाइयां आ जाएं जो हमारे सय्यद-व-मौला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी उस रंग और उस प्रकार की कठिनाइयां समझ न आई हों। उदाहरणतया हम इस समय की लड़ाइयों में पहली पद्धति को जो मस्नून है अपना नहीं सकते क्योंकि इस युग में लड़ाई-झगड़ा (युद्ध) बिल्कुल बदल गया है और पहले हथियार बेकार हो गए तथा लड़ाइयों के नवीन हथियार पैदा हुए। अब यदि उन हथियारों को पकड़ना और उठाना तथा उन से काम लेना इस्लामी बादशाह बिदअत समझें और मियां रहीम बख्श जैसे मौलवी की बात पर कान धर के इन नवीन हथियारों का इस्तेमाल करना गुमराही और गुनाह समझें और यह कहें कि यह वह युग की पद्धति है जो न रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनाई और ने सहाबा और उनके पीछे आने वालों ने तो बताएं तो इसके अतिरिक्त कि एक अपमान के साथ अपनी टूटी-फूटी हुकूमतों से अलग किए जाएं और दुश्मन विजयी हो जाए कोई और भी परिणाम होगा। अतः ऐसे स्थान उपाय और व्यवस्था में चाहे वह प्रत्यक्ष लड़ाई-झगड़ा हो या आन्तरिक और चाहे तलवार की लड़ाई हो या कलम की हमारे हिदायत पाने के लिए यह उपरोक्त पवित्र आयत पर्याप्त है। अर्थात् यह कि

(अलअन्फाल-8/61) **وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ**

महा वैभवशाली अल्लाह तआला इस आयत में हमें सामान्य अधिकार देता है कि दुश्मनों के सामने तुम्हें जो उत्तम उपाय मालूम हो और जो पद्धति तुम्हें प्रभावी और उचित दिखाई दे वही पद्धति अपनाओ। अब स्पष्ट है कि इस उत्तम व्यवस्था का नाम बिदअत और गुनाह रखना और धर्म के सहायकों को जो दिन-रात इस्लाम के कलिमः को बुलन्द करने की चिन्ता में है, जिनके बारे में आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि **حَبِّ الْانْصَارِ مِنَ الْاِيْمَانِ** उनको मर्दूद ठहराना नेक स्वभाव लोगों का काम नहीं है बल्कि वास्तव में यह उन लोगों का काम है जिनकी रूहानी शक्तें बिगड़ चुकी हैं। और यदि यह कहो कि यह हदीस कि **حَبِّ الْانْصَارِ مِنَ الْاِيْمَانِ - وَبَغْضِ الْانْصَارِ مِنَ النِّفَاقِ** अर्थात् अन्सार से प्रेम रखना ईमान की निशानी और अन्सार से वैर रखना दोगलेपन की निशानी

है। यह उन अन्सार के बारे में है जो मदीना के रहने वाले थे न कि सामान्य और समस्त अन्सार। तो इस से यह अनिवार्य होगा कि जो उस युग के बाद रसूलुल्लाह के अन्सार हों उन से वैर रखना वैध है, नहीं-नहीं बल्कि यह हदीस यद्यपि एक विशेष गिरोह के लिए कही गई परन्तु अपने अन्दर सामान्य का लाभ रखती है जैसा कि पवित्र कुर्आन में अधिकतर आयतें विशेष गिरोह के लिए उतरीं परन्तु उन का चरितार्थ (मिस्दाक़) सामान्य ठहराया गया है। अतः ऐसे लोग जो मौलवी कहलाते हैं धर्म के अन्सार के दुश्मन और यहूदियों के पद चिन्हों पर चल रहे हैं। किन्तु हमारा यह कथन सब पर नहीं है ईमानदार उलेमा इस से बाहर हैं, केवल विशेष मौलवियों के बारे में यह लिखा गया है। हर एक मुसलमान को दुआ करनी चाहिए कि खुदा तआला इस्लाम को शीघ्र इन बेईमान मौलवियों के अस्तित्व से मुक्ति प्रदान करे। क्योंकि इस्लाम पर अब एक अत्यंत संवेदनशील समय है और ये मूर्ख दोस्त इस्लाम पर हंसी-ठट्ठा कराना चाहते हैं और ऐसी बातें करते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के दिल के प्रकाश को स्पष्ट तौर से सच्चाई के विरुद्ध दिखाई देती हैं। इमाम बुखारी पर अल्लाह तआला रहमत करे उन्होंने इस बारे में भी अपनी किताब में एक अध्याय स्थापित किया है। वह उस अध्याय में लिखते हैं - **قَالَ عَلَى رَضِيَ - اللَّهُ عَنْهُ حَدَّثُوا النَّاسَ بِمَا يَعْرِفُونَ أَتَحِبُّونَ أَنْ يَكْذِبَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ** (अर्थात्-लोगों को वह बात बताएं जिन्हें वे पहचानते (समझते) हों। क्या तुम्हें यह पसंद है कि लोग अल्लाह और उसके रसूल को झुठलाएँ? अनुवादक) और बुखारी के हाशिए में इस की व्याख्या में लिखा है **أَيُّ تَكَلَّمُوا النَّاسَ عَلَى قَدَرِ عَقُولِهِمْ** अर्थात् लोगों से अल्लाह और रसूल की कही गई वे बातें करो जो उनकी समझ में आ जाएं और उनको उचित दिखाई दें। अकारण अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झूठा मत ठहराओ। अब स्पष्ट है कि जो विरोधी इस बात को सुनेगा कि मौलवियों ने यह फ़त्वा दिया है कि तीन मस्जिदों या एक दो अन्य स्थानों के अतिरिक्त किसी तरफ सफर वैध नहीं ऐसा विरोधी इस्लाम पर हंसेगा और शरीयत लाने वाले अलैहिस्सलाम की शिक्षा में दोष निकालने के लिए उसे अवसर मिलेगा। उसे यह तो ख़बर नहीं होगी कि किसी कमअक्ली के कारण यह

केवल मौलवी की शरारत है या उसकी मूर्खता है वह तो सीधा हमारे सय्यद-व मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आक्रमण करेगा, जैसा कि इन्हीं मौलवियों की ऐसी ही कई फ़साद फैलाने वाली बातों से ईसाइयों को बहुत मदद मिल गई है। उदाहरणतया जब मौलवियों ने अपने मुंह से इकरार किया कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो नऊजुबिल्लाह मुर्दा हैं परन्तु हज़रत ईसा क्रयामत तक जीवित हैं तो वे लोग अहले इस्लाम पर सवार हो गए और हज़ारों भोले भाले लोगों को उन्होंने इन्हीं बातों से गुमराह किया और इन उद्दण्ड (गुस्ताख़) लोगों ने यह नहीं समझा कि अंबिया तो सब जीवित हैं मुर्दा तो उनमें से कोई भी नहीं। मेराज की रात आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी की लाश दिखाई नहीं दी, सब जीवित थे। देखिए महा वैभवशाली ख़ुदा अपने नबी करीम^स को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जीवित होने की पवित्र कुर्आन में ख़बर दता है और फ़रमाता है -

(अस्सज्द: - 32/24) **فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ**

और स्वयं आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मृत्यु पा जाने के बाद अपना जीवित हो जाना और आकाश पर उठाए जाना और रफ़ीक़-ए-आला को जा मिलना वर्णन करते हैं फिर मसीह के जीवन में कौन सी अनोखी बात है जो दूसरों में नहीं। मेराज की रात में आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समस्त नबियों को बराबर जीवित पाया और हज़रत ईसा को हज़रत यहया के साथ बैठा हुआ देखा। ख़ुदा तआला मौलवी अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी पर रहम करे वह एक समय के मुहद्दिस का कथन लिखते हैं कि उनका यही मत है कि यदि कोई मुसलमान होकर किसी दूसरे नबी के जीवन को आंहरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन से अधिक सुदृढ़ समझे तो वह इस्लाम के दायरे से बाहर है या शायद यह लिखा है कि निकट है कि वह काफ़िर हो जाए। परन्तु ये मौलवी ऐसे फ़िल्तों से रुकते नहीं और केवल इस ख़ाक़सार से विरोध प्रकट करने के लिए धर्म से निकलते जाते हैं। ख़ुदा तआला इन सब को पृथ्वी से उठा ले तो अच्छा है ताकि इस्लाम धर्म इन के अक्षरांतरणों (तहरीफ़ों) से बच जाए। तनिक इन्साफ़ करने का स्थान है कि सैकड़ों लोग ज्ञान की तलाश (अभिलाषा) में या मुलाक्रात के लिए खुशक शिक्षक नज़ीर

हुसैन के पास देहली में जाएं वह सफ़र वैध (जायज) हो और फिर स्वयं नज़ीर हुसैन साहिब बटालवी साहिब का वलीमा खाने के लिए इस बुढ़ापे की आयु में दो सौ कोस का सफ़र करके बटाला पहुंचें और वह सफ़र उचित हो और फिर शेख बटालवी साहिब प्रत्येक वर्ष अंग्रेज़ों के मिलने के लिए शिमला की तरफ जाएं ताकि दुनिया का सम्मान प्राप्त करें। और वह सफ़र निषिद्ध और हराम न समझा जाए। इसी प्रकार कुछ मौलवी धर्मोपदेश का नाम लेकर पेट भरने के लिए पूरब और पश्चिम की तरफ़ घूमते फिरें और वह सफ़र आरोप का स्थान न हो। और कोई इन लोगों पर बिदअती और दुष्कर्म तथा मर्दूद होने के फ़त्वे न दे। परन्तु जब यह खाकसार खुदा की आज्ञा और आदेश से सच की दावत के लिए मामूर होकर ज्ञान की प्राप्ति के लिए अपनी जमाअत के लोगों को बुलाए तो वह सफ़र अवैध (हराम) हो जाए। और यह खाकसार इस कार्य के कारण मर्दूद कहलाए। क्या यह तक्वा (संयम) और खुदा से डरने का ढंग है। अफ़सोस कि ये मूर्ख यह भी नहीं जानते कि उपाय और प्रबंध को बिदअतों की श्रेणी में सम्मिलित नहीं कर सकते। प्रत्येक समय और युग नए प्रबंध की मांग करता है। यदि कठिनाइयों की नवीन परिस्थितियां सामने आए तो नवीन प्रकार के उपायों के अतिरिक्त हम और क्या कर सकते हैं। अतः क्या ये उपाय बिदअतों में गिने जाएंगे। जब असल सुन्नत सुरक्षित हो और उसी की रक्षा के लिए कुछ उपायों की हमें आवश्यकता हो तो क्या वे उपाय बिदअत कहलाएंगे? मआज़अल्लाह, हरगिज़ नहीं। बिदअत वह है जो अपनी वास्तविकता में सुन्नत-ए-नबवी के विपरीत और विरुद्ध हो और आसारे नबवी में उस काम के करने के बारे में डांट-डपट और धमकी पाई जाए और यदि केवल प्रबंध की नवीनता तथा नवीन उपाय पर बिदअत का नाम रखना है तो फिर इस्लाम में बिदअतों को गिनते जाओ तो असंख्य हैं। सर्फ़ विद्या (व्याकरण) भी बिदअत होगी, नह्व विद्या भी बिदअत होगी और तर्क शास्त्र भी तथा हदीस का लिखना और अध्यायीकरण करना (बाब बांधना) तथा क्रम बद्ध करना सब बिदअतें होंगी। इसी प्रकार रेल की सवारी में चढ़ना, मशीनों का कपड़ा पहनना, डाक में पत्र डालना, तार के द्वारा कोई ख़बर मंगवाना, बंदूक और तोपों से लड़ाई करना ये समस्त कार्य बिदअतों में सम्मिलित

होंगे, बल्कि बन्दूक और तोपों से लड़ाई करना न केवल बिदअत बल्कि बहुत बड़ा गुनाह ठहरेगा। क्योंकि एक सही हदीस में है कि आग के अज्ञाब से किसी को मारना सख्त मना है। सहाबा से अधिक सुन्नत पर चलने वाला कौन हो सकता है परन्तु उन्होंने भी सुन्नत के वे मायने न समझे जो मियां रहीम बख्श ने समझे। उन्होंने उपाय और प्रबंध के तौर पर बहुत से ऐसे कार्य किए कि जो न आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किए और न पवित्र कुर्आन में आए। हज़रत उमर रजियल्लल्लाहु अन्हो की नई बातें ही देखो जिन की एक पुस्तक बनती है। इस्लाम के लिए हिज़्री तिथि उन्होंने निर्धारित की और शहरों की सुरक्षा के लिए कोतवाल नियुक्त किए और बैतुल माल के लिए एक नियमित रूप से रजिस्टर बनाया, युद्ध करने वाली सेना के लिए हाज़िरी और रुख़सत के नियम बनाए तथा उनके युद्ध करने के नियम बनाए मुकद्दमों इत्यादि के रुजू के लिए विशेष-विशेष निर्देशों का संकलन किया प्रजा की रक्षा के लिए बहुत से नियम अपनी ओर से बना कर प्रसारित किए और स्वयं कभी-कभी अपनी ख़िलाफ़त के दौर में गुप्त तौर पर रात को भ्रमण करना और प्रजा का हाल इस प्रकार से मालूम करना अपना विशेष कार्य ठहराया परन्तु कोई ऐसा नया कार्य इस ख़ाक़सार ने तो नहीं किया। केवल ज्ञान-प्राप्ति इस्लाम की सहायता के मशवरे और भाइयों की मुलाक़ात के लिए यह जल्सा प्रस्तावित किया। रहा मकान का बनाना तो यदि कोई मेहमानदारी की नीयत तथा हर आने-जाने वाले के आराम की नीयत से मकान बनाना अवैध (हराम) है तो उस पर कोई हदीस या आयत प्रस्तुत करनी चाहिए। बिरादरम हकीम नूरुद्दीन साहिब ने क्या गुनाह किया कि केवल ख़ुदा की ख़ातिर इस सिलसिले की जमाअत के लिए एक मकान बनवा दिया। जो व्यक्ति अपने सामर्थ्य और अपने प्रिय माल से धर्म की सेवा कर रहा है उस को आरोप का निशाना बनाना किस प्रकार की ईमानदारी है। हे सज्जनो! मरने के बाद मालूम होगा, थोड़ा सब्र करो। वह समय आता है कि इन सब गुस्ताखियों के बारे में पूछे जाओगे। आप लोग हमेशा यह हदीस पढ़ते हैं कि जिसने अपने समय के इमाम को न पहचाना और मर गया वह मूर्खता की मौत पर मरा। परन्तु आपको इसकी कुछ भी परवाह नहीं कि एक व्यक्ति ठीक समय पर अर्थात् चौदहवीं सदी

के िसर आया और न केवल चौदहवीं सदी बल्कि ठीक गुमराही के समय तथा ईसाइयत और दर्शन शास्त्र के प्रभुत्व के समय उसने प्रकटन किया और बताया कि मैं समय का इमाम हूं और आप लोग उसके इन्कारी हो गए और उसका नाम काफिर और दज्जाल रखा और अपने बुरे अंजाम से थोड़ा भी भय न किया और मूर्खता पर मरना पसंद किया। अल्लाह तआला ने मार्ग-दर्शन किया था कि तुम पांच समय की नमाजों में यह दुआ किया करो कि

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝ (सूरह अलफ़ातिहा-6,7)

अर्थात् हे हमारे खुदा अपने इनाम पाने वाले बन्दों का मार्ग बता वे कौन हैं। नबी, सिद्दीक (सत्यनिष्ठ) शहीद और नेक लोग। इस दुआ का सारांश यही था कि इन चार गिरोहों में से जिन का युग तुम पाओ उसकी संगत में आ जाओ उस से लाभ प्राप्त करो। परन्तु इस युग के मौलवियों ने इस आयत पर ख़ूब अमल किया। शाबाश-शाबाश मैं उनको किस से उपमा दूँ। वे उस अन्धे के समान हैं जो दूसरों की आंखों का इलाज करने के लिए बहुत जोर के साथ डींगें मारता है और अपने अन्धेपन से लापरवाह है।

अन्त में मैं यह भी व्यक्त करता हूँ कि यदि मौलवी रहीम बख़्श साहिब अब भी इस फ़त्वे से रुजू न करें (न लौटें) तो मैं उन्हें महा वैभवशाली अल्लाह की क़सम देता हूँ कि यदि वह सत्याभिलाषी है तो इस बात के फैसले के लिए मेरे पास क़ादियान में आ जाएं। मैं उनके आने-जाने का ख़र्च दे दूंगा और उन पर पुस्तकें खोल कर और कुर्आन तथा हदीस दिखा कर सिद्ध कर दूंगा कि उनका यह फ़त्वा सर्वथा ग़लत और शैतानी बहकावे से है।

وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ

विनीत

गुलाम अहमद क़ादियानी, ज़िला-गुरदासपुर

(17, दिसम्बर 1892 ई.)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

27 दिसम्बर 1892 ई. को क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर में आयोजित जलसे का विवरण

इस जलसे के अवसर पर यद्यपि पांच सौ के लगभग लोग एकत्र हो गए थे परन्तु वे निष्ठावान लोग जो केवल अल्लाह के लिए जलसे में सम्मिलित होने के लिए दूर-दूर से आए थे उनकी संख्या तीन सौ पच्चीस के लगभग पहुंच गई थी।

अब जलसे के दिनों में जो कार्रवाइयां हुईं हम उनकी चर्चा करते हैं। पहले हकीम **मौलवी नूरुद्दीन साहिब** ने पवित्र कुर्आन की उन आयतों की तफ़्सीर (व्याख्या) प्रस्तुत की जिसमें यह वर्णन है कि **मरयम सिद्दीक़ा** कैसी सदाचारी और साधवी थीं और उनके प्रिय पुत्र हज़रत **ईसा अलैहिस्सलाम** पर ख़ुदा तआला ने क्या क्या उपकार किया और वह इस नश्वर संसार से मृत्यु पाकर और ख़ुदा के नियमानुसार मौत का प्याला पीकर ख़ुदा तआला के उस नेमतों के घर (जन्नत) में पहुंच गए जिसमें उनसे पहले पवित्र हज़रत यहया और दूसरे पवित्र नबी पहुंच चुके थे। इस वर्णन के संदर्भ में आदरणीय मौलवी साहिब ने पवित्र कुर्आन के बहुत सी वास्तविकताएं और मआरिफ़ वर्णन किए, जिन से श्रोताओं पर बहुत प्रभाव पड़ा। मौलवी साहिब ने बड़ी सफ़ाई से इस बात का सबूत दे दिया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम वास्तव में इस संसार से देहान्त कर गए हैं। उनके जीवित होने का विचार व्यर्थ, मिथ्या और पवित्र कुर्आन तथा सही हदीसों के स्पष्ट आदेशों का सर्वथा विरोधी है और उनके उतरने की आशा रखना झूठी अभिलाषा है और यह भी फ़रमाया कि यद्यपि बहुत सी हदीसों में उतरने (नुज़ूल) की ख़बर दी गई है परन्तु वह उतरना और रंग में है अर्थात् और रूपक के तौर पर उतरना है न कि वास्तविक तौर पर उतरना। क्योंकि वास्तविक उतरना तो पवित्र कुर्आन और सही हदीसों के स्पष्ट आदेशों का विरोधी पड़ा हुआ है, जिसकी ओर क्रदम

उठाना मानो खुदा की खबर में सन्देह करना है। मौलवी साहिब के उपदेश के बाद सय्यद हामिद शाह साहिब सियालकोटी ने एक क़सीदः * सुनाया।

इस भाषण के बाद हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब का संक्षिप्त भाषण था जिसमें वर्तमान उलेमा की कुछ उन बातों का उत्तर दिया गया जो उनके नज़दीक कुफ़्र की बुनियाद हैं और इसी के साथ अपने मसीह मौऊद होने का आकाशीय निशानों के द्वारा सबूत दिया गया तथा उपस्थित लोगों को उस भविष्यवाणी के पूरा हो जाने की सूचना दी गई जो अख़बार 'नूर अफ़शां' 10 मई 1888 ई. में प्रकाशित हुई थी और विभिन्न समयों में समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए समझा दिया गया कि इस भविष्यवाणी का पूरा होना वास्तव में दावे की सच्चाई पर एक निशान है, क्योंकि यह भविष्यवाणी केवल इसलिए प्रकट की गई है कि जिन लोगों को सन्देह है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब खुदा की तरफ से (नहीं) हैं उनके लिए इस दावे पर एक सबूत हो जो खुदा तआला की तरफ से उन पर क़ायम हो और यह अटल सबूत है। क्योंकि जो व्यक्ति अपने दावे के खुदा की तरफ से होने में झूठा हो उसकी भविष्यवाणी पवित्र कुर्आन और तौरात की शिक्षा के अनुसार सच्ची नहीं ठहर सकती। कारण यह कि यदि खुदा तआला झूठे के झूठे दावे पर उसकी कोई भविष्यवाणी सच्ची कर दे तो फिर दावे का सच्चा होना अनिवार्य होता है और उस से खुदा की जनता धोखे में पड़ती है। फिर इसके बाद हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब ने अपनी जमाअत के लोगों को परस्पर प्रेम तक्वः (संयम) और पवित्रता के बारे में समय के अनुकूल कुछ नसीहतें कीं।

तत्पश्चात् 28 दिसम्बर 1892 ई. को यूरोप और अमरीका की धार्मिक सहानुभूति के लिए आदर्शपूर्ण उपस्थित सज्जनों ने अपनी-अपनी राय प्रस्तुत की और निर्णय पाया कि एक पत्रिका जो इस्लाम की मुख्य आवश्यकताओं की संग्रहीता तथा इस्लामी आस्थाओं का सुन्दर चेहरा बौद्धिक तौर पर दिखाती हो लिख कर और फिर प्रकाशित करके उसकी बहुत सी प्रतियां यूरोप और

*क़सीदः - पद्यात्मक प्रशंसा (अनुवादक)

अमरीका में भेज दी जाएं। इसके बाद **क्रादियान** में अपना प्रेस स्थापित करने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत हुए और उन लोगों के चन्दे की एक सूची तैयार की गई जो प्रेस की सहायता के लिए भेजते रहेंगे। यह भी निर्णय पाया कि एक अखबार इस्लाम के प्रचार और सहानुभूति के लिए जारी किया जाए और यह भी प्रस्तावित हुआ कि हज़रत मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही इस सिलसिले के उपदेशक नियुक्त हों और वे पंजाब तथा हिन्दुस्तान का दौरा करें। इसके बाद भलाई की दुआ की गई। इस जल्सा सालाना के भविष्य में भी हमेशा यही उद्देश्य रहेंगे कि इस्लाम के प्रचार तथा अमरीका और यूरोप के नए मुसलमानों से सहानुभूति के लिए उत्तम प्रस्ताव सोचे जाएं और संसार में अच्छे चाल चलन, नेक नीयत, तक्रवा और पवित्रता, नैतिक स्थितियों को उन्नति देने शिष्टाचार, गन्दी आदतें, बुरी रस्मों को क्रौम में से दूर करने तथा इस **बर्तानिया की सरकार** का सच्चा कृतज्ञ और गुणग्राही (क्रद्रदान) बनने की कोशिश तथा यत्न लिए जाएं। इन उद्देश्यों का पूर्ण करने तथा अन्य प्रबंधों के उद्देश्य से एक कमेटी भी प्रस्तावित की गई जिसके अध्यक्ष हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब भैरवी और सेक्रेटरी मिर्जा खुदा बख्श साहिब अतालीक जनाब खान साहिब, मुहम्मद अली खान साहिब रईस मालेरकोटला, शैख रहमतुल्लाह साहिब म्युनिस्पल कमिशनर गुजरात, मुंशी गुलाम क्रादिर साहिब फ़सीह वायस प्रजीडेण्ट तथा म्युनिस्पल कमिशनर सियालकोट और मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी बनाए गए।

नीचे उन लोगों के नाम लिखे जाते हैं जो इस जलसे में सम्मिलित हुए।

- (1) मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरा, ज़िला-शाहपुर
- (2) हकीम फ़ज़लुद्दीन साहिब मौलवी नूरुद्दीन साहिब के भतीजे
- (3) मियां हाफ़िज़ मुहम्मद साहिब मौलवी नूरुद्दीन साहिब के भतीजे
- (4) मियां अब्दुर्रहमान साहिब मौलवी नूरुद्दीन साहिब के भतीजे
- (5) मियां नज्मुद्दीन साहिब
- (6) सय्यद क्राज़ी अमीर हुसैन साहिब प्रोफ़ेसर अरबी मदरसा, अमृतसर //

- (7) मियां हसन मुहम्मद साहिब जमींदार //
- (8) मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोट
- (9) मियां मौला बख्श साहिब बूट विक्रेता //
- (10) मियां फ़ज़ल करीम साहिब सियालकोट
- (11) मास्टर अल्लाह दित्ता साहिब टीचर सियालकोट
- (12) मियां शादी खान साहिब नौकर राजा अमर सिंह साहिब बहादुर सियालकोट
- (13) सय्यद नवाब शाह साहिब टीचर अमरीकन मिशन स्कूल, सियालकोट
- (14) सय्यद अमीर अली शाह साहिब टीचर निवासी सय्यदा वाली, ज़िला-सियालकोट
- (15) मुंशी अलादीन साहिब, सियालकोट
- (16) चौधरी मुहम्मद सुल्तान साहिब म्युनिस्पल कमिशनर सियालकोट
- (17) मौलवी अबू यूसुफ़ मुहम्मद मुबारक अली साहिब, सियालकोट
- (18) मीर हामिद शाह साहिब अहलेमद माफ़ियात सियालकोट
- (19) मुंशी गुलाम क़ादिर साहिब फ़सीह वाइस प्रेज़ीडेंट म्युनिस्पल कमेटी सियालकोट
- (20) मियां फ़ज़लुद्दीन साहिब सुनार, सियालकोट
- (21) सय्यद ख़स्तत अली शाह साहिब डिप्टी इन्स्पेक्टर, पुलिस कड़ियान वाला, ज़िला-गुजरात
- (22) मियां फ़त्हुद्दीन साहिब, ज़िला-गुजरात
- (23) मुंशी गुलाम ख़ान साहिब विद्यार्थी ट्रेनिंग कालेज लाहौर (सियालकोट)
- (24) मुंशी गुलाब ख़ान साहिब नक्शनवैस सियालकोट
- (25) मियां नूर दीन साहिब विद्यार्थी, सियालकोट
- (26) मौलवी कुतुबुद्दीन साहिब बद्दोमली
- (27) चौधरी सरफ़राज़ ख़ान साहिब नम्बरदार बद्दोमली, ज़िला-सियालकोट
- (28) मियां मुहम्मदीन साहिब कर्मचारी पुलिस सियालकोट
- (29) सय्यद महमूद शाह साहिब सियालकोट
- (30) मियां इमामुद्दीन साहिब नौशहरा
- (31) मियां अल्लाह बख्श साहिब क्रस्साब छावनी सियालकोट

- (32) सय्यद अमीर अली शाह साहिब सरजेण्ट पुलिस सियालकोट
- (33) हकीम शेख क़ादिर बख़्श साहिब अहमदाबाद, ज़िला जेहलम
- (34) हाफ़िज़ सिराजुद्दीन साहिब ईसा वाला, ज़िला-जेहलम
- (35) मियां शफ़ुद्दीन साहिब ज़मींदार कोटला फ़कीर, ज़िला जेहलम
- (36) मियां ईदा साहिब ज़मींदार कोटला, फ़कीर, ज़िला जेहलम
- (37) मियां कुतुबुद्दीन साहिब कोटला फ़कीर जेहलम
- (38) मियां अली मुहम्मद साहिब इमाम मस्जिद कोटला फ़कीर जेहलम
- (39) मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब मुहल्ला नौ ज़िला-जेहलम
- (40) मियां निज़ामुद्दीन साहिब मुहल्ला खोजियां ज़िला जेहलम
- (41) मियां मुहम्मद अमीन साहिब, वस्त्र विक्रेता, चकवाल (रावलपिण्डी)
- (42) मुंशी गुलाबदीन साहिब रुहतास, ज़िला-जेहलम
- (43) मियां अल्लाह दित्ता साहिब रुहतास, ज़िला-जेहलम
- (44) मुंशी गुलाम हुसैन साहिब रुहतास ज़िला जेहलम
- (45) मुंशी मुहम्मद हुसैन साहिब कर्मचारी रियासत पटियाला मुरादाबाद
- (46) मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोहा, ज़िला मुरादाबाद
- (47) मियां रशीद अहमद साहिब मैडीकल स्टूडेंट अमरोहा, ज़िला मुरादाबाद
- (48) मीर रशीद हुसैन साहिब मैडीकल स्टूडेंट अमरोहा ज़िला मुरादाबाद
- (49) शेख ज़ैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम साहिब चच फुगली काली जौ के मुम्बई इंजीनियर क्लाथ मैन्यु फैक्टरी
- (50) मियां अब्दुल ग़फ़ूर पुत्र शम्सुद्दीन साहिब // //
- (51) पीर मुंज़ूर मुहम्मद साहिब, लुधियाना डिप्टी इन्स्पेक्टर दफ़्तर कौन्सिल जम्मू-व-कश्मीर
- (52) पीर इफ़्तिख़ार अहमद साहिब मुहल्ला नौ-लुधियाना
- (53) पीर इनायत अली साहिब मुहल्ला नौ, लुधियाना
- (54) बाबू मुहम्मद बख़्श कर्मचारी दफ़्तर नहर अंबाला (मुहल्ला नौ लुधियाना)
- (55) मियां मौला बख़्श साहिब क्लर्क एक्ज़ामिनर आफ़िस लाहौर // //

- (56) मियां करम इलाही साहिब कॉन्स्टेबल पुलिस लुधियाना
- (57) काजी ख्वाजा अली साहिब लुधियाना // //
- (58) मुंशी अब्दुल हक साहिब, खलीफा अब्दुस्समी साहिब //
- (59) हाफिज नूर अहमद साहिब, एण्ड को कम्पनी, लुंगी मर्चेण्ट, लुधियाना
- (60) मियां निजामुद्दीन साहिब, जिल्दसाज, लुधियाना //
- (61) मौलवी अब्दुल कादिर साहिब टीचर जमालपुर, लुधियाना
- (62) शाहजादा अब्दुल मजीद साहिब, लुधियाना
- (63) मियां करीम बख्श साहिब जमालपुर, लुधियाना
- (64) हाजी अब्दुर्रहमान साहिब लुधियाना
- (65) मियां अब्दुल कादिर साहिब टीचर जीगन, जिला-लुधियाना मद्रसा जमालपुर
- (66) मियां शहाबुद्दीन साहिब, लुधियाना
- (67) सय्यद अब्दुल हादी साहिब माछीपूरा, जिला-लुधियाना
- (68) मियां अब्दुर्रहीम साहिब मुहल्ला मोचपुरा, लुधियाना
- (69) मियां अल्लाहबख्श साहिब मुहल्ला मोचपुरा, लुधियाना
- (70) मियां इस्मतुल्लाह साहिब मिस्त्री, बाजार खरादियां, लुधियाना
- (71) मियां रहमतुल्लाह साहिब बाजार खरादियां लुधियाना
- (72) मियां शहाबुद्दीन साहिब बाजार खरादियां लुधियाना
- (73) मियां निजामुद्दीन साहिब बाजार खरादियां लुधियाना
- (74) हकीम मौलवी निजामुद्दीन साहिब रंगपुर जिला-मुज़फ्फरगढ़ नज़ील भैरा
- (75) मियां अब्दुल हकीम खान साहिब सामाना, रियासत पटियाला (मैडीकल स्टूडेंट लाहौर)
- (76) मुंशी गुलाम कादिर साहिब सिन्नौरी रियासत पटियाला (पटवारी तहसील सरहिन्द)
- (77) मुंशी मुहम्मद इब्राहीम साहिब सिन्नौरी रियासत पटियाला (पटवारी तहसील सरहिन्द)
- (78) काजी जैनुल आबिदीन साहिब खानपुर रियासत पटियाला
- (79) मुंशी अब्दुल्लाह साहिब सिन्नौरी पटवारी गौसगढ़, रियासत पटियाला सरहिन्द
- (80) मुंशी हाशिम अली साहिब सिन्नौर, रियासत-पटियाला (पटवारी) तहसील बरनाला

- (81) मौलवी अब्दुस्समद साहिब उर्फ शेख अली मुहम्मद सिन्नौर, रियासत पटियाला
- (82) मियां अब्दुर्रहमान साहिब सिन्नौर, रियासत पटियाला, पटवारी तहसील-सनाम
- (83) मुंशी मुहम्मद इब्राहीम साहिब सिन्नौर टीचर रियासत पटियाला,
- (84) मौलवी मुहम्मद यूसुफ साहिब सिन्नौर टीचर रियासत पटियाला,
- (85) मियां पीर बख्श साहिब खेरू जमींदार पटियाला,
- (86) मियां अमीर बख्श साहिब खेरू जमींदार पटियाला,
- (87) मियां अल्लाह बख्श साहिब हज्जाम
- (88) शेख जलालुद्दीन साहिब पटियाला,
- (89) मियां अली नवाज साहिब मुहल्ला चमासे, रियासत-पटियाला
- (90) मियां अब्दुल करीम साहिब नम्बरदार मुहल्ला चमासे, रियासत-पटियाला
- (91) मियां मुहम्मद इस्माईल साहिब मुहल्ला चमासे, रियासत-पटियाला
- (92) मुहम्मद अकबर खान साहिब सिन्नौर मुहल्ला चमासे, रियासत-पटियाला
- (93) मियां नूर मुहम्मद साहिब जमींदार गौसगढ़ रियासत पटियाला
- (94) मियां माहिया साहिब जमींदार, गौसगढ़ रियासत-पटियाला
- (95) मियां बेगा साहिब कुहरेस पुरा, जिला अम्बाला
- (96) मियां अता इलाही साहिब गौस गढ़, रियासत-पटियाला
- (97) मियां हमीरा साहिब जस्वाल, रियासत-पटियाला
- (98) मुंशी मुहम्मदी साहिब, रियासत-पटियाला
- (99) मियां गुलाम क्रादिर साहिब जमींदार मुहल्ला पोरियां रियासत-पटियाला
- (100) मियां अब्दुल मजीद खान साहिब सांभर मलिक राजपूताना (स्टूडेन्ट)
- (101) हाजी मुहम्मद बिन अहमद मक्की (मक्का मुअज्जमा)
- (102) मिर्जा खुदा बख्श साहिब इंग अतालीक नवाब मुहम्मद अली खान साहिब बहादुर मालेरकोटला
- (103) हाफिज नज्मुद्दीन साहिब भट्टियां, जिला-गुजरांवाला
- (104) क्राजी जियाउद्दीन साहिब कोट क्राजी जिला गुजरांवाला-डाकखाना बुताला
- (105) मुंशी मुहम्मद दीन साहिब पटवारी जिला गुजरांवाला

- (106) मुंशी अहमद दीन साहिब गुजरांवाला
- (107) सय्यद गुलाम शाह साहिब नौरंग ज़िला गुजरांवाला
- (108) मियां करमदाद साहिब तिहंग, ज़िला-गुजरात
- (109) मौलवी जलालुद्दीन साहिब बलानी, ज़िला गुजरात
- (110) मियां साहिब दीन साहिब तिहाल ज़िला गुजरात
- (111) मौलवी फ़ज़लुद्दीन साहिब खारियां ज़िला गुजरात
- (112) मियां मुहम्मद अली साहिब क्लर्क जलालपुर ज़िला गुजरात क्लर्क
एक्ज़ामिनर आफ़िस-लाहौर
- (113) मौलवी सय्यद जमाल शाह साहिब वाइज़ नन्दोवाल, ज़िला-गुजरात
- (114) हाफ़िज़ फ़ज़ल अहमद साहिब गुजरात क्लर्क दफ़्तर एक्ज़ामिनर लाहौर
- (115) शेख़ रहमतुल्लाह साहिब म्युनिस्पल कमिश्नर गुजरात
- (116) हाफ़िज़ मुहम्मद साहिब पेशावर कोटला फ़ीलबाना
- (117) मियां अब्दुल्लाह साहिब पेशावर कोटला फ़ीलबाना
- (118) मौलवी गुलाम हुसैन साहिब टीचर बोर्ड स्कूल पेशावर कोटला फ़ीलबाना
- (119) हाफ़िज़ हामिद अली साहिब क़ादियान ज़िला गुरदासपुर
- (120) हाफ़िज़ मुईनुद्दीन साहिब क़ादियान ज़िला गुरदासपुर
- (121) मिर्ज़ा इस्माईल बेग साहिब क़ादियान ज़िला गुरदासपुर
- (122) मियां जान मुहम्मद साहिब इमाम मस्जिद ज़िला गुरदासपुर
- (123) शेख़ नूर अहमद साहिब ज़मींदार खारा-ज़िला गुरदासपुर
- (124) शेख़ अब्दुर्रहमान बुट्टरकलां (नौमुस्लिम) ज़िला गुरदासपुर
- (125) हाफ़िज़ इमामुद्दीन साहिब नंगल ज़िला गुरदासपुर
- (126) मियां मुहम्मद बख़्श साहिब कक्केज़ई बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (127) हाजी गुलाम मुहम्मद साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (128) शेख़ मुराद अली साहिब कलानौर ज़िला गुरदासपुर
- (129) मियां हाशिम अली साहिब जंडमाझा ज़िला गुरदासपुर
- (130) मियां नत्थू साहिब ज़मींदार बाज़ीदचक ज़िला गुरदासपुर

- (131) मियां महरदीन जमींदार बाजीदचक जिला गुरदासपुर
- (132) मौलवी इलाही बख्श साहिब निवासी लील. गुरदासपुर
- (133) मियां अब्दुल्लाह साहिब सोहला गुरदासपुर
- (134) मियां अली बख्श साहिब दर्जी सोहला गुरदासपुर
- (135) मुंशी हाशिम अली साहिब सोहला जिला-गुरदासपुर
- (136) फ़कीर मर्दानाशाह साहिब सोहला, जिला गुरदासपुर
- (137) मियां चिराग़ अली साहिब थह गुलामनबी जिला गुरदासपुर (जमींदार)
- (138) मियां मुहम्मद्दीन साहिब थह गुलामनबी, जिला गुरदासपुर
- (139) मियां मुहम्मद बख्श साहिब (जमींदार) थह गुलामनबी, जिला गुरदासपुर
- (140) मियां शहाबुद्दीन साहिब (जमींदार) थह गुलामनबी, जिला गुरदासपुर
- (141) मियां सुल्तान बख्श साहिब (जमींदार) थह गुलामनबी, जिला गुरदासपुर
- (142) मियां खुदा बख्श साहिब नौ मुस्लिम जमींदार थह गुलाम नबी, जिला गुरदासपुर
- (143) मियां मेहर अली साहिब बेबलचक (जमींदार) थह गुलाम नबी, जिला गुरदासपुर
- (144) हकीम मुहम्मद अशरफ़ साहिब बटाला-जिला-गुरदासपुर
- (145) मियां मुहम्मद अकबर ठेकेदार लकड़ी बटाला जिला गुरदासपुर
- (146) शेख नूर अहमद साहिब रईस ठेकेदार लकड़ी बटाला जिला गुरदासपुर
- (147) मियां फ़जल हक़ साहिब रईस ठेकेदार लकड़ी बटाला जिला गुरदासपुर
- (148) मुंशी दीन मुहम्मद साहिब (महालदार रियासत जम्मू)
- (149) मियां मुहम्मद इब्राहीम साहिब (महालदार रियासत जम्मू) मैडिकल स्टूडेंट लाहौर
- (150) मियां नूर माही साहिब बटाला जिला गुरदासपुर
- (151) हाफ़िज़ उमरुद्दीन साहिब थह गुलामनबी जिला गुरदासपुर
- (152) मियां नत्थू साहिब थह गुलामनबी जिला गुरदासपुर
- (153) मियां रहमत अली साहिब थह गुलामनबी जिला गुरदासपुर
- (154) मुंशी गुलाम क़ादिर साहिब थह गुलामनबी जिला गुरदासपुर
- (155) मियां अब्दुल्लाह साहिब थह गुलामनबी जिला गुरदासपुर
- (156) मियां फ़कीर अली साहिब थह गुलामनबी जिला गुरदासपुर

- (157) मियां शेर अली साहिब थह गुलामनबी ज़िला गुरदासपुर
- (158) चौधरी सुल्तान बख्श साहिब ज़मींदार थह गुलामनबी ज़िला गुरदासपुर
- (159) चौधरी मुहम्मद साहिब गोरायांवाला ज़िला गुरदासपुर
- (160) चौधरी सुल्तान साहिब गोरायांवाला ज़िला गुरदासपुर
- (161) मेहर अब्दुल्लाह साहिब गोरायांवाला ज़िला गुरदासपुर
- (162) मियां मुहकम दीन साहिब दुकानदार श्री गोबिन्दपुरा ज़िला गुरदासपुर
- (163) मियां शाह मुहम्मद साहिब पटोली बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (164) सय्यद मेहरशाह साहिब पटोली बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (165) सय्यद फ़कीर हुसैन साहिब पटोली बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (166) सय्यद हुसैनशाह साहिब कठाला ज़िला गुरदासपुर
- (167) सय्यद उमरशाह साहिब नवां पिण्ड ज़िला गुरदासपुर
- (168) मेहर नबी बख्श साहिब नम्बरदार मेम्बर कमेटी-व-म्युनिस्पल कमिशनर बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (169) शेख फतेह मुहम्मद साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (170) मुंशी मुहकमुद्दीन साहिब स्टाम्प विक्रेता श्री गोबिन्दपुरा ज़िला गुरदासपुर
- (171) मुंशी मुहम्मद अली साहिब पेन्शनर ज़िलेदार बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (172) हाजी गुलाम मुहम्मद साहिब डिप्टी इन्स्पेक्टर बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (173) बाबू अली मुहम्मद साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (174) मुंशी मुहम्मद उमर साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (175) शेख जान मुहम्मद साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (176) मियां नूर मुहम्मद साहिब फ़ैजुल्लाह चक ज़िला गुरदासपुर
- (177) मियाँ उमर शाह साहिब फ़ैजुल्लाह चक, ज़िला गुरदासपुर
- (178) मियां अल्लाहबख्श साहिब फ़ैजुल्लाह चक ज़िला गुरदासपुर
- (179) मियां गुलाम अली साहिब फ़ैजुल्लाह चक ज़िला गुरदासपुर
- (180) मियां करम इलाही साहिब फ़ैजुल्लाह चक ज़िला गुरदासपुर
- (181) मियां अली बख्श साहिब फ़ैजुल्लाह चक ज़िला गुरदासपुर

- (182) मियां मौलादाद साहिब थह गुलाम नबी ज़िला गुरदासपुर
- (183) चौधरी हामिद अली साहिब नम्बरदार वज़ी रचक ज़िला गुरदासपुर
- (184) चौधरी घसीटा साहिब बेवलचक ज़िला गुरदासपुर
- (185) मियां अल्लाहदित्ता सहिब बेबल चक ज़िला गुरदासपुर
- (186) मियां वली मुहम्मद साहिब बेबल चक ज़िला गुरदासपुर
- (187) मियां गुलाम फ़रीद साहिब बेबल चक ज़िला गुरदासपुर
- (188) मियां इनायतुल्लाह साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (189) मौलवी कुदरतुल्लाह साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (190) मियां मुज़फ़्फ़रुल्लाह साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (191) मियां कादिर बख़्श साहिब बटाला ज़िला गुरदासपुर
- (192) मियां मुहम्मदीन साहिब क़ादियान ज़िला गुरदासपुर
- (193) मियां हाकिम अली साहिब थह गुलामनबी ज़िला गुरदासपुर
- (194) मुंशी ज़ैनुल आबिदीन साहिब ज़िला गुरदासपुर
- (195) मुंशी मुहम्मद जान साहिब पटवारी ज़ेहलमी ज़िला गुरदासपुर
- (196) मियां जमालुद्दीन साहिब पश्मीना (बुनने वाला) सेखवां ज़िला गुरदासपुर
- (197) मियां इमामुद्दीन साहिब सेखवां ज़िला गुरदासपुर
- (198) मियां ख़ैरुद्दीन साहिब सेखवां ज़िला गुरदासपुर
- (199) मियां मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब सेखवां ज़िला गुरदासपुर
- (200) मियां अब्दुल्लाह साहिब ठीरां ज़िला गुरदासपुर
- (201) मियां कुतुबुद्दीन साहिब दफ़रवाला ज़िला गुरदासपुर
- (202) चौधरी दीना साहिब क़ादिराबाद ज़िला गुरदासपुर
- (203) मियां शेर अली साहिब क़ादियान ज़िला गुरदासपुर
- (204) मियां इलाहिया चौकीदार सेखवां ज़िला गुरदासपुर
- (205) मियां गौहरशा साहिब बहवी ज़िला गुरदासपुर
- (206) चौधरी नवाब साहिब ज़मींदार मलोलपुर ज़िला गुरदासपुर
- (207) मियां नूरुद्दीन साहिब अजोई ज़िला गुरदासपुर

- (208) मियां कालूशाह साहिब आलमपुर जिला गुरदासपुर
- (209) मियां नूर अहमद साहिब जमींदार कल्वी जिला गुरदासपुर
- (210) चौधरी इमामुद्दीन साहिब कल्वी जिला गुरदासपुर
- (211) चौधरी निजामुद्दीन साहिब कल्वी जिला गुरदासपुर
- (212) फ़क्रीर मेहरशाह साहिब कोलियान जिला गुरदासपुर
- (213) मौलवी हाफ़िज़ अज़ीम बख़्श साहिब बहूमगा जिला गुरदासपुर वर्तमान पटियाला
- (214) मौलवी गुलाम जैलानी साहिब नौहून, जिला-अंबाला (टीचर मदरसा घरोनून)
- (215) मौलवी अब्दुल्लाह साहिब टीचर हिन्दू-मुहम्मडन स्कूल बटाला जिला गुरदासपुर
- (216) बाबू अल्लाह बख़्श साहिब अंबाला छावनी रेलवे ट्रेन क्लर्क
- (217) मुंशी मोहम्मद मज़ाहिरुलहक़ पुत्र मौलवी मुहम्मद ज़हूर अली साहिब इटावा मुहल्ला क़ाज़ी टोला
- (218) हकीम मौलवी मुहम्मद इस्हाक़ साहिब गोहला, जिला करनाल
- (219) मीर मुहम्मद सईद साहिब देहली खिड़की फ़राशखाना-देहली
- (220) मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब गली क़ासिमजान देहली, नौकर दफ़्तर नहर अंबाला
- (221) मीर मुहम्मद कबीर साहिब खिड़की फ़राशखाना देहली
- (222) मीर नासिर नवाब साहिब खिड़की फ़राश ख़ाना देहली, नक्शानवीस दफ़्तर नहर पटियाला
- (223) मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ज़मींदार भागोराई रियासत कपूरथला जिला-जालंधर
- (224) मुंशी अरोड़ा साहिब कपूरथला, जिला जालंधर
- (225) मुंशी मुहम्मद जान साहिब कपूरथला, जिला जालंधर
- (226) मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथला जिला जालंधर
- (227) मुंशी हबीबुर्हमान साहिब रईस हाजीपुर, रियासत कपूरथला
- (228) मियां जी रोशनदीन साहिब रियासत कपूरथला
- (229) हाफ़िज़ मुहम्मद अली साहिब रियासत कपूरथला
- (230) मियां अब्दुलमजीद खान साहिब पुत्र मुहम्मद ख़ान रियासत कपूरथला

- (231) हकीम फ़तह मुहम्मद साहिब रियासत कपूरथला
- (232) हाफ़िज़ ताबा साहिब नाबीना रियासत कपूरथला
- (233) मुंशी फ़य्याज़ अली साहिब रियासत कपूरथला
- (234) मुंशी अब्दुर्रहमान साहिब कपूरथला
- (235) मियां निज़ामुद्दीन साहिब कपूरथला
- (236) मियां अब्दुल्लाह साहिब कपूरथला
- (237) मुंशी हसन ख़ान साहिब कर्मचारी तोपखाना कपूरथला
- (238) चौधरी झण्डू साहिब कपूरथला
- (239) मियां करीमबख़्श साहिब कर्मचारी पल्टन कपूरथला
- (240) मुंशी इम्दादुल्लाह ख़ान साहिब अहलमद शिक्षा विभाग कपूरथला
- (241) मिस्त्री जान मुहम्मद साहिब कपूरथला
- (242) मुंशी मुहम्मददीन साहिब क्लर्क ज़िला ट्रेफ़िक लाहौर
- (243) मुंशी मुहम्मद हुसैन साहिब क्लर्क एक्ज़ामिनर आफ़िस लाहौर
- (244) मुंशी मुज़फ़्फ़रुद्दीन साहिब लाहौर
- (245) मियां इनायतुल्लाह साहिब, स्टूडेंट लाहौर
- (246) मुंशी मुहम्मदबख़्श साहिब मोची दरवाज़ा क्लर्क एक्ज़ामिनर आफ़िस लाहौर
- (247) खलीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब मेडीकल स्टूडेंट लाहौर
- (248) मियां नूरुद्दीन साहिब लाहौर
- (249) मौलवी करम इलाही साहिब तकिया साधवां लाहौर
- (250) हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब लंगेमण्डी लाहौर
- (251) मियां अब्दुल अज़ीज़ साहिब लंगे मण्डी लाहौर
- (252) मियां रहीमुल्लाह साहिब लंगे मण्डी लाहौर
- (253) मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब बाग़वानपुरा ज़िला लाहौर (पूर्व फारिस्टर)
- (254) मुंशी इमामुद्दीन (कातिब) कटराकरम सिंह अमृतसर
- (255) मुंशी ताजुद्दीन साहिब अकाउण्टेन्ट रेलवे आफ़िस लाहौर
- (256) मास्टर अहमद साहिब लाहौर

- (257) हाजी शहाबुद्दीन साहिब लाहौर
- (258) मुंशी अजीजुद्दीन साहिब लाहौर
- (259) खलीफा रजबुद्दीन साहिब लाहौर
- (260) मियां अजीजुद्दीन साहिब पट्टी जिला लाहौर (टीचर बघबाना)
- (261) मियां अब्दुल्लतीफ साहिब बागवानपुरा जिला लाहौर
- (262) हाजी मुंशी शम्सुद्दीन साहिब क्लर्क एक्जामिनर आफ्रिस लाहौर
- (263) मियां नबीबख्श साहिब, मुहल्ला कुतुबुद्दीन रावलपिण्डी क्लर्क एक्जामिनर आफ्रिस लाहौर
- (264) मियां पीरबख्श साहिब खोजा, मखड जिला रावलपिण्डी
- (265) चौधरी मुहम्मद सईद साहिब मखड जिला रावलपिण्डी
- (266) मुंशी मुहम्मद मकबूल साहिब मीरमुंशी पल्टन न.30 रावलपिण्डी
- (267) साहिबजादा सिराजुलहक जमाली नोमानी साहिब सरसावा जिला सहारनपुर
- (268) हाफिज गुलाम रसूल साहिब सौदागर वजीराबाद जिला गुजरांवाला
- (269) मियां मुहम्मदजान साहिब मुलाजिम राजा अमर सिंह, वजीराबाद, जिला गुजरांवाला
- (270) शेख नबी बख्श साहिब वजीराबाद, जिला गुजरांवाला
- (271) खलीफा नूरुद्दीन साहिब जम्मू
- (272) मियां अल्लाहदित्ता साहिब जम्मू
- (273) सय्यद मुहम्मद शाह साहिब जम्मू
- (274) मौलवी ताज मुहम्मद साहिब सैरबांदी जम्मू
- (275) मुंशी अब्दुरहीम साहिब सब ओवरसीयर श्रीनगर (जम्मू)
- (276) मुंशी अब्दुरहीम साहिब ओवरसीयर कश्मीर (जम्मू)
- (277) मिस्त्री उमर साहिब (जम्मू)
- (278) मुंशी नवाब खान साहिब (जम्मू)
- (279) मुंशी मुहम्मद शरीफ साहिब नगियाल रियासत जम्मू
- (280) मौलवी अन्वर हुसैन खान साहिब शाहबाद जिला हरदोई

- (281) शेख नूर अहमद साहिब प्रबन्धक रियाज हिन्द अमृतसर
- (282) मियां जहूर अहमद पुत्र नूर अहमद अमृतसर
- (283) शेख अब्दुल क्रय्यूम कानून विद् अमृतसर
- (284) मौलवी करीमुद्दीन साहिब नौ मुस्लिम कटरा आहलूवालिया अमृतसर
- (285) मौलवी इनायतुल्लाह साहिब हकीम कटरा आहलूवालिया अमृतसर
- (286) मुंशी अब्दुर्रहमान साहिब कटरा करम सिंह अमृतसर
- (287) चौधरी मुहम्मदी साहिब कटरा आहलूवालिया अमृतसर
- (288) मियां गुलाम कादिर साहिब इलाका बन्द अमृतसर
- (289) मियां इमामुद्दीन साहिब गुरू बाजार अमृतसर
- (290) बाबू मुहकमुद्दीन साहिब मुख्तार अदालत अमृतसर
- (291) मिस्त्री कुतुबुद्दीन खान साहिब डयोढ़ी कर्मों अमृतसर
- (292) मौलवी अब्दुल लतीफ साहिब मदरसा मुहम्मदी कटड़ा मोतीराम अमृतसर
- (293) मियां मुहम्मद इब्राहीम साहिब कटरा मोतीराम अमृतसर
- (294) चौधरी शाह मुहम्मद साहिब जमींदार रामदीवाली जिला अमृतसर
- (295) मियां दीन मुहम्मद साहिब भवीवाल जिला अमृतसर
- (296) मियां फ़तुद्दीन साहिब रामदीवाली जिला अमृतसर
- (297) सय्यद सिकन्दर शाह साहिब इमाम मस्जिद रामदीवाली जिला अमृतसर
- (298) मियां बूटा साहिब ओलीवाला जिला अमृतसर
- (299) शेख अब्दुल्लाह साहिब स्टूडेंट-अलीगढ़
- (300) शेख हामिद अली खान साहिब मेडीकल स्टूडेंट अलीगढ़
- (301) जनाब खान साहिब मुहम्मद अली खान साहिब रईस मालेरकोटला
- (302) शेख वली मुहम्मद साहिब, शाहबाद, अहलकार खान साहिब मौसूफ़
- (303) शेख फ़ज़ल मुहम्मद साहिब शाहबाद मुलाजिम खान साहिब. मोहम्मद जुल्फ़िकार अली साहिब एवं मोहम्मद यूसूफ़ अली खान साहिब
- (304) सय्यद शेरशाह साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (305) मियां सप्रदर अली साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला

- (306) मियां अब्दुल अजीज साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (307) मियां जीवा साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (308) मियां क्रादिर बख्श साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (309) मियां बरकत शाह साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (310) मियां कम्मे खान साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (311) मियां फ़तह मुहम्मद साहिब मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (312) मियां अब्दुल करीम साहिब हज्जाम मुलाजिम खान साहिब मालेरकोटला
- (313) मियां अब्दुल जलील खान साहिब शाहजहाँबाद मालेरकोटला
- (314) मियां हामिद अली साहिब बरेली
- (315) मुंशी अली गौहर खान साहिब, जालन्धर
- (316) मुंशी रुस्तम अली खान साहिब डिप्टी इन्स्पेक्टर पुलिस रेलवे मदारां ज़िला जालंधर
- (317) मौलवी अहमद जान साहिब जालंधर शहर टीचर ज़िला गुजरांवाला
- (318) मियां वजीर साहिब ठेकेदार खेरू, रियासत नाभा
- (319) मौलवी शेख अहमद साहिब वाइज सरहिन्द रियासत पटियाला, निवासी बटाला
- (320) मियां मुहम्मद साहिब पुत्र अब्दुल्लाह साहिब शेरपुर ज़िला फीरोज़पुर, वर्तमान निवासी भैरह
- (321) सय्यद मेराजुद्दीन साहिब बटाला
- (322) मियां जान मुहम्मद साहिब विद्यार्थी बटाला
- (323) मौलवी वजीरुद्दीन साहिब मुकेरियां, ज़िला होशियारपुर
- (324) चौधरी करीम बख्श साहिब मुकेरियां ज़िला होशियारपुर
- (325) गुलाम हुसैन साहिब मुकेरियां ज़िला होशियारपुर
- (326) मियां मीरां बख्श साहिब मुकेरियां ज़िला होशियारपुर
- (327) मियां गुलाम रसूल साहिब मुकेरियां ज़िला होशियारपुर

पाठकों के ध्यान-योग्य

इस बात को समझने के लिए कि मनुष्य अपने षडयंत्रों से खुदा तआला के कार्यों को रोक नहीं सकता। यह उदाहरण अत्यन्त संतोषजनक है कि गत वर्ष जब मियां बटालवी साहिब का कुफ्र का फ़त्वा अभी तैयार नहीं हुआ था और न उन्होंने कुछ कठिन परिश्रम-व-प्रयास एवं दौड़ धूप के साथ इस खाकसार को काफ़िर घोषित करने के लिए ध्यान दिया था केवल पचहत्तर दोस्त और निष्ठावान जल्से पर क्रादियान आए थे, किन्तु अब जबकि फ़त्वा तैयार हो गया और बटालवी साहिब ने नाखूनों तक जोर लगाया तथा स्वयं सैकड़ों कठिनाइयों से गुज़र कर हर जगह पहुंचकर और सफर के प्रतिदिन के कष्टों से व्यथित हो कर अपने सहपंथी उलेमा से इस फ़त्वे पर मुहरे लगवाईं। वह और उनके समान आचार-विचार रखने वाले उलेमा बड़े गर्व एवं खुशी से इस बात के मुद्दई हुए कि जैसे अब उन्होंने इस खुदाई सिलसिले की उन्नति में बड़ी-बड़ी रोकें डाल दी हैं तो इस सालाना जल्से में पचहत्तर लोगों के स्थान पर तीन सौ सत्ताईस लोग जल्से में सम्मिलित हुए। और ऐसे लोग भी पधारे जिन्होंने तौबा कर के बैअत की। अब विचार करना चाहिए कि क्या यह खुदा तआला की महान कुदरतों का एक निशान नहीं कि बटालवी साहिब और उनके समान विचारधारा रखने वाले उलेमा की कोशिशों का उल्टा परिणाम निकला और वे सब कोशिशों बर्बाद हो गईं। क्या यह खुदा तआला का कार्य नहीं कि मियां बटालवी के पंजाब और हिन्दुस्तान में फिरते-फिरते पैर भी घिस गए परन्तु अनन्तः खुदा तआला उन्हें दिखा दिया उसके इरादे मनुष्यों के इरादों पर कैसे विजयी हैं।

وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (यूसुफ़ - 12/22)

इस वर्ष में खुदा तआला ने दो निशान प्रकट किए। एक बटालवी का अपनी कोशिश में असफल रहना। दूसरे उस भविष्यवाणी के पूरा होने का निशान जो 'नूर अफ़शां' 10 मई 1888 ई.में प्रकाशित हुई थी।

अब भी उचित है कि बटालवी साहिब और उन के सहपंथी रुक जाएं और

खुदा तआला से लड़ाई न करें।

والسلام على من اتبع الهدى

रियाज़ हिन्द प्रेस क़ादियान से प्रकाशित

आवश्यक विज्ञापन

समस्त निष्ठावान और इस्लाम की भलाई चाहने वाले लोगों की सेवा में सलाम मस्नून के पश्चात् स्पष्ट हो कि जल्सा सालाना के अवसर पर जो क़ादियान में 27,28,29 दिसम्बर 1892 ई. को आयोजित हुआ उसमें कुछ निष्ठावान दोस्तों की प्रेरणा पर निर्णय हुआ कि चूंकि प्रेस को हमेशा शिकायत रहती है इसलिए प्रेस के बारे में एक प्रबंध किया जाना आवश्यक है जिसमें इस्लाम के समर्थन में पुस्तकों के अतिरिक्त महीने में दो बार एक अख़बार भी प्रकाशित हुआ करेगा, जिसमें पवित्र कुर्आन की कुछ-कुछ आयतों की तफ़्सीर और इस्लाम के विरोधियों इत्यादि के उत्तर दर्ज हुआ करेंगे। अतः उपस्थित लोगों ने नितान्त निष्ठा एवं सच्चाई के साथ इस प्रस्ताव को पसन्द किया तथा समस्त लोगों की इच्छानुसार अनुमान लगाया गया। अनुमानतः राशि लगभग? मासिक तय हुई। इस पर प्रत्येक मुख्तस ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार हार्दिक इच्छा से चन्दा लिखवाया, जिसकी सूची (List) निम्नलिखित है इस प्रस्ताव से पूर्व बहुत से सम्माननीय दोस्त जा चुके थे। इस कल्याणकारी कार्य (कारेख़ैर) में सम्मिलित नहीं हो सके। आशा है कि सच्चे, वफ़ादार और दिखावा न करने वाले निष्ठावान दोस्त इस नेक कार्य में अवश्य सम्मिलित होकर दोनों जहान (लोको) के सौभाग्य पात्र होंगे और अति शीघ्र अपने चन्दे की राशि के बारे में सूचित करेंगे। किन्तु हज़रत अब्दुस फ़रमाते हैं कि कोई साहिब विवशतावश चन्दा न लिखवाएं बल्कि अपनी खुशी से यथाशक्ति लिखवाएं।

विज्ञापनदाता ★ - मिर्ज़ा खुदा बख़्श अतालीक़ नवाब मुहम्मद अली खान साहिब रईस मालेरकोटला ज़िला-लुधियाना सेक्रेटरी

★ **नोट** - समस्त सदस्यों पर स्पष्ट रहे कि इस बारे में सभी पत्र-व्यवहार ख़ाक़सार के नाम पर होना चाहिए।

चन्दा देने वालों की सूची तथा चन्दे की राशि जो जल्सा 29 दिसम्बर 1892 ई. क़ादियान के अवसर पर लिखी गई

क्रमांक	नाम	मासिक	वार्षिक	प्राप्ति
(1)	जनाब हकीम मुहम्मद अहसन साहिब	.	٥	٥
(2)	जनाब खलीफ़ा नूरुद्दीन साहिब	.	٥	٥
(3)	जनाब पीर सिराजुल हक़ साहिब	.	٥	٥
(4)	मुंशी हाशिम अली साहिब पटवारी-सन्नौरी	٥	٥	٥
(5)	जनाब मीर नासिर नवाब साहिब	٥	٥	٥
(6)	जनाब शेख़ रहमतुल्लाह साहिब गुजराती	.	٥	٥
(7)	मियां अब्दुर्रहमान साहिब सन्नौरी	٥	٥	٥
(8)	मुंशी इब्राहीम साहिब सन्नौरी टीचर	٥	٥	٥
(9)	सय्यद मुहम्मद शाह साहिब ठेकेदार जम्मू	.	٥	٥
(10)	सय्यद हामिद शाह साहिब सियालकोटी	.	٥	٥
(11)	हाफ़िज़ मुहम्मद साहिब पेशावरी	٥	٥	٥
(12)	सय्यद अब्दुल हादी साहिब माछी बाड़ा	.	٥	٥
(13)	डॉ. अब्दुल हकीम ख़ान साहिब मैडीकल कालेज लाहौर	.	٥	٥
(14)	मौलवी निज़ामुद्दीन साहिब रंगपुरी	.	٥	٥
(15)	मियां शादी ख़ान साहिब कर्मचारी राजा अमर सिंह साहिब बहादुर	.	٥	٥
(16)	मिर्जा ख़ुदा बख़्श मालेरकोटला	.	٥	٥
(17)	मौलवी गुलाम हसन साहिब पेशावरी	.	٥	٥
(18)	सय्यद ख़सीलत अली साहिब डिप्टी इन्स्पेक्टर पुलिस	.	٥	٥
(19)	क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब क़ाज़ी कोटी	.	٥	٥
(20)	मौलवी कुतुबुद्दीन साहिब बद्दो मल्हीवी	.	٥	٥
(21)	सय्यद अमीर अली शाह साहिब सरजेण्ट पुलिस	.	٥	٥

(22) मौलवी मुहम्मद यूसुफ साहिब सन्नौरी	.	12	12
(23) शेख अब्दुस्समद साहिब सन्नौरी	12	12	12
(24) मुंशी अहमद बख्श साहिब सन्नौरी पटवारी तहसील बांगर	12	12	~12/1
(25) हाफिज अजीम बख्श साहिब इलाका पटियाला	12	12	~12/1
(26) मियां अब्दुल करीम साहिब इलाका पटियाला	12	12	~12/1
(27) सरफराज खान साहिब नम्बरदार बद्दोमल्ही	12	12	12
(28) मियां अल्लाहदित्ता साहिब सियालकोटी	.	12	12
(29) शाहजादा अब्दुल मजीद साहिब लुधियानवी	12	12	12
(30) हाफिज नूर अहमद साहिब सौदागर लुधियानवी	12	12	12
(31) शेख अब्दुल हक साहिब लुधियानवी	12	12	12
(32) मुंशी नबी बख्श साहिब कलर्क एक्जामिनर आफिस लाहौर	.	12	12
(33) मुंशी ताजुद्दीन साहिब अकाउन्टेण्ट एक्जामिनर आफिस लाहौर	.	12	12
(34) हाफिज फजल अहमद साहिब कलर्क एक्जामिनर आफिस लाहौर	.	12	12
(35) मौलवी मुफ्ती गुलाम जैलानी साहिब टीचर कहरोनूह	.	12	~12/1
(36) मौलवी अब्दुल क्रादिर साहिब टीचर जमालपुर, जिला लुधियाना	12	12	~12/1
(37) मौलवी कुदरतुल्लाह साहिब बटालवी	12	12	~12/1
(38) बाबू गुलाम मुहम्मद साहिब सियालकोटी	.	12	12
(39) महर अब्दुल अजीज साहिब उर्फ महर नबी बख्श साहिब बटालवी	.	12	12
(40) मुंशी निजामुद्दीन साहिब खोजा जेहलमी	12	12	~12/1
(41) मुंशी अब्दुल मजीद साहिब स्टूडेंट वेटीनरी स्कूल लाहौर	.	12	12
(42) शेख चिरागुद्दीन साहिब निवासी थह गुलामनबी, जिला गुरदासपुर	12	12	12
(43) मुंशी करम इलाही कन्स्टेबल पुलिस लुधियाना	.	12	12
(44) मुंशी करम इलाही साहिब टीचर मदरसा नुसरतुल इस्लाम लाहौर	.	12	~12/1
(45) मियां उमरा निवासी जमालपुर, जिला-लुधियाना	12	12	~12/1

(46) मियां खैरा नम्बरदार जमालपुर, जिला लुधियाना	✓	✓	~४/१
(47) मौलवी मुबारक अली साहिब सियालकोटी	.	✓	✓
(48) मुंशी फ़य्याज़ अली साहिब कपूरथलवी	.	✓	✓
(49) मुंशी हबीबुर्हमान साहिब	.	✓	✓
(50) मुंशी मुहम्मद रोड़ा साहिब	✓	✓	✓
(51) मुंशी अली गौहर साहिब जालंधरी	✓	✓	✓
(52) मुंशी अब्दुर्हमान साहिब कपूरथलवी	✓	✓	✓
(53) मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब कपूरथलवी	✓	✓	~४/४
(54) हकीम फतह मुहम्मद साहिब कपूरथलवी	✓	✓	✓
(55) मियां रोशनदीन साहिब कपूरथलवी	✓	✓	✓
(56) मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी	.	✓	✓
(57) मुंशी मुहम्मद ख़ान साहिब कपूरथलवी	.	✓	✓
(58) मिर्ज़ा सफ़्दर अली सेवक नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब मालेरकोट	✓	✓	~४/४
(59) मिर्ज़ा इस्माईल बैग साहिब क़ादियान, जिला गुरदासपुर	.	✓	~४/१
(60) हाफ़िज़ मुहम्मद अली साहिब कपूरथलवी	✓	✓	✓
(61) मुंशी अल्लाह बख़्श साहिब सियालकोटी	✓	✓	✓
(62) मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब कर्मचारी दफ़्तर नहर अंबाला (निवासी क़ासिमजान की गली-देहली)	✓	✓	✓
(63) मुंशी इब्राहीम साहिब पटवारी सन्तौर	✓	✓	~४/४
(64) मुंशी गुलाम कादिर साहिब पटवारी गहनवां तहसील सरहिन्द	✓	✓	~४/१
(65) मियां जमालदीन साहिब निवासी सेखवां	✓	✓	✓
(66) मिस्त्री उमर बख़्श साहिब निवासी जलालपुर जट्टां नज़ील जम्मू	.	✓	~४/१३
(67) मुंशी गुलाबदीन साहिब टीचर गर्ल्स स्कूल रोहतास जिला-जेहलम	.	✓	✓
(68) मियां फ़ज़ल करीम साहिब अत्तार निवासी सियालकोट	.	✓	~४/१
(69) शेख़ इमामुद्दीन साहिब निवासी नौशहरा, जिला-सियालकोट	✓	✓	✓

- (70) मुंशी गुलाम कादिर साहिब फसीह सियालकोटी . 6
- (71) मियां अल्लाहदित्ता साहिब निवासी रोहतास जिला जेहलम . 1/1
- (72) मियां नूर अहमद साहिब निवासी खारा, जिला-गुरदासपुर . 1/1
- (73) मियां मुहम्मद टपगर, निवासी कटड़ा आहलूवालिया, अमृतसर . 1/1
- (74) मियां गुलाम हुसैन साहिब निवासी रोहतास जिला जेहलम . 1/1
- (75) मियां अता इलाही साहिब जमींदार गौसगढ़ रियासत पटियाला . 1/1
- (76) बाबू मुहकमुद्दीन साहिब मुख्तार अमृतसर . 1/1
- (77) मियां माहिया साहिब जमींदार गौसगढ़ रियासत पटियाला . 1/1
- (78) मुंशी अब्दुल्लाह साहिब पटवारी गौसगढ़ पटियाला . 1/1
- (79) हकीम मुहम्मद अशरफ साहिब खतीब बटाला . 1/1
- (80) मौलवी ताज मुहम्मद साहिब इलाका लुधियाना . 1/1
- (81) मियां अमीरुद्दीन साहिब निवासी जस्सोवाल, जिला लुधियाना . 1/1
- (82) मियां नूर मुहम्मद साहिब जमींदार निवासी गौसगढ़ रियासत पटियाला . 1/1
- (83) मियां मुहम्मदी साहिब जमींदार गौसगढ़ रियासत पटियाला . 1/1
- (84) मियां शहजादा साहिब जमींदार गौसगढ़ रियासत पटियाला . 1/1
- (85) मियां करम इलाही साहिब पुत्र मादा गौसगढ़ . 1/1
- (86) मियां शाह मुहम्मद साहिब निवासी राम जवाली मुसलमान थाना-कत्थूनगल . 1/1
- (87) चौधरी मुहम्मद सुलतान साहिब मੈਂਬਰ कमेटी सियालकोट . 1/1
- (88) सय्यद मुहम्मद सईद साहिब खिड़की फ़ारश खाना निवासी देहली . 1/1
- (89) मियां इस्माईल साहिब निवासी-चमारो रियासत पटियाला . 1/1
- (90) हकीम मुहम्मद शाह साहिब सियालकोटी . 1/1
- (91) हाफ़िज़ अब्दुर्रहमान साहिब अमृतसरी वर्तमान निवासी बटाला . 1/1
- (92) हकीम मुहम्मद अमीन साहिब बटालवी . 1/1
- (93) शेख नूर अहमद साहिब मालिक रियाज हिन्द प्रेस . 1/1

मित्र लोगों के ध्यान देने योग्य

यद्यपि पुनः याद कराने की आवश्यकता नहीं थी परन्तु चूंकि दिल में धार्मिक सेवा सम्पन्न करने के लिए बहुत बेचैनी है। इसलिए पुनः ये कुछ पंक्तियां जोर देते हुए लिखता हूं -

हे मुख़्लिसों की जमाअत! ख़ुदा तआला आपके साथ हो। हमें इस समय समस्त क्रौमों के साथ मुकाबले का सामना है और हम ख़ुदा तआला से उम्मीद रखते हैं कि यदि हम हिम्मत न हारें और अपने पूरे दिल, पूरे जोर और पूर्ण ध्यानपूर्वक इस्लाम की सेवा में व्यस्त हों तो विजय हमारी होगी। अतः जहां तक संभव हो इस कार्य के लिए प्रयास करो। हमें इस समय तीन प्रकार के समुह की आवश्यकता है जिस पर हमारे धार्मिक मआरिफ़, वास्तविकताओं तथा प्रचार संबंधी कार्य का समस्त भार है। **प्रथम** - यह कि हमारे पास कम से कम दो प्रेस हों, **द्वितीय** - एक कापी लिखने वाला सुलेखक। **तृतीय** - कागज़। इन तीनों खर्चों के लिए ढ़ाई सौ रुपए माहवार का अनुमान लगाया गया है। अब चाहिए कि प्रत्येक दोस्त अपनी-अपनी हिम्मत तथा सामर्थ्य के अनुसार बहुत जल्द अविलम्ब (बिना देर किए) इस चन्दे में भाग ले। और यह चन्दा हमेशा मासिक तौर पर एक निश्चित तिथि पर पहुंच जाना चाहिए। व्यावहारिक तौर पर यह प्रस्ताव हुआ है कि **बराहीन** (अहमदिया) का शेष भाग और एक **अख़बार** जारी हो और भविष्य में जो-जो आवश्यकताएं सामने आएंगी उनके अनुसार समय-समय पर पत्रिकाएं निकलती रहेंगी। चूंकि यह समस्त कार्यवाही चन्दे पर निर्भर है, इसलिए इस बात को पहले सोच लेना चाहिए कि अपनी ओर से उतना चन्दा निर्धारित करें जो सुविधा पूर्वक हर माह पहुंच सके। हे धर्म के बहादुरो! प्रयास करो कि यह प्रयास का समय है। अपने दिलों को धर्म की हमदर्दी के लिए जोश में लाओ कि यही जोश दिखाने के दिन हैं। अब तुम ख़ुदा तआला को किसी अन्य कार्य से ऐसा प्रसन्न नहीं कर सकते जैसा कि धर्म की हमदर्दी से। इसलिए जागो और उठो और सतर्क हो जाओ और धर्म की हमदर्दी के लिए वह क्रदम उठाओ कि फ़रिश्ते भी आकाश पर

कहें- "अल्लाह तुम्हें उत्तम प्रतिफल दे।" इस से शोकाकुल मत हो कि लोग तुम्हें काफिर कहते हैं। तुम अपना इस्लाम खुदा तआला को दिखाओ और इतने झुको कि बस न्योछावर ही जी जाओ।

- 1- دوستانِ خود را آثارِ حضرت جانان کنید در ره آن یار جانی جان و دل قربان کنید
- 2- آن دل خوش باش را اندر جہاں جوید خوشی از پئے دین محمد کلبہ احزاں کنید
- 3- از تعیش با بروں آسید اے مردانِ حق خوشترن را از پئے اسلام سرگردان کنید

अनुवाद :

1. हो दोस्तो! स्वयं को वास्तविक प्रियतम पर कुर्बान कर दो और उस प्राण से प्रिय दोस्त के मार्ग में जान-व-दिल न्योछावर कर दो।
2. इस आराम प्रिय दिल को जो इस संसार में खुशियां ढूंढता है मुहम्मद के धर्म के लिए शोक का घर बना दो।
3. हे मर्दाने खुदा! (खुदा के बहादुरो) भोग-विलास का जीवन त्याग दो और अब स्वयं को इस्लाम के लिए उद्विग्न कर दो।

فَمَنْ تَابَ مِنْ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जल्सा सालाना क्रादियान, ज़िला गुरदासपुर दिनांक 27 दिसम्बर 1892 ई. का विवरण जो समय के मुजद्दिद, युग के मसीह जनाब मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब (अल्लाह तआला की सलामती हो आप पर) के निवास स्थान पर हुआ और उस पर खाकसार की राय जो आदरणीय मिर्ज़ा साहिब से मुलाक़ात (भेंट) और जल्सा एवं उसमें सम्मिलित होने वाले लोगों को देखने के बाद बनी

मिर्ज़ा साहिब ने मुझे भी इसके बावजूद कि उन्हें भली भांति ज्ञात था कि मैं उनका विरोधी हूँ न केवल विरोधी बल्कि बुरा कहने वाला भी और यह मुझे से दो-तीन बार घटित हो चुका है। जल्से पर बुलाया और कुछ पत्र जिनमें एक

रजिस्टर्ड पत्र भी था भेजे। यद्यपि इस से पूर्व अनभिज्ञता और विरोध के कारण मेरा जाने का इरादा न था, परन्तु मिर्जा साहिब के बारम्बार लिखने से मेरे दिल में एक प्रेरणा ने जन्म लिया। यदि मिर्जा साहिब इतनी आत्मीयतया से न लिखते तो मैं हरगिज़ न जाता और वंचित रहता। किन्तु यह उन्हीं का हौंसला था। आजकल के मौलवी तो अपने सगे बाप से भी इस आत्मीयता और सम्मानपूर्वक व्यवहार नहीं करते। मैं 27 तारीख को दोपहर से पहले क्रादियान में पहुंचा। उस समय मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब मिर्जा साहिब के समर्थन में वर्णन कर रहे थे और वर्णन समाप्त होने के निकट था। अफ़सोस कि मैंने पूरा नहीं सुना। लोगों से सुना कि बहुत उत्तम वर्णन था। फिर हामिद शाह साहिब ने मिर्जा साहिब की सच्चाई और प्रशंसा में अपने अश्आर पढ़े। परन्तु चूंकि मुझे अभी तक दिलचस्पी नहीं थी और मेरा दिल मैला था। कुछ शौक्र और प्रेम से नहीं सुना, परन्तु अश्आर उत्तम थे। अल्लाह तआला लेखक को अच्छा प्रतिफल दे।

जब मैं मिर्जा साहिब से मिला और उन्होंने शिष्टाचार पूर्वक व्यवहार किया तो मेरा दिल नर्म हो गया मानो मिर्जा साहिब की नज़र सुरमे की सलाई थी जिस से मेरे दिल की आंखों से कड़वाहट की धूल छट गई और क्रोध का पानी सूखने लगा और कुछ कुछ धुंधली सी सच्चाई दिखाई देनी शुरू हुई। और धीरे-धीरे अंदरूनी नज़र ठीक हो गई। मिर्जा साहिब के अतिरिक्त इस जल्से में कई भाई ऐसे थे जिन्हें मैं तिरस्कार और शत्रुतापूर्वक देखता था अब उनको प्रेम और मुहब्बत से देखने लगा और यह हाल हुआ कि जल्से में शामिल समस्त लोगों में से जो मिर्जा साहिब के अधिक प्रेमी थे वे मुझे भी अधिक प्रिय मालूम होने लगे। अस्त्र के बाद मिर्जा साहिब ने कुछ बयान किया, जिसके सुनने से मेरे समस्त सन्देह दूर हो गए और आंखें खुल गईं। दूसरे दिन प्रातः काल एक अमृतसरी वकील साहिब ने अपना विचित्र किस्सा सुनाया जिस से मिर्जा साहिब की उच्च श्रेणी की करामत सिद्ध हुई। जिस का खुलासा यह है कि वकील साहिब पहले सुन्नत जमात मुसलमान थे। जब जवान हुए, प्रचलित विद्या का अध्ययन किया तो दिल में धार्मिक ज्ञान से अनभिज्ञता के कारण और समय

के उलेमा तथा युग के पीरों के इस्लामी आदेशों का पालन न करने से सन्देह पैदा हुए और कहीं से सन्तोषजनक उत्तर न मिलने के कारण कई बार धर्म पर परिवर्तन किया। सुन्नी से शिया बने। वहां तबर्बाज़ी और ताज़िया साज़ी (ताज़ियों का निर्माण) के अतिरिक्त कुछ दिखाई न दिया। आर्य हुए। कुछ दिन वहां का आनन्द लिया परन्तु अच्छा न लगा। ब्रह्मो समाज में सम्मिलित हुए। उनका ढंग अपनाया परन्तु वहां भी मज़ा न पाया। नेचरी बने परन्तु आन्तरिक शुद्धता या ख़ुदा का प्रेम कुछ नूरानियत (प्रकाश) कहीं भी दिखाई नहीं दी। अन्ततः मिर्ज़ा साहिब से मिले और बहुत बेबकाना पेश आए। परन्तु मिर्ज़ा साहिब ने दया एवं हमदर्दी से बात की और ऐसा अच्छा नमूना दिखाया कि अन्ततः इस्लाम पर पूरे-पूरे जम गए और नमाज़ी भी हो गए। अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञाकारी बन गए। अब मिर्ज़ा साहिब के बड़े श्रद्धालु हैं।

रात को मिर्ज़ा साहिब ने नवाब साहिब[☆] के निवास स्थान पर बहुत उत्तम भाषण दिया और अपने कुछ स्वप्न और इल्हाम वर्णन किए। कुछ लोगों ने इल्हाम की सच्चाई की गवाहियां दीं जिन के सामने वे इल्हाम पूरे हुए। एक साहिब ने प्रातः काल, नमाज़ फ़ज़्र के बाद अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी रह. का एक स्वप्न सुनाया जबकि अब्दुल्लाह साहिब ख़ैर दी गांव में विराजमान थे। अब्दुल्लाह साहिब ने फ़रमाया हमने मुहम्मद हुसैन बटालवी को एक लम्बा कुर्ता पहने देखा और वह कुर्ता टुकड़े-टुकड़े हो गया। यह भी अब्दुल्लाह साहिब ने फ़रमाया था कि कुर्ते से अभिप्राय ज्ञान है, आगे पारा-पारा होने से बुद्धिमान स्वयं समझ सकता है कि जैसे ज्ञान का पोल खुल गया। जो आजकल हो रहा और मालूम नहीं कहां तक होगा। जो अल्लाह के वली को दुःख देता है तो मानो अल्लाह तआला से लड़ता है अन्ततः हारेगा। अब मुझ पर भली भांति सिद्ध हुआ कि लोग बड़े अन्याय करने वाले हैं जो बिना मुलाक्रात और वार्तालप

☆ नवाब साहिब मालेर कोटला जो उस समय अपने कुछ लोगों के साथ जलसे में सम्मिलित थे।

के मिर्जा साहिब को दूर बैठे दज्जाल, कज़्ज़ाब बना रहे हैं और उनके कलाम के ग़लत मायने गढ़ रहे हैं या किसी दूसरे की शिक्षा को बिना पूछ-ताछ किए मान लेते हैं, मिर्जा साहिब से उसके संबंध में जांज-पड़ताल नहीं करते। मिर्जा साहिब जो आकाशीय शहद उगल रहे हैं उसे वे शैतानी ज़हर बताते हैं और कठोर हृदय तथा शत्रुता के पर्दे के कारण दूर से ही गुलाब को पेशाब कहते हैं और जन सामान्य अपने विशेष लोगों के अधीन होकर उसके खाने-पीने से रुकते हैं और अपनी सर्वथा हानि करते हैं। सब से अधिक इस ख़ाकसार के पुराने मित्र या पुराने अनुकर्णीय मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी लोगों को मिर्जा साहिब से हटाने और नफ़रत दिलाने में व्यस्त हैं जिनको सर्वप्रथम मिर्जा साहिब से ख़ाकसार ने बदगुमान किया था, जिसके बदले में इस बार उन्होंने मुझे बहकाया और सीधे मार्ग से अलग कर दिया। चलो बराबर हो गए। परन्तु मौलवी साहिब अभी तक उसी बात पर अड़े हैं। अब जो जल्से पर मिर्जा साहिब ने मुझे बुलाया तो मौलवी साहिब को भी एक ख़बरी ने सूचना दी। उन्होंने अपने वकील के द्वारा मुझे पत्र लिखा जिसमें हमदर्द नसीहत करने वाले ने मिर्जा को इतना अधिक बुरा भला लिखा और ऐसे अशिष्ट शब्द कलम से निकाले कि जिन को दोहराते हुए शर्म आती है। मौलवी साहिब ने यह भी ध्यान न रखा कि बुजुर्ग होने के अतिरिक्त मिर्जा साहिब कितने करीब रिश्तेदार हैं फिर मुहब्बत का दावा है। अफ़सोस।

इस जल्से पर तीन सौ अधिक समय और नेक लोग एकत्र थे जिनके चेहरों से मुसलमानी नूर टपक रहा था। अमीर, ग़रीब, नवाब, इंजीनियर, थानेदार, तहसीलदार, ज़मींदार, सौदागर, हकीम हर प्रकार के लोग थे। हां कुछ मौलवी भी थे परन्तु विनम्र मौलवी। मौलवी के साथ मिस्कीन और मुन्कसर शब्द यह मिर्जा साहिब की करामत है कि मिर्जा साहिब से मिलकर मौलवी भी मिस्कीन (विनम्र) बन जाते हैं अन्यथा आजकल मिस्कीन मौलवी तथा बिदअतों से बचने वाला सूफ़ी दुर्लभ समान हैं। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब अपने दिल में विचार करके देखें कि वह मिस्कीनी (विनम्रता) से कहां तक संबंध रखते

हैं? बिल्कुल भी नहीं। उनमें यदि विनम्रता होती तो इतना उपद्रव ही क्यों होता, यह नौबत ही क्यों आती। उनके अनुयायियों को उन से इतना बैर और नफ़रत क्यों होती अधिकतर अहले हदीस उनसे विमुख क्यों हो जाते? यदि मौलवी साहिब मेरे इस बयान को ग़लत समझें तो मैं उन्हीं के सुपुर्द करता हूँ इन्साफ़ और ईमान से अपने दोस्तों की एक लिस्ट तो लिख कर छपवा दें कि जो उन से ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा कि मिर्ज़ा साहिब के मुरीद मिर्ज़ा साहिब से प्रेम रखते हैं। मुझे क्रियाफ़ा (मुखाकृति विज्ञान) से मालूम होता है वह समय निकट है कि जनाब मिर्ज़ा साहिब के चरणों की धूल को प्रतिभाशाली लोग आखों में जगह दें और इकसीर (कीमिया) से उत्तम और तबरूक (प्रसाद) समझें। मिर्ज़ा साहिब के सैकड़ों ऐसे मित्र हैं जो मिर्ज़ा साहिब पर दिल-व-जान से कुर्बान हैं। मतभेद तो दूर, सामने उफ़ तक नहीं करते। सरे तस्लीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आए। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब अधिक नहीं अपने चार-पांच लोग तो ऐसे मित्र बता दें जो पूर्णतः (ख़ुदा के लिए) मौलवी साहिब से प्रेम रखते हों और दिल और जान से फ़िदा हों और अपने माल को मौलवी साहिब पर कुर्बान कर दें और अपने सम्मान को मौलवी साहिब के सम्मान पर न्योछावर करने के लिए तैयार हों। यदि मौलवी साहिब यह कह दें कि सच्चों और नेकों से लोगों को प्रेम नहीं होता बल्कि झूठे और मक्कारों से लोगों को प्रेम होता है तो मैं पूछता हूँ कि सहाबा और अहले बैअत को जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम था या नहीं? वे हज़रत के पूर्ण रूप से आज्ञाकारी थे या उनको मतभेद था? बहुत क़रीब की एक बात स्मरण कराता हूँ कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी जो मेरे और मुहम्मद हुसैन साहिब के पीर-व-मुर्शिद थे उनके मुरीद उन से कितना प्रेम करते थे और कितना उनके आदेशों का पालन करने वाले थे? सुना है कि एक बार उन्होंने अपने एक विशेष मुरीद को कहा कि तुम 'नजद' जो अरब देश में है जाकर मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब के लिखे हुए 'रसाइल-ए-तौहीद' नक़ल कर लाओ। वह मुरीद तुरन्त रवाना हुआ एक पल की भी देर न की। हालांकि रास्ते का ख़र्च

और सवारी भी उसके पास न थी। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब अपने किसी मित्र को बाज़ार से पैसा देकर दही लाने को भी कह दें तो शायद न जाए और यदि जाए तो नाराज़ होकर। और शायद अकेले में लोगों से शिकायत भी करे। बर्बी तफ़ावुते राह अज़ कुज़ा अस्त ता बकुज़ा (अर्थात् कहां से कहां तक का अंतर देखिए)। यह नमूने के तौर पर वर्णन किया गया है। हर सदी में हज़ारों औलिया (जिन पर उनके युग में कुफ़्र के फ़त्वे भी लगते रहे हैं) गुज़रे हैं और कमोबेश उन के मुरीद उनके आज्ञाकारी और जान कुर्बान करने वाले भी हुए हैं। यह परिणाम है नेकों का ख़ुदा के साथ हार्दिक प्रेम का। मिर्ज़ा साहिब को चूंकि अपने मौला से सच्चा प्रेम है इसलिए आकाश से कुबूलियत उतरी है और धीरे-धीरे बावजूद मौलवियों के कट्टर विरोध के सौभाग्यशाली लोगों के दिलों में मिर्ज़ा साहिब का प्रेम उन्नति करता जा रहा है (यद्यपि अबू सईद साहिब नाराज़ ही क्यों न हों) इसके मुकाबले में मौलवी साहिब जो आज माशाअल्लाह पंजाब का सूर्य बने हुए हैं अपने हाल पर विचार करें कि उनके कितने सच्चे प्रेमी हैं और उनके सच्चे दोस्तों का आन्तरिक हाल क्या है। शुरू-शुरू में कहते हैं मौलवी साहिब कभी अच्छे आदमी थे परन्तु अब तो उन्हें दौलत के प्रेम और ज्ञान के गर्व ने सम्मान के आकाश से अपमान की धूल पर गिरा दिया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैह राजिऊन।

अब मौलवी साहिब विचार करें कि ये क्या पत्थर पड़ गए कि मौलवी और विशेष रूप से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से, (जो अपनी समझ में) पंजाब के उलेमा के सरदार हैं, लोगों को इतनी घृणा कि जिसके कारण मौलवी साहिब को लाहौर छोड़ना पड़ा। यदि संयोग से ख़ुदा को एक मानने वालों की जामिअ मस्जिद में लाहौर में चले जाएं तो रंजिश और शर्म के मारे प्रवेश नहीं कर सकते। और मिर्ज़ा साहिब के पास (जो मौलवी साहिब के विचार में काफ़िर बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर और दज्जाल हैं) घर बैठे लाहौर, अमृतसर, पेशावर, कश्मीर, जम्मू, सियालकोट, कपूरथला, लुधियाना, बम्बई, उत्तरी एवं पश्चिमी देश, अवध, मक्का इत्यादि देशों से लोग बोरिया बिस्तर

बांधे चले आते हैं। फिर आने वाले बिदअती नहीं, मुश्रिक नहीं, मूर्ख नहीं, कंगाल नहीं, बल्कि एक खुदा को मानने वाले, अहले हदीस, मौलवी मुफ्ती, पीरजादे, शरीफ़ अमीर, नवाब, वकील, अब थोड़ा विचार करने का स्थान है कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के गिराने और अधिकांश मौलवियों से कुफ़्र के फ़त्वे पर मुहरें लगवाने के बावजूद अल्लाह तआला ने मिर्ज़ा साहिब को कितना चढ़ाया और खुदा की कितनी जनता को ध्यान दिला दिया कि अपना आराम छोड़ कर देश से अलग होकर, रुपया खर्च करके क़ादियान में आकर धरती पर सोते बल्कि रेल में एक-दो रात अवश्य जागे भी होंगे। और कई पैदल चल कर भी उपस्थित हुए। मैंने एक आदमी के मुंह से भी किसी प्रकार की शिकायत नहीं सुनी। मिर्ज़ा साहिब के चारों ओर ऐसे इकट्ठे हो जाते थे जैसे शमा के चारों ओर परवाने। जब मिर्ज़ा साहिब कुछ फ़रमाते थे तो पूरे ध्यान से सुनते थे लगभग चालीस-पचास लोग इस जल्से पर मुरीद हुए। मिर्ज़ा अहमद बेग की मृत्यु की भविष्यवाणी के पूरे होने की बात भी मिर्ज़ा साहिब ने सब लोगों के सामने सुनाई जिसके बारे में 'नूरअफ़शां' ने मिर्ज़ा साहिब को बहुत कुछ बुरा भला कहा था। अब 'नूरअफ़शां' विचार करे कि भविष्यवाणियां इस प्रकार पूरी होती हैं। यह बात मुसलमानों के अतिरिक्त आजकल किसी अन्य धर्मावलम्बी को प्राप्त नहीं। और मुसलमान विशेष तौर पर विरोधीजन विचार करें कि यह क्या अजीब बात है कि काफ़िर, बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर, दज्जाल, मक्कार की भविष्यवाणियां, बावजूद इसके कि अल्लाह तआला पर झूठ का पहाड़ बांध रहा है, अल्लाह तआला पूरी कर दे और (जो अपनी समझ में) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नायब हैं, उनकी बातों में कुछ भी असर न दे तथा उन को ऐसा अपमानित करे कि लाहौर छोड़ कर बटाला में आना पड़े। अफ़सोस, सौ अफ़सोस आजकल के मौलवियों के अंधेपन पर जिनकी आंखों पर ज्ञान के अहंकार के पर्दे पड़े हैं और इसी कारण एक ऐसे खुदा के चुने हुए बन्दे का नाम दज्जाल और काफ़िर रखते हैं जिसे से अल्लाह तआला को ऐसा प्रेम है कि धर्म की सेवा पर नियुक्त कर रखा है और खुदा

का वह बन्दा आयों, ब्रह्म समाज वालों तथा ईसाइयों और नेचरियों से लड़ रहा है। कोई काफ़िर मुकाबले की शक्ति नहीं ला सकता न कोई मौलवी उन्हें काफ़िर, लानती, और दज्जाल बनाने के बावजूद लोगों के दिलों को उनकी ओर से हटा सकता है। खुदा की पनाह, मूसा के असा, और चमकते हुए हाथ को मौलवी लोग अपने विचार में पराजित एवं बदनाम कर रहे हैं। रसूल मक़बूल के नायबों में कोई बरकत, कुछ नूरानियत नहीं रही। इतना भी ढंग नहीं कि अपने कुछ शिष्यों को भी काबू (नियंत्रण) में रख सकें और मुहम्मदी सदाचार का नमूना दिखा कर अपना आशिक्र (आसक्त) बना लें। किसी देश में हिदायत का प्रसार करना और इस्लाम के विरोधियों को पराजित करना तो दूर की बात एक शहर बल्कि एक मुहल्ले को भी ठीक नहीं कर सकते। इसके विपरीत मिर्ज़ा साहिब ने पूरब-पश्चिम इस्लाम के विरोधियों को इस्लाम की दावत दी और ऐसा नीचा कर दिखाया कि कोई मुकाबले पर आने योग्य नहीं रहा। अधिकतर नेचरियों को जो मौलवियों से हरगिज़ सुधार पर नहीं आ सके, तौबा कराई और पंजाब से नेचरियत का प्रभाव बहुत कम कर दिया। अब वही नेचरी हैं जो मुसलमानों जैसी सूरत के भी नहीं थे मिर्ज़ा साहिब से मिलने के बाद मोमिन सीरत (आचरण) हो गए। अधिकारियों, थानेदारों ने रिश्वतें लेना छोड़ दीं, नशेबाज़ों ने नशे त्याग दिए, कई लोगों ने हुक्का पीना छोड़ दिया। मिर्ज़ा साहिब के शिया[☆] मुरीदों ने तबर्[✱] त्याग दिया। सहाबा से प्रेम करने लगे, ताज़िएदारी, मर्सियः पढ़ना छोड़ दिया। कुछ पीरज़ादे जो मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी बल्कि मुहम्मद इस्माईल शहीद को अपना पेशवा और बुजुर्ग समझने लगे। यदि ये तासीरें (प्रभाव) दज्जालों, कज़्ज़ाबों में होती हैं और रसूल मक़बूल के नायब नेक तासीरों से वंचित हैं तो हमें सौ खुशियों के साथ दज्जाली होना स्वीकार है। वृक्ष फलों से ही तो पहचाना जाता है। अल्लाह तआला को भी लोगों ने विशेषताओं से पहचाना, अन्यथा उसका अस्तित्व किसी को दिखाई

☆ अर्थात् कुछ मुरीद मिर्ज़ा साहिब के ऐसे भि हैं जो शिया फ़िरके को मानते हैं।

✱ तबर् - नफ़रत. विमुखता. तीन ख़लीफ़ों से नफ़रत। (अनुवादक)

नहीं देता। किसी स्वस्थ हट्टे-कट्टे का नाम यदि बीमार रख दें तो वास्तव में वह बीमार नहीं हो सकता। इसी प्रकार जो अल्लाह तआला के नज़दीक पवित्र मोमिन है और जिस के दिल में अल्लाह और रसूल का प्रेम है उसे कोई मुनाफ़िक, काफ़िर, दज्जाल इत्यादि नाम दे तो क्या हानि है। सफेद किसी के काला कहने से काला नहीं हो सकता और चमगादड़ की दुश्मनी से सूर्य निन्दा योग्य नहीं। यज़ीद के शासन से हुसैनी गिरोह यद्यपि कष्ट तो पा सकता है परन्तु मिट नहीं सकता। धीरे-धीरे कष्ट सहन करके उन्नति करेगा और करता जाता है। अर्थात् मौलवियों के मार्ग की रोक बनने से मिर्ज़ा साहिब का गिरोह मिट नहीं सकता। बल्कि ऐसा हाल है जैसा दरिया में बांध बांधने से दरिया रुक नहीं सकता। परन्तु कुछ दिन रुका हुआ मालूम होता है। अन्ततः बांध टूटेगा और दरिया अत्यन्त जोर से बहने लगेगा और आस-पास की बस्तियों के विरोधियों को बहा ले जाएगा। आंधी और बादल सूर्य को छुपा नहीं सकते, स्वयं ही कुछ दिनों में यह शोर दूर हो जाएगा और मिर्ज़ा साहिब की सच्चाई का सूर्य चमकता हुआ निकल आएगा। फिर सौभाग्यशाली लोग तो अफसोस करके मिर्ज़ा साहिब से सहमत हो जाएंगे और पहली ग़लती पर पछताएंगे। और मिर्ज़ा साहिब की किशती में जो नूह^अ की किशती के समान है सवार हो जाएंगे परन्तु अभागा अपने मौलवियों के धोखे और झूठ बोलने के पर्वतों पर चढ़ कर प्राण बचाना चाहेंगे परन्तु गुमराही के समुद्र की एक ही लहर में डूब कर समाप्त हो जाएंगे। हे मेरे ख़ुदा! हमें अपनी शरण (पनाह) में रख और पूर्ण समझ प्रदान कर। उम्मत-ए-मुहम्मदी का तू ही निगरान है। पर्दों को उठा दे, सच्चाई को प्रकट कर दे, मुसलमानों को मतभेद से सद्मार्ग पर लगा दे। आमीन। हे समस्त लोकों के रब्ब! दुआ स्वीकार कर।

العلم حجاب الاكبر (अर्थात् ज्ञान जो आँखों का पर्दा बन जाए)
जो प्रसिद्ध कहावत है उसकी सच्चाई आजकल भली भांति प्रकट हो रही है। पहले इस कहावत से मैं सहमत नहीं था, परन्तु अब इस पर पूर्ण विश्वास हो गया। मिर्ज़ा साहिब के जितने विरोधी मौलवी हैं उतना और कोई नहीं बल्कि

दूसरों को तो उलेमा ने ही बहकाया है अन्यथा आज तक हज़ारों लोग बैअत कर लेते। और एक बड़ी भारी भीड़ मिर्ज़ा साहिब के साथ हो जाती, किन्तु विरोध का होना कुछ आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि यदि ऐसा समय जिसमें इस प्रकार के उपद्रव हैं जिसका उदाहरण पहली सदियों में ज्ञात नहीं है न आता तो ऐसा सुधारक भी क्यों पैदा होता। दज्जाल ही के क़त्ल को ईसा का आगमन हुआ है। यदि दज्जाल न होता तो ईसा का आगमन असंभव था और संसार गुमराह न हो जाता तो महदी की क्या आवश्यकता थी। अल्लाह तआला प्रत्येक कार्य को उसके समय पर करता है। हे अल्लाह! तू हमें अपने रसूल की अपने वलियों का प्रेम प्रदान कर तथा अविश्वास और दुविधाओं से सुरक्षित रख। सच्ची के साथ हमें प्रेम दे झूठों से सुरक्षा में रख। हमारे अहं को दूर कर दे और लोभ-लालच से मुक्ति दे। आमीन या रब्बुल आलमीन।

लेखक - नासिर नवाब

दिनांक 2 जनवरी 1893 ई.

**अशआर मौलवी मुहम्मद अब्दुल्लाह खान साहिब
द्वितीय शिक्षक अरबी महिन्दर कालेज पटियाला द्वारा लिखित**

दिल में जिस शख्स के कुछ नूरे सफ़ा होता है
हक़ की वह बात पै सौ जां से फ़िदा होता है

हक़ की जानिब जो वह हर वक़्त झुका होता है
लोम लाईम से न ख़ौफ़ उसको ज़रा होता है

देखने वाले यह कहते हैं कि क्या होता है
उनको कह दो यूँहि फ़ज़ले ख़ुदा होता है।

परिशिष्ट अखबार रियाज़ हिन्द अमृतसर प्रकाशित 1 मार्च 1886 ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अली रसूलिहिलकरीम

1. जानो दिलम फ़िदाए जमाले मुहम्मद अस्त
खाकम निसार कूच -ए- आले मुहम्मद अस्त
2. दीदम बऐने क़ल्बो शुनीदम बगोशे होश
दर हर मकां निदाए जलाले मुहम्मद अस्त
3. ई चश्मए रवां कि बख़ल्के ख़ुदा दिहम
यक क्रतरए ज़ बहरे कमाले मुहम्मद अस्त
4. ई आतिशम ज़ आतिशे मुहरे मुहम्मदीस्त
व ई आबे मन ज़िआब जुलाले मुहम्मद अस्त

- अनुवाद:** 1. मेरी जान और दिल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाल पर फ़िदा हैं और मेरी खाक आल-ए-मुहम्मद के दर पर कुर्बान है।
2. मैंने दिल की आँखों से देखा और अक़ल के कानों से सुना। हर जगह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जलाल (तेज) का चर्चा है।
3. मआरिफ़ (अध्यात्मज्ञान) का ये बहता दरिया जो मैं मख़्लूक-ए-ख़ुदा को दे रहा हूँ यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कमालात (विशेषताओं, गुणों) के समुंद्र में से एक बूंद मात्र है।
4. यह मेरी आग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इश्क़ की आग का एक हिस्सा है और मेरा पानी मुहम्मद सअव. के शुद्ध पानी में से लिया हुआ है।

सामर्थ्यवान रब्ब के निशानों पर आधारित पुस्तक सिराजे मुनीर

यह पुस्तक इस खाकसार (लेखक बराहीन अहमदिया) ने इस उद्देश्य से लिखने की इच्छा की है ताकि इस्लाम की सच्चाई के इन्कार करने वालों और हज़रत ख़ैरुल अनाम अलैहि व आलिही हज़ार-हज़ार सलाम, की रिसालत को झुठलाने वालों की आंखों के सामने एक ऐसा चमकता हुआ चिराग (दीपक) रखा जाए जिसका हर दिशा से चमकते मोती की तरह प्रकाश निकल रहा है और बड़ी-बड़ी भविष्यवाणियों पर जो अभी घटित नहीं हुई आधारित है। अतः महा प्रतापी एवं वैभवशाली दयालु ख़ुदावन्द ने जिसको स्वयं गुप्त रहस्यों को जानता है इस बेकार को कुछ गुप्त भेदों तथा परोक्ष की ख़बरों से सूचित करके भारी बोझ से भार मुक्त किया। वास्तव में उसी का फ़ज़ल (कृपा) है और उसी का काम जिसने विरोधियों और मित्रों की चौतरफ़ा खींचातानी से इस विनीत को छुटकारा प्रदान किया। क्रिस्सा कोतः कर्द वरना दर्दे सर बिसियार बवद (अर्थात्- उसने मामले को संक्षिप्त कर दिया वर्ना बहुत बड़ा सिर दर्द था।

अब यह पुस्तक समाप्त होने के निकट है और ख़ुदा ने चाहा तो कुछ सप्ताह का काम है। ★ इस पुस्तक में तीन प्राकर की भविष्यवाणिया हैं- पहली- वे भविष्यवाणियां जो स्वयं इस विनीत से व्यक्तिगत तौर से संबंध रखती हैं अर्थात् जो कुछ आराम या कष्ट, जीवन या मृत्यु इस खाकसार से संबंधित है या जो कुछ अनुकंपा और ख़ुदा के इनामों का वादा इस खाकसार को दिया गया है वह उन भविष्यवाणियों में लिखा है। दूसरी- वे भविष्यवाणियां जो कुछ दोस्तों या सामान्य तौर पर किसी एक व्यक्ति या मानव जाति से संबंधित हैं और उनमें से अभी कुछ काम शेष है। यदि ख़ुदा तआला ने चाहा तो वह शेष भी तय हो

★ यह पुस्तक कुछ कारणों से अब तक जो कि 25 फरवरी 1893 ई है छप नहीं सकी परन्तु विभिन्न माध्यमों से इसकी कुछ भविष्यवाणियां प्रकाशित होती रही हैं और इन्शाअल्लाह तआला भविष्य में भी प्रकाशित होती रहेंगी। इसी से।

जाएगा। **तीसरी-** वे भविष्यवाणियां जो अन्य धर्मों के पेशवाओं या उपदेशकों या सदस्यों से संबंध रखती हैं और इस प्रकार में हमने केवल बतौर नमूना **आर्यों** के कुछ लोगों और क्रादियान के कुछ हिन्दुओं को लिया है जिन के बारे में भिन्न-भिन्न प्रकार की भविष्यवाणियां हैं। क्योंकि आजकल उन्हीं में नई-नई तेजी और अत्यधिक इन्कार पाया जाता है हमें इस आयोजन पर यह भी ध्यान है कि कृपालु खुदा हमारी उपकारी सरकार को जिसके उपकारों से हमें पूर्णरूप से निश्चतता और आजादी एकान्तवास उपलब्ध है और शान्ति कुंज और समृद्धि प्राप्त है। अत्याचारियों के हाथ से अपनी सुरक्षा और सहायता में रखे और अशुभ रूस को अपनी परेशानियों में कैद, अंधा और ग्रस्त करके हमारी सरकार को विजय एवं सहायता प्रदान करे। तथापि वे खुशखबरियां भी (यदि मिल जाएं) इस सुअवसर पर पुस्तक में दर्ज कर दें इन्शाअल्लाह तआला। और भविष्यवाणियां कोई अधिकार वाली बात नहीं है कि हमेशा और हर हाल में खुशखबरी का मार्ग दर्शन करें। इसलिए हम पूर्ण विजय के साथ अपने मित्रों और विरोधियों की सेवा में निवेदन करते हैं कि यदि वे किसी भविष्यवाणी को अपने बारे में पसन्द न करें (जैसे मृत्यु या किसी अन्य कष्ट के बारे में पाएं) तो इस खाकसार को विवश समझें। विशेष तौर पर वे लोग जो धार्मिक भिन्नता के कारण तथा भेद को न समझने के कारण सुधारणा की ओर बड़ी कठिनाई से लौट सकते हैं। जैसे मुंशी **इन्दरमन** साहिब मुरादाबादी और **पंडित लेखराम** पेशावरी साहिब इत्यादि जिनके प्रारब्ध के संबंध में संभवतः इस पुस्तक में समय और तिथि के साथ कुछ लिखा जाएगा। इन लोगों की सेवा में हम हार्दिक सच्चाई से निवेदन करते हैं कि हम दिल में वास्तव में किसी का अशुभ नहीं चाहते बल्कि हमारा कृपालु खुदा खूब जानता है कि हम सब की भलाई चाहते हैं। और बुराई के स्थान पर भलाई करने के लिए तैयार हैं और मानव जाति की सहानुभूति से हमारा सीना प्रकाशमान एवं आबाद है और हम सबके लिए आराम तथा अमन के अभिलाषी हैं। परन्तु जो बात किसी मित्र या विरोधी के बारे में या स्वयं हमारे बारे में कुछ शोक वाली हो तो हम उसमें पूर्णतया मजबूर और असमर्थ हैं। हां ऐसी बात झूठी

निकलने के बाद जो किसी के दिल दुखी होने का कारण ठहरे हम कठोर भर्त्सना के योग्य बल्कि दण्ड करते हैं और अन्तर्यामी को साक्षी बना कर कहते हैं कि हमारा सीना सर्वथा नेक नीयत से भरपूर है और हमें किसी भी मनुष्य से दुश्मनी नहीं और यद्यपि कोई कुधारणा से कैसी ही गालियों और अपशब्दों का अभ्यास कर रहा है तथा खुदा से न डरते हुए हमें कष्ट दे रहा है हम फिर भी उसके लिए दुआ ही करते हैं कि हे शक्तिमान एवं शक्तिशाली खुदा! उसे समझ दे और हम उसको उसके गन्दे विचार और अपशब्दों में असमर्थ समझते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि अभी उस का माद्दः (तत्व) ऐसा ही है और अभी उसकी समझ एवं दृष्टि इतनी ही है कि जो उच्च वास्तविकताओं तक नहीं पहुंच सकती।

زاهد ظاہر پرست از حال ما آگاہ نیست
در حق ماہر چه گوید جائے بیج اکراہ نیست

(अनुवाद- कोई भी बाहरी तौर पर संन्यासी दिखने वाला व्यक्ति हमारी हालत से अवगत नहीं हो सकता, इसलिए हमारे बारे में तू जो कुछ भी कहे, इसमें बुरा मानने का कोई कारण नहीं है। अनुवादक)

और इस सार्वजनिक दया के बावजूद जो स्वाभाविक तौर पर महान एवं श्रेष्ठतम खुदा ने हमारे अस्तित्व में रखी है। यदि किसी के बारे में कोई बात कठोर या कोई भयावह भविष्यवाणी हम पर इल्हाम के माध्यम से प्रकट हो तो वह मजबूरी की अवस्था है जिसे हम दुखी दिल के साथ अपनी पुस्तक में लिखेंगे। अतः हम पर स्वयं अपने बारे में, अपने कुछ पूर्वजों से संबंधित रिश्तेदारों के बारे में, अपने कुछ मित्रों के बारे में, अपने कुछ फ़िलास्फ़र क्रौमी भाइयों के बारे में जो कि मानो हिन्द के सितारे हैं और एक पंजाबी नस्ल से संबंधित देसी अमीर के बारे में कुछ भयावह ख़बरें जो किसी की परीक्षा और किसी के रिश्तेदारों की मृत्यु तथा किसी की अपनी मृत्यु पर मार्ग दर्शन करती हैं जो इन्शाअल्लाह तआला निर्णय के बाद लिखी जाएंगी, खुदा तआला की ओर से प्रकट हुई हैं। हम हर एक के लिए दुआ करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यदि प्रारब्ध अधर में लटका हुआ हो तो दुआओं से खुदा के फ़ज़ल से टल सकता है। इसीलिए रुजू (लौटने) करने वाले कष्टों

के समय खुदा के मान्य लोगों की रुजू करते हैं और धृष्टताओं एवं गुमराहियों से रुक जाते हैं इसके साथ यदि किसी व्यक्ति पर कोई भविष्यवाणी दुष्कर गुजरे तो वह अधिकार रखते हैं कि 1, मार्च 1886 ई. से या उस तिथि से जो किस की अखबार में पहली बार यह लेख प्रकाशित हो ठीक ठीक दो सप्ताह के अन्दर अपने हस्ताक्षर किए हुए पत्र से मुझे सूचित करें ताकि वह भविष्यवाणी जिस के प्रकटन से वे डरते हैं, पुस्तक में लिखने से पृथक रखी जाए और दिल को कष्ट पहुंचाने का कारण समझ कर किसी को उस की सूचना न दी जाए तथा किसी को उसके प्रकट होने के समय की खबर न दी जाए।

इन हर तीनों प्रकार की भविष्यवाणियों में से जो इन्शाअल्लाह पुस्तक में पूर्ण विस्तार से लिखी जाएंगी। पहली भविष्यवाणी जो स्वयं इस खाकसार से संबंधित है आज 20 फ़रवरी 1889 ई. तदनुसार 15 जमादिउल अब्बल है संक्षेप को ध्यान में रखते हुए इल्हामी वाक्यों को नमूने के तौर पर लिखा जाता है और पूर्ण विवरण के साथ पुस्तक में प्रकाशित होगी अन्शाअल्लाह तआला।

पहली भविष्यवाणी अल्लाह तआला के इल्हाम और उस महा प्रतापी के द्वारा ज्ञान कराने, दयालु-कृपालु महानतम एवं सर्वश्रेष्ठ खुदा ने जो प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है (महा वैभवशाली और तेजस्वी) मुझको अपने इल्हाम से सम्बोधित करके फ़रमाया कि - मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझ से मांगा। अतः मैंने तेरी तज़र्रूआत (विनय एवं गिड़गिड़ाना) को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत (दया) से स्वीकार किया और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिए मुबारक (शुभ) कर दिया। अतः कुदरत और रहमत और सानिध्य का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और इहसान (कृपा एवं उपकार) का निशान तुझे प्रदान किया जाता है और विजय और कामयाबी की कुंजी तुझे मिलती है। हे मुज़फ़्फ़र! तुझ पर सलाम। खुदा ने यह कहा ताकि वे जो जीवन के अभिलाषी मौत के पंजे से मुक्ति पाएं और वे जो कब्रों में दबे पड़े हैं बाहर आए ताकि इस्लाम धर्म का सम्मान और खुदा के कलाम की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि

सच्चाई अपनी पूरी बरकतों के साथ आ जाए औ झूठ अपने सम्पूर्ण अमंगलों के साथ भाग जाए और ताकि लोग समझें कि मैं शक्तिमान हूं जो चाहता हूं करता हूं और ताकि वे विश्वास लाएं कि मैं तेरे साथ हूं और ताकि उन्हें जो खुदा के अस्तित्व पर ईमान नहीं लाते और खुदा तथा खुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन्कार और झूठ की दृष्टि से देखते हैं एक खुली निशानी मिले तथा दोषियों का मार्ग प्रकट हो जाए। अतः तुझे खुश ख़बरी हो कि एक यशस्वी और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक पवित्र गुलाम (लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही नस्ल और सन्तान होगा सुन्दर पवित्र लड़का तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम **अन्मवाइल** और **बशीर** भी है उसको मुकद्दस रूह दी गई है और वह गुनाह से पवित्र है वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आकाश से आता है, उसके साथ फ़ज़ल (कृपा) है जो उसके आने के साथ आएगा। वह वैभवशाली, महान और समृद्धशाली होगा। वह संसार में आएगा और अपने मसीही नफ़्स और रूहुल हक़ की बरकत से बहुतों को रोगों से ठीक करेगा। वह खुदा का कलिमा है क्योंकि खुदा की रहमत और स्वाभिमान ने उसे अपने कलिम-ए-तम्जीद (यशोगान) से भेजा है। वह अत्यन्त प्रतिभावान एवं विवेकशील होगा और दिल का सहनशील तथा भौतिक एवं आध्यात्मिक विद्याओं (ज्ञानों) से भरा जाएगा और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके मायने समझ में नहीं आए) सोमवार है, मुबारक सोमवार प्यारा बेटा, प्रथम और अन्तिम का द्योतक, नज़ला मिनस्समाए, जिसका उतरना बहुत मुबारक और खुदा के प्रताप का कारण होगा। नूर आता है नूर जिसे खुदा ने अनुमति के इत्र से सुगंधित किया। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और खुदा का साया उसके सिर पर होगा, वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और कैदियों की आज्ञादी का कारण होगा और पृथ्वी के किनारों तक ख्याति पाएगा और क्रौमें उस से बरकत पाएंगी तब अपने नफ़सी नुक्त-ए-आसमान की ओर उठाया जाएगा। व काना अमरन मक्जिय्यः।

फिर कृपालु और महा वैभवशाली खुदा ने मुझे खुशखबरी दे कर कहा कि तेरा घर बरकत से भरेगा और मैं तुझ पर अपनी नेमतें पूरी करूंगा और मुबारक औरतों से जिनमें से तू कुछ को इसके बाद पाएगा तेरी नस्ल बहुत होगी और मैं तेरी नस्ल को बहुत बढ़ाऊंगा तथा बरकत दूंगा परन्तु उनमें से कुछ कम आयु में मृत्यु को भी प्राप्त होंगे और तेरी नस्ल बड़ी अधिकता से देशों में फैल जाएगी और हर एक शाखा तेरे दादा की ओर से भाइयों की काटी जाएगी और वे जल्द निःसंतान रह कर समाप्त हो जाएगी यदि वे तौबः न करेंगे तो खुदा उन पर विपत्ति पर विपत्ति उतारेगा, यहां तक कि वे मिट जाएंगे, उनके घर विधवाओं से भर जाएंगे और उनकी दीवारों पर प्रकोप उतरेगा, किन्तु यदि वे रुजू करेंगे तो खुदा रहम के साथ लौटेगा। खुदा तेरी बरकतें चारों ओर फैला देगा और एक उजड़ा हुआ घर तुझ से आबाद करेगा और एक डरावना घर बरकतों से भर देगा।★ तेरी नस्ल समाप्त नहीं होगी और अन्तिम दिनों तक हरी भरी रहेगी। खुदा तेरे नाम को उस दिन तक कि संसार समाप्त हो जाए सम्मान के साथ क्रायम रखेगा और तेरी दावत को संसार के किनारों तक पहुंचा देगा। मैं तुझे उठाऊंगा और अपनी तरफ बुलाऊंगा, परन्तु तेरा नाम संसार से कभी नहीं उठेगा और ऐसा होगा कि सब वे लोग जो तेरे अपमान की चिन्ता में लगे हुए हैं और तेरे असफल रहने की घात में तथा तुझे मिटाने के विचार में हैं वे स्वयं विफल रहेंगे और विफलता एवं निराशा में मरेंगे किन्तु खुदा तुझे पूर्णतया सफल करेगा और तेरी सारी मनोकमानाएं तुझे देगा। मैं तेरे निष्ठावान और हार्दिक प्रेमियों के

★नोट- यह एक भविष्यवाणी की ओर संकेत है जो 10 जुलाई 1888 ई. को विज्ञापन में प्रकाशित हो चुकी जिसका सारांश यह है कि खुदा तआला ने इस विनीत के विरोधी और इन्कारी रिश्तेदारों के बारे में निशान के तौर पर यह भविष्यवाणी प्रकट की है कि उनमें से जो एक अहमद बेग नामक व्यक्ति है यदि वह अपनी बड़ी लड़की इस विनीत को नहीं देगा तो तीन वर्ष की अवधि तक बल्कि इस से निकट मृत्यु पा जाएगा और वह (लड़का) जो (उस लड़की) निकाह करेगा वह निकाह के दिन से ढाई वर्ष के समय में मृत्यु पाएगा और अन्ततः वह स्त्री इस खाकसार की पत्नियों में सम्मिलित होगी। अतः इस जगह उस उजड़े हुए घर से वह उजड़ा हुआ घर अभिप्राय है। (इसी से)

समूह को भी बढ़ाऊँगा और उनके जान और माल में बरकत दूँगा और उनमें प्रचुरता प्रदान करूँगा तथा वे मुसलमानों के उस दूसरे समूह पर क्रयामत के दिन तक विजयी रहेंगे जो ईर्ष्यालुओं, और शत्रुओं का समूह है खुदा उन्हें नहीं भूलेगा और विस्मृत नहीं करेगा और वे अपनी निष्कपटता (इख्लास) के अनुसार अपना-अपना प्रतिफल (अज्र) पाएँगे। तू मुझे ऐसा है जैसे बनी इस्राईल के नबी (अर्थात् जिल्ली ★ तौर पर तू उन से समानता रखता है) तू मुझ से ऐसा है जैसी मेरी तौहीद। तू मुझ से और मैं तुझ से हूँ और वह समय आता है बल्कि निकट है कि खुदा बादशाहों और अमीरों के दिलों में तेरा प्रेम डालेगा यहां तक कि वे तेरे कपड़ों से बरकत दूढ़ेंगे। हे इन्कार करने वालो और सच्चाई के विरोधियो! यदि तुम मेरे बन्दे के बारे में सन्देह में हो, यदि तुम्हें उस फ़ज़ल (कृपा) और उपकार से कुछ इन्कार है जो हमने अपने बन्दे पर किया तो इस दया के निशान के समान तुम भी अपने बारे में कोई सच्चा निशान प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो। और यदि तुम प्रस्तुत न कर सको और स्मरण रखो कि हरगिज़ प्रस्तुत न कर सकोगे तो उस आग से डरो कि जो अवज्ञाकारियों और झूठों और हद से बढ़ने वालों के लिए तैयार है। इति

लेखक

खाकसार - गुलाम अहमद (लेखक बराहीन अहमदिया)

होशियारपुर, तवेला शेख मेहर अली साहिब रईस

प्रकाशित रियाज़ हिन्द क़ादियान

20 फरवरी 1886 ई.

★ **हाशिया** - उम्मीती की विशेषता यही है कि अपने अनुकर्णीय से बल्कि समस्त अंबियाय अनुकर्णीय अलैहिमुस्सलाम से समानता पैदा करे। यही पूर्ण अनुकण की वास्तविकता और मुख्य कारण है जिसके लिए सूरह फ़ातिहा में दुआ करने के लिए हम लोग मामूर हैं बल्कि इन्सान की प्रकृति में यही मांग पाई जाती है और इसी कारण से मुसलमान लोग अपनी सन्तान के नाम बतौर शगुन ईसा, दाऊद, मूसा, याकूब और मुहम्मद इत्यादि नबियों के नाम पर रखते हैं और उद्देश्य यह होता है ताकि वही शिष्टाचार और बरकतें बतौर जिल्ली (प्रतिबिम्ब) उनमें भी पैदा हो जाएं। अतः विचार करें। (इसी से)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(हाशिया आईना कमालात-ए-इस्लाम 20 फ़रवरी 1886 पृष्ठ 12 से संबधित)

عجب نوریت در جان محمد عجب علّیت در کان محمد

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान में एक अद्भुत प्रकाश है।
मुहम्मद की खान में एक विचित्र प्रकार का मोती है।

زظلمت ادله آنگه شود صاف که دارد از مجّان محمد

दिल उस समय अंधकारों से साफ होता है जब वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मित्रों में सम्मिलित हो जाता है।

عجب دارم دل آن ناکسان را که رو تابند از خوان محمد

मैं उन मूर्खों के दिलों पर आश्चर्य करता हूं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरख्वान से मुंह फेरते हैं।

ندانم هیچ نفی در دو عالم که دارد شوکت و شان محمد

मैं दोनों लोकों में किसी व्यक्ति को नहीं जानता जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सा वैभव रखता हो।

خدازان سینه بیزارست صدار که هست از کینه داران محمد

ख़ुदा उस व्यक्ति से नितान्त अप्रसन्न है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वैर रखता हो।

خدا خود سوزد آن کرم دنی را که باشد از عدوان محمد

ख़ुदा स्वयं उस नीच कीड़े को जला देता है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं में से हो।

اگر خواهی نجات از مستی نفس بیا در ذیل مستان محمد

यदि तू नफ़्स की मस्ती से मुक्ति चाहता है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मस्तानों में से होगा।

اگر خواهی که حق گوید ثنایت بشو از دل ثنا خوان محمد

यदि तू चाहता है कि ख़ुदा तेरी प्रशंसा करे तो दिल की गहराई से मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रशंसक बन जा।

اگر خواهی دلیله عاشقش باش محمد هست بُرہانِ محمد

यदि तू उसकी सच्चाई का प्रमाण चाहता है तो उस का प्रेमी बन जा क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं मुहम्मद का प्रमाण है।

سرے دارم فدائے خاک احمد دلم ہر وقت قربانِ محمد

मेरा सिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैरों की धूल पर न्योछावर है और मेरा दिल हर समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कुर्बान रहता है।

بگیسوی رسول اللہ کہ ہستم نثار روئے تابانِ محمد

रसूलुल्लाह के बालों की क्रसम कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रकाशमान चेहरे पर कुर्बान हूँ।

دریں رہ گر کشدم در بسوزند نتایم روز ایوانِ محمد

इस मार्ग में यदि मुझे कल्ल कर दिया जाए या जला दिया जाए तो फिर भी मैं मुहम्मद के दरबार से मुंह नहीं फेरूंगा।

بکار دین نترسم از جہانے کہ دارم رنگ ایمانِ محمد

धर्म के मामले में मैं समस्त संसार से भी नहीं डरता कि मुझ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ईमान का रंग है।

بے سہل ست از دنیا بریدن بیادِ حسن و احسانِ محمد

संसार से संबंध तोड़ना बहुत आसान है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सौन्दर्य एवं उपकार को याद करके।

فدا شد در رهش ہر ذرۂ من کہ دیدم حسن پنہانِ محمد

उस के मार्ग में मेरा हर कण कुर्बान है। क्योंकि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का छिपा हुआ सौन्दर्य देख लिया है।

دگر استاد رانامے ندانم کہ خواندم در دبستانِ محمد

मैं किसी अन्य उस्ताद का नाम नहीं जानता। मैं तो केवल मुहम्मद के मदरसे का पढ़ा हुआ हूँ।

بدیگر دلبرے کارے ندارم کہ ہستم کُشتہ آنِ محمدؐ

और किसी प्रियतम से मेरा कुछ संबंध नहीं। मैं तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाज़-व-अदा का कत्ल किया हुआ हूँ।

مرآں گوشہ چشمی بیاید نخواہم جز گلستانِ محمدؐ

मुझे तो उसी आंख की हमदर्दी की आवश्यकता है। मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता।

دلِ زارم بہ پہلوئم مجوئید کہ بستیش بدامانِ محمدؐ

मेरे घायल दिल को मेरे पहलू में तलाश न कर कि उसे तो हम ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामन से बांध दिया है।

من آں خوش مرغ از مرغان قدسم کہ دارد جا بہ بُستانِ محمدؐ

मैं पवित्र पक्षियों में से वह श्रेष्ठ पक्षी हूँ जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाग़ में बसेरा रखता है।

تو جان ما منور کر دی از عشق فدایت جانم اے جانِ محمدؐ

तू ने प्रेम के कारण हमारी जान को प्रकाशित कर दिया। हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुझ पर मेरी जान कुर्बान हो।

دریغاً گردہم صد جان درین راہ نباشد نیز شایانِ محمدؐ

यदि इस मार्ग में सौ जान से कर्बान हो जाऊं तो भी अफ़सोस रहेगा कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान के यथायोग्य नहीं।

چہ یمبت ہا بدوند این جوان را کہ ناید کس بہ میدانِ محمدؐ

उस जवान को कितना (अधिक) रोब दिया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मैदान में कोई भी (मुकाबले पर) नहीं आता।

الا اے دشمن نادان و بے راہ بترس از تیغ بُرّانِ محمدؐ

हे मूर्ख और गुमराह दुश्मन सावधान हो जा और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की काटने वाली तलवार से डर।

رہ مولیٰ کہ گم کردند مردم بچو در آل و اعوانِ محمدؐ

ख़ुदा के उस मार्ग को जिसे लोगों ने भुला दिया है तू मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का आल (सन्तान) और अन्सार (सहायकों) में ढूँढ।

الاء منكر از شان محمد هم از نور نمايان محمد

खबरदार हो जा हे वह व्यक्ति जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चमकते हुए प्रकाश का इन्कारी है।

क्रामत گرچه بے نام و نشان است بیا بنگر ز غلمان محمد

यद्यपि करामत (चमत्कार) अब लुप्त है किन्तु तू आ और उसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दासों में देख ले।



लेखराम पेशावरी के बारे में एक भविष्यवाणी

स्पष्ट हो कि इस ख़ाकसार ने 20 फरवरी 1886 ई. के विज्ञापन में जो इस पुस्तक के साथ संलग्न किया गया था, इन्द्रमन मुरादाबादी और लेखराम पेशावरी को इस बात के लिए निमंत्रण दिया था कि यदि वे इच्छुक हों तो उनके प्रारब्ध के बारे में कुछ भविष्यवाणियां प्रकाशित की जाएं। इस विज्ञापन के बाद इन्द्रमन ने तो आपत्ति की ओर कुछ समय के बाद मृत्यु पा गया, परन्तु लेखराम ने बड़ी निर्भकता से इस ख़ाकसार की ओर एक कार्ड भेजा कि मेरे बारे में जो भविष्यवाणी चाहो प्रकाशित कर दो। मेरी ओर से इजाज़त है। फिर इसके बारे में जब ध्यान किया गया तो महा प्रतापी अल्लाह तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ -

عَجَلْ جَسَدَهُ خُورَ لَهُ نَصَبٌ وَ عَذَابٌ

अर्थात् यह एक निर्जीव बछड़ा है जिसके अन्दर से एक घृणित आवाज़ निकल रही है और उसके लिए इन धृष्टताओं और गालियों के बदले में दण्ड, शोक और अज़ाब निश्चित है जो उसे अवश्य मिलेगा। इसके बाद आज जो 20 फरवरी 1893 ई. दिन सोमवार है इस अज़ाब का समय ज्ञात करने के लिए ध्यान किया तो कृपालु

खुदा ने मुझ पर प्रकट किया कि आज की तिथि से जो 20 फरवरी 1893 ई. है छः वर्ष की अवधि तक यह व्यक्ति अपनी गालियों के दण्ड में अर्थात् असभ्यताओं के दण्डस्वरूप जो इस व्यक्ति ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि के बारे में की हैं कठोर अज्ञाब में ग्रस्त हो जाएगा। अतः अब मैं इस भविष्यवाणी को प्रकाशित करके समस्त मुसलमानों, आर्यों, ईसाइयों और अन्य सम्प्रदायों पर व्यक्ति करता हूं कि यदि इस व्यक्ति पर छः वर्ष के समय में आज की तिथि से कोई ऐसा अज्ञाब [★] न उतरा जो सामान्य कष्टों से निराला और विलक्षण तथा अपने अन्दर खुदाई रोब दबदबा रखता हो तो समझो कि मैं खुदा तआला की ओर से नहीं और न उसकी रूह से मेरा यह बोलना है। और यदि मैं इस भविष्यवाणी में झूठा निकला तो प्रत्येक दण्ड भुगतने के लिए तैयार हूं और इस बात पर सहमत हूं कि मुझे गले में रस्सा डालकर सूली पर खींचा जाए। और मेरे इस इक्कार के बावजूद यह बात भी स्पष्ट है कि किसी मनुष्य का अपनी भविष्यवाणी में झूठा निकलना स्वयं समस्त बदनामियों से अधिक बदनामी है। इस से अधिक क्या लिखूं। स्पष्ट रहे कि इस व्यक्ति ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बहुत अपमान किया है जिसकी कल्पना से भी शरीर कांपता है। इसकी पुस्तकें विचित्र प्रकार के तिरस्कार, अपमान और गालियों से भरी हुई हैं। कौन मुसलमान है जो उन पुस्तकों को सुने और उस का दिल और जिगर टुकड़े-टुकड़े न हो और फिर उसके साथ घृष्टता और निर्लज्जता। यह व्यक्ति अत्यन्त मूर्ख है। अरबी से बिल्कुल अनभिज्ञ बल्कि बारीक उर्दू भाषा लिखने का भी माद्दः नहीं और यह भविष्यवाणी संयोग से नहीं बल्कि इस खाकसार ने विशेष कर इसी उद्देश्य के लिए दुआ की जिसका यह उत्तर प्राप्त हुआ। यह भविष्यवाणी मुसलमानों के लिए भी निशान है। काश वे वास्तविकता को समझते और उनके दिल नर्म होते। अब मैं उसी महावैभवशाली खुदा के नाम पर समाप्त करता हूं जिस के नाम से आरंभ किया था।

والحمد لله والصلوة والسلام على رسوله محمد بن المصطفى افضل الرسل و

خير الورى سيدنا وسيد كل ما في الارض والسماء

खाकसार - मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियान, गुरदासपुर 20 फ़रवरी 1893 ई.

★ अब आर्यों को चाहिए सब मिलकर दुआ करें कि उनके इस वकील से यह अज्ञाब टल जाए।

आईना कमालात-ए-इस्लाम पुस्तक का विज्ञापन

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ

हे ईमानदारो! यदि तुम अल्लाह की सहायता करो तो वह तुम्हारी सहायता करेगा।

اے عزیزاں! مدد دین متیں آل کارے ست کہ بصد زہد میسر نہ شود انسان را
(हे प्रियजन! शांत चित्त धर्म की सहायता करना ऐसा महान कार्य है कि मनुष्य उसे सौ तक्वः के बदले में भी प्राप्त नहीं कर सकता।)

स्पष्ट हो कि यह पुस्तक जिसका नाम शीर्षक में दर्ज है इन दिनों में इस विनीत ने इस उद्देश्य से लिखी है ताकि संसार के लोगों को पवित्र कुर्आन की खूबियां ज्ञात हों और इस्लाम की उच्च शिक्षा का उन को ज्ञान हो और मैं इस बात से शर्मिन्दा हूँ कि मैंने यह कहा कि मैंने इसको लिख है क्योंकि मैं देखता हूँ कि खुदा तआला ने आरंभ से अन्त तक इसके लिखने में स्वयं मुझे अद्भुत से अद्भुत सहायताएं दी हैं और इसमें वे अद्भुत अनुकंपाएं और बारीकियां भर दी हैं जो मनुष्य की सामान्य शक्तियों से बहुत बढ़कर हैं। मैं जानता हूँ कि उसने अपना यह एक निशान दिखाया है ताकि ज्ञात हो कि वह इस्लाम की बेबसी के समय में अपने विशेष समर्थनों के साथ उसकी कैसे सहायता करता है और क्योंकि एक असहाय मनुष्य के दिल पर इल्हाम डालकर लाखों लोगों के षड्यंत्रों को मिट्टी में मिलाता और उनके आक्रमणों को चूर-चूर करके दिखा देता है। मेरी यह बड़ी इच्छा है कि मुसलमानों की सन्तान और इस्लाम के शरीफ़ लोगों की नस्ल जिनके सामने नवीन विद्याओं की गलतियां दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं। इस पुस्तक को देखें। यदि मुझे सामर्थ्य होती तो मैं समस्त जिल्दों को खुदा के लिए निशुल्क बांटता। अजीजो! यह पुस्तक सच्चाई की शक्ति का एक नमूना है और मनुष्य की मामूली कोशिशें स्वयं मआरिफ़ का इतना भण्डार पैदा नहीं कर सकतीं। इसकी मोटाई छः सौ पृष्ठों के लगभग है। कागज़ उत्तम और पुस्तक की लिखावट उत्तम, मूल्य दो रुपया

और डाक खर्च अतिरिक्त है। यह केवल एक भाग है, दूसरा भाग अलग छपेगा और उसका मूल्य अलग होगा। और इसमें क़ुर्आन की सच्चाइयां और मआरिफ़ तथा प्रभुत्वशाली रब्ब की किताब की अनुकंपाओं के अतिरिक्त एक बड़ा भाग उन भविष्यवाणियों का भी मौजूद है जिनको पहले सिराजे मुनीर में प्रकाशित करने का इरादा था। मैं इस बात पर सहमत हूँ कि यदि पुस्तक के खरीदार मेरी इस प्रशंसा को वास्तविकता के विपरीत पाएं तो पुस्तक मुझे वापस कर दें। मैं अविलम्ब उन का मूल्य वापस भेज दूंगा। परन्तु यह शर्त आवश्यक है कि पुस्तक को दो सप्ताह के अन्दर वापस करें। और हाथ से मसली हुई और दागदार न हो।

अन्त में यह बात का भी उल्लेख करना चाहता हूँ कि इस पुस्तक के लिखने के समय दो समय जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ियारत (दर्शन) हुई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पुस्तक के लिखने पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की। एक रात यह भी देखा कि एख़ फ़रिश्ता ऊंची आवाज़ से लोगों के दिलों को इस पुस्तक की तरफ बुलाता है और कहता है

هَذَا كِتَابٌ مُّبَارَكٌ فَقُومُوا لِلْإِجْلَالِ وَالْإِكْرَامِ

अर्थात् यह पुस्तक मुबारक है। इसके सत्कार के लिए खड़े हो जाओ। अब असल उद्देश्य के बारे में निवेदन यह है कि जो सज्जन इस पुस्तक को खरीदना चाहें वे अविलम्ब दृढ़ निश्चय के साथ सूचना दें ताकि पुस्तक वी.पी. द्वारा उनकी सेवा में भेज दी जाए।

وَالسَّلَامُ عَلَى مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَى

खाकसार - गुलाम अहमद

क्रादियान, ज़िला-गुरादसपुर (पंजाब)

प्रकाशित- रियाज़-ए-हिन्द प्रेस, क्रादियान।

शेख मेहर अली साहिब रईस होशियारपुर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली

تا دل مرد خدا ناله بدرد هیچ قومی را خدارسوانه کرد

(كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَافٍ)

इन्सान अत्यन्त तुच्छ और मुट्ठीभर खाक होने के बावजूद फिर अपने निराश्रय होने को कैसे शीघ्र भूल जाता है। थोड़ा सा भी दर्द दूर होने और आराम आने पर अपनी विग्रमता की शैली तुरन्त बदल लेता है। पंजाब के लगभग समस्त लोग शेख मेहर अली साहिब रईस होशियारपुरी से परिचित होंगे और मेरे विचार में है कि जिस एक अनुचित आरोप में अपने गुप्त अपराधों के कारण जिन्हें खुदा तआला जानता होगा वह फंस गए थे। वह क्रिस्सा हमारे देश को बच्चों तथा स्त्रियों को भी मालूम होगा। अतः इस समय हमें उस निरस्त हो चुके क्रिस्से से तो कुछ मतलब नहीं केवल इस बात का अभिव्यक्त करना अभीष्ट है कि इस खाकसार को एक स्वप्न द्वारा अवगत किया गया था कि शेख साहिब के बैठने के स्थान के फर्श को आग लगी हुई है और उस आग को इस खाकसार ने बार-बार पानी डालकर बुझाया है। अतः उसी समय मेरे दिल में खुदा तआला की ओर से पूर्ण विश्वास के साथ यह ताबीर डाली गई कि शेख साहिब पर और उनके सम्मान पर घोर संकट आएगा और मेरा पानी डालना यह होगा कि अन्त में मेरी ही दुआ से न किसी अन्य कारण से वह संकट दूर हो जाएगा। मैंने इस स्वप्न के बाद शेख साहिब को एक विस्तृत पत्र द्वारा अपने स्वप्न की सूचना दे दी और तौब: एवं इस्तिग़फ़ार की तरफ ध्यान दिलाया परन्तु उन्होंने उस पत्र का उत्तर कुछ न दिया। अन्ततः लगभग छः माह गुज़रने पर ऐसा ही हुआ, और मैं अंबाला छावनी में था कि मुहम्मद बख्श नामक एक व्यक्ति शेख साहिब के सुपुत्र जान मुहम्मद की तरफ से मेरे पास पहुंचा और वर्णन किया कि अमुक मुकद्दमे में शेख साहिब हवालात में हो गए। मैंने उस व्यक्ति से अपने पत्र का हाल पूछा जिसमें छः माह पूर्व इस संकट की सूचना दी गई थी तो उस समय

मुहम्मद बख्श ने उस पत्र के पहुंचने से अज्ञानता व्यक्त की। परन्तु अन्त में स्वयं शेख साहिब ने छूटने के पश्चात् कई बार इन्कार किया कि वह पत्र एक में मिल गया फिर शेख साहिब तो हवालात में जा चुके थे। परन्तु उन के सुपुत्र जान मुहम्मद की ओर से शायद मुहम्मद बख्श के हस्ताश्रर से जो एक व्यक्ति उनके संबंधियों में से है इस खाकसार के नाम कई पत्र दुआ के लिए आए और महा वैभवशाली खुदा तआला जानता है कि कई रातें अत्यन्त परिश्रम द्वारा दुआएं की गईं और प्रारंभ में प्रारब्ध (क्रजा-व-क्रद्र) की स्थिति बहुत ही जटिल और अटल मालूम होती थी, परन्तु अन्ततः खुदा तआला ने दुआ स्वीकार की और उनके बारे में छूट जाने की खुशखबरी देदी और उस खुशखबरी से उनके सुपुत्र को संक्षिप्त शब्दों में सूचना दी गई।

यह तो असल वास्तविकता और मूल घटना है किन्तु फिर इसके बाद सुना गया कि शेख साहिब इस रिहाई के पत्र से इन्कार करते हैं जिससे लोग यह परिणाम निकालते हैं कि मानो इस विनीत ने झूठ बोला। अतः इस फ़िल्ने को दूर करने के लिए इस खाकसार ने शेख साहिब से अपना पत्र मांगा, जिसमें उनके बरी होने की खबर दी गई थी परन्तु उन्होंने वह पत्र न भेजा बल्कि अपने पत्र 19, जून 1892 ई. में मेरे पत्र का खो जाने के बारे में बताया। परन्तु साथ ही अपने सुपुत्र जान मुहम्मद के द्वारा यह लिखा कि निश्चित तौर पर बरी होने की सूचना देना हमें याद नहीं परन्तु संभवतः पत्र के ये शब्द या इसके करीब-करीब थे कि फ़ज़ल हो जाएगा दुआ की जाती है।★ यह क्रिस्सा तो यहां तक रहा और

★हाशिया :- यह इस खाकसार का शब्द नहीं है कि दुआ की जाती है बल्कि यह था कि दुआ बुहत की गई और अन्तिम वाक्य में बरीयत और खुदा के फ़ज़ल की खुशखबरी दी गयी थी। वे शब्द यद्यपि कम थे परन्तु कम और तार्किक थे। खुदा तआला किसी का मुहताज और चापलूस लोगों की भांति नहीं उसकी खुशखबरियां प्रायः सांकेतिक ही होती हैं उसका हां या नहीं कहना दूसरे लोगों के हजार दफ़्तरों से अधिक विश्वसनीय है परन्तु मूर्ख और अहंकारी दुनियादार लोग यह चाहते हैं कि खुदा तआला भी आज्ञाकारियों की तरह लम्बे भाषण दे ताकि उन्हें विश्वास हो और फिर उस बात को अटल समझें। (इसी से)

शेख साहिब का वह पत्र मेरे पास मौजूद है परन्तु अब कुछ दोस्तों के पत्रों तथा बयानों से मालूम हुआ कि शेख साहिब यह मशहूर करते फिरते हैं कि हमें बरी होने की कोई सूचना नहीं दी थी। न केवल इतना ही बल्कि इस खाकसार पर एक और तूफान बांधते हैं और वह यह कि जैसे यह खाकसार यह तो जानता था कि मैंने कोई पत्र नहीं लिखा परन्तु शेख साहिब को झूठ बोलने के लिए प्रेरित करके झूठे बयान के तौर पर यह लिखवाना चाहा कि इस खाकसार ने बरी होने की खबर दे दी थी। जैसे इस खाकसार ने किसी पत्र में शेख साहिब की सेवा में यह लिखा है कि यद्यपि यह बात सही और निश्चित तो नहीं कि मैंने बरी होने की सूचना समय से पहले बतौर भविष्यवाणी दी हो, परन्तु तुम मेरे लिए और मेरा आदर करते हुए तुम ऐसा ही लिख दो ताकि मेरी करामत प्रकट हो। शेख साहिब का यह व्यवहार देखकर अफ़सोस हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। खुदा तआला जानता है कि शेख साहिब के आरंभ और अन्त के संबंध में शेख साहिब को अवश्य सूचना दी गयी थी और वे दोनों भविष्यवाणियां सही हैं, और दोनों के बारे में शेख साहिब की तरफ पत्र भेजा गया था और वही पत्र मांगा गया था या उसका लेख मांगा गया था। शेख साहिब ने यदि वास्तव में ऐसा ही वर्णन किया है तो उनके झूठ का उत्तर क्या दिया जाए। पाठक इस बारे में मेरे पत्र उन से मांगें और उन्हें परस्पर मिला कर ध्यानपूर्वक पढ़ें। ★ यदि

★**हाशिया :-** उचित है कि पाठक इन निकट की तिथियों के मेरे सब पत्र शेख साहिब से लेकर पढ़ें। मेरे किसी पत्र का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि शेख साहिब कोई बात वास्तविकता के विरुद्ध लिखें बल्कि उनके अपने पहले पत्र के लेख से सूचित किया गया था और आश थी कि याद दिलाने से वह लेख उन्हें याद आ जाएगा इस आधार पर उनसे याद आ जाएगा इस आधार पर उन से यह निवेदन किया गया था कि हमारे पत्र का खुलासा यह है और उसी की हम आर से पुष्टि चाहते हैं किन्तु अफ़सोस कि शेख साहिब ने मेरे पत्र को तो ज़बरदस्ती दबा लिया और मुझ पर यह झूठ बोला कि मैंने उन से झूठ कहलाना चाहा। खुदा तआला जानता है कि मैंने तो केवल अपने पत्र के लेख की पुष्टि करानी चाही थी। यदि मैं सच पर नहीं तो शेख साहिब मेरा विवादित पत्र प्रस्तुत करें जिसके पढ़ने का उन्हें इक़रार है। न केवल इतना ही बल्कि यह भी इक़रार है कि उसमें लिखा था कि फ़ज़ल हो जाएगा। (इसी से)

शेख साहिब में समझदारी का तत्व होता तो पहली ही भविष्यवणी के पत्र से मेरा बरीयत की खबर देना समझ सकते थे। क्योंकि इस से यही व्यापक तौर पर समझा जा सकता था कि इस खाकसार के द्वारा ही उनको हवालात से छुटकारा मिलेगा। कारण यह कि उनको सूचना दी गयी थी कि मैंने ही पानी डालकर आग को बुझाया। क्या शेख साहिब को याद नहीं कि लुधियाना में जब वह मेरे मकान पर दावत खाने आए थे तो उन्होंने उस पत्र को याद करके रोना आरंभ कर दिया था और शायद रोटी पर भी आंसुओं की कुछ बूंदें पड़ी हों फिर वह आग पर पानी डालना क्यों याद न रहा? और यदि मैंने बरी होने की खबर प्रसारित नहीं की थी तो फिर वह सैकड़ों लोगों में बरीयत से पूर्व प्रसिद्ध कैसे हो गई और क्यों आपके कुछ रिश्तेदार जल्दी★ करके उस खबर की सच्चाई पर ऐतराज करते थे अब तक जीवित मौजूद हैं, और फिर आपने क्यों मेरे पत्र का खुलासा मुझे लिखा कि जैसे मैंने पत्र में केवल इतना ही लिखा था कि फ़ज़ल हो जाएगा। यह कैसा खुदा का डर है कि मज्लिसों में झूठ बांधने का आरोप लगा कर दिल को दुख दिया जाए। जो भी हो अब हम कुछ कमी करते हुए अपनी सच्चाई के बारे में एक आसान फैसला नीचे लिखते हैं। और वह यह है -

फ़ैसला

आज रात मैंने जो 25 फ़रवरी 1893 ई. की रात थी शेख साहिब की इन बातों से बहुत व्यथित होकर आकाशीय फ़ैसले के लिए दुआ की। स्वप्न में मुझे दिखाया गया कि मैंने एक दुकानदार की तरफ कुछ क्रीमत भेजी थी कि वह एक उत्तम और सुगंधित वस्तु भेज दे। उस ने क्रीमत रख कर एक दुर्गन्ध युक्त वस्तु भेज दी। वह वस्तु देख कर मुझे क्रोध आया और मैंने कहा कि जाओ दुकानदार

★आपके रिश्तेदार शायद भान्जे शेख मीरां बख़्श निवासी दसूहा ने अमृतसर में अपनी दुकान पर शेख सिन्धी खान निवासी खानपुर के सामने मेरे नौकर शेख हामिद अली से बरीयत से निराशा की अवस्था में वाद-विवाद किया था कि मिर्जा गुलाम अहमद तो कहते थे कि शेख साहिब बरी हो जाएंगे और उन्हें फांसी मिलने लगी है। हामिद अली का बयान है कि मैंने कहा था कि अंजाम देखने के बाद ऐतराज करना। (इसी से)

को कहो कि वही वस्तु दे अन्यथा इस धोखे का उस पर मुकद्दमा करूंगा और फिर अदालत से उसे कम से कम छः माह का दण्ड मिलेगा और आशा तो अधिक की है। तब उस दुकानदार ने शायद यह कहला भेजा कि यह मेरा काम नहीं या मेरा अधिकार नहीं और साथ ही यह कहला भेजा कि एक पागल फिररता है उसका असर मेरे दिल पर पड़ गया और मैं भूल गया और अब वही वस्तु देने के लिए तैयार हूं। इसकी मैंने यह ताबीर की कि शेख साहिब पर यह शर्मिन्दगी आने वाली है और अन्ततः वह शर्मिन्दा होंगे और अभी किसी अन्य व्यक्ति का उनके दिल पर असर है। फिर मैंने ध्यान किया तो मुझे यह इल्हाम हुआ -

أَنَا ثَقَلْتُ فِي السَّمَاءِ - ثُقُلْتُ فِي السَّمَاءِ مَا قَلْبَتْ فِي الْأَرْضِ
 أَنَا مَعَكَ نَزَعُكَ دَرَجَاتٍ

अर्थात् हम आकाश पर देख रहे हैं कि तेरा दिल मेहर अली की शुभेच्छा से बद्-दुआ की तरफ फिर गया। अतः हम बात को उसी प्रकार आकाश पर फेर देंगे जिस प्रकार तू पृथ्वी पर फेरेगा। हम तेरे साथ हैं, तेरे मरतबे को बढ़ाएंगे। इसलिए यह विज्ञापन शेख साहिब की सेवा में रजिस्ट्री करा कर भेजता हूं कि यदि वह एक सप्ताह के समय में अपने घटना के विरुद्ध उपद्रव फैलाने से क्षमा चाहने के लिए एक पत्र छपवाने की नीयत से न भेज दें तो फिर मेरा और उनका मुकद्दमा आकाश पर दायर होगा और मैं अपनी दुआओं को जो उनकी आयु और सम्मान की यथावत करने तथा आराम के लिए थीं, वापस ले लूंगा। यह मुझे महा वैभवशाली खुदा की तरफ से स्पष्ट तौर पर खुशखबरी मिल गई है। अब यदि शेख साहिब ने अपने झूठों के बारे में मेरे माध्यम से क्षमा का लेख न छपवाया तो फिर मेरी सच्चाई और ईमानदारी की यह निशानी है कि उन पर मेरी बद्-दुआ का असर प्रकट होगा जो खुदा तआला ने मुझे वादा दिया है। मैं अभी इसकी कोई तिथि वर्णन नहीं कर सकता क्योंकि अभी खुदा तआला ने मुझ पर कोई तिथि नहीं खोली, और यदि मेरी बद्-दुआ का कुछ भी असर न हुआ तो निस्सन्देह मैं उसी प्रकार झूठा और झूठ गढ़ने वाला हूं जैसा शेख साहिब ने मुझे समझ लिया। मैं महा वैभवशाली खुदा की क्रसम खाकर कहता हूं कि मैंने संकट

से पूर्व ही शेख साहिब को खबर दी थी और संकट के बाद भी। यदि मैं झूठा हूँ तो शेख साहिब मेरी बद्-दुआ से साफ़ बच जाएंगे और मेरे झूठे होने की यही निशानी पर्याप्त होगी। यदि यह बात केवल मुझ तक सीमित होती तो मैं सब्र करता परन्तु इस का धर्म पर प्रभाव है और जन सामान्य में गुमराही फैलती है। इसलिए मैंने केवल धर्म की सहायता के उद्देश्य से दुआ की और ख़ुदा तआला ने मेरी दुआ स्वीकार की। सांसारिक लोगों को अपने संसार का अभिमान होता है और फ़कीरों में अभिमान घमँड स्वयं पर भरोसा करके पैदा होता है और बड़प्पन ख़ुदा तआला पर भरोसा करके पैदा होता है। अतः मेरे सच्चा और झूठा होने के लिए यह भी एक निशानी है। मेरा यह दावा है कि शेख साहिब का मुक्ति (निजात) केवल मेरी ही दुआ से हुई थी जैसा कि मैंने आग पर पानी डाला था। यदि मैं इस दावे में सच्चा नहीं हूँ तो मेरा अपमान प्रकट हो जाएगा।

लेखक - ख़ाकसार - गुलाम अहमद

क्रादियानी, ज़िला - गुरदासपुर (प्रकाशित रियाज़ हिन्द क्रादियान)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّآلِ مُحَمَّدٍ اَفْضَلُ الرُّسُلِ وَخَاتَمِ النَّبِيِّينَ

विज्ञापन

पुस्तक बराहीन-ए-अहमदिया जिसे लेखक ने ख़ुदा तआला की ओर से मुल्हम और मामूर होकर धर्म के सुधार तथा नवीनीकरण के उद्देश्य से लिखा है जिसके साथ दस हजार रुपए का विज्ञापन है जिसका सारांश यह है कि संसार में ख़ुदा तआला की ओर से और सच्चा धर्म जिसके द्वारा मनुष्य ख़ुदा तआला को प्रत्येक दोष और ऐब से बरी समझ कर उसकी सम्पूर्ण पवित्रताओं एवं पूर्ण विशेषताओं पर हार्दिक विश्वास के साथ ईमान लाता है वह केवल **इस्लाम** है जिसमें सच्चाई की बरकतें सूर्य के समान चमक रही हैं और सच्चाई का प्रकाश

दिन के समान प्रकट हो रहा है और अन्य धर्म ऐसे व्यापक तौर पर रद्द करने योग्य हैं कि न बौद्धिक अनुसंधानों से उनके सिद्धान्त सही और उचित सिद्ध होते हैं और न उन पर चलने से एक कण भर रूहानी बरकत और खुदा की स्वीकारिता मिल सकती है बल्कि उन का पालन करने से मनुष्य अत्यंत मूर्ख और बेरहम हो जाता है जिसके दुर्भाग्य पर इसी संसार में निशानियां पैदा हो जाती हैं।

इस पुस्तक में इस्लाम धर्म की सच्चाई को दो प्रकार से सिद्ध किया गया है।

(1) पहले- तीन सौ दृढ़ एवं शक्तिशाली बौद्धिक तर्कों द्वारा जिन की प्रतिष्ठा एव वैभव, आदर, सत्कार इस से प्रकट है कि यदि कोई इस्लाम का विरोधी उन तर्कों का खण्डन कर दे तो उसको दस हजार रुपए देने का विज्ञापन दिया हुआ है। यदि कोई चाहे तो अपनी सन्तुष्टि के लिए अदालत में रजिस्ट्री भी करा ले।

(2) दूसरे- उन आकाशीय निशानों से जो सच्चे धर्म की पूर्ण सच्चाई सिद्ध होने के लिए बहुत जरूरी हैं। इस दूसरी बात में लेखक ने इस उद्देश्य से ताकि इस्लाम धर्म की सच्चाई सूर्य के समान स्पष्ट हो जाए तीन प्रकार के निशान सिद्ध करके दिखाए हैं -

1- वे निशान जो आहंजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में विरोधियों ने स्वयं आपके हाथ से और आपकी की दुआ, ध्यान और बरकत से प्रकट होते देखे जिनको लेखक अर्थात् इस खाकसार ने ऐतिहासिक तौर पर एक उच्च श्रेणी के सबूत से विशिष्ट करके पुस्तक में लिखा है।

2- वे निशान जो स्वयं पवित्र कुर्आन में स्थायी एवं अनश्वर और अद्वितीय तौर पर पाए जाते हैं जिनको लेखक ने पर्याप्त तथा उचित वर्णन द्वारा प्रत्येक सामान्य एवं विशेष व्यक्ति पर खोल दिया है और किसी प्रकार का बहाना किसी के लिए शेष नहीं रखा।

3- वे निशान जो खुदा की किताब के अनुकरण और सच्चे रसूल की पैरवी से किसी अनुयायी को बतौर विरासत मिलते हैं जिनके सत्यापन में इस खुदा के बंदे (विनीत) ने सर्वशक्तिसम्पन्न खुदा के फ़ज़ल से यह व्यापक सबूत दिखाया

है कि बहुत से सच्चे इल्हाम, विलक्षण निशान, चमत्कार, गैबी खबरें, खुदा के दिए भेद, सच्चे कश्फ़ और स्वीकृत दुआएं जो स्वयं इस धर्म-सेवक से ज़ाहिर हुई हैं और जिन की सच्चाई पर बहुत से धर्म विरोधी (आर्यों इत्यादि में से) चश्मदीद गवाह हैं, वर्णित पुस्तक में लिखे हैं। लेखक को इस बात का भी ज्ञान दिया गया है कि वह समय का **मुजद्दिद** है और रूहानी तौर पर उसकी खूबियों **मसीह** इब्ने मरयम की विशेषताओं के समान हैं और एक को दूसरे से अत्यधिक अनुकूलता एवं समानता है और उसको नबियों और रसूलों की विशेषताओं के नमूने पर केवल हज़रत खैरुल बशर अफ़ज़लुरुसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी की बरकत से उन बहुत से महान वलियों पर श्रेष्ठता दी गई है जो कि इससे पहले गुज़र चुके हैं। उसके पदचिन्हों पर चलना (उसका अनुकरण करना) मुक्ति, सौभाग्य तथा बरकत का कारण और उसके विपरीत चलना दूरी और महरूमी का कारण है। ये सब सबूत पुस्तक **बराहीन-ए-अहमदिया** के पढ़ने से जो तीन सौ भागों में से लगभग 37 भाग छप चुकी है, प्रकट होते हैं। और सत्याभिलाषी के लिए स्वयं लेखक पूरी-पूरी सन्तुष्टि एवं तसल्ली कराने को हर समय तैयार और उपस्थित है।

وَذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَلَا فَرْحَ - وَالسَّلَامُ عَلَى مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَى

और यदि इस **विज्ञापन** के बाद भी कोई व्यक्ति सच्चा अभिलाषी बन कर अपनी समस्या का समाधान न चाहे और हार्दिक सच्चाई के साथ उपस्थित न हो तो हमारी ओर से उस पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका, जिसका खुदा तआला के सामने उसे उत्तर देना पड़ेगा। अन्ततः इस विज्ञापन को इस दुआ पर समाप्त किया जाता है कि हे कृपालु खुदा समस्त क्रौमों के तत्पर दिलों को हिदायत प्रदान कर ताकि तेरे रसूल मक़बूल अफ़ज़लुरुसुल **मुहम्मद मुस्तफ़ा** सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तेरे पूर्ण एवं पुनीत कलाम पवित्र कुर्आन पर ईमान लाएं और उसके आदेशों का पालन करें ताकि उन समस्त बरकतों, भलाइयों तथा वास्तविक समृद्धियों से लाभान्वित हो जाएं जो सच्चे मुसलमान को दोनों लोकों में मिलती हैं और उस शाश्वत मुक्ति और जीवन को प्राप्त कर लें जो

न केवल आखिरत (परलोक) में प्राप्त हो सकती है बल्कि सच्चे ईमानदार इसी संसार (लोक) में उसे पाते हैं। विशेष तौर पर समस्त अंग्रेज़ जिन्होंने अभी तक इस सच्चाई के सूर्य से कुछ प्रकाश प्राप्त नहीं किया और जिन की सौम्य, सभ्य और उदार सरकार ने हमें अपने उपकारों तथा मित्रवत व्यवहारों से कृतज्ञ करके हमारे दिल में इस बात के लिए हार्दिक जोश पैदा किया है कि हम उनकी दुनिया और दीन (धर्म) के लिए हार्दिक जोश से भलाई और सुरक्षा चाहें ताकि उनके गोरे और सफेद मुंह जिस प्रकार संसार में सुन्दर हैं आखिरत में भी उज्ज्वल और प्रकाशमान हों।

ونسئل الله تعالى خيرهم في الدنيا والاخرة اللَّهُمَّ اهدهم وايدهم
بروح منك واجعل لهم حظًا كثيرًا في دينك واجز بهم بحولك وقوّك
ليؤمّنوا بكتابك ورسولك ويدخلوا في دين الله أفواجًا. آمين - ثُمَّ آمين
والحمد لله رب العلمين

अनुवाद - और हम अल्लाह तआला से इस दुनिया में और परलोक में उनकी भलाई के लिए दुआ करते हैं। हे अल्लाह! अपनी ओर से उनका मार्गदर्शन कर और उनकी सहायता कर। और उनके लिए अपने धर्म में बहुत सा हिस्सा रख दे और उन्हें अपनी ताकत और शक्ति से अपनी ओर खींच ले ताकि वे तेरी किताब और तेरे रसूल पर ईमान ले आएँ और गिरोह के गिरोह तेरे धर्म में प्रवेश कर जाएँ। आमीन सुम्मा आमीन और और समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं।

विज्ञापनदाता

खाकसार मिर्ज़ा गुलाम अहमद

क्रादियान, ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

(बीस हजार विज्ञापन छापे गए)

प्रकाशित (रियाज़ हिन्द प्रेस अमृतसर पंजाब)

अन्तिम अश्आर

खुदा तआला के शुक्र और प्रशंसा में जो कि बुलन्द शान वाला है

قربان تست جان من اے یار محسنم بامن کدام فرق تو کردی که من کنم
हे मेरे उपकार करने वाले मित्र, जान तुझ पर कुर्बान है। तू ने मुझ से कौन
सा अन्तर किया है कि मैं तुझ से (अन्तर) करूं।

هر مطلب و مراد که می خواستم ز غیب هر آرزو که بود بخاطر معینم
हर मनोकामना और वह जो मैंने ग़ैब से मांगा और हर इच्छा जो मेरे दिल
में थी।

از جود داده همه آن مدعائے من و از لطف کرده گذر خود بمسکنم
तू ने अपनी अनुकम्पा से मेरी मनोकामनाएं पूरी कर दीं और कृपा करके
तू मेरे घर पर आया।

هیچ آگهی نبود ز عشق و وفا مرا خود ریختی متاع محبت بدامنم
मुझे प्रेम और वफ़ादीरी की कुछ भी ख़बर न थी। तू ने ही स्वयं यह प्रेम
की दौलत मेरे दामन में डाल दी।

این خاک تیره را تو خود اکسیر کرده بود آن جمال تو که نمودست احسنم
इस काली मिट्टी को तू ने स्वयं सोना बना दिया। वह केवल तेरा ही
सौन्दर्य है जो मुझे अच्छा लगा।

ایں صیقل دلم نہ بزہد و تعبّد است خود کرده بلطف و عنایات روشنم
यह मेरे दिल की सफ़ाई तक्व: और इबादत की अधिकता के कारण से
नहीं बल्कि तू ने मुझे स्वयं अपनी मेहरबानियों से प्रकाशित कर दिया है।

صد منت تو هست برین مشّت خاک من جانم رہین لطف عمیم تو ہم تنم
मैं एक मुट्ठी ख़ाक हूं जिस पर तेरे सैकड़ों उपकार हैं। तेरी मेहरबानियों
के कारण मेरा शरीर और जान आभारी है।

سہل است ترک ہر دو جہان گر رضائے تو آید بدست اے پنہ و کہف و مانم
 दोनों लोकों का छोड़ना आसान है यदि तेरी खुशी मिल जाए। हे मेरी शरण!
 हे मेरी गुफा! हे दारुल अमान।

فصل بہار و موسم گل نایم بکار کاندہ خیال روئے تو ہر دم بگلشنم
 बसन्त ऋतु और फूलों का मौसम मेरे लिए बेकार हैं क्योंकि मैं तो हर
 समय तेरे चेहरे के विचार के कारण एक चमन में हूँ।

چون حاجتے بود بادیب دگر مرا من تربیت پذیر ز رب مہینم
 मुझे किसी और उस्ताद की आवश्यकता क्यों हो। मैं तो अपने खुदा से
 प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए हूँ।

ز انساں عنایت ازلی شد قریب من کاندہ ندائے یار زہر کوئے و برز نم
 उसकी अनश्वर कृपा मेरे इतनी निकट हो गई कि मित्र की आवाज़ हर
 गली कूचे से आने लगी।

یار ب مرا بہر قدم استوار دار وان روز خود مباد کہ عہد تو بگلشنم
 हे रब्ब मुझे हर क़दम पर मज़बूत रख और ऐसा कोई दिन न आए कि मैं
 तेरा अहद (प्रतिज्ञा) तोड़ दूँ।

در کوئے تو اگر سر عشاق را ز بند اول کسے کہ لاف تعشق زند منم
 यदि तेरे कूचे में प्रेमियों के सिर उतारे जाएं तो सब से पहले जो प्रेम का
 दावा करेगा वह मैं हूँगा।

TRANSLATION OF THE VERNACULAR NOTICE ON REVERSE

Being inspired and commanded by God, I have undertaken the compilation of a book named "Barahin-i-Ahmadia," with the object of reforming and reviewing the religion, and have offered a reward of Rs. 10,000 to any one who would prove the arguments brought forward therein to be false. My object in this Book is to show that only true and the only revealed religion by means of which one might know God to be free from blemish, and obtain a strong conviction as to the perfection of His attributes is the religion of Islam, in which the blessings of truth shine forth like sun, and the impress of veracity is as vividly bright as the daylight. All other religions are so palpably and manifestly false that neither their principles can stand the test of reasoning nor their followers experience least spiritual edification. On the contrary those religions so obscure the mind and divest it of discernment that signs of future misery among the followers become apparent even in this world.

That the Muhammadan religion is the only true religion has been shown in this book in two ways: (1st), By means of 300 very strong and sound arguments based on mental reasoning (their congruency and sublimity being inferred from the fact that a reward of Rs. 10,000 has been offered by me to any one refuting them, and from my further readiness to have this offer registered for the satisfaction of any one who might ask for it); (2) From those Divine signs which are essential for the complete and satisfactory proof of a true religion. With a

view to establish that Muhammadan religion is the only true religion in the world, I have adduced under this latter head 3 kinds of evidences: (1) The miracles performed by the Prophet during his life time either by deeds or words which were witnessed by people of other persuasions and are inserted in this book in a chronological order (based on the best kind of evidences): (2), The marks which are inseparably adherent in the Al-Quran itself, and are perpetual and everlasting, the nature of which has been fully expounded for facility of comprehension (3), The signs which by way of inheritances devolve on any believer in the Book of God and the follower of the true Prophet. As an illustration of this, I, the humble creature of God, by His help have clearly evinced myself to be possessed of such virtues by the achieving of many unusual and supernatural deeds by foretelling future events and secrets, and by obtaining from God the objects of my prayers to all of which many persons of different persuasions like Aryas, & c., have been eye-witness (A full description of these will be found in the said book).

I am also inspired that I am the Reformer of my time, and that as regards spiritual excellence, my virtues bear a very close similarity and strict analogy to those of Jesus Christ, in the same way as the distinguished chief of Prophets were assigned a higher rank than that of other Prophets, I also by virtue of being a follower of the August Person (the benefactor of mankind, the best of the messangers of God) am favoured with a higher rank than, that assigned to many of the Saints and Holy Personages preceding me. To follow my footsteps will be a blessing and the means of salvation

whereas any antagonism to me will result in estrangement and disappointment. All these evidences will be found by perusal of the book which will consist of nearly 4800 pages of which about 592 pages have been published. I am always ready to satisfy and convince any seeker of truth. "All this is a Grace of God He gives it to whom-soever. He likes and there is no bragging in this." "Peace be to all the followers of righteousness!"

If after the publication of this notice any one does not take the trouble of becoming earnest enquirer after the truth and does not come forward with an unbiassed mind to seek it then my challenging (discussion) with him ends here and he shall be answerable to God.

Now I conclude this notice with the following prayer: Oh Gracious God! guide the pliable hearts of all the nations, so that they may have faith on Thy chosen Prophet (Muhammad) and on Thy holy Al-Quran, and that they may follow the commandments contained therein, so that they may thus be benefitted by the peace and the true happiness which are specially enjoyed by the true Muslims in both the worlds, and may obtain absolution and eternal life which is not only procurable in the next world, but is also enjoyed by the truthful and honest people even in this world. Especially the English nation who have not as yet availed themselves of the sunshine of truth, and whose civilized, prudent and merciful empire has, by obliging us numerous acts of kindness and friendly treatments, exceedingly encouraged us to try our utmost for their numerous acts of welfare, so that their fair faces may shine with heavenly effulgence in the next We beseech God

for their well being in this world and the next. Oh God! guide them and help them with Thy grace, and instil in their minds the love for Thy religion, and attract them with Thy power, so that they may have faith on Thy Book and prophet, and embrace Thy religion in groups Amen! Amen!"

"Praise be to God the supporter of creation!"

(Sd) MIRZA GULAM AHMAD

Chief of Qadian, District Gurdaspur, Punjab, India

पारिभाषिक शब्दावली

- अर्श-** सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।
- अहले किताब-** यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।
- अज़ाब -** अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।
- अलैहिस्सलाम-** उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।
- आयत-** पवित्र कुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।
- इब्ने मरियम-** मरियम का पुत्र (अर्थात् ईसा मसीह अलैहिस्सलाम)
- इस्त्राईल-** अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक
- नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्त्राईल (अर्थात् इस्त्राईल
- ईल
- की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्त्राईल रखा है।
- ईमान-** अर्थात् विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।
- उम्मत-** संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायियों का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।
- उम्मती नबी-** किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों
- में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।
- उलमा-** इस्लामी धर्मज्ञ।

- क्रयामत-** महाप्रलय। मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन
- कशफ़-** जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कशफ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कशफ़ जागते में देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।
- काफ़िर -** सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।
- क्रिब्ला -** आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। खाना काबा मुसलमानों का क्रिब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।
- कुफ़र-** सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।
- खलीफ़ा-** उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।
- ख़िलाफ़त-** नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था,
जिसका प्रमुख खलीफ़ा कहलाता है।
- ज़ईफ़ हदीस-** (अर्थात् कमज़ोर) वह हदीस जिसके रावी (हदीस बताने वाले) की ईमानदारी के बारे में कि सी को आपत्ति हो या उसकी स्मरण शक्ति बहुत कमज़ोर हो।
- जिब्रील-** ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।
- जिहाद -** प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।
- तक्रवा -** निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।
- ताबयीन-** अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।
- तबअ ताबयीन -**ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।

- तौरात -** यहूदियों का धर्मग्रंथ।
- दज्जाल-** झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।
- दुरूद व सलाम -**हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।
- नबी-** लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।
- नुबुव्वत-** नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।
- नूर-** अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।
- नेमत -** अल्लाह की देन।
- पैगम्बर -** अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।
- बनी इस्राईल-** इस्राईल की संतान। (इस्राईल शब्द भी देखें)
- बैअत-** बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।
- मजरूह हदीस-**वह जिसमें, हदीस बताने वाले (रावी) के शब्दों और कार्यों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और इसके बारे में जिरह की गई है।
- मुश्रिक -** शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।
- मुनाफ़िक-** कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।
- मुत्तक़ी -** निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरा-यण।
- मुबाहल:-** एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।

- मे'राज -** आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।
- मोमिन -** अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।
- मौजूअ हदीस-** झूठी हदीस, जिसे रावी (हदीस बताने वाले) ने झूठ बोलकर आंहरत स०अ० व० की ओर सम्बद्ध कर दिया हो।
- याजूज-माजूज-** अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।
- रसूल-** अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत।
- रज़ियल्लाहु अन्हु-** अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।
- रहिमहुल्लाहु-** उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।
- रूह-** आत्मा।
- रूह-उल-कुदुस-** पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।
- रूह-उल-अमीन-** ज़िब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।
- ला'नत -** अभिशाप, अमंगल कामना।
- वह्यी -** अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रंथों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र कुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।
- शरीयत-** इस्लामी धर्मविधान।
- शिरक-** अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।
- सलाम -** शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन।
- सलीब -** सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।
- सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम-** उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

- सहाबी -** हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।
- सूरः / सूरत-** पवित्र कुर्आन का अध्याय। पवित्र कुर्आन में 114 अध्याय हैं।
- हज़रत -** श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।
- हदीस -** हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को **सहा-ए-सित्ता** कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।
- हिजरत -** देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।
- हिदायत-** सन्मार्ग प्राप्ति।

* * *